

सर्वश्रेष्ठ रूसी और सोवियत पुस्तकमाला

मक्सिम गोर्की

जीवन की राहों पर



प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक नरोत्तम नागर
संपादक योगे द्र कुमार नागपाल

М Горький
В ЛЮДЯХ
На языке хинди

पहला संस्करण १९५७

दूसरा संस्करण १९७७

सोवियत सघ म मुद्रित

यह लीजिये, मैं अब नगर के बड़े बाजार की "फन्सी जूता" दुकान पर नौकरी करने आ गया हूँ।

मेरा मालिक है नाटा और गोल-मटोल, जिसके बावामी रंग के चेहरे के आदि अंत का कुछ पता नहीं चलता, जिसके दात हरे और आँखें गंदी-पनीली हैं। मुझे वह अघा सा लगता है और इस बात की जांच करने के लिए मैंने मुह बनाया।

धीमे, परंतु दृढ़ सहजे में उसने कहा

"तोबडा न बना।"

मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि ये धूमिल आँखें मुझे देखती हैं और यह विश्वास नहीं हुआ कि वे सचमुच देख सकती हैं। शायद मालिक ने केवल यह अटकल लगायी है कि मैं मुह बनाता हूँ?

"मैंने कहा न कि अपनी धूयनी को काबू में रख।" अपने मोटे होठों को लगभग हिलाये बिना उसने पहले से भी अधिक धीमी आवाज में कहा।

"हाथों को नहीं खुजला," उसकी हल्की फुसफुसाहट मेरी ओर रेंगती हुई आई। "याद रख कि तू नगर के बड़े बाजार की बड़ी दुकान में है। दरवाजे पर बूत बने सीधे-सतर खड़े रहना तेरा काम है।"

मुझे मालूम नहीं था कि बूत क्या होता है और अपनी बाहों और हाथों को न खुजलाना भी मेरे वश की बात नहीं थी कोहनियों तक मेरे दोनों हाथ लाल चकत्तो और रिसते घावों से भरे हुए थे।

मेरे हाथों को देखते हुए मालिक ने पूछा

"घर पर तू क्या काम करता था?"

मैंने बताया। उसकी मदकी जसी खोपड़ी हिल उठी जिस पर उसके मटमले बाल भानो लेई से चिपके हुए थे। उसने टक सा मारा

“चिथड़े बटोरना तो भील मागने से भी बुरा है, चोरी करने से भी बदतर है!”

“मैंने चोरी भी की थी,” कुछ गव के साथ मैंने ऐलान किया।

यह सुनकर उसने बिताय के पजो की तरह काउण्टर पर अपने हाथ रले और सहमकर अपनी सूनी सूनी आखा से मेरी ओर ताकते हुए फुकार उठा

“क्या आ आ? क्या कहा तूने—चोरी भी करता रहा है?”

मैंने स्पष्ट किया कि किस चीज की और कते मैंने चोरी की थी।

“खर, इस घटना पर तो हम बहुत महत्व नहीं देंगे। लेकिन अगर तूने मेरे जूतो या मेरे पसो पर हाथ साफ किया तो बालिग होने से पहले ही मैं तुझे जेल भिजवा दूंगा ”

उसने यह शांत भाव से कहा, मैं डर गया तथा उससे और भी अधिक घृणा करने लगा।

मालिक के अलावा दुकान पर दो आदमी और काम करते थे—याकोब मामा का बेटा, मेरा ममेरा भाई साशा और लाल चेहरे वाला एक फारिदा, बहुत ही चलता पुर्वा और चिक्का चुपडा व्यक्ति। साशा खूब ठाठदार मालूम होता—लाल से रंग का कोट, कलफ लगी कमीज और टाई डाटे हुए। घमण्ड के मारे वह मेरी ओर देखता तक नहीं था।

नाना मुझे अपने साथ लेकर जब पहली बार मालिक के पास आये और साशा से उन्होंने मुझे काम सीखने में मदद देने के लिए कहा तो साशा शान्त थे आते हुए भीहें चढाकर बोला

“इससे कह दीजिये कि मेरी बात माने।”

मेरे स्तिर पर अपना हाथ रखकर उसे नीचे झुकते हुए नाना बोले

“इसकी बात मानना। यह तुम से बडा है—उम्र और काम के लिहास से भी ”

साशा ने आखो को टेरा और बोला

“नाना की सीख याद रखना, समझा!”

और उसने पहले दिन से ही अपने बडप्पन का खूब रोब जताना शुरू कर दिया।

लेकिन मालिक उसे भी डाटता था। एक दिन बोला

“शाशीरिन, यह आखें टेरेना बंद करो।”

“जो नहीं मैं मैं कहां?” साशा ने सिर झुकाते हुए जवाब दिया।

पर मालिक आसानी से पीछा छोड़नेवाला नहीं था। बोला

“और यह सिर क्यों लटका लिया है? कहीं ग्राहक तुझे बकरा न समझ बैठें।”

ऐसे मौकों पर फारिदा खुशामद भरी हसी हसता, मालिक के मोटे होठ बेडगेपन से फल जाते और साशा गम से घुरी तरह लाल होकर काउण्टर की ओट में छिप जाता।

मुझे इस तरह की जुमलेबाजी अच्छी नहीं लगती थी। बहुत से शब्द मेरी समझ में भी नहीं आते और कभी-कभी ऐसा लगता था मानो वे लोग किसी अजनबी भाषा में बातें कर रहे हों।

जब कोई महिला दुकान में आती तो मालिक जेब से हाथ बाहर निकालकर मूछे पर फेरता और अपने चेहरे पर मानो एक भीठी मुस्कान चस्पां कर लेता। उसके कपोला पर झुर्रियों की बदनवार सज जाती, लेकिन उसकी खोहनुमा आखें ज्यो की त्योही रहतीं। फारिदा तनकर सीधा हो जाता, उसकी कोहनिया दोनों बाजू शरीर से सट जातीं और उसके हाथ सम्मान का प्रदर्शन करते हुए पडफडा उठते। नजर का टेरेना छिपाने के लिए साशा डरे डरे अपनी आखों को मिचमिचाने लगता और मैं दरवाजे से चिपका हुआ लुक छिप कर अपने हाथों को खुजलाता और ग्राहक का हृदय जीतने के उनके कौशल को देखता रहता।

पाव में जूता पहनाने समय किसी महिला के सामने घुटनों के बल खड़ा हुआ फारिदा हाथों की उंगलियों की आश्चयजनक ढंग से फला लेता। उसके हाथ सिंहरते हीते और वह कुछ इस अदाज से महिला के पाव का स्पश करता मानो डरता हो कि वह कहीं टूट न जाये, हालाकि पाव बहुत मोटा और बेडौल होता था—झुके कंधों वाली उस बोटल के समान जो उलटाकर गरदन के बल रखी कर दी गई हो।

एक बार ऐसी ही एक महिला ने सिमटते और अपना पाव छुडाने हुए कहा

“हाय राम, तुम तो बहुत गुदगुदी करते हो।”

“जी, शिष्टतावश,” कारिदे ने झटपट जवाब दिया।

महिला के धारो धोर थे कुछ इस तरह मडराते कि हसी रोक्ने के लिए मैं अपना मुह दरवाजे की ओर कर लेता। लेकिन कारिदे के तीर तरीके कुछ इतने मजबूत होते थे कि मुझसे रहा न जाता और मैं मुड़ मुड़ कर देखता। और मुझे लगता कि साल कोशिश करने पर भी मैं अपनी उगलियों को इतनी नफासत के साथ कभी नहीं फला सकूंगा, न ही दूसरे लोगों के साथ मे जूते पहनाने की कला में कभी इतनी दक्षता प्राप्त कर सकूंगा।

श्रवणर मालिक काउण्टर के पोछे एक छोटे से कमरे में चला जाता और सांगा को भी वहाँ बुला लेता। श्रय जूता छरीदने के लिए दुकान में आई महिला के सामने कारिदा ही रह जाता। एक बार लाल बाली वाली किसी स्त्री के पाव छूकर उसने अपनी उगलियों की चिकोटी बनायी और उसे घूम लिया।

“ओह, बड़े शतान हो तुम!” स्त्री ने निश्वास छोड़कर कहा।

कारिदे ने गाल फुलाये और आह ऊह के सिवा उसके मुह से और कुछ न निकला।

कारिदे की मुद्रा देखते ही बनती थी। मुझे इतने धोरो से हसी छूटी कि मेरे पाव डगमगा गये। सभलने के लिए मैंने दरवाजे का हट्टा पकड़ा, वह मेरा धोस न सभाल पाया, झटके से दरवाजा खुला और मेरा तिर काच से जा टकराया। काच टूटकर जमीन पर आ गिरा। कारिदे ने यह देखा तो गुस्से में खूब हाथ पाव पटकें, मालिक ने सोने की भारी अगुदी मेरे तिर पर कई बार मारी, माशा ने भी मेरे कान एँठने की कोशिश की और शाम को घर लौटते समय मुझे डाँटते हुए वह बड़े स्वर में बोला

“अगर इसी तरह की हरकते करेगा तो निकाल देंगे! अखिर इतना हमने की क्या बात थी?”

और उसने समझाया कि जब दुकान का कारिदा महिलाओं को अच्छा लगता है, तो माल खूब बिकता है।

“जरूरत न होने पर भी महिला एकाध फालतू जोडा छरीदने चली आयेंगी ताकि मन को अच्छा लगनेवाले कारिदे को देख सकें। क्या तू इतनी सी बात भी नहीं समझता? तेरे साथ मायापन्थी करना भी ”

साशा के ये शब्द मुझे बुरे लगे। कोई भी तो मेरे साथ मायापच्ची नहीं करता था, साशा तो छान तोर पर।

हर रोज सबेरा होते ही यावचिन मुझे साशा से एक घटा पहले ही जगा देती। वह एक बीमार और चिडचिडे स्वभाव की स्त्री थी। उठते ही मैं समोवार गर्म करता, जितने भी अलावघर* थे सब के लिए लकड़ो साता, जूठे बरतन भाजता, कपडो को धुश से झाडता और अपने मालिक, कारिदे तथा साशा के जूतों पर पालिश करता। दुकान मे झाडू देता, गद साफ करता, चाप बनाता, जूतों के बण्डल लोगों के घरों पर पहुचाता और उसके बाद भोजन लाने घर जाता। जब तक मैं ये सभी काम निपटाता हार पर साशा मेरी जगह सभालता और इस काम को अपनी शान के खिलाफ समझ मुसपर बरस पडता

“कद्दू की दुम, तेरे बदले मुझे यहा चाकरी बजानी पडती है!”

मैं अलाव जीवन बिताने का आदी था, - खेतो और जगलो मे, मटमली ओका नदी के तट या कुनायिनो की रेतीलो सडको पर। अपना वर्तमान जीवन मुझे उबा देनेवाला और कष्टप्रद मालूम होता। मुझे अपनी नानी की याद आती, अपने मित्रो का अभाव अबरता। यहा कोई ऐसा न था जिससे वो घडी बातें कर मैं अपना जो बहलाता। जीवन का जो कुत्सित तथा बनावटी टप यहा मुझे घरे था, उससे मेरा दम घुटने लगता।

बहुधा ऐसा होता कि कोई महिला आती और बिना कुछ खरीदे ही दुकान से विदा हो जाती। तब वे तीनों अपने को आहत अनुभव करते। मालिक चाशनी मे पगो अपनी मीठी मुसकान को तहाकर जब मे रल लेता और आदेश देता

“बाशीरिन, जतो को उठाकर एक ओर रल वो!”

“उसे भी यहीं आकर अपनी मूयनी दिव्बानी थी, सूअरनी व्हों की! घर बँटे-बँटे जब मन नहीं लगा तो कमीनी बाजार की धूल छानने चली आई। अगर वह मेरी जोह होती तो मैं ”

उसकी पत्नी एक दुबली पतली, फाली आखो और लम्बी नाक वाली

* बेकरी की भट्टी जैसे अलावघर पुराने रूस मे सभी घरा मे होते थे और अब भी गावो मे होते हैं। अलावघर मे खाना पकाया जाता था और वह घर को गरम भी रखता था। इसके अलावा अलावघर के ऊपर और उसकी बगल मे लोग माते थे। - स०

स्त्री थी। वह उसपर चीलती चिल्लाती थी, और ऐसे बसपर लवर लेती थी भानो पति न होकर वह उसका चाकर हो।

बहुधा, सम्य दग से गरदन झुना-झुकाकर और बिचने घुपड़े बचनों की बीछार करते हुए वे परिचित महिला को विवा करते और जब वह चली जाती तो उसके बारे में गवी और सज्जाहीन बातें करते। तब मेरे मन में होता कि मैं भागकर बाजार में उस महिला के पास जाऊँ और उसे वह सब बताऊँ जो उन्होंने उसके बारे में अपने मुँह से उगला था।

बाहिर है, यह तो मैं जानता था कि पीठ पीछे लोग एक-दूसरे के बारे में बुरी बातें कहने के आदी होते हैं, लेकिन वे तीनों तो सभी लोगों के बारे में विशेष रूप से ऐसे भली-बुरी बातें करते भानो इस घरती पर वे ही सबसे अच्छे हैं और अथ सब पर फर्दियाँ बसने के लिए ही उन्हें इस दुनिया में भेजा गया हो। वे अधिकारा लोग से ईर्ष्या करते थे, उनके मुँह से किसी की प्रशंसा न निकलती और हरेक के बारे में अपने खलीरे में कुछ न कुछ कुत्सित बातें जमा रखते थे।

एक दिन दुकान में एक युवता आई चमकदार आँखें, गुलाबी कपोल, बदन पर मलमल का चोगा जिसपर काले फर का बालर लगा था। काले फर से घिरा उसका चेहरा किसी अद्भुत फूल की भाँति खिलता हुआ था। जब उसने अपना चोगा उतारकर साशा की माह पर डाला, तो उसका सौंदर्य और भी लौ देने लगा। उसके कानों में हीरो के बड़े चमक रहे थे, और नीले भूरे रंग की खूब चुस्त पोशाक में उसके शरीर का कमनीय देखाएँ और भी उभर आई थीं। उसे देखकर मुझे अतीव सुन्दर बसिलीसा की याद हो आई। मुझे लगा कि अगर और भी कुछ नहीं तो यह गवन्दर की पत्नी अवश्य होगी। उसके स्वागत अभिवादन में वे फरा चूमने लगे, अग्नि पूजको की भाँति उसके सामने बीहरे हो गये, मधु में डूबे शब्दों की उन्होंने झड़ी लगा दी। तीनों के तीनों उतावले होकर पागलों की भाँति दुकान में इधर में उधर मडराने लगे। शोकेसों के काच में उनके अक्स झलकते और ऐसा मालम होता भानो प्रत्येक चीज़ लपटों से घिरी है, पिघलकर एकाकार हो रही है और जैसे अभी, देखते देखते, वह एक नया रूप और नया आकार प्रकट ग्रहण कर लेगी।

जल्दों से जूता का एक कीमती जोड़ा खरीदने के बाद जब वह चली गयी तो भालिक ने घटकारा भरा और फुकारते हुए बोला

“कुतिया है, कुतिया ! ”

“सीधी बात है - एक्ट्रेस ! ” फारिदे ने भी तिरस्कारपूर्वक कहा।

श्रीर वे एक-दूसरे को उस महिला के धारो तथा रगीन जीवन के किस्से सुनाने लगे।

दोपहर का भोजन करने के बाद मालिक शपकी लेने के लिए दुकान के पीछे वाले छोटे कमरे मे चला गया। मौका देख मने उसकी सोने की घडी उठाई, उसका ढक्कन खोला और उसके पुत्रों मे कुछ सिरका चुआ दिया। मालिक पी जब आलें तुलीं और घडी हाथ मे लिये जब वह बडबडाता हुआ दुकान मे आया, तो मेरे आनन्द की सीमा न रही।

“यह एक नयी मुसीबत देखो - मेरी घडी एकाएक पसीने से तर हो गई ! इस तरह की बात पहले कभी नहीं हुई थी। घडी और पसीने मे एकदम तर ! कहीं कोई मुसीबत तो नहीं ? ”

दुकान की इस दौड धूप और घर के सारे काम-काज के बावजूद अब मुझे हर वक्त घरे रहती और मैं बार-बार यही सोचता ऐसा क्या करूँ कि ये लोग परेशान होकर मुझे दुकान से निकाल दें ?

हिमकणा से आच्छादित लोग दुकान के दरवाजे के सामने से तेजी से गुजरते। ऐसा मालूम होता मानो उन्हें किसी को दफनाने के लिए कब्रगाह मे जाना था, लेकिन देर हो गई और अब जनाजे तक पहुँचने के लिए वे तेजी से कब्रगाह की ओर लपके जा रहे हैं। माल डोनेवाली गाडियो मे जुते घोडे बफ मे धसे पहियो की खींचने के लिए जोर लगाते। ईसाई चालीसे के दिन थे। दुकान के पीछे वाले गिरजे के घटे की उदास ध्वनि प्रति दिन कानो से आकर टकराती। घटा बजता ही रहता और ऐसा मालूम होता मानो कोई तकिये से सिर पर प्रहार कर रहा हो जिस से चोट तो नहीं लगती, मगर इंसान बुद्ध और बहरा सा होता जाता है।

एक दिन जब मैं आगन मे दुकान के दरवाजे के नजदीक माल की एक नयी पेटी खोल रहा था, गिरजे का चौकीदार भेरे पास आया। टेडी कमर वाला यह बूढा कपडे की गुडिया की भांति लिजबिज और ऐसा खस्ताहाल था मानो कुत्तो ने धेरकर खूब नोचा-खरोवा हो।

“खुदा के बडे, तुम मेरे लिए गालोशी का एक जोडा ही दुकान से चुरा लो, ऐ ? ” उसने कहा।

मैंने कुछ जवाब नहीं दिया। वह एक खाली पेट्टी पर बस गया, उसने जम्हाई ली, मुह के सामने सलीब का चिह्न बनाया और फिर बोला

“चुरा ला, ऐ?”

“चोगे करना अच्छा नहीं है,” मैंने उसे बताया।

“फिर भी करते हैं। मेरे बूढ़ापे का खयाल करो।”

वह उन लोगों से भिन्न और रचिकर था जिनके बीच मैं रह रहा था। मैंने महसूस किया कि उसे इस बात का पक्का विश्वास था कि मैं चोरी करने के लिए तयार हूँ और मैं एक जोड़ा गालोश उठाकर खिड़की से चुपचाप उसे पकड़ा देने को राजी हो गया।

“अच्छी बात है,” खुशी का कोई खास भाव प्रकट किये बिना वह शांत भाव से बोला। “कहीं मुझे चकमा तो नहीं दे रहे? ठीक है, ठीक है, तुम उनमें से नहीं हो जो चकमा देते हैं।”

क्षण भर चुपचाप बसा हुआ वह अपने बूट के तले में नम और गरीब बर्फ को कुदेवता रहा, फिर मिट्टी का पाइप सुतगाया और एकाएक मुझे उराले हुए बोला

“और अगर मैं तुम्हें चकमा दे दूँ, तो? उहीं गालोशों को लेकर तुम्हारे मालिक के पास जाऊँ और कहूँ कि तुमने धागें खबल में उड़ें मेरे हाथ बंध दिया है, ऐ? उनका धाम है दो खबल से भी ज्यादा, और तुमने बंध दिया उड़ें धागे खबल में! मिठाई के लिए, ऐ?”

गूरे की भाँति मैंने उसकी ओर देखा, मानो उसने जो धमकी दी थी, उसे पूरा कर भी चुका हो। और वह धागें अपने जूते पर टिकाये और पाइप से नीला धुआँ छोड़ते हुए नकियाते स्वर में धीरे धीरे कहता गया

“और अगर ऐसा हो कि खुद तुम्हारे मालिक में ही मुझे सिलाया हो कि ‘जाओ, जाकर मेरे इस छोकरे की जाच करो कि वह चोरी तो नहीं करता’, तब क्या कहोगे तुम?”

“मैं तुम्हें जूते नहीं दूँगा,” झुल्लाकर मैंने कहा।

“नहीं, एक बार वचन देने के बाद तुम अब पीछे कसे हट सकते हो?”

उसने मेरा हाथ धाम लिया और मुझे अपनी ओर खींचा। फिर अपनी ठंडी उपली मेरे धागे पर मारते हुए बोला

“तुमने न सोचा न समझा और क्षट से तयार हो गये जूते भेंट करने को—तो, ते लो?”

“छुद तुम्हीं ने तो इसके लिए कहा था।”

“कहने को तो मैं दुनिया भर की चीजों के लिए कह सकता हू। मैं कहूँ कि गिरजे को लूटो, तो क्या तुम लूटोगे? भला धादमी पर भी क्या भरोसा किया जा सकता है? अरे, मेरे भादू भट्ट!”

उसने मुझे धकेलकर अलग कर दिया और लडा हो गया।

“मुझे चोरी के गालोश नहीं चाहिये। फिर मैं कोई रईस भी नहीं हूँ जो गालोश के बिना रह नहीं सकता। मैं तो मजाक कर रहा था तुम्हारी सादगी के लिए मैं तुम्हें गिरजे के घटेघर पर चढ़ने बूगा, ईस्टर के दिन घाना। तुम घटा बजाओगे, और वहा से तुम्हें नगर का समूचा वृश्य दिखाई देगा।”

“नगर तो मेरा देवा भाला है।”

“घटेघर से वह और भी सुंदर दिखाई देता है।”

धीमे उगा से, जूतो की नोक को बफ में गडाते हुए वह गिरजे के कोने के पास से गुडकर आसो से ओझल हो गया। मैं उसे जाते हुए देख रहा था और एक दुखद खेचनी से डरने डरते सोच रहा था—बूढ़ा क्या सचमुच मुझसे मजाक कर रहा था या मालिक ने मेरी जाच करने के लिए ही उसे भेजा था? दुकान पर लौटने का मुझे साहस नहीं हुआ।

साधा आंगन में निकल आया और चिल्लाकर बोला

“इतनी देर से कमबख्त यहा क्या कर रहा है।”

एकाएक गुस्ते की लहर मेरे शरीर में दौड गई और मैंने सडासी दिखाकर उसे धमकाया।

मैं जानता था कि वह और कारिदा मालिक के यहा चोरी करते हैं। बूट या जूतो का एक जोडा उठा कर वे अलावधग की चिमनी में छिपा देते और दुकान बंद करते समय चोरी के जूतो की कोट की आस्तीनों में छिपाकर घर ले जाते। मुझे यह अच्छा नहीं लगता था और इससे मुझे डर भी महसूस होता था। मालिक की चेतावनी को मैं भूला नहीं था।

“तुम चोरी करते हो न?” मैंने साधा से पूछा।

“नहीं, मैं नहीं,” उसने कठोरता से स्पष्ट किया। “कारिदा करता है। मैं तो केवल उसकी मदद करता हू। वह कहता है—मैं जसा कहूँ,

बसा करो। अगर मैं बसा न कर तो यह किसी समय भी मुझे अपनी गद्दी चाल में बसा सक्ता है। और मालिन तो छुद भी दुबान में कारिंदे का काम कर चुका है, सभी कुछ जानता है। हाँ, ॥ अपना मुह बंद रखियो।”

बोलते समय वह बराबर आईने में अपना चेहरा देखता और अपनी टाई को ठीक करता रहा। उसकी उगतिया कारिंदे के भ्रदात में फंसी हुई थीं। वह लगातार मुझपर अपना रोब जमाता, भारी भावात में मुझपर चिल्लाता और आदेश देते समय ऐसे हाथ धागे बढ़ाता मानो मुझे धकेल रहा हो। बंद में मैं उससे सम्बा और मजबूत था, लेकिन हडोला और बेडोला। इसने उलट वह मासल था, नम नम और चिक्ना चुपडा। फाक काट और पतलून पहन हुए वह मुझे बडा रोबोला सगता था, किन्तु उसने कुछ हास्यास्पद तथा अप्रिय चीज भी थी। वह बावर्चिन से घृणा करता था, जो अजीब सी स्त्री थी—वह समझना असभव था कि वह अच्छी है या बुरी।

“मुझे तो लडाईं भिडाईं सबसे ज्यादा पसंद है,” अपनी दमकती हुई काली आखा को बरब्रडा सी खोलकर वह कहती। “मुझे लडें या कुत्ते या बहकान—मेरे लिए सब बगबर हैं!”

अगर आगन में कभी मुर्गों या कबूतरों की लडाईं शुरू हो जाती तो वह हाथ का काम छोडकर बिल्डकी पर जम जाती और धीन-दुनिया से बेखबर, लडाईं खत्म होने तक वहीं लडी रहती। जब सास होती तो वह साशा और मुझसे कहती

“यहा बटे-बटे क्या मक्खिया मार रहे हो, लडको! बाहर निकलो, खूब लडो निडो, जोर आतमाई करा!”

साशा मुमला उठता

“मैं लडका नहीं हूँ, मूजा की नानी! मैं छाटा कारिंदा हूँ।”

“मैं यह नहीं मानती। जब तक तुम्हारी आबो नहीं हो जानी, मेरे लिए तो तुम लडके ही रहोगे!”

“मूजा की नानी, बोले मूजा की बानी!”

“गतान अकलमद है पर खुदा उमे प्यार नहीं करता।”

उसकी उक्तिया साशा को दास तीर से बहुत लिजाती थीं। साशा उमे विडाता तो वह अपनी दष्टि से उसे ध्वस्त करते हुए कहता

“अरे तिलचट्टे, तू भगवान की गलती है!”

साशा ने कई बार मुझे इस बात के लिए उकसाने की कोशिश की कि मैं उसके तकिये में पिनें खोस दू, या जब वह सोती हो उसके मुंह पर काली पालिश या काजल पोत दू, या इसी तरह की कोई श्रम हरकत करू। लेकिन मैं बावचिन से डरता था और वह बहुत ही उचठी हुई सी नोंद सोती थी। बहुधा ऐसा होता कि वह सोते-सोते जग जाती, लम्प जलाती और कहीं बौने में नजर गडाए तावती रहती। कभी कभी वह उठकर अलावघर के पीछे मेरे बिस्तरे के पास चली आती, मुझे झसोडती और बठी हुई आवाज में फुसफुसाती

“न जाने क्यों मुझे नोंद नहीं आती, आल्पोशा। उर सा लगता है। कुछ बात ही कर।”

और मैं जागता ऊघता सा उसे कोई कहानी सुनाता और वह अपने बदन को आगे पीछे झुलाती हुई चुपचाप बठी सुनती रहती। मुझे ऐसा प्रतीत होता मानो उसके गम बदन से मोम और लोबान की गंध आ रही हो, और यह कि वह जल्दी ही मर जायेगी, शायद इसी क्षण मुंह के बल फश पर गिरेगी और दम तोट बेगी। उर के मारे मैं खोर से बोलने लगता, लेकिन वह हमेशा टोक देती

“शौ, तू उन हरामजादो को भी जगा देगा और वे समझेंगे कि तू मेरा प्रेमी है।”

वह हमेशा एक ही मुद्रा में और एक ही जगह पर बठती—बदन को एक दम झुकाकर दोहरा किए, हाथो को घुटनों के बीच खोसे और हड्डिया भर रह गई अपनी टांगा से उन्हें कसकर दबाये हुए। यह गाढे का लबावा पहनती थी। लेकिन चपटी छातियो वाले उसके शरीर की पसलिया, पिचके हुए पीपे की सलवटो की भाति, उस मोटे लबावे में से भी साफ उभरी हुई दिखाई देतीं। बडी देर तक वह इसी तरह चुपचाप बठी रहती और फिर सहसा फुसफुसा उठती

“मर जाऊ तो इन सब दुखो से जान छूट जाये ”

या किसी अदृश्य से पूछ लेती

“मैंने अपने जीवन के दिन पूरे कर लिये—तो क्या हुआ?”

“अब सो जा!” मुझे बीच में ही टोककर वह कहती, सीधी हो जाती और उसका धूमिल शरीर रसोई के अर्घरे में चुपचाप विलीन हो जाता। साशा उसकी पीठ पीछे उसे आयन कहता।

एक दिन मैंने उसे उफसाया

"उसके मुह पर फहो ता जाने!"

"मैं क्या उससे डरता हूँ?" उसने जवाब दिया।

फिर तुरन्त ही उसने अपने माये को सिफोडा और बोला

"नहीं, मैं उसके मुह पर नहीं चूँगा। कौन जाने, यह सबमुच है डायन हो "

सभी के प्रति वह विडविडेपन और तिरस्कार का भाव अपनाये रहते और मेरे साथ भी कोई ह-रिमायत न बरतती। मुयह के छ बजे ही वा मेरी टांग पकडकर खींचती और चिल्लाती

"बहुत खरटे से चुका! अब उठकर लकड़ी ला, समोवार गर्म कर धालू छील। "

उसका चिल्लाना सुनकर साशा की भी आंख खुल जाती।

"क्या आसमान सिर पर उठा रखा है?" वह बड़बड़ाता। "मैं मालिक से जाकर शिकायत कहगा कि मुझे सोने नहीं देती।"

नौद न जाने के कारण सूजकर लाल हुई उसकी आंखें साशा की बिशा में कौंध जाती और अपने हड्डियों के ढाँचे से वह रसोई में द्रुत गति से उठा घरी करने लगती।

"मुझा कहीं जा! भगवान की गलती! मेरे पाले पड़ता तो चमड़ी उधेडकर रल देती।"

"मासपीडी!" साशा उसे कोसता और फिर बाद में, दुकान जाते समय, मुझसे कहता। "मैं इसका पत्ता कटाकर छोड़ूँगा। इसकी आंख बचाकर मैं खाने में नमक झोक दूँगा। जब हर चीज बाहर मालूम होगी तो मालिक इसे निकाल बाहर करेंगे। या फिर मिट्टी का तेल। तू यह क्यों नहीं करता?"

"और तू?"

"डरभोक!" वह भुनभुनाकर कहता।

और बावचिन हमारे देखते देखते मर गई। एक दिन समोवार उठाने के लिए झुकते ही वह सटसा डेर हो गई, भानो किसी ने उसकी छाती पर आघात किया हा। वह वातू के बल मुड़क गई, उसकी बाहो में ऐंठन हुई और मुह से खून टपकने लगा।

हम दोनों तुरन्त ही भाप गए कि वह मर चुकी है, लेकिन भय से

प्रस्त हम वहाँ खड़े-खड़े केवल उसे देखते रहे, मुह से एक भी शब्द नहीं निकला। आखिर साशा भाग कर रसोई से बाहर गया और मैं, खिडकी के पास, रोशनी में विकृतव्यविमूह सा खड़ा रहा। मालिक आया, चिन्ताप्रस्त भाव से झुका, उसके चेहरे का स्पश किया और बोला

“अरे, यह तो सचमुच मर गई। यह कैसे हुआ?”

बोने में रखी हुई चमत्कारी सन्त निपीला की छोटी सी प्रतिमा के सामने झुकते हुए मालिक ने तुरंत सलीब का चिह्न बनाया और प्रायना पूरी करने के बाद बरवासे की ओर मुह करके चिल्लाया

“काशीरिन, भागकर जाओ और पुलिस को खबर करो!”

पुलिस वाला आया, इधर उधर कुछ खटर-पटर करने के बाद उसने बरेशीश अपनी जेब में डाली और चला गया। इसके शीघ्र बाद ही मुर्दा होने वाले एक ठेले को अपने साथ लिए वह लौटा। सिर और पाव पकड़कर उहाने बावचिन को उठाया और उसे बाहर ले गए। मालिक की पत्नी ने बरवासे से भावकर मुझ से कहा

“फश साफ कर डाल!”

और मालिक ने कहा

“यह भी अच्छा हुआ कि यह साक्ष के समय ही मरी ”

मेरी समझ में नहीं आया कि इसमें क्या अच्छाई थी। जब हम सोने के लिए बिस्तर पर गए, तो साशा बहुत ही नरमता से बोला

“सम्प न क्षाना!”

“क्यों, डर लगता है?”

उसने अपना सिर कम्बल से ढक लिया और बहुत देर तक चुपचाप पड़ा रहा। रात भी एकदम चुप और निस्तब्ध थी मानो वह भी कान लगाकर कुछ सुनना चाहती हो, किसी चीज की प्रतीक्षा में हो। और मुझे ऐसा लग रहा था मानो अगले ही क्षण घटा बजने लगेगा और नगर के लोग भय से आश्रयत होकर इधर उधर भागना और चिल्लाना शुरू कर देंगे।

साशा ने कम्बल से अपना सिर बाहर निकालकर अपनी घूनी की एक झलक दिखाते हुए धीमे स्वर में कहा

“चल, अलावघर पर चलकर दानो एक साथ सोए?”

“वहा तो बहुत गम होगा!”

कुछ देर तक घुप रहकर उसने कहा

"कसे यह मर गई—एकदम, न? शरीर में उते डायन समस रहा था। नोंद नहीं घाती "

"मेरा भी यही हास है।"

उसने बनाना गुरु किया कि किस प्रकार मुझे अपनी कशो मे से उठकर आधी रात तक नगर का चक्कर लगाने और अपने सगे-सम्बन्धियों तथा घरा की तोज करते हैं।

"मुर्दों को केवल अपने नगर की याद रहती है," यह धीरे धीरे बता रहा था, "गली मोहल्लो और घरा की नहीं "

निस्तब्धता अब और भी गहरी हो गई और मानो अपने भी अधिकाधिक घना होता जा रहा था। सांगत मे अपना सिर उठाया और पूछा

"मेरे सडूक को चीखें देखेगा?"

मे बहुत दिनों से यह जानना चाहता था कि उसने अपने सडूक में क्या-क्या छिपा रखा है। यह हमेशा उसको ताला लगाये रखता था। और उसे खोलते समय अजीब सावधानी बरतता था। अगर मैं कभी झाँककर देखने की कोशिश करता तो वह डाटकर पूछता

"क्या चाहिये तुझे? हैं?"

जब मैंने इल्लने की इच्छा प्रकट की तो वह उठकर बिस्तर पर बैठ गया और सदा की भाँति मालिकाना शब्दावली मे उसने आँग्य दिया कि मैं सडूक को उठाकर उसके पाव के पास रखूँ। कुर्सी को एक तजीर मे डालकर उसने सलीब के साथ गले मे पहन रखा था। अपने कौनों की ओर नजर डालकर रोक के साथ उसने अपनी भोंहो को सिकोडा, ताला खोला और अंत में डबकन पर इस तरह पूर्य मारकर माना वह गम हो, सडूक गोला। सडूक मे अडरवेयर के कई जोड़े रखे थे। उसने उहे बाहर निकाल लिया।

सडूक का आधे से भी ज्यादा हिस्सा गोलियों के बबसा, चाय के पकटो के रंग विरंगे कागजो, सार्डोन मछली और काली पालिश की छाती डिब्बिया से भरा था।

"यह सब क्या है?"

"अभी दिखाता हूँ "

सदूक को अपनी टांगी के बीच रखकर उसने उसपर झुपते हुए धीमी आवाज से गाया

“हे परम पिता, स्वर्ग में वास करनेवाले ”

मुझे उम्मीद थी कि सदूक में खिलौने देखने को मिलेंगे। मैं खिलौनों से सदा वचिंत रहा था और खिलौनों के प्रति बनावटी उपेक्षा का भाव दिखाता था, किन्तु मन ही मन उनसे ईर्ष्या करता था जिनके पास खिलौने होते थे। यह सोच कर मैं मन ही मन प्रसन्न होता कि साशा के पास, उसकी गम्भीरता और क्लेशपन के बावजूद खिलौने हैं जिन्हें शम के मारे उसने छिपार रखा है। उसकी यह सज्जा मेरी समझ में आती थी।

उसने पहले डिब्बे को खोला और उसमें से चश्मे का फ्रेम निकाला। उसने उसे अपनी नाक पर लगाया, मेरी ओर कड़ी नजर से देखा और फिर बोला

“इस में शीशे नहीं हैं तो क्या हुआ। बिना शीशे के भी इसका बसा ही रीढ़ पड़ता है।”

“जरा मुझे दो। मैं भी लगाकर देखूँ।”

“यह तेरी आँखों से मेल नहीं खाता। ये काली आँखों के लिए है और तेरी आँखें कुछ भूरी हैं।” उसने मुझे मालिक के आवाज में ममताया। किन्तु फौरन ही उसने भयभीत सा होकर सारी रस्तीई में नजर दौड़ाई।

पालिसा के एक डिब्बे में तरह-तरह के बटनों का जखीरा मौजूद था।

“ये सब मुझे सड़क पर पड़े हुए मिले हैं।” उसने शैली बघारते हुए कहा। “जुब मैंने ही जमा किए हैं। पूरे सनीस हैं ”

तोसरे डिब्बे में पीतल की बड़ी बड़ी पिर्नें थीं। ये भी सड़क पर पड़ी मिली थीं। फिर आये जूता के बक्सुवे—घिसे पिटे, तुड्डे मुडे और सालिम, बूटा तथा जूती के बकल, छडी की हाथीदात की मूठ, दरवाजे का पीतल का हत्या, एक जनानी बची और सपनो तथा भाग्य का भेद बताने-वाली एक पुस्तक। इनके अलावा इसी तरह की अन्य बहुत सी चीजें थीं।

चियडा और हड्डियों को ब्योज करते समय अगर में चाहता तो एप महोने के भीतर इससे दस गुना कबाड जमा कर सकता था। साशा के इस जखीरे को देखकर मुझे बड़ी निराशा और झुझलाहट हुई और उससे प्रति दया से मेरा मन भर गया। वह प्रत्येक चीज को यदे ध्यान से

देखाता, बड़े घाव से अपनी जगलिया से उसे सहलाता, उसने मोटे होंठ बड़े रोय के साथ घागे की फने हुए थे, उभरी हुई आंखें बड़े प्यार की ध्यान से चीन्हा को देखती थीं, सेजिन घामे के प्रेम ने, उसके बक्का चेहरे को हास्यास्पद बना दिया था।

"इस सब का क्या करोगे?"

घामे के भीतर से उसने मुझपर एक उथली हुई नजर डाली जो अपनी घायु के अनुरूप पटी हुई सी भारी आवाज में बोला

"बोल, तुम कुछ भेंट कर दू?"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये "

एक क्षण तक वह कुछ नहीं बोला। मेरे इन्कार करने और उली जज़ीरे में विलचस्पी न दिखाने से स्पष्टतः उसके हृदय को ठंस लगा थी।

"एक तौलिया ले आ," आखिर उसने धीरे से कहा, "इन स चीन्हो को घमकाएंगे। देस न, इनपर जितनी धूल जमा हो गई है "

सब चीन्हो को घमकाने और उन्हें सड़क में रखने के बाद वह बरत लेकर बीवार की ओर मुह करके लेट गया। बाहर बारिश गूह हो प थी, छत से पानी टपक रहा था और हवा खिडकिया पर पड़े ना रही थी।

"धरा जमीन सूख जाने दे, बर्गोवे न तुमने एक ऐसी चीन्ह दिखाऊ कि घग रह जायेगा," मेरी ओर मुह किए बिना ही उसने कहा।

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया और चुपचाप विस्तर में घुस गया।

कुछ क्षण बाद वह सहसा उछलकर खड़ा हो गया, बीवार को अपनी जगलियो से नोचने लगा और आश्चर्यचकित करनेवाली बूढ़ आवाज में बोला

"मुझे डर लग रहा है भगवान, मुझे डर लग रहा है! मुझपर क्या करी, भगवान! यह क्या है?"

तब अथ से मुझे भी पसीना छटने लगा, शरीर ठंडा पड गया। मुझे लगा मानो बाबचिन मेरी ओर पीठ किए खिडकी के पास खडी है, जोशे से माया सटाए, ठीक उसी मुद्रा में जिसमें वह मुर्गों का सडना देखा करती थी।

बीवार को नोचता और लात पटकता हुआ साधा रो रहा था। मैं उठा और लपककर मैंने रसोई के फज को ऐसे पार किया माना उसपर बहकते

अगारे बिछे हो। उसके विस्तर मे घुसकर मैं उसकी बगल मे लेट गया।

बहुत देर तक हम दोनो की आखो से आसू बहते रहे और अन्त मे हम थककर सो गये।

कुछ दिन बाद कोई त्यौहार था। केवल दोपहर तक हमने काम किया। दोपहर का भोजन घर जाकर करना था। जब मालिक और उसकी पत्नी विधाम करने के लिए चले गए तो साशा ने भेद भरे ढग से मुझसे कहा

“आ मेरे साथ।”

मैंने अदाज लगाया कि वह कोई ऐसी चीज दिखाना चाहता है जिसे देखकर मैं बग रह जाऊंगा।

हम बगीचे मे गए। दो घरों के बीच भूमि की एक सक्री पट्टी पर लाइम के लगभग दस-पात्रह पेड खडे थे जिनके सबल तनो पर कई जमी थी और जिनकी नगी-बूची, जीवन शून्य टहनिया आकाश का मुह ताक रही थीं। उनमे कौवो का एक घोसला तक नहीं था। वक्ष कश्मिस्तान के स्मारको की भाति खडे थे। लाइम के इन पेडो के सिवा यहाँ और कुछ नहीं उगा था, न कहीं कोई झाडी थी, न घास ही। पगडडियों की जमीन तपे लोहे की भाति कडी और काली पड गई थी और आस पास की वे जगहे भी, जो पिछले वर्ष के गले-सडे पत्ता से आच्छादित नहीं थीं, खडे पानी की तरह कई की पतली पतली परत से ढकी हुई थीं।

साशा घर के कोने के पास से मुझ और सडक की ओर वाले बाडे की दिशा मे बढ़कर लाइम के एक पेड के नीचे रुक गया। वहा एक मिनट तक खडे रहकर उसने पडोस के एक घर की धुचली रिडकियो को ताका, घुटनों के बल धरती पर बठ गया, पत्तो को अपने हाथो से खोदकर उसने अलग कर दिया और तब पेड की गाठ गठीली जड दिखाई दी। जड के पास ही दो इंटें जमीन मे धसी हुई थीं। उसने इंटो को खींचकर बाहर निवाल लिया। उनके नीचे छत के टीन का एक टुकडा रखा था। टीन के नीचे सक्की का चौकोर तपता था। अन्त मे मुझे एक बडी सी खोह दिखाई दी जो जड के नीचे तक चली गयी थी।

साशा ने एक बियासलाई जलाई और मोमबत्ती के टुकडे को रोगन किया। फिर मोमबत्ती के टुकडे को छेद के भीतर ले जाते हुए बोला

“इधर देख। बस, डरना नहीं—”

लेकिन डरा हुआ वह खुद था, यह बात प्रत्यक्ष थी। मोमबत्ती उसके हाथ में काप रही थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, होंठ बंदूदा दंत से सटक गये थे, आँखें नम थीं और उसका दूसरा छाती हाथ, बार-बार फिसलकर, पीठ पीछे पहुँच जाता था। मुझे भी उससे डर ने प्रस लिया। अत्यंत सावधानी के साथ मैंने जड़ के नीचे देखा जो लोह की मेहराब का काम देनी थी। साशा ने अब तीन मोमबत्तियाँ जला ली थीं जिनकी मीली रोशनी से लोह आलोकित थी। वह एक साधारण बालटी जितनी गहरी और उससे अधिक चौड़ी थी। उसकी दीवारों पर रंगीन फाँव और धातु के टुकड़े जड़े थे। बीच में एक चबूतरा सा था जिसपर एक छोटा सा तायूत रखा था। तायूत पर टौन की कत्तरन लिपटी थी और उसका प्राया भाग गोटे जैसी किसी चीज से ढका हुआ था। इस आच्छादन के भीतर से गौरे के भूरे पत्रे और धाच दिखाई पड़ रही थी। सिर की ओर एक नहीं सी टिक टिकी थी जिसपर पीतल की एक छोटी सी सलीब रखी थी और तीन ओर मिटाई की रुपहली और सुनहरी पत्रियों से बने चमचमाते हाल्डरो में मोमबत्तियाँ जल रही थीं।

मोमबत्तियों की नुकीली ली लोह के मुह की ओर लपलपा रही थी। लोह के भीतरी भाग में बहुरंगी रोशनी के चकत्ते और चमक की हल्की चमचमाहट फैली थी। मिट्टी तथा पिघलते हुए मोम की गंध और सजावन के भभके मेरे चेहरे से आकर टकरा रहे थे और लोह के भीतर की खण्डित इद्रधनुषी आभा मेरी आँखों में नाच तथा फिरक रही थी। इन सब की वजह से मेरा डर तो बिलीन हो गया, लेकिन अचरज की एक दामिल भावना ने उसका स्थान ले लिया।

“सुबर है न?” साशा ने पूछा।

“यह सब किस लिये है?”

साशा ने बताया

“यह एक समाधि है। बंसी लगती है न?”

“मैं नहीं जानता।”

“और तायूत में गौरे का शव है। कौन जाने कभी कोई ऐसा चमत्कार हो कि यह शव एक पवित्र स्मारक का रूप धारण कर ले, क्योंकि उसे किसी कसूर के बिना अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था”

“क्या तुझे यह भरा हुआ ही मिला था?”

“नहीं। यह उड़कर सायवान में आ गया था। अपनी टोपी फेंककर मैंने इसे पकड़ लिया और दबोचकर मार डाला।”

“क्यों?”

“यों ही ”

उसने मेरी आँखों में देखा और फिर पूछा

“बढ़िया है न?”

“नहीं।”

वह खोह के ऊपर झुका, जल्दी से उसने उसपर लकड़ी का तख्ता ठक दिया, फिर टोन रखा और इँटों को पहले की तरह ही जमा दिया। इसके बाद वह खड़ा हो गया और घुटनों पर से धूल झाड़ते हुए कड़े स्वर में बोला

“तुम्हें यह क्यों पसंद नहीं आया?”

“मुझे गौरे पर दिया आ रही है।”

उसने अपने की तरह मुझे एकटक देखा और फिर मेरी छाती पर हाथ मारते हुए चिल्ला उठा

“काठ का उल्लू! तू मुझसे जलता है, बस और कुछ नहीं! इसीलिए कहता है कि तुम्हें यह पसंद नहीं आया! शायद तुम्हें इस बात का भी घमंड है कि कनालनाया सड़क के अपने बगीचे में तेरा फरतब इससे कहीं अधिक सुंदर था?”

“और नहीं तो क्या,” मैंने बेहिचक जवाब दिया और मुझे उस कोने की याद हो आई जो कि मैंने अपने लिए सजाया था।

साशा ने अपना कोट उतारकर जमीन पर फेंक दिया। उसने अपनी आस्तीनों घड़ा लाई, थूककर अपनी हथेलियों को मला और बोला

“अगर ऐसी बात है तो आ जा मैदान में!”

लड़ने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी। मुझपर तो पहले से ही शक्ति क्षीण करनेवाली उदासी हावी थी और अपने ममेरे भाई के क्रुद्ध चेहरे की ओर देखना भी मुझे भारी मालूम हो रहा था।

वह लपककर मेरी ओर झपटा, छाती पर तिर मारकर उसने मुझे गिरा दिया और मेरे ऊपर चढ़ बैठे।

“जीना चाहता है या मरना?” वह चिल्लाया।

परतु मैं उससे क्यादा मजबूत था और मेरा खून पूरी

उठा था। अगले ही क्षण वह हाथों को सिर से आगे फसाये हुए मह के वन घरती पर जा गिरा और खरखरी आवाज में सांस लेने लगा। भयभीत होकर मैंने उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन दुर्भाग्यवश हाटकर उसने मुझे अलग कर दिया। इससे मैं और भी आशंकित हो उठा। मेरी समझ में नहीं आया कि क्या बह। इसी असमंजस में मैं एक तरफ की दृष्टि गयी और तब उसने अपना सिर उठाकर कहा

"अब तू बचकर नहीं जा सकता। जब तक मालिक यहाँ नहीं आता, मैं ऐसे ही पड़ा रहूँगा, मालिक लौजता हुआ जब यहाँ आयेगा मैं तेरा शिकार करूँगा और वह तुझे निकाल बाहर करेगा!"

उसने कोता और धमकिया दीं। उसकी धमकी से मुझे बहुत क्रोध आया और मैं मुड़कर फिर खोह की ओर लपका। इंटों की मैंने उखाड़ डाला, ताबूत और गौरे को उठाकर दूर, बाड़े के उस पार, फेंक दिया और भीतर का सारा साम-साम खोद-खोदकर उसे पाव से रौंद डाला।

"ले, यह ले! और देख, यह गई तेरी समाधि!"

मेरे इस क्रोध का उत्तपर अजीब प्रभाव पड़ा वह उठकर बैठ गया, अपना मुँह कुछ खोले और भौंहेँ सिकोड़े, मेरी ओर निर्बाक ताकता रहा। जब मैं तीव्र फोड़कर चुका तो वह इतमीनान से उठा, उसने अपने को साधा और कोट पहनकर शांत स्वर में हेषपूर्वक बोला

"अब देखियो क्या होता है। जरा ठहर तो! मैंने यह ज्ञान तीर से तेरे लिए ही बनाया था। यह एक टोना था—समझा!"

मेरी तो जैसे जान निकल गई। उसके शब्दों के आघात ने मेरे घुटने ढीले कर दिये। मुझे ऐसा मातूम हुआ जैसे मेरे शरीर की हर चीज ठंडी पड़ गई हो। मुड़कर एक बार भी देखे बिना वह वहाँ से चल दिया। उसकी शक्ति ने मुझे पुणतया पस्त कर दिया था।

मैंने निश्चय किया कि अगले ही दिन इस नगर, मालिक, साशा और उसके जाड़ टोने, इस समूचे बेमानी और भयावह जीवन को छोड़कर यहाँ से चल दूँगा।

अगली सुबह को नयी बावर्चिन मुझे जगाते समय चिल्ला उठी

"हे भगवान, तेरे सोबडे को यह क्या हुआ है?"

मुझे ऐसा लगा कि मेरा हृदय जवाब दे रहा है। हो न हो, टोने ने अपना अस्तर दिखाना शुरू कर दिया है। अब कुछ भी शेष नहीं रहेगा।

लेकिन बावचिन पर हसी का कुछ ऐसा दौरा सवार हुआ और वह इस तरह खिलखिलाकर हसी कि मैं खुद भी इसे बिना न रह सका। मैंने उसके आईने में झाँककर देखा। मेरे चेहरे पर काजल की एक मोटी परत चढ़ी थी।

“यह साशा की करतूत है न?” मैंने पूछा।

“और नहीं, तो क्या मैंने किया है?” बावचिन ने हसते हुए कहा।

मैंने जूतों पर पालिश करना शुरू किया। जैसे ही मैंने एक जूते में अपना हाथ डाला कि मेरे हाथ में एक पिन गड़ गई।

“यही है साशा के जादू-टोने का असर!” मैंने मन ही मन कहा।

पिंने और मुड़या सभी जूतों में छिपी थीं और इस चतुराई से कि मेरे हाथों में गड़े बिना न रहे। तब मैंने ठंडे पानी से भरा डोल उठाया और उसे ओझे के सिर पर उडेल दिया जो अभी तक सो रहा था, या नींद का घहाना किए पड़ा था।

लेकिन मेरा मन अभी भी भारी था। ताबूत, गौरा, उसके भूरे और सिफुडे हुए पने, उसकी छोटी सी मोमियाई चोच और उसके चारों ओर की चमचमाहट जो इद्रधनुषी आभा की समानता का निष्फल प्रयास कर रही थी यह सब मेरे दिमाग में इतना छा गया था कि उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल था। ताबूत ने मेरी कल्पना में भीमाकार रूप धारण कर लिया, पक्षी के पंजे बढ़ने और आकाश की ओर अधिकाधिक ऊँचे उठने लगे, एक दम सजीव और स्पन्दनशील।

मैंने उसी सास सब कुछ छोड़ छाटकर भागने की योजना बनाई। लेकिन दोपहर के भोजन से ठीक पहले जब मैं तेल के स्टोव पर शोरवा गम कर रहा था, मैं सपने देखने में रम गया और शोरवा उबलने लगा। स्टोव बुझाने की उतावली में मैंने उसपर रखा बरतन अपने हाथों पर गिरा लिया। नतीजा यह हुआ कि मुझे अस्पताल भेज दिया गया।

अस्पताल का वह दुस्वप्न मुझे याद है धरथराते, पीले रंग में सिर पर कफन से लपेटे भूरी और सफेद आकृतियों के दल प्रबट होते, कराहते और मनभनाते, एक लम्बा आदमी, जिसकी ओँहे मूछों के समान थीं, बसाली लिए, अपनी काली लम्बी दाढ़ी को बराबर नचाता और चिल्लाता रहता

“महापूजनीय धर्मपिता को खबर 

धरुपताल के पलग मुझे ताबूत की याद विलाते थे। छत की घोर नाक ताने उनपर लेटे हुए मरौज मुझे मृत गौरी की भाति मालूम हात। पीली दीवारें डोलने लगतीं, छत में चादबान की भाति लहरें उठतीं, प्रश उभारा लेता और पलग आगे-पीछे झूमने लगते। प्रत्येक चीज भयानक और बिना भरोसे की थी। खिडकियो से बाहर पेड़ों की नगी-बूची टहनिया तिरछी नजर आती थीं और कोई उन्हें झकझोरता रहता था।

दरवाजे के पास एक दुबली-मतली, साल सिर वाली, लाज सा नाचती। छोटे छोटे हाथों से कफन को खींचकर वह अपने चारों ओर समेटती और चीखती

“मुझे पागलो की जरूरत नहीं!”

और बसाखी वाला आदमी चिल्लाता

“महापूजनीय धमपिता को ”

नानी नाना और दूसरे सभी लोगो से मैंने हमेशा यही सुना था कि धरुपताल में लोगो को भूला मारा जाता है। मेरे मन में यह बात बढ गई कि मैं भी अब दो चार दिन का ही मेहमान हूँ। चश्मा लगाए एक स्त्री जो कफन सा लपेटे थी, मेरे निक्ट आई और बिस्तर के सिरहाने सटकी सलेट पर उसने खडिया से कुछ लिखा। खडिया के कुछ बण चुरमुराकर मेरे बाला में आ गिरे।

“तुम्हारा क्या नाम है?” उसने पूछा।

“कोई नाम नहीं।”

“तुम्हारा नाम तो है न?”

“नहीं।”

“झकवास न करो, नहीं तो मार पड़ेगी।”

मार पड़ेगी, इस बात का तो मुझे पहले से ही विश्वास था। और इसीलिए तो मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया था। बिल्ली की भाति फूफूकर बिल्ली की भाति ही वह खोर पावां से विलीन हो गई।

दो लम्प जला दिये गये जिनकी पीली बत्तिया किसी की छोई हुई दो घाणो की भाति छत से सटकी थीं—झूलती और चकित भाव से टिमटिमाती मानो दोना फिर एक दूसरे के निक्ट आने का प्रयत्न कर रही हो।

“भाभी, ताज की एक बानी खेले,” किसी ने कोने में से कहा।

“केवल एक ही बाह से मैं कैसे खेल सकता हूँ?”

“ओह, तो उन्होंने तुम्हारी एक बाह साफ कर दी, क्यों?”

मेरे मन में यह बात बैठते देर नहीं लगी कि ताश खेलने के कारण ही उसकी बाह षाटी गई है और मैं सोचने लगा कि मारने से पहले न जाने मेरी क्या द्रुगति की जायेगी।

मेरे हाथों में जलन होती थी और वे बुरी तरह दुखते मानो कोई मेरी हड्डियों को मोच रहा हो। भय और दर्द से मैं मन ही मन बराहता और अपनी आँखों को बंद कर लेता जिससे मेरे आसू किसी भी न दिखाई दें, लेकिन वे उमड़ आते और मेरी कनपड़ियों पर से बहकर कानों तक पहुंच जाते।

रात धिर आई। मरीज अपने अपने बिस्तरो पर पहुंच गए, भूरे कमबलों के नीचे उन्होंने अपने आप को छिपा लिया और निस्तब्धता प्रतिक्षण गहरी होती गई। केवल एक आवाज थी जो कोने में से आकर इस निस्तब्धता को भंग करती थी

“कोई नतीजा नहीं निकलेगा। दोनों ही पशु हैं—पुरुष भी और स्त्री भी”

मैं नानी को पत्र लिखना चाहता था कि अभी, जब तक मैं जिवा हूँ, मुझे घोरी छिपे यहाँ से ले जाये। लेकिन मैं लिखता कैसे न तो मेरे हाथ काम करते थे और न ही लिखने के लिये कोई चीज थी। मैंने तय किया कि यहाँ से भाग चलना चाहिए।

ऐसा मालूम होता मानो रात अधिकाधिक बेजान होती जाती थी मानो उसने कभी विवा न होने का निश्चय कर लिया हो। दबे पाव फर्श पर उतर कर मैं दोहरे दरवाजे की ओर चला। दरवाजों का एक भाग खुला था और वहाँ, गलियारे में, लम्प के नीचे रखी टेकवाली बेंच पर, तम्बाकू के धुएँ से घिरे साही जैसे एक सिर पर मेरी नजर पड़ी। बाल उसके सफेद थे और उसकी धती हुई आँखें एकटक मुझपर जमी थीं। मैं छिप नहीं पाया।

“मह कौन मटरगस्ती कर रहा है? यहाँ आ!”

आवाज में गर्मी थी। घमकी का उसमें जरा भी घुट नहीं था। मैं उसके पास गया और दाढ़ी से भरे एक गोल चेहरे पर मेरी नजर पड़ी। सिर के सफेद बाल खूब बढ़े हुए थे और स्पष्ट आलोक की भाँति चारों ओर फले थे। उसकी पेटो में तालियों का एक गुच्छा लटक रहा था।

उसके बाल और दाढ़ी कुछ और बड़े होते, तो वह सन्त पीटर के समा दितार्ई देता।

“अच्छा तू वह जले हाथो वाला है? रात के समय यहा क्यों घूम रहे है? यह बात यहा के उसूल कायदो के खिलाफ है।”

उसने धुए का एक बादल मेरे मुह की ओर छोडा, अपनी बाह मे गले मे डाली और अपनी ओर खींचते हुए बोला

“डर लगता है?”

“हा।”

“शुट-गुर में यहा सभी को डर लगता है। लेकिन डरने की कोई बात नहीं है, मैं जो पास मे हू। मैं किसी का घुरा नहीं होने वृगा तम्बाकू दियेगा? नहीं, ऐसा नहीं कर। अभी तू छोटा है, कोई दो बय और ठहर जा तेरे मा-बाप कहा हैं? नहीं हैं मा-बाप! बिल्कुल टोक-उनकी तुझे ज़रूरत भी क्या है? उनके बिना भी जिया जा सकता है। बस डरना नहीं चाहिये।”

उसने गध्व मुझे अच्छे लगे। इतने अच्छे कि वह नहीं सजता। बहुत दिना से किसी ऐसे आदमी से मेरी भेंट नहीं हुई थी जो सीधे-सादे, मित्रतापूण और समस्त मे आगेवाले शब्दों मे बात करता हो।

यह मुझे वापिस मेरे पलग पर ले गया।

“कुछ देर मेरे पास बठो,” मैंने आशुरोध किया।

“चरु बठूगा,” उसने उत्तर दिया।

“तुम कौन हो?”

“मैं तिपाही हू, असली तिपाही, कावेगिया वाला। मोर्च पर भी जा चुका हू--इसके बिना तो काम ही कैसे चल सजता था? तिपाही तो लडाइयो के लिए ही जीता है। मैं हंगेरियाइया से सडा हू। खेवेंसो और बोसो से लडा हू। मूड, मेर भाई, एक बहुत ही बडी गतानी थी है।”

एक दाण के लिए मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं और जब मैंने उन्हें खोला तो उसी जगह पर, जहाँ तिपाही बठा था, मुझे बालो योगाव में अपनी नाना रिताई दी। तिपाही अब मेरी नानी की बरल मे लडा था। यह कह रहा था

“ता कोई भीदिन नहीं बघा, सब मर गए। क्यों, यही न?”

घाड़ में सूरज खिलवाड़ पर रहा था—हर चीज को सुनहरे रंग में रंगकर छिप जाता और फिर सभी को घवाचौथ पर देता मानो कोई बालक दरारत पर रहा हो।

नानी ने झुककर पूछा

“यह क्या हुआ, मेरे लोटन कबूतर? तुम्हें सुज बना दिया? मैंने उस साल सिर वाले शतान से कहा था कि ”

“एक मिनट ठहरो। कानून-बायदे के अनुसार मैं अभी सब ठीक किए देता हूँ,” सिपाही ने जाते हुए कहा।

“सिपाही तो हमारे बलाखना का रहनेवाला निकला है ” अपने कपोलो से घासू पाछते हुए नानी ने कहा।

मुझे अभी भी ऐसा मालूम हो रहा था मानो मैं सपना देख रहा हूँ और इसलिये चुप रहा। डाक्टर आया, उसने मेरे हाथों की भरहमपट्टी की और इसके बाद नानी और मैं एक बगधी में शहर की सड़कों पर जा रहे थे।

“और तुम्हारे वो नाना का दिमाग तो एकदम सफाचट हो गया है,” नानी ने बताया, “इतने पजूस हो गये हैं कि तुम्हारी आंखों में से भी अपनी चीज निकाल ले। और हाल में उनके नये दोस्त समूर कमाने वाले छलीस्त ने तेरे नाना की भजन सहिता में से सौ हबल का एक नोट तिडी कर लिया। इसके बाद वह पुहराम भवा कि कुछ न पूछो,—अरे बाप रे!”

सूरज ज़ूब धमक रहा था और बादल आकाश में सफेद पक्षियों की भांति तर रहे थे। हम जमी हुई बोलगा पर बिछे तहतो का रास्ता पार कर रहे थे, तहतो के नीचे बक भनभनाकर उभरती थी, पानी छपछपाता था, साल गिरजों के गुम्बवो की सुनहरी सलीबें धमचमा रही थीं। रास्ते में हमें बड़े मुह की स्त्री मिली जो हाथों में मुलायम विलो की टहनियों का गट्टा लिए आ रही थी। वसत आ रहा था, शीघ्र ही ईस्टर का उत्सवकाल शुरू हो जाएगा।

मेरा हृदय सवा पक्षी की भांति फडक उठा।

“नानी, बहुत प्यार करता हूँ मैं तुम्हें!”

नानी को इससे जरा भी अचरज नहीं हुआ।

“यह स्वाभाविक ही है, तुम मेरे नाती जो हो,” नानी ने शांत भाव

से कहा। “बडबोली बने बिना कह सकती हू कि माता मरियम की मेहरवानी से पराये भी मुझे प्यार करते हैं।”

फिर, मुस्कराते हुए बोली

“शीघ्र ही वह उत्सव मनाएगी—बेटे का पुनजन्म होगा! लेकिन मेरी घेटी चार्या ”

और वह चुप हो गई

२

नाना से आगम ने ही मेरी मुलाकात हो गई। घुटनों के बल बैठे वह कुल्हाड़ी से एक लकड़ी को मोकीला बना रहे थे। उन्होंने ऐसे कुल्हाड़ी ऊपर उठाई, मानो मेरे सिर पर फेंककर मारना चाहते हों। फिर अपनी टोपी उतारते हुए व्यग्यपूर्वक बोले

“आ गए नवाब साहब, हमारे अत्यंत माननीय महामहिम! आए, स्वागत है आपका! नौकरी की भी धता बता आए? अच्छा है, अब करता जो मन में आए। बस, मेरे सिर न पडना! अरे तुम लोग ”

“हमें मालूम है, मालूम है,” नानी ने हाथ झटककर नाना का मुह धद कर दिया। कमरे में जाकर समोवार गर्म करते हुए नानी बोली

“तुम्हारे नाना इस बार सब कुछ गवा बंधे। उन्होंने अपनी सारी जमा पूजा अपने धमपुत्र निकोलाई को सूद पर दी और शायद रसोद तक न ली। पता नहीं कैसे क्या हुआ, लेकिन नाना एकदम सफाघट रह गए। सारी पूजा शायब हो गई। और यह सब इसलिए हुआ कि हमने कभी शरीबा की मदद नहीं की, दीन-दुलियो के प्रति कभी दया भाव नहीं दिखाया। तो भगवान ने सोचा काशीरिन परिवार के साथ मैं ही क्यों भलमनसाहत बरतू? और सभी कुछ ले लिया ”

उसने मुझपर देला और कहा

“भगवान का हृदय कुछ पसीजे, बूढ़े को यह इतना कष्ट न दे, इसका मैं थोड़ा-बहुत उपाय कर रही हू। रात को मैं जाती हू और अपनी मेहनत की कमाई में से चुपचाप कुछ पैसे बांट देती हू। चाहे तो आज तुम भी मेरे साथ चलो। मेरे पास कुछ पैसे हैं ”

नाना ने भुनमुनाते हुए भीतर पांव रखा।

“क्या भरोसने की फिक्र में हो?”

“तुम्हारी कोई चीज नहीं हटप रहे हैं,” नानी ने कहा, “चाहो तो तुम भी हमारे साथ शामिल हो सकते हो। सब को पूरा पड जाएगा।”

यह मेज पर बठ गए और धीमी आवाज में बोले

“एक प्याला भर दो ”

कमरे में प्रत्येक चीज जैसी की तैसी थी, सिवा इसके कि मा वाले कोने में उदास सुनापन छाया था और नाना के बिस्तर के पास वाली दीवार पर कागज का एक टुकड़ा लटका था जिसपर छापे के बड़े-बड़े अक्षरों में यह लिखा हुआ था

“धोसू, मेरी आत्मा का उद्धार करना और जीवन की हर घड़ी, हर पल में तुम्हारा पावन नाम मुझे याद रहे।”

“यह किसने लिखा है?”

नाना ने कोई जवाब नहीं दिया। कुछ दबकर नानी ने मुस्कराते हुए कहा

“इस कागज का मूल्य सौ दबल है!”

“तुम्हें मतलब!” नाना ने चिल्लाकर कहा। “मेरा धन है, मैं चाहे परो में लुटाऊँ।”

“लुटाने को अब रहा हो क्या है, और जब था तब एक-एक पाई बात से पकड़ते थे,” नानी ने शांत भाव से कहा।

“घुप रहो!” नाना चीख उठे।

यहां हर चीज वसी ही थी, ठीक पहले जैसी।

कोने में एक टुक पर कपड़े रखने की टोकरी रखी थी। उसमें कोल्या सा रहा था। वह जाग उठा। पलकों में छिपी उसकी आंखों को नीली चमक मुसिकल से ही दिखाई देती थी। वह अब और भी उदास, खोया खोया सा, एक छाया मात्र रह गया था। उसने मुझे पहचाना नहीं और चुपचाप मुह मोड़कर अपनी आंखें बंद कर लीं।

बाहर गली में दुलद समाचार सुनने को मिले। व्याखिर मर चुका था—पावन सप्ताह के दौरान उसे चेचक माता उठा ले गई। हाबी अपना बधना-बोरिया उठाकर नगर चला गया था, जब कि यात्र की टांगों को सकवा भार गया था और वह घर से बाहर तक नहीं निकल पाता था। यह सब बताते हुए काली आंख वाले कोलोमा ने झुमताकर कहा

“देखते देखते सब उठ गए!”

“सब कहा, एक व्याखिर ही तो मरा है?”

“एक ही बात है। हमारी गली में जो नहीं रहा, उसे एक तरह से मरा हुआ ही समझो। मिलना-जुलना और दोस्ती सब बेकार है। किसी से दोस्ती करो, जान-पहचान बढ़ाओ और तभी उसे कहीं काम पर भेज देते हैं या वह मर जाता है। तुम्हारे अहाते में, चेस्नोकोव घर में, कुछ नये लोग आए हैं—चेस्नेयेको परिवार के लोग। उनमें एक लडका है। उसका नाम है उसका। लडका बिल्कुल ठीक और खूब चुस्त है। उसने अलावा दो लडकियाँ हैं। एक छोटी है और दूसरी लगड़ी, बसाली सेकर चलती है। बेपत्ने में बड़ी सुन्दर है।”

एक मिनट तक कुछ सोचने के बाद उसने इतना और जोड़ दिया

“मैं और खूर्का उससे प्रेम करते हैं और हम हर घड़ी लडके अगडते हैं।”

“लडकी से?”

“लडकी से नहीं, एक दूसरे से। लडकी से तो बहुत कम ही अगडते हैं।”

यह तो मैं जानता था कि बड़े लडके और यहां तक कि बड़े लोग भी प्रेम में फंस जाते हैं और इसका भद्दा मतलब भी जानता था। मुझे परेगानी और कोस्नोमा के लिए कुछ हुआ, उसके गोल-मडोल शरीर और गुस्से से भरी काली आंखों की ओर देखते हुए मैं महसूस हुई।

उसी शाम को मैंने उस लगड़ी लडकी को देखा। सीढ़ियों से अंगन में उतरते समय उसकी बसाली नीचे गिर पड़ी और वह, मोम जसी उगलियो से जगले को धामे वहीं खड़ी रह गई—असह्य और क्षीणकाम। मैंने बसाली को उठाना चाहा, लेकिन मेरे हाथों में बंधी पट्टी ने बाधा दी। हाता और मुझलाहट से भरा मैं काफी देर तक बसाली को उठाने की कोशिश करता रहा और मुझसे कुछ ऊंचाई पर खड़ी हुई वह धीरे धीरे हसती रही।

“तेरे हाथों को क्या हुआ?” उसने पूछा।

“जल गए।”

“और मैं लगड़ी हूँ। तू हमारे इसी अहाते में रहता है? तुझे घस्पनात में बहुत दिनों तक रहना पड़ा? मुझे तो बहुत दिन लगे थे।”
उसने जसास भरकर इतना और जोड़ दिया

“बहुत ही दिन तमो!”

यह पुराना, मगर सफेद साफ धुला फ्राक पहने थी जिसपर घोड़े के नीले नात छपे थे। ढंग से सजारे गये बालों की एक मोटी और छोटी सी चोटी उसके चक्ष पर पडी थी। उसकी आँखें बड़ी और गम्भीर थीं जिनकी शान्त गहराइयां में नीली अग्नि दमकती थी और उसके क्षीण, तोखी नाक वाले चेहरे को आलोकित करती थी। उसकी मुस्कराहट भी प्यारी थी। लेकिन मुझे वह अच्छी नहीं लगी। रोगी जसा उसका समूचा शरीर जैसे यह कहता प्रतीत होता था

“हृष्या मुझे न छूना!”

यह कैसे हुआ कि मेरे साथी इसके प्रेम में पड गए?

“मे बहुत दिना से बीमार हू,” जुशी से, यहा तक कि आवाज में कुछ गव का पुट लाते हुए उसने मुझे बताया। “हमारी पडोसिन ने मुझपर टोना कर दिया था। लडाईं तो उसकी हुई मेरी मा से और इसका बदला लेने के लिए उसने टोना कर दिया मुझपर अस्पताल में डर लगा?”

“हा ”

उसकी उपस्थिति में मुझे बडा अटपटा लग रहा था और इसलिये मैं कमरे में चला आया।

आधी रात पे करीब नानी ने धीरे से मुझे जगाया।

“चलोगे नहीं? दूसरों का भला करोगे तो तुम्हारे हाथ जल्दी ठीक हो जाएंगे ”

उसने मेरी बाह पकडी और मुझे पकडे हुए अंधेरे में इस तरह ले चली मानो मैं अंधा हू। रात काली और नम थी, हवा तेज गति से बहने वाली नदी की भांति धमने का नाम नहीं लेती थी और रैत इतनी ठडी थी कि पाय सुन हुए जाते थे। नगरवासियों के घरा की अंधेरी खिडकियों पे भास नानी सावधानी से जाती, तीन बार सलीब का चिह्न बनाती, खिडकी की झोटक पर पाच कोपेक और तीन बिस्कुट रख कर एक बार फिर सलीब का चिह्न बनाती और तारकहीन आकाश की ओर आँखें उठाए पुसपुसावर कहती

“स्वयं की पवित्र रानी, सबपर दया करना - हम सभी तो पापी हैं तुम्हारी नजरों में, देवी मा!”

अपने घर से हम जितना ही दूर होते जा रहे थे, अंधेरा उतना ही घना होता जा रहा था, सनाटा बढ़ता जा रहा था। ऐसा मालूम होता था मानो रात के आकाश की अतल गहराइयों ने घाद और तारों को सदा के लिए निगल लिया हो। एक कुत्ता भागकर कहीं से आया और मुह बाएँ हमारे सामने खड़ा हो गया। अंधेरे में उसकी आँखें चमक रही थीं। भय के मारे मैं नानी से चिपक गया।

“डरो नहीं,” नानी ने कहा, “कुत्ता ही तो है। भूत प्रत इस समय बाहर नहीं निकलते, मुँगे बोल चुके हैं।”

नानी ने कुत्ते का पुचकारा और उसका तिर धपधपाते हुए कहा

“देख कुत्ते, मेरे माती को डरा नहीं, समझा?”

कुत्ते ने मेरी टाँगों से अपना बदन रगड़ा और हम तीनों आगे बढ़े। नानी बारह लिडकियो के पास गई और उनकी झोटक पर अपना ‘गल दान’ रत लौट आई। आकाश उजला हो चला। सलेटी घर अंधकार में से उभर आए, नापोल्नाया गिरजे की बुर्जा शक्कर की भाँति सफ़ेद चमकने लगी, कब्रिस्तान की इँटी वाली चारदीवारी में अधिक दरारें दिखाई देने लगीं।

“तुम्हारी यह बूढ़ी नानी तो भक गई,” वह बोली, “अब घर घटना चाहिए। औरतें जब सबेरे उठेंगी तो देखेंगी कि माता मरियम ने उनके बच्चों के लिए कुछ भेज दिया है। जब घर में पूरा नहीं पड़ता तो थोड़ा सहारा भी बहुत मालूम होता है। तुमसे क्या कहूँ आल्योशा कि लाग कितनी शरीबी ने जीवन बिताते हैं और कोई ऐसा नहीं है जिसे उनका कुछ ध्यान हो

अमीर आदमी नहीं करता चिंता भगवान की,
क्यामत के दिन की और भगवान के “घाय की।

सोने की माया में वह है कुछ ऐसा फना,

शरीबी के प्रति दिल में न उपजे क्या।

मरने पर जाएगा सीधा नरक,

सोने की माया में होगा नरक!

“बुध की बात तो यही है। हम एक दूसरे का ध्यान रखते हुए जीवित बिताए तो भगवान भी हम सबका ध्यान रखें। मुझे इस बात की खुशी है कि तुम अब फिर मेरे पास आ गए..”

मैं अस्पष्ट सा यह अनुभव करते हुए मानो मैंने किसी ऐसी चीज का सम्पर्क प्राप्त किया हो जिसे कभी नहीं भूला जा सकता, शान्त भाव से खुदा था। मेरे बराबर मे तात रग की लोमड़ी जसी धूयनी और सदय तथा क्षमा-याचना सी करती आला वाला बुत्ता चल रहा था।

“क्या यह अब हमारे साथ ही रहेगा?”

“क्यों नहीं, अगर इसका मन करता है तो हमारे साथ ही रहे। यह देखो, मैं इसे विस्फुट दूंगी, मेरे पास दो बच रहे हैं। आगो, कुछ बेर बेंच पर बठ कर सुस्ता ले। मुझे थकान मालूम हो रही है ”

हम एक फाटक के पास रखी हुई बेंच पर बंठ गए। बुत्ता हमारे पाद के पास पसरकर सूखे विस्फुट को चिचोड़ने लगा। नानी बताने लगी

“पास ही मे एक यहूदिन रहती है। उसके नौ बच्चे हैं, ऊपर-तले के। ‘कहो कैसे चल रहा है,’ एक दिन मैंने उससे पूछा। उसने कहा, ‘चलना क्या है, बस भगवान का ही भरोसा है।’”

नानी के गरम बदन से, चिपककर मेरी आल लप गई थी।

जीवन एक बार फिर तेज गति से बह चला—छलछलाता और हिलारें लेता हुआ। प्रत्येक नये दिन की प्रशस्त धारा अनगिनत घटनाओं की छाप मेरे हृदय पर छोड़ती जो कभी मुझे विस्मय विमुग्ध या चिन्तित करती, ठंस पहुँचाती या सोचने को विवश करती

लगड़ी लडकी से ययासम्भव बार-बार मिलने, उससे बाते करने, या बरबादे के पास पडी बेंच पर उसके साथ केवल चुपचाप बठे रहने की इच्छा मेरे हृदय मे भी शीघ्र ही प्रबल हो उठी। उसके सग चुपचाप बठने मे भी सुल मिलता। वह नहे से पक्षी की भांति साफ-सुथरी रहती और दोन प्रदेश के कइसाको के जीवन का सुंदर बणन करती। अपने चाचा के साथ, जो घौ-मफखन बनाने के किसी कारखाने मे मिस्तरी थे, एक लम्बे अर्से तक वह दोन प्रदेश मे रह चुकी थी। इसके बाद उसके पिता, जो फिटर का काम करता था, नोज्नी नोवगोरोद चले आए।

“मेरे एक चाचा और हैं जो खुद चार के यहा नौकरी करते हैं।”

छुट्टी की शाम को गली के सब लोग अपने घरों से बाहर आ जाते। लडके-लडकिया कश्मिस्तान की ओर निकल जाते जहा वे घेरे बनाकर गाते-नाचते, मद लोग बराबलानो मे पहुँचते और गली मे केवल स्थिया तथा

बच्चे ही रह जाते। स्त्रियाँ बेंचो या घरा के पास रेत पर ही बठ जाती और लडाईं झगडों तथा इधर उधर की अपनी बातों से धावांग सिर पर उठा लेतीं। बच्चे गेंद और गोरोदकी* के खेल खेलते और उनकी माताएँ खेल में दक्षता दिखानेवाली की प्रशंसा करतीं या प्रोत्साहन का परिचय देनेवाली का मजाक उड़ातीं। इतना शोर होता और वह मजा आता कि भुलाए न भूलता। बटो की उपस्थिति और उनकी नितनस्ती से हम बच्चे और भी जोश में आ जाते और अपनी पूरी चुस्ती-पुर्ती दिखाते हुए डटकर हाड करते। लेकिन, खेल में हम चाहे कितना भा क्यों न डूबे हो, कोस्तोमा, चूर्का और मैं लगड़ी लडकी के पास जाने और अपनी हिम्मत का बलान करने का समय निकाल ही लेते।

“तुमने क्या ल्युबमीला, कैसे एक ही घोट में मैंने सभी निगाओं को गिरा विमा?”

यह कई बार अपना सिर हिलाकर मधुर ढंग से मुस्करा देती।

पहले हमारा समूचा बल हमेशा खेल में एक ही ओर रहने का जोशिश करता था, लेकिन अब मैंने देखा कि चूर्का और कोस्तोमा विरोधी पक्षों में रहना पसंद करते हैं, और एक दूसरे के खिलाफ अपनी समूची शक्ति तथा चतुराई लगा देते हैं, यहां तक कि मारपीट और रोने घोने की नौबत आ जाती है। एक दिन दोनों को झगल करने के लिए बड़ों को हस्तक्षेप करना पड़ा और उनपर पानी उड़ोला गया मानो, धावमी न होकर वे फुत्ते ही।

ल्युबमीला उस समय बेंच पर बठी थी। अपना सही सालिम पाव वह धरती पर पटकती और जब लडनेवाले गुत्थम गुत्थया होकर लुढ़कते हुए उसके निकट आते तो वह उन्हें अपनी बसाखी से दूर धकेल देती और भय से चीलकर रहती

“बंद करो यह लडाईं!”

उसका चेहरा पीला पड जाता, मानो बेजान हो। आँखें धुंधली और फटी फटी सी हो जातीं। ऐसा मालूम होता मानो उसे बीरा आनेवाला हो।

*रूम में खेला जानेवाला एक खेल जिसमें एक चौकोर घेरे में छठे रूपे लकड़ी के बेलनदार टुकड़ा को दूर से डडा मारकर घेरे में स बाहर निकाला जाता है।—स०

एक अग्र्य बार गोरोंदकी के खेल में चूर्का से बुरी तरह हार खाने के बाद कोस्त्रोमा परचूनी की एक दुकान में, जई की पेट्टी के पीछे मुह छिपाकर दुबककर बठ गया और सुबक-सुबककर मूक ढग से रोने लगा। भयानक दुःख था। उसने अपनी बत्तीसी इतने जोरो से भींच ली थी कि उसके जबड़े पे पुट्टे खूब उभर आए और उसका क्षीण चेहरा मानो पथरा गया हो। उसकी बाली उदासी भरी आँखों से बड़े बड़े आसू गिर रहे थे। मेरे दम दिलासा देने पर उसने आसुओं के कारण रुधे कण्ठ से फुसफुसाकर कहा

“देख लेना मैं उसके सिर पर ईंट दे माहगा तब उसे पता चलेगा।”

चूर्का बहुत उडत हो गया। गली के बीचोबीच इस तरह चलता मानो स्वयंवर में जा रहा हो—सिर पर सिरछी टोपी रखे, जेबो में हाथ डाले।

वह बातों के बीच से चूक की पिचकारी छोडना सीख गया और यकीन दिलाता

“मैं जल्दी ही सिगरेट पीना सीख लूंगा। वो बार तो मैं पी भी चुका हूँ, लेकिन मतली आती है।”

मुझे यह सब अज्जा न लगता। मैं देख रहा था कि मेरा साथी मुझसे दूर होता जा रहा है और मुझे प्रतीत होता कि इसके लिये ल्युदमीला ही जिम्मेदार है।

एक शाम को जब मैं अपने बटोरे हुए चियडे और हड्डियों की छानबीन कर रहा था ल्युदमीला अपनी बसाली पर झूलते तथा अपना बाहिना हाथ हिलाते हुए मेरे पास आई।

“नमस्ते!” तीन बार अपने सिर को हल्का सा झटका देते हुए उसने कहा। “कोस्त्रोमा तेरे साथ गया था?”

“हां।”

“और चूर्का?”

“चूर्का अब हमारे साथ नहीं खेलता। और यह सब तेरा ही दोष है। वे दोनों तुझसे प्रेम करते हैं और इसीलिए आपस में लडते हैं।”

उसका चेहरा लाल हो उठा, किंतु व्यग्यपूर्ण स्वर में बोली

“यह और तो। मैं किसलिये बोयी हूँ?”

"तूने उन्हें अपने से प्रेम क्यों करने दिया?"

"मैं क्या उनसे कहने गई थी कि तूम मुझसे प्रेम करो?"
गुस्ते में जवाब दिया और यह बहते हुए धली गई। "यह सब बकवास है! मैं उनसे बड़ी हू। मैं चौबह साल की हू। अपने से बड़ी सड़किया के भी क्या कोई प्रेम करता है?"

"तुझे बड़ा पता है!" उसके हृदय की आहत करने के सत्य स की चिल्लाकर कहा। "दुकानदार क्लीस्त की बहन इतनी बूढ़ी हो गयी फिर भी बेर सारे लडके उससे छेड़लानी करते रहते हैं!"

असाथी को रेत में गहरी गडाले हुए ल्युदमीला मेरे पास सीटा।
"तू खूब कुछ नहीं जानता," उसने आसुओं से भीगी आवाज में जल्दी जल्दी कहा। उसकी सुंदर आँखों में बिजली कौंध रहा थी।
"दुकानदार की बहन तो एक आधारा औरत है, लेकिन मैं—तू क्या मत भी बसी ही समझता है? मैं अभी छोटी हू। किसी को भी अभी मत छूना या चिकोटी नहीं काटना चाहिये। अगर तूने "कानचवालका" उपन्यास का दूसरा भाग पढ़ा होता तो तू इस तरह की बातें नहीं करता।"

मह सुबकियां लेती हुई धली गई। मुझे उसपर तरस आया। उसके हाथों में सचमुच कुछ सचाई थी जिससे मैं परिचित नहीं था। मेरे साथी क्यों उसे चिकोटी काटते हैं? तिसपर यह भी कहते हैं कि वे उससे प्रेम करते हैं।

अगले दिन ल्युदमीला से अपनी चलती माफ कराने के लिए मैंने दो कोपक की उसकी मनपसंद मोठी गोलिया खरीदीं।

"लोगी?"

"आ यहा से! मैं तुमसे बोस्ती नहीं रखना चाहती," उसने जबदस्ती गुस्ते में भरकर कहा।

लेकिन उसी क्षण उसने यह कहते हुए गोलियां ले लीं

"इन्हें कागज में तो लपेट लिया होता। जरा अपने हाथ तो देख, कितने गंदे हैं।"

"मैंने इन्हें बहुत धोया, लेकिन ये साफ ही नहीं हुए।"

उसने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसका हाथ सूखा और गरम था। उसने मेरा हाथ उलट-पलटकर देखा।

"कितना धराव कर लिया तूने हाथ "

“तेरी उगलियाँ भी तो छिदी हुई हैं ”

“यह सुई की मेहरबानी है। मैं बहुत सीती हूँ ”

कुछ मिनट रुककर, इधर-उधर ताकने के बाद उसने सुझाव दिया

“चल, वहाँ छिपकर बैठें और “कामचदालका” पढ़ें। क्या ख्याल है?”

छिपकर बठने की जगह खोजने में काफी समय लग गया। अंत में हमने निश्चय किया कि हमारा घर की डपोड़ी ठीक रहेगी। वहाँ अंधेरा लहर था, लेकिन हम खिडकी के पास बैठ सकते थे जो सायबान और कसाईखाने के बीचवाले गंदे भवान की ओर खुलती थी। लोग बिरले ही उधर आते थे।

सो वह वहाँ, खिडकी के पास बैठ गई। उसकी लगड़ी टांग बेंच पर फली थी और अच्छी सलाभत टांग फर्श पर। एक खस्ताहाल पुस्तक उसकी आँखों के सामने थी और उसके मुँह से नीरस तथा समझ में न आनेवाले शब्दों की धारा प्रवाहित हो रही थी। लेकिन मुझे उसने अभिभूत कर लिया। फर्श पर बठा हुआ मैं उसकी गम्भीर आँखों से निकलती दो नीली लपटों को पुस्तक के पन्नों पर तिरते हुए देख सकता था—कभी वे आसुओं के कारण धुंधली हो जातीं और वह परंपराती आवाज में, समझ में न आनेवाले अनजाने शब्द-समूहों का उच्चारण करती। मैं इन शब्दों को पकड़ता और विभिन्न प्रकार से जोड़-तोड़ बठाकर उन्हें एक छंद में बाँधने की कोशिश करता। इसका नतीजा यह होता कि किताब में क्या कहा गया है वह बिल्कुल मेरे पल्ले न पड़ता।

मेरे घुटनों पर कुत्ता सोया हुआ था। मैंने उसका नाम पवन रख छोड़ा था। कारण कि वह लम्बा और क्षत्रीला था, बहुत ही तेज दौड़ता था और चिमनी में पतझड़ की हवा की तरह आवाज निकालता था।

“सुन रहा है?” लडकी ने पूछा।

मैंने चुपचाप सिर हिलाकर हामी भर दी। शब्दों का आल-जाल मुझे अधिकाधिक विचलित कर रहा था और मैं अधिकाधिक बेचनी और व्यग्रता के साथ, शब्दों को एक नये ढंग में गूँथकर उन्हें किसी गीत के शब्दों का रूप देना चाहता था, जिसमें प्रत्येक शब्द मानो सजीव होता है तथा आसमान के तारे की तरह उज्ज्वल जगमगाता है।

जब अंधेरा हो गया तो ल्युदमीला ने अपना थका हाथ जिसमें वह पुस्तक धामे थी, नीचे कर लिया।

“बढ़िया है न? देखा न ”

इस शाम के बाद से हमाम घर की ड्योढ़ी में बहुधा हमारी बरक जमती। और सबसे बड़े सन्तोष की बात तो यह थी कि ल्युदमीला ने शीघ्र ही “कामचवाल्का” का पोछा छोड़ दिया। मैं उसे यह नहीं बता सका कि यह अतहीन पुस्तक किस बारे में है। अन्तहीन इसलिए कि दूसरे भाग के बाद (जिससे हमने इसे पढ़ना शुरू किया था) तीसरा भाग सामने आया और ल्युदमीला ने बताया कि चौथा भाग भी है।

बादल बरखा के दिनों में तो यहाँ बठने में विशेष आनन्द आता, केवल शनिवारों को छोड़कर क्योंकि शनिवार के दिन हमाम घर गम किया जाता था।

वर्षा समाप्तम घरसती और किसी को घर से बाहर न निकलने देती। फलत हमारे अंधेरे कोने के पास किसी के भी फटकने का कोई खतरा न रहता। ल्युदमीला की जान इस बात से बेहद सूखती थी कि कहीं हम पकड़े न जाए।

“तुम्हें पता है कि हमें इस तरह बठा देखकर वे क्या सोचेंगे?” वह धीरे से पूछती था।

यह मैं जानता था और इसलिए पकड़े जाने से मैं भी डरता था। यहाँ हम घण्टों बठे बातें करते। कभी मैं उसे नानी की कहानियाँ सुनाता और कभी ल्युदमीला मेद्वेदिस्ता नदी के तटवर्ती कस्बाको के जीवन का वर्णन करती।

“वहाँ के क्या कहने!” उसास भरकर वह कहती। “यहाँ की भाति नहीं। यहाँ तो केवल भिखारी ही रह सकते हैं ”

मैंने निश्चय किया कि बड़ा होने पर मैं जहर मेद्वेदिस्ता नदी की तरफ चलाऊँगा।

शीघ्र ही हमाम घर की ड्योढ़ी में हमारी बठको का सिलसिला खत्म हो गया। ल्युदमीला की माँ को एक समूर कमानेवाले के यहाँ काम मिल गया और वह सवेरे ही घर से चला जाती, उसकी बहन स्कूल में पढ़ती थी और भाई एक टाइल फवटरी में काम करता था। जब मौसम खराब होता तो खाना बनाने, कमरे और रसोई को ठीक-ठाक करने में मैं उसका हाथ बटाता।

“हम-तुम पति-पत्नी की तरह ही रहते हैं,” वह हसकर कहती।

“केवल हम एकसाथ नहीं सोते। सच पूछो तो हमारा जीवन उनसे अच्छा है—पति तो कभी अपनी पत्नियों की मदद नहीं करते।”

जब भी मेरे पास कुछ पैसे हाते मे कोई मिठाई खरीद लाता और हम दोनों चाय बनाते, पीते और बाद में ठंडा पानी डालकर समोवार को ठंडा कर देते जिससे ल्युदमीला को चिडचिडी मा यह न ताड सके कि हमने समोवार को गम किया था। कभी-कभी नानी भी आकर हमारे साथ बैठ जाती, लैस चुनती या कसौदा काढती और हमें बहुत ही बढ़िया कहानिया सुनाती और जब नाना बाहर चले जाते तो ल्युदमीला हमारे यहा आती और दीन दुनिया की चिन्ता से मुक्त हम खूब मौज मनाते।

नानी कहती

“कितना ठाठदार जीवन है हमारा। अपने पैसे से जो जी में आये, वही करो।”

वह हमारे मिलने-जुलने को बढ़ावा देती।

“लडके लडकी को दोस्ती अच्छी चीज है केवल उहे कोई अटपटी हरकत नहीं करनी चाहिए ”

और अत्यंत सीधे-सादे ढंग से नानी हमें बताती कि ‘अटपटी हरकत’ से उसका क्या मतलब है। वह बहुत मुदर प्रेरणापूण ढंग से अपनी बात कहती और मैं सहज ही समझ जाता कि फूलों को उस समय तक नहीं छेडना चाहिए जब तक कि वे पूरी तरह से खिल न जाए, अन्यथा न तो वे सुगंध देंगे और न ही उनमें फल आएंगे।

‘अटपटी हरकत’ करने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि ल्युदमीला और मैं उन चीजों के बारे में बातें नहीं करते थे जिनका डिङ्ग आने पर साधारणतया चुप्पी साध ली जाती है। हा, कभी-कभी ऐसे विषयों पर बातें चल ही पडती थीं, क्योंकि स्त्री पुरुष सम्बन्धों के भोडे चित्र बहुत अक्सर और बेहद परेशान करनेवाले रूप में हमारी आंखों के सामने आते थे और हमें हृद से ब्यादा विक्षुब्ध करते थे।

ल्युदमीला के पिता येथेयेन्को की उम्र चालीस से कम न होगी। या वह टैलरबीला घुघराले बाल, घनी मूछ और भारी भौहें जो एक अजीब गर्विले अदाकार में नाचती रहती थीं। स्वभाव का इतना चुप्पा कि देखकर अचरज होता। मुझे याद नहीं पडता कि मैंने उसे कभी बोलते गुना

हो। जब वह अपने बच्चा को ध्यान करता तो भूमे-बहुरों की भाँति धायारा करते रह जाता और अपनी पत्नी को पीटते समय भी उसके मुँह से एक शब्द न निकलता।

पय-समारोहों की शामो की नीले रंग की बमोद, चौड़ी मोरियों का मलमलो पतलून और पालिग बिये गये घमकदार जूते पहने, बथ पर बडा सा एवाडियन सटकाये वह घर से निकलकर फाटक पर घा हडा होता—घुस्त और दुस्त, परेड रे लिए तयार सजिव की भाँति। गोम्र ही फाटक के सामने घहल-घहल गुरू हो जाती। लडकियो और तिमों के बल बलखा के झुड की भाँति सामने से गुजरते। कभी वे बनवियों से बेलतों—बुछ टिपकर पलकी को झोट मे से। कभी वे खुलकर नदों लडातों—मानो भूली घालों से उसे घटकर जाना चाहती हों। उपर वह अपना क्षयर फलाये वाली घालों से उनका अग अग टटोलता। घालों की इस मूक बातचीत का और पुष्प के सामने स्थियो की इस मनरूस तथा घौमी गतिविधि मे कुत्ते कुतियो की हरकत जसी कोई अप्रिय चीज होती थी। ऐसा लगता था कि जिसको भी वह चाहेगा, जिस किसी की ओर भी वह अपनी पुष्प दृष्टि से इशारा करेगा, वही उसके सामने आकर बिछ जाएगी, सडक की धूल चाटने लगेगी।

ल्युदमीला को मा बडबडाती

“क्या बकरे की भाँति घालें नचा रहा है—निलज्ज तोबडा!” लम्बी, बुखली-पतली, लम्बोतरा और घयोवाला चेहरा, मियाधी झुलार के बाद छोटे छोटे छटे दृष्ट बाल—वह यिती हुई साडू जसी लगती थी।

ल्युदमीला बाल, मे ही बठी हातो और इपर उपर की बातें करके सडक से अपनी मा का ध्यान हटाने का निष्कल प्रयत्न करती।

“मेरी जान न खा, लगडी चुडल!” बेचनी से अपनी घालें मिचमिचाते हुए उसकी मां बुदबुदाकर कहती। उसकी छोटी छोटी मगोला घालों में एक अजीब सूनापन और स्थिरता दिखाई देती—मानो उन्होंने किसी चीज को छुआ हो और फिर उसीसे चिपककर, वहाँ की वहाँ स्थिर रह गई हों।

“पुस्ता न करो मा, इससे कुछ पल्ले नहीं पडेगा,” ल्युदमीला कहती। “चरा उस घटाई बनानेवाने की विषया को तो देखो, उसने क्या तिगार किया है!”

मा उस लम्बी-तडगी विधवा की ओर देखती। फिर आसुओ मे भीगे स्वर मे निममतापूर्वक कहती, "मे इससे बढ़कर सिगार भरती अगर तुम तीनो न होते। भीतर और बाहर, तुम लोगो ने कुछ भी बाकी नहीं छोडा, मुझे पूरी तरह से नोंच खाया!"

घटाई बनानेवाले की विधवा छोटे से मकान जसी लगती थी। उसका बस छज्जे की भांति धागे को निकला हुआ था। कसकर बांधे हुए हरे हलाल से घिरा उसका साल चेहरा ऐसा मालूम होता था मानो वह एक शरोजा है जिसे सास के सूरज की लाली ने रग दिया है।

येस्सेयेको अपना एकाडियन सभालता और बस से सटाकर बजाने लगता। बड़े रग थे वाद्य-यंत्र मे, उससे निकलती ध्वनिया कहीं खींच ले जातीं, गली के तमाम बच्चे खिचे चले आते, वादक के पंरो मे गिरते और मुग्ध होकर रेत पर बुत बने बठे रहते।

येस्सेयेको की पत्नी फुकार छोडती, "जरा ठहर तो, थो दिन दूर नहीं जब तेरी खोपडी तोड दी जायेगी।"

वह चुप्पी साथे तिरछी नजर से उसकी ओर देखता।

घटाई बनानेवाले की विधवा हलीस्त की बुकान के सामने वाली बेंच पर तन्मय सी बठी रहती। उसका तिर एक ओर को मुका होता और भाव बिभोर होकर वह संगीत सुनती रहती।

कब्रिस्तान के उस पार का मदान छिपते हुए सूरज की लाली से सिद्धरी ही उठता और गली एक तेज नदी का रूप धारण कर लेती जिसमे रग बिरंगे शोख कपडो मे लिपटे मास के लोथडे तरते और बच्चे बगूलो की भांति धक्कर लगाते। गम हवा मादक ही उठती। धूप मे तपी रेत से पचनेली गंध उठती जिसमे धूधडखाने से आनेवाली रक्त की घोमिल गंध सब से तेज होती। समूर कमानेवालो के अहातो से खालो की नमकीन तेजाबी गंध आती। स्त्रियो की चखचख और चुचुआहट, नशे मे धुत पुरुषो का शोर, बच्चो की तेज चिल्लाहट और एकाडियन के मद सप्तक के स्वर मिलकर एक ऐसे संगीत का रूप धारण कर लेते जिसकी धडकन दूर दूर तक सुनाई देती—मानो प्रसवमान धरती अथक रूप से गहरी उसासे ले रही हो। सभी कुछ फूहड, नग्न और भोडा होता, और इस कुत्सित जीवन के प्रति जो इस हद तक निलज्ज पाशविकता मे डूबा था, ध्यापक तथा सबल विश्वास का सन्धार करता। अपनी शक्ति की डींग मारते हुए,~

यह उवासी और व्यग्रता के साथ उनकी निकासी के लिए भाग सो रहा था।

और इस शोर शराबे में से कभी-कभी कुछ ऐसे जानदार गज उठते आते जो हृदय में छुव जाते और स्मृति में जमकर बस जाते

“सभी एक साथ मत टूट पडो, यह ठीक नहीं है बारी-बारी से योग्य चाहिये ”

“जब हम छुद अपने पर रहम नहीं करते तो दूसरे ही हम पर क्यों रहम करें ? ”

“क्या छुदा ने मजाक के लिए ही सुगाई को बनाया था ? ”

रात घिरने लगती। चाय में और भी सावगी आ जाती। गोर गराभा शांत हो चलता। लकड़ी के घर मानो बढ़ और फलकर छामाभो का बाना धारण कर लेते। सोने का समय हो जाता। बच्चों को घरों में खड़े दिवा जाता, कुछ वहीं बाड़ो के नीचे, अपनी माताभो के पावों पर या गो में सो जाते। रात आने पर बड़े बच्चे भी अधिक शान्त, अधिक नम्र हो जाते। येसेवेको, न जाने क्या, बिलौन हो जाता--मानो वह छाया बनकर उड़ गया हो। चटाई बनानेवाले की विधवा भी गायब हो जाती और एकाडियन की गहरी ध्वनि अब कबिस्तान के उस पार वहीं बहुत दूर से आती मालूम हाती। ल्युदमीला की मा, शरीर को दोहरा किए, वहीं बेंच पर बठी रहती। उसकी पीठ बिल्सी की भांति कमान सी मुकी होती। मेरी नानी पडोसिन के पास जा जनाई और शाबी ग्याह का जाड बठाने का काम करती थी, चाय पीने चली जाती। यह पडोसिन एक भारा भरकम और मजबूत पुट्टो वाली स्त्री थी। उसके चेहरे पर बत्तल ही चीब जसी नाक चिपकी थी। उसके मदनि बस पर 'मौन के मुह में जाते टुओ की रक्षा' नामक सोने का एक तमघा लटका रहता था। हमारी गली में सभी उससे डरते थे। वे उसे डापन, जाडू-टोने करनेवाली समझते थे। लोगो का कहना था कि एक बार वह लपटों की परवाह न कर, जलते हुए घर में घुस गई थी और किसी फनल के तीन बच्चों तथा बानार पत्नी को अकेली ही बाहर निकाल लाई थी।

नानी और उसमें मित्रता थी। गली में आने जाते जब भी वे एक दूसरे को देखतीं तो उनके चेहरा पर, दूर से ही, एक खास हादिकतापूर्ण मुसकराहट खेल जाती।

एक दिन कोल्त्रोमा, ल्युदमीला और मे फाटक के पास बेंब पर बठे थे। चूर्का ने ल्युदमीला के भाई को लडने के लिए सलकारा था, वे एक-दूसरे से गुल्यम-गुल्यम हुए, घूल में हाथ-भाव पटक रहे थे।

ल्युदमीला सहमते हुए अनुरोध कर रही थी, "बंद करो यह लडाई!"

कोल्त्रोमा की काली आँखें ल्युदमीला पर जमी थीं। कनखियो से उसे देखते हुए वह जिकारो कालीनिन का विस्सा मुना रहा था। कालीनिन एक बूढ़ा खुरदर था। उसकी आँखों से भक्कारी टपकती थी और समूची बस्ती में वह बदनाम था। हाल ही में वह मरा था लेकिन उसका ताबूत कब्रिस्तान में दफनाया नहीं गया, बल्कि भ्रम कत्रो से अलग ऊपर ही छोड़ दिया गया। उसके ताबूत का रंग काला था और पाये ऊँचे थे। डककन पर, सफेद रंग में सलीब, बछी, एक उडा और दो हुड्डियों के चित्र बने थे।

बूढ़ा हर रात अपने ताबूत से उठता है और किसी चीज की खोज में, पहले मुँगे के बाग देने तक, कब्रिस्तान में इधर-उधर भटकता रहता है।

"ऐसी उरावनी बातें क्यों करते हो!" ल्युदमीला ने अनुरोधपूर्ण स्वर में कहा।

"मुझे जाने दो!" ल्युदमीला के भाई के चगुल से अपने को छुडाते हुए चूर्का चिल्लाया और खिल्ली उडाने के अदास में कोल्त्रोमा से बोला। "क्यों झूठ बोल रहा है? मैंने खुद अपनी आँखा में उँहे ताबूत को दफनाते और कब्र के पत्थर के लिए एक खाली ताबूत रखते हुए देखा है और जहाँ तक उसके भूत बनकर रात को कब्रिस्तान में भटकने की बात है, तो इसे नशे में धुल लोहारो ने खुद अपने मन से ही गढ़ लिया है!"

"हम तो तब जाने जब तुम एक रात कब्रिस्तान में जाकर बिताओ!" उडती हुई नजर से भी उसकी ओर देखने का कष्ट न कर कोल्त्रोमा ने बिगडकर जवाब दिया।

दोनों में बहस छिड गयी। उदासी से अपना सिर झटकते हुए ल्युदमीला ने अपनी मा से पुछा

"क्यों मा, क्या रात को मृतात्माएं भक्कर लगाती हैं?"

दूर से आयी हुई प्रतिध्वनि की तरह मा ने जवाब दिया, "हाँ, लगाती हैं।"

दुकानदारिन का बीस वर्षीय मोटा थलथल और लाल गालों वाला बेटा वालेक हमारे पास आया और हमारा विवाह मुनकर बोला

“तीनों में से अगर कोई भी सुबह तक ताबूत पर लेटा रहे, तो मैं उसे बीस कोपेक और दस सिगरेट देने के लिए तयार हूँ, अगर उतर भागे तो मुझे जी भरकर उसके कान खोंचने का अधिकार होगा। योनी, क्या कहते हो?”

सभी झोपकर चुप हो गये। ल्युदमीला की माँ ने इस खामोशी को ताड़ते हुए कहा

“मूलता की बातें न कर। बच्चों को इस तरह के काम करने के लिए उकसाना क्या अच्छा है?”

“मुझे एक दबल दे तो मैं जाने को तयार हूँ,” घूर्का बुदबुदाया।

“बीस कोपेक में जाते नानी मरती है, क्यों?” कीस्त्रोमा ने एक सा मारते हुए कहा। फिर धाकेक से बोला, “तुम इसे एक दबल भी दोगे तब भी नहीं जाएगा। बेकार की डॉंग मार रहा है।”

“अच्छी बात है। ले दबल!”

घूर्का जमीन से उठा और बाड़ के साथ-साथ चलता हुआ धुपचाप तथा पीरे पीरे वहाँ से लिसक गया। कीस्त्रोमा ने मुह में अपनी जगलियाँ डालकर उसके पीछे खोर से सीटी बजाई और ल्युदमीला द्यप्र द्यप्र में बह उठी

“हाय राम भाखिर इतना बड़ चढ़कर शोलने की उतरत ही क्या थी?”

“कायर हो तुम सब!” बालेक ने कीचते हुए कहा। “भीर राती के सब से बढ़िया लडत समझे जाते हो। पिल्ले वहाँ के”

उनका इस तरह कीचना मुझे अखरा। यह मोटा बालेक हमें कभी अच्छा नहीं लगता था। वह हमेशा बच्चों को कोई न कोई शंतानी करने के लिए उकसाना, लडकियों और स्त्रियों के बारे में गदे क्रिस्ते सुनाता और बच्चों को उनकी खिल्ली उड़ाना सिखाता। बच्चे उसका बहने में आ जाते और बाड़ में इसका बुरी तरह फल भुगतते। न जाने क्यों, मेरी कुत्ते से उसे खास लिङ्ग थी। वह हमेशा उसपर पत्थर फेंकता और एक दिन तो उसने राटी के टुकड़े में सूई रखकर उसे खिला दी।

लेकिन घूर्का का इस तरह से मुह की खाकर लिसक जाना मुझे और भी दयादा अखरा।

मैंने बालेक से कहा

“ला, दे खल, मैं जाता हू।”

मेरी खिल्ली उड़ते और मुझे डराते हुए वह ल्युद्मीला की मा के हाथ में खल देने लगा।

“नहीं, मुझे नहीं चाहिए, मैं नहीं रखूगी तुम्हारा खल!” ल्युद्मीला की मा ने कड़ाई से कहा और गुस्से में भरकर चली गई।

ल्युद्मीला ने भी खल लेने से इन्कार कर दिया। बालक हमारा भ्रम और भी अधिक भ्रमाक उड़ाने लगा। मैं बिना खल लिए ही जाने को तयार था कि तभी नानी आ गई। उसने सारा हाल सुना, खल भ्रमने हाथ में ले लिया और शान्त स्वर में मुझसे कहा

“अपना कोट पहन लेना और एक कम्बल भी साथ ले लेना, सुबह होते ठंड हो जाती है ”

नानी के शब्दों ने मुझे यह उम्मीद बधाई कि मेरे साथ कोई बुरी बात नहीं होगी।

बालक ने शर्त रखी कि सुबह होने तक सारी रात मैं ताबूत पर घटा या लेटा रहूँ, किसी भी हालत में वहाँ से न हटूँ चाहे ताबूत हिले-डुले या उस समय डगमगाएँ जब बड़ा कालीनिन उससे बाहर निकलना शुरू करे। अगार मैं उसपर से कूदकर जमीन पर खड़ा हो गया तो बाकी हाथ से जाती रहेगी।

“ध्यान रहे,” बालक ने चेतावनी दी, “मैं सारी रात तेरी निगरानी करूँगा।”

जब मैं क्रमिस्तान के लिए रवाना हुआ तो नानी ने मुझपर सलीब का चिह्न बनाया और मुझे सलाह दी

“अगर तुम्हें कुछ दिखाई भी दे तो अपनी जगह से हिलना नहीं। बस, माता मरियम का नाम लेना, सब ठीक हो जाएगा ”

मैं तेज उगों से चल दिया। एक ही चिन्ता मुझे थी। वह यह कि जिस हिस्से को मैंने उठाया है, वह जल्दी से जल्दी पूरा हो जाए। बालक, कोस्त्रोमा तथा अन्य कुछ सबके भी मेरे साथ ही लिए। इंदो की दीवार को पार करते समय मेरी टांग कम्बल में फस गई और मैं गिर पड़ा। लेकिन मैं फर्ती से उछलकर खड़ा हो गया मानो खुद धरती ने पीछे से सात मारकर मुझे फिर से पंदा कर दिया हो। दीवार के दूसरी ओर से

हसने की आवाज सुनाई दी। मेरे हृदय में जैसे एक झटका सा लगा और सारे बदन में फुरफुरी सी दौड़ गई।

ठाकरे राता हुआ मैं वाले ताबूत के पास पहुँचा। एक ओर से वह रेत में घसा था, दूसरी ओर उसके छोटे-छोटे, मोटे पाये दिखाई दे रहे थे। लगता था मानो किसी ने उसे उठाने की कोशिश की हो और उसे जगह से हिलाया हो। मैं ताबूत के सिरे पर, उसके पायों के ऊपर बैठ गया और इधर उधर नजर डाली छोटे-छोटे टीले की भाँति उभरी ऋषियों का क्रिस्तान भूरे सलेटी रंग की सलीबों का घना जंगल सा भातूम होता था। सलीबों की लपलपाती हुई छायाएँ मानो हाथ फलाकर ऋषियों के दूहों की सतत घास का आतिगन करती प्रतीत होती थीं। ऋषियों के बीच कहीं-कहीं, दुबले पतले, क्षीण भोज वृक्ष उगे थे जिनकी डालें एक-दूसरे से पुष्पक ऋषियों के बीच सम्पर्क स्थापित कर रही थीं। उनकी परछाइयों की लस को बेधती हुई घास की सुखी पत्तियाँ नजर आती थीं। भूरे रंग की ये सुखी पत्तियाँ सबसे भयानक थीं। क्रिस्तान का गिरजा बर्फ के एक टीले की भाँति खड़ा था और गतिहीन बावलों में क्षीणकाय चाद चमक रहा था।

याज्ञ के पिता—'निकम्मे आदमी'—ने बड़ी धलसाहट के साथ गदत का घटा बजाया। हर बार, जब वह घंटे की रस्ती खींचता तो वह छत की चादर से रगड़ टाकर पहले तो दर्दाली आवाज पदा करती और उसके बाद छोटे घंटे की शोक में डूबी लघु आवाज सुनाई देती।

मुझे चौकीदार की बात याद हो आई। वह अक्सर कहा करता था, "भगवान् उनींची रातो से बचाये"।

सभी कुछ भयानक और दमघोड़ था। रात ठडी थी, फिर भी मैं पसीने से तर हो गया। अगर बूढ़े फालीनिन ने अपने ताबूत में से निकलना शुरू किया तो क्या मैं भागकर चौकीदार की कोठरी तक भी पहुँच सकूँगा या नहीं?

मैं क्रिस्तान के कोने-कोने से परिचित था। याज्ञ और अपने अग्र्य साथियों के साथ यहाँ आकर बीसियों बार हम धमाचौकड़ी मचा चुके थे। और वहाँ, गिरजे के पास, मेरी माँ की कब्र थी।

अभी सब कुछ नींद की गोद में नहीं गया था। बस्ती की ओर से क्रूहकहे और गीता के टुकड़े अभी भी सुनाई दे रहे थे। पहाड़ियों पर से

रेलवे के उन खड्डों से जहाँ मजदूर रेत खोदकर निकालते थे, या पडोस के कातीचोक्का गाव से, एकाडियन के चीखने और सुबकिया सी लेने की आवाज आ रही थी। सदा नशे में धुत्त रहनेवाला लोहार मियाचोव कब्रिस्तान की दीवार के उस पार लडखडाता तथा गीत गाता हुआ जा रहा था। सुनकर मैं उसे पहचान गया

ओ हमारी अम्मा
के पापवा हैं कम्मा
और न किसी को चाहवे
अपुआ ही उसे भावे

जीवन और चहल पहल की इन आखिरी सासों को सुनकर कुछ हिम्मत बची, लेकिन घटे की प्रत्येक टनटन के साथ सनाटा गहरा होता गया और घरागाहों को डूबोने और उन्हें छिपा लेनेवाली नदी की भाँति निस्तब्धता ने हर चीज का अस्तित्व मिटा दिया, अपने में उसे समा लिया। आत्मा सीमाहीन, अथाह शून्य में तर रही थी और अंधेरे में वियासलाई की तरह बुझ जाती थी—शून्य के एक ऐसे महासागर में वह पूणतया विलीन हो गई जिसमें केवल हमारी पृथ्व से दूर रहनेवाले तारे जीवित रहते और जगमगाते हैं और जमीन पर हर मुर्दा और अवाछनीय चीज गायब हो गयी।

कम्बल को अपने चारा ओर लपेटकर और पाव सिकोडकर मैं बठा था। मेरा मुँह गिरजे की ओर था और हर बार जब भी मैं हिलता डुलता, तामूस चरमर करता और रेत किरकिरा उठती।

मेरे पीछे जमीन से किसी चीज के टकराने की ठक से आवाज हुई—पहले एक बार, फिर दूसरी बार, और इसके बाद ईंट का एक ढेला तामूस के पास आ गिरा। यह भयावह था, लेकिन मैंने तुरत भाप लिया कि बालेक और उसके साथी मुझे डराने के लिए दीवार के उस पार से ये सब फेंक रहे हैं। यह सोचकर कि दीवार के उस पार लोग मौजूद हैं, मेरी दिलजमई हुई।

अपने भाप ही मा के बारे में विचार आने लगे एक बार उसने मुझे तभी आ पकड़ा था जब मैं सिगरेट पीने की कोशिश कर रहा था और वह मुझे मारने लगी। तब मैंने उससे कहा था

“नहीं मारो। बिना मारे ही मेरा घुरा हाल है। मतली घाती है..”

मार के बाद मैं झलावघर के पीछे जा छिपा। मां की धायाद बानी में घाई, यह नानी से कह रही थी

“कितना हृदयहीन सडका है। इसके मन में किसी के लिए ममता नहीं है ”

मा की यह बात सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ था। यह जब भी मुझे मारती पीटती थी तो मुझे उसपर तरस आता था, उसके लिए सॉप अनुभव होती थी बिरले ही वह मुझे उचित और ऐसी सजा देती थी, जो मेरी करनी के अनुरूप होती।

दुःख पहुंचानेवाली चीखा की जीवन में कोई कमी नहीं थी। भ्रम इन लोगों को ही लो जो बीवार के उस पार मौजूद थे। उन्हें अच्छी तरह से भालूम था कि यहा, इस क़ब्रिस्तान में, अकेले बठे रहना ही कुछ कम भयानक नहीं था। लेकिन वे ये कि मेरी रूह को और भी अधिक कब्ज करने पर तुले थे। आखिर क्यों?

मेरा मन हुआ कि चिल्लाकर उनसे कह

“शातान तुम्हें जहनुम रसीद करे!”

लेकिन क़ब्रिस्तान में शातान का नाम लेना खतरनाक था। कौन जाने उसे वह क्या सगे? वह जरूर कहीं पास में ही होगा।

रेत में अवरक के कणों की बहुतायत थी और वे चाद की रोशनी में हल्की धमक दिखा रहे थे। उन्हें देखकर मुझे याद आया कि एक दिन जब बड़े पर लेटा हुआ मैं ओका नवी के पानी को बेल रहा था, ठीक मेरी आंखों के सामने सहसा एक नहीं सी मछली प्रकट हुई थी, लोट-भोटकर उसने मानवीय गाल का रूप धारण कर लिया था, पक्षियों जसी छोटी सी गोल आंख से उसने मेरी ओर ताका था और फिर पेड से गिरे पत्ते की भांति फरफराती, डुबकी लगाकर पानी की गहराइयों में गायब हो गई थी।

मेरी स्मृति अत्यन्त क्रियाशील हो उठी और जीवन की विभिन्न घटनाओं को उभारकर मानो इनके जरिये उन तमाम डरावनी घोजों से अपनी रक्षा करने लगी जिनकी इस समय मेरी कल्पना खोर-शोर से रचना कर रही थी।

यह लो मजबूत पाथों से रेत में सडबड करती एक साही मेरी ओर

आई। उसे देखकर मुझे घर के अंगोने कोने में छिपे भूत का ध्यान हो आया, जो ऐसा ही छोटा और इतना ही भोडा होता होगा।

इसके साथ ही मुझे यह भी ध्यान आया कि कसे नानी अलावघर के सामने उकड़ू, बठकर यह मन्त्र पढ़ा करती थी

“मेरे नहे भूत, भुवे तिलचट्टो को ले जा ! ”

दूर, नगर के ऊपर जो मेरे दृष्टि क्षेत्र से परे था, आकाश में उजाला फलने लगा। प्रातःकाल की ठंडी हवा से मेरे गाले सिहरने सिकुड़ने लगे। नाँव के मारे मेरी पलके भारी हो गईं। मैं कम्बल ओढ़कर गुड़ी-मुड़ी हो गया—जो भी होना हो, सो हो!

नानी ने आकर मुझे जगाया। वह मेरी बगल में खड़ी कम्बल को खींच रही थी और कह रही थी

“उठो अब! ठिठुर तो नहीं गये? कहो, डर लगा?”

“डर तो लगा, लेकिन किसीसे कहना नहीं। सबको को नहीं बताना।”

“इसने छिपाने की क्या बात है?” नानी ने कुछ अचरज से पूछा।

“अगर डर नहीं लगता, तो बड़ाई की बात ही क्या।”

हम दोनों घर की ओर चले। रास्ते में नानी ने प्यार से कहा

“मेरे लोठन कबूतर, दुनिया में हर चीज का खुब तजुर्बा करके देखना होता है जो एब सीखने से कनी काटता है, उसे दूसरे भी नहीं सिखाते।”

साम्र तक मैं अपनी गली का “हीरो” बन गया। जो भी मिलता, मुझसे पूछता

“डर नहीं लगा?”

और मैं जवाब देता “डर तो लगा!”

सिर हिलाकर वे जवाब देते

“अरे, देखा न!”

दुकानदारिन ने बड़े विश्वास के साथ जोरो से घोषणा की

“इसका मतलब यह है कि कालीनिन का कन्न से निकलकर चक्कर लगाना एकदम झूठी बात है। अगर यह बात सच होती तो क्या वह इस लडके से डरकर कन्न में ही डुबका रहता? नहीं, टांग पकड कर वह इतने जोरो से इसे क्रिस्तान से बाहर फेंकता कि जाने वहाँ जाकर गिरता!”

ल्युदमोला ने मुझे चाव भरे अचरज से देखा और मुझे ऐसा मालूम हुआ मानो नाना भी मुझसे खुश हैं—उनकी बत्तीसी लिली हुई थी। केवल चूर्का ऐसा था जो जलकर बोला

“इसे कौन सटका? इसकी नानी तो जादूगरनी ठहरी।”

३

मेरा भाई बोल्या सुबह के छोटे सितारे की भाँति योही चुपचाप अज्ञान हा गया। वह, नानी और मैं बाहर सायबान में जमा लकड़ियों के ढेर पर सोते थे जिनपर पुराने चियडे और गूदड़ फले थे। पास ही छेबो भरी लकड़ियों की खनी दीवार के पीछे मकान-मालिक का मुर्गाघर था। अलताई और पैट में दाना पडी मुँगियों की कुटकुट और उनके परो की फड़फड़ाहट हम हर सास सुनते और हर सुबह स्वणिम मुँ की जोरवार बाग से हमारी आँख खुल जाती।

“ओ, तेरा बेटा हो गरक हो ” नागी मुदबुवाती।

मैं पहले ही जग गया था और दीवार की दरवाजा में से आनेवाली सूरज की किरणों और उनमें तरते धूल के रुपहले कणों को देख रहा था जो परियों की कहानी के शब्दों की भाँति चमचमा रहे थे। लकड़ियों के ढेर से चूहे लडमड कर रहे थे और छोटे छोटे ताल कीड़े जिनके परो पर काली चित्तियाँ थीं, घूम फिर रहे थे।

मुँगिया की बाँट और कूड़े-कचरे की गंध से घबराकर कभी-कभी मैं सायबान से बाहर निकल आता और छत पर चढ़कर वहाँ से पडोसियों को जागते हुए देखता—डीलडौल में लम्बे चाँडे, नौद से धोखिल और मुदी हुई सी आँखें।

एक खिडकी में से खेवये फेरमानोव का, जो एक गुमसुम गराबी था, शबरा सिर प्रकट होता। अपनी गुम्मा सी आँखों को मिचमिचाकर वह सूरज की ओर देखता और मुह से सूरज की भाँति आवाज निकालता। फिर नाका की शक्ल दिखाई देती—वे तेजी से आहते में आते अपने सिर के गिने चुने ताल बालों को दाना हाथों से ठोक करते हुए। ठडे पानी से नहाने की जल्दी में वह घुसलखाने की ओर लपके जाते। मकान-मालिक

की बातूनी वावचिन नखर आती, जिसका चेहरा झाड़योवाला और नाक नुकीली थी। वह कोको पक्षी से मिलती जुलती थी। खुद मालिक भी किसी बूढ़े और मोटे कबूतर जैसा था और अहाते के अग्र सब लोग भी मुझे किसी न किसी पशु या जंगली जंतु की याद दिलाते थे।

सुहावनी और उजली सुबह थी, लेकिन मेरा मन भारी था और कहीं दूर खेतों की ओर जाने की जी चाहता था, जहां मेरे सिवा और कोई न हो। मैं जानता था कि लोग हमेशा की भांति उजले दिन पर अवश्य कालिल पोत देंगे।

एक दिन जब मैं छत पर लेटा हुआ था, नानी ने मुझे बुलाया और सिर हिलाकर बिस्तरे की ओर इशारा करते हुए धीमे से बोली

“कौल्या तो मर गया ”

लटके का नहा शरीर मलमल के लाल तकिये से लुठककर फल्ट की चटाई पर आ गया था। उसका नीला सा बदन उघड़ा हुआ था। कमीज सिकुड़ सिमटकर गरदन से लिपट गई थी और उसका पूला हुआ पेट तथा फोड़ो से भरी बदनमा टांगें दिखाई दे रही थीं। उसके हाथ अजीब ढंग से कमर के नीचे धसे हुए थे मानो उसने उठने का प्रयत्न किया हो, लेकिन उठ न सका हो। उसका सिर एक ओर की कुछ झुक गया था।

क्यों से अपने बालों को मुलझाते हुए नानी बोली, “भगवान ने अच्छा किया जो इसे अपने पास बुला लिया। भला, इस भरियल शरीर को लेकर यह जीता भी किस तरह ? ”

परो को धपधपाते, मानो माचते हुए नाना भी आ गए और बहुत ही सावधानी से उहोने बच्चे की मुड़ी हुई आंखों को छुआ। नानी ने झल्लाकर कहा

“बिना धुले हाथों से इसे क्यों छू रहे हो ? ”

नाना बुदबुदाए

“दुनिया में पदा हुआ दो चार दिन सास ली, दाना पानी चुगा— और बस फुर ”

नानी ने बीच में टोका, “यह कसी बेकार की बातें कर रहे हो ? ”

नाना ने बहकी-बहकी नखर से नानी की ओर देखा और अहाते की तरफ जाते हुए बोले

“इसे दफनाने के लिए मेरे पास एक दमड़ी भी नहीं है। तुम से जो बने, करना ”

“घिबकार है तुझ बदकिस्मत को।”

मैं बाहर खिसक गया और साझ होने पर ही घर लौटा।

शेल्या को अगले दिन सबेरे दफना दिया गया। मैं गिरजे में नहीं गया और जब तक सारा काय समाप्त नहीं हो गया, अपनी मा की कब्र के पास बठा रहा। मा की ब्रह्म खोदकर खोल दी गई थी ताकि मेरा छोटा भाई उसी में दफनाया जा सके। मेरा कुत्ता और यात्र का बाप भी मेरे साथ बठे थे। यात्र के बाप ने क्रूर-क्रूर भुप्त में ही कब्र खोद दी थी और मेरे पास बठा अपनी इस उदारता की शेखी बघार रहा था।

“जान-पहचान की बात है, नहीं तो एक खबल से कभी कम न लेता ”

मिट्टी के पीले गढ़े से बबू आ रही थी। मैंने उसमें झाककर देखा और काले नम तल्लो पर मेरी मजद पड़ी। मेरे जरा सा भी हिलने पर रेत की पतली पतली धाराएं सरसराकर गढ़े के तल में गिरने लगतीं जिससे अगल बगल झुरिया सी धन जाता। इसीलिए मैं जान-बूझकर हिलता ताकि रेत उन तल्लो को टफ बे।

यात्र के बाप ने धुए का बस खींचते हुए कहा, “शतानी नहीं कर।”

नानी अपने हाथों में एक छोटा सा सफेद ताबूत लिये आयी। ‘निकम्मे आदमी’ यानी यात्र का बाप—गढ़े में कूद गया, नानी के हाथों से उसने ताबूत लिया और उसे धर्हीं काले तल्लो के पास, जमा दिया। फिर वह उछलकर गढ़े से बाहर आ गया और अपनी टांगों तथा फावड़े से रेत को गढ़े में भरने लगा। उसका पाइप धूपदान की भांति धुआ छोड़ रहा था। नानी और नाना ने भी धुपचाप उसका हाथ बटाया। न कोई पादरी था, न भिखारियों का जमघट। सलीबों के इस जंगल में बस, हम चारों ही थे।

घोनीदार की मरुदूरी देते समय नानी ने उसकी भत्सना करते हुए कहा

“लेकिन तुमने मेरी बेटी का ताबूत भी शम्भोड डाला, क्यों?”

“मैं क्या करता? मैंने तो पास की ब्रह्म तक की जमीन भी खोद डाली। इसमें परेगानी की कोई बात नहीं।”

नानी ने जमीन तक माया झुकाकर ब्रह्म की प्रणाम विया, नाक बिसूरी, हूकी और कब्र से चल दी। अपने घिसे हुए फ्राक कोट को ठीक करते तथा टोपी के छज्जे के नीचे अपनी आँखों को छिपाते हुए नाना भी पीछे-पीछे हो लिए।

सहसा नाना ने कहा, "ऊसर भूमि में हमने अपना बीज डाला था।" और मेज पर से उड़नेवाले कौवे की भाँति लपककर नाना हम सब से प्रागे निकल गए।

मैंने नानी से पूछा

"नाना ने यह क्या कहा?"

नानी ने जवाब दिया, "वही जाने उनके अपने विचार हैं।"

घड़ी उमस थी। नानी धीमे उगो से चल रही थी। गम रेत में उसके पाव धस जाते थे। रह रहकर वह रुक जाती और रुमाल से अपने माथे का पसीना पोछती।

आखिर साहस बढोरकर मैंने नानी से पूछा, "कब्र के भीतर जो वह काला-काला दिखाई देता था, क्या वह मा का ताबूत था?"

"हा," नानी ने झुल्लाकर जवाब दिया। "वह बूढ़ा खूसट न जाने कौसी ब्रह्म खोदता है। एक साल भी नहीं हुआ और बार्पा सब गयी। यह सब रेत की बजह से हुआ है। पानी रिस रिसकर भीतर पहुँच जाता है। अगर चिकनी मिट्टी होती, तो अच्छा रहता "

"कब्र में क्या सभी सड़ने लगते हैं?"

"हा, सभी। केवल सती को छोड़कर "

"लेकिन तुम कभी नहीं सड़ोगी!"

नानी रुक गई, मेरी टोपी ठीक की और फिर गम्भीर स्वर में बोली

"ऐसी बातों के बारे में नहीं सोचना, ऐसा करना ठीक नहीं। सुना तुमने?"

लेकिन मैंने मा ही मन सोचा

"कितनी दुखद और कितनी दुस्तित होती है मृत्यु! कितनी घिनौनी!"

मेरी बहुत बुरी हालत थी।

जब हम घर पहुँचे तो देखा कि नाना ने सम्बोवार गम कर रखा है और मेज सजी है। नाना ने कहा

“चाय तयार है। आज में सबके लिए अपनी ही पत्तियां उलूगा। ओह, कितनी उमस है!”

फिर वह नानी के पास गए और उसके कंधे को थपथपाते हुए बोले
“चुप क्यों है, धार्या को मा?”

नानी ने हाथ हिलाया और बोली

“तुम्हीं बताओ, मैं क्या कहूँ?”

“यही तो! भगवान की मार इसी को कहते हैं। धीरे धीरे सभी कुछ तीन-तेरह होता जा रहा है अगर परिवार के लोग मिलकर रहते, हाथ की उंगलियों की भांति”

नाना ने एक मुहूर्त से इतने योमल और इतने शांतिपूर्ण अंदाज में बातें नहीं की थीं। मैं नाना की बातें सुनता हुआ यह आशा कर रहा था कि उनकी बातें मुझे अपने हृदय के दुःख और उस पीले गढ़े को मूल जाने में मदद देंगी जिस की बगल में वे काले काले नम घट्टे बिखारें दिए थे।

परन्तु नानी तेज आवाज में बोल उठी

“चुप भी रहो। इन शब्दों को रटते तुम्हारा जीवन घोंत गया, लेकिन क्या कभी उनसे किसीका भला हुआ? होता भी कैसे, सारी उन्नत तुम लोगों को मोचते खाते ही रहे, जैसे जग मोहे को खाता है”

नाना ने भिन्नभिन्नकर नानी की ओर देखा और फिर चुप हो गए।

साम के समय फाटक पर ल्युबमीला को मेरे सुबह का सारा हाल बताया। लेकिन मेरी बातों का उसपर कोई छास असर नहीं पड़ा।

“अनाथ होना अच्छा है। अगर मेरे मा-बाप मर जाए तो अपनी बहिन को अपने भाई के पास छोड़ मैं जीवन भर के लिए मठ में चली जाऊँ। इसके सिवा मैं और कर भी क्या सकती हूँ? लगड़ी होने की वजह से मेरा विवाह कभी होगा नहीं—मैं काम कर नहीं सकती। और अगर विवाह हो भी गया तो मैं लगड़े बच्चों की ही जन्म दूँगी”

मोहल्ले की अग्य सभी सयानों त्रिचयों की भांति बड़ी समझदारी से उसने बातें कहीं, लेकिन उस साम के बाद न जाने क्यों उसमें मेरी दिल चस्पी छलम हो गयी। सब तो यह है कि मेरा जीवन भी कुछ ऐसे ढर्रे पर चल पड़ा कि उससे मिलने का मौक़ा तब न मिलता।

भाई की मृत्यु के कुछ दिन बाद नाना ने मुझसे कहा

“भ्राज जल्दी सो जाना। फल सूरज निकलते ही मे तुम्हें जगा दूंगा और दोगे लकड़िया बटोरने जगल चलेगें ”

नानी ने कहा, “और मे जड़ी-बूटिया बटोरकर लाऊंगी।”

हमारी बस्ती से डेढ़-बो कोस दूर, दलदली भूमि में, भोज और चीड़ वृक्षों का जगल था। सूखे वृक्षों और टूटी हुई टहनियों की वहा भरमार थी। एक घाड़ू वह ओका नदी तक और दूसरे बाड़ू मास्को जानेवाली सड़क से भी परे तक फला था। उसकी फुनगिया के ऊपर देवदार वृक्षों का एक घना झुण्ड एक ऊँचे, फाले तम्बू के रूप में दिखाई देता था जो ‘सावेलोव का झयाल’ कहलाता था।

काउण्ट झवालोव इस सारी दौलत के मालिक थे और इसकी कोई खास देखभाल नहीं की जाती थी। कुनाविनो के निवासी इसे अपनी सम्पत्ति समझते थे और इसमें से सूखी झाड़िया बटोर ले जाते थे और कभी कभी तो जानदार वृक्षा तक को काट डालते थे। पतझड़ शुरू होते ही हायो में कुल्हाड़िया और कमर में रस्ती बांधे दसियों लोग यहा से जाड़े भर के लिए ईषन ले जाते थे।

पी फटते ही हम तीनों ओस में भीगे दपहले हरे खेत में चले जा रहे थे। हमारे बाईं ओर ओका नदी के पार छात्लोवी पहाड़ियों की पीली बगलो के ऊपर, दवेत नीजनी नोवगोरोद के हरे भरे बाग-बगीचों और गिरजों के सुनहरे गुम्बजों के ऊपर झालती रुसी सूरज धीरे धीरे उदय हो रहा था। शात और गदली ओका नदी की ओर से हवा के हल्के हल्के और नींद में मदमाते झोके आ रहे थे। सुनहरी रंग के बटरकप झूल रहे थे, ओस के बोझ से झुके बगनी ब्लूबेल फूल मूक दृष्टि से धरती को निहार रहे थे, रंग बिरंगे सदाबहार फूल कम उपजाऊ धरती पर मुरझाये से हिलडुल रहे थे और गुलाबी रंग की वे कलिया—रात की सुबरी शोभा—लाल सितारों की भांति चटक रही थीं।

फाली फीज जसा जगल हमारी ओर बढ़ता आ रहा था। पक्षों वाले धीड़ वृक्ष भीमाकार पक्षियों की भांति मालूम होते थे और भोज वृक्ष सुघड़ सुवतिया जैसे लगते थे। दलदली भूमि की तेजाबी गंध भदान में फल रही थी। मेरा कुत्ता अपनी लाल जीभ निकाले मेरे साथ-साथ चल रहा था, यह एकाएक रुक जाता, नाक सिकोडवर कुछ सूघता और अक्षमजस में पडकर लोमड़ी जसा अपना सिर हिलाता।

नाना नानी की ऊनी जाकेट धीरे धिना छजने की पुरानी तथा पिचकी हुई सी टोपी पहने थे। यह धांत सिवोड़ते, मन ही मन मुखरात, अपनी पतली टांगों की घड़ी सावधानी से उठाते हुए दबे पांव चल रहे थे। नाना नीला प्लाउज और बाला घाघरा पहने थी तथा सिर पर लफेद रमात बांधे थी। यह इतनी तेजी से सुदरती-सुदरती चल रही थी कि साथ देना मुश्किल था।

जगल के हम जितना ही नजदीक पहुंचते जा रहे थे, नाना की चेतनता भी उतनी ही अधिक बढ़ती जा रही थी। यह बुनमुनाए, गहरी सोत सींचकर उन्होंने फेफड़ा में लूब वायु भरी और धोसना दृढ़ किया—पहले कुछ घटक घटककर और घटपटे अदान में, फिर मानी उनपर नगा सा छा गया, और यह चुहचुहाते हुए तथा सुदर रूप में बहते गये।

"जगल भगवान के लगाए हुए यात्र-थरीचे हैं। अथ किसी ने नहीं बलिक हवा ने—भगवान के मुह से निजसी दयी सांस में—इहें लगाया है जिगुली की बात है, बहुत पहले की जय में जवान था और बजरा खींचने का काम करता था आह, अलेक्सेई, तुमो यह सब देखना भला कहा नसीब होगा जो मैं देख चुका हूँ। ओसा के सिगरे किनारे, कासीमोव से लेकर मूरोम तक, बस जगल ही जगल। या फिर बोलगा के उस पार—ठेठ उराल तक—जगलों के सिवा और कुछ नहीं! मानो एक अतहोन और अवभुत सौदय हिलारों से रहा हो! "

नानी ने फतवियो से उहे देरा और मुझे आंस नारकर नाना की ओर इशारा किया, और नाना थे कि अपनी घुन में चले जा रहे थे—टीलों और छूठों से ठोकर खाते, लडखडाते और सभलते और मानो अजुलि भर भरकर हलके-कुलके शब्दों की बिलेरते, जो मेरी स्मृति में जमकर बठते जात थे।

"बजरा तेल के पीपों से सदा था और हम उसे खींच रहे थे। सत मकारी के दिन मेता होता है न, उसी में हमे पहुंचना था। हमारे साथ सालिक का कारिदा था। नाम विरील्लो, पुरेख का निवासी। और एक पुराना, अनुभवो मजदूर था, तातार, कासीमोव का रहनेवाला—और अगर मैं भूलता नहीं तो आसफ उसका नाम था हा तो, जब हम जिगुली पहुंचे, बहाव के प्रतिकूल ऐसी आंधी आई कि उसके ध्येन ने हमारी जान ही निवाल ली, पाव वहाँ के वहाँ एक गये, दम फूल गया और हम बस

हाँफते ही रह गये। सो हम तट पर आ गये और सोचा कि कुछ दलिया
 ही पका ले। मई का महीना था और धरती पर वसंत छाया था। बोलगा
 अच्छा-खासा सागर बनी हुई थी और हसो के झुंड की भाँति, हजारों की
 सख्या में झागदार लहरें कास्पियन सागर की ओर तरती चली जा रही
 थीं। और वसंत का हरियाला बाना धारण किए जिगुली की पहाडिया
 आसमान छूती थीं, आसमान में सफेद बादल विचर रहे थे और सूरज
 धरती पर सोना बरसा रहा था। सो हम सुस्ताने बठ गए, जो भरकर
 प्रकृति के इस समूचे सौंदर्य का हमने पान किया और हमारे हृदय में
 तरसता छा गई, हम एक-दूसरे के प्रति अधिक दयालु हो गये। उत्तरी
 हवा चल रही थी, लेकिन यहा तट पर बड़ा सुहावना मालूम होता था
 और भीनी भीनी सुगंध आ रही थी। सात डलते ही हमारा किरील्लो जो
 बड़ी उन्न और गम्भीर स्वभाव का मर्द था, उठकर सडा हा गया और
 अपने सिर से टोपी उतारकर बोला, 'हा तो जवानो, अब न मैं तुम्हारा
 मुजिया हूँ और न नौकर। तुम अब अकेले ही अपना काम सभालना।
 मुझे जगल युला रहे हैं, सो मैं चला।' हम सब घबरा गये। जहा के
 सहा मुह बाये बठे रहे। भला ऐसा भी कभी हुआ है? मालिक के सामने
 जवाबदेह ध्यवित के बिना कैसे काम चल सकता है—मुजिया के बिना
 लोग कैसे आगे बड सकते हैं! माना कि यह हमारी जानी पहचानी बोलगा
 ही थी, लेकिन इससे मया, सीधे रास्ते पर भी भटका जा सकता है।
 लोग तो मूल जानवर ठहरे, एकदम दयाहीन। सो हम डर गये। लेकिन
 वह था कि अपनी जिह पर अडा रहा, 'मैं बाब आया इस जीवन से।
 गडरिदे की भाँति मुंह हाकते रहना मुझे पसंद नहीं। मैं तो जगल में
 जाऊंगा।' हम में से कुछ ये जो उसकी भरममत करने और उसे रस्सियो
 से बाधकर जकडने के लिए उतावले हो उठे। लेकिन कुछ ऐसे भी थे जो
 उसके पक्ष में थे। वे चिल्लाए, 'ठहरो!' और पुराना तातार मशहूर
 बोला, 'मैं भी चल दिया।' अब तो मामला बिल्कुल ही चौपट था।
 मालिक पर तातार की दो फेरो की मजदूरी चढ़ी थी, और यह तीसरा
 फेरा भी आधा पूरा हो चुका था। उन दिनों को देखते हुए खासी बड़ी
 रकम उसे मिलती। रात होने, तक हम चौखते चिल्लाते रहे। अघेरा घना
 होने पर एकदम सात जने चले गए—अब हम चौदह या सोलह ही रह
 गए। ऐसा होता है जगल का जादू।"

“क्या ये डाकू बन गये?”

“कौन जाने, डाकू बन गये या सयासी। उन दिना यह सब एक जसा ही मामला समझा जाता था।”

सलोब का चिह्न बनाते हुए नानी ने कहा

“आह माता भरियम, क्या हाल हो गया है तेरी सन्तानों का! देखकर हृदय कराह उठता है।”

“शतान के घगुल मे न फसे, इसीलिए तो भगवान ने हम सब को बुद्धि प्रदान की थी ”

हम ने दलदल के टीलो और चौड बुखो के भरियल झुरमुटो के बीच से जानेवाली एक नम पगडंडी पर बढ़ते हुए जगल मे प्रवेश किया। मुझे लगा कि पुरेज निवासी किरौल्लो की भाति अगर हमेशा जगल मे ही रहा जाए तो कितना बढ़िया हो। जगल मे न लडाईं शगडा था, न नगे मे धुल लोगा की चीख पुकार थी, न कोई छीना शपटी थी। वहा न तो माना की घुणित बजूसो की याद बनी रहेगी, न मा की रैसीली त्रन्न की। हृदय को बुलाने और जी को भारी बनानेवाली प्रत्येक चीस भूल जायेगी।

जब हम एक सूबे स्थल पर पहुचे तो नानी ने कहा

“यह जगह ठीक है। बठकर अब कुछ पेट मे भी डाल ले।”

अपनी टोकरी मे से नानी ने रई की रोटी, हरा प्याज, सीरे, नमक और कपडे मे लिपटा धर का पनीर निकाला। नाना ने उलसन मे पडते हुए आलें मिचमिचाकर इन सब चीसो की ओर देसा।

“हे भगवान, मैं तो अपने साथ खाने को कुछ लाया ही नहीं। ”

“हम सब इसी मे निबट जायेंगे ”

देवदार के एक ऊचे वृक्ष के ताबे जसे तने से वीठ लगाकर हम बठ गए। घायु मे बिरोज की गध फंली थी, खेतो की ओर से हल्की बयार बह रही थी, घास की पल्लिया झूम रही था, अपने साबले हाथो से नानी तरह तरह की जडी-बूटिया तोडती और मुझे बताती जाती कि सन्तजोन घास कौन कौन रोग को डूर करती है, कटीली झाडी मे क्या जाडु असर भरा पडा है, कि चिपचिपा दलदली गुलाब भी गुणो मे किसी त्त कम नहीं है।

नाना हवा से गिरे वृक्ष काट रहे थे और मेरा काम था कि कटी लकडियो को बटोरकर एक जगह जमा करते जाना। लेकिन मैं खिसककर

नानी के पीछे-पीछे जंगल की गहराइयों में चला गया। वृक्षों के सबल और सशक्त तनों के बीच नानी मानो तर रही थी और रह रहकर जब वह नम, साँको से ढकी धरती की ओर झुकती तो ऐसा मालूम होता जैसे पानी में डुबकी लगा रही हो। नानी चलती हुई बराबर अपने आप से बातें करती जाती थी

“अब इन खुमियों का देखो, कितनी जल्दी निकल आईं—यानी इस बरस श्यावा नहीं होगी। हे भगवान, गरीबों का ध्यान रखने में तुम भी झूक जाते हो। जिनके घर में चूहे डण्ड पेलते हैं, उनके लिए तो ये खुमिया भी बहुत बड़ी चामत हैं।”

मैं चुपचाप और बहुत सावधानी से नानी के पीछे पीछे जा रहा था और इस बात की बड़ी कोशिश कर रहा था कि मुझपर उसकी नज़र न पड़े। कभी भगवान, कभी मेढ़कों और कभी घासपात से उसकी बातों में मैं बाधा डालना नहीं चाहता था

लेकिन नानी ने मुझे देख ही लिया।

“नाना के पास जी नहीं लगा, क्यों?”

काली धरती हरे बेल-भूटों से सजी थी। उसकी ओर बार-बार झुकती हुई नानी मुझे बताती रही कि कैसे एक बार भगवान को बहुत गुस्सा आया। मानवजाति से यह इतने नाराज़ हो गए कि उन्होंने समूची धरती को बाढ़ से प्लावित कर दिया, जितने भी जीवधारी थे, सभी डूब गए।

“लेकिन माता मरियम ने, समय रहते, अपनी ठोकरी उठाई, सभी बीजों को बटोरकर उसमें रखा और फिर सूरज से बोलीं, ‘इस छोर से उस छोर तक, सारी धरती अपनी किरनों से सुखा दो, लोग तुम्हारा गुणगान करेंगे।’ सो सूरज ने धरती को सुखा दिया और माता मरियम ने छिपाकर रखे हुए बीजों को बो दिया। भगवान ने अब धरती की ओर देखा वह फिर पहले की भाँति हरी-भरी और आबाद थी—छोर-छोर, पेड़-पौधे और आदमी, सभी वहाँ मौजूद थे—भगवान के तेवर चढ़ गए। बोले, ‘किसने यह दुस्साहस किया है?’ तब माता मरियम ने सारी बात बता दी। लेकिन खुद भगवान को भी कुछ कम दुःख न था—धरती को उजड़ा-उजड़ा और मुनसान देखकर उनका हृदय भी मसोस उठता था। सो वह बोले, ‘तुमने यह अच्छा किया जो धरती को आबाद कर दिया, माता मरियम!’”

नानी को यह कहानी मुझे पसंद आई। लेकिन इसे सुनकर मुझे अचरज भी हुआ। पूरी गम्भीरता के साथ मैंने पूछा

“क्या सचमुच ऐसा ही हुआ था? माता मरियम तो प्रलय के बहुत बाद पैदा हुई थी न?”

अब नानी के चरित होने की यारी थी।

“तुम्हें यह बात वहाँ से मालूम हुई?”

“स्कूल में—किताबों में लिखी है”

यह सुन नानी का जी कुछ हल्का हुआ। धीली

“स्कूलों में तो ऐसी ही बातें सिखाते हैं? और किताबें—भूल जाओ तुम उन्हें। दुनिया भर की झूठी बातों के सिवा उनमें और लिखा ही क्या है?”

और वह धीरे से, खुशमिजाजी से हस दी।

“बेवकूफों की बात तो देखो। कहते हैं, भगवान पहले से मौजूद थे, माता धार में आईं। भला, जब माता ही नहीं थी तो भगवान को जन्म किसने दिया?”

“मुझे क्या मालूम?”

“मुझे क्या मालूम—स्कूल में यही तो पढ़ाया जाता है—मुझे क्या मालूम!”

“पादरी ने बताया था कि माता मरियम ने याक़िम और अन्ना के यहाँ जन्म लिया था।”

“इसका मतलब यह है कि वह मरीया याक़िमोवना थीं।”

नानी का पारा एकदम गरम हो गया। कभी मज्जर से मेरी आँखों में देखकर बोली

“अगर फिर कभी ऐसी बात मुह से निकाली तो देख लेना, मुझसे बुरा कोई न होगा।”

कुछ देर बाद नानी ने समझाया

“माता मरियम सदा से है—अब सबसे भी बहुत पहले से। भगवान ने उनके गर्भ से जन्म लिया और फिर”

“और ईसा मसीह?”

नानी ने उत्पन्न में पटककर आँखें मूंद लीं।

“ईसा मसीह ईसा अरे हाँ?”

मैंने देखा कि नानी से जवाब देते नहीं बन रहा है। यह मेरी जीत थी। नानी को मैंने सुष्टि में रहस्यो में उलझा दिया था, और यह मुझे बड़ा अटपटा मालूम हुआ।

हम जगल में बढ़ते ही गए और ऐसी जगह पहुँचे जहाँ सूरज की सुनहरी किरणें नीले धुलके को बाँध रही थीं। सुहावना और सुखद जगल अपनी निजी और निराली आवाज से गूँज रहा था—सपने में डूबी उनींदी आवाज, जो खुद हमें भी स्वप्निल बना रही थी, अपने साय-साय हमें भी सपनों की दुनिया में खींच रही थी। कहीं कासबिल पक्षी टिटिया रहे थे, कहीं टिटमाइस चहचहा रहे थे, यहाँ कुकू के खिलखिलाकर हसने की आवाज आ रही थी, कहीं झोरियोल सीटी बजा रहे थे, ईर्ष्या से भरे गोल्डफिच निरंतर गीत गाने में मग्न थे और वे विचित्र फिच पक्षी—विचारों में डूबे हुए अपना एक अलग शब्दजाल बुन रहे थे। भरकती मेढक हमारी टांगों के पास उछल रहे थे, और जड़ों की ओट में साप अपना सुनहरा फन ऊपर उठाये उनकी ताक में था। नहे बातों से चटर-पटर करती एक गिलहरी, अपनी दुम फुलाए, देवदार वृक्ष की टहनियाँ में से कौद गई। इतनी चीखें थीं कि बस देखते ही रहो। और मन फिर भी यही कहता रहे कि अभी और देखो, बस देखते ही जाओ।

देवदार वृक्षों के तनों के बीच भीमाकार आकृतियों की एक छाया सी दिखाई देती और अगले ही क्षण हरी गहराइयों में, जहाँ नीला और उपहला आकाश झलक रहा था, बिलीन हो जातीं। धरती पर गहरी फाई का शानदार कालीन बिछा था जिसपर नीले और लाल जगली फलों के गुच्छों की कसीदाकारी बनी हुई थी। हरी घास के बीच लाल जगली बैरिया रक्त की धूँवों की भाँति चमकती थीं और खुमियों की भीनी तेज गंध जी को ललचा रही थी।

नानी ने उसास लेते हुए माता मरियम का नाम लिया, “दुनिया की जोत, माता मरियम।”

ऐसा मालूम होता था मानो जगल उसका हो, और वह जगल की। भारी भरकम भालू की भाँति झूमती वह चल रही थी, हर चीज को देखती, हर चीज पर मुग्ध होती और कृतज्ञता के शब्द मुनगुनाती। ऐसा लगता मानो सहृदयता उसके शरीर से प्रवाहित होकर जगल में बह रही हो। नानी का पाव पड़ने पर जब कोई दबकर सिमटती सिङुडती और

पाव उठ जाने पर जब यह फिर से उभरती फलनी तो मुझे एक खास भानव की अनुभूति होती।

जगल में घूमते घूमते मैं सोचने लगा कि कितना अच्छा हो अगर मैं डाकू बन जाऊँ और बमरो के लूटकर गरीबों का घर भरूँ। कितना अच्छा हो अगर इस दुनिया में सभी लुश्करी और खाते-पीते ही, न वे एक दूसरे से जले, न कुत्तों कुत्तों की भाँति एक दूसरे पर गुराएँ! और कितना अच्छा हो कि नानी के भगवान और माता मरियम के पास जाकर मैं उनसे भेंट करूँ और उन्हें बताऊँ—सम्पूर्ण सत्य उनके सामने खोलकर रख दूँ कि लोग कितना दुखद और कितना भयानक जीवन बिताते हैं और मरने के बाद भी कितनी बुरी तरह एक दूसरे को निकामी रेत में बफनाते हैं। और यह कि कितने अधिक और अनावश्यक दुखों ने धरती को बघोच रखा है। और जब मैं यह देखता कि माता मरियम पर मेरी धात या असर हुआ है, मेरी धात का वह यज्ञीन करती हूँ, तो मैं उनसे कुछ ऐसी बुद्धि माँगता जिससे दुनिया की चीजों को बबला जा सके, उन्हें पहले से बेहतर बनाया जा सके। मैं उनसे, माता मरियम से, कहता कि मुझे कुछ ऐसा बताओ जिससे लोग मेरा विश्वास करें और मैं निश्चय ही उनके लिए अच्छे जीवन का रास्ता खोज निकालता। माना कि मैं अभी छोटा ही था, लेकिन इससे क्या? ईसा मसीह मुझसे एक ही साल ताँ घड़े थे और एक से एक उनकी बातों को सुनने के लिए आते थे।

एक दिन मैं अपने विचारों में इतना डूबा था कि मुझे कुछ ध्यान न रहा और एक गहरे, लोहनुमा गढ़े में मैं जा गिरा। एक ठूठ की डाल से रगड़ लाकर मेरी पसलियाँ चरमरा गई और सिर की चमड़ी उधड़ गई। गढ़े की तलहटी में ठंडे और चिपचिपे कीबड़ में मैं धसा पड़ा था। मन ही मन लौज और शर्म से मैं गड़ा जा रहा था। चित्लाकर नानी को डराना मैं नहीं चाहता था, लेकिन इससे सिवा और चारा भी क्या था। इसलिये मैंने उसे पुकारा।

नानी ने पलकें मारते मुझे बाहर निकाल लिया और सलीब का चिह्न बनाते हुए बोली

“शुक्र है परमात्मा का! गड़ा नहीं, यह तो भालू की माँव है। जानोमत समझो कि यह इस समय माँव से नहीं है। लेकिन अगर यह मौजूब होता तो?”

श्रीर नानी आमुओ वे बीच हसने लगी। इसके बाद एक झरने पर ले जाकर नानी ने मेरे घाव धोए, दब दूर करने के लिए घावो पर कुछ पत्ते रखे, अपनी कमीज फाड़कर उनपर पट्टी बाधी और मुझे रेलवे गाड की क्षोपडी मे ले गई। मे इतनी कमचोरी महसूस कर रहा था कि अपने पावो घर नहीं पहुंच सकता था।

फिर भी लगभग हर दिन मैं नानी से कहता

“चलो, जगल चले!”

श्रीर नानी बडी खुशी से इसके लिए तयार हो जाती। हम रोज जगल जाते, जडी-बूटिया और जगली फल बटोरते, खुमिया और जगली बादाम जमा करते। इन सब चीजो को नानी बाजार मे ले जाकर बेचती और इससे जो पसा मिलता, उससे हम गुजर करते।

पतझड बीतने तक यही सिलसिला चलता रहा।

नाना का वही हाल था। “मुपतजोर!” नाना चीखते, यद्यपि उनकी खाने की चीजो को हम छूते तक नहीं थे।

जगल मुझमे मानसिक शक्ति और खुशहाली की भावना जागत करता, और यह भावना मुझे अपने हृदय के बुख और मन लट्टा करनेवाली अय सभी बातो को भूलने मे मदद देती। साथ ही मेरी अनुभूति तीव्र होती जाती, जगल मे देखने परखने की मेरी शक्ति का भी अदभुत विकास हुआ, मेरी दृष्टि पनी हो गई, मेरे कान आवाजो को और भी तेजी से पकडने लगे। मेरी स्मरण शक्ति बढ़ी और दिमाग का वह खाना जिसमे देखी सुनी चीजें जमा रहनी हैं, और भी बडा हो गया।

श्रीर नानी—उसकी कुछ न खूबो। जितना ही मे उसे देखता, उतना ही चकित होता। नानी की सूक्ष्मज्ञ मुझे अधिकाधिक चकित और अधिकाधिक कायल करती जाती। यो तो मे नानी को हमेशा ही अय सबसे अलग, और अय सबसे ऊचा समझता था—घरती के जीवो मे सबसे अधिक सहृदय, सबसे अधिक समझदार। और मेरे इस विश्वास को नानी ने हर घडी पुष्ट ही किया। एक दिन की बात है। साक्ष का समय था, खुमिया बटोरने के बाद हम घर लौट रहे थे। जगल के छोर पर पहुंचकर नानी सुस्ताने के लिए बठ गई और मैं कुछ और खुमिया बटोरने की आशा से, पेडो के पीछे चल दिया।

सहसा नानी की आवाज सुन मैंने मुडकर देखा। नानी पगडडी के

धीचीं-धीच दात भाव से बटी थी और हमारी बटोरी हुई लुमियों का जड़ें फाट-फाटकर अलग कर रही थी। नानी के पास मे ही भूरे रंग और पतले बदन का एक कुत्ता जीभ निवाले खड़ा था।

नानी कह रही थी, "जा, भाग यहां से! जा, भगवान तेरा भला करे।"

कुछ ही दिन पहले यालेफ ने मेरे कुत्ते को जहर देकर मार डाला था। मेरे मन में हुआ कि इस नये कुत्ते को ही क्यों न पाल लिया जाए। मैं पगडंडी की ओर लपका। कुत्ते ने अपने सिर को मोड़े बिना ही कमाल की भांति विचित्र ढंग से अपना बदन तान लिया और हरे रंग की अपनी भूखी आंखों से मेरी ओर देखा, फिर अपनी भुभ की टांगों के बीच दबाए जगल की ओर छलांगें भरने लगा। उसकी चाल-ढाल और तेवर कुत्तो जैसे नहीं थे, और सीटी बजाकर जब मैंने उसे बुलाना चाहा तो वह बेतहाशा झारिड़ियों में घुस गया।

नानी ने मुसकराकर कहा, "देखा लुमने? घोले ने पहले मैंने भी उसे कुत्ता समझ लिया था। फिर देखा—वांत तो भेंड़ियों के हैं, और गदन भी! मैं तो डर ही गईं छोकर है, बाली, अगर तू भेंड़िया है तो जा भाग यहां से! झुक है, गमियों में भेंड़िये ज्यादा खूबवार नहीं होते।"

जगल में भटकना तो नानी जैसे जानती ही नहीं थी। चाहे जो हो, घर का रास्ता ढूँढ़ पाने में वह कभी नहीं चूकती थी। पासपास की गंध से ही वह पता लगा लेती कि अमुक स्थान पर किस किस की लुमियाँ होती हैं और अमुक स्थान पर किस किस की। बहुतों नानी मेरी जानकारी की भी परीक्षा लेती।

"लाल लुमी किस पेड़ के नीचे उगती है? अच्छे और बिचले सिरोंपञ्चा की क्या पहचान है? पर्णांग झाड़ी की थोड़ में किस प्रकार की लुमियाँ उगती हैं?"

किसी पेड़ की छाल पर खरोच का महा सा निशान देखकर नानी गिलहरी के कोटर का पता लगा लेती। मैं पेड़ पर चढ़ता और गिलहरी के कोटर में जाँड़े के लिए जमा सारे खखरोट निकाल लेता। कभी-कभी, पूरी एक पत्तरी तक खखरोट हाथ लग जाते।

एक बार, उस समय जब कि मैं पेड़ पर चढ़ा गिलहरी की जमा पूजी निकालने में व्यस्त था, किसी शिकारी ने बंदूक चलायी और एक,

साय सत्ताइस छरें मेरे बदन मे घुस गए। नानी ने ग्यारह छरें तो सुई से सोद-खोदकर निकाले, बाकी बई सात तब मेरे बदन मे ही घुसे रहे और धीरे धीरे, एय-एय करके, अपने आप बाहर निकलते रहे।

नानी को दब के प्रति मेरी सहनशीलता बहुत पसंद आयी।

उसने मेरी प्रशंसा की, “नाबाना, सहन है तो रहन है।”

सुमियो और अलरोटो की बिन्नी से जब कभी कुछ फालतू पैसा मिल जाता तो वह रात को पास-पड़ोस के घरों का घूँसकर लगाती और लिडवियों की झोटीय पर अपना ‘गुप्त धान’ रल आती। लेकिन एव चिचड़ों और पबद सगे कपड़ों मे ही लिपटी रहती। चाहे कोई त्यौहार हो या उत्सव, नानी की इस वैशमूया मे कभी कोई अन्तर न पडता।

नाना फुड़कर बडबडाते, “इसने तो भिलमगों को भी भात कर दिया। देलकर शम मालूम होती है!”

“शर्म की इसमे क्या बात है? मैं तुम्हारी बेटा तो हूँ नहीं, जिसे ब्याहने की फिर हो ”

घर मे अब नित्य ही लटपट होती।

“मैंने क्या औरों से ज्यादा पाप किए हैं?” चोट खाए स्वर मे नाना चिल्लाते : “लेकिन भगवान है कि सारी सजा मुझे ही देने पर तुला है!”

नानी उन्हें और भी चिड़ाती

“शतान को कोई भी धोखा नहीं द सकता।”

फिर, अकेले मे, मुझे समझाती

“देखो न, धूँड़े के तिर पर शतान का भय किस बुरी तरह सवार है। डर के मारे जर्जर हुआ जा रहा है ओह, बेचारा ”

गर्मी के उन दिनों मे मैं बहुत तपडा हो गया, लेकिन जगल ने मेरी मिलनसारी छत्र कर दी। अपने सभी साथियों के जीवन और ल्युबमीला मे मेरी कोई दिलचस्पी नहीं रही। उसके सयानपन से मैं अब चला

एक दिन जब नाना नगर से लौटे तो वह बुरी तरह भीग गए थे। शरद के दिन थे और बारिश हो रही थी। नाना दरवाजे पर लडे होकर गौरया की भाति फडफडाए और गब से तनते हुए बोले

“तो, लफंगे, हो जा तयार, कल से काम पर जायेगा।”

नानी ने झुसलाकर पूछा

“क्या कहा, कहा जायेगा?”

“तुम्हारी बहन माप्र्योना के यहाँ—उसके सड़के के पास..”

“ओ, यापू, यह तुमने भ्रष्टा नहीं सोचा।”

“चुप रह, बेवकूफ धीरत! शोन जाने, वहाँ यह नरगानवीस बन जाये।”

बिना कुछ कहे नानी ने अपना सिर झुका लिया।

उसी सात मिनट स्पुदमीला को बताया कि मैं नगर जा रहा हू।

वह लोपी-लोपी सी बोली, “मुझे भी कुछेक दिनों में गहर से जायेंगे। पिता जी मेरी टांग बटवा देना चाहते हैं, टांग काट देने से मैं भ्रष्टी हो जाऊंगी।”

गमिया से यह सुनकर और भी दुखली हो गई थी। उसके घेहरे पर नीलापन छा गया था और आँखें अब बहुत बड़ी दिखाई देती थीं।

मैंने पूछा, “डर लगता है?”

“हा,” उसने जवाब दिया और बिना आवाज किए चुपचाप राने लगी।

उसे उदास देखकर डाढ़स बघाने के लिए मेरे पास कुछ भी तो नहीं था। नगर के जीवन से उसकी ही नहीं, खुद मेरी भी रूह कापती थी। बहुत देर तक हम दोनों भारी उदासी में दूबे, चुपचाप, एक दूसरे से चिपके बैठे रहे।

अगर गमियों के दिन होने तो मैं नानी के सिर पड़ता और कहता कि चलो, भीख मागने चले! नानी बचपन में यह काम कर भी चुकी थी और इसके लिए अब फिर तयार हो जाती। स्पुदमीला को भी हम अपने साथ ले लेते। वह एक छोटे से ठेले में बठ जाती और मैं उसे खींचता..

लेकिन यह तो शरद के दिन थे। सड़को पर नमी भरी हवाएँ सनसनाती चलती थीं और आकाश अनगिनत आदलों से घिरा रहता था। धरती सिकुड़ गयी थी और गदी, अभागिन सी लगती थी

४

मैं अब फिर नगर में रहने लगा। सफेद रंग का साबूत जसा एक दुमदिला मकान था जिसमें बहुत से परिवार रहते थे। घर दो तो नया था, लेकिन खोलला और पूला हुआ सा लगता था, सात जन्म के भूखे

भिलारी की तरह जिसने एकाएक घनवान बन जाने पर तुरत ही खा खाकर अपना पेट भरफरा लिया हो। उसकी बगल सडक थी और थी। दोनों मजिलो मे आठ आठ खिडकियां थीं और सडक के रख, जिघर मकान का सामना होना चाहिए था, हर मजिल मे चार-चार। नीचे की खिडकिया अहाते मे एक तग गतियारे की और खुलती थीं, और ऊपर की खिडकियो से बाडे के उस पार गदा खड्ड और धोबिन का छोटा सा घर दिखाई देता था।

असल मे गली जसी वहा कोई चीज नहीं थी। मकान के सामने घड़ी गदा खड्ड फला था जिसपर दो जगह सकरे बाथ बने हुए थे। उसका बाया छोरे जेलखाने को छूता था। उड्डु मे बस्ती का कूडा-करकट फेंका जाता था और उसकी सलहटी मे गदगी की एक मोटी हरी तह जम गई थी। बाहिने सिरे पर गदा खेचिन कुड रिसता रहता था। खड्ड का मध्य भाग ठीक हमारे घर के सामने था जिसके आधे हिस्से मे कूडा कचरा भरा था और कटीली झाडिया, घासपात तथा सरकडे उगे थे। बाकी आधे हिस्से मे पादरी बोरीमेबोन्त पोक्रोष्की ने अपना बगीचा लगा रखा था। बगीचे के बीच मे हरे रंग मे रगी खपचिया से बना मडप था। मडप मे डेले फेंकने पर खपचिया झन्नाकर टूटती थीं।

जगह बेहद गदी और बेहद ऊबाऊ थी। शरद ने यहा की कूडा कचरा मिली चिकनी मिट्टी को बेरहमी के साथ कुरूप करके उसे लाल कोलतार सा बना दिया था जो पावो मे इतनी बुरी तरह चिमट जाता कि छुडाए न छूटता। छोटी सी जगह मे गदगी की इतनी भरमार मँने पहले कभी नहीं देखी थी। छेतो और जगलो की स्वच्छता मे रमने के बाव नगर का यह कोना मुझमे निराशा भरता था।

खड्ड के उस पार टूटे फूटे मटमले बाडों की पात दिखाई देती थी। डूरी पर उनमे भूरे रंग का वह मकान भी था जिसमे मे जाओ मे रहता था जब जूतो की दुकान मे छोकरे का काम करता था। इस मकान की अपने इतना निकट देख मुझे और भी बुरा भालूम होता। क्या मुझे फिर इसी सडक पर रहना पड रहा है?

अपने नये मालिक से मे पहले से परिचित था। वह और उसका भाई कभी डेरो मा से मिलने आया करते थे, और उसका भाई बडे ही मजेदार ढग से पिनपिनाकर कहता था

“आब्रेई पपा! आब्रेई पपा!”

दोनों के दोना श्रव भी बिल्कुल यैसे ही थे। बड़े भाई की तोते जती नाक और लम्बे बाल थे। यह अच्छे दिल का आदमी मालूम होता था। छोटा भाई बोलतार पहले की भांति श्रव भी घसा ही घुडमुहा था, और उसके चेहरे पर भूरी बिंदिया थी। उनकी मां—मेरी नानी की बहिन—बड़ी चिडचिडी और शगडालू थी। बड़े लड़के का विवाह हो चुका था। उसकी पत्नी काली आसो वाली, बड़े के घाटे की डबल रोटी की भांति सफेद और मोटी-ताजी थी।

शुरू के कुछ दिनों में ही उसने मुझे दो एक बार जताया

“तेरी मा को मैंने बमकदार कांच के माती जडा रेशमी लबावा दिया था ”

लेकिन न जाने क्यों, मुझे यह बिश्वास नहीं हो रहा था कि उसने मा की रेशमी लबावा भेंट किया था, और यह कि मा ने उसे स्वीकार कर लिया था। अगली बार जब फिर उसने लबावे का विक्र छोडा तो मैंने कहा

“बिया था तो डींग क्यों मारती है।”

यह सुनकर वह चुन्न रह गई।

“क्या भा-भा-भा? तुने मुझे समझ क्या रखा है?”

उसका चेहरा साल बकतो से भर गया, आखें बाहर निकल आयीं, उसने पति को आवाज दी।

कान में मेसिल लीसे और हाथ में परकार लिए पति ने रसोईघर में पाव रखा। अपनी पत्नी की शिकायत सुनने के बाद उसने मुझसे कहा

“इहें और दूसरे सबको यहा आम कह कर बुलाना चाहिए। और जवान को सभालकर रखना चाहिए।”

फिर वह बेसमी से अपनी पत्नी की तरफ धूम गया

“इस तरह की बकवास से मेरा बिभाष न चाटा करो!”

“बकवास तुम इसे बकवास कहते हो! जब तुम्हारे अपते रिश्तेदार हो ”

“भाड में जाए रिश्तेदार!” उसने कहा, और फिर लपककर घता गया।

मुझे भी यह अच्छा नहीं लगता था कि ये लोग नानी के रिश्तेदार

हैं। मैंने देखा है कि सगे-सम्यग्धी एक-दूसरे से जितना बुरा व्यवहार करते हैं, उतना अजनबी भी नहीं कर पाते। एक-दूसरे की फमजोरियों और बेहूदगियों को जितना अधिक वे जानते हैं, उतना कोई बाहरी आदमी कैसे जान सकता है। सो वे जमकर एक-दूसरे के बारे में निंदा चुगली करते हैं, बात-बात आपस में लड़ते और झगड़ते हैं।

मुझे अपना मालिक पसंद आया। वह कुछ इतने मन भावने ढंग से अपने बालों को पीछे की ओर झटका देता और उन्हें कानों की ओट में फेर लेता कि बहुत ही भला मालूम होता। उसे देखकर न जाने क्यों मुझे 'बहुत खूब' की याद हो आती। वह अक्सर खूब खुलकर हसता। हसते समय उसकी सलेटी आँखें प्रसन्नता से चमकने लगतीं और उसकी सीते जसी नाक के दोनों ओर बहुत ही लुभावनी झुरिया पड़ जातीं।

“यह चौंके लड़ाना बंद करो, कुडक-मुगियों।” नन्नता के साथ मुस्कराते हुए वह अपनी माँ और पत्नी से कहता, उसके छोटे छोटे और खूब सटकर जमे हुए दात मोती से झलकने लगते।

बोनो की बोनो आए दिन लड़ती और झगड़ती थीं। यह देखकर मुझे बड़ा अचरज होता कि कितनी जल्दी और कितनी आसानी से वे एक-दूसरे का मुँह नौचने पर उतर आती हैं। सुबह तड़के से ही बोनो बिना बाल बनाये, अस्त-व्यस्त कपड़ों में आधी की भाँति उखाड़ पछाड़ करतीं, कमरों में इस प्रकार घूमतीं मानो घर में आग लगी हो। दिन भर वे इसी प्रकार सोबा तिल्ला मचाए रहतीं और केवल शोपहर के भोजन, घाय और साँझ के खाने के समय जब वे मेज पर बठतीं तो घर में कुछ शांति दिखाई देती। खाने पर वे बुरी तरह दूटतीं और जब तक खाते-खाते थक न जातीं, उनपर मस्ती न छा जाती, खाती रहतीं, भोजन के समय बातें पकवानों की होतीं और बड़े झगड़े की तयारी में रह-रहकर आलस भरी चू-चू होती। साँझ चाहे जो भी पकाती, बूट ताना कैसे बिना नहीं धुकाती

“हमारी माँ तो यह ऐसे नहीं बनातीं!”

“ऐसे नहीं तो इससे खराब बनाती हैं।”

“नहीं, इससे अच्छा बनाती हैं।”

“तो, जाओ, चली जाओ अपनी माँ के पास।”

“मैं इस घर की मालकिन हूँ!”

“और मैं कौन हूँ?”

“तुमने फिर चोचे लडाना शुरू कर दिया, कुडक-मुगियो!” पति बीच में ही टोकता। “भेजा फिर गया है क्या तुम्हारा।”

घर में हर चीज इतनी बेढगी, बेडौल और छटपटी थी कि कहते नहीं बनता। रसोईघर से अंगर भोजन के कमरे में जाना हो तो एक छोटे से, तय और सकरे पाखाने में से गुजरना पड़ता था। ले देकर समूचे पलट में एक ही पाखाना था। खाने की चीजें और समोवार सब इधर से ही ले जाकर मेज पर सजाया जाता था। इसपर त्रिच हो मन्दाक होता और कोई न कोई मजेंदार घटना घटती रहती। मेरे बामो में एक बाम यह भी था कि पाखाने की टकी कभी खाली न होने पाए। मैं रसोईघर में पाखाने के दरवाजे के ठीक सामने और बाहर की ओर जानेवाले दरवाज की बगल में सोता था। मेरा सिर रसोईघर के अलावघर की गर्मी से भनाने लगता और पाव बाहर वाले दरवाजे से आनेवाली ठंडी हवा से चुन हो जाते। रात को सोने जाते समय मैं पश पर बिछी तनाम चटाइया की बंदोरकर अपने पावों पर डाल लेता।

बड़ा कमरा बहुत ही उदास और सूनासूना सा लगता जिसमें खिडकियों के बीच दीवार पर दो लम्बे आईने लटके थे, ताश खेलने की दो छोटी मेजें और बारह जीवेनी कुसिया पड़ी थीं, और “मीवा” पत्रिका से पुरस्कार में मिली और रूपहले चौखटा में जड़ी तसवीरें दीवारों के सूनैपन को तोड़ने का व्यव प्रयत्न कर रही थीं। छोटी बठक पचरगो गद्देवार मेज-कुसिया और अल्मारियो से अटी थी जिनके खानों में चादों के बरतनों और चाय पीने के सेदों की गुमाइश सी सजी थी। ये सब चीजें गादी में मिली थीं। रही सही कसर पूरी करने के लिए छत से तीन लम्बे लटके थे जो आकार प्रकार में एक दूसरे से होड लेते मालूम होते थे। सोने के कमरे में खिडकी एक भी नहीं थी। उसमें एक भीमाकार पलग, टक और कपडे रखने की अल्मारिया की भरमार थी जिनसे पत्ती के तम्बाकू और फारसी बमूने की खु आती थी। ये तीना कमरे हमेशा खाली पडे रहते थे और समूचा परिवार भोजन करने के छोटे से कमरे में ही कस मसाता और हर घडी एक दूसरे से टकराता रहता था। सुबह आठ बजे नाप्ता करने के तुरत बाब मालिक और उसका भाई अपनी मेज की फला लेने, सफेद कागज की परत, ड्राइंग के भीजार, पेन्सिले और रोगनाई

से भरी प्यालिया लाकर काम में जुट जाते। एक मेज के एक छोर पर रहता, और दूसरा ठीक उसके सामने। मेज हिलती थी और समूचे कमरे को घेरे थी। जब कभी छोटी मालकिन और बच्चे को खिलानेवाली दाई बच्चों के कमरे से बाहर आती तो मेज से टकराए बिना न रहतीं।

तभी बीवतर चिल्लाकर कहता

“बेलकर नहीं चला जाता!”

मालकिन आहत चेहरे से अपने पति की ओर देखती और कहती

“बास्व्या, इसे मना कर दो कि भुक्षपर इस तरह न चिल्लाया करे।”

पति शांत स्वर में समझाता

“जरा सबलकर चला करो जिससे मेज न हिले।”

“मेरे पैर ही रहा है और यहाँ इतनी घिघिपिच है।”

“अच्छी बात है। हम अपना ताम्राम उठाकर बड़े कमरे में चले जाएंगे।”

“हाय राम, तुम भी वसी बातें करते हो? बड़ा कमरा मेहमानों को बठाने की जगह है या काम करने की?”

पाखाने के दरवाजे में बूढ़ी मालकिन मायोना इवानोवना का चेहरा दिखाई देता—चूल्हे में से निकले धुक-दर की भाँति सात!

“उसकी बात तो सुनो, बास्व्या!” उसने चिल्लाकर कहा। “एक तुम ही कि काम करते करते मरे जाते हो और एक यह है कि बच्चे कच्चे जनने के लिए इसे चार कमरे भी छोटे पड़ते हैं! अच्छी राजकुमारी से शादी की है तुमने, जिसने भेजे में सिवा गोबर के और कुछ नहीं है!”

बीवतर उपेक्षा से खिलखिला उठा। मालिक चिल्लाया

“बस करो!”

लेकिन उसकी पत्नी, अपनी सात पर तीखे बाणों की बौछार करते और जी भरकर कोसते हुए मेज पर औंधी गिर पड़ी और लगी तिसक्ने

“मैं यहाँ नहीं रह सकती! मैं गले में रस्सी बांधकर लटक जाऊँगी!”

“मुझे काम भी करने देगी या नहीं, बम्बलत!” गुस्से से सफेद होता हुआ पति चिल्लाया। “घर न हुआ पागलखाना हो गया। आखिर तुम लोगो का बीजल भरने के लिए ही तो मैं यहाँ खड़े होकर अपनी कमर तोड़ता हूँ, फुडक-मुगियो!”

पहले पहल ये झगड़े मुझे छूव भयभीत करते थे। एक बार तो मेरी जान ही सूख गई। मालकिन ने गुस्से में डबल रोटी काटने का चाकू उठाया, पाछाने में घुसकर भीतर से चटखनी चढ़ा ली, और लगी वहशियों की भाँति चीखने चिल्लाने। एक क्षण के लिए सारे घर में सनाटा सा छा गया। फिर मालिक भागकर दरवाजे के पास पहुँचा और झुककर एकदम बोहरा हो गया।

“मेरी कमर पर चढ़ जा, और शीशा तोड़कर दरवाजे की चटखनी खोल डाल!” उसने चिल्लाकर मुझसे कहा।

लपककर मैं उसकी पीठ पर चढ़ गया और मैंने दरवाजे के ऊपर का शीशा तोड़ डाला। लेकिन चटखनी खोलने के लिए जैसे ही मैं नीचे की ओर झुका कि मालकिन चाकू की मूठ से मेरे सिर पर प्रहार करने लगी। जो हो, दरवाजा मैंने खोल दिया। इसके बाद मालिक मालकिन पर चुरी तरह झपटा, उसे खींचता हुआ भोजन के कमरे में ले गया, और उसने उसके हाथ से चाकू छीन लिया। मैं रसोईघर में बड़ा अपना बोट लाया सिर सहला रहा था और मन ही मन सोच रहा था कि ध्यय ही मैंने इतनी मुसीबत मोल ली। चाकू इतना खुट्टल था कि गरदन तो दूर, उससे डबल रोटी तक नहीं काटी जा सकती थी। न ही मालिक की पीठ पर चढ़ने की कोई जगह जरूरत थी। शीशा तोड़ने के लिए मैं कुर्सी पर भी जड़ा हो सकता था। फिर अच्छा होता अगर कोई बड़ा आदमी चटखनी खोलता—लम्बी बाँहें होने पर यह काम सहज ही हो जाता। इस दिन के बाद मैंने इस घर की घटनाओं से भयभीत होता छोड़ दिया।

दोनो भाई गिरजे में गाते थे। कभी-कभी काम करते समय भी वे धीमे स्वर में गुनगुनाया करते। बड़ा भाई मध्यम सुर में गुनगुनाता

उछलती सहरो में खोई,
प्रिय की प्रेम निशानी!

और छोटा भाई कीमल स्वर में साप देता

मुख शान्ति हुई बिरानी
हुई सुनी चिदगानी!

बच्चों के कमरे से छोटी मालकिन दबी हुई आवाज में कहती
“तुम्हें ही क्या गया है? येवो की सोने भी दोगे या नहीं?”

या फिर

"बासूया, तुम घर-बीबी वाले आदमी हो। प्रेम की निशानियों के गीत गाते तुम शर्म से गड नहीं जाते! इसके अलावा गिरजे मे प्राथना का घटा भी बजता ही होगा "

"अच्छा तो यह लो, हम अभी गिरजे के गीत गाना शुरू करते हैं "

मालकिन जोर देकर कहती कि गिरजे के गीत हर कहीं नहीं गाए जा सकते—जास तौर से यहा। और पाखाने की ओर इशारा करके मालकिन 'यहा' का अर्थ अरुणत से ब्यादा स्पष्ट कर देती।

"हद है!" गुरति हुए मालिक कहते। "मकान बदलना ही पडेगा, नहीं तो इस घीचड-पीचड मे "

मकान बदलने की भांति मालिक नयी मेज लाने का भी बहुधा राग अलापते थे। लेकिन तीन साल हो गए थे और मेज का अभी कहीं पता तक न था।

अपने पड़ोसियों के बारे मे जब भी ये लोग बातें करते तो मुझे जूतो की दुकान वाले फुत्सित चातावरण की याद ताजा ही आती। वहा भी ऐसी ही बातें होती थीं। साफ मालूम होता कि मेरे ये मालिक भी अपने आपकी नगर मे सबसे अच्छा, एकदम दूध का धुला, समझते हैं। बेवाग नैतिकता और सदाचार के मानो सबसे अच्छे नियम उहे मालूम हैं और उन नियमों की कसौटी पर वे सभी को बड़ी बेरहमी से बसते, हालांकि मेरे लिये ये नियम अस्पष्ट थे। उनकी इस आदत को देखकर उनके और उनके सदाचार के नियमों के प्रति मेरे मन मे सीखा रोय घर करता और उनके इस सदाचार को पाय तले रौंदने मे मुझे अब बेहद आनंद आता।

मुझे भारी मेहनत करनी पडती घर की महरी का सारा काम मैं ही करता, दूध के दिन रसोईघर मे फश धोता, समोवार और पीतल के दूसरे बरतनों को रगड रगडकर चमकाता, शनिवार के दिन समूचे घर तथा दोनों सीनों को साफ करता। अलावघरों के लिये लकडो काटता और जूठे बरतन भाजता, सब्जिया छीलता-काटता, टोकरी हाथ में लेकर अपनी मालकिन के साथ बाजार जाता, सौदा-मुलफ और दवाइयों के लिये फिराने तथा दवा फरोश की दुकानों के चक्कर लगाता।

मेरी बड़ी मालकिन, मेरी नानी की चिटचिटी और झगडालू बहन, रोय सुबह ही छ बजे उठ जाती। जल्दी से हाथ-मुह धोती, निरी लयी

शमील पहने देव प्रतिमा के सामने घुटने के बल खड़ी होती, और बड़ी देर तक अपने जीवन, अपने घंटों और बहू के बारे में भगवान से शिकायतें करती।

“हे भगवान !” अपनी उगलियों के छोर बटोरकर वह उनसे अपने माथे को छूते हुए रक्षांसी भावावस्था में झोंकना शुरू करती। “हे भगवान, मैं तुमसे और कुछ नहीं चाहती—बस, थोड़ी सी शान्ति चाहती हूँ, इतनी कि मेरी आत्मा को कुछ घन, थोड़ी सी राहत, मिल सके।”

उसके इस रोने झोंकने से मेरी आँखें खुल जातीं और कम्मल के नीचे लेटा मैं उसकी ओर देखता रहता, सहमे हृदय से भगवान के सामने उसका बिलखना बिसूरना सुनता। बारिश से धुली रस्तोईघर की लिडकी में से धारव की सुगंध उदासी से भीतर झाँकती। और सूरज की ठंडी किरणों में उसकी धूसर आकृति जल्दी जल्दी फश पर झुकती और बेचन तलौब के चिह्न बनाती रहती। उसके छोटे से सिर पर बधा हमाल लिसककर उतर जाता और उसके रंग उड़े महीन बाल उसकी गदन और कंधों पर गिरने लगते। उसका हाथ तेजी से हरकत करता और अपने हमाल को फिर से सिर पर लिसकाते हुए वह बडबडा उठती

“यह बिधडा भी घन नहीं लेने देता।”

तलौब का चिह्न बनाते समय वह अपने माथे, कंधों और पेट पर थोरो से हाथ मारती और भगवान के दरबार में अपनी फारियाद की फुहार छोड़ती

“हे भगवान, अगर तुम्हें मेरा जरा सा भी टपाल हो तो मेरी इस बहू को बसकर सखा देना। जिस तरह यह मेरा अपमान करती है और मुझे सताती है, वैसे ही तुम भी उसे छोड़े हाथा लेना। और मेरे बेटे को झालें लोलना, उसे इतनी समझ देना जिससे वह बहू की असतियत पहचाने, और बीबतर को सही नजर से देख सके, और बीबतर पर बधा रखना, उसे अपने हाथ का सटारा देना, भगवान !”

बीबतर भी यहाँ, रस्तोईघर में ही, एक उंचे सल्ले पर सोता था। माँ का रोना झोंकना सुन उसकी भी नाँव उचट जाती और ऊँचे स्वर में बिसागा

“समझे ही समझे तुमने फिर रोना-बोसना गूह कर दिया। तुमपर भी गते एंडा को पार है, माँ !”

“बस-बस, तू सोता रह। बहुत बातें न बना,” मा फुसफुसाकर दबे हुए स्वर में कहती। इसके बाद, एक या दो मिनट तब, वह चुपचाप प्राण-पीछे की ओर झूमती और फिर बदले की भावना से फनफनाकर चीख उठती

“भगवान करे उनकी हड्डिया तक जमकर बर्फ हो जाए, और उनका सारा खून सूख जाए!”

मेरे नाना भी कभी इतनी कुत्सित प्रायनाए नहीं करते थे।

प्रायना करने के बाद वह मुझे जगाती।

“उठ लडा हो! क्या नवाब की भाति ऐंड रहा है, जैसे इसीलिए हमने तुझे यहा रखा हो? उठ, समोवार तयार कर और लकड़िया भीतर लाकर रख। अहा, रात फिर बलिया घोरना भूल गया, क्यों?”

उसकी फनफनाहट भरी बडबड से बचने के लिए मैं खूब फुर्ती से काम करता, लेकिन उसे खुग करना असम्भव था। जाडों की बफौली प्रायो की भाति सनसनाती वह रसोईघर में घूमती फिरती और फुकार उठती

“शि शि शि, शतान की ओलाड! अगर बीबतर को जगा दिया तो फिर देखना, कैसे कान उमेठती हू! अच्छा जा, भागकर बुकान से सामान ले आ ”

नाशते के लिए मैं हर रोज दो पाँड डबल रोटी और छोटी मालकिन के वास्ते कुछ बड खरीदकर लाता था। जब मैं रोटी लेकर घर लौटता तो बीनो सन्देह भरी नजर से उसे उलट-पलटकर देखतीं, हथेलियों पर रखकर उसका घडन जावतीं और पूछतीं

“यह कम तो नहीं है? इसके साथ क्या एक टुकडा और नहीं था? अच्छा, जरा इधर भाकर अपना मुह तो खोल!”

इसके बाद वे इस तरह चिल्लातीं मानो मैदान भार लिया हो

“देखो, दूसरा टुकडा यह खुद घट कर गया—साफ निगल गया! इसके दातों में रोटी बिपकी है।”

मैं बडी खुशी से काम करता था—घर की गदगो मिटाना मुझे बहुत पसद था। बडे मजे से मैं घर की धूल झाडता-बुहारता, फर्श को रगडता, पीतल के बरतनो को चमकाता, दरवाजो की मूडो और दस्तो को साफ करता। जब घर में गान्ति होती तो स्त्रिया अक्सर कहतीं

“काम तो यह मेहनत से करता है।”

“और साफ-सुथरा भी रहता है।”

“लेकिन बहुत सरकश है।”

“आखिर सालन-पालन करनेवाला कौन था?”

वोनों ही चाहतीं कि मैं उनका भान करूँ, उनके साथ भ्रम से दूर भाऊ। लेकिन मैं उन्हें नीम पागल समझता। उन्हें पसंद नहीं करता, उनका कहना नहीं मानता और हमेशा मुह दूर मुह जवाब देता। छोटे भालकिन से जब यह छिपा न रहा कि कुछ बातों का मुझपर उलटा हा असर होता है तो उसने बारबार कहना शुरू किया

“याद रख तुझे कगलो के परिवार से लिया गया है। तेरी माँ तक को मैंने एक घाँस के भीती जडा रेशमी सबावा पहनाया था।”

जब मुझसे नहीं रहा गया तो एक दिन मैंने उससे कहा

“तो उस लबादे के बदले में क्या भ्रम म अपनी लाल उतारू ?”

घबराकर वह चिल्लाई

“हाय भगवान, यह तो घर में भाग ही लगा सकता है।”

यह सुनकर मैं सकपका गया—आखिर मैं घर में भाग क्यों लगाऊंगा? मेरे घारे में दोनों हर घडी भालिक के कान खतीं और वह मुझे सक्ती से डाँटता

“बस बहुत हो चुका। अगर अपनी हरकत से बाँध न आएँ तो।”

लेकिन एक दिन तग आकर उसने अपनी पत्नी और माँ को भी झाड़े हापो लिया

“तुम दोनों की अक्ल भी न जाने कहीं चरने गई है। जब देखो तब उस लडने की गरदन पर सपार, भानो वह कोई घोडा हो! और कोई होता तो सब छोड छोड कभी का भाग गया होता, या काम करते करते उसका भ्रम तक कचूमर निकल गया होता।”

पह सुन स्त्रियाँ बुरी तरह झुमला उठीं और उनकी आँखों में आँसू धमकने लगे। गुस्से में पाँव पटकते हुए उसकी पत्नी चिल्लाई

“और तुम्हारी बुद्धि क्या तुम्हारे इन शोवा भर लम्बे बालों में लो गई है जो छुब इसके सामने इस तरह की बातें करते हो? तुम्हारी बातें सुनने के बाद यह और भी सरकश हो जाएगा। तुम्हें इतना भी लयात नहीं कि मेरा घर भारी है।”

उसकी मा ने भी शिकायत के स्वर में रोना बिसूरना शुरू किया
"भगवान बुरा न करे, लेकिन मेरी बात गाठ बाध लो कि तुम लडके
को इस तरह सिर पर चढ़ाकर खराब कर डालोगे, वासीली!"

श्रीर दोनो तोबडा चढ़ाए वहा से खिसक गईं। मालिक अब मेरी श्रीर
मुडा श्रीर सहती से बोला

"यह सब तेरी करतूत का ही नतीजा है। मैं तुझे फिर नाना के
पाम बापम भेज दूंगा। मजे से चियडे बटोरते फिरना!"

अपमान का यह कडवा घूट मेरे गले में अटक गया। पलटकर मैंने
जवाब दिया

"तुम्हारे पास रहने से तो चियडे बटोरना कहीं अच्छा है। तुम
मुझे यहा काम सिखाने के लिए लाए थे। लेकिन तुमने मुझे सिखाया क्या
है—गधे की भांति केवल घर का बोसा डोना!"

मालिक ने हल्के हाथ से मेरे बाल पकड़ लिए और मेरी आंखो में
देखते हुए अचरज के साथ कहा

"बडा तेज-तरार है तू! पर भाई में चाले यहा नहीं चलेगी
नहीं, बिल-कुल नहीं।"

मुझे पूरा यकीन था कि वह मेरा बघना-बोरिया गोल कर देगा।
लेकिन दो दिन बाद येन्सिल, एलर, टोस्ववेघर और काण्ड का एक
पुलिवा लिए उसने रसोईघर में पाव रखा।

"घाकू साफ करने के बाद इसकी नकल उतार देना," उसने कहा।

यह किसी डुमजिला मकान के अग्रभाग का नक्शा था जिसमें अनगिनत
जिडकिया और प्लास्तर की सजावट का काम बना था।

"लो, परकार सभालो। इससे सभी रेखाओ को पहले नापना और
उसके बाद नुक्ते डालकर उनके छोरो के निशान बनते जाना। फिर,
एलर की मदद से, नुक्तो को मिलाते हुए रेखाए खींचना। पहले लम्बान
के रख में रेखाए खींचना—ये पडी रेखाए होगी, फिर ऊपर-नीचे वाली
रेखाए खींचना—ये खडी रेखाए होगी। बस, इस तरह पूरी नकल उतार
लेना।"

साफ-सुपरा और सलोके का काम तथा कुछ सीपने का यह अवसर
पाकर मुझे खशी हुई, लेकिन काण्ड और परकार आदि की श्रीर म सहमी
नजर से देख रहा था और मेरी सपस में कुछ नहीं आ रहा था।

फिर भी अगले ही क्षण हाथ धोकर मैं बाम में जुट गया। मैंने तमाम पडी रेताभा के नुपने लगाए धीरे स्तर से सबीरों लॉचकर उन्हें बांध दिया। यह सब तो बड़े मजे में हो गया। घस, एक ही घात उरा गडबडी। न जाने कसे, सोन सबीरों फालतू लिप गई थीं। इस बार मैंने तमाम लडी सबीरों के निशान घनाए धीरे उन्हें भी गिता दिया। धीरे मेरे अचरज का ठिपाना न रहा जब मैंने देखा कि यह तो कुछ धीरे ही बन गया है। इस घर की शकल-मूरत एकरम बदली हुई थी। लिडनियां ऊपर लिस्सफर बीयारा के बीच की लाली जगह में पहुंच गई थीं, धीरे उनमें से एक तो घर की बीवार को पार कर हवा में ही सटक रही थी। घर का मुख्य दरवाजा लिस्सफर दूसरी मजिल पर पहुंच गया था, कानिस छत के मध्य में आ पहुंची थी, धीरे रोगनवान विमनो पर आ लगा था।

सकपनाया सा बडी देर तक मैं इस धजूरे की धीरे देखता रहा। कोशिश करने पर भी मेरी समझ में न आया कि यह सब कसे हो गया। आदिर समझने की कोशिश छोडकर अपनी कल्पना के सहारे मैंने स्थिति को सभालने का निश्चय किया सभी कानिसो धीरे छत की मुडर पर मैंने चिडे चिडियो, कौवा धीरे कबूतरा की तस्वीरें बना दीं, धीरे लिडकियो के सामने की खुली जगहों को मैंने टेढी-मेढी टांगा घाले आदनियो से भर दिया। उनके हाथों में मैंने एक एक छतरी भी घमा दी, लेकिन उनके टेढे मेढेपन में हस्ते भी कोई खास कमी नहीं आई। इसके बाद समूचे काणस पर तिरछी सबीरों डाल मैं अपने मालिक के पास पहुंचा।

मालिक की भीहे तन गई, बालो में हाथ फेरते हुए धीरे मुह फुला कर उसने पूछा

“यह सब क्या है?”

“यह बारिश हो रही है,” मैंने कहा, “बारिश में सभी घर टेढ़े मेढ़े हो जाते हैं, क्योंकि छुद बारिश भी उल्टी-सीधी गिरती है। धीरे पक्षी—ये सब पक्षी हैं—कानिसो पर निकुडे सिमटे बठ हैं। जब बारिश होती है तो सदा ऐसा ही होता है। धीरे ये लोग अपने अपने घर पहुंचने की जल्दी में हैं। यह बीबी जी स्फटकर गिर पडी हैं, धीरे यह नाँवू बेचनेवाला है ”

“बहुत-बहुत धन्यवाद,” मालिक ने मेघ पर झुकते हुए कहा, यहाँ तक कि उसके सम्बन्धे बाल कागज पर खर खराने लगे। उसका समूचा बदन हसी से हिल रहा था।

“तेरा बेटा गक हो, चिड़े जानवर!”

तभी छोटी मालकिन भी मटका सा अपना पेट लिये आ मौजूद हुई, और मेरी करतूत पर नजर डालकर देखा।

“मार खाकर ही यह ठीक होगा!” उसने अपने पति को उकसाया।

मालिक पर इसका असर नहीं हुआ। बिना किसी झुमताहट के बोला

“ओह नहीं, शुरू-शुरू में खुद मेरा भी यही हाल था”

साल पेंसिल से उसने मेरी गलतियों पर निशान बना दिये और मुझे एक दूसरा कागज देते हुए बोला

“फिर कोशिश करो। एक बार, दूसरी बार, तीसरी बार—जब तक ठीक न बने, इसे बनाते ही रहना।”

मेरा दूसरा प्रयत्न पहले से अच्छा था। केवल एक खिडकी अपने स्थान से खिसककर बरसाती के बरवाजे पर आ गई थी। लेकिन घर सूना सूना सा रहा। यह मुझे कुछ अच्छा नहीं मालूम हुआ। सो सभी काट छाट के लागा से मैंने उसे आबाद कर दिया। सिडकियों पर युवतियाँ बठी पखा झल रही थीं। युवक सिगरेट का घुमा उडा रहे थे और एक युवक जा सिगरेट नहीं पीता था, अपनी नाक पर झगूठा रखकर और जगलिया फल/कर दूसरों को अनादरपूर्वक दिखा रहा था। बाहर पोच के आगे एक गाड़ी खड़ी थी और कुत्ता लेटा हुआ था।

मालिक ने गुस्से से पूछा

“यह फिर क्या काटा पीटा कर लाया है?”

मैंने बताया कि आदमियों के बिना घर बड़ा सूना सूना सा लग रहा था। लेकिन उसने मुझे डाटना शुरू किया

“यह क्या खुराफत है! अगर कुछ सीखना चाहता है तो फायदे से काम कर! बेकार की ऊल जलूल बातों से बाज आ!”

और अन्त में मूल से मिलता जुलता दूसरा चित्र बनाकर जब मैं उसके पास ले गया तो वह बहुत खुश हुआ।

“देखा। अब ठीक बन गया न? अगर इसी तरह कोशिश करता रहेगा तो बड़ी जल्दी तरक्की करेगा।”

और उसने मुझे एक नया काम सौंपा

“हमारे अपने प्लैंट का एक नक्शा तयार कर, जिसमें सब चीज कायदे से दिखाना—कितने कमरे हैं और किस किस जगह बने हैं। दरवाज और खिड़किया कहां-कहां हैं। हर चीज अपनी ठीक जगह पर होनी चाहिए। मैं तुझे कुछ नहीं बताऊंगा, सारा काम खुद ही करना होगा।”

मैं रसोईघर में आकर मन ही मन जोड़-तोड़ बठाने लगा कि इस क्या किया जाए।

लेकिन नक्शानवीसी का मेरा यह काम भागे नहीं बढ़ सका, तभी उसका अन्त हो गया।

बूढ़ी मालकिन मेरे पास आई और जले भुने स्वर में बोली

“सो अब नक्शानवीस बनना चाहता है, क्या?”

उसने मेरे बाल पकड़े और मेरा सिर इतने जोरो से मेज से टकराया कि मेरी नाक और श्रोत्र लहलुहान हो गए। उसने हाथ-पाव पटके, खूब उछली और कूदो, मेरे नक्शे को उठाकर फाड़ डाला, झींझारों को फरा पर फेंक दिया और फिर, कूल्हों पर हाथ रख, विजेता के अंदाज में चिल्लाई

“ले, बना नक्शे! नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा। पराये भावनी को काम मिले और भाई—एकमात्र सगा और मा-जाय भाई भागे?”

मेरा मालिक और उसके पीछे-पीछे उसकी पत्नी भी आ धमकी। तीनों के तीनों, चीखने और चिल्लाने, एक दूसरे पर धूकने लगे। अन्त में स्त्रियों रोती-बलपती विदा हो गई और मालिक ने मुझसे कहा

“फिलहाल तू यह सब छोड़ दे, अभी मत पढ़—देख ही रहा है क्या तूफान खड़ा कर दिया इन लोगों ने।”

उसकी यह हासत देख मुझे दुःख हुआ—कितना दबा पिसा और कितना निरोह। एक घड़ी के लिए भी स्त्रियों की चिल्ल-यो उसका पीछा नहीं छोड़ती थी।

मैंने पहले ही भांप लिया था कि बूढ़ी मालकिन को मेरा काम सीखना पसंद नहीं है और रोडे अटकाने में भी वह अपनी शक्ति भर कोई बरत नहीं छोड़ती थी। इसलिए, नक्शा बनाने बठाने से पहले, मैं उससे यह पूछना कभी नहीं भूलता था

“अब और कोई काम तो नहीं है, मालकिन?”

लीजकर वह जवाब देती

“जब होगा तब अपने आप बता दूंगी। जा अब मेज पर अपने कोड़े-
मकोड़े बना ”

और कुछ मिनट बाद ही, किसी न किसी काम के लिए वह मुझे
अदबदाकर भेजती या कहती

“जीना साफ क्या किया है, निरी बेगार काटी है। ओने-कोने धूल
से भरे पड़े हैं। जा, झाड़ू लेकर दोबारा साफ कर ”

लेकिन यहाँ पहुँचने पर मुझे कहीं कोई धूल नहीं दिखाई देती।

“तो मैं क्या झूठ बोल रही थी, क्यों ?” वह चिल्लाकर मेरा मुँह
बन्द करना चाहती।

एक बार कागजों पर क्वास* उलटकर उसने मेरी सारी मेहनत पर
पानी फेर दिया। दूसरी बार उसने पूजा के डीये का सारा तेल उड़ेल
दिया। छोटी लड़की की भाँति बचकानी चालाकी के साथ वह इस तरह
की हरकतें करती, बच्चों की भाँति अपनी इन हरकतों को वह छिपा नहीं
पाती। इतनी जल्दी और इतनी आसानी से नाराज होते या हर चीज
और हर व्यक्ति के बारे में इतने जोश के साथ शिकायतें करते मैंने अर्थ
किसी को न पहले, न बाद में देखा। शिकायतें करना सभी को अच्छा
लगता है, लेकिन बड़ी मालकिन यह विशेष आनन्द के साथ करती थी
मानो गीत गाती हो।

अपने घेरे से उसका प्रेम किसी पागलपन से कम नहीं था। इस प्रेम
की शक्ति को मैं केवल भवाव ही कह सकता हूँ, इसे देखकर मुझे हसी
नी आती और डर भी लगता। सुबह की पूजा प्रायण के बाद वह अलावधर
की सीढी पर लड़ी हो जाती, और उसके ऊपर साने के तल्ले पर अपनी
कोहनिया टिकाकर पूरी तन्मयता से फुसफुसाती

“मेरे भाग्य का सहारा, मेरे रक्त और भास का टुकड़ा, हीरा सा
छरा और फरिश्ते के घरों का हल्का फुल्का¹ तू सो रहा है। सो, मेरे
जिगर के टुकड़े, सो! भीठे सपनों की चादर अपने हृदय पर डालकर
सो। और वह देख, सपनों में तेरी दुलहिन तेरे लिए पलक पावड़े बिछाए
है। कितनी सुंदर—एकदम गोरी चिट्ठी, मानो राजकुमारी या किसी धनी

* क्वास—कानी रोटी और तरह-तरह के फला से बनाया गया पेय।—स०

सौदागर की बेटो ही! तेरे दुश्मनो को फाल चटकर जाए, मा के गभ मे ही उहे लकवा मार जाए! और तेरे मित्र सकडो वप जिए, और झुड की झुड कुवारी लडकिया सदा तुझपर न्योछावर हा, बत्तखो के दत को भाति तेरे पीछे फिरती रहे!"

यह सुन मेरे पेट मे बल पड जाते। औघड और काहिल वीक्तर इतने मे बिल्कुल कठफोडवे जसा था—वसी ही लम्बी नाक, बसा ही पचरगा जिद्दी और मूख!

मां की फुसफुसाहट से कभी-कभी उसकी नाँद उचढ जाती और उर्लीदे स्वर मे वह बडबडाता

"तुम्हे शतान भी तो नहीं उठा ले जाता, मा! क्या यहा खडी खडी सीधे मुह मे धूक रही हो! जीना हराम है!"

इसके बाद, बहुत कर, वह धुपचाप नीचे उतर जाता और हस्तो हुए कहती

"अच्छा, सो, सो नासायक!"

कभी-कभी ऐसा भी होता था उसकी टायें ढीली पड जातीं, और अलावघर के किनारे वह धम्म से ढह जाती, मुह खोले और इस तरह हाफते हुए, मानो उसकी जीभ जल गई हो। तीखे शब्दो की फिर बौछार होती

"क्या कहा कलमुहे, तेरी अपनी मा को शतान उठा ले जाये! कपूत, मेरी कोल में घाते ही तू मर क्यों नहीं गया? खूने जन्म ही क्या लिया, शतान की डुम! मेरे माये के कलक!"

नागे मे घुत्त गली के गढे और बाबाह शब्द उसके मुह से निकलते—भयानक और घिनौने!

वह बहुत कम सोती थी। नाँद मे भी जैसे उसे चन नहीं भितता था। कभी-कभी रात के बोरान वह कई बार अलावघर से नीचे उतरती, बाउब के पास उस जगह पहुचती जहा में सो रहा था, और मुझे गगा देती।

"क्यो, क्या बात है?"

"गोर न करो," सलीब का चिह्न बनाकर और अघेरे मे बिसो चीठ की ओर देखते हुए वह फुसफुसाती, "ओह भगवान मेरे मसोहा आलीजाह— सत धर्यारा अशाल मृत्यु से हम सब को रसा करना!"

फिर पापते हाथों से यह मोमबत्ती जलाती। कुप्पे सी नाप घाला उसका चेहरा फूल जाता और ध्याकुलता से भरी धूसर आँखें मिचमिचती वह धुधलके से विकृत चीजों को जोर लगाकर देखती। रसोई काफ़ी बड़ी थी, लेकिन टर्कों और अलमारियों की फालतू भरमार ने उसे घिचपिच बना दिया था। चाद की रोशनी यहाँ आकर स्थिर और शांत हो गई थी, और देव प्रतिमाओं पर सदा चेतन आग की परछाईया धिरक रही थीं। दीवारों से सटे रसोई के छुरे काटे हिमकणों की भाँति घमक रहे थे और शल्फ के सहारे लटकी काली कड़ाहिया बेंडोल और बदनूमा अंधे चेहरों की भाँति दिखाई देती थीं।

बूढ़ी मालकिन हमेशा टटोल-टटोलकर, मानो नवी के पानी की पाह लेते हुए अलावधर से सावधानी से नीचे उतरती। फिर, अपने नगे पावों से छपछप करती हुई वह उस कोने में पहुँचती जहाँ बड़े हुए सिर की भाँति पानी भरने का एक डिब्बा लटका था। डिब्बे के इधर उधर कान की भाँति दो कुन्दे लगे थे। इसके नीचे गबा पानी जमा करने की एक बाल्टी और पास में ही साफ पानी से भरा एक टब रखा था।

गद गद आवाज करते हुए वह पानी डकारती और फिर खिडकी के शीशे पर जमी बर्फ की नीली परत के बीच से झाँककर देखती।

होठो ही होठो में फिर फुसफुसाती

“ओ भगवान, मुझपर दया करना, मेरी आत्मा पर तरस खाना !”

कभी-कभी वह मोमबत्ती बुझा देती और घुटनों के बल गिरकर तीखे स्वर में बुदबुदाती

“किसी के हृदय में मेरे लिए प्यारममता नहीं है, मुझे कोई नहीं चाहता !”

अलावधर पर चढ़ते हुए वह धिमनी के दरवाजे के सामने सलीब का चिह्न बनाती और फिर उसके नीतर हाथ ढालकर देखती कि छटका ठीक जगह पर लगा है या नहीं। उसका हाथ कालिल से काला हो जाता, वह एक बार फिर गालियों का गोला दागती और तुरत सो जाती मानो किसी अदृश्य शक्ति ने उसे तुरत ही नींद में डूबो दिया हो। जब कभी वह मुझपर बरसती तो मैं सोचता अफसोस कि उसकी शादी नाना से नहीं हुई, यह उनके होश ठीक रखती, और खुद इसे भी ठीक अपने जसा ही एक जोड़ीदार मिल जाता। वह अक्सर अपना मुत्सा मुझपर

उतारती, लेकिन कभी-कभी ऐसे दिन भी आते जब हई सा फूला उसका चेहरा फुम्हला जाता। उसकी आँखों में आसू तरने लगते और वह अपनी बातों के सत्य में विश्वास पदा करनेवाले ढंग से कहती

“तुझे क्या पता, मेरे कलेजे में कितना दुख भरा है। मैंने बच्चे जने, पाल पोसकर उड़े बड़ा किया और अपने पाय पर खड़ा होने लायक बनाया, लेकिन मुझे क्या मिला? रसोई में बावचिन की भाँति दिन रात खटना और उनका दोषला भरना। बड़ा सुख मिलता है मुझ इस में? बँटा परायी लुगाई को घर में लाया और अपना सगा खून भूल गया। और क्या यह ठीक है?”

“नहीं यह तो ठीक नहीं है,” में सच्चे हृदय से कहता।

“देला? ये बाते हैं”

और वह पूरी बेशर्मी के साथ, अपनी बहू की चाबर उतारना शुरू करती

“गुसलजाने में मैंने उसे नहाते देला है। पता नहीं, उसकी किस चीज पर वह इतना सट्टू है? ऐसी क्या रूपवती कहलावे हैं?”

पुरुष और स्त्रियों के सम्बन्धों का शिक करते समय वह चुन चुनकर गद से गदे शब्दों का इस्तेमाल करती। शुरू-शुरू में उसकी बातों से मुझ थड़ी धिन मालूम होती, लेकिन धीमे ही बड़े ध्यान और गहरी दिलचस्पी से मैं उसकी बातें सुनने लगा, क्योंकि मैं महसूस करता था कि उसके शब्दों के पीछे कोई कट्ट सत्य प्रकट होने के लिये कसमसा रहा था।

“लुगाई में थड़ी ताकत है,” हथेली को मेझ पर पटपटाते हुए वह भनभनाती। “लुगाई में भगवान को भी धोखा दे दिया था। समझा? हीवा की वजह से सभी लोगों को दोषला का मुह देखना पड़ता है!”

स्त्री को शक्ति का बखान करने से वह कभी नहीं थकती, और हर बार मुझे ऐसा मालूम होता मानो इस तरह की बातें करके वह किसी को डरा रही है। उसकी यह बात मुझे कभी नहीं भूली कि “हीवा ने लुगा को भी धोखा दे दिया”।

हमारे अहाते में एक और घर था जो उतना ही बड़ा था जितना कि हमारा। बा इमारतों के आठ पलटा में से चार में फीजी अफसर रहते थे। फौज का पावरो एक अय पलट में रहता था। अहाते में सारिंसी, अदलिपों की भरमार थी, बावचिनें, धोकिनें और घर की तीकरानियाँ

उनसे मिलने आती रहती थीं। रसोईघरों में नित्य ही नये गुल खिलते, इश्क और आशनाई के शिगूफे छूटते, आसुआ और भारपीट तक की नौबत आती। तिपाही आपस में लडते, खाई खोदनेवाली और घर-मालिक के मजदूरों तक से भिड जाते, औरतो को पीटते थे। अहाता क्या था, मानो हट्टे-कट्टे मर्दों की पाशविक और बेलगाम भूख का, नगी कामुकता और वासना का सागर हिलोरे ले रहा था। मेरे मालिक लोग जब दोपहर का खाना खाने, चाय पीने या सास का भोजन करने बठते तो कौरी कामुकता और बेमानो बदरता में डूबे इस जीवन और उसकी उखाड पछाड के गढे किस्सो का पूरी बारीकी और वेशर्मा से घटखारे ले लेकर ब्रयान करते। बूढी मालकिन अहाते की एक एक बात की खबर रखती और रस ले-लेकर उसे बोहराती।

छोटी मालकिन चुपचाप इन किस्सों को सुनती और उसके गवराए हुए होठो पर मुस्कराहट बिरकने लगती। वीक्तर हसी से बोहरा ही जाता, लेकिन मालिक नाक भींह सिबोडकर कहता

“बस भी करो, मा!”

“हाय राम, तुम्ह तो मेरा बोलना भी नहीं सुहाता।” मा शिकायत करती।

वीक्तर शह देता

“बोले जाओ, मा। इस में शम की क्या बात है? यहां सभी अपने लोग ही ह ”

बडे लडके के हृदय में मा के प्रति तिरस्कार भरी क्या का भाव था। वह हमेशा मा के साथ अकेला रहने से बचता, और अगर संयोगवश कभी ऐसा ही भी जाता तो मा उसकी पत्नी को लेकर शिकायतों का अम्बार लगा देती और अत में पसे भागने से कभी न चूकती। बो-तीन हबल, कुछ रेशमगारी निवालकर वह झट से उसके हाय पर रख देता।

“तुम्ह पसा की भला अब क्या जरूरत है, मा? यह नहीं कि मुझे देते डुल होता है, लेकिन सवाल यह है कि लेकर बरोगो क्या?”

“मुझे तो बस वह भिलारियों के लिये, घब में मोमबत्तिया से जाने के लिये ”

“भिलारियों की बात न करो, मा! वीक्तर का तुम सत्यानास करके छोडोगी!”

"तुम्हे अपना भाई भी फूटी आखी नहीं सुहाता! यह बड़ा पाप है!"

बेचैनी से हाथ हिलाकर वह मा के पास से चल देता।

वीक्तर मुहफट था और मा का चरा भी लिहाज नहीं करता था। खाने की चीजों पर वह बुरी तरह टूटता, और उसका मन कभी नहीं भरता। रविवार के दिन बड़ी मालकिन मालपूवे बनाती और उसके लिये कुछ मालपूवे निकालकर अलग रखना कभी नहीं भूलती। उसे मतबान से छिपाकर वह काउच के नीचे रख देती जिसपर मैं सोता था। गिरत से लौटते ही वीक्तर सीधे मतबान पर झपट्टा मारता और बड़बड़ाकर कहता

"ऊठ की बाढ मे खोरा! छोडे मालपूवे और रख देती तो क्या तेरा कुछ बिगड जाता। बूढ़ो चमरखट्टो!"

"श्यादा बालो नहीं। धुपचाप निगल जाया। अगर किसी ने देल सिपा तो "

"तो क्या? मैं साफ कह दगा कि अंतान की मौती खुद इस बूढ़ी खूसट ने मेरे लिए ये मालपूवे घुराकर रखे थे!"

एक दिन मैंने मतबान निकाला और वो एक मालपूवे खुद घट कर गया। वीक्तर ने मेरी छुन्न भरम्मल की। वह मुझसे उतनी ही घणा काता था जितनी कि मैं उससे। वह मुझे चिढाता, दिन में तीन बार अपने जूता पर मुझसे पालिश कराता, अपने तख्ते पर लेटने के बाद लकड़ी की पट्टिया खिसकाता और मेरे सिंद का निशाना सायकर बराब क बीच से खोरा से घूकता।

अपने घड़े भाई की भाति जिसे बात-बात में 'कुडक-मुंगियो' या इती तरह के दूसरे फिकरे कसने की आदत थी, वह भी कुछ खास डले-उलाए फिकरे बोहराने की कोशिश करता। लेकिन उसके फिकरे हद से ज्यादा घेहूदा और बेतुके होते थे।

"मां, अट-गन! मेरे भोजे कहाँ हैं?"

येमानी सवालो से वह मेरी जान खाता। जसे

"भलेपसेई, यता 'मुलबुल' तिलकर हम उसे 'गुलगुल' क्या पढ़ने हैं? जिग तरह कुछ लोग 'घाबू' को 'बाबू' कहते हैं, वैसे ही 'घायूर' को 'घायूर' क्या न कहा जाए। घोर यह 'बुच' गलत क्या 'बूची' स बना है? अगर ऐसा है तो- "

उनकी बोलचाल और बातचीत करने का ढंग मुझे बहुत बुरा लगता। जन्म से ही नाना और नानी को साफ-सुखरी और सुधड़ भाषा की घुट्टी पीकर मैं बड़ा हुआ था। ब्रेमेल शब्दों का गठबचन कर जब वे प्रयोग करते तो शुरू-शुरू में मुझे बड़ा अजीब लगता। मेरी समझ में न आता कि यह क्या गोरखधारा है। "भयानक मजा", "इतना खाने का दिल है कि मर ही जाऊँ", "भीषण प्रसन्नता", या इसी तरह के अर्थ ब्रेमेल शब्दों को जोड़कर वे इस्तेमाल करते। और मैं सोचता कि जो 'मजेदार' है वह 'भयानक' कैसे हो सकता है, भोजन या खाने के साथ मरने का भला क्या सम्बन्ध हो सकता है, और 'प्रसन्नता' के साथ 'भीषण' शब्द का जोड़ कैसे बैठ सकता है?

और मैं उनसे सवाल करता

"इस तरह बोलना क्या ठीक है?"

झुझलाकर वे जवाब देने

"बस-बस, ज्यादा उस्ताबी भाडने की कोणिंग मन कर! नहीं ना तेरे कान तोड़ देंगे "

मुझे यह भी गलत मानूम हुआ। कान तो क्या कोई पेट-पीना या फूल पत्तिया हैं जिसे तोड़ा जा सकता है?

यह बिलाने के लिए कि मेरे कानों को टूट्टुड लेंटा जा सकता है, उन्होंने मेरे कान खींचे। लेकिन मैं निश्चल हड्डा टूट्टु डूंग डून्ग में बिजय के स्वर में चिल्लाकर बोला

"अहा, कान खींचने को तुम कान टूट्टुड करते हो! मेरे कान तो अभी भी वहीं हैं, जहाँ पहले थे।"

खारो और जिधर भी नजर डालता देखता, दुर्ग हृदयहीनता के लोग एक-दूसरे को सताते, दुनिया भर के इन्के इन्के और जिनीले ग्लेन का प्रदर्शन करते। यहाँ की गन्गी और ग्लेन के हुनाविनो के काउ बल्ल और चरलाखाने को भी मान कर ग्लि का ग्लु इन्कडूदन पर ग्लेन पर थे और हरजाई औरलों का डरगें पर नगमा दिवई ग्लेन हुनाविनो की गदगी और हृदयग्लेन के ग्लेन लो ग्लि के ग्लेन खौद का आभास गिनना या ग्लिने इन्क ग्लु और हुनाविने गाय बना दिया या बान्नेग ग्लेन, नूयदगी और ग्लेन देनेवाली गितीगित का ग्लेन ग्लेन हर ग्लिना का।

रहते थे, घन से जीवन बिताते थे, और थम के बदले गरजहरी समझ में न आनेवाली हलचल में डूबते उतराते थे। यहाँ हर चीज तेज, झझाहट भरी ऊँच से रगी हुई थी।

मेरी बुरी हालत थी, और जब कभी नानी मुझसे मिलने आती तब तो मानो मेरी जान पर ही यन आती। वह हमेशा पीछे के दरवाजे से रसोई में दाखिल होती। पहले वह देव प्रतिमाओं के सामने सलाब का चिह्न बनाती, इसके बाद अपनी छोटी बहन के सामने झुकते समय वह एकदम दोहरी हो जाती। उसका इस तरह झुकना मुझे पूणतया फुचल देता, ऐसा मालूम होता मानो ढाई मन का बोझ मेरे ऊपर आ गिरा हो।

एकदम ठंडे, उपेक्षापूर्ण अंदाज में मालकिन कहती

“अरे, तुम यहाँ कहा से टपक पड़ो, अकुलीना?”

नानी मेरी पहचान से बाहर हो जाती। इस अंदाज में वह अपना होठा फो काटती कि उसके चेहरे का भाव एकदम बदल जाता। ऐसा मालूम होता मानो वह नानी का चेहरा नहीं है। वह वहाँ, गंदे पानी वाले डोल के पास, दरवाजे के साथ लगी बेंच पर चुपचाप बठ जाती और मुह से एक शब्द भी न निकालती—एकदम गुमसुम, मानो उसने कोई अपराध किया हो। अपनी बहन के सवाल के जवाब भी वह दब और सहमे हुए से स्वर में देती।

मुझसे यह सहन न होता। झुमलाकर कहता

“यह तुम कहा बठ गयीं?”

बुलार भरी कनखिया से वह मेरी ओर देखती, और प्रभावपूर्ण ढंग से कहती

“बहुत जयान न चला। तू क्या इस घर का मालिक है?”

“इसके तो ढग ही निराले हैं,” बूढ़ी मालकिन कहती, “चाहे त्रितना इसे भारो या डाटो, पर यह हर बात में अपनी टांग छडाने से धाज नहीं आता।” और इसके बाद शिकायत का सिलसिला शुरू हो जाता।

कभी-कभी बड़े ही कुत्सित ढग से वह अपनी बहन को कोचती

“तो भय माग-ताग कर गुजर हो रहा है, अकुलीना?”

“बुरी बात क्या है?”

“जब साज हो बाकी न रही तो बात ही क्या है!”

“लोग कहते हैं ईसा मसीह भी माग-ताग कर ही गुजर करते थे ”

“यह तो मूर्खों की बातें हैं। नास्तिक ही ऐसी बातें करते हैं। और तुम बूढ़ी उनकी बात सुनती हो! ईसा मसीह क्या भिलारी था? वह भगवान का बेटा था। कहा गया है कि एक दिन वह आएगा और सभी के भले-बुरे कामों का जायजा लेगा—जो जिंदा हैं उनके भी और जो मर गए हैं उनके भी—याद रखो! तुम गलत सब्बर चाहें घूल में क्यों न मिल जाओ, उसकी नजरों से फिर भी न छिप सकोगे। वह तुम्हें और तुम्हारे घासीली से बदला लेगा, तुम्हारे घमंड के लिए और मेरे लिए, जब अपना धनी रिश्तेदार समझकर मैंने तुम्हारे आगे हाथ फलाया था ”

नानी ने अविचलित स्वर में जवाब दिया

“मुझसे जो बना, तुम्हारे लिए सदा करती रही। और भगवान ने हमसे बदला लिया है तुम्हें मालूम है ”

“थोड़ा लिया है, थोड़ा ”

उसकी खबान रकने का नाम नहीं लेती, और उसके शब्द नानी के हृदय पर कोड़े बनकर बरसते। मुझे बड़ा अटपटा मालूम होता और समझ में न आता कि नानी यह सब कैसे बरदाश्त करती है। नानी का यह रूप मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता।

तभी छोटी मालकिन कमरा में से आती और अहसान सा जताते हुए कहती

“धलो, खाने के कमरे में धलो। हा हा, सब ठीक है। बस, धलो आओ!”

बड़ी मालकिन नानी को पीछे से आवाज देती

“अपने पांव तो साफ कर लिए होते, चर-भर चरखे की माल!”
मेरे मालिक का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठता। नानी को देखते ही यह कहते

“ओह, पंडिता अकुलीना! कहो, बंसी हो? बूढ़ा काशीरिन तो अभी जिंदा है न?”

नानी के चेहरे पर अत्यंत स्नेहपूर्ण मुस्कराहट खेलने लगती।

“और तुम्हारा क्या हाल है? क्या अब भी उसी तरह काम में जुटे रहने हो?”

“हा काम में ही जुटा रहता हूँ। बूढ़ी की तरह।”

मालिक के साथ नानी की बातचीत में अपनापन और सहृदयता का भाव रहता। वह इस तरह बातें करती जैसे बड़े छोटे से करते हैं। कभी कभी मालिक मेरी माँ का भी बिक्र करती, कहती

“वर्षा चातुल्येना क्या औरत थी—दिलेर और ताकतवर!”

“तुम्हें याद है न,” नानी की ओर मुँह करते हुए उसकी पत्नी कहती, “मैंने उसे एक सबादा दिया था—काले रेशम का, और शीशे के मोती जडा।”

“हा, हा, याद है ”

“एकदम नया मालूम होता था ”

“ऊँह, सबादा, सबादा—जीवन का बचावा!” मालिक बड़बुआ।

“यह क्या—क्या कहा तुमने?” उसकी पत्नी सदेहपूर्वक पूछती।

“कुछ नहीं, कुछ नहीं सुखी दिन गुजर जाते हैं, अच्छे ताप गुजर जाते हैं ”

पत्नी के माथे पर चिन्ता की रेखाएँ खींच गईं। बोली

“मेरी समझ में नहीं आता—यह क्या बातें कर रहे हो तुम?”

इसके बाद नानी नवजात बच्चे को देखने चली गई और मैं धाप कर दरतन आदि साफ करने के लिए रह गया। मालिक ने धीमे और विचारमग्न से स्वर में कहा

“बड़ी अच्छी है नानी तेरी ”

उसने इन शब्दों को सुनकर मेरे हृदय में कृतज्ञता पवा हो गयी। लेकिन अकेले में मुझसे नहीं रहा गया। डुलते हृदय से मैं नानी से कहा

“तुम महा आती ही क्या हो? क्या तुम नहीं देखती कि मैं किस किस्म के लोग हूँ?”

“हां अल्योगा, मैं सब कुछ देखती हूँ,” नानी ने उस्तांत भरते हुए कहा और मेरी तरफ देखा। नानी के अद्भुत चेहरे पर एक बहुत ही शोभल मुसकराहट जगमगा उठी, और मैंने तुरंत लज्जा का अनुभव किया। राबमुष, नानी की आँखों से कुछ छिपा नहीं था—वह सब कुछ देखती थी, सभी कुछ जानती थी, वह उस ज्यल-पुनल तक से परिवर्तित थी जो कि उस समय मेरे हृदय में हो रही थी।

नानी ने चौकस होकर इधर-उधर नजर डाली और यह देखकर कि घास-पास में कोई नहीं है, मुझे अपनी बांहों में खींच लिया और उमड़ते हुए हृदय से बोली

“अगर तुम न होते तो मैं यहाँ कभी नहीं आती—इन लोगों से भला मेरा क्या वास्ता? फिर नाना बीमार हैं और उनकी बीमारी के चक्कर में मेरा सारा समय चला जाता है। मैं कुछ काम नहीं कर पाती, इस लिए हाथ भी लग है। उधर बेटा मिखाइलो ने अपने सासु को घता घता दिया है, सो उसका खाना-पीना भी मुझे ही जुटाना पड़ता है। इन्होंने तुम्हें छः रबल साल देने का वायदा किया था। सो मैंने सोचा कि अगर क्यादा नहीं तो कम से कम एक रबल इनसे मिल ही जाएगा। क्यों, आधा साल तो होने आधा न तुम्हें इनके यहाँ काम करते?” नानी और भी नाचे झुक गई और फुसफुसाकर मेरे कान में कहने लगी “उन्होंने मुझसे तुम्हें डाटने के लिए कहा है। शिकायत करते थे कि तुम कहना नहीं मानते। कुछ दिन और यहाँ टिक जाओ—एक दो साल, जब तक छुद मजबूत नहीं हो जाते—निभा लो किसी तरह, निभाओगे न?”

मैंने धावा ली कर लिया, लेकिन था यह बेहद कठिन। सुच्छ, ऊबाऊ, खाने की भाग दौड़ में सिमटा यह जीवन मेरे लिए बड़ा भारी बोझ था। मुझे ऐसा मालूम होता भागो दुस्वप्नों की दुनिया में मेरा जीवन बीत रहा है।

कभी-कभी मेरे मन में होता कि यहाँ से भाग चलो। लेकिन कम्बख्त जाड़ा अपने पूरे जोर पर था। रात को बर्फ की आघिया चलतीं, छटारी में हवा साय-साय करती और ठंड से जकड़ी लकड़ी की छते घरमरा उठतीं। ऐसे में भागकर मैं जाता भी कहा?

बाहर जाकर खेलना मेरे लिए मना था, सच तो यह है कि मुझे खेलने की फुरसत ही नहीं मिलती थी। जाड़ा के छोटे दिन योही काम की चकर घित्री में गायब हो जाते थे।

लेकिन मुझे गिरजे जहर जाना पड़ता—एक तो शनिवार के दिन सप्या प्राथना के लिए, दूसरे त्यौहार के दिन दोपहर की प्राथना के लिए।

गिरजे जाना मुझे अच्छा लगता था। किसी लुके छिपे सूनो फोने की मैं खोज करता और यहाँ जाकर खड़ा हो जाता। देव प्रतिमाओं को दूर

से देखने में बड़ा भ्रष्टा लगता—ऐसा मालूम होता मानो पत्थर के धूल फश के ऊपर प्रवाहित मोमबत्तियों के सुनहरे प्रकाश की प्रगस्त धारा में देव प्रतिमाओं की वेदी तर रही हो। देव प्रतिमाओं का काली आकृतियों में हल्का सा कम्पन पदा होता और राज द्वारों की सुनहरी झालरें झूमकर झिलमिल उठतीं। नीले से शून्य में सटकी मोमबत्तियाँ की ली सुनहरी मधुमक्खिना की भाँति मालूम होती और स्त्रियों तथा लड़कियों के सिर फूलों की भाँति दिखाई देते।

सहगान शुरू होता और हर चीज मानो उसकी स्वरलहरियों के साथ गिरकने लगती, हर चीज मानो इस पार्थिव जगत से ऊपर उठकर परियों के लोक में पहुँच जाती, सम्झा गिरजा होते होते डोलने लगता, मानो बाजर की भाँति गहन, अंधेरे शून्य में पालना झूल रहा हो।

कभी-कभी मुझे ऐसा मालूम होता कि गिरजा किसी झील में गाता लगाकर दुनिया की आलो से दूर, खूब गहराई में, छिप गया है जिससे कि वह अपना एक अलग और अर्थ सब से भिन्न जीवन बिता सक। यह भावना सायद नानी की एक कहानी का फल थी जो कितेज नगर के बारे में थी। अपने चारों ओर की हर चीज के साथ-साथ मैं भी बहुधा उनींदा सा झूमने लगता—सहगान की स्वरलहरियाँ मुझे पपकिया देतीं, फुसफुसाकर बोली गयी प्रायनाएँ और पूजा करनेवालों की उसासे मेरा पलका की मूढ़ देतीं, और मैं नानी की उस उदासी भरी मधुर कहानी को मन ही मन गुनगुनाने लगता

सुबह का था समय, शुभ और पवित्र।

यज रहे थे घटे गिरजों में मातित प्रायतर के।

सभी किया थावा धर्म-द्वेषी सातार सुटेरी ने

धोडों पर फसे जिन, कील-काटों और अस्त्रों से लत

घेर लिया आनन फानन में प्यारे नगर कितेजप्राद को।

ओ इस दुनिया के प्यारे स्वामी,

ओ प्यारी मरियम पवित्र!

खुदा के बड़ा की खातिर उतरो इस धरती पर,

न पड़े कोई विघ्न उनकी पूजा प्रायना में,

दंभी प्रकाश से हो नागरिका के हिय का अंधेरा दूर!

पवित्रता तेरे मंदिर की कर सचे न कोई नष्ट,

न रौंदी जाए साज नगर बग्याभों की,

न फिरे नहे बच्चो के गलो पर तेग,
न आए बड़े-बूढ़ा और दुबलो पर आच।

परम पिता जेहोवाह ने यह सुना
और सुना मा मरियम पवित्र ने।
कर दिया उहे विचलित और व्यथित
लोगा के रुदन और दुख की गुहारो ने।
और दिया आदेश परम पिता जेहोवाह ने
अपने सबसे बड़े फरिश्ते मिखाईल को
मिखाईल, मानव लोक मे जरा जाओ तो
कितेजप्राद की घरती को जरा हिलाओ तो
फटे घरती और फूट पड़े पानी के सोते
छिप जाए कितेजप्राद, पानी की सहरो मे
तातार सुटेरा को पहुच से दूर-बहुत दूर!
और छुदा के बदे
हो, अपनी प्रायनाओ मे सलगन,
अविरल और अविधात,
सुबह, सांझ और आठों याम, वप प्रति वर्ष-
बहे जब तक जीवन की अनन्त धारा!

उन दिनों नानी की कविताए मेरे रोम रोम मे बसी ही समायी थीं
जैसे मधुमक्खियों के छत्ते मे शहद। यहा तक कि मेरे विचार और कल्पनाए
तक उहीं कविताओ के सांचे मे ढली होती थीं।

गिरजे मे जाकर मैं प्रार्थना नहीं करता था, नाना की द्वेष भरी मिनती
और मानताओ तथा उदास ईश प्रार्थनाओ को नानी के भगवान के सामने
बोहराते मेरी जुवान अटकती। मुझे पक्का यकीन था कि नानी का भगवान
उहे उतना ही नापसद करेगा जितना कि मैं करता हू। इसके
अलावा वे सब किताबो मे छपी छपायी थीं। दूसरे शब्दो मे यह कि
किसी भी पढ़े लिखे व्यक्ति की भाति भगवान को भी वे जवानो
याद होगी।

इस कारण जब कभी मेरा हृदय किसी मधुर उदासी से दुखता या
बीते हुए दिन के छोटे-मोटे आघातो से बराह उठता तो मैं अपनी निजी
प्रार्थनाए रचने का प्रयत्न करता। और उसके लिए मुझे कोई खास प्रयास
भी नहीं करना पडता। अपने दुखी जीवन पर मैं एक नजर डालता और
गन्द अपने आप आकार रूप ग्रहण कर प्रकट होने लगते

भगवान, ओ मेरे भगवान
 हूँ मैं कितना दुलिया
 विनती मेरी,
 शटपट मुझे बड़ा बना दे!
 बहुत सहा-सह चुका बहुत मैं,
 न होना मुझपर गुस्ता
 गर हो जाऊँ मैं तग
 और कर दूँ इस जीवन का अंत!

मरती यहा सभी को नानी
 नहीं सिखाते, नहीं सिखाते
 राक-धूल, कुछ नहीं बताते
 और यह बुढ़िया आफत की परकाला
 जीवन की जजाल बनाती,
 सबा डाटती, कान सोंचती।
 कर दे उसका मुह काला।
 भगवान, ओ मेरे भगवान,
 हूँ मैं कितना दुलिया।

छुव रची हुई इन "प्रापनाओ" मे से कितनी ही मुझे आज दिन भी
 याद हैं। बचपन मे जिस तरह दिमाग काम करता है, उसकी छाप कभी
 कभी हृदय पर इतनी गहरी पड़नी है कि मृत्यु के दिन तक नहीं मिटती।

गिरजे मे बहुत ही मुहावना मालूम होता। वहा मैं उतने ही कुछ
 और सन्तोष का अनुभव करता जितना कि पहले खेतो और जगला में
 करता था। मेरा नहा हृदय जो अभी से ही रात दिन की चोटों से छलती
 और जीवन की बेहूदगियों मे विपला हो चुका था, धुधले, पर रग बिरंगे
 सपनों मे तरने लगता।

लेकिन मैं केवल सभी गिरजे जाता जब बसा की ठंड पड़ती था
 जब नगर मे सर्पानो आघिया सनसनाती और ऐसा मालूम होता मानो
 आकाश भी जमकर बर्फ हो गया हो, कि हवा ने उसे बर्फ के बादलों मे
 बदल दिया हो, और धरती पर इतनी बर्फ गिरती कि पूरी की पूरी ढक
 जाती, जमकर वह भी बर्फ हो जाती और ऐसा मालूम होता मानो उसके
 हृदय की पड़कन अब फिर कभी नहीं सुनाई देगी।

रात के सनाटे में मुझे नगर में घूमना अधिक अच्छा लगता, कभी इस सड़क को नापता तो कभी उस। एकदम निराले कोनों की मैं खोज करता। तेजी से मेरे डग उठते, मानो पर लगे हों। मैं सड़क पर ऐसे ही तरता जैसे आकाश में चांद तरता है, बिना किसी सगी-साथी के, अपने आप में अकेला। मेरी परछाईं मुझसे आगे चलती, प्रकाश में चमकते हिमकणों पर पड़ उठे घुमा देती और हास्यास्पद ढंग से लम्बो तथा बाड़ो से टफराती। खाल का भारी भरकम कोट पहने, हाथ में लाठी और साय में अपना धुत्ता लिए चौकीदार सड़क के बीचोबीच गश्त लगाता दिखाई देता।

उसका भारी भरकम आकार देखकर मुझे लगता कि लकड़ी का कुत्ता घर न जाने कसे आंगन में से लुढ़ककर सड़क पर आ गया था और किसी प्रभाव मजिल की ओर आगे बढ़ चला था। और दुखी कुत्ता उसके पीछे ही लिया था।

कभी-कभी तिलतिलाती जवान लड़कियों और उनके चहेतों से मुठभेड़ होती और मैं मन ही मन सोचता कि ये लोग भी गिरजे से भाग आए हैं।

खिड़कियां रोशनी से घमचमाती रहतीं। उनकी दरारों में से स्वच्छ हवा में कभी-कभी एक अजीब विस्म की गंध आती—भीनी और अपरिचित गंध जो एक भिन्न प्रकार के जीवन का आभास देती। खिड़की के पास दककर मैं कान लगाकर सुनता था और यह पता लगाने का प्रयत्न करता कि किस तरह के लोग यहां रहते हैं, कसा जीवन वे बिताते हैं। उस समय जबकि सभी भले लोगों को सध्या प्रायना में शामिल होना चाहिए, ये लोग हसते और अठखेलियां करते हैं, खास क्रिस्म का गिटार इनकनाते और खिड़कियों में से मधुर स्वर लहरियां प्रवाहित करते हैं।

दो सूनी सड़क—तिलोनोव्स्काया और मरतीनोव्स्काया—के कोने पर स्थित एक नीचा, एकमजिला घर मुझे खास तौर से अजीब मालूम हुआ। सदिया खत्म होने के त्यौहार से पहले की बात है। मौसम बदल चला था और बर्फ पिघलने लगी थी। इतनी दिनों, चादनी खिली रात में, इस घर के पास से मैं गुजरा और वहीं उलझकर रह गया। गर्म भाप के साय-साय खिड़की में से एक अदभुत आवाज भी गा रही थी, ऐसा मालूम होता था मानो कोई बहुत ही मजबूत और बहुत ही दयालु व्यक्ति होठों को बंद किये गा रहा हो। बोल तो समझ में नहीं आते थे, लेकिन धुन

बहुत ही जानी-पहचानी और समझी-बूझी मानूम होती थी। मैं उसे समझ भी लेता, लेकिन उसके साथ जिस बेसुरे टग से तार का बाजा झनझना रहा था, यह मागे गीत के प्रवाह और उसकी मोपगम्यता को छिन भिन कर रहा था। मैं समझ गया कि किसी जादू भरे, हृदय को मरोड़ देने की अद्भुत शक्ति से सम्पन्न वायलिन से यह संगीत प्रवाहित हो रहा है और यहीं सड़क के किनारे पत्थर के बने पीढ़े पर बठ गया। संगीत का एक एक स्वर वेदना में डूबा था। कभी-कभी उसका स्वर इतना जोरदार हो जाता कि लगता मानो समूचा घर धरपरा उठा है, खिड़कियों के काच झनझनाने लगे हैं। पिथली हुई बर्फ छत पर से टपाटप गिरती, और श्रासुधो की बूँदें मेरे गालों पर से टुकवर्ती।

मैं अपने प्राप में इतना लो गया था कि चौकीदार के आने का मस पता तक नहीं चला। धक्का देकर उसने मुझे पीढ़े पर से गिरा दिया।

"यहाँ किस लोफरी की ताक में बठे हो?" उसने पूछा।

मैंने बताया

"धरा संगीत।"

"संगीत सुन रहा था, - ऊह! बस, नी-बो ग्यारह हो जाओ यहाँ से।"

मैं जल्दी से इमारतों के पीछे से धूमकर फिर उसी घर के सामने आ गया। लेकिन अब कोई संगीत सुनाई नहीं दे रहा था। खिड़की में से अब चुहल और झटखेलियों की उल्टी पल्लो आवाजें आ रही थीं जो उस उदास संगीत से इतनी भिन्न थीं कि मुझे लगा मानो वह संगीत मैंने सपने में सुना था।

फरीब-बरीब हर शनिवार को मैं उस घर के पास पहुँचने लगा, लेकिन वह संगीत केवल एक ही बार और सुनने को मिला। बसन्त के दिन थे। पूरी आधी रात तक, बिना रके, संगीत चलता रहा। इसके बाद जब मैं घर लौटा तो खूब मार पड़ी।

जाड़ा की रात, आकाश में तारे जड़े हुए और नगर की सूनी सड़कें, मैं खूब धूमता और तरह-तरह के आभुव बढोरता। मैं जान-बूझकर दूर की बस्तिमा की सड़कें चुनता। नगर की मुख्य सड़की पर जगह जगह साल्टेमें जलती थीं। मेरे भालिको की जान-पहचान के लोगों ने से आगर कोई मुझे देख लेता तो उहे खबर कर देता कि मैं सध्या प्रायनामो से

गायब रहता हू। इसके सिवा नगर की मुख्य सड़को पर शराबियो, पुलिस वाला, और शिकार की खोज मे निकली हरजाई स्त्रियो से टकराने पर घूमने का सारा मजा किरकिरा हो जाता था। वेद्रे से दूर की निराली सड़को पर मे निश्चिन्त होकर घूमता। चाहे जहा जाता और निचले तल्ले की चाहे जिस खिडकी मे झाँककर देखता—बशर्ते कि उस पर परदा न पडा हो, या पाले ने उसे ढक न दिया हो।

इन खिडकियो मे से मेँ अनेक प्रकार के दृश्यो की झाँकी लेता। कहीं लोग प्रार्थना करते दिखाई देते, कहीं घूमा चाटी करते, कहीं एक दूसरे के बाल नोचते, कहीं ताश खेलते और कहीं, पूरी गम्भीरता से, दूबे हुए स्वरो मे धातचीत करते। एक के बाद दूसरे दृश्य मेरी आँखो के सामने से गुजरते—मछलिया की भाँति मूक, मानो सद्बकची के शीशे पर आँखें गडाए मेँ बारह मन की धोबन वाला खेल देख रहा हू।

निचले तल्ले की एक खिडकी मे से वो स्त्रियो पर मेरी नजर पडी—एक युवती, दूसरी कुछ बडी। दोनो मेज पर बठी थीं। उनके सामने मेज के दूसरी ओर लंबे बाला वाला एक छात्र बठा था और खूब हाथ हिला हिलाकर वह उहे कोई पुस्तक पढकर मुना रहा था। युवती कुर्सी से पीठ लगाए बंठी थी और बडे ध्यान से मुन रही थी। उसकी भाँहे तिकुड गई थीं। बडी स्त्री ने जो बहुत ही दुबली पतली थी और जिसके बाल उन के गोले मालूम होते थे, सहसा दोनो हामो से अपना मुह ढक लिया, उसके कंधे हिलने लगे। छात्र ने अपनी पुस्तक नोचे पढफ दी, युवती उछलकर खडी हो गई और भांगकर कमरे से बाहर चली गई। तब छात्र उठा और मुलायम बालो वाली स्त्री के सामने घुटनो के बल गिरकर उसके हाथ घूमने लगा।

एक अन्य खिडकी मे से एक लमतडग दाढ़ी वाले आदमी पर मेरी नजर पडी। साल झ्लाउज पहने एक स्त्री को वह अपने घुटनो पर इस तरह झुला रहा था मानो वह कोई छोटा बच्चा हो। साथ ही वह कुछ गाता भी मालूम होता था। कारण कि रह रहकर वह भट्टा सा अपना मुह खोलता और बीबे मटकाता। स्त्री लिलखिलाकर बोहरी हो जाती, पीछे की ओर झुकती और अपनी टांगो को हवा मे नचाने लगती। वह फिर उसे सीपा बठाता, गाता और वह फिर खिलखिलाकर बोहरी हो जाती। बहुत देर तक मेँ उहेँ देखता रहा और सभी वहाँ से हिला जय

बहुत ही जानी पहचानी और समझी-बूझी मानूम होती थी। मैं उसे समझ भी लेता, लेकिन उसके साथ जिस बेसुरे ढंग से तार का धाजा शनसना रहा था, यह मानो गीत के प्रवाह और उसकी बोधगम्यता को छिन भिन कर रहा था। मैं समझ गया कि किसी जादू भरे, हृदय को मरा देने की अद्भुत शक्ति से सम्पन्न यायालिन से यह सगीत प्रवाहित हो रहा है और यहाँ सड़क के किनारे पत्थर के बने पीढ़े पर बठ गया। सगीत का एक एक स्वर वेदना में डूबा था। कभी-कभी उसका स्वर इतना ज़ारदार हो जाता कि सगीत मानो समूचा घर थरथरा उठा है, जिइकियो के काब शनसनाने लगे हैं। पिघली हुई बर्फ छत पर से टपाटप गिरती, और आमुमो की धूँ में मेरे गालों पर से कुलकर्तों।

मैं अपने आप में इतना लो गया था कि चौकीदार के जाने का मुझे पता तक नहीं चला। धक्का देकर उसने मुझे पीढ़े पर से गिरा दिया।

“यहाँ किस लोफरी की ताक में बठे हो?” उसने पूछा।

मैंने बताया

“सारा सगीत!”

“सगीत सुन रहा था, — ऊह! बस, नी-बो ग्यारह हो जाओ यहाँ से!”

मैं जल्दी से इमारतो के पीछे से घूमकर फिर उसी घर के सामने आ गया। लेकिन अब कोई सगीत सुनाई नहीं दे रहा था। खिडकी में से अब शुहल और अटखेलियो की उल्टी पल्टी आवाजें आ रही थीं जो उस उदास सगीत से इतनी भिन थीं कि मुझे लगा मानो वह सगीत मैंने सपने में सुना था।

करीब-करीब हर शनिवार को मैं उस घर के पास पहुँचने लगा, लेकिन वह सगीत केवल एक ही बार और सुनने को मिला। वसन्त के दिन थे। पूरी आधी रात तक, बिना रुके, सगीत चलता रहा। इसके बाद जब मैं घर लौटा तो खूब मार पड़ी।

जाओ की रात, आकाश में तारे जड़े हुए और नगर की सूनी सड़कें, मैं खूब घूमता और तरह-तरह के आभूषण बटोरता। मैं जान-बूझकर दूर की बस्तियाँ भी सड़के चुनता। नगर की मुख्य सड़कों पर जगह जगह सालदेनें जलनी थीं। मेरे मातिको की जान-पहचान के लोगो में से अगर कोई मुझे देख लेता तो उन्हें लबर कर देता कि मैं सध्या प्रायनामो से

गायब रहता है। इसके सिवा नगर की मुख्य सड़को पर शराबियो, पुलिस वालो, और शिकार की खोज मे निकली हरजाई स्त्रिया से टकराने पर घूमने का सारा मजा किरकिरा हो जाता था। केन्द्र से दूर की निराली सड़को पर मे निश्चिन्त होकर घूमता। चाहे जहा जाता और निचले तल्ले की चाहे जिस लिडकी मे झाककर देखता—बशर्ते कि उस पर परदा न पड़ा हो, या पाले ने उसे ढक न दिया हो।

इन लिडकियों मे से मे अनेक प्रकार के दश्या की झाकी लेता। वहाँ लोग प्रायना करते दिखलाई देते, वहाँ घूमाघाटी परत, वहाँ एक दूसरे के बाल नोचते, कहीं ताश खेलते और वहाँ, पूरी गम्भीरता से, दये हुए स्वरो मे बातचीत करते। एक के बाद दूसरे दशय मेरा आंखा के सामने से गुजरते—मछलियो की भांति मूक, मानो तदुक्ची के शींगे पर झालें गडाए में बारह मन की धोवन वाला तेल देल रहा है।

निचले तल्ले की एक लिडकी मे से दो स्त्रिया पर मेरा नजर पटी— एक युवती, दूसरी कुछ बडी। दोना मेज पर बठी थीं। उनके सामने मेज के दूसरी ओर लंबे वाला वाला एक छान बटा था और सूब हाय हिला हिलाकर वह उन्हें कोई पुस्तक पढ़कर सुना रहा था। युवती कुन्नी से पीठ लगाए बठी थी और घडे ध्यान से सुन रही थी। उनका नौहें सिकुड गई थीं। बडी स्त्री ने जो बहुत ही दुबली-पतली थी और जिन्के बाल ऊन के गाले मालूम होने थे, सहसा दानों हायों से अपना मुह ढक लिया, उसके कपडे हिलने लगे। छान ने अपनी पुस्तक नीचे पटक दी, युवती उछलकर खडी हो गई और भाकर कमरे मे बाहर चला गई। तब छान उठा और मुनायम बातों वाली स्त्री के मानने छुटनों के बग गिरकर उमडे हाय घूमने लगा।

एक अन्य लिडकी में मे एक लननदा दांडा बाने आन्ना पर गरी नजर पगी। मान आउटद पलने एक स्त्री का बह आन छुटनी पर १११ तल्ले मुना रहा था मानो बह कोई छेडा बन्दा हो। गाय ही बह १११ गाना भा मालूम हुना था। कागज कि गू-गूकर यह नडा १११ १११। मुह गानना ओर दीडे मटकना। स्त्री लिडकीपर खीरनी हो १११, पीठे का आन छुटनी ओर आन टों का उडा में १११ १११। १११ फिर दय आन दटना, १११ ओर दह गिर लिडकीपर १११ १११। १११ जाना। बह दह १११ में उहें देना था ओर १११ १११ १११ १११ १११

समझ गया कि उनका यह गाना और खिलखिलाना सारी रात इसी तरह चतता रहेगा।

यह तथा इसी तरह के अर्थ कितने ही दृश्य मेरी स्मृति में समा लिए अंकित हो गए। इन दृश्यों को बटोरने में बहुधा मैं इतना उत्सुक जाता कि घर देर में पहुंचता और मातृको के हृदय में सदेह का की कुलबुलाने लगता। ये पूछते

“किस गिरजे में गया था? कौन से पादरी ने पाठ किया था? वे नगर के सभी पादरियों को जानते थे। उन्हें यह भी मालूम था कि कब कौनसी प्रायना होती है। मैं झूठ घोसता ही वे आसानी से पकड़ लेते। दोनों स्त्रियां नाना धाले क्रीधमूर्ति भगवान की पूजा करती थीं। एक ऐसे भगवान की जो चाहता कि सब उससे डरें, सब उसका प्रार्थना करें। भगवान का नाम मदा उनके होठों पर नाचता रहता, उस समय भी जब कि वे लडतीं झगडतीं।

“जरा ठहर तो बुतिया, भगवान तेरी ऐसी लखर लेगा कि तू याद रखेगी।” वे एक दूसरी पर चीखतीं।

इसाई चालीसे के पहले रविवार को बूढ़ी मालकिन मालपूवे पना थी जो कडाई में ही चिपककर जलते जा रहे थे।

“इन मरों को भी मेरी ही जान खानी थी!” मुसलाकर चिल्लाई। प्राण की तपन से उसका मुह तमतमा रहा था।

सहसा कडाही की गध सूघकर उसके वेहरे पर घटा धिर आई, क को उठाकर उमने फस पर पटक दिया और चीख उठी

“ओह मेरे भगवान, कडाही से घी को गध घा रही है! सोमवार के दिन मैं इसे तपाकर शुद्ध करना भूल गईं! मैं अन्न क्या है भगवान!”

वह घुटनों के बल गिर गई और आसों में धासू भरकर भा से फरियाद करने लगी

“क्षमा करना भगवान, मुझ पापिन को क्षमा करना, मुझपर खाना। मेरी तो बुद्धि सठिया गई है, भगवान।”

मालपूवे कुत्ते के सामने डाल दिये गये। कडाही भी तपाकर रर ली गई। लेकिन इसके बाद, जब भी मौका मिलता, छोटी मा बड़ी मालकिन को इस घटना की याद दिलाकर कोचने से न छू

“तुम तो चालीसे के पवित्र दिनों में भी धी लगी कडाही में मालपूवे बनाती हो!” झगडा होने पर वह कहती।

घर में जो भी बात होती, वे भगवान को घसीटना न भूलतीं। अपने तुच्छ जीवन के हर अंधेरे कोने में वे भगवान को भी अपने साथ खींचकर ले जातीं। ऐसा करने से मरे गिरे जीवन में कुछ महत्व और बढप्पन का पुट धाता तथा वह (जीवन) प्रत्येक क्षण किसी ऊंची शक्ति की सेवा में लगा हुआ लगता। हर ऐरी-नैरी चीज के साथ भगवान को चत्पा करने की उनकी आदत मुझे दबाती, अनायास ही ओनों-कोनों में मेरी नजर पहुंच जाती, और मुझे ऐसा मालूम होता मानो कोई अदृश्य आलें मुझे ताक रही हैं। रातों के अंधेरे में डर के ठंडे बादल मुझे घेर लेते। उनका उदय रसोई के उस कोने में होता जहां घुए में वाली पडी देव-प्रतिमाओं के सामने दिन-रात एक दिया जलता रहता था।

ताक से लगी हुई दोहरे चौखटे की एक बडी सी खिडकी थी। खिडकी के उस पार नीले शून्य का अनन्त विस्तार दिखाई देता था। ऐसा मालूम होता मानो यह घर, यह रसोई, और यहां की हर चीज जिसमें मैं भी शामिल था, एकदम कगारे से अटके हो और अगर जरा सा भी हिले डूले तो बर्फ से ठंडे इस नीले शून्य में, तारों से भी परे पूर्ण निस्तब्धता के सागर में, डूबते चले जाएंगे, ठीक वैसे ही जैसे पानी में फेंका गया पत्थर डूबता चला जाता है। सिकुडा सिमटा, हिलने डूलने तक का साहस न करते हुए मैं बीघकाल तक दुनिया के प्रलयकारी अन्त की प्रतीक्षा में निश्चल पडा रहता।

यह तो अब याद नहीं पडता कि इस डर से किस प्रकार मैंने छुटकारा प्राप्त किया, लेकिन इस डर से मेरा पीछा छूट गया, और तो भी बहुत जल्दी ही। स्वभावतः मानो के भगवान ने मुझे सहारा दिया, और मुझे लगता है कि उन दिनों में भी एक सीधी सादी सचाई का मैंने साथ नहीं छोडा था। वह यह कि मैंने कोई गलती नहीं की है, और अगर मैं ब्रेकसूर हूँ तो दुनिया में कोई कानून ऐसा नहीं है जो मुझे सजा दे सके, और यह कि दूसरा के गुनाहों के लिए मुझे कठघरे में नहीं खडा किया जा सकता।

दोपहर की प्रायना से भी मैं गायब रहने लगा—खास तौर से बसन्त के दिनों में। प्रकृति के नवयौवन का अदम्य उभार गिरजे के आकषण पर पानी फेर देता। इसके अलावा भोमबत्ती खरीदने के लिए अगर मुझे कुछ

पसे मिल जाते तब तो बहना ही क्या! मोमबत्तियों के बजाय मैं गार्मि
 लारीदता और खूब खेतता। प्रायना वा सारा समय खेत म बीन बाला
 और घर मे अदयदाहर बेर से पढ़घता। एब बार प्रसाद और मनो
 की प्रायना के लिए मुझे दस बोपेब मिले और मेने उन्हें भी ऐसे ही उठा
 दिया। नतोजा इसबा मह हुभा कि जय गिरजादार देवी से घाल लिए
 उतरे तो मेने अय किसी के प्रसाद पर हाथ साफ किया।

खेलने वा मुझे बेटेद शीघ्र था, और खेत से मैं कभी नहीं पकता
 था। मेरा बदन तगटा और बपल था। गेब, गोदिया और मोरीही
 मैं खूब खेलता था। शीघ्र ही समूची बस्ती मे मेरा सिक्का जम गया।

घालीसे के विनो मे मुझे भी गुनाह-भुक्ति के चक्र मे से गुबरना
 पडा। हमारे पडोसी पादरी बोरीमेबोत्त पोत्रीध्वरी के सामने मुन अपने
 गुनाह स्वीकार करने थे। मेरे मन मे उनका आतक बठा था और वे सब
 शतानी हरकते मेरे हृदय मे लडखड मचा रही थीं जो कि मैं उनके खिलाफ
 आतमा चुका था। पत्थर मारकर उनके सडप की लपटियों के मैं परखे
 उडाए थे, उनके बच्चा को मारा-पीटा था और अय बहुत से जुम किए
 थे जिनकी बजह से वह मुझे बहुत बडा पापी समझ सकते थे। एक-एक
 करके सभी कुछ मुझे याद आ रहा था, और उस समय जब अपने गुनाह
 स्वीकार करने के लिए मैं उस छोटे और तरीब से गिरजे मे जाकर खडा
 हुभा, तो मेरा हृदय घुरी तरह धकधक कर रहा था।

लेकिन पादरी बोरीमेबोत्त उस समय मानो भलमनसाहत का पुतला
 बना हुभा था।

“ओह, तुम तो हमारे पडोसी हो अच्छा तो अब घुटनो के बल
 बैठ जाओ, बताओ, क्या-क्या गुनाह किये हैं?”

उसने मेरे सिर पर भारी भलमल डाल दिया। सोम और लोबान की
 गंध से मेरा बस घुटने लगा, बोसना मुक्किल हो रहा था और दिल भी
 नहीं कर रहा था।

“अपने बडो का कहना मानने हो?”

“नहीं!”

“कहो, मेने गुनाह किया!”

अनायास ही, न जाने कैसे, मैं कह उठा

“प्रसाद चुराया था।”

“क्या, यह क्या कहा तुमने? कहां घोरी की?” एक क्षण रककर पादरी ने स्थिर भाव से पूछा।

“तीन सत्तो के गिरजे मे, पोशोव गिरजे मे और सत निकोलाई ”

“मतसब सभी गिरजो मे -- बुरी बात है, बेटा। ऐसा करना पाप है - समझे?”

“हां।”

“कहो, मैंने गुनाह किया। तुम बड़े नादान हो। क्या खाने के लिए प्रसाद चुराया था?”

“कभी-कभी खाने के लिए, लेकिन कभी-कभी ऐसा होता कि गोदियों के खेल में मैं अपने पसे हार जाता और प्रसाद के बगार मैं घर लौट नहीं सकता था, इसलिए घोरी करके जान छुड़ाता ”

पादरी बोरीमेदोन्त ने दबे स्वर में बुदबुदाकर कुछ कहा, फिर दो-घार सवाल और किए। इसके बाद, कड़े स्वर में पूछा

“क्या तुम भूमिगत छापेखाने से निकली पुस्तके भी पढते रहे हो?”

यह सवाल ऐसा था जो मैं समझ नहीं सका। मेरे मुह से निकला

“क्या?”

“वर्जित पुस्तके, क्या तुमने कभी पढी हैं?”

“नहीं, मैंने नहीं पढी ”

“अच्छी बात है। तुम गुनाहो से मुक्त हुए अब खड़े हो जाओ!”

मैंने कुछ अचकचाकर उसके चेहरे की ओर देखा। उसका चेहरा गम्भीर और दया के भावों से पूण था। मैं कटकर रह गया। गुनाह मुक्ति के लिए भेजते समय मालकिन ने मेरी तो रूह ही कब्ज कर बी थी। ऐसी ऐसी डरावनी बातें उसने बताई थीं कि अगर मैंने कुछ भी छिपाकर रखा तो मानो प्रलय ही हो जायेगी।

मैं बोला, “मैंने तुम्हारे मडप पर पत्थर फेंके थे।”

“यह बुरा किया। लेकिन अब तुम भाग जाओ ”

“और तुम्हारे कुत्ते पर ”

पादरी ने जैसे मुना ही नहीं। मुझे विदा करते हुए बोले

“चलो, अब किसकी बारी है?”

विशोभ से भरा और धोखा खाया हुआ महसूस करते हुए मैं वहां से चला आया। जिस चीज की लेकर मन ही मन मैंने इतना तूमार बापा

धा और हृदय का एक-एक तार झनझना उठा था, वह कुछ भी तो नहीं निशली - इस में कोई भयानक बात नहीं थी, जलते विलचस्प थी। रहस्यमय पुस्तकों की बात ही विलचस्प थी। मुझे उस पुस्तक का ध्यान आया जिसे वह छात्र घर के निचले तल्ले में दो त्रिमा को पढ़कर चुना रहा था। और मुझे 'बहुत छूय' का भी ध्यान आया। उसके पास भी काली जिल्द की कितनी ही मोटी-मोटी किताबें थी जिनमें प्रजीवोपरीब चित्र बने हुए थे।

अगले दिन पंद्रह कोपेक देकर मुझे यूनिवर्सिटी प्रसाद लेने भेजा गया। उस साल ईस्टर का उत्सव कुछ देर से आया था। थक पिचल चुकी थी और छुट्टक सड़कों पर धूल के छोटे-छोटे बगूसे उड़ते थे। मौसम इपहला और छूय सुहावना था।

गिरजे की चारदीवारी के पास कुछ मजदूर गोदियां खोल रहे थे। मेरा मन ललचा उठा। मैंने साचा, प्रसाद लेने से पहले एक-दो हाथ यह भी हो जाए तो क्या बुरा है। मैंने पूछा

"मुझे भी खेलने दोगे?"

"खेल में शामिल होने के लिए - एक कोपेक - समझे!" साल बाप और मुह पर चेचक के बाग वाले एक मजदूर ने गव से ऐलान किया। मैंने भी उतने ही गव से जवाब दिया

"बाई और से दूसरी जोड़ी, मैं तीन कोपेक रखता हूँ।"

"पहले पैसे निकालो!"

और खेल शुरू हो गया।

मैंने पंद्रह कोपेक का अपना सिक्का भुना लिया और तीन कोपेक गोदियों की जोड़ी पर रखे। जो कोई उस जोड़ी को गिरा देगा तीन बापक जीत लेगा, नहीं तो मैं उससे तीन कोपेक हासिल करता हूँ। मेरा सितारा ऊंचा था। दो ने मेरे पसों का निशाना लगाया, और दोनों ही धूक गए। मुझे छ कोपेक मिले। बड़ी उम्र के लोगों को मैंने भात दी, इतने मेरी हिम्मत बची

तब खिलाड़ियों में से एक ने कहा

"इस पर निगाह रखना - वहाँ ऐसा न हो कि एकाध दाब जीतकर यह भाग निकले।"

यह मेरे सम्मान पर घोट थी। मैंने तडाक से चिल्लाकर कहा

"बाई और, आखिरी जोड़ी पर, मेरे नौ कोपेक।"

मेरी इस बहादुरी का खिताबियों पर कोई रोय नहीं पडा। लेकिन मेरी ही आयु का एक अय लडका चेतावनी देते हुए चिल्लाया

“सभल के—इसकी किस्मत तेज है। यह ज्वेन्दिका मुहल्ले का है, नक्शानवीस, मैं इसे जानता हू।”

“नक्शानवीस है? याह, भई, वाह ” एक दुबले पतले मजदूर ने कहा जिसके बदन से चमड़े की गध आती थी।

उसने सावधानी से निशाना साधा और मेरे दाब को पीट दिया।

“क्यो बच्चू, आई रलाई?” मेरे ऊपर झुकते हुए वह बोला।

“वाहिनी घोर, आल्लिरी जोडी पर, तीन कोपेक और!” मैंने जवाब में कहा।

“देखते जाओ, मैं इसे भी नहीं छोडूंगा।” शेली बघारते हुए उसने निशाना साधा पर झुक गया।

हायवे के अनुसार एक आदमी तीन से अधिक बार लगातार दाब नहीं लगा सकता। तो मैंने दूसरो की जोडियों को गिराना शुरू किया और इस तरह चार कोपेक और बहुत सी गोटिया जीतीं। इसके बाद दाब लगाने का जब मेरा नम्बर आया तो मैं अपनी सारी जमा पजी हर गया। ठीक इसी समय गिरजे की प्रार्थना खत्म हुई—घंटे बजने लगे, और लोग गिरजे से बाहर निकल आए।

“शाबी हो चुकी है?” घमडा कमानेवाले मजदूर ने पूछा और मेरे बाल पकडने की कोशिश की।

मैं उससे चगुल से निकल भागा और एक युवक के पास पहुंचा जो खूब बडिया कपडे पहने गिरजे से निकला था। मैंने मुलामियत से पूछा “क्या तुम यूखारिस्ट प्रसाद लेकर आ रहे हो?”

“क्यो, तुम से मतलब?” सदेह से देखते हुए उसने जवाब दिया।

मैंने उससे जानना चाहा कि यूखारिस्ट लेने में कसे क्या हुआ, पावरी ने क्या कहा और यूखारिस्ट में शामिल होनेवाले को क्या करना था।

युवक ने धूरकर मुझे देखा और गरजते हुए बोला

“अच्छा, तो यूखारिस्ट के वक्त घमता रहा, नास्तिक? मैं तुझे कुछ नहीं बताऊंगा—करने दे तेरे बाप को तेरी घुनाई!”

मैं अब घर की ओर लपका। मुझे पक्का यकीन था कि घर पर पूछ-ताछ होगी और यह बात खुल जाएगी कि मैं यूखारिस्ट में शामिल नहीं हुआ।

लेकिन बडी मालकिन ने मुझे बघाई देने के बाद केवल एक सवाल पूछा

“पादरी को मुझे क्या दिया?”

“पाच कोपेक,” मैंने योही घतलटप्पू जवाब दे दिया।

“तू भी निरा भोजू ही है!” बड़ी मासकिन ने कहा। “उसने निए तो तीन भी बहुत होते, और माझी को तू अपने पास रख लेता।”

घारा घोर बसन्त छाया था। प्रत्येक दिन एक नया बाना घारप करके आता, दोते दिन से और भी ज्यादा उज्ज्वल तथा घोर भी बाना सुदर। घास की नयी कोपलो और भोज-यूक की ताजी हरियाली से मासक गध निकलती। बाहर लेतो मे मुहावनी घरती पर सेटकर भरत बपी का घहवहाना मुझे के लिए मन बुरी तरह उतावला ही उठता। लेकिन मैं था कि यहां जाओ के बपटो पर घुग करके उन्हें टुक में बद करता, तम्बाक की पत्तियां बूटता और गद्देवार फर्नीचर की गद शाडता—सुबह से रात तक ऐसे कामों मे जुटा रहता जिन्हें न तो मैं पसंद करता था, और न प्रायश्चक ही समझता था।

और जो थोडा बहुत समय काम से बचता, वह भी यो ही देकर खला जाता। मेरी समझ में न आता कि फुरसत की इन घडियों का क्या करू। हमारी गली एकदम सूनी थी, और उसकी सीमा से बाहर जाने की मुझे मनाही थी। हमारा अहाता खाई खोदनेवाले बके हारे और चिड चिडे मखरूरो, फटेहाल बाबघिना और धोबिनो से अटा पडा था। और हर साझ साठ गाठ के इतने बेहूवा और धुगित दश्य दिखाई देते कि मैं विक्षुब्ध हो उठता और घबराकर अपनी आर्खें बंद कर सोचता कि मैं अघा क्यों न हुआ।

कभी और कुछ रगीन बागज लेकर मे ऊपर अटारी मे पहुच जाता और फल पत्तिया काटकर उनसे छत के शहतीरो और खम्बो को सजाता। इससे मेरे मन की ऊन और नीरसता कुछ हल्की हो जाती। किसी देली जगह जाने के लिए मेरा हृदय बुरी तरह लसकता जहां लोग कम सोते हो, कम झगडते हो और कभी न खत्म होनेवाले अपने रोने शोखने से भगवान को या कभी न चुकनेवाले अपने बडवे बोलते से लोगो को इस हद तक न सताते हो।

ईस्टर के शनिवार को हमारे नगर मे श्रीरास्की मठ से प्लादीमिस्काया मरियम की प्रतिमा का आगमन हुआ। यह प्रतिमा अपने चमत्कारा के लिए प्रसिद्ध थी। जून के मध्य तक वह हमारे नगर की

मेहमान थी और इस काल में एक एक करके बस्ती के सभी धरा में उसे ले जाया जा रहा था।

एक दिन सुबह के समय मेरे मालिकों के घर भी उसका आगमन हुआ। मैं रसोई में बठा बरतन चमका रहा था। एकाएक दूसरे कमरे से छोटी मालकिन सकपकाई सी आवाज में चिल्लाई

“जाकर बाहर का दरवाजा खोल। ओरान्स्काया माता आ रही है।”

मेरे हाथ चिकनाई और पिसी हुई ईंट के धूरे से लथपथ थे। बसी ही गद्दी हालत में मैं लपककर नीचे उतरा और बाहर का दरवाजा खोल दिया। दरवाजे पर एक युवक मठवासी खड़ा था। उसके एक हाथ में लालटेन थी, और दूसरे में लोबान का धूपदान।

“अभी तक सो रहे हो?” उसने भुनभुनाकर कहा। “इधर आ, थोड़ा सहारा दे ”

दो नगरनिवासी मरियम की भारी प्रतिमा उठाए थे। वे उसे लेकर तग खीने पर चढ़ने लगे। मैंने भी सहारा दिया। प्रतिमा के एक कोने के नीचे मैंने कंधा लगाया और अपने गद्दे हाथों से उसे धाम लिया। हमारे पीछे कुछ गोल-मटोल मठवासी और थे जो अनमने आवाज से भारी स्वर में गुनगुना रहे थे

“मा मरियम मुनो डेर हमारी ”

उदास विश्वस्तता के साथ मैंने सोचा

“माता मरियम जल्द इस बात का बुरा मानेगी कि मैंने गद्दे हाथों से उसे छुआ और मेरे हाथ सूख जाते रहेंगे ”

दो कुत्तियों को जोड़कर उनपर एक सफेद चादर बिछा दी गई। प्रतिमा को उहीं पर टिका दिया गया। अगल बगल दो युवक मठवासी उसे धामे थे—देखने में सुंदर, चमकदार आँखें, मुलायम बाल और चेहरे प्रसन्नता से खिले हुए। ऐसा मालूम होता मानो वे कोई फरिश्ते हों।

पूजा प्रायना शुरू हुई।

घने बालों में छिपे गाठ गठीले से अपने कान की लोलकी को लाल उगली से बार-बार छूते हुए एक लम्बे चौड़े पादरी ने उची आवाज में गया

“मां मरियम, जगत जननी ”

अप्य मठवासियों ने अनमने भाव से साथ दिया

“पवित्र पावन मा, दया करो ”

मे माता मरियम को जीजान से चाहता था। नानी ने मुझे बताया था कि दुखियों के आसू पोछने और उनके जीवन में आनंद भरने के लिए मरियम ने ही घरती को फूलों से सजाया, हर उस चीज की रचना की जो भली और सुंदर है। और जब उसके हाथों को चूमने की रस्म प्रदा करने का समय आया तो मैंने, इस बात पर ध्यान दिए बिना कि मैं क्या कर रहे हैं, कापले हृदय से देव प्रतिमा को होठों पर चूम लिया।

एकाएक किसी के मखबूत हाथ का धक्का खाकर मैं दरवाजे के पास कोने में जा गिरा। यह तो मुझे याद नहीं कि मठवासी प्रतिमा को उठाकर कैसे विदा हो गए, लेकिन यह मुझे छूष अच्छी तरह याद है कि मैं पग पर बठा था, मेरे मालिक तथा मालकिन मुझे घेरे हुए थे और परेगान मुद्रा में दुनिया भर की अलाय बलाय का चिह्न कर रहे थे जा मुत्तपर नाजिल हो सकती थीं।

“पादरी के पास चलकर हमें इसका उपाय पूछना चाहिए,” मेरे मालिक ने कहा, और फिर मुझे हल्की सी डांट पिलाते हुए बोला

“यह तूने क्या किया, बेवकूफ! क्या तुझे इतना भी नहीं मालूम कि मरियम के होठों को नहीं चूमा जाता? और तू स्कूल में पढ़ता था।..”

कई दिन तक एक इसी बात का हील मेरे दिल में समाया रहा कि इसकी न जाने मुझे क्या सजा मिलेगी। यही क्या कम था कि गंदे हाथों से मैंने मरियम को छूआ, तिस पर मैंने गलत ढंग से उसे चूम भी लिया। निश्चय ही इसकी मुझे सजा मिलेगी, किसी प्रकार भी मैं छूट नहीं सबूगा।

लेकिन, ऐसा मालूम होता था मानो मरियम ने अनजाने में किए गए इन गुनाहों को माफ कर दिया था। मेरे मन में बुरी भावना नहीं थी। प्रेम से अनुप्राणित होकर ही मैंने ये गुनाह किए थे। या फिर यह भी हो सकता है कि मरियम ने मुझे जो सजा दी वह इतनी हल्की थी कि इन भले लोगों की बारहमासी डोट फटकार के चक्कर में मुझे उसका पता तक न चलता।

कभी-कभी बूढ़ी मालकिन को चिढ़ाने के लिए मैं अप्सोता भरे स्वर में बर्ता

“मालूम होता है, मानो मरियम को मुझे सजा देना याद नहीं रहा। ”

"तू देखता रह, धनी भागे क्या होता है.. " बड़ी मालकिन द्वेषपूर्ण मुस्कान के साथ जवाब देती।

-चाय के गुलाबी सेबुतों, टोन के पत्तों, वृक्ष की पत्तियों और इसी तरह की अन्य छोटी-मोटी चीजों से अटारी में छत के गहलोरो और सम्बों को सजाने समय जो भी मन में आता मैं गुनगुनाने लगता और उसे गिरजे के गीतों को धुन में गूँथने की चेष्टा करता, जसा कि रास्ते में कलमोक किया करते हैं

बैठा हुआ अटारी में
 कंचो लिये हाथ में
 ऊब उठा हूँ खूब मैं!
 गर होता कुत्ता मैं
 न टिकता सण नर यहा
 जहा रहना है कुश्वार!
 घोंसकर कहते सब
 बदकर यह तोबडा
 कहना मान, न बडबडा
 नहीं तो फूटेगा जोपडा!

बूढ़ी मालकिन जब मेरी कारीगरी और सजावट देखती सी वह हुमहुमाकर तिर हिलाते हुए कहती

"रसोईघर को भी क्यों नहीं ऐसे ही सजा देता? "

एक दिन मालिक भी अटारी में आए, मेरी कारीगरी पर एक गजर डाली और उत्साह लेते हुए बोले

"तू भी अजीब है, पैसाबोव। पता नहीं तेरा क्या झोगेगा? क्या जागूग बनने की तैयारी कर रहा है? कुछ कहा भी नहीं जा सकता "

और उसने मुझे निकोलाई प्रथम के कात वा पाँच शोपेन वा एक बडा सिक्का भेंट किया।

सिक्के को मैंने महीन तार के सट्टारे समूचे की भाँति सजवा दिया।

मेरी रंग बिरंगी सजावट के बीच उसे प्रथम स्थान मिला।

लेकिन अगले ही दिन यह गायब हो गया। मुझे पचना पत्तीप है कि बूढ़ी मालकिन ने ही उसपर हाथ साफ किया होगा।

आखिर वसन्त के दिनों में मैं भाग निकला। सुबह को घाय के लिए मैं रोटी लेने गया था। मैं पावरोटी खरीद ही रहा था कि किसी बात पर पावरोटी वाले का अपनी पत्नी से झगडा ही गया, उसने उसके तिर पर भारी बटखरा दे मारा। वह बाहर की ओर भागे और सड़क पर आकर डेर हो गई। चारों ओर लोग जमा हो गए और उसे एक गाड़ी में डालकर अस्पताल ले चले। मैं भी लपककर गाड़ी के साथ-साथ ही लिया और इसके बाद, पता नहीं बसे, एकदम अनजाने में ही बोला क तट पर पहुँच गया। मेरी मुट्ठी में बीस कोपेक का सिक्का था।

वसन्त का दिन वसन्ती मुसकान ही बर्पा कर रहा था। बोला के घाट का कोई धार पार नहीं था, विशाल धरती कोलाहलमय थी। लेकिन मैं—मैं था कि उस दिन तक घूँहे की भाँति एक बिल में जीवन बिता रहा था। मैंने निश्चय किया कि अपने मातृक के घर अब नहीं लौटूँगा; न ही अपनी नानी के पास कुनाविनो जाऊँगा। नानी को मैंने वचन दिया था, और उसे पूरा न कर सकने के कारण उसके सामने जाते मुझे मित्रक मालूम होती थी। और नाना तो जैसे ऐसे अवसरा के लिए सपनपाने ही रहते थे।

वो था तीन दिन तक मैं नदी-स्त पर वो ही मटरगनी करता रहा। भाईचारे में घाट-मजदूर लाना खिस्ता देते, घाट पर ही उनके साथ मैं रात को सोता। आखिर उनमें से एक ने कहा

“इस तरह मुफ्तखोरी से काम नहीं चलेगा, बलुआ! “दोब्री” जहाज में नौकरी क्यों नहीं कर लेते? रसोईघर में तन्तरियों साँक करने के लिए उन्हें एक आदमी की जरूरत है।”

मैं चल दिया। बारमन एक लमतङ्ग दाढ़ी वाला आदमी था—तिर पर रेंगम की काली टोपी, और घड़ने के भीतर से झाँकती धूपली सी आँखें। तिर उठाकर उसने मेरी ओर देखा और धीरे से बोला

“दो हबल मटोना। पासपोट ला।”

मेरे पास पासपोट नहीं था। बारमन ने एक क्षण कुछ सोचा। फिर बोला

“माँ को ले आ!”

भागा हुआ मैं नानी के पास पहुँचा। नानी ने मेरे इस नये कदम का समयन किया और नाना को भी समझा-बुझाकर व्यवसायो के दफ्तर में भेजा ताकि वह मेरे लिए पासपोर्ट ले आए। और खुद मेरे साथ जहाज पहुँची।

“बहुत ठीक,” बारमन ने उड़ती नज़र से हमारी ओर देखा। “मेरे साथ चला आ।”

वह मुझे जहाज के पिछले हिस्से में ले गया जहाँ तगटे बदन का बावर्ची सफेद पोशाक पहने और टोपी लगाये मेज के पास बठा था। वह घाय पी रहा था और साथ ही एक मोटी सिगरेट से धुआ उठा रहा था। बारमन ने मुझे उसकी ओर धकेलते हुए कहा

“वह बरतन साफ करेगा।”

इसके बाद वह उल्टे पाव लौट गया। बावर्ची ने नाक सिकोड़ी, फिर अपनी काली मूँछों को करफराया और बारमन को लक्ष्य कर फनफनाते हुए बोला

“किसी भी एंटे-गैरे को रख लेते हो, बस भजदूरी कम देनी पड़े।”

अपने भारी भरकम सिर को जिसके बाले बाल खूब महीन छटे हुए थे, झुझलाकर उसने पीछे की ओर फेंका, फिर अपनी काली आँखों से मेरी ओर ताकते और अपने गालों को कुप्पा सा फुलाते हुए घिल्लाकर कहा

“कौन है तू?”

यह आदमी मुझे कतई पसंद नहीं आया। इसके बावजूद कि वह सिर से पाव तक सफेद कपड़ों में ढका था, वह मुझे गदा मालूम हुआ। उसकी उंगलियों पर खूब घने बाल थे, और उसके छाज से कानों पर भी बाल थे।

“मुझे भूल लगी है,” मैंने कहा।

उसने अपनी आँखें मिचमिचाईं, और अचानक उसके चेहरे का स्थापन देखते-देखते घायब हो गया। प्रशस्त मुसकराहट से वह खिल उठा, उसने साल गाल सहरिया सेते कानों तक फल गए, और उसके बड़े-बड़े घोंडे जैसे दाँत चमकने लगे। उसकी मूँछें दिनभर भाव से झुक गईं और वह एक मोटी-ताबड़ी शोमलहदया गृहिणी जसा लगने लगा।

गितास में बची घाय उसने जहाज से नीचे पानी में फेंक दी, फिर

गितास में ताजी घाय उड़ती थीर सातेज के एक घटे टुपड के साथ पायरोटी का टुपडा मेरी धोर बढ़ा दिया।

“सो, यह राम्रो,” उसने कहा। “तुम्हारे मां-बाप तो हैं न? घोरो परना जानते हो? कोई बात नहीं, जल्दी ही सोल जाओगे। घोरो बत्ते में यहा सभी भाहिर हैं।”

यह धोतता क्या, भोजता था। यह इतनी बसकर हजामत बनाये हुए था कि उसके भारी भरकम गाल नीचे सगते थे। नाक में इद निर महीन साल निराभा का जाल बिछा था। उसकी कुप्पी ली साल नाक मूछों के साथ बल्ल-बाजी करती थी, उसका निचला मोटा होंठ जेपा से नीचे लटक आया था और मुह के कोने में एक सिगरेट बिपकी हुई थी। सगता था मानो यह अभी गुसलजाने से स्नान करके निकला हो। उसके बदन में भोज वृक्ष की टहनियो और मिरचीनी धोदका की गंध आ रही थी और उसकी गरदन और कनपडियो पर पसीने की बूँदें उभर आई थीं।

जब मैं भर पेट खाना खा चुका तो उसने मेरे हाथ में एक इबत थमा दिया।

“अपने लिए दो एग्रन खरीद लेना। नहीं, रहने दो। मैं खर ही खरीदकर ला दूंगा।”

उसने टोपी को ठीक किया और रीछ की तरह भारी कवमो पर डगमगाता, पैरो से डेक को टटोलता चल दिया।

रात का समय था। चंद्रमा उज्ज्वल छटा फैलाता हमारे जहाज से आये चरागाहों की आर भागता जा रहा था। पुराना सा मटमले कत्यर्ड रंग का हमारा जहाज, जिसकी चिमनी पर सफेद घेरा बना हुआ था, अलस भाव से पानी के रजत तल पर अपने खण्णुवार चक्कर से अस्तमान छप छप कर रहा था। जहाज की भेंडने के लिए नदी के काले तट धीरे धीरे पानी पर परछाइयां डालते हुए उभर रहे थे, उनके ऊपर घरो की लिडकियो में साल मिलमिलाहट हो रही थी। गाय की धोर से गान की आवाज आ रही थी—गाय की लडकिया घेरे में नाच गा रही थीं और उनके गीत की डेक ‘आयलूली’ से ‘हस्सिलूयाह’ की धुन का घोला होता था।

हमारा जहाज तारो के एक लम्बे रस्से के सहारे बजरे को लॉच रहा था। इस बजरे का रंग भी मटमला कत्यर्ड था। डेक पर लोहे का एक

बड़ा सा कठघरा या और कठघरे में जलावतनी और कठोर श्रम की सजा पाए कड़ी बंद थे। गलही पर लड़े सतरी की सगीन मोमबत्ती की ली की भाँति चमक रही थी, और गहरे नीले आकाश में छोटे छोटे तारे भी मोम बत्तियों की भाँति जल रहे थे। बजरे पर निस्तब्धता छाई थी, और चाद अपनी चादनी लुटा रहा था। कठघरे की काली सलाखों के पीछे गोल घूमिल परछाईया दिखाई देती थीं। यह कड़ी वोल्गा को देख रहे थे। पानी छल छल करता बह रहा था—पता नहीं वह रो रहा था, या सहमे हुए भाव से हस रहा था। हर चीख से गिरजे का आभास मिलता था, यहाँ तक कि तेल की गंध लोबान की याद दिलाती थी।

बजरे की ओर देखते देखते मुझे अपने बचपन की याद हो आई आस्नाखान से नीजनी की यात्रा, नकाब के समान माँ का चेहरा और मेरी नानी जिसकी उगली पकड़कर मैंने जीवन की इन कठोर, किंतु दिलचस्प राहों पर पाव रखा। नानी की याद आते ही जीवन के घुणित और हृदय को कचोटनेवाले पहलू मानो गायब हो जाते, हर चीख बदल जाती, पहले से स्याबा हृदयप्राही और स्याबा सुखद बन जाती, और लोग स्याबा प्रिय तथा बेहतर लगने लगते

रात की सुबहरता मुझे इतना उद्वेगित कर रही थी कि मेरी आँखें डबडबा आयीं। बजरा भी मुझे उद्वेगित कर रहा था। यह तायून की भाँति दिखाई देता था और इस छलछलाती नदी के प्रशस्त वक्ष और इस सुहावनी रात की ध्यानोमुखी निस्तब्धता में उसका अस्तित्व बहुत ही अदृश्य तथा बहुत ही बेतुका मालूम होता था। नदी-तट की असम रेखाएँ जो कभी उभरती और कभी नीचे उतरती थीं, हृदय में स्फूर्ति का संचार करतीं और मन में अच्छा बनने तथा मानव जाति का कुछ भला करने की भावना हिलोरें लेने लगती।

जहाज के हमारे यानी भी कुछ निराले ही थे। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वे सब के सब—बूढ़े भी और जवान भी, पुरुष भी और स्त्रियाँ भी—एक ही साँचे में ढले हों। कछुवे की चाल से हमारा जहाज चल रहा था। काम-काज वाले लाग डाकजहाज से सफर करते। और हमारे जहाज की शरण केवल मस्त निखट्टू ही लेते। सुबह से साँझ तक ये खाते और पीते पिनाते, ढेर सारी तश्तरियों, छुरी-काटो और चम्मचों को गंदा करते। और मेरा काम था इन तश्तरियों को साफ करना तथा छुरी-काटो को

गिलास में ताजी घाय उबेली घौर सातोज के एक बड़े टुकड़े के साथ पावरोटी का टुकड़ा मेरी ओर बढ़ा दिया।

“तो, यह राम्रो,” उसने कहा। “तुम्हारे मां-बाप तो हैं न? चोरा करना जानते हो? कोई बात नहीं, जल्दी ही सोर जाओगे। चोरी करने में यहा सभी माहिर हैं!”

यह सोलता क्या, भौंकता था। यह इतनी बसकर हजामत बना दे हुए था कि उसने भारी भरकम गाल मीले लगते थे। नाक के इन्चिठ मटोन लाल शिराभा का जाल बिछा था। उसकी कुप्पी सी लाल नाक मछों के साथ बल्ल-बाजी करती थी, उसका निचला मोटा होंठ उपसा से नीचे लटक आया था और मुह के कोने में एक सिगरेट चिपकी हुई थी। लगता था मानो यह अभी गुसलजाने से स्नान करके निकला हो। उसके बदन से भोज घूँस की टहनियों और मिरचौनी धोक्का की गंध आ रही थी और उसकी गरदन और कनपठियों पर पसीने की बूँदें उभर आई थीं।

जब मैं भर पेट खाना खा चुका तो उसने मेरे हाथ में एक खबल थमा दिया।

“अपने लिए दो अप्रन खरीब लेना। नहीं, रहने दो। मैं खूब ही खरीबकर ला दूंगा!”

उसने टोपी की ढीक किया और रीछ की तरह भारी ढड़मों पर डगमगाता, पैरो से डेक को टटोलता चल दिया।

रात का समय था। चंद्रमा उग्रबल छटा फलाता हमारे जहाज से आये चरागाहों की ओर भागता जा रहा था। पुराना सा मटमले कल्पई रंग का हमारा जहाज, जिसकी विमनी पर सफेद घेरा बना हुआ था, अलस भाव से पानी के रजत तल पर अपने चप्पूदार चक्कर से असमान छप-छप कर रहा था। जहाज को भेंडने के लिए नदी के काले तट धीरे धीरे पानी पर परछाईया डालते हुए उभर रहे थे, उनके ऊपर घरों की खिडकियों में लाल मिलामिताहट हो रही थी। गाव की ओर से गाने की आवाज आ रही थी—गाव की लडकिया घेरे में नाच गा रही थीं और उनके गीत की टेंक ‘आयलूली’ से ‘हल्लित्तूयाह’ की धुन का प्रोला होता था

हमारा जहाज तारों के एक लम्बे रस्ते के सहारे बजरे को खींच रहा था। इस बजरे का रंग भी मटमला कल्पई था। डेक पर लोहे का एक

बड़ा सा कठघरा था और कठघरे में जलावतनी और कठोर श्रम की सजा पाए कदी बंद थे। गलही पर खड़े सतरी की सगीन मोमबत्ती की लौ की भाँति चमक रही थी, और गहरे नीले आकाश में छोटे छोटे तारे भी मोम बत्तियों की भाँति जल रहे थे। बजरे पर निस्तब्धता छाई थी, और चाद अपनी चादनी लुटा रहा था। कठघरे की काली सलाखों के पीछे गोल धूमिल परछाड़ियाँ दिखाई देती थीं। यह कदी बोल्गा को देख रहे थे। पानी छल छल करता बह रहा था—पता नहीं वह रो रहा था, या सहमे हुए भाव से हस रहा था। हर चीज से गिरजे का आभास मिलता था, यहाँ तक कि तेल की गंध लोबान की याद दिलाती थी।

बजरे की ओर देखते देखते मुझे अपने बचपन की याद हो आई आन्स्राजान से नीजनी की यात्रा, नकाब के समान माँ का बेहरा और मेरी नानी जिसकी उमली पकड़कर मैंने जीवन की इन कठोर, किन्तु दिलचस्प राहों पर पाव रखा। नानी की याद आते ही जीवन के घुणित और हृदय को कच्चाटनेवाले पहलू मानो गायब हो जाते, हर चीज बदल जाती, पहले से ज्यादा हृदयग्राही और ज्यादा सुखद बन जाती, और लोग ज्यादा प्रिय तथा बेहतर लगने लगते

रात की सुबरता मुझे इतना उद्वेलित कर रही थी कि मेरी आँखें डबडबा आयीं। बजरा भी मुझे उद्वेलित कर रहा था। वह तायूत की भाँति बिलाई बैठा था और इस छलछलाती नदी के प्रशस्त वक्ष और इस सुरावनी रात की ध्यानो-मुखी निस्तब्धता में उसका अस्तित्व बहुत ही घटपटा तथा बहुत ही बेतुका मालूम होता था। नदी-तट की असम रेखाएँ जो कभी उभरती और कभी नीचे उतरती थीं, हृदय में स्फूर्ति का संचार करतीं और मन में अच्छा बनने तथा मानव-जाति का कुछ भला करने की भावना हिलोरें लेने लगती।

जहाज के हमारे यानी भी कुछ निराले ही थे। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वे सब के सब—बूढ़े भी और जवान भी, पुरप भी और स्त्रियाँ भी—एक ही साचे में डले हों। बछुवे की चाल से हमारा जहाज चल रहा था। काम-काज वाले लोग डाकजहाज से सफर करते। और हमारे जहाज की गरण केवल मस्त निखट्टू ही लेते। मुबह से साफ तक ये खाते और पीते पिनाने, डेर सारी तशतरियो, छुरी काटा और चम्मचा को गवा करते। और मेरा काम था इन तशतरियो को साफ करना तथा छुरी-काटो को

गिलास में ताजी चाय उडेली और सातेज के एक बड़े टुफड़े के साथ पायरोटी का टुकड़ा भेरी और बढ़ा दिया।

“लो, यह खाओ,” उसने कहा। “तुम्हारे मां बाप तो हैं न? चोरी करना जानते हो? कोई बात नहीं, जल्दी ही सीख जाओगे। चोरी करने में यहाँ सभी माहिर हैं।”

वह धोलाता था, भौंकता था। यह इतनी बसकर हुआमत बनाये हुए था कि उसके भारी भरकम गाल नीले लगते थे। नाक के इर्द गिब महीन लाल शिराओं का जाल बिछा था। उसकी कुप्पी सी लाल नाक मूछों के साथ बल्ल-बाजी करती थी, उसका निचला मोटा होठ उपेक्षा से नीचे लटक आया था और मुह के कोने में एक सिगरेट चिपकी हुई थी। लगता था मानो यह अभी गुसलखाने से स्नान करके निकला हो। उसके बदन से भोज वृक्ष की टहनियों और मिरचीनी बोदका की गंध आ रही थी और उसकी गरदन और कनपटियों पर पसीने की सूँवे उभर आई थीं।

जब मैं भर पेट खाना खा चुका तो उसने मेरे हाथ में एक रुबल थमा दिया।

“अपने लिए दो प्रश्न खरीद लेना। नहीं, रहने दो। मैं जूब ही खरीदकर ला दूँगा।”

उसने टोपी को ठीक किया और रीछ की तरह भारी ब्रदमों पर डगमगाता, परो से डेक को ढटोलता चल दिया।

रात का समय था। चंद्रमा उज्ज्वल छटा फलाता हमारे जहाज से बायें घरागाहों की ओर भागता जा रहा था। पुराना सा मटमले कल्पई रंग का हमारा जहाज, जिसकी चिमनी पर सफेद घेरा बना हुआ था, अलस भाव से पानी के रजत तल पर अपने घप्पुवार घबकर से असमान छप छप कर रहा था। जहाज को भेंटने के लिए नबी के काले तट धीरे धीरे पानी पर परछाइयाँ डालते हुए उभर रहे थे, उनके ऊपर घरों की लिडफियों में झलत झिलमिलाहट हो रही थी। गाँव की ओर ११ गाने की आवाज आ रही थी—गाँव की लड़कियाँ घेरे में नाच ना रही थीं और उनके गीत की टोक ‘आपलूसी’ से ‘हुत्सिसूयाह’ की धुन का धोखा होता था

हमारा जहाज तारों के एक लम्बे रस्से के सहारे बजरे की लॉच रहा था। इस बजरे का रंग भी मटमला कल्पई था। डेक पर लोहे का एक

बड़ा सा कठपरा था और कठपरे में जलावतनी और कठोर श्म की सजा पाए कदी बंद थे। गलही पर लड़े सतरी की सगीन मोमबत्ती की लौ की भांति चमक रही थी, और गहरे नीले आकाश में छोटे-छोटे तारे भी मोम बत्तियों की भांति जल रहे थे। बजरे पर निस्तब्धता छाई थी, और चांद अपनी चादनी लुटा रहा था। कठपरे की काली सलाखों के पीछे गोल घूमिल परछाइया दिखाई देती थीं। यह कदी बोल्गा को देख रहे थे। पानी छल छल करता बह रहा था—पता नहीं वह रो रहा था, या सहमे हुए भाव से हस रहा था। हर चीज से गिरजे का आभास मिलता था, पहा तक कि तेल की गंध लोबान की याद दिलाती थी।

बजरे की घोर देखते-देखते मुझे अपने बचपन की याद ही आई आत्मापान से नीजनी की यात्रा, नकाब के समान मा का चेहरा और मेरी नानी जिसकी उगली पकड़कर मैंने जीवन की इन कठोर, किंतु विलचस्प राहों पर पाय रखा। नानी की याद आते ही जीवन के घुणित और हृदय की कचोटनेवाले पहलू मानो घायब हो जाते, हर चीज बदल जाती, पहले से ज्यादा हृदयप्राही और ज्यादा सुखद बन जाती, और लोग ज्यादा प्रिय तथा बेहतर लगने लगते

रात की सुंदरता मुझे इतना उद्वेलित कर रही थी कि मेरी आँखें डबडबा आयीं। बजरा भी मुझे उद्वेलित कर रहा था। वह तायूत की भांति दिखाई देता था और इस छलछलाती नदी के प्रशस्त वक्ष और इस मुहाबनी रात की ध्यानोमुखी निस्तब्धता में उसका अस्तित्व बहुत ही अटपटा तथा बहुत ही बेतुका मालूम होता था। नदी-तट की असम रेखाएँ जो कभी उभरती और कभी नीचे उतरती थीं, हृदय में स्फूर्ति का संचार करतीं और मन में अच्छा बनने तथा मानव जाति का कुछ भला करने की भावना हिलोरे लेने लगती।

जहाज के हमारे यात्री भी कुछ निराले ही थे। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वे सब के सब—बूढ़े भी और जवान भी, पुरख भी और स्त्रिया भी—एक ही साचे में ढले हो। कछुबे की चाल से हमारा जहाज चल रहा था। काम-काज वाले लोग डाकजहाज से सफर करते। और हमारे जहाज की शरण केवल मस्त निखटटू ही लेते। सुबह से साझ तक ये खाते और पीते पिलाते, डेर सारी तंतारियों, छुरी काटो और चम्मचो को गदा करते। और मेरा काम था इन तंतारियों को साफ करना तथा छुरी-काटो को

चमकाता। सुबह के छ बजे से लेकर रात के बारह बजे तक दम मारने की भी फुरसत नहीं मिलती। दोपहर के दो बजे से लेकर छ बजे तक और रात को दस से बारह तक, काम का जोर कुछ हल्का ही जाता। कारण कि भोजन करने के बाद यात्री फेवल चाय, बीयर या वोदका पीते। इन घंटों में सभी वेटर अर्थात् भेरे सभी साहब खाली होते। फनल के पास एक मेज पड़ी थी। चाय पीने के लिए ग्राम तौर से यहीं उनका अखाड़ा जमता। भावर्धों स्मूरी, उसका सहायक याकोव इवानोविच, रसोई के बरतान भाजनेवाला मक्खिम और गालों की उभड़ी हड्डियों वाले चेचक के दागा से भरे चेहरे, चिपचिपी आलू वाला और कुब निकला वेटर सेगैई जो डेक पर यात्रियों को खोंखें परसने का काम करता, सभी इस मण्डली में जमा होते। याकोव इवानोविच उन्हें गभी कहानिया सुनाता और अपने सड़े हुए हरे दात दिखाते हुए जब वह हसता तो ऐसा माहूम होता मानो सुबकिया से रहा ही। सेगैई का मेडकनुमा मुह इस कान से उस कान तक फल जाता। सदा लह्ला मक्खिम चुप्री साथे रहता और अनिश्चित रंग की अपनी बेजान आलू से उन्हें ताकता।

बड़ा भावर्धों रह-रहकर अपनी गूजती आवाज में चिल्ला उठता
 "भादमखोर! मोर्दोविमनो की ओलाद!"

मैं इन सभी से घिनाता था। मोटा गजा याकोव इवानोविच जब देखो सब केवल स्त्रियों का ही शिक करता, सो भी निहायत गदे ढंग से। उसके भावशून्य चेहरे पर नीले अकृते पडे थे। एक गाल पर मस्ता या जिसमे लाल बाल उगे थे, जिहे उमेठकर वह सुई सी बनाता। जहाज पर जैसे ही कोई बचल और नरम स्वभाव की स्त्री सवार होती वह उसके सामने बिछ जाता और भिलारी की भांति छाया बना उसके साथ लगा रहता, चागनी में पगे मिमियाते स्वरो में उससे बतियाता, उसके हाठों पर हाग उफन आते जिन्हें उसकी गवी आवाज लपलपाकर तेजो से चाटती रहती। न जाने क्या, भुझे ऐसा लगता कि जल्लाद भी ठीक इतने ही मोटे होते हाने।

"श्रीरतो की फुसलाना भी एव ठुनर है!" वह सेगैई और मक्खिम को सिलाने लगा, वे मुह बाये, मन ही मन उमड़ते घुमड़ते, सुन रहे थे और उनके चेहरों पर लाली बीड रही थी।

गूजती आवाज में स्मूरी घूणा से चिल्लाया

"आदमखोर!"

फिर बसमसाकर वह उठा और मुझसे बोला

"पेगबोय, मेरे साथ आओ!"

जब हम उसने बेबिन में पहुंचे तो उसने मेरे हाथ में एक किताब थमा दी जिसपर चमड़े की जिल्द बंधी थी। फिर वह अपने तख्ते पर लम्बा पसर गया जो कोल्ड स्टोरेज रूम की दीवार से सटा था।

"इसे पढ़कर सुनाओ!"

मकारोनी सिवइयो की एक पेटी पर बठकर मैं आदम से पढ़कर सुनाने लगा।

"आम्बरकुलम ने अगर तारे छिटके दिखाई दें तो इसका अर्थ है कि स्वर्ग के देवता तुम से प्रसन्न हैं, सारे क्लृप और गदगी से मुक्त होकर तुम दिव्य ज्ञान प्राप्त करोगे "

सिगरेट जलाकर और मुह से धुएँ का बादल छोड़ते हुए स्मूरी भुनभुनाया

"ऊट के ताऊ! क्या लिखा है!"

"अगर उपड़ी हुई बाईं छाती दिखाई दे तो इसका अर्थ है निष्पट हृदय "

"किसकी बाईं छाती?"

"वह तो कुछ नहीं लिखा।"

"मतलब हथी की ओह, लुच्चे वहाँ के!"

उसने आलें बंद कर लीं और हाथों का सिरहाना बनाकर लेट गया। होंठों के कोने से लगी अपनी सिगरेट को जो करीब-करीब बुझ सी चली थी, सम्भालकर उसने ठीक किया और इतने जोरो से कश खींचा कि उसके सीने के अंदर से कोई सीटी सी आवाज आयी और उसका बड़ा चेहरा धुएँ में डूब गया। कई बार बीच-बीच में मुझे लगता कि वह सो गया है, मैं पढ़ना बंद कर देता और उस मन्ट्रस किताब की ओर चुपचाप देखता रहता।

लेकिन उसकी भौंकने जसी आवाज सुनाई देती

"पढ़ो, पढ़ो!"

"वेनेराब्ल ने जवाब दिया देखो, मेरे मेकदिल फ्रेजर सुवेरियन "

"सेवेरियन "

“सूवेरियन लिखा है ”

“मारो गोली इसे। अत मे कुछ कविताए छपी हैं। उहे पढ़ो ”
मेने पढना शुरू किया

ऐ अज्ञानियो, हमारी लीलाओ को जानने को तुम उत्सुक,
निष्कात नेत्र तुम्हारे देख न पायेंगे उहे कभी,
और न जानोगे तुम यह भी, कसे गाते है फ्रेंचर

“बस करो!” स्मूरी ने चिल्लाकर कहा। “यह भी कोई कविता है? लाओ, इसे मुझे दो!”

किताब को अपने हाथ मे लेकर उसने गुस्से से उसके मोटे, नीले पने उरटे पल्टे और फिर गद्दे के मोचे ठूस दिया।

“दूसरी लाकर पढ़ो!”

मेरी मुसीबत को लोहे के बुन्दे और कीलकाटो से सप्त काले रंग का उसका सड़क किताबो से अटा पडा था। इनमे ऐसी पुस्तके थीं “सत ओमीर की वाणी”, “तोपखाने के सस्मरण”, “लाड सेडेनगाली के पत्र”, “किताब नुकसानदायक बीडे खटमल के बारे मे और उन्हें मारने की, दूसरे बीडे को भी मारने के नुस्खो के साथ”, ऐसी भी पुस्तके थीं जिनका न आदि था, न अन्त। कभी कभी बावर्चों मुझसे सब किताबें निकलवाता और उनके नाम पढवाता,—में पढता और वह गुस्से मे बडबडाता

“शतान कहीं के, लिखते क्या हैं, मानो औचक मे मुह पर तमाषा सा मारते है। और किस लिए—समझ मे नहीं आता। गेरवास्ती! भाड मे जाए गेरवास्ती! अम्बराकुलम।”

अटपटे और अजीब शब्द, ऐसे नाम जो न कभी देखे और न कभी सुने, स्मृति मे आकर अटक जाते, उहे बार-बार दोहराने के लिए मेरी जीभ खुजलाने लगती—शायद उनकी ध्वनि से उनका अर्थ मेरी समझ में आ जाये। खिडकी से बाहर कामा नदी गाती और छपछपाती रहती। मेरा मन डेव पर जाने के लिए उतावला हो उठता जहाँ बक्सो के बीच जहाजिया की चौकड़ी जपती। वे गीत गाते, दित्तचस्प किस्से सुनाते या ताग के खेला मे यात्रिया की जेबें खाली करते। उमरे साथ बठकर उनकी सीधी सारी बातें सुनना और कामा नदी के तटो, खम्बो की

भाति सीधे खड़े देवदार वक्षो के ऊचे तनो और चरागाहा की ओर देखना जहा बाढ का पानी जमा होने से छोटी छोटी शीले बन गई थीं जिनमे नीला आसमान टूटे हुए आइने के टुकडो की भाति चमकता दिखाई देता था, बहुत अच्छा लगता था। हमारा जहाज तट से बटा हुआ था और उससे दूर भाग रहा था। लेकिन तट की ओर से थके हुए दिन के सनाटे मे आखो से ओझल किसी गिरजे के घटो की आवाज हवा के साथ बहकर आती और आबाद बस्तियो तथा लोगो की हलचल की याद दिलाती। किसी मछियारे का डोगा रोटी के टुकडे की भाति पानी पर नाचता नजर आता। फिर एक गाव निकट आता दिखाई देता जहा छोटे लडको का एक दल पानी मे छपछप खेल रहा था और लाल कमीज पहने एक किसान पीले पीते की भाति फली रेत पर घला आ रहा था। दूर से देखने पर हर चीज सुहावनी मालूम होती। हर चीज खिल्लीनो की भाति अजीब ढंग से रंग बिरंगी और नही मुनी लगती है। मन करता है कि स्नेहसिक्त, दयाद्र शब्द ओर जोर से बोलू ताकि किनारे वाले और बजरे वाले भी उह सुन पायें।

कल्पई रंग का वह बजरा मानी मेरे मन मे बसा था। मनमुग्ध सा मैं घटा घटा उसके ठुके पिट्टे से अग्रभाग को गदला पानी घीरकर अपना रास्ता बनाते एकटक देख सकता था। हमारा जहाज गले मे रस्ती बंधे सुप्रर की भाति उसे खींच रहा था। तारो का रस्सा जब ढीला पडता तो पानी से टकराता और इसके बाद, नाक के बल बजरे को खींचते समय, पानी को काटता हुआ फिर तन जाता और उसपर से पानी की प्रचुर धूँ गिरती और यह फिर बजरे को गलही से खींचता। मन मे होता कि बजरे पर जाकर उन लोगो के चेहरे देखू जो जानबरो की भाति लोहे के कठपरे मे बंद थे। वेम मे जब उन्हें बजरे से उतारा जा रहा था, मैं भी जहाज से उतरने के तल्ले पर अपना रास्ता बना रहा था, दल के दल मटमले जीव, यला के बोझ से दोहरे और अपनी जजीरो को बजाते, मेरे पास से गुजरे। उनमे पुरष थे, स्त्रिया थीं, उनमे बूढ़े थे और जवान थे, सुदर और असुदर, सभी तरह के लोग थे—ठीक वसे ही जैसे कि सब लोग होते हैं, सिवा इसके कि वे दूसरी तरह के कपडे पहने थे, और सिर घुटे होने के कारण उनके चेहरे मोहरे भदे दिखाई देते थे। वे जरूर डाबू ही रहे होंगे। लेकिन नानी तो डाबुआ के बारे मे इतने

बढ़िया किस्से सुनाया करती थी! स्मूरी श्रीरा से वहाँ ज्यादा दबग श्रीर जानदार लुटेरा मालूम होता था।

“भगवान ऐसे दिन न दिखाना!” बजरे की ओर देखते हुए वह बुदबुदाता।

एक दिन मीने उससे पूछा

“ऐसा क्यों है कि तुम खाना पचाते हो और दूसरे लोग—हत्या करते हैं, सूटते हैं?”

“खाना तो औरतें भी पकाती हैं, पर बावर्चों का काम ये नहीं करतीं। मैं बावर्ची हूँ, समझा?” उसने थोड़ा हसकर कहा। फिर एक क्षण कुछ सोच कर बोला

“लागों में अंतर उनकी बेयकूफी का होता है। कुछ लोग सयाने होते हैं, कुछ कूड़ दिमाग और कुछ बिल्गुल गोबर गणेश। और समझदार बनने के लिए ठीक ढंग की—जैसे काला जादू तथा ऐसी दूसरी बहुत सी—किताबें पढ़नी चाहिये। सभी किताबें पढ़नी चाहिये तभी सही किताबा का पता लगेगा ”

वह मुझसे सदा यही कहता

“पढ़ो, अगर कोई किताब समझ में न आए तो उसे सात बार पढ़ो। अगर सात बार पढ़ने पर भी समझ में न आये तो उसे बारह बार पढ़ो ”

स्मूरी जहाज पर हर किसी से, यहा तक कि सदा चुप रहनेवाले बारमन से भी थो-टूक बातें करता था। बोलते समय उसका निबला होंठ उपेक्षापूर्वक लटका होता, मूछें लड़ी हो जातीं और शब्द ऐसे निकलते मानो लोगो को डेले मार रहा हो। लेकिन मेरे साथ वह मुलामियत से पेश आता, हालांकि उसकी इस हादिकता में भी कुछ ऐसी बात थी जिससे मुझे डर लगता था। कभी-कभी मुझे ऐसा मालूम होता कि नांगी की बहन की भाति उसने दिमाग का भी कोई पुर्जा ढोला है।

“पढ़ना बंद करो!” वह मुझसे कहता और आखें बंद किये नाक से सू-सू करते हुए देर तक चुमचाप पड़ा रहता, उसका भारी पेट उठता और गिरता, उसके हाथ सीने पर लाश की भाति आड़े रखे रहते, उसकी चाली चाली झुलसी हुई उगलियाँ इस प्रकार तुडतीं मुडतीं मानो वह अदृश्य सलाइया से कोई अदृश्य भोजन बुन रहा हो।

फिर, एकाएक, वह बुदबुदाना शुरू करता

“हा, भई। लो यह लो अक्ल और जियो। पर अक्ल तो कजूसी से मिली है और वह भी बराबर नहीं। अगर कहीं सब एक से अक्लमद होते, पर-नहीं एक समझता है, दूसरा नहीं समझता और ऐसे भी हैं, जो समझना ही नहीं चाहते, क्यों!”

सडखडते हुए से शब्द उसके मुह से निकलते और वह अपने सैनिक जीवन की कहानिया सुनाता। उसकी कहानियों में मुझे कभी कोई तुक नहीं दिखाई देती और ये मुझे हमेशा बेमजा मालूम होतीं,—जात तौर से इसलिए भी कि वह कभी शुरू से शुरू नहीं करता, बल्कि जहा से भी बात प्राद आ जाती, वहाँ से सुनाना शुरू कर देता।

“तो रेजीमेन्ट के कमाण्डर ने उस सैनिक को तलब किया और उससे पूछा ‘तुम से लेफ्टीनेन्ट ने क्या कहा था?’ और उसने सभी कुछ बता दिया, कुछ भी छिपाकर न रखा, क्योंकि सैनिक का यह फज है कि वह सब बोले। लेफ्टीनेन्ट ने उसकी ओर इस तरह देखा मानो वह दीवार हो, फिर मुह फेरकर सिर झुकाया। ऊह!”

बावर्ची को शोध आ रहा था, घुमा छोटते हुए वह बुदबुदाया

“मानो मुझे मालूम ही हो कि क्या कहना चाहिए और क्या नहीं। उन्होंने लेफ्टीनेन्ट को जेल में बंद कर दिया, और उसकी मा ओह, मेरे भगवान! मुझे तो कुछ भी सिखाया नहीं किसी ने ”

बड़ी उमस थी। इयगिद की हर चीज काप और मनभना रही थी। बेबिन की लौह दीवार से बाहर जहाज का चप्पूदार चक्कर घम घम करता घूम रहा था और पानी से छपछप कर रहा था। लिडकी में से पानी की चौड़ी धारा उमडती घुमडती दिख रही थी, दूर चरागाह की हरियाली नजर आ रही थी और वृक्षों के झुरमुट आखा के सामने उभरने लगे थे। सब आवाजों को सुनते-सुनते मेरे कान इतने आबी हो गये कि निस्तब्धता के सिवा मुझे अन्य किसी चीज का भान नहीं होता, हालाकि जहाज की गलही पर एक भल्लाह एकरस आवाज में बराबर दोहरा रहा था

“सा आ-त सा आ-त ”

मैं हर चीज से अलग रहना चाहता था,—न कुछ सुनना चाहता था, न करना,—बस किसी ऐसे कोने में छिप जाना चाहता था जहाँ रसाई की

गम और विक्रमी गध प्रवेश न कर सके और जहा बठकर पानी पर तरते हुए इस हलचल रहित और थके हारे जीवन को अलसायी उनींदी आवा से देखा जा सके।

“पड़ो!” झकझोरते हुए स्मूरी ने आदेश दिया।

पहले दर्जे के घेटर तक उससे डरते और ऐसा मालूम होता मानो सहमा सिमटा, घुना और मुहबद बारभन भी मन ही मन स्मूरी से भय खाता है।

“ऐ सुअर!” स्मूरी घेटरो आदि पर चिल्लाता। “इधर आ घोर, आदमखोर अम्बराकुलम!”

मल्लाह और कोयला शोकनेवाले उसकी इच्छत करते थे, यहा तक कि उसकी नजरों में अच्छा बनने का भी प्रयत्न करते थे। वह उर्ह शोरबे में से गोशत की बोटिया निकालकर देता, उनके बाल-बच्चो और गाव के जीवन के बारे में पूछता। कालिख में सने और चिक्कट शोयला शोकनेवाले बेलोरुसी लोग जहाज की तलछट समझे जाते थे। उन सभी को एक ही नाम—यागूत—से पुकारा जाता था और उहे चिढ़ाते थे

“यागू, आगू, भागू ”

स्मूरी जब यह सुनता तो उसका पारा गम हो जाता। उसकी मूछे फरफराने लगतीं, चेहरा तमतमा जाता और कोयला शोकनेवालो से वह चिल्लाकर कहता

“तुम इन कत्सापो* से डरते क्यों हो? इनका तोबटा क्यों नहीं तोड डालते!”

एक बार मल्लाहो के मुखिया ने जो शक्त सूरत से अच्छा तथा स्वभाव से चिडचिडा था, उससे कहा

“यागूत और खोलोल**—दोनो एक बराबर हैं।”

स्मूरी ने एक हाथ से उसकी पेटी दबोची और दूसरे से गरदन। फिर सिर से उचा उठाकर उसे हिलाते झजोडते हुए चिल्ला उठा

“बोल, निकाल दू कचूमर?”

अक्सर झगडे होते थे और कभी-कभी लडाई तक बढ़ जाते। लेकिन

*कत्साप—रुसी के लिए एक अपमानजनक शब्द।—स०

**उत्राइनी के लिए एक अपमानजनक शब्द।—स०

स्मूरी को कभी कोई हाथ नहीं लगाता था। एक तो इसलिए कि तावत में वह पूरा देव था, दूसरे इसलिए भी कि कप्तान की पत्नी उससे अकसर दिनभरातापूर्वक बातें करती थी। वह ऊँचे बदन की स्त्री थी, मरदाना चेहरा और लडकों की भाँति सीधे कटे हुए बाल।

वह बोदका बहुत पीता था, लेकिन मदहोश कभी नहीं होता। सुबह से वह पीना शुरू करता, चार पेगों में ही एक बोतल खाली कर देता, और फिर दिन भर बीयर चूसकता रहता। धीरे धीरे उसका चेहरा लाल हो जाता, और उसकी काली आँखें इस तरह फल जातीं मानो उनमें अचरज का भाव भरा हो।

कभी-कभी, सात के समय, सफ़ेद रंग की भीमाकार प्रतिमा की भाँति वह चुप्पी साधे डेक पर घटो बँठा रहता और मुँह पुसाए पीछे छूटती हुई दूरी को घूरा करता। ऐसे क्षणों में प्रायः सभी उससे और भी ज्यादा डरते, लेकिन मुझे उसपर तरस आता।

याकोव इवानोविच रसोई से बाहर निकलता, चेहरा लाल और पसीने में तर वह अपनी गजी एपोपडी को खुजलाता और फिर निराशा से हाथ हिलाता हुआ सायब हो जाता। या वह दूर से कहता

“मछली मर गई ”

“मिले-जुले सूप में डाल दो ”

“अगर कोई मछली का शोरबा या भाप में पकी मछली माँगने लगा तो क्या करोगे ?”

“बना डालो। वे सब चट कर जायेंगे !”

कभी-कभी साहस बटोरकर मैं उसके पास चला जाता। बड़ी फटिनाई के साथ आँखें मेरी ओर घुमाकर वह पूछता

“क्यों ?”

“कुछ नहीं।”

“ठीक है ”

एक बार मैंने उससे ऐसे एक मौके पर पूछ ही लिया

“तुम सभी को डराते क्यों हो—तुम तो दयालु हो ?”

मेरी आशा के विपरीत वह झुमसाया नहीं।

“मैं केवल तुम्हारे साथ ही दयालु हूँ,” उसने जवाब दिया, और फिर कुछ सोचते हुए खुले दिल से बोला

“शायद यह ठीक है—मैं सभी के साथ दयालु हूँ। केवल मैं दिखाता नहीं। लोगो को यह कभी नहीं दिखाना चाहिए, भ्रमया वे तुम्हें बीच खापेंगे। जो भला होता है, लोग उसपर इस तरह चढ़ बैठते हैं मागे वह दलदल के बीच सुखी मिट्टी का कोई टीला हो और वे उसे पांव तले रीढ़ डालते हैं। जाओ, बीयर उठा लाओ ”

एक के बाद एक कई गिलास बीयर पीने के बाद उसने अपनी मूछो को चाटा और बोला

“अगर तुम कुछ बड़े होते तो तुम्हें बहुत सी बातें सिखाता मैं भी थोड़ी-बहुत काम की बातें जानता हूँ—निरा बौद्ध नहीं हूँ तुम पुस्तकें पढ़ो, पुस्तकों में काम की सभी बातें होनी चाहिए। किताबें फिजूल की चीस नहीं हैं। क्यों, कुछ बीयर पियोगे?”

“मुझे अच्छी नहीं लगती।”

“यह अच्छी बात है। कभी नशा न करना। नशा एक बहुत बड़ी बला है। बोदका शतान की घेन है। अगर मैं अमीर होता तो पढ़ने के लिए तुम्हें स्कूल भेज देता। अनपढ़े आदमी को पूरा बल ही समझो। चाहो तो उसपर जुआ लाद दो, चाहे उसे काटकर खा जाओ—तुम पडफडाने के सिवा यह और कुछ नहीं करता ”

कप्तान की पत्नी ने उसे योगोल की एक पुस्तक की “भयानक प्रतिशोध”। मुझे यह पुस्तक बहुत पसंद आई। लेकिन स्मूरी गुस्से से चिल्ला उठा

“निरा बकवास, परियो की कहानी जसी। मैं जानता हूँ—और दूसरी किताबें हैं ”

उसने मेरे हाथ से पुस्तक छीन ली और कप्तान की पत्नी से एक भ्रम्य पुस्तक ले आया।

“तो, अब इसे पढ़ो—तारास—जरा देखो तो, इसका पूरा नाम क्या है? दूढ़ो।” अपनी तरफ से बहते हुए उसने आदेश दिया। “वह कहती है कि बहुत बढ़िया कहानी है लेकिन बढ़िया किस के लिए? हो सकता है कि यह उसके लिए बढ़िया हो, और मेरे लिए घटिया। और देखो न, अपने बाल कटा लिए! अपने कान भी क्यों नहीं कटा लिए?”

पुस्तक पढ़ते पढ़ते जब मैं उस स्थल पर पहुँचा जहाँ तारास ने ओस्ताप को लडने के लिए ललकारा, बावर्ची भरभराई सी आवाज में हसा।

“यह—सही है! और क्या?” उसने कहा। “तू विद्वान, मैं बतवान! क्या छापते हैं! ऊट की औलाद!”

वह ध्यान से सुन रहा था लेकिन बीच-बीच में भुनभुनाता भी जाता था।

“ऊह, यह भी क्या बकवास है। एक ही वार में कंधे से कमर तक आदमी को नहीं काटा जा सकता। एकदम गलत। और बर्छी की नोक पर आदमी को भला कैसे उठाओगे, वह टूट न जाएगी? क्या मैं जानता नहीं, मैं खुद सनिक रह चुका हूँ।”

आर्ब्रेई के विश्वासघात का प्रसंग सुनकर वह बुरी तरह आहत हो उठा

“नीच जात है, न? लुगाई पर भर गया। थू!”

पर जब तारास ने अपने घेरे के सीने में गोली दागी तो स्मूरी उच्चककर बह गया, अपने टांगों को उसने तल्ले से नीचे लटकवा लिया, उसके किनारे की दोनों हाथों से फक्कड़ झुका और रोने लगा। आसू धीरे धीरे उसके गालों पर से लुढ़कते हुए फस पर गिरने लगे। नयुने फड़काते हुए वह ध्रुबुवाया

“ओह, मेरे भगवान मेरे भगवान”

सहसा वह मुझपर चिल्ला उठा

“पठना क्यों बंद कर दिया, शतान का पूत!”

वह और भी जोरो से, फफक फफककर रोने लगा उस समय जब ओस्ताप अपने प्राणदण्ड से पहले धील उठा, “बासू! मुझे सुन रहे हो?”

“सभी कुछ समाप्त हो गया,” स्मूरी भुनभुनाया। “कुछ भी बाकी नहीं बचा। जर्म भी हो गया? आह, सत्वानास हो इसका, पर लोग कैसे थे, हैं? यह तारास क्या आदमी था! हा, यह थे असली आदमी”

उसने पुस्तक मेरे हाथ से ले ली और ध्यान से उसे देखता रहा, किताब की जिल्द आसुओं से भीग गयी।

“बड़ी अच्छी किताब है! तबीयत खुश कर दो।”

इसके बाद “आइवनहो” का पाठ हुआ। स्मूरी को रिचर्ड प्लाटागेनेट का चरित्र बहुत पसंद आया।

“बादशाह हो तो ऐसा!” उसने रोबीली आवाज में कहा। मुझे यह किताब उबानेवाली लगी।

शाम तोर पर हमारी रुचि एक दूसरे से भिन्न थी। “थोमस जोन्स की कहानी” ने, जो “लावारिस टाम जोन्स की जीवनी” का पुराना अनुवाद था, मुझे मंत्रमुग्ध कर लिया। लेकिन स्मूरी बटवड़ाया

“एकदम बकवास! भाड में जाये तुम्हारा थामस। मुझे उससे क्या लेना? बर्दिया पुस्तकों को खोजना चाहिए ”

एक दिन मैंने उसे बताया कि मुझे मालूम है कि पुस्तकों की एक श्रौर किस्म होती है वजित पुस्तके, जिहे केवल रात के समय तहखानों में बठकर पठा जाता है।

उसकी आँखें फल गड़, झुँटें परफराने लगीं।

“क्या कहा तुमने? क्यों बेपर की उडा रहे हा?”

“मैं झूठ नहीं कहता। पाप स्वीकारोक्ति के समय जूद पावरी ने उनके धारे में मुझसे पूछा था, श्रौर उससे भी पहले मैंने लोगो को उह पढ़ते श्रौर उनपर आसू बहाने देखा है ”

धुंधी सी आँखों से उसने मेरी श्रौर देखा।

“आसू बहाते देखा है? कौन था वह?”

“एक स्त्री जो चुन रही थी, श्रौर दूसरी तो डर के मारे भाग ही गई। ”

“जरा होश में आओ, क्या बटवड़ा रहे हो?” अपनी आँखों को धीरे धीरे तिकोडते हुए स्मूरी ने कहा। फिर कुछ रुककर बोला

“बेगन वहीं होनी चाहिए कोई गुप्त चीज न होना असम्भव है मेरी उम्र बसो नहीं श्रौर स्वभाव भी तो नहीं फिर भी ”

बिना रके घटो तब यह इसी तरह बातें कर सकता था एकदम अनजाने में ही मुझे पढ़ने की आदत पड गई श्रौर मैं चाय के साथ किताबें पढ़ता, पुस्तकों में वजित जीवन वास्तविक जीवन से, जो अधिकाधिक दूसर होता जा रहा था, वहीं मुलद था।

स्मूरी की विलचरपी भी पुस्तकों में बढ़ती गई। अबसर वह मुझे अपना काम भी न करने देता। कृता

“पगवाच, घसो पुस्तक पढ़कर मुनाओ। ”

“यहा जूटे बतनो का टेर लगा हुआ है।”

“मक्सिम साफ कर लेगा।”

स्मूरी बड़े बतन भाजनेवाले की गरदन दबोचकर उससे मेरा काम लेता, यह काच बे गिलास तोड़कर अपना बदला चुकाता। और धारमन निश्चल आवाज में मुझे चेतावनी देता

“तुम्हें जहाज से निकाल दगा।”

एक दिन मक्सिम ने जान-बूझकर गंदे पानी के बरतन में गिलास पड़े रहने दिये। मैंने बरतन का गंदा पानी जहाज से नीचे फेंका तो गिलास भी उसके साथ-साथ जा गिरे।

“यह कसूर मेरा है,” स्मूरी ने धारमन से कहा। “गिलासों के बाम मेरे हिसाब में तो काट लेना।”

बेटरो ने भी मुझसे जलना और कुटना गुट कर दिया। मुझे ढोचते हुए कहते

“कहो किताबी कीड़े, खूब हराम की खाते हो आजकल!”

मेरा काम बढ़ाने के लिए वे जान-बूझकर रकाबियों को गंदा कर देते। मैं समझता था कि इस छेड़छाड़ का अंत अच्छा नहीं होगा और ऐसा ही हुआ भी।

सात का समय था। एक छोटे से घाट से एक साल चेहरे वाली स्त्री हमारे जहाज पर तयार हुई। उसके साथ एक लडकी भी थी जो पीले रंग का हमाल और गुलाबी रंग का नया ब्लाउज पहने थी। दोनों कुछ कुछ नंगे में थीं। स्त्री बराबर मुस्कराती, झुक्कर सभी का अभिवादन करती और उसके मुह से सोते की भांति शब्द निकलते

“मुझे माफ करना, मेरे प्यारे! आज मैंने थोड़ी सी चढ़ा ली है। मेरे पर मुकदमा धला था और मैं बेदाग छूट गई, सो मैं अब जूशी मना रही हूँ।”

लडकी भी अपनी घुघली आंखों से सभी पर डोरे डालती हस रही थी और स्त्री को धकेल रही थी

“अरी जा, सिरफिरी ”

जहाज के दूसरे दों के डेक-रूम के पास उस बेबिन के सामने जहा यानोव इवानोविच और सेर्गेई सोते थे, दोनों ने अपना अट्टा जमाया।

स्त्री तो गीघ्र ही वहीं घायब हो गई, और सेगेंद लटकी की बगल में जाकर जम गया। उसका मेढकनुमा मुह सातसापूबक फसा था।

शाम-शाम से लिबटकर उस रात सोने के लिए मैं मेड पर पड़ा ही था कि सेगेंद मेरे पास घायब और मेरा हाथ लॉचते हुए बोला

“घस, हम आज तेरी जोड़ी भितावणे ..”

यह तारी मे घुस था। मैंने उससे अपना हाथ हड़ाना चाहा तो उसने मुझे मारा

“घस!”

सभी मरिहम भागा हुआ था गया। वह भी नन्ने मे घुस था। दोनों ने मुझे पकड़ा और डेक सपा सोते हुए यात्रियों के पास से लॉचते हुए मुझे अपने बेडिन की ओर ले चले। लेकिन दरवाजे के पास स्मूरी और ठीक दरवाजे के बीचोंबीच याकोव इवानोविच लटकी का रास्ता रोक लगा था। वह उसकी पीठ पर घुसे बरसा रही थी और नगीली आवाज में धार-धार चिल्ला रही थी

“जाने दो ”

स्मूरी ने मुझे मरिहम और सेगेंद के बगुल से छुटा लिया, बाल पकड़कर उनसे तिरों को एच-नूसरे से टकराया, और परे फेंक दिया—वे दोनों गिर पड़े।

“आवमजोर!” यह याकोव पर चिल्लाया और झटके से उसके मुह पर दरवाजा बंद कर दिया। फिर मुझे धकियाते हुए गुर्रा उठा

“दफा हो यहाँ से!”

मैं जहाज के दबूसे की ओर भाग गया। बादलों घिरी रात थी, नदी काली थी। जहाज के पीछे पानी में दो भूरी धारिया उफनती हुईं अदृश्य लट्ठों की ओर भागी जा रही थीं। इन धारिया के बीच बजरा घिसट रहा था। कभी दाहिनी ओर कभी बाईं ओर रोशनिया के लाल धब्बे दिखाई देते और फिर, किसी चीज को आलोकित किये बिना ही नदी के घुमावों के पीछे तुरत घायब हो जाते। उनके ओझल हो जाने के बाद रात का अंधेरा और मेरे अंतरमन को लगी चोट और गहरी होती चली गई।

बावर्ची आकर मेरे पास ही बठ गया। गहरी सास लॉचकर उसने सिगरेट गुलगाईं।

“क्या वे तुम्हे उस छछूंदर के पास ले जा रहे थे? बदजात कहीं के! मैंने सुना था, वे कते उसपर हाथ डाल रहे थे ”

“तुमने उसे उनसे घगुल से छुड़ाया?”

“उसे?” भड़े से शब्दों में उसने सडवी की पोसा और फिर भारी आवाज में बोला

“यहा सभी कमीने हैं! यह जहाज देहात से भी बदतर है। क्या तू कभी देहात में रहा है?”

“नहीं।”

“देहात—पूरी मुसीबत है। जाडा मे तो खास तीर से ”

उसने सिगरेट का टुरा पानी में फेंक दिया और कुछ खरकर बोला

“इन सुपरों के झुड के बीच तेरा सत्यानाश हो जायेगा! तुमने देखकर डुल होता है पिल्ले। डुल तो मुझे सभी पर होता है। और कभी-कभी तो न जाने क्या करने की तयार होता हू मन करता है कि घुटनों के बल गिरकर मैं उनसे कहूँ ‘यह तुम क्या कर रहे हो, हरामी पिल्लो! क्या तुम अघे हो?’ ऊट वहीं के ”

जहाज ने बेर तक सीटी की आवाज की, तार का रस्सा पानी में गिरकर छपछपाया, घने अघेरे में सालटेन की रोशनी झूल उठी जो इस बात की सूचक थी कि जहाज घाट गया है, और भी रोशनिया धुधलके में शिलमिलाने लगीं।

“यहीं है वह ‘नशीला जगल’” आकचों बडबडाया। “नशीली नाम की नदी भी है। एक अफसर था ‘शाराबोय’। और एक पियकड नाम का बलक भी मैं किनारे पर जाऊंगा ”

कामा प्रदेश की हट्टी-बट्टी स्त्रिया लम्बी डोलियो पर लकडी लादकर ला रही थीं। फुर्ती से छोटे छोटे डग भरती, बोस से झुकी, बो बो के जोडों में जहाज के ईंधनघर तक आतीं और उसके काले मुह में जोरो से ‘पाईशा घा’ की आघाज करती हुई लकडी के कुवों को झाक देतीं।

जब वे लकडी लेकर आतीं तो मल्लाह उनकी टांगें खींचते, उनकी छातियो को पकडकर मसकते और स्त्रियां कीकती हुई उनके मुह पर झुकतीं। लकडिया उतारकर जब वे लौटतीं तो जहाजियो के थक्को और चिकोटियो से बचने के लिए वे पलटकर अपनी डोलियो से उनपर वार करतीं। दसियो बार, हर फेरे में, मैं यह देख चुका था। जहा कहीं भी जहाज ईंधन लेता, इसी तरह के बश्य दिखाई देते।

मुझे ऐसा मालूम होता मानो मैं कोई बडा बूढा आदमी हू, लम्बे असें

से जहाज पर रह रहा हूँ, और पहले से ही बता सकता हूँ कि क्या अगले दिन, अगले सप्ताह, अगली शरद में या अगले वष क्या होगा।

उजाता हो चला था। घाट से परे रेत के टीले पर देवदार के एक बड़े जगल की शबल दिखाई देने लगी। जगल की ओर स्त्रिया टोले पर जा रही थीं। वे हसतीं, गीत गातीं और वित्तकारिया भरतीं। अपनी लम्बी डोलियों से लस वे सनिकों के दल की भाँति दिखाई देतीं।

जी रोने को चाहता था। भ्रातृ हृदय में उमक घुमक रहे थे, वह मानो उनमें उबल रहा था, इससे मुझे बहुत पीडा पहुँच रही थी।

लेकिन रोते मुझे शम मालूम हुई। सो मैं उठा और डेक साफ करने में मल्लाह शरिन का हाथ बटाने लगा।

शरिन उन जहाजियों में से था जिनकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। पीला और बेरंग, जहाज के अनेकाने में छिपकर बैठ बस अपनी छाटी अर्धे मिचमिचता रहता।

एक दिन मुझसे बोला

“असल में मेरा नाम शरिन नहीं, सुरिन है। जिस माँ ने मुझे जन्म दिया, वह पूरी सूरि थी। और मेरी बहन—वह भी अपनी माँ ही कम नहीं है। ऐसा भालूम होता है कि विधाता ने इन दोनों का भाग्य में यही लिख दिया था। भाग्य, मेरे भाई, उस पत्थर की भाँति है जो गले में बधा रहता है। तुम उबरने के लिए हाम-पाव मारते हो, और वह तुम्हें ले डूबता है ”

और अब, डेक को साफ करते समय, धीमे स्वर में कहने लगा

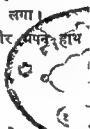
“देखा तुने, ये लोग लडकियों को किस तरह मसकते और कचोटिया काटते हैं? कौन मर्ती जानता कि अगर पीछे पड़े रहो तो सीली लकड़ी भी गरमा जाती है! मुझमें यह नहीं देखा जाता। नहीं भाई, मैं यह सब सहन नहीं कर सकता। अगर मैं लडकी होता तो ईसामसीह की वसाम पाता हूँ, किसी अर्थे कुवे में डूब मरता इसान तो या ही आवाज नहीं होता ऊपर से लोग उकसाते हैं। बघिये तो, भाई मेर, काई मूल थोडे ही हैं, कभी मुना है बघियों के बारे में? समझदार लोग हैं—भले जीवन का रास्ता खोजी में उन्हें देर न लगी। बस, मन को भटवानेवाली इन छोटी चीजों को जन्मूल से काटकर फेंक दो और, गुड शरीर हो, भगवान की सेवा करो ”

कप्तान की पत्नी हमारे पास से गुजरी। डेक पर पानी फला था। अपने घाघरो को भीगने से बचाने के लिए वह उहे उचा उठाए थी। वह हमेशा जल्दी उठ जाती थी। लम्बी और सुघड, चेहरा कुछ इतना निष्कपट और भोलेपन का कुछ ऐसा भाव लिये कि मेरा मन ललक उठता, जो करता कि भागकर उसके पीछे जाऊ और उडेलते हुए उससे कहूँ

“मुझसे बातें कीजिये—कुछ तो कहिये।”

जहाज धीरे धीरे घाट से दूर होने लगा।

“चल दिये!” शूरिन ने कहा, और अपने हाथ बनाया



सारापूल पहुचने पर भक्सिम जहाज से चला गया। चलते समय उसने किसी से विदा तक न ली। बस, एकदम चुपचाप, शांत और गम्भीर, वह जहाज से चल दिया। रगोन स्वभाव की वह स्त्री भी हसती और खिलखिलाती, उसके पीछे-पीछे चल पडी। साथ में लडकी भी थी—मसली और मुरझाई सी, आलें सूजी हुई। सेगोई कप्तान के केबिन के सामने बैर तक बठा रहा, दोनों घुटने टेके हुए। दरवाजे की चौखट को वह चूमता था, और रह रहकर उससे अपना सिर टकराता था।

“मुझे माफ करो,” झोंकता हुआ वह कहता। “मैंने कुछ नहीं किया। वह सब भक्सिम का कसूर था।”

मल्लाहो, धार वाला, यहा तक कि कुछ यात्रियो को भी मालूम था कि वह झूठ बोल रहा है। फिर भी वे उसे उक्सा और बडावा दे रहे थे

“ठीक है, डटा रहा। वह माफ कर देगा।”

कप्तान ने उसे भगाया, यहा तक कि ऐसी खात जमायी कि सेगोई कप्तान पर गिर गया, लेकिन फिर माफ कर दिया। अगले ही क्षण सेगोई हाथों में नाशते को ट्रे लिए डेक पर इधर से उधर सपकता और मार खाये पिल्ले की भांति लोगो की आंखो में झांक्ते हुए नजर आने लगा।

भक्सिम की जगह जिस आदमी को रखा गया, वह व्यात्या प्रदेश का रहनेवाला था और पहले फौज में नौकरी कर चुका था। हद्दियो का डांचा,

छोटा सा सिर और साल-भूरी आँखें। आते ही छोटे बाबूची ने उसे मुगिया काटने भेज दिया। वो तो उसने काट डाली, और बाकी डेक पर निकल भागी। यात्रियों ने उहे पकड़ने की कोशिश की, और तीन मुगिया फुदककर जहाज से पानी में जा गिरीं। रसोईघर के पास लकड़िया के ढेर पर निराशा से सिर झुकाये सनिक बठ गया, और फूट फूटकर रोने लगा।

“अरे युद्ध कहीं था, हुआ क्या?” स्मूरी ने अचरज में भरकर पूछा।
 “छि, सनिक भी अभी रोते हैं, क्या?”

सनिक ने धीमे स्वर में कहा

“मैं तो गैर लडाकू सनिक था।”

यह कहना ही था कि उसका तो समाशा बन गया। साथ घटा भीतते न भीतते जिसे देखिये वही जहाज में उसपर हस रहा था। एक एक करके लोग उसके एकदम नजदीक आते, उसके चेहरे पर आँखें गाढ देते और पूछते

“क्या यही है?”

इसके बाद बहुत ही भोडे और भद्दे ढग से खिलखिलाकर वे उसकी हसी उडाते, और हसते हसते बीहरे हो जाते।

शुरु में सनिक का ध्यान न तो उनकी ओर गया और न ही उनके खिलखिलाने और हसने की ओर। वह केवल उसी जगह बठा हुआ अपनी फटी पुरानी सूती कमीज की आस्तीन से अपने आसुओं को इस तरह पोछता रहा मानो उन्हें अपनी आस्तीन में छिपाने का प्रयत्न कर रहा हो। लेकिन शीघ्र ही उसकी साल-भूरी आँखें गुस्से से दमकने लगीं और ध्यात्का निवासिया के चुहचुहाते सहजे में उसकी खबान कतरनी सी चल पडी

“इस तरह बीदे फाडकर मुझे क्यों धूर रहे हो? तुम्हारी थोटी-बोटी नुचे, भुओ!”

उसकी इस बात ने लोगो की और भी गुदगुदा दिया। वे आते और उसकी पसलियों में अपनी उमलिया मडाते, उसकी कमीज और उसका एप्रन पकडकर खींचते मानो बकरे के साथ खेल रहे हो। इस तरह भोजन का समय होने तक वे उसे पूरी बेरहमी से चिडाते रहे। भोजन के बाद किसी ने लकड़ी के चमचे के हत्थे में निचुडा नीबू मडाकर उसे उसवे एप्रन की डोरियो से पीठ पीछे बांध दिया। सनिक जब इधर उधर

हिलता-डुलता तो घमचा भी उसके साथ-साथ झकोले खाता और लोग उसे देख देखकर हसी के भारे बोहरे हो जाते। चूहेवानो मे बंद चूहे की भांति वह छटपटाता और भुनभुनाता—उसकी समझ मे न आता कि आखिर ये लोग इतना हस क्यों रहे हैं।

बिना कुछ बोले, बड़ी गम्भीरता से, स्मूरी ने उसे देखा और उसका चेहरा किसी स्त्री के चेहरे की भांति कोमल हो उठा।

मुझे भी सनिक पर तरस आया। मैंने स्मूरी से पूछा

“कहो तो घमचे के भारे मे उसे घता दू?”

स्मूरी ने सिर हिलाकर अनुमति दे दी।

जब मैंने सनिक को यह बताया कि वह क्या चीज है जिसपर सब लोग हस रहे हैं तो उसका हाथ झपटकर घमचे पर पहुँचा, उसकी डोरी को उसने तोड़ डाला, फिर घमचे को फर्श पर पटक उसे पाव तले रँवा और अपने दोनों हाथों से मेरे बाल पकड़कर मुझे खींचना शुरू कर दिया। फिर क्या था, हम दोनों गुत्यमगुत्या हो गये और अचानक सब लोग तुरत घेरा सा बनाकर बड़ी खुशी से हमारा तमाशा देखने लगे।

स्मूरी ने सब को इपर-उपर कर हमें एक दूसरे से छुड़ा दिया। पहले उसने मेरे कान गरम किये, फिर सनिक को कान से पकड़ लिया। अपना कान छुटाने के लिए जब दुइया से उसके बदन ने एठना और बल जाना शुरू किया तो लोग उसे देख देखकर उछल पडे और उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। तालिया और सीढियों की आवाज से लोगो ने प्राप्तमान सिर पर उठा लिया और हसी के भारे बोहरे हो गये।

“बाह रे मेरे शेर! देखता क्या है, मार सिर जावर्ची की तोब मे!”

लोगों के झुंड के इस जगलीपन को देखकर मेरे मन मे हुआ कि एक लड्डा उठाकर इन सब के सिर चकनाचूर कर दू।

स्मूरी ने सनिक को छोड़ दिया और जगली सूअर की भांति उसी अचानक सागों की ओर रुख किया। उसके हाथ उसकी कमर के पीछे थे, उसके दात चमक रहे थे और मछो के बाल फरफरा रहे थे।

“दफा हो जाओ—अपनी अपनी जगह! आदमखोर कहीं के”

सनिक एक बार फिर मेरी तरफ झपटा, लेकिन स्मूरी ने उसे एक हाथ से उठा लिया और इसी प्रकार उठाए उठाए उसे पानी के नल तक ले गया। फिर पानी निवातते हुए उसने सनिक का सिर नल के नीचे कर

दिया और उसने टुइयां से बदा को पानी की धार के नीचे इस तरह उलट-पलटकर घुमाने लगा मानो यह चियझे की गुड़िया हो।

कुछ मल्लाह, उनका मुलिया और कप्तान का सहायक, सपरकर याहर तिकत आये और एक बार फिर भीड़ जमा हो गई। भीड़ में चारमन का सिर अच्य सबगे ऊंचा दिखाई दे रहा था, वह सदा की भांति घुप था, मानो दोसना जानता ही न हो।

सनिक रतोईधर के पास सबड़ी के ढेर पर बठ गया और बापते हाथों से अचने जूते उतारने लगा। उसने उन चियझे को निचोटा जो उसके पावों में लिपटे थे। लेकिन वे सूखे थे जबकि बेंतर्तौबी से बिलरें हुए उसके बालों से पानी टपटप गिर रहा था। यह बेल लोगो ने फिर हसना गूह कर दिया।

“कुछ भी हो,” सनिक ने जोर लगाकर पतली आवाज में कहा, “छोकरे को मैं जीता न छोड़ूंगा।”

स्मूरी मेरा क्या थामे था। उसने कप्तान के सहायक से कुछ कहा। मल्लाहो ने लोगो को तितर बितर कर दिया। जब सब चले गये तो स्मूरी ने सनिक से पूछा

“बोलो, तुम्हारा अच क्या किया जाये?”

सनिक कुछ नहीं बोला। जानबरो सी आलो से बस मेरी और बेलता भर रहा। उसका समूचा शरीर अजीब ढंग से बल खा रहा था।

“अट-गन, बातों के शेर!” स्मूरी ने कहा।

“ठेंगा ले ले। यहां कोई फीज बीज नहीं है।” सनिक ने जवाब दिया।

आवर्ची अचकचा गया। उसके फूले हुए गाल पिचक गये, उसने धूका और मुझे अचने साथ घसीटता हुआ ले चला। मुझे भी जैसे काठ मार गया। बार-बार मुडकर मैं सनिक की ओर देखता। स्मूरी बुदबुशापा

“बडा डीठ है। ऐसे आदमो के मुह कौन लगे?”

तभी सेगेंई लपककर हमारे पास आया और न जाने क्यों फुसफुसाकर बोला

“वह तो अपना गला काटने पर उताह है!”

“क्या?” स्मूरी के मुह से निकला और वह तेजी से उल्टे पाव मुड चला।

हाथ में बड़ा सा चाकू लिए जो मुंगियों की गरदन हलाल करने तथा इधर के लिए छिपटिया घोरने के काम आता था, सनिक उस केविन के दरवाजे पर खड़ा था जिसमें घेटर रहते थे। चाकू कूँठित था, उसमें धारी जैसे दाते बन गये थे। केविन के सामने लोग फिर जमा हो गये थे, और बालों से पानी छूते इस टुइया से आदमी को देख रहे थे जो उनके लिए एक अच्छा खासा तमाशा बन गया था। ऊपर को उठी नाक वाला उसका चेहरा जली की भाँति काप रहा था, उसका मुँह जैसे धुले का झुला रह गया था, उसके होठों में बल पड़ रहे थे और वह बार-बार बुदबुदा रहा था

“जालिम ह-स्था रे ”

मैं उछलकर किसी चीज पर खड़ा हो गया और उच्चकर लोगों के चेहरों को देखने लगा। खिसखिलाकर वे हस रहे थे, और एक-दूसरे को कोहनियाते हुए कह रहे थे

“भरे देखो, उसे देखो ”

अपने बच्चों जैसे दुबले पतले हाथ से जब उसने पतलून के भीतर अपनी कमीज खोसनी शुरू की तो मेरे पास ही खड़े हुए एक अच्छे खासे डीलडौल वाले आदमी ने उसास भरते हुए कहा

“ठीक है। गरदन चाहे साफ हो जाये पर पतलून नहीं खिसकी चाहिए ”

लोग और भी जोरो से हसने लगे। सभी समझते थे कि यह मरबूब जान नहीं दे सकता। मेरा भी ऐसा ही खयाल था। लेकिन स्मूरी ने, उछलती सी नज़र से देखने के बाद, लोगों को अपने पेट से धकियाते और इधर उधर करते हुए उन्हें डाटना शुरू किया

“हट जा यहा से, बेवकूफ कहीं का!”

समूह को एक व्यक्ति की भाँति “बेवकूफ कहीं का” कहने की उसे आदत थी। चाहे कितने ही लोग क्यों न जमा हों, वह उनके पास जाता और उन सबको एकवचन में कहता

“दफा हो जा, बेवकूफ कहीं का!”

उसे ऐसा करते देख हसी छूटती, लेकिन यह भी सच था कि आज, सुबह से ही, मानो सभी लोगों ने एक बहुत बड़े “बेवकूफ” का रूप धारण कर लिया था।

लोगो की तितर बितर करने के बाद वह सनिक के पास गया और अपना हाथ फलाते हुए बोला

“इधर दे चावू ”

“साथ बराबर है ” सनिक ने कहा और चावू की धार स्मूरी की ओर कर दी। स्मूरी ने चावू मुझे धमा दिया और सनिक को बेबिन में धकेला

“लेटकर सो जाओ! आखिर तुम्हें यह क्या सूझा?”

सनिक सोने के तल्ले पर चुपचाप बठ गया।

“यह तुम्हारे लिए कुछ खाना और थोड़ी सी बोदका ले आयेगा। बोदका पीते हो?”

“थोड़ी सी पी लेता हूँ ”

“और देखो इसे हाथ न लगाना। तुम्हारी हसी उठानेवाला मैं यह नहीं था। मैं कहता हूँ यह नहीं था ”

सनिक ने धीमे स्वर में पूछा

“ये क्या मेरी जान के पीछे पडे हैं?”

कुछ क्षण तक स्मूरी चुप रहा। अन्त में बोला

“मुझे क्या मालूम?”

मेरे साथ रसोईघर की ओर जाते हुए स्मूरी बुदबुवाया

“ऊह, मरे को मारे शाह मदार! देखा तुमने? भाई मेरे, लोगो का बस चले तो तुम्हारी जान ही निकाल ले बस, खटमलो की भांति चिपक जाते हैं, और बस, छोड़ने का नाम नहीं खटमल तो क्या, उनसे भी बुरे ”

सनिक के लिए जब मैं कुछ रोटी, मांस और बोदका लेकर उसके पास पहुँचा तो वह तल्ले पर बठा स्त्रियो की भांति सिसक सिसककर रो रहा था और उसका बदन आगे पीछे हिल रहा था। रफाबी मेज पर रखते हुए मैंने कहा

“यह सो, खामो ”

“बरवाजा बंद कर दो।”

“अपेरा हो जायेगा।”

“बंद कर दो, कहीं ये फिर न आ जायें ”

मैं बाहर निकल आया। सनिक मुझे खटपटा लगा। उसके प्रति मेरे

हृदय मे सहानुभूति या दया का कोई भाव पदा नहीं हुआ। और मे बेचन हो उठा—नानी ने सदा मुझे सीख दी थी

“लोगो पर तरस खाना चाहिए, सभी अभागो हैं, मुसीबतो के मारे =

“खाना दे आये?” वापस लौटने पर भावचों ने पूछा। “अब उसका क्या हाल है?”

“रो रहा है।”

“निरा पाजामा है यह भी कोई सनिक है क्या?”

“मुझे तो उसपर जरा भी तरस नहीं आया।”

“क्या? क्या कहा सुमने?”

“लोगो के साथ दया का बरताव करना चाहिए ”

स्मूरी ने मेरा हाथ पकडकर मुझे अपने निकट खींच लिया।

“किसी पर जबबस्ती दया कैसे दिखाओगे, और झूठ बोलना तो और भी घुरा है। समझे?” उसने रोबोले स्वर मे कहा। “इस तरह मोम बनने से काम नहीं चलेगा, अपने काम मे मस्त रहा करो ”

उसने मुझे अपने से दूर धकेल दिया। फिर उदास स्वर मे बोला

“नहीं, यह जगह तुम्हारे लिए नहीं। तुम्हे कहीं और होना चाहिए।

सुम महा बेकार आ फसे। लो, सिगरेट पी लो ”

यात्रियो के बरताव ने मेरे हृदय मे गहरी उयल पुथल मचा दी। जिस बुरे ढग से उन्होंने सनिक को चिढाया और स्मूरी के उसका काम पकडकर उठाने पर जिस कुत्सित ढग से खिलखिलाकर वे हसे, यह सब मुझे अकथनीय रूप से अपमानजनक तथा अवसावक लगा। इस घुणित और घपनीय स्थिति मे भी कोई हसने की बात थी? उसमे उहे ऐसा क्या दिखाई दिया जो वे हसी की अपनी इस बाढ़ को रोक नहीं सके?”

पहले की भांति वे अब फिर डेक पर सायबान के नीचे बंटे या लेटे हुए थे। उनके जबडे चल रहे थे, वे पी और चबा रहे थे, ताश खेल रहे थे, शांत और सुघट ढग से घाते कर रहे थे, और नदी का नजारा देख रहे थे। उन्हें देखकर कोई सोच भी नहीं सकता था कि यही वे लोग थे जो एक घटा पहले एकदम बेलगाम होकर उछल उछलकर सोटिया बजा रहे थे। सदा की भांति वे अब फिर निश्चल और काहिल हो गए थे। मच्छरो या सूरज की रोशनी मे चक्कर लगाते घूल के कणा की भांति

सुबह से सांझ तक वे जहाज में टल्लानवीसी करते, इधर से उधर गोल गदिश में घूमते। यह देखो, दसैर लोग उतरने के तहते के पास धक्का मुक्की करते सलीब का चिह्न बनाते जहाज से घाट पर उतर रहे हैं और घाट से उहाँ जैसे लोग सीधे उनपर चढ़े आ रहे हैं, ये भी उहाँ जैसे कपड़े पहने हैं और उहाँ की भाँति पोटले पोटलियों के योत्र से झुके हैं-

लोगों की इस निरंतर आवा-जाही से जहाज के जीवन में कोई अन्तर न पड़ता। नये यात्री भी उहाँ चीखों के धारे में बातें करते जिनके बारे में दूसरे कर चुके थे समीन और काम के धारे में, छुड़ा और स्त्रियों के धारे में। यहाँ तक कि उनके शब्दों के प्रयोग में भी कोई भिन्नता न होती

“भगवान का हुक्म है कि इंसान सब कुछ सहता जाये, सो सहता जा, बदे। और कर ही क्या सकता है, आदमी की किस्मत ही ऐसी है”

इस तरह की बातों से मुझे बड़ी ऊँच मालूम होती, मन मुमलाने लगता। गदगी से मेरा बर था। न ही मैं यह सहन करना चाहता था कि मेरे साथ कोई दुखदामी, बेरहमी और घर इन्साफी का बरताव करे। मुझे पक्का विश्वास था, मैं महसूस करता था कि मैं इस तरह के बरताव के योग्य नहीं हूँ। सनिक नही ऐसे बरताव के योग्य था। शायद वह छुड़ अटपटा बीलना चाहता था

भक्तिम जसे गम्भीर और श्यालु आदमी को तो उहाने जहाज से निफाल दिया जब कि कृत्सित सेगैई की नौकरी पर कोई आच नहीं आई। ये सारी बातें ठीक नहीं हैं। और क्या ये लोग जो किसी को भी सहज ही इस हद तक सता सकते हैं कि वह पागल हो जाये, मल्लाहा के भोडे से भोडे आवेशने को बुम दबाकर मानते हैं और उनकी गदी से गदी गालियों और डाट-डपट को गले के नीचे माँही उतार लेते ह ?

“ऐ, ब्राडे पर जमघट न लगाओ!” सुदर लेकिन क्रोध भरी आँखों को सिक्कीडते हुए मल्लाहों का मुखिया चिल्लाता। “जहाज सारा इधर झुक गया है! हट जाओ यहाँ से, शतान के पिल्लो!”

शतान के पिल्ले भाग के डेक के दूसरे बाजू पहुँच गये, और वहाँ से फिर उहाँ भेडा के रवड का भाँति खदडा जाता

“जाओ, मुझे”

उमस भरी रातों में दिन के तपे हुए टीन के साथबान तले टिकना दूभर हो जाता। यात्री तिलचट्टों की भाँति डेक पर बिलर जाते और जहाँ

भी जी करता, पड़े रहते। हर घाट पर मल्लाह ठोकर और घुसे मारकर उह जगाते।

“ऐ, रास्ता छोड़ो! भागो अपनी अपनी जगहो पर!”

वे चौंककर उठ बठते और उर्नींदी आखो से चाहे जिस दिशा मे चल देते।

मल्लाहो और यात्रियो मे केवल इतना ही अंतर था कि दोनो की वेसाभूषा भिन्न थी। फिर भी वे यात्रियो को पुलिस वालो की भाति डाटते फटकारते और इधर से उधर खदेडते।

लोगो के बारे में सष से मुख्य बात यह है कि वे सकोची, डब्बू और सिर पर जी आ पडे उसे उदास भाव से सहन करनेवाले होते है और वे उस समय बहुत ही अजीब तथा भयानक मालूम होते हैं जब हुषमबरदारी का उनका माथ एकाएक टूट जाता है और बबर उछ खलता की एक ऐसी बाढ मे वे डूबने उतरने लगते हैं जो क्रूर, अथहीन और प्राय उदासी भरी होती है। मुझे ऐसा मालूम होता मानो इन लोगो को यह भी पता नहीं है कि उहे कहा ले जाया जा रहा है और इस बात का भी उनके लिए कोई विशेष महत्व नहीं है कि जहाज उहे कहा उतारता है। जहा कहीं भी जहाज उहे उतारेगा, तट पर वे थोडी बेर ही रहेगे और फिर इस या किसी दूसरे जहाज पर सवार हो जायेंगे और वह उहे अथ किसी जगह ले जायेगा। वे सब के सब कुछ भटके हुए से, घर द्वारहीन थे, सारी पृथ्वी उनके लिए पराई थी और वे सभी पागलपन की हद तक बुझविल थे।

एक दिन, आधी रात घीते मशीन मे किसी चीज के टूटने का बडे जोर से धमाका हुआ मानो किसी ने तोप दागी हो। देखते देखते समचा डेक भाप के सपेड बादल से घिर गया जो इजन घर से निकल रही थी और सभी दरारो मे दिखाई दे रही थी। बोर्ड अदृश्य कानफोड आवाज मे जोर से चिल्ला रहा था

“गाब्रीलो! लाल सीसा, नमदा लाग्यो!”

मैं इजन घर की बगल मे उसी मेज पर सोता था जहा मैं तश्तरिया साफ करता था। धमाके की आवाज और मेज के हिलने से जब मेरी आंख खुली तब डेक पर सनाटा छाया था, मशीन भाप से सनसना रही थी और हथौडियां तेजी से खटा खट कर रही थीं। लेकिन अगले ही क्षण डेक पर

यागियों की भयानक चीखपुकार ने आसमान तिर पर उठा लिया और तत्क्षण बड़ा भयानक सा लगने लगा।

धुंध की सफेद चादर की थोंपकर, जो अब तेजी से झोनी पड़नी जा रही थी, बिल्वरे हुए बालों वाली स्त्रियाँ और मछलियों जसी गोल आँखों वाले पुरख घबराहट में इधर उधर भाग रहे थे, एक-दूसरे को धक्का देकर गिरा रहे थे। सब के सब अपने पोटले-पोटलियों, धँलो और सूटकेसों से जूझ रहे थे, ठोकरें खा रहे थे और भगवान तथा सन्त निचोलाई से करियाव कर रहे थे तथा एक-दूसरे को भार रहे थे। दृश्य भयानक था, और साथ ही दिलचस्प भी। लोगों की हरकतों को देखने और यह जानने के लिए कि ये क्या करते हैं, मैं भी उनके साथ-साथ चकराभिन्नी बना हुआ था।

जहाज पर रात में फली बेचनी का यह मेरा पहला अनुभव था और फौरन ही ऐसा लगने लगा कि यह सारा धक्कड़ चलती से हुआ है। जहाज उसी तेजी से चल रहा था। दाहिने तट पर, बहुत ही नजदीक, घसियारा के अलाव जल रहे थे। उजली रात थी। धुन्ने का ऊँचा भरा-पूरा घाव चादनी बरसा रहा था।

लेकिन डेक पर लोगो की घबराहट बढ़ती जा रही थी। पहले दर्जे के यानी भी निकल आये। कोई छलांग मारकर पानी में कूब गया। कुछ श्रीरो ने भी उसका साथ दिया। दो किसान और एक पुरोहित ने लपककर लकड़ी के कुंदे उठाये और उनसे डेक पर पेचा से बन्नी बच्चों में से एक उखाड डाली। दमूसे से मुगियों से भरा बड़ा सा पिजरा पानी में फँका गया। डेक के बीचबीच, कप्तान के मच की सीढियों के पास एक किसान घुटनों के बल खडा होकर सामने में भागते हुए लोगो के सम्मुख झुक झुककर भेंडिये की तरह चीख रहा था

“ओ खुदा के सच्चे बंदो, मैं पापी हूँ।”

एक मोटा साहब जो नगे बदन, केवल पतलून पहने ही बाहर निकल आया था, छाती फूट फूटकर चितला रहा था

“डोगी, शतान के बच्चो, डामो!”

मल्लाह भीड में झपटकर कभी एक की गरदन नापते, कभी किसी दूसरे के तिर पर घूसा लगाते और ठोकरे मारकर उन्हें एक अरार पटक देते। स्मूरी भी रात के कपडा पर कोट डाले भारी धमक के साथ यहा

से बहा जा रहा था और गरजती हुई आवाज में हरेक को डाट रहा था

“कुछ तो शम करो! अपने दिमाग का इतना दिवाला न निकालो! देखते नहीं, जहाज रुक गया है, रुका हुआ है। दो हाथ पर ही नदी का किनारा है। और वह देखो, उधर दो डोंगिया दिखाई दे रही हैं, आदमियों से लदीं। ये वही बेवकूफ हैं जो पानी में बूद पड़े थे। घसियारो ने सभी को बाहर निकाल लिया है।”

जहां तक तीसरे दर्जे के यात्रियों का संबंध है, उनका खोपड़ियों पर वह ऊपर से नीचे यों घूसा भारता था कि वे डेक पर बोरो की भांति बह जाते थे।

हगामा अभी शांत होने भी न पाया था कि लकड़क कपड़े पहने एक स्त्री चम्मच हिलाते हुए क्षपटकर स्मूरी के पास पहुंची और उसके मुंह के सामने चम्मच हिलाते हुए चिल्लाकर बोली

“यह क्या बवतमीजी है?”

भीगे हुए साहब ने उसे रोकते हुए और अपनी भूछों को चूसते हुए मुसलाकर कहा

“छोडो इस भूसल चद को ”

स्मूरी ने अपने कंधे बिचकाये और धबराकर झालें मिचमिचाते हुए मुससे पूछा

“यह बात क्या है भला? क्या मेरे सिर पडी है यह? मैं तो इसे पहली बार देख रहा हूँ।”

एक किसान जो नाक से बहते हुए खून को सुडसुने का प्रयत्न कर रहा था, चिल्लाया

“लोग क्या हैं, पूरे डाकू हैं—डाकू!”

पूरी गमियों में दो बार जहाज पर ऐसी भगदड मची थी और दोनों ही बार सचमुच के किसी छतरे ने नहीं, बल्कि छतरे के डर ने लोगों को चौपला दिया था। तीसरी बार यात्रियों ने दो चोरो को पकड़ा — उनमें से एक तीर्थयात्री के भेय में था और मत्ताहो से टिपकर यात्रियों ने पूरे एक घंटे तक उनका खून मरम्मत की। अंत में मत्ताहो ने उनसे चगुल से चोरा को छुड़ाया तो लोग उन पर भी क्षपटे। चिल्लाकर बोले

“घोर घोर भीसेरे भाई!”

“तुम खुद घोर हो, और इसीलिए उह भी छूट देते हो ”

चोरो को इस हद तक पीटा गया था कि वे बेहोश हो गए थे। और जब झगले घाट पर उहे पुलिस के हवाले किया गया, वे अपने पाव पर खड़े भी नहीं हो सकते थे

एक के बाद एक इस तरह की अनेक घटनाएँ घटीं, इस हद तक हृदय को शोचनेवाली कि दिमाग भना जाता और समझ में न आता कि लोग सचमुच में नेक हैं या बुष्ट, दबू हैं या जानमार? आखिर क्या चीज है यह जो उहे इतनी क्रूरता और हवस की हद तक बुष्ट और इसी के साथ-साथ धमनाक हद तक दबू तथा बीन-हीन बनाती है?

स्मूरी से जब कभी मैं इस बारे में पूछता तो वह सिगरेट से इतना धुआँ छोड़ता कि उसका सारा मुह ढक जाता और झुमलाकर जवाब देता

“आखिर तुमसे मतलब? लोग जसे होते हैं, वसे होते हैं कोई धतुर होता है, और कोई एकदम बुद्ध। उनकी चिन्ता छोड़, और पुस्तक में मन लगा। उनमें तुम्हें सभी सवालों के जवाब मिल जायेंगे, अगर वे ठीक ढग की हईं ”

धार्मिक पुस्तकें और सतों की जीवनिया उसे पसद नहीं थीं। उनका शिक्र भ्राने पर कहता

“वे तो पावरिया के लिए हैं, या फिर पावरियों के छोकरो के लिए ”

उसे लूझ करने के लिए मैंने एक पुस्तक भेंट करने का निश्चय किया। कजान पहुचने पर मैंने जहास घाट पर पाच कोपेक में एक पुस्तक खरीदी “किस्ता उस सिपाही का, जिसने जान बचायी प्योर महान की”। लेकिन उस समय वह नशे में धूर था और मुस्से में था और मुझे यह साहस नहीं हुआ कि मैं उसे अपनी भेंट दू, तो पहले खुद यह पुस्तक मैंने पढ डाली। मुझे वह बेहद पसद आई। हर बात थोडे में, बहुत ही साफ सुधरे, सीधे सादे और इतने दिलचस्प ढग से कही गई थी कि मैं मुग्ध हो गया। मुझे पक्का विश्वास था कि वह भी उसे खूब पसद करेगा।

लेकिन जब मैंने उसे पुस्तक दी, तो हुआ यह कि उसने, चुपचाप, पुस्तक को हथेलिया के बीच दबोचकर उसकी गेंद सी बनायी और उसे पानी में फेंक दिया।

“वह गई तेरी पुस्तक, मूल कहीं का!” उसने झल्लाकर कहा। “मे तुझे शिकारी कुत्ते की तरह साथ रहा हू और तू जंगली चिड़िया ही पाना चाहता है!”

फस पर उसने अपना पाव पटका और मुझपर चित्लाया

“यह क्या किताब है? मैं सारी बक्वास पढ चुका हू। इसमें क्या लिखा है—सच लिखा है? बहो!”

“मुझे नहीं मालूम।”

“लेकिन मैं जानता हू। अगर आदमी का सिर काट दिया जाये तो वह सीढ़ी से नीचे लुढ़क आयेगा और दूसरे लोग सूखी घास के अम्बार पर नहीं चढ़ेंगे—सचिक इतने वेबकूफ नहीं होते। वे सूखी घास के अम्बार में प्राण लगा देते जिससे सारा झसट ही मिट जाता। समझे?”

“हा।”

“देखा, यह बात है! और तुम्हारा वह प्योत्र जार—मैं जानता हू कि उसके साथ कभी उस तरह की कोई घटना नहीं घटी। बस, अब बफा हो जा यहा से।”

मुझे लगा कि बाबर्ची की बात सही है, लेकिन पुस्तक के साथ मेरा मन फिर भी उलझा रहा। मैंने उसे दुबारा खरीवा और एक बार फिर पढा और इस बार यह जानकर खुद मुझे भी अचरज हुआ कि पुस्तक सचमुच मे दो कौड़ी की थी। मुझे अपने ऊपर बडी शम आयी, और स्मूरी को मैं और भी ज्यादा आदर तथा भरोसे की नजर से देखने लगा और वह खुद, कारण चाहे जो भी हो, बहुधा मुझसे मुसलाहट के साथ कहता

“अह, तुम्हें तो लिखना पढना चाहिए। यह जगह तुम्हारे लिए ठीक नहीं।”

मैं भी कुछ ऐसा ही अनुभव करता कि यह जगह मेरे लिए नहीं है। सेगेंड मेरे साथ बेहद बुरा बरताव करता। मेरी मेज पर से वह चाय के बतन उडा लेता और इस तरह यात्रियो से मिलनेवाले पसे को बारमेन को सौंपने के बजाय अपने पास रख लेता। मैं जानता था कि इस तरह को कमाई को चोरी कहा जाता हे। स्मरी भी एक से अधिक बार मुझे चेता चुका था

“जरा चौकस रहना। ऐसा न हो कि बेटर तुम्हारी भेज से चाप के बतनों का सफाया कर दे।”

इसी तरह की भेरे लिए और भी कितनी ही बुरी बातें थीं। अक्सर मन में होता कि अगले ही घाट पर जहाज छोड़कर जगलो की राह लूँ। लेकिन स्मूरी की वजह से ऐसा न कर पाता। उसकी घनिष्ठता बराबर बढ़ती जा रही थी। इसने अलावा जहाज की निरंतर गति का भी कुछ कम आक्षेप नहीं था। घाटों पर जब भी जहाज रुकता, मुझे बड़ा बरा मालूम होता और किसी ऐसी घटना या चमत्कार की मैं प्रतीक्षा करता जिसकी बदौलत, पलक झपकते, कामा नदी से बेलगाया और उससे भी लंबे आगे ब्याल्का या घोल्गा नदी की मैं सँर करूँ, और नये तटों, नये नगरों तथा नये लोगों को देखने का मुझे अवसर मिले।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। भेरे जहाजी जीवन का एकाएक और शमनाक ढग से अंत हो गया। एक सात, उस समय जब कि हम कजान से नीजनी की ओर यात्रा कर रहे थे, बारमन ने मुझे अपने पास बुलाया। जब मैं उसके सामने हाज़िर हुआ तो उसने दरवाजा बंद कर दिया और कालीन चढ़े एक स्टूल पर उदास मुद्रा में बैठे स्मूरी से उसने कहा

“लो, आ गया।”

“क्या तुम सेगेंई को चम्मच और बूसरी चीजें देते हो?” स्मूरी ने हल्की आवाज़ में पूछा।

“मेरी आल बचाकर इन चीजों को वह खुद अपने आप उठा लेता है।”

“देखता नहीं, पर पता है इसे।” बारमन ने धीमे से कहा।

स्मूरी का मुट्ठी-बधा हाथ धम से घुटने पर गिरा और फिर वह उसे सहलाने लगा।

“जरा ठहरो। ऐसी कोई जल्दी नहीं है,” उसने कहा और त्ककर किसी सोच में पड़ गया।

मैंने बारमन की ओर देखा और उसने मेरी ओर, लेकिन मुझे ऐसा लगा माना उसके चम्मे के पीछे आखें है ही नहीं।

वह निशब्द जीवन बिताता था, चलते समय जरा भी आवाज़ नहीं करता था और धीमे स्वरों में बोलता था। कभी-कभी उसकी रंग उड़ी

दी और खोपली आखें किसी कोने में झलकतीं और फिर तुरत विलीन जातीं। सोने से पहले एक लम्बे असें तक घुटनों के बल वह देव प्रतिमा सामने बंठा रहता जिसके सामने, दिन हो चाहे रात, चौबीसों घंटे, दीया जलता था। दरवाजे में बने पान के इक्के से छेद में से उसे जाता था, लेकिन उसे प्रायना करते में कभी देख नहीं पाया—घुटनों के बल बंठा हुआ वह केवल देव प्रतिमा और दीये की ओर एकटक देखता, हास लेता और अपनी दाढ़ी सहलाता रहता था।

थोड़ी देर रुककर स्मूरी ने फिर पूछा

“क्या सेगई ने तुझे कभी पसे बिये?”

“नहीं।”

“कभी भी नहीं?”

“नहीं, कभी भी नहीं।”

“यह झूठ नहीं बोलेंगा,” स्मूरी ने बारमन से कहा।

“इससे कोई फक नहीं पडता,” बारमन ने धीमे स्वर में जवाब दिया।

“बल अब!” मेरी मेज के पास आते और तिर पर हल्के से चपत मारते हुए स्मूरी ने चिल्लाकर कहा “चुगद! और चुगद तो मैं भी हूँ तेरे बारे में चौकस नहीं रहा ”

नीजनी ने बारमन ने मेरा हिसाब चुकता कर दिया। मुझे करीब आठ रुपए मिले। यह पहला मौका था जब मुझे अपनी कमाई की इतनी बड़ी राशि मिली थी।

विदा के समय स्मूरी उदास स्वर में बोला

“आगे अपनी आखें खुली रखियो, समझा? यह नहीं कि मुह बाये पकड़ा पकड़ रहे हैं ”

फाव के रंग बिरंगे मोती जडा तम्बाकू रखने का एक चमकदार बटुवा मुझे मेरे हाथ में थमा दिया।

“यह ले, यह बहुत बढिया चीज है। मेरी मुह-बाली बेटो ने यह मेरे बनावया था अच्छा अब जा। पुस्तके पढना, उनसे बडा साथी और कोई नहीं मिलेगा।”

उसने मुझे बाहों के नीचे से पकड़ा, हवा में उठाकर मेरा मुह और फिर सभालकर मजबूती से मुझे घाट पर खडा कर दिया। मुझे

अपने पर भी दुःख हुआ, और उसपर भी। और जब वह, एकदम एकाकी, अपने भारी भरकम, हिडोले से झूलते शरीर को लिए घाट-भबदूरीं को धकियाता हुआ जहाज की ओर लौट चला तो मैं बड़ी मुश्किल से अपने आसुओं को रोक पाया

उस जैसे न जाने कितने लोग, — इतने ही भले, इतने ही प्रकल और जीवन से इतने ही छिटके हुए, — भागें भी मेरे जीवन में भाये

७

नानी और नाना अब फिर नगर में आ बसे थे। इस बार जब मैं उनके पास पहुँचा तो मेरा मन गुस्से से उमड़ धुमड़ रहा था और हर कित्तो से लड़ने की जी चाहता था। मेरा हृदय भारी बोझ से दबा जा रहा था — आखिर क्यों और किस वित्ते पर मुझे धोर ठहराया गया था?

नानी ने मुझे बड़े प्यार से अपनाया, और तुरत समोवार गरम करने धली गई। नाना अपनी आदत के अनुसार चिगारियां छोड़ने से न धूरे

“क्यो, कितना सोना बटोर लाया?”

खिडकी के पास घंठते हुए मैंने कहा

“जो भी बटोरा, सब मेरी मित्कियत है।”

बड़ी गभीरता के साथ मैंने जब मे हाथ डाला, और तिगरेट का पकेट निकालकर रोब के साथ धुआ उठाने लगा।

“ओहो,” मेरी प्रत्येक हरकत का मुआमना करते हुए नाना ने कहा, “यह बातें हैं! यह शैतान की बूढ़ी भी पीने लगा? बड़ी जल्दी लगी थी?”

“मुझे तो भेंट में तम्बाकू का बटुवा भी मिला है।” मैंने शैली बधारी।

“तम्बाकू का बटुवा!” नाना धोल उठे। “तू क्या मुझे चिगा रहा है?”

वह मेरी धोर झपटे। उनके पतले, मखबूत हाथ भागे बड़े हुए थे और हरी आँखें चिगारियां छोड़ रही थीं। मैंने उछलकर उनके पेट में तिर से टक्कर मारी। झुका वहीं पग पर बठ गया और सनाटे से पूरा उन भारी शर्शों में, अघेरी खोह की भाँति हक्का-बक्का सा अपना मुह भाये,

अचरज में आलें मिचमिचाकर मेरी ओर देखता रह गया। फिर शान्त भाव के साथ पूछा

“तूने मुझे, अपने नाना को धकेला मुझे अपनी मा के सगे बाप को?”

“मेरी घमडी उधेड़ने में तुम्हीं कौन कसर छोड़ते थे,” यह समझकर कि सचमुच मुझसे एक धिनौनी हरकत हो गयी है मैं जुदबुदाया।

नाना, अपना सूखा हल्का फुलका बदन लिए उठ खड़े हुए और मेरी बगल में आकर बठ गए। मेरे हाथ से उन्होंने तपाक से सिगरेट छीन ली और उसे लिडकी से बाहर पेंक भय से कापती आवाज में बोले

“तू भी निरा काठ का उल्लू है! इस तरह की हरकत के लिए भगवान तुझे ताजिदगी माफ नहीं करेंगे!” फिर वह नानी की ओर मुड़े

“बेला री अम्मा, और किसोने भी नहीं इसने मुझे मारा, हा, इसीने मुझे मारा! यकौन न हो तो खुद पूछ देखो!”

पूछना-ताछना तो दूर, नानी सीधी मेरे पास आई और बाल पकड़कर मुझे झसोड़ने लगी।

“इसकी यही सजा है,” नानी ने कहा और बालों को झटका सा देते हुए बोहराया, “यही सजा है ”

नानी की इस सजा में, और खास तौर से नाना की घणापूण हसी में, मेरे शरीर को घोट तो नहीं पहुंचाई, लेकिन मेरे हृदय को बुरी तरह घायल कर दिया। नाना कुर्सी पर बैठे उचक रहे थे और घुटनों पर हाथ मारते हुए हसते हसते कीण की तरह काका कर रहे थे

“ठीक, बहुत ठीक ”

मानों के चगुल से अपने को छुड़ाकर मैं डपोडी में भागा, और वहा एक कोने में पडा रहा स्तिन और सूना सूना सा। कानों में समोबार में पानी के खलबलाने की आवाज आ रही थी।

नानी आई और मेरे ऊपर झुकते हुए इतने धीमे स्वर में फुसफुसाकर बोली कि उसके शब्द बडी मुश्किल से सुनाई देते थे

“बुरा न मानना, मैं तुम्हे सचमुच की सजा थोड़े ही दे रही थी। इसके सिवा मैं और करती भी क्या? तुम्हारे नाना तो बूढ़े आदमी हैं, और उनका तुम्हे ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने क्या कम किस्मत की मार खाई है? सारी हड्डिया टूटी हुई हैं, और उनका हृदय दुखो से तबालब भरा

है। उन्हे श्रीन छोटे पहचाना क्या अच्छी बात है? तुम अब नहे-मुने तो ही नहीं, खुद सारी बातें समझ सकते हो और तुम्हें समझना चाहिए, श्र्ल्योशा, नाना भी बस बच्चों की हातत में हैं ”

नानी के शब्दों ने भरहम का काम किया। ऐसा मालूम हुआ मानो मुहानी बयार का शोका हृदय को सहलाता हुआ निकल गया हो। नानी के शब्दों की ध्यार भरी सरसराहट से मेरा हृदय हल्का टा गया। सारी बुलन जानी रहो, साज का मैं अनुभव किया और मैं कसकर नानी से लिपट गया। नानी ने मुझे, और मैंने नानी को घूम लिया।

“जाओ, नाना के पास जाओ। डरो नहीं, सब ठीक हो जाएगा। केवल नाना के सामने एकाएक सिगरेट निकालकर अब फिर न पीने लगना। अभी वह तुम्हे सिगरेट पीता देखने के आवी नहीं हैं। इसके लिए कुछ तो समय चाहिए न ? ”

जब मैंने कमरे में पाव रखा और नाना पर नजर डाली तो मेरे लिए हसी रोकना मुश्किल हो गया। इस समय वह, सचमुच, बच्चों की भांति प्रमन थे। चेहरा खिला हुआ था, पाव पटक रहे थे और ललीहे वालों वाले अपने पजों से मेज पर धमाधम तबला सा बजा रहे थे।

“बोल भरखने बकरे की शौलाद, फिर आ गया, -टक्कर मारने का शौक क्या अभी भी पूरा नहीं हुआ? डाकू कहीं का! भाजिर है तो अपने बाप का ही घेडा! मुह उठाया और तीघे घर में चले आए, न सलीब का चिह्न बनाया, न किसी से दुष्मा-सलाम की, और एक टुकड़ी सिगरेट मुह में दबाकर धुमा उडाना शुरू कर दिया! चाह दे, टक्किल नेपीलियन ! ”

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। उनके शब्द चुक गए और यह घरकर घुप हो गये। लेकिन चाय के समय उन्होंने फिर मुझे लक्कर पिलाना शुरू किया

“बिना लगाम के घोडा और बिना भगवान के डर का आवामी, दोनों एक से हैं। भगवान के सिया और कौन हमारा भीत हो सकता है? इसान का सब से बडा दुदमन है इसान ! ”

नाना के केवल इन शब्दों की सचाई ने ता मेरे हृदय को घुमा कि इसान ही इसान का दुदमन है। इसदे अलावा नाना ने जो कुछ कहा, उतना मेरे हृदय पर कोई असर नहीं हुआ।

“देख, अपनी तू अपनी मौसी माझ्योना के महा लौट जा, और वहाँ काम कर। इसके बाद चाहे तो बसन्त मे फिर किसी जहाज मे नौकरी कर लेना। लेकिन जाओ नर तू जन्हीं के महा रहियो, और उन्हें यह न बनाइयो कि बसन्त मे तू गोल हो जायेगा ”

“लेकिन यह तो घोषा देना होगा,” नानी ने कहा जो अभी कुछ देर पहले सदा के नाम पर मुझे झूठमूठ हिला-बसोडकर छुद नाना को घोला दे चुकी थी।

“घोला दिये बिना जीया ही नहीं जा सकता,” नाना अपनी बात पर जोर दे रहे थे, “जरा बता तो, घोले के बिना कौन रहता है ?”

उसी क्षण जब नाना धमप्रथ का पाठ करने बैठे तो मैं और नानी फादर से बाहर निकल आए और खेता की ओर चल दिए। छोटा सा वो लिडकियाँ वाला यह घर जिसमे नाना अब रहते थे, नगर के एकदम छोर पर, उस कनालाया गली के पिछवाड़े मे था, जहा किसी जमाने मे उनका निजी मकान था।

“देखो न, घूम फिरकर हम भी अब कहां आ बसे हैं।” नानी ने हसते हुए कहा। “तुम्हारे नाना को कहीं शांति नहीं मिलती, तो वह बराबर घर बदलते रहते हैं। मुझे तो यह घर अच्छा लगता है, लेकिन नाना को यहां भी चन नहीं है।”

हमारे सामने दो-ढाई मील लम्बा चौडा, सूखे नालो से कटा फटा मवान फला था। उसके अंत मे कजान जाने वाली सड़क थी जिसके किनारे भोज घूस लड़े थे। सूखे नाला मे से झाडिया की नगी-बूची टहनियाँ निकली हुई थीं, साम के सूरज की ठडी पडती हुई लाली मे ये खून का बाग लगे हृष्टरा की भांति मालूम होती थीं। हल्की हवा के शोबे झाडियो को सरसरा रहे थे। पास वाले नाले के उस पार युवक-युवतियो के जोड़े टहल रहे थे और उनको छाया आकृतिया भी, झाडियो की भांति, हवा मे हिल रही थीं। दूर दाहिने छोर पर पुरातन पयियो के क्रिस्तान की लाल दीवार थी। यह क्रिस्तान “बुधोव्की स्कोत” कहलाता था। बाईं ओर नाले के ऊपर जहा बक्षो का एक काला सा झुरमुट दिखाई देता था, मट्टिगों का क्रिस्तान था। हर चीज पर नहसत सी छाई थी, हर चीज भांगे क्षत विक्षत धरती से चुपचाप चिपटी हुई थी। शहर के छोर पर राङ्गे लोटे-छोट घरो की लिडकिया मानो सहमी हुई नजरों से धूत धडी शङ्क की

शोर ताकती रहतीं जिसपर भूल की मारी मुणिया गत लगाती थीं। देविची मठ के पास से रभाती हुई गायो का एक रेवड गुजर रहा ॥ शोर पास की छावनी से फीजी संगीत की आवाज आ रही थी-बज बज रहे थे।

कोई शराबी, पूरी बेरहमी से एकाडियन बजाते हुए, सडखडात झों से जा रहा था और ठोकरें खाते हुए बुदबुदा रहा था

“तुझे खोज ही लूंगा वहाँ न कहीं ”

सूरज की साल रोशनी में आखें मिचमिचाते हुए नानी बोली, “कित खोज लेगा, बेवकूफ! यहाँ कहीं सडखडाकर गिर पड़ेगा, धीन-धुनिया का कुछ होना नहीं रहेगा और कोई ऐसा सफाया करेगा, तेरा यह एकाडियन तक गायब हो जायेगा जिसे तू अपने हृदय से सटाये है ”

मैं चारो ओर देखता जाता था और नानी को अपने जहाजी जीवन के बारे में बताता भी जाता था। उस जीवन में जा कुछ मैं देख चुका था उससे बाद मुझे अपना मौजूदा वातावरण बहुत ही बोझिल मालूम दे रहा था और मैं उदास था। नानी मेरी बातों की बड़े चाव और ध्यान से सुन रही थी, जैसे ही जैसे कि मैं नानी की बातें सुनना पसंद करता था और जब मैंने स्मूरी का जिक्र किया तो नानी ने अभिभूत होकर सलीब का चिह्न बनाया और बोली

“भला आदमी था, माँ मरियम उसका भला करे। और देख, उसे कभी न भूलना! अपने दिमाग के कोठे में अच्छी चीजों को कसकर बरतना और बुरी चीजों को, -बम, आखें मूदकर टुकरा देना ”

जहाज से निकाले जाने की बात को नानी के सामने खोलकर रखना मुझे बेहद बठिन मालूम हुआ। लेकिन मैंने बात भँचकर अपना जी काट लिया और जैसे भी बना, नानी को सब बता दिया। नानी के हृदय पर उसका वारा भी असर नहीं हुआ। सारी घटना सुनने के बाद उपेक्षा से इतना ही कहा

“तुम अभी छोटे हो। जीना नहीं जानते ”

“सब एक दूसरे से यही कहते हैं कि तुम जीना नहीं जानते,” मैंने कहा, “जिसानो को मैंने ऐसा कहते सुना है, जहाजी लोग भी ऐसा ही कहते थे, और मौसी माथ्योना भी अपने बेटे के सामने यही राग धलापती थी। आखिर जीना सीखने का क्या मतलब है?”

नानी ने अपने होठ भींच लिए और सिर हिलाते हुए जवाब दिया
“यह तो मैं नहीं जानती।”

“नहीं जानती तो फिर इस बात को बार-बार दोहराती क्यों हो?”

“दोहराऊँ क्या नहीं?” नानी ने अविचलित स्वर में जवाब दिया।

“लेकिन तुम्हें बुरा नहीं मानना चाहिए। तुम अभी छोटे हो, इतनी कम उम्र में भला जीवन के रगड़ग तुम कैसे जान सकते हो? सच तो यह है कि जीवन को जानने का दावा कोई भी नहीं कर सकता, केवल घोरों को छोड़कर। अपने नाना ही को देखो—पढ़े लिखे और काफी धनुर हैं, लेकिन सब एकदम धेकार, कोई चीज अब साथ नहीं देती ”

“और तुम—तुम्हारा अपना जीवन कसा रहा?”

“मेरा? अच्छा ही जीवन बिताया मैंने। और बुरा भी। हर तरह का.. ”

हमारे पास से लोग धीरे धीरे गुजर रहे थे, उनकी लम्बी परछाइया उनके पीछे घिसट रही थीं और पावों से उड़ी धूल धुएँ की भाँति उठकर परछाइयों पर छा जाती थी। साम की उदासी और भी धोमिल हो चली थी और खिडकी में से नाना के भुनभुनाने की आवाज आ रही थी

“ओ भगवान, अपने गुस्से का पहाड़ मेरे सीने पर न तोड़। मुझे इतनी तो सजा न दे कि मैं बरदाश्त ही न कर सकूँ ”

नानी मुसकराई।

“भगवान भी इसका रोना झींकना सुनते-सुनते तग आ गया होगा,” उतने कहा। “हर साम इसी तरह हूके भरते हैं, पर किस लिए? बूढ़ा ता हो गया है, जीवन में कोई भी साथ बाकी नहीं रही, फिर भी मिमियाना और रोना झींकना नहीं छूटता! हर साम इसकी आवाज सुनकर भगवान मुस्कराता होगा कि यह लो, बासीलो कागीरिन फिर भुनभुना रहा है चलो अब, सोने का बन्त हो आया...”

मैंने निश्चय किया कि अब गानेवाली चिड़ियों को परड़ने का घघा शुरू किया जाये। मुझे लगा कि इससे अच्छे पसे मिल जायेंगे। मैं चिड़िया को पकड़कर लाऊँगी और नानी उन्हें बानार में बेच आया करेगी। सो मैंने एक जाल, एक फंदा, सासे का कुछ सामान खरीद लिया और कुछ पिजरे बना लिए। और लो सवेरा होते ही मैं सूखे नाले की छाड़ियों में

छिपकर बंठ गया और नानी, एक बोरा और टोकरी लिए, घास-पास के जंगल में जाकर खुमिया, बेरो और जंगली अलरोटो की खोज में निकल गयी।

सितम्बर महीने का थका हुआ सा सूरज अभी अभी निकला था। उसकी पीली किरणें कभी तो बादलों में ही लो जातीं और कभी पहले पल की भांति फलकर उस जगह भी पहुँच जातीं जहाँ मैं छिपा हुआ था। नाले के तल पर अभी भी परछाइयाँ तर रही थीं और एक सफेद कुहरा सा उठ रहा था। नाले की खड़ी ढाल एकदम काली, और नगी-भूची थी, दूसरी अधिक ढलवा ढाल पर मुरझी हुई और लाल, पीली और पथई पत्तियों वाली झाड़ियाँ उगी थीं। हवा के झोकों से पत्तियाँ उड़-उड़कर नाले में छितर रही थीं।

तल की कटीली झाड़ियों में गोल्डफिच पक्षी घूँघूँहा रहे थे और सिनसिनी पत्तियों के बीच उनके छोटे-छोटे बाके सिरो पर गुलाबी मूकट झिलमिला रहे थे। मेरे अगल-बगल और आगे-पीछे कुतूहली गगरे पछी टिटिया रहे थे, अपने सफेद गानों को अनोखे ढंग से फुलाए थे मेलै-टेल के दिन कुनाविनो की युवतियों की भाँति दुनिया भर का गौर मचा रहे थे। चपल चतुर और रसीले—हर चीज की ओर वे लपकते, उसे छूने कुरेबने के लिए ललक उठते, और इस प्रकार एक के बाद एक कबे में फसते जाते। इसके बाद वे इतनी बुरी तरह छटपटाते कि उन्हें देखकर हृदय मसोस उठता। लेकिन ब्यापारी का मेरा घघा सस्त्री का है और मैं उन्हें पास के पिजरे में धड़ करके एक बोरी में डाल देता, अंधेरे में वे शान्त हो जाते।

बन-सजली की शाड़ी को सूरज की किरणों ने रंग दिया था। सिसकिन पक्षियों का एक झुंड उसपर आकर बठा। सूरज की सुहानी किरणों में पक्षियों की खुंगी का धारपार नहीं था, अपने उछलने-कूड़ने में वे स्वली लडकी में मिलते-जुलते थे। लालची, चौकस और अपनी गाँठ का पक्का धाढ़क पक्षी—जिसने गम प्रदेशों की ओर प्रयाण करने में देरी लगायी थी—बन-गुलाब की झूमती हुई टहनी पर बठा हुआ धोच से अपनी परो को सवार रहा था और काली आँखों से शिकार की खोज में इधर उधर देख रहा था। सहसा लाक पक्षी की भाँति ऊपर उड़कर उसने एक भौरे को पकड़ा, उसे बड़े ध्यान से एक काटे में बाँधा और फिर बठकर

घोर की भाँति धीरजी अपनी भटमली गदन की इपर-उपर घुमाने लगा।
 एक पाइन रिच पानी जिने पास के सातच भरे सपने में बय से देत रहा
 पा-तान से उठता हुआ मेरे पास से निरस्ता-बितना भ्रच्छा हो धगर
 इमे परत सक्। सात रग का वृत्तचिच पंगो, जनरस की भाँति गर्वोता,
 अपने मुँह से धलग हाकर मुस्तानी के लिए एक आल्डर शाही पर
 धा मटा घोर अपनी वाली धाच की ऊपर-नीचे करते हुए रोय से
 चिचियाने लगा।

जो-जोते मूरज आकाश मे ऊषा उठना, यसे-यसे पक्षियों की सत्या
 नी बढ़ती जाती, ये घोर भी रङ्गी से चहचहाने लगने। समूचा माला
 उनके सगोत से भर जाता, हवा के झोंका म झाड़िया की निरतर
 सरसरराहट इस सगोत की मुख्य धुन थी। पक्षियों की याँकी आवाज का
 उमार इस मृदु, मधुर और उबास सरसरराहट को दया न पाता। मुझे
 उसमें प्रीष्म विदा-गीत की ध्वनि का आभास मिलता, यह मेरे जान मे
 अनोपे गम्ब पुसपुसाती, जो अपने आप गीत का रूप धारण कर लेते और
 योते हुए जीवन के दुःख धरयस मेरे स्मृति-पट पर मूत हो उठते।

सहसा वहीं ऊँचे से नानी की आवाज सुनाई दी

“तुम कहाँ हो?”

घट माले के बगार पर बठी थी। पास ही जमीन पर रमाल बिछा
 था और पायरोटी, लीरे, गलजम और कुछ सेब रमाल पर सजे थे। इन सब
 बरकतों के बीच बट-बलास की एक बहुत ही सुन्दर मीना रली थी जिसका
 बिल्लीरी बाग नेपोलियन के तिर की आकृति का था। मीना मे बोदका
 छलछला रही थी जिसमे, उसे और भी सुगणित बनाने के लिए, सतजीन
 नामक घास मिली हुई थी।

नानी ने गवगद हृदय से सन्तोष की साँस छोड़ी

“बितना भ्रच्छा है यह सब, मेरे भगवान!”

“मेने एक गीत बनाया है!”

“क्या सचमुच?”

मेने कुछ इस तरह की पवित्रयाँ सुनानी शुरू कीं

गिगिर निरतर आता जाता,

होता है यह भान,

विदा, विदा ओ सुय प्रीष्म के,

विदा तुम्हें दिनभान।

नानी मुझे बीच में ही टोपकर बोली

“ऐसा एक गीत तो मुझे पहले से ही याद है और तुम्हारे इस गीत से अच्छा है।”

और नानी ने गुनगुनाते हुए गीत सुनाया

हाथ, चल दिया सूर्य घोष्य का
काली राती से मिलने को, दूर, जगलो के उस पार।
हाथ, रह गयी मैं युवती तो
सब वसन्त की खुशियो के बिन, खोकर अपना प्यार

सुबह-सबरे गाव छोड़ पर जब जाती,
मई महीने की मौजो की सुधि आती,
खुला-खुला भदान, नहीं मुझको भाता
धौवन रहा लुटाया, याद मुझे आता।

अरी, सुनो तो तुम, सखियो प्यारी मेरी!
यहां, बफ की पहली चादर जब पाओ,
तुम निकाल दिल मेरा गोरी छाती से
उसी बफ में ढफनाओ!

गीत रचने की अपनी क्षमता पर मुझे जो यक था, उसे जरा भी चोट नहीं पहुंची। नानी का यह गीत मुझे बेहद अच्छा लगा और गीत की कुवारी लडकी के लिए मेरा हृदय भी बेवना से भर गया।

“देखा, बसक का गीत किस तरह गाया जाता है,” नानी ने कहा। “यह गीत किसी कुवारी लडकी का रचा हुआ है। वसन्त में उसका साजन उसके साथ था। लेकिन जाड़ा आते आते वह विदा हो गया, उसे अकेली छोड़ गया शायद किसी दूसरी के पास चला गया और उसके हृदय की बेवना धासू बनकर वह निकली और इन आसुओ से इस गीत का जन्म हुआ जिसके हृदय में कभी टीस नहीं उठी, उसके गीतो में तडप भी कहा से आयेगी? देखा, कितना अच्छा गीत बनाया है उस लडकी ने!”

पक्षियो के बेचने पर पहली बार जब घालीस कोपेक हाथ में आये तो नानी चकित रह गई

“कमाल हो गया। मैं तो सोचती थी कि इससे कुछ फल्ले नहीं पड़ेगा। सोचा कि छोटे लडके की जिद्द है, लेकिन देखो न, यह तो भारी मुनाफे की चीज निकली!”

“तुमने तो सस्ते में ही बेच दिया ”

“सच ?”

जिस दिन बाजार सगता, यह एक खूबसूरत या इतने भी अधिक कमाकर लाती और अपने इस अचरज को पचा न पाती कि छोटी-मोटी चीजों से भी कितना अधिक धन मिल सकता है।

“और कोई स्त्री दिन भर बपड़े धोकर या किसी दूसरे के घर जाकर बरतन भाँडे साफ करके मुझसे से पच्चीस कोपक कमाती है। और तुम खेल ही खेल में इतना कमा लेते हो। नहीं, इसमें कोई त्रुटि नहीं है। यह गलत है। और पक्षियों को पकड़-पकड़कर पिंजरे में बंद करना भी गलत है। यह अच्छा घधा नहीं है, अल्पोशा! तुम इसे छोड़ दो।”

लेकिन पक्षियों को पकड़ने का मुझे भारी चसका लगा। इसमें मुझे आनंद आता और पक्षियाँ को छोड़ अथ किसी को इससे जरा सी भी परेशानी नहीं होती थी और मैं किसी पर निर्भर नहीं था। अब मैं बढ़िया साज-सामान से लैस था। पुराने बहेलियों से मिल-जुलकर मैंने बहुत कुछ सीखा लिया था। अब मैंने अकेले ही बीस-पच्चीस मील दूर स्थित कस्तूरकी जंगल में घाबे मारने शुरू किए वहाँ बोलगा के तट पर, देवदार के ऊँचे वृक्षों के बीच आसविलो या एक आस जाति के लम्बी बुम और सफेद रंग वाले बेहद सुंदर और दुर्लभ गगरी को पकड़ सकता था जिनकी पक्षियों के प्रेमी भारी कड़ करते थे।

प्रायः मैं साँझ के समय रवाना होता और रात भर कज्ञान वाली सड़क पर चलता रहता—कभी-कभी शरद की वर्षा में कौचड भरे रास्ते पर। मेरी कमर पर मोमिया थला लदा होता जिसमें फुसलाऊ पक्षी होते और हाथ में रहती एक मोटी लाठी। शरद की अघेरी रातें ठंडी और डरावनी होतीं—बहुत ही डरावनी! सड़क के किनारे बिजली-भारे पुराने भोज-वस्त्र खड़े होते और वर्षा में भीगी उनकी टहनियाँ मेरे सिर के ऊपर थीं, बाईं ओर पहाड़ी की तलहटी में जिधर धोला बहती थी आखिरी जहाजों और बजरो के मस्तूलों की रोशनियाँ चमक उठतीं और तरते हुए निकल जातीं, मानो वे किसी अतल गहराई में समाते जा रहे हों। उनके भोपुओं और चप्पुओं के पानी में छप छप करने की आवाजें सुनाई देतीं।

कच्चे लोहे की कड़ी भूमि पर सड़क के किनारे गावों के घर अघेरे

मे से उठ खड़े होते, फटखने भूले कुत्ते मेरी टांगों की ओर झपटते और रात का चौकीदार अपने खटखटे बजाते हुए भय से चीख उठता

“कौन है? किसकी बला आयी है!”

मुझे डर लगता कि कहीं मेरे फंदे आदि न छीन लिए जाए और इस लिए, चौकीदारों का मुह बंद करने के लिए, पाच कोपेक के सिक्के में सदा अपनी जेब में रखता। फोकिनो गाव के चौकीदार से तो मेरी बोस्ती भी हो गई। हर बार मुझे देखकर वह आश्चर्यचकित सा आह-आह करता

“फिर चल दिया! बाह दे, मेरे निडर, रात के पछी!”

उसका नाम था नीफोन्त। कब का छोटा, सफेद बालों वाला। वह कोई सत लगता था। अक्सर वह अपनी कमीज में हाथ डालता और शलजम या सेब, या मुट्ठी भर मटर के बाने निकालकर मुझे बेते हुए कहता

“ले, बोस्त, तेरे लिए थोड़ी सी सोगात रख छोड़ी थी, ला ले, मुह मीठा कर ले।”

और वह गाव के छोर तक मेरे साथ चलता।

“अच्छा जा, भगवान तेरा भला करे।”

मैं पौ फटने के साथ जंगल में पहुंचता, अपने जाल फलाता, झांसे के पक्षियों के साथ लासे लटकाता और जंगल के किनारे सेटकर बिन निकलने की बात जोहने लगता। चारों ओर सनाटा छाया हुआ था। हर चीज शरब की गहरी नाँव में डूबी हुई थी। धुंध लिपटी पहाड़ियों की तलहटी में दूर दूर तक फली चरागाहों की हल्की सी झलक दिखाई दे रही है जिन्हें काटती हुई बोलगा बह रही है। नदी के पार चरागाहें कुहासे में धुल रही हैं। बहुत दूर, चरागाहों के उस पार जंगलों के पीछे से उज्ज्वल सूरज अलस भाव से निकलता है, पेड़ों के काले अयातों पर रोशनीया बमक उठती हैं और देखते-देखते एक अदभुत और रोम रोम में व्याप्त हो जानेवाली हरकत शुरू हो जाती है। सूरज की किरणों में चांदी सी चमकती धुंध की चादर अधिकाधिक तेज गति से चरागाहों के ऊपर उठती है। झाड़ियां, पेड़ और सुखी घास के गांज मानो धीरे धीरे धरती से सिर उठाने लगते हैं। लगता है जैसे कि सूरज की गर्मी पाकर चरागाहें

पिघलने और सभी दिशाओं में अपनी सुनहरी-पीत छाभा लेकर बहने लगी हैं। नदी-तट पर पहुंचे सूरज ने अब उसके निश्चल जल का स्पर्श किया है और ऐसा लगता है मानो समूची नदी उसी एक स्थल की ओर उमड़ चली है जहां सूरज ने डुबकी ली है। सोने का घाल ऊंचा उठता जाता है और चारों ओर लुशी के लाल गुलाल की वर्षा होने लगी है। शीत से तिकुटो सिमटी और कापती धरती में जान पड़ी है, वह बसमसाई है और अपनी वृत्तजतापूर्ण उसासा से शरद की साधी सुगंध फलाने लगी है। पारदर्शी वायु से धरती विशाल दिख रही है, वायु ने उसके विस्तार को निस्सीम रूप से बढ़ा दिया है। हर चीज मानो दूर धरती के नीले छोरा को छूने के लिए तलक रही है और अब सब को भी अपने इसी रंग में रंगने के लिए अपना भायाजाल फला रही है। सूरज निघलने का यह दृश्य, इसी जगह से, बीसियों बार मैंने देखा है, और हर बार एक नयी दुनिया मेरी आँखों के सामने उभर आती है जिसका सौंदर्य हर बार नया होता है।

सूरज से, न जाने क्यों, मुझे खास तौर से प्रेम है। मुझे उसका नाम, उसके नाम की मधुर ध्वनिया, उनमें छिपी हुई शब्दों का बहुत अच्छी लगती है। आँखें बंद करके सूरज की गरम किरणों की ओर मुह करना, बाड़े की बरार या पेड़ की टहनियों के बीच से तीर सी निकलती किरणों को हथेली पर पकड़ लेना मुझे बहुत अच्छा लगता है। नाना "राजा मिज़ाईल बेर्नोगोव्स्की और बोयारिन फेओदोर जिहोंने सूरज के आगे तिर नहीं झुकाये" की बड़ी इज्जत करते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि वे बड़े कुत्सित, जिम्सियों की भाँति काले और मनहूस मोरदोविया के पत्तियों की भाँति चपड़ चुपे आँखों वाले रहे होंगे। जब चरागाहों के पीछे से सूरज ऊपर उठता है तो मैं बरबस मुस्करा उठता हूँ।

मेरे तिर के ऊपर चीड़ का जगल गूँजता है। वह अपने हरे पत्तों से ओस की बूँदें झाड़ता है। और नीचे, पेड़ों की छाया में, पर्णांग झाड़ियों की नवकाशीदार पत्तियों पर ओस की बूँदें सुबह के पाले से जम गई हैं, ऐसा मालूम होता है मानो किसीने स्पहले बेल-बूँदें काड़ दिये हों। कत्यई घास बारिश से कुचली हुई है, धरती की ओर झुके हुए डण्डल निश्चल पड़े हैं। लेकिन सूरज की किरणों का स्पर्श पाकर उनमें भी हल्की सी

कुनमुनाहट बीड जाती है, मानो जीवित रहने के लिए वे आखिरी प्रयास कर रहे हों।

पछी जाग पये हैं। गगरों ने भूरे रंग की गुलगुली गेंदों की भांति, डाल डाल पर फुववना शुरू कर दिया है। अगिया आसबिल देवदार की पुनगियो पर अपनी टेढ़ी चोंचों से देवदार के शकु तोड़ रहे हैं। देवदार की पजानुमा टहनी के छोर पर सफेद नटहेच पत्ती अपने लंबे पल हिलाता झूल रहा है, मनबे सी काली आंख मेरे जाल की ओर सदेह भरी तिरछी नजर से देख रही है। बिल्कुल अनायास ही मुनाई देता है, कसे समूचा जगल जो एक क्षण पहले तब गभीर सा गहरे चितन में डूबा था, अब सकडो पछियो की सुस्पष्ट आवाजों से गूज उठा है, धरती के सबसे पवित्र जीवों के कोलाहल से भर गया है। इहाँ के रूप पर इस धरती पर सौंदर्य के पिता मानव ने अपने मन के सुख के लिए परियों, केदबीम और तेराफीम फरिश्तों की कल्पना की है।

पछियों को पकडना दुःखद था और उन्हें विजरो में कद करना शमनाक। उह स्वच्छद देखने से मुझे अधिक आनंद प्राप्त होता। लेकिन शिकारी की लगन और पसा कमाने की इच्छा का पलडा भारी पडता और मेरी सवेदनशीलता को झुका देता।

पक्षियों की चतुराई देखकर मुझे हसी आती। नीले गगरे ने ध्यान जमाकर जाल का सविस्तार अध्ययन किया, उसमें छिपे छतरे को समझ गया और बगल की ओर से जाकर छडों के बीच से बिना किसी छतरे के अंदर रखे बीजा को निकाल लिया। गगरे बड़े चतुर हैं, पर उनमें जरूरत से ज्यादा कौतूहल भरा है और यह बात उन्हें ले डूबती है। शानदार झुलफिध बूढ़ होते हैं। गिरजे की ओर जा रहे बस्ती के मोटे ताबे लोगो की भांति वे मेरे जाल में झुड के झुड आ फसते हैं। जब मैं उन्हें धब करता ॥ तब वे चौंक उठते हैं, भारी अचरज के साथ अपनी आंखों को डेरते और अपनी मोटी चोचों से मेरी उगलियों को नोंचते हैं। क्रासबिल बडी शक्ति और शान से जाल में फस जाता है। निरासा किच—अजात, किसी भी अय पक्षी से भिन—चीडी डुम से टेक लगाकर और अपनी लम्बी चोच को अलस भाव से इधर उपर घुमाते हुए देर तक जाल के सामने बठा रहता है। वह गगरी के पीछे-पीछे पेडों के तनों पर कठफोडवे की तरह भागता है। भूरे रंग का यह छोटा सा पक्षी, न जाने क्यों, मुझे

बड़ा मनहूस मालूम होता,—एकदम अकेला, जिसके पास कोई नहीं फटकता, न ही वह किसी के पास फटकता है। मुटरी की भांति वह भी छोटी छोटी चमकीली चीजें चुराना और उन्हें छिपाना पसंद करता है।

दोपहर तक मैं अपना काम समाप्त कर लेता और जगत्तो तथा खेतों में से होकर घर लौटता। सड़क का रास्ता पकड़कर गावों से होकर जाने पर गावों के सड़कें मेरे पिजरो को छीन लेते और मेरे जाल को तोड़ डालते। मैं यह भोग चुका था।

घर पहुँचते पहुँचते साँस हो जाती। बदन थककर चूर-चूर हो जाता और पेट में धूँहें कूदने लगते। लेकिन मुझे लगता था कि दिन में मैं और बड़ा तथा बलवान हो गया हूँ, मैंने कुछ नयी बात जान ली है। इस नयी शक्ति के सहारे मैं नाना के ताने-तिशनों को ठंडे दिल से सुनता था। यह देखकर नाना गम्भीरतापूर्वक मतलब की बात कहने लगते

“छोड़ दो यह बेमतलब का धंधा, छोड़ दो! चिड़िया पकड़कर दुनिया में आज तक कोई आगे नहीं बढ़ा। अपने लिए कोई ठिकाना ढोखो और दिमाग की समूची शक्ति से एक जगह जमकर काम करो। आदमी का जीवन इसलिए नहीं है कि उसे झोछी बातों में नष्ट किया जाये। वह भगवान का बीज है और अच्छी फसल पदा करना उसका काम है। आदमी सिक्के की भाँति है। अगर उसे ठीक ढंग से काम में लाया जाये तो वह अपने साथ और सिक्का को भी खींच लाता है। क्या तुम जीवन को आसान समझते हो? नहीं, वह एक कठोर चीज है, बहुत ही कठोर! दुनिया अंधेरी रात के समान है जिसमें हर व्यक्ति को खुद मंगल बनकर अपने लिए उजाला करना होता है। भगवान ने हम सभी को समान रूप से दस उगलियाँ दी हैं, लेकिन हर आदमी दूर-दूर तक अपने पगों को फलाना और सभी कुछ दबोच लेना चाहता है। अपनी ताकत दिखायी चाहिये, अगर ताकत नहीं है तो—चालाकी दिखाओ। जो बड़ा नहीं, बलवान नहीं—जो इधर भी नहीं, उधर भी नहीं। लोगो के साथ मेल-जोल रखना, लेकिन यह कभी न भूलना कि तू अकेला है। बात सचकी सुनना, लेकिन विश्वास किसी पर न करना। आँखों देखी बात भी झूठी हो सकती है। जबान मुँह में रखना—घर और गहर जबान से नहीं,

रूपे और हथोड़े से घनते हैं। तू न तो पानायबोध बदर्शीर है, न वात्मीर जिनकी सारी पूजा है जुए और भेड़ें। ”

रात फिर घाती और उनकी याता का यह सितसिला फिर भी उत्तम न होता। उनके शब्द मुझे जबानी याद थे। जब यह बोलते तो उनके शब्दों की ध्वनि तो मुझे अच्छी लगती, लेकिन उनके श्रय के धारे में सदेह रहता। यह जो कुछ कहते, उसे सुनकर एष ही बात समझ में आती। यह यह कि वो तावतें हैं जो जीवन को बढिन बना रही हैं भगवान और लोग।

लिटकी के पास बठकर, अपनी चपल उगलियों से तपली को फिर भी भाँति नचाते हुए, नानी बेल-भूटा के लिए सूत कातती। नाना के शब्दों को वेर तक यह झुपचाप सुनती, फिर एकाएक कह उठती

“जसी मां मरियम की इच्छा होगी, वही होगा।”

“यह क्या?” नाना चिल्लाते, “मैं भगवान को भूला नहीं, मैं भगवान को जानता हूँ। बेधरत बुढ़िया, भगवान में जमीन पर मूल जन्मे हैं, क्या?”

मुझे लगता था कि धरती पर सबसे अच्छी तरह से सनिक और कश्चाक रहते हैं, उनका जीवन सीधा-सादा और मौजी है। अच्छा मौतम होने पर सुबह-सुबह में आकर हमारे घर के सामने खाई के उस पार वाले मदान में इधर उधर बिलर जाते और उनका मजदोर जटिल खेल शुरू हो जाता मजबूत और चतुर, सफेद कमीजें पहने, हाथों में राइफलें ताने थे फुर्ती के साथ मदान में दौड़ते, खाई में छिप जाते, बिगुल की आवाज सुनते ही फिर दौड़कर बाहर निकल आते और “हुर्रा” की आवाजों तथा फौजी ढोल को कपा देनेवाली धमाधम के साथ, सीधे हमारे घर की ओर चल किमे, तेजी से बढ़ने लगते। उनकी सगीनें चमचमातीं, मानो अगले ही क्षण वे हमारे घर पर टूट पड़ेंगे और सब कुछ उलट-पुलटकर उसे मलबे का एक ढेर बना देंगे।

मैं भी चोरा से “हुर्रा” की आवाज करता और उनके पीछे-पीछे दौड़ता। फौजी ढोला की जानसोल आवाज सुन मेरे मन में कुछ नष्ट करने, किसी बाड़े की खींचकर गिराने या लडको को पकडकर पीटने के लिए उतावली पदा होती।

अधकाश के क्षणों में वे मुझे अपना घटिया तम्बाकू माखीरका पिलाते और अपनी भारी राइफलो से खेलने देते। कभी-कभी उनमें से कोई मेरे पेट में अपनी सगीन को नोक गड़ा देता और गुस्ते में भौंहों को चड़ाकर बनावटी धावाज में चिल्लाता

“अभी बीघ दूगा तिलचट्टे धो!”

सगीन धूप में चमचमा उठती और उसमें ज़िंदा साप की भांति बल पड़ने लगते, ऐसा मालूम होता कि बस, अभी वह मुझे इस लेगी। इससे भय लगता था लेकिन उल्लास भय से भी अधिक होता था।

मोरदोबिया निवासी एक सड़के ने जो ढोलचों था, मुझे ढोल बजाने की भूगरिया पकड़ना सिखाया। पहले वह मेरी कलाइया पकड़कर हाथों को बंद होने तक घुमाता, फिर ढीली पड़ी मेरी उंगलिया में भूगरिया थमा देता।

“हा, अब बजा—इक-डू, इक-डू! धाम धा धा धम! बजा—बाया—हल्का, बाया—दबाके, धाम धा धा धम!” चिडिया जसी गोल आखों से वह मुझे घूरता और फटे हुए गले से रेंकता।

बवायद समाप्त होने तक मैं भी सनिकों के साथ साथ बौड़ता, फिर उनके साथ समूचे नगर में भाव करता हुआ उनकी बरको तक जाता, उनके खोरदार गाने सुनता और उनके बयालु चेहरों को एकटक देखता रहता जो मुझे, एक सिरे से, अभी-अभी टकसाल से निकले सिकों की भांति एकदम नये और उजले मालूम होते।

एकरूप आदमियों का यह ठोस समूह उल्लासपूर्वक सड़क पर समुपत शक्ति का रूप लेकर बहता था, अपने प्रति मित्रता का भाव पदा करता था। मन उसमें डूबने, उसमें प्रवेश करने के लिए उतावला ही उठता—जैसे कि कोई नदी में डूब जाता है या जंगल में प्रवेश करता है। डर इन लोगों को छू तक नहीं गया था। साहस के साथ हर चीज का ये सामना करते थे, कुछ भी ऐसा नहीं था जो उनके लिए अज्ञेय हो, जिसे वे चाह और प्राप्त न कर सके, और सब से बढ़कर यह कि वे नेक दिल और सीधे-सच्चे थे।

लेकिन एक दिन, अक्काग के क्षणों में एक युवा सुवेदार अकसर ने मुझे मोटी सी सिगरेट भेंट की।

“यह लो, सिगरेट पियो। यह एक बहुत ही बढ़िया क्रिस्म की सिगरेट है। तुम्हारे सिवा अगर और कोई होता तो उसे कभी न देता। तुम इतने अच्छे हो, इसीलिए मैं तुम्हें यह सिगरेट दे रहा हूँ।”

मैंने सिगरेट सुलगाई। वह पीछे हट गया। एकाएक सिगरेट से लाल लपट निकली और मैं चौंधिया गया—मेरी उंगलियाँ, नाक और भोंहें झुलस गयीं। भूरे तेजाबी धुएँ ने नाक में वह दम किया कि छोकते-खासते हुलिया तग हो गया। आँखों के चौंधिया जाने और घबराहट के भारों में उसी एक जगह खड़ा हाथ-पाव नचा रहा था। सनिक मेरे धारों और घेरा बनाए खड़े थे और खूब खिलखिलाकर हस रहे थे। मैं घर की ओर चल दिया। पीछे से उनके हसने, सीटियाँ बजाने और गडगडियो जस्ता हटर फटकारने की आवाज आ रही थी। मेरी उंगलियों में जलन थी, चेहरे में काटे से चुभ रहे थे और आँखों से आसू बह रहे थे। लेकिन इस पीड़ा से भी अधिक जानलेवा, अधिक परेशान करनेवाली चीज दुल और अचरज का वह भाव था जो मेरे हृदय को भय रहा था और जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था। आखिर उन्होंने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? इतने भले लोग भी इस तरह की चीज में कैसे आनन्द ले सके?

घर पहुँचने के बाद मैं ऊपर अटारी पर चढ़ गया, और बहुत देर तक वहाँ बठा हुआ समझ में न आनेवाली बबरता के उन सभी मौकों को याद करता रहा जिनसे मेरा वास्ता इतना अक्सर पड़ रहा था। सारापूल का वह टुइयाँ सा सनिक मेरी कल्पना में मूत हो उठा। एकदम सजीव रूप में, मेरी आँखों के सामने खड़ा वह मुझसे मानी पूछ रहा हो

“क्यों, समझा?”

शीघ्र ही मुझे कुछ और भी ज्यादा क्रूर तथा हृदय को और भी ज्यादा आहत करनेवाला अनुभव हुआ।

मैंने पेचेरस्काया स्तोबोदा के निकट उन घरों में भी जाना शुरू कर दिया जिनमें कच्चाक रहते थे। कच्चाक और सनिकों से भिन्न थे—केवल इसलिए नहीं कि वे उनसे अच्छे कपड़े पहनते थे और मजे हुए घुड़सवार थे, बल्कि इसलिए कि उनके बोलने का ढंग भिन्न था, वे भिन्न गीत गाते थे, और कमाल का नाचते थे। साझ को घोड़ों की मलाई बलाई करने के बाद सब कच्चाक अस्तबल के पास घेरा बनाकर जमा हो जाते। नाट्य रङ का लाल सिर वाला एक कच्चाक घेरे के बीच में निकल आता और

अपने सह्रदार बालो को पीछे की ओर झटकाकर नफीरी जसी तेज आवाज में गाने लगता। धीमे धीमे तनकर वह शान्त दोन या भीली डे-पूव के बारे में उदास गीत गाता। प्रात-पक्षी की भांति वह अपनी आँखें बंद कर लेता जो अक्सर उस समय तक गाता रहता है जब तक कि वह निष्प्राण होकर धरती पर नहीं गिर पड़ता। उसके सलूके का गला घुला रहता जिसमें से उसकी हसुली सपे हुए तांबे की लगाम की भांति दिखाई देती। और उसका समूचा शरीर तांबे की ढली हुई प्रतिमा मालूम होता। पतली टांगों पर झूलता, मानो उसके सले क्षमोन डोल रही हो, हाथों को सह्रराता, बंद आँखें, गूजती आवाज—वह मानो इंसान न रहकर बिगुलवादक का बिगुल या गडरिये की धासुरी बन गया हो। कभी-कभी मुझे ऐसा मालूम होता कि वह अभी पीठ के बल धरती पर गिर पड़ेगा और प्रात पक्षी की भांति ही निष्प्राण हो जायेगा, क्योंकि उसने अपना सारा हृदय, अपनी सारी शक्ति गीत में लगा दी थी।

उसके साथी उसके इद गिद खडे हैं, हाथों को अपनी जेबों में डाले या कमर के पीछे किये। उनकी आँखें, बिना पलक झपकाये, उसके तांत्र चेहरे और सह्रराते हुए हाथा पर टिकी हैं और गिरजे के सह्रगान की भांति वे शान्त और गम्भीर ढंग से गा रहे हैं। ऐसे क्षणों में वे सब—बाड़ी घाले भी और बिना बाड़ी के भी—समान ढप से वेव प्रतिमाओं की भांति मालूम होते—लोगों से उतने ही अलग, उतने ही भयोत्पादक। और गीत इतना ही अनन्त जितना कि अनन्त राजपथ होता है, उतना ही समतल, चौड़ा और युगा-युगों का अनुभव अपने में समेटे हुए। गीत के स्वर राम रोम में समा जाते हैं। न दिन का ज्ञान रहता है, न रात का। न मुड़ापे की मुध रहती, न बचपन की। सभी कुछ भूल जाता है! गायकों की आवाजें निस्तब्धता में डूब जाती हैं तो घोडों की गहरी उसाते सुनाई देती हैं जिन्हें स्तेपी के विस्तारों की याद सता रही है। और खेतों की ओर से शरद रात्रि के अदम्य आगमन की पदचाप सुनाई देती है। भीतर से एक उबाल सा उठता है और भावनाओं का यह भर-पूरा और असाधारण उभार, देश की धरती और उसपर बसनेवाले लोगों के प्रति मौन अनुराग की यह व्यापक भावना, भेरे हृदय में उमड़ती घुमड़ती और बाहर निकलने के लिए छटपटाने लगती है।

मुझे ऐसा भालूम होता था कि तपे ताँबे सा नाटे इव का यह परदारक निरा मानव नहीं है, धरन् यह मानव से बड़ा और उतसे वहीं अधिक महत्वपूर्ण है—यह मानव जीवधारिया से अलग और उनसे ऊपर, लोक्ययात्रा का जीव है। मुझसे उतसे बात करते नहीं बनता। वह मुझे कुछ पूछता तो लुशी से मेरा चेहरा लिल उठता और मैं गर्माता हुमा धुप रहता। उसे देखने, उसका गाना सुनने के लिए, एक बफादार कुत्ते की भाँति, मैं धुपचाप उसके पीछे-पीछे घसते रहने को तयार था।

एक दिन मैंने उसे अस्तबल के बने में सड़ा देखा। वह हाथ चेहरे के पास करके अपनी उगली में चाँदी की एक तावी भगूठी की बड़े ध्यान से खेल रहा था। उसके सुवर होठ हिल रहे थे, उसकी छोटी-छोटी लाल मूँछें बल ला रही थीं। उसके चेहरे पर उदास और घोट लाया हुमा सा भाव मडरा रहा था।

इसके बाद, एक दिन अघेरी सात के समय स्ताराया सेनाया चौक के शराबखाने में मैंने उसे देखा। शराबखाने का मालिक गानेवाली चिडियों का बेहद शौकीन था, और मुझसे अक्सर चिडिया खरीदा करता था। इस समय भी कुछ पिजरे लेकर मैं उसके पास गया था।

कच्चाक धार के निपट, अलावघर और दीवार के बीच, बठा था। उसके साथ एक मोटी धलवल स्त्री थी जो आकार प्रकार में करीब-करीब उतसे डूनी थी। उसका गोल-मटोल लाल बिबना चेहरा चमक रहा था था और वह बड़े घाव और लगन से कच्चाक की ओर देख रही थी, जैसे मा अपने बच्चे की ओर देखती है, उसकी नजर में कुछ-कुछ चिंता झलक रही थी। वह मझे में धुत्त था और उसके पाव मेज के नीचे बराबर कुलबुला रहे थे। वह जरूर ही स्त्री को ठोकर मार रहा था क्योंकि वह चौककर भीहें सिकोडती और धीमे स्वर में उतसे अनुरोध करती

“यह क्या हरकत है?”

कच्चाक बड़ी मुश्किल से अपनी भीहें उठाता लेकिन वे फिर शिथिल सी गिर जातीं। गर्मी के मारे बुरा हाल था। उसने अपने कौट और कमीच के बटन खोल डाले और उसकी गरदन नगी हो गई। स्त्री ने रुमाल सिर से खिसकाकर अपने कंधा पर डाल लिया, फिर अपनी हृष्ट पुष्ट सफेद बाही को मेज पर रखा और दोनो हाथों को मिलाकर इतने जोर से भींचा

कि जगलियो के पोरवे ताल पड गये। जितना ही अधिक में उह देखता, उतना ही अधिक यह कर्जाक मुझे नेव मा के लडके की भाति मालूम होता जिससे कोई मसूर हो गया है। औरत उसे प्यार और ताने के साथ कुछ कह रही थी और वह लज्जित सा चुप था—उसके जायज तानो के जवाब मे उसके पास कहने को कुछ नहीं था।

सहसा यह लडा हो गया, मानो किसी बिच्छू ने उसे काट लिया हो। अपनी टोपी को उसने माथे पर खोँचा और घपघपाकर उसे ज़ूब जमा लिया। इसके बाद, कोट के बटन बंद किये बिना ही, वह दरवाजे की ओर बढ़ा। स्त्री भी उठ लडी हुई।

“हम अभी लौट आयेंगे, कुचमिच,” स्त्री ने शराबखाने के मालिक से कहा।

लोगो ने उहे हसी और फक्तियो के साथ विदा किया। किसी ने सस्ती के साथ गहरी भावाज मे कहा

“लौटने दो मल्लाह को—वो ससुरी की खबर लेगा।”

मैं भी उनके पीछे पीछे चल गया। वे अंधेरे मे मुझसे कोई बीसैक कदम आगे चल रहे थे। कीचड भरे चौक को पारकर वे सीधे बोलगा के ऊचे तट की ओर चल दिये। मैंने देखा कि कर्जाक अपने लडखडाते पावो से चल नहीं पा रहा है, और उसे सभालने के प्रयत्न मे खुद स्त्री भी डगमगा जाती है। उनके पावो के नीचे कीचड के पिचरने की भावाज तक सुनाई दे रही थी। स्त्री, दबे स्वर मे, उससे बार-बार मिनत सी करती हुई पूछ रही थी

“यह आप किधर चल दिये? बोलिये न, किधर?”

मैं भी उनके पीछे-पीछे कीचड मे चलने लगा, हालांकि मेरा रास्ता दूसरा था। जब वे डाल की पटरी पर पहुँचे तो कर्जाक रुक गया, एक कदम पीछे हटा और फिर एकाएक स्त्री के मुह पर भरपूर हाथ से तमाचा मारा। स्त्री भय और अचरज से चीख उठी

“ओह राम, यह किसलिए?”

मैं भी चौंक उठा, और तपक्कर उसके पास पहुँचा। लेकिन कर्जाक ने क्षपटकर स्त्री को कमर से उठा लिया, रेलिंग के उस पार फेंक दिया, और खुद भी उसके पीछे-पीछे दूद गया और बोना, काले डेर की भाति

घास उगो डाल पर से नीचे लुढ़कते चले गये। मुझे जते काठ मार गया, और वृत्त की तरह वहीं खड़ा हुआ तड़प तड़प की, कपड़ों के फटने और कर्वाक के हाफने और भरभराने की, आवाज सुनता रहा। स्त्री, नीचे स्वर में, रह रहकर बुदबुदा रही थी

“मैं चिल्ला पड़ूंगी मैं चिल्ला पड़ूंगी!”

उसने जोरो से दब भरी आह भारी और सब तरफ सन्नाटा सा छा गया। मैंने एक पत्थर टटोला और उसे नीचे लुढ़का दिया—घास की सरसराहट सुनाई दी। बीच पर शराबखाने का काच का दरवाजा झनझना रहा था, बराहने-कालने की आवाज आई जैसे कोई गिर पड़ा हो और उसके बाद फिर सन्नाटा छा गया, जिसके गभ में आतक और डर छिपा हुआ था।

डाल के नीचे बड़े आकार की कोई सफेद सी चीज दिखाई दी। लडखडाती सी, सुबकती और भुनभुनाती, वह धीरे धीरे ऊपर चढ़ रही थी। वह स्त्री थी। भेड़ की भांति, दोनों हाथों और पावों के सहारे, प्रह चढ़ रही थी। मैंने देखा कि उसका बदन बमर तक नया है। उसकी बड़ी बड़ी गोल छातिया सफेद दमक रही थीं, और ऐसा मालूम होता था मानो उसके तीन चेहरे हों। आखिर वह रेलिंग से आ लयी, और मेरे पास ही उसपर बठ गई। यह गरमाये हुए घोड़े की भांति हाफ रही थी, और अपने उलझे बिलरे बालों को सुलझाने का प्रयत्न कर रही थी। उसके सफेद बदन पर कीचड़ के काले निशान साफ दिखाई देते थे। वह रो रही थी, मुह साफ करती बिल्ली की सी हरकतों से अपने आसुओं को पोछ रही थी।

“हाथ राम, कौन है?” मुझपर नजर पड़ते ही वह धीमे से चिल्लाई।
“भाग यहां से—बेशम कहीं का!”

लेकिन मुझसे भागा नहीं जाता। गहरे दुःख और अचरज से मैं वृत्त सा बन गया हू। मुझे नानो की बहन के शब्द याद आते हैं

“लुगाईं में बड़ी साजत है, हीवा ने भगवान की भी धोला दे दिया था..”

स्त्री उठकर खड़ी हो गई। कपड़ों के नाम पर जो कुछ बच रहा था, उससे उसने अपनी छातियों को ढका, और ऐसा करने के प्रयत्न में अब उसकी टांगें उधरी रह गई। तेज ढंगा से वह चल दी। तभी डाल पर कर्वाक चढ़ता दिखाई दिया। उसके हाथ में कुछ सफेद कपड़े थे जिन्हें वह

हवा में हिला रहा था। घीमे से उसने सीटी बजाई, कान लगाकर सुना, फिर प्रसन आवाज में बोला

“दार्या! क्या? कच्चाक जो चाहता है उसे लेकर ही छोड़ता है— तुने समझा कि मुझे नशा चढ़ा है? लेकिन नहीं, ना-आ-आ, यह तो बस तुझे ऐसा लगा था— दार्या!”

उसके पाव जमीन पर मजबूती से जमे थे। उसकी आवाज में नशे का नहीं, व्यग्य का पुट था। नीचे झुककर स्त्री के कपडों से उसने अपने जूतों का शीचड़ पोछा, और फिर बोला

“यह ले, अपना स्वटर ले जा! क्यावा मन मत ”

और फिर जोर से स्त्रियों के लिए शमनाक नाम लेकर उसे पुकारा। मैं पत्थरों के ढेर पर बठा उसकी आवाज सुनता रहा— रात की निस्तब्धता में इतनी अकेली और इतनी दबग।

मेरी आंखों के सामने चौक की लालटेनों की रोशनिया नाच रही थीं। दाहिनी ओर काले पेड़ों के झुरमुट के बीच कुलीन बग की लडकिया के स्कूल की सफेद इमारत दिखाई दे रही थी। अलस भाव से गंदे शब्दों को अपने मुह से उगलता और सफेद कपडों को हिलाता कच्चाक चौक की ओर बढ़ा और एक डु स्वप्न की भांति ओझल हो गया।

डाल के नीचे, पप घर की ओर से, भाप निकालने के पाइप की सनसनाती आवाज आ रही थी। डाल पर से खडखड करती बगधी जा रही थी। धारों ओर सन्नाटा था। मैं विपाक्त सा डाल के किनारे किनारे चलने लगा। हाथ में एक ठंडा पत्थर था जिसे मैं कच्चाक पर फेंक न पाया। सन्त जाज विजेता के गिरजे के पास चौकीदार ने मुझे रोका और झुल्लाकर पूछने लगा कि मैं कौन हूँ और मेरी पीठ पर सड़के धले में क्या है।

मैंने उसे कच्चाक का सारा किस्सा बताया। हसते हसते वह दोहरा हो गया, चिल्लाते हुए बोला

“क्या हाथ मारा है!! कच्चाक, भाई मेरे, बड़े घुड़िया होते हैं। हमारा तुम्हारा मुकाबला क्या! और वो औरत, कुतिया—”

वह फिर हसते हसते दोहरा हो गया और मैं आगे बढ़ चला। मेरी समझ में न आया कि हसी की ऐसी क्या बात उसने देखी?

“अगर वह स्त्री मेरी मा या मेरी नानी होती तो ? ” मैं सोचता, और मेरा हृदय भय से काप उठता।

८

बर्फ गिरना शुरू होते ही नाना मुझे फिर नानी की बहिन के यहां ले गये। बोले

“कोई बुराई नहीं इसमें तेरे लिए, कोई बुराई नहीं।”

मुझे लगता था कि बीती गमियों में मैंने बहुत दुनिया देख ली है, मैं बड़ा हो गया हूँ, मुझे कुछ अक्स आ गई है, और मालिकों के यहां इस बीच ऊब और भी गहरी हो गई है। वैसे ही उन्हें अपने पेटूपन के कारण बदनहजमी होती रहती है, वे बीमार पड़ते रहते हैं और एक दूसरे को ब्योरेवार अपनी बीमारी का हाल बताते हैं, बुढ़िया की भगवान की गुस्से से भरी, जहरीली प्रार्थनाएं जारी हैं। छोटी मालकिन बच्चा जन्म के बाद कुछ दुबली हो गई है, आकार में थोड़ी कम हो गई फिर भी पहले जसे ही, जब वह गभवती थी, धीरे धीरे और रीब से चलती है। जब वह बच्चों के कपड़े सीती है तो हमेशा एक ही गीत गुनगुनाती रहती है

बाया, बाया, बानिचका
नहा बाया, प्यारा बाया
अपनी अम्मा की गाड़ी लंचिगा
अपनी अम्मा का कहना मानेगा

अगर मैं कमरे में आ जाता तो वह तुरत गाना बंद कर देती
“क्या चाहिए ?”

मुझे यकीन था कि इसके सिवा वह अन्य कोई गीत नहीं जानती। साझ होते ही मालिक लोग मुझे भोजन के कमरे में तलब करते और कहते

“हा तो, मुना, जहाज पर तेरे साथ और क्या-क्या बीती ?”

पालाने के दरवाजे के पास कुर्सी पर मैं बठ जाता और उह सारी बातें बताता। इस अनचाहे और अनचेते जीवन के बीच उस जीवन की याद

करना मुझे अच्छा लगता। उसका वणन करने में मैं इतना डूब जाता कि मुझे अपनी मालकिनों की उपस्थिति तक का ध्यान न रहता। लेकिन यह हालत अधिक देर तक न टिकती। दोनों औरतों ने कभी जहाज पर यात्रा नहीं की थी। वे सवाल करतीं

“फिर भी तुझे डर तो जरूर लगा होगा?”

मेरी समझ में नहीं आया कि डरना किस बात का?

“अगर कहीं गहरे में जाकर जहाज पानी में समा जाता तो?”

मालिक खिलखिलाकर हसता और मैं, यह जानते हुए भी कि जहाज गहरे पानी में नहीं डूबते हैं, स्त्रियों के हृदय में यह बात नहीं बंठा पाता। बूढ़ी मालकिन को एकका यकीन था कि जहाज पानी में तरता नहीं, बल्कि उसके पहिये सड़क पर चलनेवाली गाड़ी के पहियों की भांति नदी की तह में चलते हैं।

“अगर जहाज लोहे का बना है तो यह तर कैसे सकता है? कुल्हाड़ी तो तरती नहीं, एकदम डूब जाती है”

“लेकिन डोल नहीं डूबता?”

“डोल की छूब कहीं। एक तो वह छोटा होता है, और दूसरे खोलला”

स्मूरी का और उसकी पुस्तकों का जब मैंने उनसे चिन्त किया तो उन्होंने सदेह की नजर से मुझे देखा। बूढ़ी मालकिन को यकीन था कि पुस्तकें धमधम और बेवकूफ लोग ही लिखते हैं।

“और भजन संहिता किसने लिखी? और राजा वाऊड?”

“भजन संहिता की बात छोड़—यह एक पवित्र पुस्तक है। यो वाऊड राजा ने भी अपनी भजन संहिता के लिए भगवान से माफी मागी थी!”

“यह कहा लिखा है?”

“यहां मेरे हाथ पर जिसका तमाचा पड़ते ही तुझे सब पता चल जायेगा!”

वह सदा हर बात जानती थी और बड़े विश्वास के साथ हर बात की नुबताचीनी करती थी जो कि हमेशा सच होती थी।

“पेचोर्का गली में एक तातार मरा तो मुझे रास्ते उसकी जान निकली कोलतार की तरह—एकदम काली!”

“जान का मतलब है आत्मा,” मैं बोला, लेकिन वह तिरस्कार भरे स्वर में चिल्लाई

“तातार के आत्मा नहीं होती, बेवकूफ!”

छोटी मालकिन भी पुस्तक को को हीवा समझती।

“किताबें पढ़ना बहुत बुरा है, खास तौर से कच्ची उमर में,” वह कहती: “हमारे मोहल्ले में—घेबेशोक गली में अचूठे भले घर की एक लड़की भी किताबें पढ़ती थी और बस पढ़ते पढ़ते पावरो से झूक करने लगी। पावरो की घरवाली ने उसको थोड़े-थोड़े की—तीबा, तीबा! भरी गली में, सारे लोगों के सामने ”

कभी-कभी मैं उन शब्दों को दोहराता जो मैंने स्मूरी की पुस्तक में पढ़े थे। इन पुस्तकों में से एक में मैंने पढ़ा था, “असल बात यह है कि बादर का किसी एक व्यक्ति ने आविष्कार नहीं किया, यह उन छोटे छोटे प्रयोगों और खोज-वायों का नतीजा था जिनका लम्बा तिलतिला बहुत पहले ही शुरू हो चुका था।”

न जाने क्यों, ये शब्द मेरी स्मृति में जमकर बँठ गए। खास तौर से शुरू का टुकड़ा ‘असल बात यह है कि’ मुझे बहुत पसंद आया और मुझे लगा कि बात करने का यह ढंग काफी खोरवार है। इसका इस्तेमाल करने के कारण मुझे बहुत दुःख भोगना पड़ा, हास्यास्पद दुःख। ऐसा भी होता है।

एक बार मालिको ने जब मुझसे अपने जहाजी जीवन की और कोई कहानी सुनाने के लिए कहा तो मेरे मुँह से निकला

“असल बात यह है कि अब और कुछ कहने के लिए बाकी नहीं रहा..”

सुनकर वे अचकचा गये और लगे मेडक की भाँति दरनि

“यह क्या? क्या कहा तुने?”

फिर चारों छूँ लिललिलाकर हसे, और उन्हीं बार-बार दोहराना शुरू किया

“असल बात यह है—ओ मेरे भगवान!”

मालिक तब ने मुझसे कहा

“यह तो तुमने बुरी ही सुनी, सनकी!”

और बाकी दिनों तक, वे मुझे ‘असल बात’ कहकर पुरारते और चिड़ते रहे

“घरे, असल बात, जरा इधर आ। बच्चे ने फश गदा कर दिया है। असल बात, इसे झटपट साफ तो कर दे।”

उनका यह बेमतलब चिढ़ाना मुझे बड़ा अजीब लगता। बुरा मानने के बजाय मैं अचरज से उनकी ओर देखता।

जानलेवा उदासी की धुंध मुझपर छाई रहती। उससे छुटकारा पाने के लिए मैं जो तोड़ काम करता। काम की कोई कमी नहीं थी। घर में दो बच्चे थे, दोनों गोद के। कोई भी दाईं या आया उनके यहां टिक नहीं पाती थी—रोजाना धदलती रहती थी। नतीजा इसका यह कि बच्चों की देखभाल भी ज्यादातर मेरे ही सिर पड़ती। रोज मैं उनके पोतड़े धोता और हफ्ते में एक बार जदार्नों झरने पर जाकर कपड़े पछाड़ता। वहां घोबिनें मेरी हसी उड़ातीं

“यह तू क्या औरतो का काम कर रहा है?”

कभी-कभी, बिड़बड़, गीले कपड़ों के कोड़े से मैं उनकी जबर लेता। कोड़े का जवाब वे भी कोड़े से देतीं। बड़ा मजा आता और उनके साथ खूब जो लगता।

जदार्नों झरना गहरी खाई में बहता था। यह खाई ओका नदी की ओर निकलती थी और वहां नगर से एक भंडान अलग कर देती थी जिसका नाम प्राचीन स्लाव देवता के नाम पर—यारीलो—था। ईस्टर के बाद सातवे सप्ताह में ब्रह्मर्षि के दिन नगर निवासी इस भंडान में जमा होते और सेदिक उत्सव मनाते थे। नानी ने मुझे बताया था कि उसकी युवावस्था तक लोग यारीलो देवता को मानते थे और उसकी पूजा किया करते थे। वे एक पहिए पर कोलतार में डुबोया पटुआ लपेटते और घाग लगाकर उसे पहाड़ी पर से लुढ़का देते थे। लोग खूब शोर मचाते और गीत गाते। अगर पहिया ओका नदी तक पहुंच जाता तो समझते कि यारीलो ने उनका पूजन स्वीकार कर लिया है, प्रीष्म ऋतु इस बार बहुत बढ़िया होगी, और घर घर बसंत छा जायेगा।

अधिकार घोबिनें यारीलो भंडान में रहती थीं। घुर्ती उन सब में कूट कूटकर भरी थी और कतरनी की भांति उनकी जवान चलती थी। नगर के जीवन की एक एक बात उन्हें मालूम थी और दुकानदारों, प्लकों

* रूस में कपड़े धोने का नाम देवल स्त्रिया बरती थी।—स०

और अफसरों के बारे में, जिनके यहाँ वे बपड़े धोती थीं, उनकी कहानियाँ बहुत ही दिलचस्प होती थीं। जाड़ा के दिना में जब झरने का पानी बर्फ की भाँति ठंडा हो जाता तो बपड़े पछाड़ना बड़ा जालिम काम मालूम होता। स्त्रियों के हाथ सुन हो जाते और खाल तडकने लगती। लकड़ी की नाद पर, जिसमें पानी बहकर आता था, झुके झुके कमर अकड़ जाते। सिर पर लकड़ी की एक गिरी पड़ी सी छत थी जो न तो हवा से ऊँकी रक्षा कर पानी थी, न हिमकणों की बौछारों से। उनके चेहरे लाल और पाला झारे हो जाते, दुखती हुई उगलियों के जोड़ काम करने से इनकार कर देते, आँखों से पानी बहता, लेकिन उनका बहना फिर भी एक क्षण के लिए बंद न होता, वे बराबर बतियाती रहतीं, ताड़ी से ताड़ी घटनाओं के बारे में एक दूसरे से चर्चा करतीं, और लोगो तथा दुनिया भर का चीजों का निबटारा करने में असाधारण साहस का परिचय देतीं।

बात करने में नताल्या कोवलोव्स्काया उनमें सबसे तेज थी। प्रायु तीस से कुछ ऊपर, ताड़ी और हृष्ट पुष्ट, अबान आस तीर से तेज और लचकीली, और खिल्ली उड़ाती सी आँखें। जब वह बोलती तो सबके कान उसकी ओर लग जाते, जब कोई बात सिर पर आ पड़ती तो सब उसमें सनाह लेनीं और काम में दक्ष होने के कारण सब उसकी इज्जत करतीं। इसके अभाव में उसकी इज्जत करने के कारणों में यह भी था कि वह बहुत ही साफ सुधरे और सुघड ढंग से कपड़े पहनती थी, और यह कि वह अपनी लडकी को पढ़ने के लिए स्कूल में भेजती थी। वा सीवा भर गीले कपड़ों के बोझ से झुकी, पय की रपटन से बचती, जब वह आती तो सबके चेहरे खिल जाते और वे हमदर्दों के साथ पूछतीं

“तुम्हारी लडकी तो मजे में है न?”

“हा, अच्छी तरह है। पढ रही है। भला करें भगवान!”

“मेम बनेगी, है?”

“इसीलिए तो स्कूल में भर्ती कराया है। साहबों की लाली, कहाँ से आ ली? सब हम मूल शरीरों में से ही तो, और कहाँ से? सारी बात विद्या की है, जितनी ज्यादा विद्या, उतने लंबे हाथ, उतना ज्यादा समेट लेगा इसान, और जिसने ज्यादा ले लिया, उसने मामला जीत लिया भगवान तो भेजता है हमें दुनिया में नादान बच्चे बनाकर, वापस मागता है अबलमद मूँड़े, मतलब पढ़ना चाहिए!”

सहज विश्वास के साथ, बिना किसी दुविधा के, उसके मह से गब्दो की धारा निकलनी और सब, एकदम चुप होकर उसकी बातें सुनतीं। मुह पर वे उसकी तारीफ करतीं और उसकी पीठ के पीछे भी। उसकी गविन, लगन और चतुराई देखकर वे चकित रह जातीं। लेकिन उस जमा बनने की बात किसी को न सूझती। कोहनी तक अपनी बाहों की हिफाजत करने और अपनी आस्तीनों को भोगने से बचाने के लिए उसने उनपर फुनबूट के ऊपरी चमड़े को काट छाटकर सी लिया था। यह देर सभी ने उसकी सूझ-बूझ की सराहना की, लेकिन अच्य किसी ने अपने लिए ऐसा नहीं किया और जब मैंने किया तो सबने मेरा मजाक उड़ाया।

“हो-हो-हो, महरिया की नकल करता है।”

उसकी लडकी के बारे में वे कहतीं

“कौन बड़ी बात है। क्या हुआ, एक मेम और हो जायेगी, यही न? और कौन जाने, पढाई पूरी भी होगी, पटले ही मर गई, तो ”

“पढे लिखे ही कौन सुखी हैं? वो बाखीलौव की लडकी तो पढ़ती रही, पढती रही। और फिर आप ही जाकर मास्टरनी बन गई। और मास्टरनी कहा ब्याहेगी ”

“और नहीं तो क्या! ब्याहनेवाले तो अनपढी को भी ले जायेंगे, बस लेने को कुछ होना चाहिए ”

“लुगाई की अक्ल खोपडी में थोड़े ही रखी है ”

अपने ही बारे में जब वे इतनी निलज्जता से बातें करतीं तो बडा भजीब और अटपटा लगता। सनिको, जहाजियो और बेलदारो को स्त्रियो के बारे में दुनिया भर की उल्टी सीधी बातें करते में सुन चुका था, और पुरुषो को आपस में डोंग मारते और इस बात से अपने पुरुषत्व की माप करते भी मैं देख चुका था कि कितनी स्त्रियो को उन्होंने उल्लू बनाया। उन की बातों और व्यवहार में ‘घाघरा यग’ के प्रति दुश्मनी का भाव साफ झलकता, लेकिन जब कभी भी मैं किसी पुरुष के मुह से उसकी ‘विजयो’ का वणन सुनता तो मुझे लगता कि यह डोंग मार रहा है, उसकी बातों में सचाई कम है और ध्यथ का तूमार अधिक्।

घोबिनें एक दूसरे से अपने प्रेम के क्रिस्तो का बखान नहीं करती थीं, लेकिन पुरुषो का जब वे जिन करतीं तो उतने हसी उडाने और

बदला लेने का भाव क्षलकता जो इस कथन की पुष्टि करता कि लुगाईं में सचमुच एक ऐसी ताकत है जिसे मात देना आसान नहीं है।

“मद कहीं भी जाये, किसी के साथ भी रहे,” नताल्या ने एक दिन कहा, “पर घूम फिरकर औरत के तलुवे ही चाटेगा।”

“तलुवे नहीं चाटेगा तो और क्या करेगा!” एक बूढ़ी धोबिन ने फटे बास जसी आवाज में कहा। “साधु-सन्यासी तक पूजा-पाठ छोड़ औरत के पीछे खिंचे चले आते हैं!”

पानी की सुबकती छपाछप और बपडों के पछाड़ने की आवाजों के साथ बाता का यह सिलसिला चलता रहता और खाई में तल पर, इस सबाथ भरी दरार में जिसे जाड़े की बफ तक अपनी शुद्ध बावरा से ढक नहीं पाती, निहायत नगे और कुत्सापूण ढग से जन-भृष्टि के उस महान रहस्य का परदा उघाड़ा जाता जिसके फलस्वरूप सभी जातियों और सभी कयीलो का इस दुनिया में आना सम्भव हुआ है। उनकी ये बातें मुझमें भयावनी घणा पदा करतीं और मेरे विचारों और भावनाओं को ‘इश्क’ की बाता से दूर भगातीं, जिससे मैं बुरी तरह से घिरा हुआ था। मेरे मन में यह बात घर कर गयी कि ‘इश्क’ का मतलब ही गरी, कामुकता भरी बात है।

यह सब होने पर भी खाई में धोबिनों के साथ, या रसोईघरों में अफसरा के अरदलियों अथवा तहलानों में बेलदारों के साथ, समय बिताना मुझे कहीं अच्छा लगता। इसके मुकाबले में मालिकों के घर पर बोलने घालने, सोचने और घटनाओं की एकरूपता केवल शोभिल तपा शीघ्र भरी ऊब पदा करती थी। मालिकों का जीवन क्या था, एाने पाने, सोने और बीमार पडने का एक बृत्तित चक्र था, या खाने की तयारियां ही रही हैं, या सोने की, बातें पाप और नीत की ही करते थे, उससे वे बहुत डरते थे, घबकी में डाले दानों का सा उनका जीवन था, हर घड़ी यह डर कि अब पाट तले पिसे कि पिसे।

काम से छुट्टी मिलने पर मैं बाहर सायबान में चला जाता और लकड़ियां चीरने लगता। इस तरह मैं अकेले रहने का प्रयत्न करता, लेकिन बहुत कम सफल हो पाता अफसरा के अरदली, अदबदार, या घमश्ते और अहाते के जीवन के बारे में बातें शुरु कर देते।

इन अरदलिया में से दो, येरमोलिन और सोवारीव, अफसर मेरे

पास आते थे। येरमोखिन कलूगा प्रदेश का रहनेवाला था। लम्बा कद और कंधे झुके हुए, छोटा सिर, आँखें घुघुली और उसका समूचा शरीर, ऊपर से नीचे तक, मोटी और मजबूत शिराओं का ताना-बाना मालूम होता था। वह काहिल और इतना बेवकूफ था कि उससे तबीयत भना जाती थी। चाल-ढाल में वह बेढंगा और सुस्त था। जब किसी स्त्री को देख लेता तो मिमियाने लगता और आगे की ओर यो झुकता मानो अभी उसके पावों पर गिरकर डेर हो जायेगा। बावचिनो और नोकरानियो पर वह इस तरह आनन-फानन डोरे डालता कि अहाते में सभी चकित रह जाते। सभी उससे ईर्ष्या करते, और भालू जसी उसकी शक्ति से भय खाते। सीवारोव तूला का रहनेवाला था। बुचला-पतला और कडियल। वह हमेशा उवास सा रहता, बबे हुए स्वर में बात करता, और सहमा हुआ सा खासता-खसाराता। उसकी आँखों में जैसे डर झलक मारता और वे हमेशा अंधेरे कोनों की खोज करतीं। चाहे वह फुसफुसाकर बातें करता ही, या एकदम धुप बठा हो, उसकी आँखें हमेशा सबसे अंधेरा कोना पोजतीं और वहाँ चिपकी रहतीं।

“इधर क्या देख रहा है?”

“हो सकता है, कोई चूहा उधर से निकल आये। मुझे चूहे पसंद हैं—धुपवाप इधर-उधर भागते रहते हैं।”

अरबली मुझे चिट्ठिया लिखवाते, कभी अपनी प्रेमिकाओं के नाम, कभी अपने घर वाला के नाम जो देहातो में रहते थे। मुझे चिट्ठिया लिखना अच्छा लगता, खास तौर से सीवारोव की चिट्ठिया लिखने में मेरा खूब जी लगता। हर शनिवार के दिन वह अपनी बहन के नाम चिट्ठी लिखाता, जो तूला में रहती थी।

वह मुझे अपने रसोईघर में ले जाता और एक मेज पर मेरी बगल में बठ जाता। अपने सफाचट सिर को तेजी से खुजलाता और मेरे कानों में फुसफुसाता

“हा ता अब शुरू कर। सबसे पहले तो सिरि नामा लिख ‘मेरी अत्यन्त पूजनीय बहन, भगवान तुम्हें सदा खुश रखे,’—और जो सब लिखना चाहिये। अब आगे लिख ‘तुमने जो सबल भेजा था सो मुझे मिन गया, लेकिन यह तुमने ठीक नहीं किया, आगे तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, और इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। यहाँ किसी चीज

की जरूरत नहीं है, मैं बहुत अच्छी तरह से हूँ—असल में तो किंगी कुत्ता से भी बदतर है, पर तू यह नहीं लिये, लिये कि अच्छी है! वो तो अभी छोटी है—कुल चौदह साल की—उसे यह सब क्या जानना? अब आगे अपने आप लिये, जैसे तुझे सिलाया गया है ”

और वह मेरे कंधे पर झुक जाता। उसके मुह से निराली बड़बुद भरी गम सास मेरे मुह पर आती और वह बराबर फुसफुसाकर कहता

“और यह भी लिये दे कि यह लडकी को अपने पास न फटकने दे, छातिया या और कहीं पर उनकी हवा तक न लगने दे। और लिये कि कभी किसी की मौठी धातों के बहकामे में न आये। अगर कोई मौठी धातें करे तो समझे कि यह उसे जलू बना रहा है, और उसका नास करने का जाल रच रहा है ”

जासी रोकने के भारी प्रयास में उसका भूरा चेहरा लाल हो उठता, उसके गाल कुप्पा से हो जाते, आंखों में आंसू आ जाते, वह कुर्सी पर कुलबुलाता और मुझे धपेलता।

“तुम धार-धार मेरा हाथ हिंसा रहे हो!”

“कोई धात नहीं, लिखता जा ‘साहब लोगो से खास तौर से बचकर रहना। ये पहली धार में ही मिट्टी खराब कर देते हैं। वे कुछ इस ढंग से चिकनी चुपडी धातें करते हैं कि एक धार अपने जाल में पसाने के बाद तुम्हें वे बसबिन बनाकर ही छोड़ेंगे। अगर तुम हबल जोड़ लो तो उसे पादरी के पास जमा करा देना, लेकिन यह देख लेना कि पादरी ईमानदार हो। अच्छा तो यह होगा कि उसे कहीं जमीन में गाडकर छिपा दो ताकि किसी की नजर न पड़े, और जिस जगह गाडो, उसे भूल न जाओ।”

खिडकी के एक हिस्से में लगी टीन की फिरकी की जरखराहट में डूबी उसकी फुसफुसाहट हृदय को बुरी तरह कुरेवती है। सिर उठाकर मैं धालिल लगे अलावघर और बरतन रखने की अलमारी की ओर देखता हूँ जिसे भविष्यो के दाग धब्बों ने रंग रखा है। रसोई क्या है, गदगी का घर है। छटमत्तो की भरमार है और घुए, मिट्टी के तेल और जली हुई चर्बी की गंध से भरा है। अलावघर के ऊपर रखी छिपटिया में तिलचट्टे गरसरा रहे हैं। मेरा हृदय धोखिल और उदास हो रहा है, और इस

प्ररोव तिपाही तथा उसकी बहन पर तरस के मारे आँखों में आसू उमड़ रहे हैं। क्या इस तरह जीना ठीक है, उचित है?

सीदोरोव की फुसफुसाहट से बेखबर में लिखता ही जाता हूँ। लिखता हूँ कि जीवन कितना बौद्धिक, कितने दूद और दुःखा से भरा है। और वह ठंडी साँस लेते हुए बोलता है

“तूने डेर सारा लिख दिया, शुक्रिया। अब उसे मालूम ही जायेगा कि किन किन चीजों से उसे डरना चाहिये ”

“किसी भी चीज से डरना नहीं चाहिये!” मैं झुझलाकर कहता हूँ, हालांकि मैं खुद भी कितनी ही चीजों से डरता हूँ।

खासते हुए वह हसता है और बोलता है

“तू निरा घुगड़ है! डरे बिना भला क्ये रहा जाये? साहबों का डर, भगवान का डर और कम चीजें हैं डरने की क्या?”

जब उसे अपनी बहन का धत मिलता तो वह लपका हुआ मेरे पास आता। कहता

“जरा जल्दी से पढ़कर सुना सो ”

और निराशाजनक हृद तक छोटे तथा बेकार उस धत को जिसकी लिखावट समझना अच्छा-खासा भुक्तिक काम होता, वह मुझसे तीन बार पढ़वाकर सुनता।

वह दयालु और नम स्वभाव का आदमी था। लेकिन स्त्रियों के प्रति उसका रवया भी घसा ही था जसा कि दूसरे लोगों का—अनगड और आदिम। चाहे अनचाहे इन सबघों को देखते हुए, जो अकसर मेरे आँसों के सामने ही विस्मयकारा तथा घृणित तेजी के साथ शुरू से धत तक विकसित होते थे, मैं देखता कि किस तरह सीदोरोव औरत के सामने अपने कठोर सनिक जीवन का रोना रोकर उनके हृदय में सहानुभूति जगाता, कसे इस ध्यार भरे झूठ से औरत को नशा चढाता और बाद में धेरमोलिन से अपनी विजय का विक्र करते समय झूठ बनाकर वह इस तरह धयोन पर धूकता मानो उसने कोई बडवी दवा पी हो। यह देखकर मेरे कलेजे को चोट लगती और मैं गुस्से में भरकर तिपाही से पूछता कि क्यों वे सब औरतों को धोखा देते हैं, उनसे झूठ बोलते हैं और बाद में उनकी खिल्ली उडाते हुए उन्हें एक के बाद दूसरे के हाथों में उछालते हैं, और अकसर उन्हें मारते-पीटते भी हैं?

वह धीमे धीमे हसता और बोलता

“तेरे लिए इन सब याता की साक साक करना ठीक नहीं। ये बातें बुरी हैं, सोलहो भ्राना पाप हैं। तू अभी बहुत छोटा है। अभी तेरा समय नहीं आया ”

लेकिन एक दिन मैंने उसे सीधा और साफ जवाब देने पर विवश कर दिया। और उसका यह जवाब मैं उम्र भर न भूला।

“तेरी समझ में औरत यह नहीं जानती कि उसे उल्टू बनाया जा रहा है,” आंख मारकर पलारते हुए उसने कहा। “वह इसे खूब अच्छी तरह जानती है। वह खुद चाहती है कि उसे उल्टू बनाया जाये। इस मामले में सभी झूठ बोलते हैं। ऐसा है यह मामला, सभी को गम मालूम होती है न? असलियत यह है कि कोई किसी से प्रेम नहीं करता, केवल मजे के लिए यह सब करते हैं! और यह एक बहुत ही गमनाक बात है कुछ दिन की फूसर और है, बड़ा होने पर खुद तू भी यह सब सोल जायेगा। रात का अंधेरा इसके लिए जरूरी है, और अगर दिन हो सब भी किसी अंधेरे कोने की जरूरत पड़ती है। इस बात पर भगवान ने आदम और हीया को स्वर्ग से निकाल दिया, और इसी की वजह से दुनिया में सभी दुखी हैं ”

यह सब उसने कुछ इतना खुलकर, सच्चे और उदास हृदय से कहा कि उससे एक हृद तक मैं उसके इशको को बर्दाश्त करने लगा। उसके साथ मैं जितना धुलमिल गया, उतना घेरमोजिन के साथ नहीं। घेरमोजिन से तो मैं घुणा करता था। उसकी भाक में बम करने और उसका मजाक उड़ाने से कभी नहीं चूकता था। मेरा तीर निशाने पर बठता और घेरमोजिन, मेरी जान का दुश्मन बना हुआ, बहुधा अहाते में मेरे पीछे झपटता, लेकिन उसका बेढगापन साथ न देता और मैं साफ निकल भागता।

“इसकी धनाई है।” सीवोरोव कहा करता था।

यह बजित है, यह तो मैं भी जानता था, लेकिन मानव की सारी मुसीबत और दुःख दद की जड भी वही है, यह बात मेरे गले के नीचे नहीं उतरती थी। यह देखते हुए भी कि लोग दुखी हैं, मैं इसपर विश्वास नहीं कर पाता था, क्योंकि उस असाधारण चमक से मैं परिचित था जो प्रेम में पड़े स्त्री-मुखों की आंखों में दिखाई देती थी। मैं प्रेमी प्रेमिकाओं की अद्भुत हार्दिकता महसूस कर चुका था। हृदय का यह उत्सव देखना सदा प्रिय लगता था।

फिर भी जीवन और भी अधिक बोझिल, और भी अधिक क्रूर होता लग रहा था। लगता था कि जीवन सदा सदा के लिये उन सम्बन्धों और रूपों में जकड़ा हुआ है जिन्हें मैं आये दिन देखता रहा था। जो कुछ हर रोज घटलता के साथ आला के सामने आता रहता है, उससे अच्छा भी कुछ हो सकता है, ऐसी सभावना का विचार भी नहीं आता था।

लेकिन एक बार सनिको के मुह से मैंने एक ऐसी घटना सुनी जिससे मेरा हृदय बुरी तरह झनझना उठा। हमारे अहाते के ही एक पलट में एक कटर रहता था। वह नगर के सबसे अच्छे बर्जों की दुकान पर काम करता था। वह शान्त स्वभाव का बहुत ही भला आदमी था। वह इसी नहीं था। उसकी पत्नी एक छोटी सी औरत थी—ककतदम, न धोई बच्चा, न कच्चा। दिन भर किताबें पढ़ा करती। शोर-गुल भरे अहाते में शराबियों से भरे घरों में वे दोनों अदृश्य और शांत जीवन बिता रहे थे। वे कभी किसी को अपने घर नहीं बुलाते, न ही खुब कहीं जाते, एक रविवार को छोड़कर जब थिएटर देखने के लिए वे बाहर निकलते।

पति लड़के ही काम पर चला जाता, और गई रात लौटता। उसकी पत्नी जो देखने में चौबह पंद्रह साल की लड़की मालूम होती थी, सप्ताह में दो बार दोपहर के समय पुस्तकालय जाती। छोटे छोटे ढग भरती, ढगमगाती हुई, मानो लगझाती ही, स्कूली लड़कियों की सी सीपी साड़ी, प्यारी, नयी, साफ, छोटे छोटे हाथों में दस्ताने पहने और पुस्तक उठाये जब वह गली में से गुजरती तो मैं उसे देखा करता। चिड़िया जता उसका चेहरा था, और छोटी छोटी चपल आंखें। वह सारी इतनी गुदर थी मानो तार पर रखी जानेवाली चीनी की गुड़िया। सनिको का कहना था कि उसके दाहिने हाथ की एक पसली गायब है, इतीविय क्या समय वह इस अजीब ढग से ढगमगाती है। लेकिन मुझे यह त्रिय लगता और वह हमारे अहाते में रहनेवाली अय महिलाओं—अज्ञानों की भीवियां से एकदम भिन्न लगती। अपनी ऊंची धावाव, रंग-दिरग कपड़ों का साधनू ये स्त्रिया घिसी हुई सी लगती थीं माना ये अज्ञानों की भी बहार को चीना के बीच देर तक भूली बिसरी पड़ी थीं हैं।

अहाते में कटर को छोटी सी पत्नी नीचे पाण्य मारी जानी थी। लोग का कहना था कि किताबों में उच्च अज्ञान विभाग था दिव्य व और वह इस लायक भी नहीं रही कि उन का कोई काम कर सके।

पति ही खुद बाजार से सौदा-मुल्क लाता है, खुद बावचिन को खाने का आदेश देता है। यह बावचिन भी कोई गर-हसी थी—भारी भरकम और नकचड़ी। उसकी एक लाल आंख थी जो बराबर बहती रहती थी और दूसरी आंख की जगह एक पतली गुलाबी पट्टी ही थी। घर की मालकिन का यह हाल था कि वह—पड़ोसियों के शब्दों में—सुमर मास और गोमास तक में तमीज नहीं कर सकती थी। एक दिन वह बाजार गई और गाजर के बजाय मूली खरीदकर खूब बेवकूफ बनी।

तौबा, तौबा, जरा सोचो तो भला!

वे तीनों ग्रहाते में पराये से लगते थे मानो योही, सयोगवग, मुगियों के इस बड़े दरजे में आ टपके हो, आकाश में उड़नेवाले उन पक्षियों की भांति जो बर्फीली हवा के थपेड़ी से बचने के लिये रोगनदान के रास्ते लोगो के किसी गढ़े और दमघोट निवास में घुसकर शरण लेते हैं।

और अचानक अरदलियों के मुह से मैंने सुना कि कटर की इस छाटी सी पत्नी के साथ उनके अफसर एक बहुत ही कमीना और बेहूदा सख खेल रहे हैं विला नागा, करीब-करीब हर रोज उनमें से कोई उसके नाम परवाना भेजता, अपने प्रेम और हृदय की खबर-खुबर का राग अलापता, उसकी खूबसूरती को तारोफ के पुल बाधता। जबकि वह लिखती कि मुझे बहसो। इस बात पर वह दुख प्रकट करती कि उसे लेकर उनके हृदय की यह हालत हुई, और कामना करती कि भगवान उन्हें शीघ्र ही इस रोग से छुटकारा दिलाए। उसका ऐसा पत्र पाते ही सब अफसर जमा होकर उसे पढ़ते, जो भरकर हसते, और फिर सब मिलकर नया पत्र लिखते जिसपर उनमें से कोई एक दस्तखत कर देता।

यह सब बताते समय अरदली भी हसने और स्त्री की टांग खींचने में पीछ न रहते।

“यह लगदी भी एकदम उल्लू है!” बेरमोलिन अपनी गहरी गूजती हुई आवाज में कहता और सोदोरोव धीमी आवाज में हामा भरता

“हरेक चुगाई चाहती है कि उसे कोई उल्लू बनाये। वह सब जानती है—”

मुझे यकीन नहीं हुआ कि कटर की पत्नी जानती है कि अफसर उसे उल्लू बना रहे हैं। और मैंने उसे तुरत खबर देने का निश्चय कर लिया। एक दिन, यह बेलकर कि बावचिन नीचे तहखाने में गई हुई है, पीछ

के जीने में सपत्नकर में उसके घर में चढ़ गया। रसोईघर में मीने प्रवेश किया, वह सालों था। फिर कमरा में गया। वहां कटर की पत्नी दिखाई पड़ी। एर हाथ में बदनदार मुनहरा प्याला और दूसरे में एक पुस्तक लिए वह मेज के पास बठी थी। डर के मारे उसने पुस्तक अपनी छाती से सटा ली, और धीमे स्वर में चीख उठी

“कौन है? देनो तो, भागुस्ता! कौन हो तुम?”

घटपटे से कुछ शब्द तेजी से मेरे मुह में निकले और मुझे लगा कि प्याला या किताब दोनों में से कोई एक चीख अभी मेरे सिर से आकर टकराएगी। बगनी रंग की बडी सी आरामकुर्सी पर वह बठी थी, आत्ममानी रंग का सबादा उसने पहन रखा था जिसमें नीचे झालर और गले तथा कलाईयों पर लेस लगी थी, और सुनहरे रंग के घुघराते बाल उसके कंधों पर लहरा रहे थे। ऐसा मालूम हाता था जैसे गिरजे के राजद्वार की मेहराब के फरिंतों में से एक यहां उतर आया है। आरामकुर्सी की टेक से चिपककर वह गोल-भटोल आला से नजर गड़ाकर मेरी ओर देखने लगी। पहले तो उसकी आंखों में गुस्से की लपक थी, फिर उसपर अचरज और मुसकराहट नजर आयी।

उसे सब कुछ बताने के बाद मैं साहस खोजकर दरवाजे की ओर मुड़ा।

“जरा ठहरो।” वह बिल्लाई।

प्याला उसने ट्रे में टिका दिया, किताब की मेज पर पटककर उसने हथेलियों का मिलाया और बड़े आदमी की नरपूर आवाज में बोली

“तुम भी कितने अजीब लडके हो— जरा इधर आओ।”

सहमा सा मैं उसकी ओर बढ़ा। उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया, और छोटी ठडी उंगलियों से उसे घपघपाते हुए पूजा

“क्या, मुझे यह सब बताने के लिये किसी और ने तो तुम्हें नहीं भेजा? अच्छा अच्छा, तुम्हारी बात का मैं यकीन करती हूँ, देखती हूँ कि तुम खुद अपने मन से ही यहां आए हो—”

उसने मेरा हाथ छोड़कर अपनी आंखों को बंद किया और धीमी, लिची हुई आवाज में बोली

“तो ये मुहजले फौजी मेरे बारे में इस तरह की वाही-तबाही बक्ते हैं।”

“आप यह जगह छोड़ क्या नहीं देतीं, यहाँ से कहीं और चली जाइये,” यज्ञ की भाँति मैंने सलाह दी।

“क्या ?”

“ये आपको तग कर मारेंगे।”

यह बड़े ही सुहावने ढंग से हसी, फिर पूछा

“क्या तुम पढ़ना लिखना जानते हो? तुम्हें पुस्तकें पढ़ने का धाय है ?”

“मुझे बसे ही फुरसत नहीं मिलती।”

“पढ़ने का धाय हो तो फुरसत भी निकाल ही लोगें। अच्छा तो अब जाओ— धयवाद !”

उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। झगड़े और उगली के बीच में चावी का एक सिक्का था। इस ठंडी चीज को लेने में मुझे गम आया, लेकिन मुझसे इनकार करते नहीं बना और लौटते समय मैंने उस सिक्के को जीने के खर्च पर छोड़ दिया।

गहरी और सवया नयी छाप लेकर मैं इस स्त्री के यहाँ ही लौटा। मेरे सामने मानो नयी उपा का उबय हुआ हो। कई दिन तक मुझपर उल्लास सवार रहा और उस खुले से कमरे तथा फरिश्ते की भाँति आसमानी लबावा पहने कटर की पत्नी की याद में मैं झूमता रहा। वहाँ की हर चीज में एक अनदेखा सौंदर्य था। उसके पाँव के नीचे गुबगुदा सुनहरा कालीन बिछा था और जाड़ो का ठिठुरा हुआ बिन, मानो उसके स्पर्श से अपने को गरमाने के लिए, स्पहली खिडकियो में से भीतर झाक रहा था।

मेरा मन उसे एक बार और देखने के लिए ललक रहा था। किताब मागने के बहाने अगर मैं उसके पास जाऊँ तो कैसे रहे ?

मैं गया, और उसे ठीक उसी जगह पर बठे देखा। इस बार भी वह अपने हाथों में एक किताब लिए थी। लेकिन इस बार उसके चेहरे पर लाल से रंग का हमाल बसा था, और उसकी एक आँख सूजा हुई थी। उसने मुझे काली जिल्द वाली एक किताब उठाकर दे दी और बुदबुदाकर कुछ कहा जो मैं समझ नहीं सका। भारी हृदय से मैं पुस्तक लेकर घसा भाया। पुस्तक में से क्रैयोसोट और अनीसीड बना की सुगंध आ रही थी। घर लौटने पर मैंने पुस्तक को एक कागज और साफ कमीज में लपेटा

श्रीर ऊपर जाकर अटारी मे छिपा दिया। मुझे डर था कि अगर पुस्तक मालिको के हाथ पड गई तो वे उसे नष्ट कर डालेगे।

मेरे मालिक "नीचा" पत्रिका भगते थे, यह इसलिये कि इसमे पोशाको के नमूने छपते थे और ग्राहको को मुफ्त उपहार मिलते थे। पत्रिका को वे पढ़ते कभी नहीं थे, केवल चित्रो को देखते और इसके बाद, सोने के कमरे मे, षपडे रखने की अलमारी के ऊपर उसे डाल देते। साल पूरा होने पर वे उसकी जिल्द बंधवा लेते और पलंग के नीचे छिपाकर रख देते जाहा "चित्र जगत" की तीन जिल्दें रखी हुई थीं। जब कभी मैं सोने के कमरे का फश घोता तो गदा पानी किताबो के नीचे चला जाता। इनके प्रलाधा मेरा मालिक "रूसी कोरियर" समाचारपत्र भी भगता था और सास के समय उसे पढ़ते हुए बडबडाता

"शतान जाने, यह सब क्या लिखते हैं! निरी बोरियत है" शनिवार के दिन षपडे भुलाने के लिये जब मैं ऊपर अटारी मे गया तो मुझे किताब का ध्यान हो आया। मैंने उसे बाहर निकाला, उसका कागड खोला और शुरू की पक्ति पर नजर डाली

"इंसानो की भाति घोरो की भी अपनी अपनी शकल होती है।" इसकी सचाई ने मुझे स्तब्ध कर दिया। मैंने आगे पढ़ना शुरू किया और रोशनदान से सटा उस समय तक पढता रहा जब तक कि ठड के मारे वहा बठे रहना असम्भव न हो गया। सास को जब मेरे मालिक गिरजे चले गए तो पुस्तक के साथ मैंने रसोईघर मे अडडा जमाया और पतझड के पत्तो की भाति पीले पडे उसके जीण पनो मे इतना डूब गया कि कुछ सुप न रही। उन्होंने मुझे दूसरी ही दुनिया मे पहुचा दिया, नये नामो और नये नाते रिश्तो की दुनिया मे, एक ऐसी दुनिया मे जिसमे नेक नामक भी थे और खल नामक भी—इस दुनिया के उन सभी लोगो से भिन्न जिहे मैं जानता-पहचानता और अपने चारो ओर देखता था। यह द-मोन्तेपिन का लिखा उपन्यास था। उनके सभी उपन्यासो की तरह यह भी लया तथा पात्रो और घटनाओ से भरे अजीब, द्रुत प्रवाही जीवन का चित्र था। उपन्यास मे हर चीज अश्चयजनक रूप से सीधी सादी और स्पष्ट थी मानो पक्तियो के पीछे कोई रोशनी छिपी हो जो हर बुरे और भले पहलू को उजागर करती, प्रेम और घृणा करने मे मदद देती तथा एकजाल मे घने फसे लोगो के भाग्यो के उतार चढाव पर अपत्तक नजर रखने को

खाना खाते समय मुह के साय-साय उनकी जवान भी घलती रही और मुझे भला-बुरा कहने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। जाने मनजाने मेरे सभी गुनाहों का उन्होंने जिक्र किया और मुझे चेताया कि मेरा अजाम बुरा होगा। लेकिन मैं जानता था कि उनकी सारी डाट फटकार के पीछे न तो कोई बुरी भावना है और न भली, बल्कि यह सब वे अपनी ऊब को डुबाने के लिए बोल रहे हैं। और यह देखकर मुझे बड़ा अजीब लगा कि पुस्तक के पानों के मुकाबले मैं वे कितने तुच्छ और कितने बेहूदा मालूम होते हैं।

खाना खाकर वे बोसित हो गये और यड़े-थके सोने के लिए घल दिए। बूढ़ी मालकिन, झुमलाहट भरी शिकायत से कुछ देर तक नगवान की नाक में दम करने के बाद अलावधर पर चढ़कर चित हो गईं। तब मैं उठा, अलावधर के नोबे से किताब निकाली और लिडकी के पास आया। उजली रात थी, आकाश में पूरा चाद चमक रहा था, लेकिन पुस्तक के छोटे छोटे अक्षरा को पठना मुश्किल था। हृदय में पढ़ने की ललक इतनी जोरदार थी कि उसे दबा न सका। बरतनों के खाने में से मैंने ताम्बे का एक पतीला निकाला और चाद की किरणों का उसपर जो अक्स पड़ा, उससे पुस्तक के पानों को चमकाने की कोशिश की। लेकिन चमकाने के बजाए पाने और भी धुंधले दिखाई देने लगे। तब मैं कोने में रखी बेंच पर लडा हो गया और देव प्रतिमा के दीये की रोशनी में पढ़ने लगा। जब अकान के भारे टांगे जवाब देने लगीं तो मैं वहीं बेंच पर पडकर सो गया। बूढ़ी मालकिन की चिल्लाहट और धूसों ने मुझे जगा दिया। केवल रात का लबादा पहने, नगे पाव, वह वहा खड़ी गुस्से में अपना साल वाला वाला तिर झटक रही थी। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था, मेरी पुस्तक अपने हाथ में लिए उसी से मेरे कंधों पर प्रहार कर रही थी, जिनसे बड़ा दद होता था। अलावधर के बगल में बने सोने के तख्ते से धीक्तर हूक रहा था

“ओहो, यह चिल्लाना बंद करो, मा! जीना हराम कर रखा है” मैं सोच रहा था कि अब किताब की खर नहीं, बिना फाड़े बुडिया दम न लेगी।

सुबह चाय के समय मेरी पेशी हुई।

“यह किताब कहा से लाया?” मानिक ने कड़े स्वर में सवाल किया।

स्त्रिया एक दूसरी को टोकते हुए चिल्ला रही थीं। बीचतर शक में भरा पुस्तक के पढ़ने सूघ रहा था और कह रहा था

“इसमें से तो इत्र की गंध आती है, खुदा की कसम ”

यह जानकर कि पुस्तक पादरी की है वे सब पुस्तक को उलट-पुलटकर देखने लगे और उपयास पढ़नेवाले पादरी पर झुझलाहट तथा अचरज उतारने लगे। इससे उनका गुस्सा कुछ हल्का पड़ा, हालांकि मालिक मुझे फिर भी देर तक समझाता रहा कि पुस्तकें पढ़ना नुकसानदेह और लतनाक है। बोला

“यही किताबें पढ़नेवाला ने तो रेल की पटरिया उड़ा दीं, लोगों को भारना चाहते थे ”

“तुम पागल तो नहीं हो गए!” भय और गुस्से भरी आवाज में मालिक ने पति पर चिल्लाया। “क्या कह रहे हो इसे?”

मौन्तेपिन भी पुस्तक लेकर मैं सनिक के पास पहुंचा और जो कुछ बोता था, सब उसे कह सुनाया। बिना कुछ कहे सीबोरोव ने पुस्तक को अपने हाथ में ले लिया, छोटा सा सड़क खोलकर उसने एक साफ तौलिया निकाला, पुस्तक को उसमें लपेटा और फिर उसे सड़क में छिपा दिया।

“उनकी बात मत सुन। यहां आकर पढ़ लिया कर। मैं किसी से नहीं कहूंगा,” उसने कहा, “और अगर तू आये और मैं उस समय नहीं मिलू तो कुजी देव प्रतिमा के पीछे लटकी होती है। सड़क खोल और पढ़ ”

पुस्तक के प्रति मालिकों के इस रवये ने मेरी आंखों में एकदम उसे गम्भीर और भयोत्पादक रहस्य की ऊँचाई पर उठा दिया। यह तथ्य कि ‘पुस्तकें पढ़नेवाले’ कुछ लोगों ने किताबों की हत्या करने के लिए रेल की पटरिया उड़ा दी थीं, मुझे विशेष दिलचस्प नहीं मालूम हुआ, लेकिन मुझे पाप-स्वीकारोक्ति के दौरान किया गया पादरी का सवाल याद आया। न ही मैं उस छात्र को भूला था जिसे मैंने निचले तल्ले के मकान में दो स्त्रिया के सामने पुस्तक पढ़ते देखा था, स्मूरी की याद भी मेरे दिमाग में ताजी थी जो ‘सही डग’ की पुस्तक का विक्रय किया करता था। साथ ही काली दूरी पुस्तकें पढ़नेवाले उन फीमसनो की भी मुझे याद हो आयी थी जिनका विक्रय करते हुए माना ने मुझे बताया था

“और उन दिना जब चार अलेक्सांद्र पाम्बोलीविच ईन्वर प्रदत्त गासन

की बागडोर अपने हाथों में सभाले थे, ऊँचे कुलीनी ने सावित्र का ऐसा जाल बिछाया कि इस की समूची जनता रोम के पोप के चंगुल में फँस जाती, काफिर वहाँ के! लेकिन भला हो जनरल आराक्चेयेव का, ऐन वक़्त पर आकर उसने सब को रंगे हाथ पकड़ लिया। उसने न किसी के भोटे का टपाल किया, न किसी की हैसियत का। बस, सब का पुलिदा बांधकर साइबेरिया के लिए रवाना कर दिया। गत सड़कर वे भी उसी तरह ख़त्म हो गये जैसे कि हर सड़ी गली धोख़ ख़त्म हो जाती है। ”

‘अम्बराकुलम में अगर तारे छिटके दिखायी दें’ भी मुझे धाद था, न ही मैं ‘गेरवास्ती’ और उन गम्भीर तथा खिल्ली भरे शब्दों को भूला था

“ऐ अज्ञानियों, हमारी सीलाओं को जानने को तुम उत्सुक, निष्काम नेत्र तुम्हारे देख न पायेंगे उन्हें कभी। ”

मुझे ऐसा मालूम हो रहा था मानो किसी महान रहस्य का भेद मेरी आँखों के सामने खुलनेवाला है और मैं इस तरह घूमता मानो मेरे सिर पर कोई भूत सवार हो। मैं पुस्तक को जल्दी से जल्दी ख़त्म करना चाहता था। साथ ही यह भय भी मेरे हृदय को बचोड़ता रहता कि सनिक के पास वह खो जायेगी या वह उसे किसी न किसी तरह ख़राब कर देगा। तब मैं कटर को पत्नी को क्या कहूँगा?

बूढ़ी मालकिन की नज़र सदा मेरा पीछा करती और इस बात की तारु शक में रहती कि कहीं मैं अरवली के पास न खिसक जाऊँ। वह मुझे बराबर डाँटती रहती

“किताबघाटू! जिसे बदमाशी सीखना हो वह बस किताबें पढ़ना शुरू कर दे। उस चुचमुही को देखो न जो हर घड़ी किताबा में ही डूबी रहती है, किताबों के पीछे जो अब घर के लिए सौदा-मुलफ लेने तक नहीं जा सकती। बस, अफसरो से चोचे लड़ाया करती है। क्या मैं नहीं जानती कि दिन वहाडे थे किस तरह उसके यहाँ जाते हैं। ”

मैं उतावला हो उठा कि चिल्लाकर बुढ़िया का मुँह बंद कर दू

“यह सफेद झूठ है! वह अफसरो से कतई चाचे नहीं लडाती!”

लेकिन कटर की पत्नी की हिमायत में मैं अजबान खोलने का साहस नहीं कर सका। मुझे डर था कि कहीं बुढ़िया यह न भाष ले कि पुस्तक में वहाँ से लाया है।

कटर की पत्नी को पुस्तके बेहद कीमती लगती थीं, और इस भय से कि बूढ़ी मालकिन उहे जला डालेगी मैंने उससे पुस्तके लेने का ह्याल तक अपने दिमाग से निकाल दिया, और उस दुकान से जहा नाश्ते के लिए मैं पावरोटी खरीदने जाता था, चटख रंग की छोटी छोटी पुस्तके साना शुरू कर दिया।

दुकानकार बहुत बदनूमा लडका था—मोटे मोटे हाठ, जब देखो तब पसोने मे लयपय, फोडे फुसियो के बागो और नशतरो से कटा फटा थसपल और लेई सा चेहरा, पीलिया आखें, और बाबो फूले हाथो की छोटी, भोडी उगलिया। साझ होते ही हमारे मोहल्ले के छोकरो और छिछोरी लडकियो का उस दुकान पर जमघट लगता। मेरे मालिक का भाई भी बीयर पीने और ताश खेलने के लिए लगभग हर साझ वहा पहुचता। साझ के खाने का समय होने पर मुझे अक्सर दीडाय़ा जाता कि लपककर उसे दुकान से बुला ला। एक से अधिक बार मैंने दुकान के पीछे एक छोटे से कमरे मे दुकानदार की साल गालो वाली और मोबर दिमाग बीबी को बीक्तर या और किसी छोकरे के घुटनो पर बठे देखा था। लगता था कि दुकानदार बुरा नहीं मानता। न ही उसे उस समय बुरा मालूम होता जब उसकी बहन, जो ग्राहको को निबटाने मे उसका हाथ बढाती थी, सनिको और गायको और अय सभी के साथ जो खरा भी इगारा करते, घूमा-घाटी पर उतर आती। दुकान मे बहुत ही कम बित्री का सामान दिखाई देता। पूछने पर मालिक बताता कि अभी नया-नया ही काम गुरू किया है और दुकान का ढर्रा बढाने के लिए उसे अभी तक समय नहीं मिला, हालाकि दुकान का कारबार उसने पतझड के दिनो मे गुरू किया था। वह अपने ग्राहका को गबो तस्वीरें दिखाता और हर किसी को, जो भी इसकी इच्छा प्रकट करता, गबो तुक्बदिया की नकल करने देता।

प्रति पुस्तक एव बोपेक खिराए के हिसाब से मैंने
 की पुस्तक पढ़ डालीं जिनमे कोई भी य... था।
 फिर इन पुस्तको के पढ़न मे
 धर्म्य बफादारी", "वेनिस का
 का मुठ, या तुफ मुबरी जो
 तरह का खिताबें मुझे
 श्यामा उटता। एसा

मेरी खिल्ली उड़ा रही हो। निहायत भोबी भाषा और एकदम बे सिर पर की असम्भव बातें उनमें भरी थीं।

“श्रेलत्ती”, “यूरी मिलोस्ताय्स्की”, “रहस्यमय सन्त”, और “तातार घुडसवार यापाचा”—ऐसी पुस्तकें मैं अधिक पसंद करता, कम से कम मेरे हृदय पर वे कुछ तो छाप छोड़तीं। लेकिन सत्रसे ज्यादा खुशी मुझे होती सन्तों की जीवनीया पढ़कर। इनमें गम्भीरता होती, उनकी बातों पर यकीन करने को जी चाहता, और कभी कभी तो वे हृदय में गहरी उबल-पुबल मचा देतीं। जाने क्यों, महान सन्तों के बारे में जब मैं पढ़ता तो मुझे ‘बहुत खूब’ का ध्यान हो आता, स्त्री सन्तों के बारे में पढ़ता तो नानी का चित्र आलो के सामने घूमने लगता और ऊचे पादरियों के घारे में पढ़कर मुझे उन क्षणा की याद हो आती जिनमें कि नाना अपने श्रेष्ठतम रूप में दिखाई देते थे।

पुस्तकें पढ़ने के लिए मैं ऊपर अटारी की शरण लेता या फिर सायबान में उस समय पढ़ता जब मैं वहाँ लकड़िया खीरने जाता। दोनों ही जगहें समान रूप से ठडी और तबलीफदेह थीं। कभी कभी अगर पुस्तक आस तीर से बिलचस्प होती या किसी वजह से मैं खुब उसे जल्दी से खत्म करना चाहता तो मैं रात को उठ बैठता और मोमबत्ती की रोशनी में पढ़ता। लेकिन बूढ़ी मालकिन की नज़रों से यह छिपा न रहा कि रात में मोमबत्तिया छोटी हो जाती हैं। नतीजा यह कि वह अब मोमबत्तिया को लकड़ी की खपच्ची से नापती और खपच्ची को कहीं छिपाकर रख देती। इस खपच्ची को मैं अबसर खोज निरालता और तोड़कर उसे भी जली हुई मोमबत्ती की लम्बाई का धना देता। जब कभी मैं ऐसा करने में घूक जाता और सुबह उठने पर वह देखती कि खपच्ची और मोमबत्ती की लम्बाई में अंतर है, तो रसोईघर में इस बुरी तरह गोर मचाती कि सारे घर को सिर पर उठा लेती। एक दिन उसकी आवाज सुनकर योक्तर झुमला उठा और उसने तल्ले पर से चिल्लाकर कहा

“यह टाय-टाय बंद करो मां, जीना हराम कर रखा है! वह मोमबत्तिया खट्टर जलाता है, न जलाए तो दुकान से लाई हुई पुस्तकें बर्ते पड़े। मुझे मालूम है! जरा अटारी पर जाकर देखो तो—”

बुढ़िया अटारी की ओर लपरी। एक पुस्तक उसके हाथ लगी जिसे उसने शोर शोरकर दिया।

कहने की जरूरत नहीं कि यह एक आघात था, लेकिन इसने पुस्तक पढ़ने की मेरी लगन को और भी तेज कर दिया। मुझे इसमें जरा भी सन्देह नहीं था कि चाहे कोई सत ही क्यों न इस घर में चला आए, मेरे मालिक लोग उसे भी सबक पढ़ाना और उसे अपने मनचोते साचे में ढालना शुरू कर देंगे। और यह वे अपनी ऊब को डुबोने के लिए करेंगे। अगर उन्हें कभी चीखना चिल्लाना, दूसरे लोगों पर फतवे कसना और उनका मजाक उड़ाना छोड़ देना पड़े तो वे गूगे ही जाए, बोलने के लिए उनके पास कुछ न रहे और उन्हें अपने आपे की मुघ रखने के लिए सहरी है कि आदमी दूसरों के प्रति कोई रवया अपनाये। मेरे मालिक लोग भय लोगों के प्रति केवल एक ही रवया जानते थे—सिखानेवालों और निंदा करनेवालों का रवया। अगर कोई अपने आपको खुद उनके साचे में ढालने की कोशिश करता तो वे इसके लिए भी उसे आड़े हाथों लेने से न चूकते। यह उनकी धुंड़ी में मिला हुआ था।

पढ़ने के लिए मुझे नित्य नये पतरे बदलने पड़ते। बूढ़ी मालकिन कई बार मेरी पुस्तकें फाड़ चुकी थी और अचानक मैं दुकानदार का कजदार हो गया—पूरे सत्तालीस कोपेक की भारी रकम का बोझ मेरे सिर पर लदा था। दुकानदार सुरत अदायगी के लिए तकाजा करता और धमकी देता कि पाबरोटी खरीदने के लिए जब मैं मालिकों के पैसे लेकर आऊंगा तो वह उनमें से काट लेगा।

"तब क्या होगा?" वह मुझे बोचते हुए पूछता था।

उससे मुझे इतनी घिन मालूम होती कि मैं बरदान्त न कर पाता। गायब उसने यह भांप लिया और दुनिया भर की धमकियां देकर मुझे सताने में यह आस मजा लेता। मेरे दुकान में याद रखते ही उसके मोचे सोंचे से चेहरे पर मुसकराहट का लेप चढ़ जाता।

"क्यों, मेरा कर्जा साया?" वह धीमे स्वर में बहता।

"नहीं।"

यह उसे डराता, वह अपनी भोहें चढ़ा लेता।

"नहीं? तो क्या बघहरी में तेरी गिन्यामत बर? ताकि तेरी मालिका हो जाये और तुम हवासात की सर बरनी पड़े?"

पसा बाने का कोई रास्ता नहीं था। जो पगार मुझे मिलती थी, यह नाना के हवाले कर दी जाती थी। मेरी सपना में नहीं आता था कि

क्या किया जाए। जब मैंने दुकानदार से कुछ दिन की और मोहलत मागी तो वह डबल रोटी की भांति मोटा और चौकट अपना हाथ आगे की ओर बढ़ाकर बोला

“सूम ले! मोहलत मिल जाएगी!”

लेकिन जब मैंने काउण्टर पर से बटखरा उठाकर उसके सिर का निशाना साधा वह डुबकी सी लगाकर चिल्लाया

“धरे, धरे, यह क्या करता है? मैं तो बस मजाक कर रहा था।”

मैं समझा था कि यह मजाक नहीं करता। उससे छुटकारा पाने के लिए मैंने चोरी करने का निश्चय किया। मेरे मालिक की जेबों में छुट्टा रेजगारी पड़ी रहती थी। सुबह कोट साफ करते समय यह मैं अक्सर देख चुका था। कभी-कभी जेब से निकलकर वह फश पर भी आ गिरती, और एक बार तो ऐसा हुआ कि एक सिक्का लुटकता हुआ जीने के बीच लकड़ियों के ढेर में जाकर ओझल हो गया। दूसरे कामों में इसका मुझे कुछ ध्यान नहीं रहा और मैं अपने मालिक को बताना भूल गया। बाद में, लकड़िया उठाते समय, धीस कोपेक का वह सिक्का मुझे मिला। जब मैंने उसे मालिक को लौटाया तो उसकी पत्नी बोली

“देखा तुमने? जेब में रेजगारी छोड़ने से पहले गिन तो लिया करो।”

“धरे नहीं, यह चोरी नहीं करेगा, मुझे विश्वास है,” मेरी ओर मुसकराकर देखते हुए मालिक ने जवाब दिया।

और अब, चोरी के अपने निश्चय को पूरा करने के लिए जब मैं आगे बढ़ा, मुझे मालिक के इन शब्दों और उसकी विश्वास भरी मुसकराहट का ध्यान ही आया। इससे मेरा काम और भी कठिन हो गया। कई बार मैंने उसकी जेब से रेजगारी निकाली, उसे गिना, और फिर उसकी जेब में ही डाल दिया। तीन दिन तक मैं अपने से सघप करता रहा, और इसके बाद सारा मामला एकाएक आसानी से तय हो गया।

“पेशकोव, तुझे आजकल ही क्या गया है?” अनायास ही मेरे मालिक ने मुझसे पूछा, “तू अपने आपे में नहीं दिखाई देता। क्या तबीयत खराब है?”

अपनी परेशानी का कारण मैंने साफ-साफ बता दिया।

“देता न, फिताबो ने तुझे किस उलझन में फसा दिया है,” भौंहे चढ़ाकर उसने कहा। “वे कोई न कोई मूसीबत जरूर खड़ी करेंगे—यह तो पक्की बात है”

उसने मुझे पश्चात् कोपेक का सिक्का दे दिया। साथ ही सखी से चेतान्नी दी

“देख, बीबी या मा के काना मे इसकी भनक तक न पड़े, नहीं ता तूफान बरपा हो जाएगा।”

इसके बाद, बहुत ही भले ढंग से हसते हुए, बोला

“तू अपनी धुन का पक्का है, शतान! लेकिन ठीक है, धुन का पक्का होना बुरा नहीं। बस, एक बात है। वह यह कि कितनाया को घता बताओ। नये साल से मे एक अच्छा अलवार मगा दूगा। उसे पडा करियो ”

श्रीर लो, हर सास चाय और भोजन के बीच, मैं अपने मालिका को “मोस्कोव्स्की लीस्तोव” पढ़कर सुनाने लगा जिसमे वाकोव, रोवशानिन, एव्निवोव्स्की और इसी तरह के अन्य कितने ही लेखकों के उपनास ऊब के मारे लोमा के हावमे के लिये छपते थे।

जोर जार से पढ़कर सुनाना मुझे अच्छा नहीं लगता था, इससे गन्दी का अर्थ पकड़ने मे बाधा पहुंचती थी। लेकिन मेरे मालिक लोग बड़े ध्यान से, थडालु लालच से सुनते, नायको की अवमाशी पर आह भरकर अचकचाते और गव के साथ एक दूसरे को कहते

“श्रीर हमे बेसो तो—चन से, गोर शराबे से दूर जी रहे हैं, कोई लेना-बेना नहीं, गुफ है भगवान तेरा।”

वे हर चीज को गलत समत कर बेते, प्रसिद्ध सुट्टेरे चूपिन के कारनामो को वे गाडीवान फोमा कुचीना के सिर मढ़ देते, नामो के बारे मे वे अदबदाकर गडबड करते और मैं जब उनकी भूलो और उलझावो को सीधा करके उनके सामने रखता तो वे अवरज मे भरकर कहते

“वाह, कसी याददाश्त है।”

अक्सर “मोस्कोव्स्की लीस्तोव” मे सेओनीद पावे की कवितायें भी छपतीं। मुझे वे बेहद पसद आतीं और मैं जह अपनी कापी मे उतार लेता। लेकिन मेरे मालिक कवि पर फतवे कसते

“दखो न, बुढ़ापे मे इसे कविता का शीक चर्चाया है।”

“उस जसा शराबी कबाबी और नीम पागल और बरेग भी क्या।”

स्पूजकिन और काउट मेमेन्तो-मोरी की कविताए भी मुझे बहुत अच्छी लगतीं, लेकिन बूढ़ी और छोटी बोनो मालकिनें इस राय पर अड जातीं कि कविता निरी बकवास है

“भाड और नाटकवालों के सिवा और कोई कविताओं में बाते नहीं करता।”

जाड़े की साक्षों, छोटा सा कमरा, जिसमें सास लेते दम घुटता, और मालिका की नखरें जो मुझपर जमी रहती, मेरा जी बुरी तरह उकता जाता। खिड़की से बाहर, मौत की भांति सनाटा खींचे रात फली होती, जब तब बर्फ के चटखने की आवाज आती और लोग, बर्फ से सुन मछलियों की भांति, मेज के इधर उधर गुमसुम बठ रहते। या फिर तेज हवा अपने पजों से दोवारों तथा खिड़कियों को नोचती शकशोरती और चीखती सनसनाती चिमनी में घुसती और नमदानों को षडखड़ाती। जो कसर रह जाती उसे बच्चों के कमरे से उनका रोना-डरना पूरा कर देता। मेरा मन भीतर ही भीतर उबलता उफनता और जी चाहता कि यहाँ से घुपघुप खिसक जाऊँ, और किसी अंधरे कोने में पहुँचकर भेंडिये की भांति झुकना शुरू कर दूँ।

मेज के एक छोर पर सिलाई या बुनाई का साम साम लिए त्रिप्या बठी होतीं, दूसरे छोर पर बीचतर अनमने भाव से उस नक्शे पर मुका रहता जिसकी कि वह नकल उतारता होता। बीच-बीच में वह चीखता भी जाता

“मेज न हिलाओ, शतान की कुमो! क्यों, इस घर में रहने भी बोगी या नहीं?”

कुछ हटकर एक बाजू मेरा मालिक बठा था। उसके सामने एक लम्बा-घोड़ा चौखटा रखा था। चौखटे में एक मेजपोश कसा हुआ था और वह सुई धागे से उसपर कसीदे का काम काढ रहा था। उसकी चपल उंगलियों के स्पश से लाल बेकडे, नीली मछली, बसन्ती तितलिया और पतझड के पीले पत्ते आकार ग्रहण कर रहे थे। ये डिजाइन खुद उसके बनाए हुए थे और उन्हें पूरा करते उसे तीन जाड़े बीत चुके थे। इस मेजपोश से अब वह पूरी तरह से उकता चुका था और अक्सर, अगर दिन में मैं खाली हाथ होता तो मुझे बुलाकर कहता

“चल, पेशकोव, यह मेजपोश तेरा इतजार कर रहा है। लग जा काम में।”

मैं कसीदा काढने की मोटी सुई उठाता और मेजपोश पर अपना हाथ भाजमाने लगता। अपने मालिक पर मुझे तरस आता और जैसे भी बनता,

मैं उसका हाथ बटाने की कोशिश करता। मुझे ऐसा लगता था कि वह नक्शे बनाना, कसीदे काटना, और ताश खेलना एक दिन वह छोड़ देगा और कोई दूसरा काम शुरू कर देगा, कोई ऐसा काम जो कुछ दिलचस्प हो, जो उसके उन सपना से मेल खाता हो जिसे कि वह कभी-कभी देखा करता। काम करते-करते वह एकाएक रुक जाता और अचरज के भाव से इस तरह उसकी ओर निहारता मानो वह कोई एकदम अनजानी चीज हो। उसके बाल उसकी भौंहों से हाथ मिलाते और उसके गालों का स्पर्श करते, मानो वह कोई सयासा हो।

“क्या सोच रहे हो?” उसकी पत्नी पूछती।

“यों ही,” वह जवाब देता और फिर अपने काम में जुट जाता।

मे मन ही मन अचरज करता कि भला यह भी कोई पूछने की बात है कि कोई क्या सोच रहा है? फिर इस तरह के सवाल का कोई जवाब भी क्या दे सकता है? एक शाम, एक ही वक्त में, बहुत सी चीजों के बारे में आइमी सोचता है—उन चीजों के बारे में जिसे कि उसकी आँखें इस समय देख रही हैं, उन चीजों के बारे में भी जिन्हें उसने कल या पिछले साल देखा था और इस तरह जितने भी चित्र आला के सामने उभरते हैं, सभी घुमते और उलझे हुए, बराबर चलायमान और हर घड़ी बदलते हुए होते हैं।

“ओस्कोव्स्की लीस्तोक” के ध्येय लेख साप्ता के लिये काफी नहीं पड़ते। मैंने मुझसे विद्या कि पलग के नीचे पड़ी पत्रिकाओं को पढ़ना शुरू किया जाये।

“वे भी कोई पढ़ने की चीज हैं?” छोटी मालकिन ने अविश्वास के साथ कहा। “उसमें सिखा तस्वीरों के और होता ही क्या है?”

लेकिन पलग के नीचे अनेला “चित्र जगत” ही नहीं था, “मोगोन्वोव” पत्रिका भी थी। उसे निकालकर हमने सात्तिपास दृष्ट उपयास “वाउट ल्यातिन-बाल्नीइस्की” पढ़ना शुरू किया। मेरे मालिक को इस उपयास का मूढ़ सा नायक बहुत पसंद आया। युवा रईस के मुसीबतों भरे कारनामों पर वह बेरहमी के साथ आसू निकल आने तक हसता और चिल्लाता

“ओह, कितनी मजेदार चीज है!”

“सब मनगड़न्त है,” उसकी पत्नी कहती यह दिखाने के लिये कि वह भी झपना दिमाग रखती है।

पलग के नीचे पड़े साहित्य ने मेरा एक बड़ा काम किया। इन परिघाषों को रसोदघर में ले जाने और उन्हें रात को पढ़ने का अधिकार देने जीत लिया।

मेरे सौभाग्य से युद्धिया बच्चों के कमरे में झपना विस्तर लगाने लगी—घाया ने रात दिन पीना शुरू कर दिया था। बीकटर को मेरे पढ़ने न पढ़ने की कोई चिन्ता नहीं थी। जब सब सो जाते तो यह चुपचाप कपड़े पहनता और सज पनकर सुबह तक के लिये बाहर रिसफ जाता। मोमबत्ती मुझे नहीं दी जाती, उसे झपने साथ दूसरे कमरे में ले जाया जाता और मैं बिना रोगनी के रह जाता। मोमबत्ती खरीद साने के लिए मेरे पास पैसे नहीं थे। तब मैं मोमबत्तियों के पिघले हुए मोम को चुपचाप बटोरने लगा और उसे एक खाली टोन की डिबिया में जमा कर देता। मोम के ऊपर देव प्रतिमा के बीचे में से कुछ तेल भी डाल लेता। फिर पागो को बटकर एक बत्ती बनाता और इस तरह तयार किए अपने लम्प को, जो रोगनी से अधिक पुष्पा देता था, छलावघर के ऊपर जमा देता।

भारी भरपम जिल्दों के पत्रों को जब मैं पलटता तो लम्प की नहीं लाल ली कपने और दम तोड़ने लगती। बत्ती बार-बार खिसककर पिघले हुए सुगंध भरे तरल मोम में डूबने लगती, और धुएँ से मेरी आँखें कड़ुवा उठतीं। लेकिन ये सब झगड़-बाधाएँ उस आनन्द में डूब जातीं जिसके साथ मैं तस्वीरा को देखता और नीचे छपे परिचयों को पढ़ता।

ये चित्र मेरे सामने दुनिया को फलाते और बढ़ाते जा रहे थे। उन्होंने उसे अदभुत नगरों, गगनचुम्बी पहाडा और सुंदर समुद्र तटा से सजा दिया। जीवन में एक सुंदर फलाव आ रहा था। भाति भाति के नगरा, लोगो और काम धयो की बहुलता धरती को और भी आक्यक बना देती, वह मुझे और भी रग बिरगो मालूम होती। अब बोलगा के उस पार के विस्तारो को देखते हुए मैं जानता था कि उनमे निरा सूनापन नहीं है। पहले इन विस्तारा को जब मैं देखता था तो अदबदाकर उदास हो उठता था अन्तहीन सपाट चरागाहें, काले धब्बो सी इषकी दुक्की झाडियाँ, चरागाहो से परे जगल की कटो फटो सी दीवार, चरागाहो के ऊपर घुघली सी ठडी नीलिमा। सूनी और उदास धरती। मेरा हृदय भी सूना हो जाता,

एक कोमल उदासी उसे मथती, सभी श्रमभंग भुरसा जाते, सोचने के लिए कुछ बाकी न रहता, आखें मूढ़ लेने को जी चाहता। वीरानी का यह आलम, हृदय की हर आकाशा को सोख लेता, आशा उसके स्पर्श से बेजान हो जाती।

चिजों के नीचे लिखे मजदूरों ने सीधी सादी भाषा में दूसरे देशों और दूसरे लोगों से मेरा परिचय कराया, अतीत और वर्तमान की बहुत सी घटनाओं के बारे में बताया जिनमें से कई मेरी समझ में न आतीं, और इससे मेरा हृदय कचोट उठता। कभी कभी, तीर की भाँति, कुछ विचित्र शब्द मेरे विभाग से आकर टकराते 'अधितास्त्रिकी', 'किलियश्म', 'चाटिस्ट' आदि। ये शब्द मेरे जी का जजाल बन जाते और मेरे विभाग में घुसकर इतना फलते बढते कि उनके सिवा और कुछ सुझाई न देता, और मुझे ऐसा लगता कि इन शब्दों के अर्थ का पता लगाए बिना मेरी समझ में कभी कुछ नहीं आएगा, मानो ये शब्द प्रहरियों की भाँति सभी रहस्यों के द्वार पर लड़े हों। बहुधा, समूचे के समूचे वाक्य मेरे विभाग में अटककर रह जाते, भास में घुसी फास की भाँति खटकते और मेरे लिए अर्थ किसी ओर ध्यान लगाना असम्भव कर देते।

एक दिन मैंने अजीब प्रकृतियाँ पढ़ीं

पहने हुए इस्पाती जामा
काला और मौत सा गम्भीर
हूणों का सरगना अतीला
रौंद रहा रेगिस्तानों को।

उसके पीछे उसके थोड़ा, काली घटा की भाँति, उमड़ उमड़कर गरज रहे थे

कहा है रोम,
कहा है शक्तिशाली रोम?

यह तो मैं जानता था कि रोम एक नगर है, लेकिन ये हूण कौन थे? मुझे अब इस रहस्य का उद्घाटन करना था।

अनुकूल अवसर देख मैंने अपने मालिक से पूछा।

“हूण?” उसने कुछ अचरज से कहा। “ग़तान ही जानता है कि यह क्या है? होगी ऐसी ही कोई बकवास”

फिर उसने नाराजी के भाव से सिर हिलाया

“पेशकोव, दुनिया भर का कबाड तूने अपने दिमाग में जमा कर लिया है, यह बहुत बुरा है।”

बुरा ही चाहे भला, मुझे तो इसका पता लगाना ही था।

मैंने अदाज लगाया कि हो न हो, फौज के पादरी सोलोव्योव को जरूर मालूम होगा कि हूण कौन थे। अहाते में मुठभेड होने पर मैंने उसके सामने अपना मसला पेश कर दिया।

वह एक मरियल सा आदमी था पीले रंग का, रोगी और सदा चिड़चिड़ा। उसकी आँखें लाल थीं, भौंहे नदारद और छोटी सी पीली बाढी।

“तुझे हूणों से क्या लेना?” अपनी काली साठी को धूल में धसाते हुए उसने उल्टे मुझे ही कुरेदा।

लेपिडनेट नेस्तेरोव के सामने जब मैंने अपना सवाल रखा तो वह जोरो से चिल्लाया

“क्या-आ-आ?”

तब मैंने दवाफरोश से पूछने का निश्चय किया। वह काफी मिलनसार मालूम होता था। समझदार चेहरा, भारी भरकम नाक जिसपर सुनहरा चश्मा चढा हुआ था।

“हूण,” दवाफरोश पावेल गोल्डबग ने मुझसे कहा, “किरगिजों की भाँति खानाबदोश जाति के लोग थे। अब वे नहीं हैं—सब के सब मर लप गए।”

मुझे बड़ी निराशा हुई और मुसलाहट ने मुझे घेर लिया, इसलिए नहीं कि हूण मर लपकर लोप ही गए थे, बल्कि इसलिए कि जिस शब्द ने मुझे इतना सताया, उसका अर्थ इतना साधारण और मेरे लिए इतना बेकार सिद्ध हुआ।

फिर भी हूणों का मैं बेहद वृत्तज्ञ था। उन्हें लेकर इतनी परेशानियों में से गुजरने के बाद शब्द मुझे कम सताने लगे। और भला ही अतीला का, उसकी वजह से दवाफरोश से मेरी जान-बहचान हो गई।

भारी भरकम और पण्डिताऊ शब्दों का सीधा-सादा अर्थ उसे मालूम था और हर रहस्य की कुजी उसके पास थी। हाथ की दो उंगलियों से वह अपने चश्मे को ठीक करता और मोटे शीशों के भीतर से धूरकर मेरी

आसो मे देखता और इस तरह बोलना शुरू करता मानो अपने शब्दो को, कोलो की भांति, वह मेरे दिमाग में ठोंक रहा हो

"शब्द, मेरे मित्र, उसी तरह होते हैं जैसे पड मे पत्ते, और यह जानने के लिए कि पत्ता का रूप रंग ऐसा ही क्यों है, किसी दूसरे प्रकार का क्या नहीं, यह जानना जरूरी है कि पेड किस प्रकार बढ़ता पनपता है, अध्ययन करना चाहिए। पुस्तके, मेरे मित्र, एक सुंदर बाग के समान हैं, जिसमे तुम्हें हर वह चीज मिलेगी जो सुहावनी और लाभदायक है "

बड़े-बूढ़ो के वास्ते सोडा और मगनीशिया लाने जिह हमेशा पेड और छाती मे जलन की शिषायत रहती थी, और छोटे के वास्ते लारेल का मरहम तथा अथ छोटी-मोटी दवाइयां लाने मुझे अक्सर दवाफरोग की दुकान के चक्कर लगाने पडते। दवाफरोग की नपी-तुली सीखो की बढीलत पुस्तकों के साथ मेरा लगाव और भी गहरा हो गया और अनजाने मे वे मेरे लिये उतनी ही अनिवाय हो उठीं जितनी कि एक शराबी के लिए बोदका।

पुस्तके मुझे एक दूसरी दुनिया की सर करातीं, जिसमे आशा-आकाशमों का सागर हिलोरें लेता, उसके भवर मे पडकर लोग भले से भले और बुरे से बुरे काम करते। लेकिन जिस तरह के लोगो को मैं अपने चारो और देखता था, उनमे न भले काम करने की सकत थी, न बुरे। किताबों मे जो कुछ लिखा था, उससे सबया भिन-एकदम अलग जीवन मे बिताते थे, और उनक इस जीवन में लोजने पर भी कोई दिलचस्प चीज बढ़ नहीं आती थी। जो हो, एक चीज मेरे दिमाग मे साफ थी-वह यह कि मैं बसा जीवन नहीं बिताना चाहता था, जसा कि वे बिताते थे

घिनो के नीचे मजमूनो से मुझे पता चला कि प्राग, लंदन और पेरिस मे, नगर के बीचोबीच, न तो कूडा-करकट के पहाड दिखाई देते हैं, न गद भरे नाले नवर आते हैं। वहा की सडके धोडी और सोधी होती हैं, और इमारतें तथा गिरजे सबया भिन। और वहा के लोग लम्बे जाडो के भारे पूरे छ महीना तक घरों मे बंद नहीं रहते, न ही वहां घत उपवास के पतालीस दिन होते हैं जिनमे नमकीन बदगोमी, खुमियों, जी के आटे, और अलसी के घिनौने तेल मे तरते घालुमो के सिवा और कुछ नहीं खाया जा सकता। घत उपवास के दिनों मे पड़ना गुनाह होता है इसलिए "चित्र जगत" को उठाकर रख दिया गया, और मुझे भी इस सुने उपवासी जीवन का अग बनने के लिए मजबूर किया

गया। अब, किताबों के जीवन से इस जीवन की तुलना करने के बाद, मुझे यह और भी बेरग, और भी बदनुमा मालूम होता। पुस्तकें पढ़ने पर मुझे लगता कि मेरी शक्ति बढ़ गई है, मैं अधिक स्वस्थ बन गया हूँ और मैं भारी लगन तथा ध्याना भूलकर काम में जुट जाता था, क्योंकि मेरे सामने अब एक लक्ष्य होता वह यह कि जितनी जल्दी काम खत्म होगा, उतना ही अधिक समय मुझे पढ़ने के लिए मिलेगा। अब किताबों के न रहने पर मैं सुस्त और काहिल हो गया था, खोया खोया सा धूमता, और एक ऐसी विकृत अंजवरी ने मुझे जकड़ लिया जिसका मुझे पहले कभी अनुभव नहीं हुआ था।

मुझे याद है कि उन्हीं नीरस दिनों में एक रहस्यमय घटना घटी। सास का समय था सब लोग सोने की तयारियाँ कर रहे थे। तभी बड़े गिरजे का घंटा एकाएक बजना शुरू हुआ। सपकाकर सभी लोग चौंके, और अचूरे कपड़ों में ही लिडकियों पर जा लड़े हुए।

“यह जतरे का घंटा है? क्या वहाँ आग लगी है?” वे एक दूसरे से पूछ रहे थे।

अब घंटों से भी लोगों के इधर-उधर डोलने और दरवाजों को बंद करने की आवाजें आ रही थीं। एक आदमी, घोड़े की लगाम धामे, बहाते में भाग रहा था। बूढ़ी मालकिन चिल्ला रही थी कि गिरजा सूटा गया है। मालिक ने उसका मुँह बंद करते हुए कहा

“चुप भी रहो, भा, साफ तो गुनाई दे रहा है कि यह जतरे का घंटा नहीं है।”

“तब फिर क्या है, वहाँ बड़े पादरी तो नहीं मर गए!”

धीक्तर अपने तहल्ले से नीचे उतर आया।

“मैं जानता हूँ कि क्या हुआ है, मुझे सब मालूम है,” कपड़े बदलते हुए वह बुदबुदा रहा था।

यह देखने के लिए कि कहीं आवाग में आग की दमक तो नजर नहीं आती, मालिक ने मुझे छटारी पर दौड़ा दिया। सपकाकर मैं ऊपर चढ़ गया और रोगनदान में से बाहर छत पर निकल आया। आवाग में वहाँ कोई साली नहीं दिखाई दे रही थी। गिरजे का बड़ा घंटा अभी भी उसी गति से स्थिर और पालामारे वायुमण्डल को गुंजा रहा था। उनींदा नगर धरती से बिपटा हुआ था। नजर की पहुँच में बाहर लोग बीट रहे थे

श्रीर उनके पावों के नीचे बर्फ के कचरने की आवाज आ रही थी। बर्फ पर गाड़ियों के दौड़ने की आवाज भी सुनाई पड़ रही थी। गिरज के बड़े घटे की आवाज हृदय की अधिकाधिकर कपा रही थी। मैं नीचे उतर आया। मैंने कहा

“नहीं, आग तो नहीं लगी है।”

मालिक ने मेरी बात को सुना-अनसुना करते हुए “टटटट” का आवाज की। वह कोट और टोपी पहने था। उसने अपना कालर ऊपर खींच लिया और अनिश्चयता के साथ जूतों में पाव डालने लगा।

“बाहर न जाओ! मेरी मानो, बाहर न जाओ” उसकी पत्नी ने रोकना चाहा।

“बकौ नहीं!”

धीकतर भी कोट और टोपी पहने था और यह कहकर सभी को बिदा रहा था

“मैं सब जानता हूँ”

जब दोनों भाई चले गए तो स्त्रियों ने मुझे समोवार गरम करने में जोत दिया और खुद खिडकियों पर जमकर बठ गईं। उसी समय मालिक ने दरवाजे की घटी बजाई, तेज डगो से चुपचाप ऊपर आया, बड़े कमरे का दरवाजा खाला और भरभराई सी आवाज में घोषित किया

“जार का कत्ल हो गया।”

“क्या कहा, जार की हत्या कर दी गई?” बुदिया ने चौंकर कहा।

“हा, कत्ल हो गया है। एक अफसर ने मुझे बताया। अब क्या होगा?”

इसी बीच धीवनर ने दरवाजे की घटी बजाई और अपना सबाना उतारते हुए झुमलाहट में बोला

“श्रीर मैंने तो सोचा था सड़ाई छिड गयी!”

इसके बाद सब शान्त होकर चाय पीने बठ गए और चौक-ने से होकर दबे स्वरों में बातें करने लगे। बाहर अब सनाटा छाया था। घटे का बजना बंद हो गया था। दो दिनों तक वे लोग लगातार फुसफुसाते रहे, कहीं बाहर जाते और उनके यहां भी लोग आते और बारीकी से साप किसी बात का बणन करते। मैंने बहुतेरा सिर मारा, लेकिन मैं समझ नहीं सका कि आखिर हुआ क्या है। मालिक समाचारपत्र मुझसे छिपाते

थे, और जब सीधोरोव से मैने यह सवाल किया कि बार को क्यों मार डाला गया, तो वह धीमे स्वर में बोला

“इस बारे में बातें करना मना है ”

समूची घटना जल्दी ही आई गई हो गई, आए दिन के जीवन की घिस घिस ने उसे पीछे डाल दिया, और इसके कुछ बाद ही एक बहुत ही अप्रिय घटना घटी।

रविवार का दिन था। परिवार के लोग सुबह की प्रार्थना में शामिल होने गिरजे गए थे। और मैं, समोवार गमनि के बाद, घर की सफाई करने में जुटा था। इसी बीच बड़ा बच्चा रसोईघर में धुस गया, समोवार की टोंटी को खींचकर उसने बाहर निकाल लिया और मेस के नीचे रेंगकर उससे खेलने लगा। समोवार के बीच के मलके में कीयले दहक रहे थे, जब सारा पानी निकल गया तो समोवार बुरी तरह गरमा गया और उसके जोड़ तड़कने लगे। दूसरे कमरे में मैने समोवार को गुस्से में भरकर प्रजीव धावाओं करते सुना। लपकवार में रसोईघर में पहुँचा। यह देखकर मैं काप उठा कि वह एकदम नीला पड़ गया है, और इस तरह काप रहा है मानो उसे निर्गो का दौरा पड़ा हो। जोड़ खुला नलका जिसमें टोटी लगी थी, निराशा से गरदन लटकाने आ, डवरुन एक बार खिसक गया था, हृत्पों के नीचे दिन बिघल गया था और बद-बूद टपक रहा था, और नीला काला पड़ा समोवार ऐसा भालूम होता था मानो वह नशे में धुस हो। जब मैने उसपर ठंडा पानी उबेला तो वह सनसनाया और उदास भाव से फश पर डह गया।

दरवाजे की घटी बजी। दरवाजा खोलते ही बूढ़ी ने पतला श्याल समोवार के बारे में किया

“समोवार तो तैयार है न?”

“हां, तयार है,” सक्षेप में जवाब देकर मैं चुन ११ गया।

भय और शम से कटकर ही मैने गायद धर भीतर गा उतर निजा था। लेकिन यह भी मेरी गुस्तापी में गायद ही गया और उमी हिन्द से मेरी सदा भी दुगुनी कर बी गई। मेरी निजा की गयी। इति-
देवदार की छिपटियो का इस्तेमाल निजा। इति-
लेकिन पीठ पर त्वचा में अनिजा २२५ गुन लगी हुए हैं

मेरी पीठ सूजकर तकिए की भांति हो गई, और अगले दिन दोपहर तक मेरे मालिक को मुझे लेकर अस्पताल जाना पडा।

डाक्टर इतना लम्बा और इतना पतला था कि देखकर हसी छूटती थी। उसने मेरी जांच की, और फिर गहरी, स्थिर आवाज में बोला "इस जुल्म को मैं सरकारी हैसियत से रिपोर्ट करूंगा।"

मालिक का चेहरा लाल हो उठा, वह पांव घसीटने लगा, फिर बुदबुदाकर उसने डाक्टर से कुछ कहा, लेकिन डाक्टर ने अपनी नजर से उसका सिर साधकर कहीं दूर देखते हुए दो टूक शब्दों में कहा

"नहीं, यह नहीं ही सकता।"

फिर मेरी ओर मुड़ा। पूछा

"क्या तुम शिकायत दर्ज कराना चाहते हो?"

मुझे बेहद बव हो रहा था लेकिन मैंने कहा

"नहीं। जल्दी से मेरा इलाज करो।"

मुझे दूसरे कमरे में ले जाया गया, मेव पर मुझे लिटाकर डाक्टर ने चिमटी से फासों को निकालना शुरू किया। चिमटी का ठंडा स्पर्श गुदगुदाता सा मालूम होता था। डाक्टर अपना काम भी करता जाता था, और बोलता भी जाता था

"तुम्हारी चमड़ी को अच्छा सवारा है इन लोगों ने, बीस्त। इसके बाद तुम थोड़ा सूख हो जाओगे.."

डाक्टर असह्य रूप से मुझे गुदगुदाते हुए जब अपना काम खत्म कर चुका तो बोला

"बयालीस पासे निवाली हैं, बीस्त, मैंने। याद रख लो, कभी दोखी बघारोगे। बस इसी समय धाकर अपनी पट्टी बदलवा जाना। क्या तुम्हारी अक्सर भरममत् करते हैं?"

"पहले अक्सर किया करते थे," मैंने एक क्षण सोचकर कहा।

डाक्टर ने अपनी गहरी आवाज में ठहाका मारा।

"सब कुछ अच्छा हो रहा, बीस्त, सब कुछ।"

जब वह मुझे मालिक के पास वापस ले गया तो उससे बुरा

"सभालो इसे, बिल्कुल नया बना दिया है। बस इसे फिर भेज देना पट्टी बदवाने के लिए। तुम्हारी खुशकिस्मती है कि लड़का हसोइ है.."

गाड़ी में बैठकर जब हम घर लौट रहे थे तो मालिक ने कहा

“पेशकोव, मैं भी खूब पिटता था। क्या किया जाये? और कितनी बुरी तरह मुझे मारते थे! तुम्हारे साथ कम हैं कम इतना तो है कि मैं थोड़ी-बहुत सहानुभूति दिखा सकता हूँ, लेकिन मेरे साथ तो कभी कोई सहानुभूति नहीं दिखाता था। लोगो की यो कभी नहीं थी, लेकिन सहानुभूति के दो शब्द कहने के लिए कोई पास तक न फटक्ता ओह, कुडक मुद्रियो!”

रास्ते भर वह बुरा भला कहता रहा। मुझे उसपर तरस आया, और दृढ़ता का भी मैंने अनुभव किया कि वह मेरे साथ इसानो की तरह बातें कर रहा है।

जब हम घर पहुँचे तो सबने इस तरह मेरा स्वागत किया मानो वह मेरा जन्मदिन हो। त्रिया ने मुझे बठाकर सारा हाल सुना कि डाक्टर ने किस तरह फासो को निकाला और क्या-क्या कहा। ये सुनतीं और बीच-बीच में आह, आह की ध्वनि करती जातीं, अपने होठो पर जीभ फेरकर घटकारा लेतीं और इस या उस बात पर भौंहेँ चढ़तीं। बीमारी ईकारी में, दुख और दब में, हर उस चीज में जो आदमी को परेशान कर सकती है, उनकी विद्वत दिलचस्पी ने मुझे चकित कर दिया।

मैंने देखा कि वे इस बात से खुश थीं कि मैंने उनके खिलाफ शिकायत दर्ज कराने में इनकार कर दिया। इससे उत्साहित होकर मैंने उनसे कहा कि अगर इजाजत हो तो कटर की पत्नी से पुस्तके माग लाया करूँ। उनसे भ्रम इनकार करते नहीं बना, सिर्फ बुद्धिया ने चकित होकर कहा

“बडा शतान है तु!”

अगले ही दिन मैं कटर की पत्नी के सामने लडा था, और वह प्यार के साथ मुझसे कह रही थी

“मैंने तो सुना था कि तुम बीमार पड गए हो और तुम्हे अस्पताल पहुँचा दिया गया है। देखो न, लोग भी कसी कसी अफवाह उडाते हैं?”

मैंने उसकी बात को काटा नहीं। उसे सच बात बताते मुझे शम मालूम हुई—ऐसी आँधड और जी भारी करनेवाली बातें कहकर आखिर उसे क्या परेशान किया जाए? मेरे लिए यही क्या कम खुशी की बात थी कि वह भ्रम लोगो की तरह नहीं थी।

मैंने अब बडे ड्यूमा, पौनसौन-द-तरेल, मीतेपिन, साकोने,

गायोरिप्रो, एमर और युषागोबे की मोटी-मोटी जिल्दा को पढ़ना गढ़ किया। मैं इन पुस्तकों को, एक के बाद एक, तेजी से पढ़ गया, और इहे पढ़कर मेरा हृदय लुझी से नाच उठा। मुझे लगा कि जैसे मैं उनके असाधारण जीवन का एक हिस्सा बन गया हूँ। मधुर भावा का मुझे संचार हुआ और स्फूर्ति का मैंने अनुभव किया। एक बार फिर हाथ का बना मेरा सम्प चेतन होकर धुआँ छोड़ने लगा, मैं रात भर, पी फटने तक पढ़ता ही रहता। मेरी आँखें डुलने लगीं और बूढ़ी मालकिन भी आवाज में थोली

“जरा ठहर, किताबचाटू! तेरे डीढ़े फूट जायेंगे, अया हो जायेगा!

शीघ्र ही मैंने देखा कि ये तमाम विलचस्प पुस्तकें, कथानकों। विविधता और मोर्चे-महल मैं भिन्नता के बावजूद, एक सी बात कहती हैं। वह यह कि जो भले लोग हैं, वे हमेशा दुख उठाते हैं और बुरे लोगों के हाथों उहे अनेक मुसीबतों का शिकार होना पड़ता है। धुरे लोग, भलो के मुकाबले में ज्यादा मज्जे में रहते हैं और उनसे ज्यादा चतुर होते हैं। और अतः, किसी चमत्कार के सहारे बुराई की सदा हार होती है और भलाई की सदा जीत। ‘प्रेम’ से भी मेरा जी उकता गया, जिसके बारे में पुस्तकों के सभी पुरुष और सभी स्त्रियाँ, सदा एक सी भाषा में, बातें करते थे। इससे मन तो ऊबता ही, साथ ही अनेक धुंधले सदेहों को वह जन्म देता।

कभी कभी, कुछ पने पढ़ने के बाद ही यह साफ हो जाता कि अतः में किसकी जीत होगी, और किसकी हार। और कथानक की गुत्थी का एकाध सिरा हाथ में आते ही मैं लुब उठे खोलना शुरू कर देता। पुस्तक को मैं अलग रख देता, गणित के सवाल की भाँति मैं उसपर दिमाग लडाने लगता, और मेरे हल अधिकाधिक सही निकलते, — यह कि किस पान को हर तरह के सुखों का स्वग नसीब होगा, और किसको जहन्नुम रसीद किया जायेगा।

लेकिन इस सब के पीछे मुझे सजीव और मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण सच्चाई की झलक मिलती थी, अथ जीवन, अथ सबको के दृश्य नजर आते थे। मैं अब साफ-साफ देखता कि पेरिस के गाडीवान, मेहनत-मजदूरी करनेवाले, सनिक और अथ सब “निम्न” लोग नीज्जी मोयगोरोद, कजान और पेम की ऐसी ही तलछट से भिन्न हैं, साहबा के सामने उनकी बोलती

बद नहीं होती, उनके सहज भाव और स्वतंत्र चेतना की पाला नहीं मारता, खुलकर और साहस से वे बातें करते हैं। इस एक सनिक की ही लीजिए जो उन सभी सनिकों से भिन्न था जिनसे कि मेरा वास्ता पड़ चुका था— न यह सीबोरोय से मिलता था, न उस सनिक से जिसे मैंने जहाज पर देखा था, न येरमोखिन से। उसमें कहीं ज्यादा आदमियत थी। स्मूरी से वह कुछ-कुछ मिलता था, लेकिन उसमें स्मूरी जितना भोडापन और पागबिकता नहीं थी। या फिर इस दुकानदार को लीजिए। वह भी उन सभी दुकानदारों से अछटा था जिन्हें मैं जानता था। यही बात पादरियों के बारे में थी। वे भी मेरे जाने पहचाने पादरियों से भिन्न थे। लोगों के साथ वे अधिक प्रेम और सहानुभूति का बरताव करते थे। कुल मिलाकर यह कि पुस्तकों के पन्नों में चित्रित दूसरे देशों का जीवन उम जीवन से ज्यादा अच्छा, ज्यादा सहज और ज्यादा दिलचस्प मालूम होता था जिसे कि मैं अपने चारों ओर देखता था। दूसरे देशों में लोग इतना अधिक और इतनी धरती से नहीं लड़ते थे, आदमी के साथ उस तरह का कुत्सित खिलवाड़ नहीं करते थे जसा कि जहाज के यात्रियों ने उस सनिक के साथ किया था, और भगवान से प्रार्थना करते समय उस तरह की कुठन और जलन का परिचय नहीं देते थे जो बूढ़ी मालकिन ने दिखाई देती थी।

पुस्तकों में खल पात्रों की, कमीने और कफन खसोटनेवाले लोगों की कमी नहीं थी। और इस बात की ओर खास तौर से मेरा ध्यान गया कि पुस्तकों के इन खल पात्रों में भी समझ में न आनेवाली वह घूरता, और दूसरों को सताने की वह धुन नहीं दिखाई देती जिससे कि मैं इतना परिचित था। पुस्तकों के खल पात्र क्रूरता का परिचय देते थे, लेकिन तभी जब उन्हें कोई मतलब साधना होता था। उनकी क्रूरता, बहुत कर ऐसी नहीं होती थी कि समझ में न आए। लेकिन मैं जिस क्रूरता से परिचित था, उसमें कोई तुक नहीं दिखाई देती थी, बिल्कुल बेमानी और बेमतलब, मनुबहलाब के सिवा जिसका और कोई लक्ष्य नहीं था और जिससे किसी फायदे की आशा नहीं थी।

हर नयी पुस्तक, रूस और दूसरे देशों के जीवन के बीच इस अंतर और उनके भेद की उभारकर रखती, धुंधला असन्तोष मेरे हृदय में उमड़ता, और मेरा यह सदेह जोर पकड़ने लगता कि इन पीले पड़े तथा गंदे कोनों वाले पन्नों में जो कुछ लिखा है, वह एकदम सच नहीं है।

प्रधानमंत्री गोनरोट्टे का उपयोग "जेम्सगान्तो बंधु" मेरे हाथों में पड़ा। मैंने उसे फौरन पढ़ डाला और एक नयी अनुभूति से विस्मित सा, जिसका मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था, मैं इस सीधी-सादी दुःख भरी कहानी को दुबारा पढ़ने लगा। इसमें न तो कोई पेचीदा कथानक था, न ही फातलू अनाव सितार की घमाचोंप थी। यहाँ तक कि गुरु में यह कुछ हल्का और सन्ता की जीवनियों की भाँति गम्भीर मालूम हुआ। इसकी भाषा इतनी नयी-सुती और सितार से इतनी कोरी थी कि पहले-पहल बड़ी निराशा हुई, लेकिन कुछ देर बाद ही उसके सक्षिप्त से शब्द और सयल वाक्या ने तीर की भाँति सीधे मेरे हृदय में प्रवेश करना शुरू किया और इसने नट-बंधुओं के जीवन-संघर्ष का इतना सजीव और सच्चा चित्र मेरी आँखों के सामने खड़ा कर दिया कि मेरे हाथ यह किताब पढ़ने के आनंद से कापते थे। और उस समय जब मुसीबतों का भार नट टूटी टाँगों लिए बड़ी मुश्किल से ऊपर बढ़कर अपने भाई के पास पहुँचा जो अदारी से छिपकर जान से भी प्यारी अपनी नट-बत्ता का अभ्यास कर रहा था, तो मैं फूट फूटकर रोने लगा।

इस अवभूत पुस्तक को कठर की पत्नी को सौटाते हुए मैंने इस जत्ती ही एक और पुस्तक देने का अनुरोध किया।

"इस जत्ती ही का क्या मतलब, भला?" उसने व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा।

उसकी इस व्यंग्यपूर्ण मुस्कान से मैं सहम गया और उसे यह समझा नहीं सका कि 'इस जत्ती ही' से मेरा क्या मतलब है। वह झोली

"यह कोई मजेदार पुस्तक नहीं है। जरा ठहरा, मैं तुम्हें एक बढ़िया पुस्तक ला दूँगी, बहुत ही दिलचस्प"

कुछ ही दिन बाद उसने मुझे धीनबुड कृत "एक आबारा लडके की सच्ची कहानी" दी। पुस्तक का नाम मुझे कुछ चुभा, लेकिन पहला पन्ना पढ़ते न पढ़ते मेरे हृदय में आनंद को मुस्कान खिल गयी और इस मुस्कान के साथ ही मैंने पूरी पुस्तक अत तक पढ़ डाली। कितने ही अशों को तो दो दो, तीन-तीन बार तक पढ़ गया।

सो दूसरे बेगो में भी छोटे लडकों को कुछ कम मुसीबत नहीं उठानी पडती हैं। मेरी तो हालत इतनी बुरा बिस्तुल नहीं है सो हिम्मत खोने को कोई बात नहीं है।

ग्रीनवुड ने मुझे बड़ा सहारा दिया और इसके शीघ्र बाद ही एक ऐसी पुस्तक हाथ लगी जो सचमुच में 'सही ढंग' की थी— "यूजेनी प्राण्डे"।

बूढ़े प्राण्डे की कहानी पढ़कर मेरी आँखों के सामने अपने नाना का सजीव चित्र खड़ा हो गया। मुझे खेद हुआ कि पुस्तक इतनी छोटी है और साथ ही अचरज भी हुआ कि इसमें कितनी सचाई भरी है। यह एक ऐसी सचाई थी, जो मेरे लिए जानी पहचानी थी तथा जिससे जीवन में मैं ऊब चुका था। लेकिन पुस्तक ने इसे एक नयी रोगिणी में—शांत, बटुतारहित ढंग से प्रस्तुत किया। गौनकोट को छोड़कर अथ जितने भी लेखक मैंने पढ़े थे, मेरे मालिकों की भाँति ये सब भी उतने ही निमग्न और चिड़चिड़े ढंग से लोगों को निवा करते, अक्सर पाठक खल नायक से सहानुभूति करने लगता और भले पानों की 'भलमनसाहत' से तग आ जाता। यह देखकर मैं हमेशा परेशान हो उठता कि साल सिर खपाने और हाथ-पाव मारने के बाद भी आदमी अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाता, आगे नहीं बढ़ पाता—शुरु से लेकर आखिर के पाने तक, कदम-कदम पर, यह भलमनसाहत ही उसके माग में आड़े आती। पत्थर की दीवार की तरह वह उसके प्रयत्नों को विफल करती। माना कि खल नायक की सारी धाँसे और सारे इरादे इस दीवार से टकराकर चकना चूर हो जाते, लेकिन दीवार कोई ऐसी चीज नहीं होती कि उसके लिए हृदय में प्यार जगे, हृदय उसके साथ कुछ लगाव अनुभव करे। पत्थर की दीवार अपने आप में चाहे जितनी सुंदर और मजबूत क्यों न हो, लेकिन उस आदमी को जिसके हृदय में दीवार के दूसरी ओर उगे सेबों की पाने की ललक है, न तो दीवार की सुंदरता भली लगेगी, न उसके पत्थरों की मजबूती। और मुझे यह लगने लगा था कि जीवन में अधिकाधिक मूल्यवान और सजीव जो कुछ भी है, वह कहीं भलमनसाहत के पीछे छिपा हुआ है।

गौनकोट, ग्रीनवुड और बाल्जाव के उपयोगों में न तो खल नायक थे और न भले नायक। केवल सीधे सादे लोग थे, इतने सजीव कि देखकर अचरज होता। वे इस बात में कोई संदेह नहीं छोड़ते कि उन्होंने जो कुछ कहा या किया वह सब सचमुच ठीक उसी रूप में कहा या किया गया होगा, और ठीक इसी रूप में उसे कहा या किया जा सकता है, अथ किसी रूप में नहीं।

अब मेरे लिए यह सुख कोई बेगानी चीज नहीं रहा जो किसी अच्छी पुस्तक, 'सही ढंग' की पुस्तक को पढ़ने से प्राप्त होता है। लेकिन एसी पुस्तकें पाना भी एक समस्या थी। बटर की पत्नी इसमें मेरी कोई मदद नहीं कर सकी।

"तो, यह कुछ अच्छी पुस्तकें हैं," कहती और मुझे आर्सेन होस्टामे कृत "गुलाब, स्वर्ण और रक्त से रजित हाथ" या बलेप्, पास द-बार्फ अथवा पाल फेयास के उपन्यास थमा देती। लेकिन एसी पुस्तकों को पढ़ना अब मुझे ऋाकी भारी मालूम होता।

मरियाट और वनर के उपन्यास उसे पसंद थे, लेकिन मैं उन्हें पढ़कर ऊब गया। न ही मुझे श्पीलहागेन के उपन्यास पसंद आए। लेकिन अब्दुलाल की कहानियां मुझे खूब अच्छी लगतीं। स्पू और ह्यूगो मुझे इतने पसंद नहीं आए जितने कि वाल्टर स्काट। मैं ऐसी पुस्तकें चाहता जिन्हें पढ़कर मेरे हृदय के तार झनझना उठें, मेरा रोम रोम लुशी से नाच उठे, जो लेखनी के जादूगर बाल्जाक की पुस्तकें की भांति हों। चीनी की गुडिया के समान सुंदर बटर की पत्नी भी अब मुझे कम अच्छी लगने लगी।

उसके यहां जाने से पहले मैं साफ सी कमीज पहनता, बालों में कंधी करता और हर वह उपाय करने में कोई बसर नहीं छोड़ता जिससे कि मैं कुछ भला बिल सफू। इसमें कितनी सफलता मुझे मिलती थी, यह तो पता नहीं, लेकिन इतनी उम्मीद न अवश्य करता था कि भले आदमियों जसी मेरी इस सजधज को देखकर वह मुझमें अधिक सहज और मित्रतापूर्ण भाव से बातें करेगी, और अपने साफ-सुथरे चेहरे को बिल्लीरी मुस्काय से मुक्त रखेगी। लेकिन वह मुसकराये बिना न रहती और थकी हुई सी मधुर आवाज में पूछती

"तुमने पढ़ लिया इसे? पसंद तो आई न?"

"नहीं।"

वह अपनी बारीक भौंहों को हल्का सा बल देती, और उसास भरकर अपने उसी परिचित स्वर में गुनगुनाती

"लेकिन क्यों?"

"यह सब तो मैं पहले ही पढ़ चुका हूँ।"

"यह सब क्या?"

"यही प्रेम-प्रेम की बातें "

आलें सिजोडकर यह मोठी हसी हसती।

“अच्छा! पर प्रेम की बातें तो सभी पुस्तकों में लिखी होती हैं!”

यही सी आरामकुर्सी पर बठे हुए वह अपने छोटे छोटे पावों को झुलाती, जिनमें वह रोएदार स्तोपर पहने थी, जम्हाई लेती, आसमानी लबादे को खींचकर अपने कंधों से उरा और सटा लेती तथा गोद में पड़ी पुस्तक को अपनी गुलाबी उगलिया के छोरों से ठकठकाती।

मेरा जी चाहता कि उससे पूछू

“आप यहाँ से किसी दूसरी जगह क्यों नहीं चली जाती? अफसर अभी भी आपके पास चिट्ठें भेजते हैं और आपका मजाब उड़ाते हैं।”

लेकिन मेरा साहस साय न देता और मैं, हाथ में ‘प्रेम’ सम्बन्धी मोटी पुस्तक और हृदय में निराशा लिए, वहाँ से चला आता।

अहाते में अब उसका और भी कुत्सित तथा बेहूदा मजाब उड़ाया जाता, दुनिया भर की उल्टी सीधी बात उसके बारे में की जाती। इन गदों और शायद झूठी बातों को सुनकर मेरा हृदय कचोट उठता। जब मैं उसके सामने न होता तो मुझे उसपर तरस आता, और उसे लेकर अनेक आशकाएँ मेरे हृदय को कुरेदने लगतीं। लेकिन जब मैं उसके सामने होता और उसकी पनी आखों, बिल्ली की भाँति लचीले शरीर और हमेशा उल्लास भरे उसके चेहरे पर नजर डालता तो मेरी सारी हमदर्दों और आशकाएँ कोहरे की भाँति गायब हो जातीं।

वसन्त में वह एकाएक वहाँ चली गई और इसके कुछ ही दिन बाद उसके पति ने भी घर छोड़ दिया।

उनके कमरों में अभी कोई नया किरायेदार नहीं आया था, वे खाली पड़े थे। मैंने उनका अक्कर लगाया। सूनी बीवारों पर तुड़ी मुड़ी फीलों या उनके छेवों के सिवा और कुछ दिखाई नहीं देता था। बीवार के वे स्थल जहाँ तत्वीरें लटकी थीं, साफ उभरे हुए दिखाई देते थे। रोगनदार फल पर रंग बिरंगे कपड़ों के चियड़े, कागज के टुकड़े, दवाइयों की टूटी फूटी डिब्बियाँ, इत्र की शीशियाँ और उनके बीच पीतल की एक बड़ी पिन दिखाई पड़ रही थी।

यह सब देखकर मेरा जी उदास हो गया और फटर की पत्नी को एक बार और देखने तथा उसके सामने अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मेरा मन ललकने लगा

अब मेरे लिए यह गुल कोई बेगानी चीज नहीं रहा जो किसी अच्छी पुस्तक, 'सही ढंग' की पुस्तक को पढ़ने से प्राप्त होता है। लेकिन ऐसी पुस्तकें पाना भी एक समस्या थी। कटर की पत्नी इसमें मेरी कोई मदद नहीं कर सकी।

"तो, यह कुछ अच्छी पुस्तक हैं," कहती और मुझे आसन्न हीस्तामें कृत "गुलाब, स्वर्ण और रक्त से रजित हाथ" या बलेयू, पाल इत्यादि अथवा पाल फेबल के उपयोग का धमा देती। लेकिन ऐसी पुस्तक को पढ़ना अब मुझे काफी भारी मालूम होता।

मरियाट और वनर के उपयोग उसे पसंद थे, लेकिन मैं उन्हें पढ़कर ऊब गया। न ही मुझे शीलहागेन के उपयोग पसंद आए। लेकिन अवरबाल की कहानियां मुझे खूब अच्छी लगीं। स्मू और ह्यूगो मुझे इतने पसंद नहीं आए जितने कि बाल्टर स्काट। मैं ऐसी पुस्तकें चाहता जिन्हें पढ़कर मेरे हृदय के तार झनझना उठें, मेरा राम रोम खुशी से नाच उठे, जो लेखनी के जादूगर बाल्जाक की पुस्तकें की भांति हों। चीनी की गुड़िया के समान सुंदर कटर की पत्नी भी अब मुझे कम अच्छी लगने लगी।

उसके यहां जाने से पहले मैं साफ ही कमीज पहनता, बालों में कमी करता और हर वह उपाय करने में कोई कसर नहीं छोड़ता जिससे कि मैं कुछ भला दिख सकूँ। इसमें कितनी सफलता मुझे मिलती थी, यह तो पता नहीं, लेकिन इसकी उम्मीद में अवश्य करता था कि भले आदमियां जैसी मेरी इस सजधज की देखकर वह मुझसे अधिक सहज और मित्रतापूर्ण भाव से बातें करेगी, और अपने साफ-सुधरे चेहरे को बिल्लीरी मुस्कान से मुक्त रखेगी। लेकिन वह मुसकराये बिना न रहती और बकी हुई सी मधुर आवाज में पूछती

"तुमने पढ़ लिया इसे? पसंद तो आई न?"

"नहीं।"

वह अपनी बारीक भौंहों को हल्का सा बल देती, और उसास भरकर अपने उसी परिचित स्वर में गुनगुनाती

"लेकिन क्यों?"

"यह सब तो मैं पहले ही पढ़ चुका हूँ।"

"यह सब क्या?"

"यही प्रेम प्रेम की बात "

आखें सिकोडकर वह मीठी हसी हसती।

“अच्छा! पर प्रेम की बातें तो सभी पुस्तकों में लिखी होती हैं!”

बड़ी सी आरामकुर्सी पर बठे हुए वह अपने छाटे-छाटे पावों को झुलाती, जिनमें वह रोएदार स्लीपर पहने थी, जम्हाई लेती, आसमानी लबादे को खोंचकर अपने कंधों से जरा और सटा लेती तथा गीद में पड़ी पुस्तक को अपनी गुलाबी उगलियों के छोरों से ठपठकाती।

मेरा जी चाहता कि उससे पूछू

“आप यहाँ से किसी दूसरी जगह क्यों नहीं चली जातीं? अफसर अभी भी आपके पास चिट्ठें भेजते हैं और आपका मजाक उड़ाते हैं।”

लेकिन मेरा साहस साथ न देता और मैं, हाथ में ‘प्रेम’ सम्बन्धी मोटी पुस्तक और हृदय में निराशा लिए, वहाँ से चला आता।

घराते में अब उसका और भी कुत्सित तथा बँहवा मजाक उड़ाया जाता, दुनिया भर की उल्टी-सीधी बातें उसके बारे में की जातीं। इन गद्दी और शायब झूठी बातों को सुनकर मेरा हृदय कचोट उठता। जब मैं उसके सामने न होता तो मुझे उसपर सरस आता, और उसे लेकर अनेक आशकाएँ मेरे हृदय को कुरेदने लगतीं। लेकिन जब मैं उसके सामने होता और उसकी पनी आखा, यित्सी की भाँति लचीले शरीर और हमेशा उल्लास भरे उसके चेहरे पर नजर डालता तो मेरी सारी हमदर्दों और आशकाएँ कोहरे की भाँति गायब हो जातीं।

वसन्त में वह एकाएक कहीं चली गई और इसके कुछ ही दिन बाद उसके पति ने भी घर छोड़ दिया।

उनके कमरों में अभी कोई नया किरायेदार नहीं आया था, वे खाली पड़े थे। मैंने उनका चक्कर लगाया। सूनी दीवारों पर तुड़ी-मुड़ी कौला या उनके छंदों के सिवा और कुछ दिखाई नहीं देता था। दीवार के थे स्पल जहाँ तस्वीरें लटकी थीं, साफ उभरे हुए दिखाई देते थे। रोगनदार फश पर रंग बिरंगे कपड़ा के चियड़े, कागज के टुकड़े, दवाइयों की टूटी फूटी डिब्बियाँ, इन की शोशिया और उनके बीच पीतल की एक बड़ी पिन दिखाई पड़ रही थी।

यह सब देखकर मेरा जी उदास हो गया और बटर की पत्तों की एक चार और देखने तथा उसके सामने अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मेरा मन ललकने लगा..

बहर का पानी क बहर जाने न भी जाने मे हमारे घर क निरा
 शिवा मं बारी घांवां बारी एव दुवा मरिगा का बगी थी। ताय में ए
 छोटी बरफी घोर मरिगा की मां भी थी। मां बरिगा थी। उगर इन
 तहर हो गा थे घोर बरफे क सिगरेट-टोफर को मूठ में बरफ बरिगे
 घट सिगरेट का धुसा उड़ागी रानी थी। दुवा मरिगा बहर एवगुल,
 गमोंगी घोर ताय को धंगूड क नीध रणोबारी थी। बाबाज गूरी को
 मपुर, सोगों मे बोरो ताय बह कुछ हग बाबाज मे बनना गिर बह
 का घोर फेजली तथा घांवां को गिरोड़ मेगी मानो के इतना दूर हो कि
 साक-गाक न रिताई पड़ने हा। बरीब-बरीब हर रोख उतारा तकिठ तौर
 तितका नाम तुफायेव था, पानी टांगों बाने बरफे घोड़े को तौर उनक
 घर क सामा का बड़ा होता घोर मरिगा इपानी रग की धुसवारी को
 सम्बी मनमनी पागाव पढ़ने, हावों मं बडोरारार तरेंड हाताने बने
 घोर पांव म पीने ऊध बूट बन बाहर रिहार घानी। एव हाथ से घनी
 पोगाव का तौर घाम घोर बगी परपर की मूठ बासा टुष्टर पड़े डूले
 हाथ से वह घोड़े के मपुने मपपपानी। घाड़े को बसीती घमक उज्जी,
 घपनी घांवां को घट घुमाता तथा बड़ी जमान का वुरसुराता, घोर उतरे
 समुचे घरन मे एव गिट्टरा ती बीड़ जाती।

“रोबर! रोबर!” वह धीमे स्वर में गुनगुनाती घोर घोड़े की बमत
 ही सुंदर समवार गरवन को ओर-ओर से मपपपानी।

किर तुफायेव क घुटने पर बपना पांव ररता, हन्ने से उधरहर फुरती
 से घोड़े पर सवार हो जाती घोर घोडा गव के साथ इठलाता-नाचता बांध
 के बिनारे बिनारे घसने लगता। घोड़े पर बह कुछ इतन सहज भाव से
 घठती मानो जम से ही धुसवारी बरती भायी हो।

यह उन विरल सुंदर तिख्या में से थी जिनका सौंदर्य सदा नया घोर
 निराना प्रतीत होता है, जिहें बेलहर हृदय पर एव मगा सा छा जाता
 है, घोर रोम राम धुंगी से नाचने लगता है। जब में उसकी घोर बेलता
 तो एसा लगता कि डायना ड-पीयतिये, रानी मागों, सा-बलियेद तथा
 ऐतिहासिक उपप्रासो की बय नायिकाओ का सौंदर्य भी, बिला शक,
 ऐसा ही रहा होगा।

छावनी के फौजी अफसर उसे बराबर घेरे रहते। साक्ष के समय उसके यहां बेल्ला, प्यानो और गितार बजाये जाते, नाच होते और गीत गाये जाते। अपनी ठिगनी टांगो पर उसके सामने फुदकने में भ्रोलोसोव नाम का एक मेजर अरय सभी को मात कर देता। मोटा-साजा बदन, सफेद बाल और लाल चेहरा जिसकी चिक्नाहट देखकर जहाज के किसी मकेनिक के चेहरे का गुमान होता। वह गितार बजाने में माहिर था, और युवा महिला के सामने इस तरह बिछ जाता था मानो वह उसका बहुत ही बफादार और जमीन घूमनेवाला चाकर हो।

घुघराते बालों वाली उसकी पांच वर्षीया बच्ची भी उतनी ही उज्ज्वल और सुंदर थी जितनी कि वह छुब। अपनी बड़ी-बड़ी नीली सी आंखों से वह बड़े ही शान्त, गम्भीर और आशा भरे अवाज में देखती। उसकी इस गम्भीरता में बचपन से अधिक बड़प्पन का पुठ दिखाई देता।

बच्ची की नानी भी फटते ही उठ बैठती और गई रात तक घर के घघो में जुटी रहती। भौंहे बड़ा और मुहब्बत तुफायेव और थलथल तथा एची-स्तानी महरी काम में घुड़िया का हाथ बटाती। बच्ची के लिए कोई आया नहीं थी और वह लगभग बिना किसी बेत भाल और निगरानी के, पल और बढ़ रही थी। ओसारे में या उसके सामने जमा कुचा के ढेर पर वह दिन भर खेलती रहती। साक्ष होते ही मैं बहुत ही उसके पास पहुंच जाता, उसके साथ खेला करता और वह मुझे बहुत प्यारी मालूम होती। शीघ्र ही वह मुझसे इतनी हिलमिल गई कि परियो की कहानियां सुनते-सुनते वह मेरी गोद में ही सो जाती। जब वह सो जाती तो मैं उठता और उसे अपनी बाही में सभाले उसके बिस्तर पर सुला आता। देखते-देखते वह इतनी हिल गई कि जब तक मैं उसके पास जाकर उससे शुभरात्रि न कहता, वह सोने से इनकार कर देती। मैं उसके कमरे में पर रखता, रोब के साथ वह अपना छोटा सा गुलाबी हाथ फलाती और कहती

"तुदा हाफिज कल तक के लिए। कसे कहना चाहिए, नानी?"

"तुदा तुम्हें खरियत से रखे," मुह और पतली नाक में से घुए की नीली धारें छोड़ते हुए उसकी नानी जवाब देती।

"तुदा तुम्हें खरियत से लखे बल तक, और मैं अब सोऊंगी।" वह दोहराती और लेस लगी अपनी रबाई में कुनमुनाने लगती।

“बस तब नहीं, बल्कि हमें राखियत से रंगे,” उसकी नाना उसे ठीक करती।

“बस क्या हमें नहीं होता?”

‘बस’ शब्द से उसका हाथ सगाव था और जो भी चीज उस मन को भाती उसे ही वह बस के हाथ में डाल देती। फूलों या टट्टियों को पट्ट मिट्टी में गाड़ देती और बहती

“बस यह बाग बन जाएगा ”

“एक दिन बस में एक घोला लसीडूगी और मम्मा की तरह उसपर सवाल होकर घूमने जाया बसूगी ”

वह बहुत ही समझदार थी, लेकिन उत्साह और उछाह उसमें छिपकर नहीं था। बहुत-बहुत रलते-रलते वह कुछ शोधने लगती और एकाएक पूछ पड़ती

“पाइनिदा के बाल झीलनों जसे बों होते हैं?”

एक दिन बटीरती झाडी उसको चुभ गयी। वह उगली से उसे धमकाते हुए कहने लगी

“बेलो, मैं भगवान से पलासयना बसूगी और वो मुम्हें बली बना देंगे। भगवान सभी को सजा दे सकते हैं—मम्मी को भी..”

कभी-कभी एक गान्त, गम्भीर उदासी उसपर छा जाती, अपने बदन को वह मुझते सटा लेती। नीली, आगा भरी आंखों से आकाश की ओर देखती और बहती

“नानो कभी-कभी गुस्सा होती हैं, पर मम्मी कभी गुस्सा नहीं करतीं, वो तो बस हसती सहती हैं। मम्मी को शय पाल बसते हैं, काकि उनके मेहमान आते सहते हैं, आते सहते हैं और मम्मी को देखते हैं, कोकि वो बली सुदल हैं। वो—पाली मम्मी हैं। ओतेसोव भी यही बहते हैं—पाली मम्मी!”

बचपन की भाषा में एक अनजानी दुनिया के बारे में जब वह मुझे बताती तो बड़ा अच्छा लगता। अपनी मा का त्रिक करते समय उसके उछाह और तत्परता का धारणार न रहता, एक नए जीवन की मुझे शाकी मिलती और रानी मागों की कहानी की मुझे याद हो आती। इससे पुस्तकों में मेरा विश्वास और भी बढ़ता, अपने चारों ओर के जीवन में मैं और भी दिलचस्पी लेता।

एक दिन की बात है। साझ का समय था। मेरे मालिक धूमने गए थे और मैं, बच्चों का अपनी गाद में लिए, उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। बच्चों को आखें झपक गई थीं। तभी उसकी मां घोड़े पर सवार बाहर से लौटी, सचक के साथ वह जिन से नीचे उतरी और झटके से सिर ऊचा करके पूछा

“क्या सो गई है?”

“हां।”

“यह बात है ”

सनिक तुफानेव सपककर आया और घोड़े को अपने साथ ले गया। हटर को अपनी पेटो में खोसते हुए महिला ने अपनी बाह फलाइ और मुझसे कहा

“इसे मुझे दे दो।”

“मैं छुद इसे पहुंचा दूंगा।”

“ऐ। ” पाव पटककर वह इस तरह चिल्लाई मानो मैं घोड़ा हू। लडकी चौंक उठी, आखें मिचमिचाकर उसने देखा, मा पर उसकी नजर पडी, और उसने भी अपनी बाहे फला दीं। दोनों भीतर चली गईं। डाट डपट का मैं आदी था। लेकिन इस महिला का चिल्लाना मुझे बहुत भटपटा मालूम हुआ। वह अगर हल्का सा इशारा भी करती तो सब उसकी आखों के आगे बिछ जाते।

कुछ ही क्षण बाद एची-सानी महरी ने मुझे आवाज दी। बच्चों ने हठ पकड ली थी और बिना मुझसे विदा लिये बिस्तर पर सोने से इनकार कर दिया था।

कुछ गव के साथ मैंने ड्राइणरूम में पाव रखा। महिला लडकी को गाव में लिए बठी थी और फुर्ती से उसके कपडे उतार रही थी।

“लो, यह आ गया तुम्हारा अवधूत!” उसने कहा।

“यह अवधूत नहीं, यह तो मेया साथी है!”

“यह बात है? बहुत अच्छा। चलो तुम्हारे इस साथी का कोई चीज भेंट करते हैं। करें?”

“हां हा, जलूल भेंट कलो मा!”

“अच्छा तो तुम अब झटपट अपने बिस्तर पर चलो जाओ। मे अपनी उसे कोई चीज देती हू।”

“कल तक वे लिए, खुदा हाफिज!” हाथ फलाते हुए सडकी ने कहा। “खुदा तुम्हें खतियत से सल्ले, कल तक...”

“धरे, यह तुमने कहाँ सीला?” उसकी माँ ने झरजर से पूछा।
“क्या नानी ने सिखाया है?”

“हो”

जब सडकी सोने के लिए चली गई तो महिला ने मुझे अपने पास बुलाया

“तुम क्या सेना पसंद करोगे?”

मैंने कहा कि मुझे किसी चीज की ज़रूरत नहीं है, अगर पढ़ने के लिए कोई किताब मिल जाए तो अच्छा हो।

उसने अपनी मुहावनी, महकती हुई उगलियों से मेरी ठोड़ी को ऊपर उठाया और प्रसन्न भाव से मुस्कराते हुए कहा

“अच्छा, यह बात है, तुम्हें किताबें पढ़ने का शौक है, है न? कौन-कौन सी किताबें पढ़ चुके हो?”

जब वह मुसकराती तो धीरे भी सुंदर लगती। मैं अचकचा गया और हडबडाहट में जो दो चार नाम याद आए, गिना दिए।

“इन पुस्तकों में क्या चीज तुम्हें अच्छी लगी?” उसने मेझ पर हाथ रखकर और हल्के से उगलियों को हिलाते हुए पूछा।

उसके बदन से फूलों की तेज और मीठी महक आ रही थी जिसमें घोड़े के पसीने की गंध भी कुछ अजीब ढंग से मिली हुई थी। अपनी लम्बी बरौनियों की आद में से वह मुझे बड़े ध्यान से परख रही थी। मह पहला भ्रमसर था जब किसीने इस तरह मेरी धीरे देखा था।

कमरा किसी पछी का घोसला मालूम होता था—इस हब तक वह सुंदर गढ़ेदार मेज-बुतियों से भरा था। लिडकिया पौधों की घनों हरियाली में छिपी थीं। साँस की धुंधली रोगनी में अलावधर के बक की भाँति सफेद टाइल चमक रहे थे। पास ही में बाला प्यानों रखा था। दीवारों पर गिल्ट के धुंधले चोखटों में जड़ी सनदें लटक रही थीं। सनदों का कागज मटमला पड़ गया था और उनपर त्साव तिलावट में कुछ लिखा था। प्रत्येक चोखटे से एक डोरी लटकी थी जिसके छोर में एक बड़ी सी मोहर झूल रही थी। ये सभी चीजें, मेरी ही भाँति, विनत और धदाभाव से उसकी धीरे देख रही थीं।

मुझसे जितना बन सका, मैंने बताया कि मुसीबतों ने मेरे जीवन को कितना बोझिल और रसहीन बना दिया है, और यह कि पुस्तकें पढ़ने से कुछ बेर के लिए जो बरा हल्का हो जाता है।

“अच्छा-भ्रा, यह बात है?” उठते हुए उसने कहा। “बात तो बुरी नहीं है, बल्कि ठीक ही है अच्छा, तो किताबों से तुम्हें दूगी, लेकिन इस वक़्त मेरे पास कोई नहीं है हा, याद आया, अगर चाहो तो अपनी इत्से ले जा सकते हो ”

काउच पर पीली जिल्द की एक पुरानी सी पुस्तक पड़ी थी। उसे उठाकर उसने मुझे दे दिया।

“जब इसे पढ़ चुको तो इसका दूसरा भाग ले जाना—इसके चार भाग हैं ”

मैडवैस्की लिखित “पीटसबग के रहस्य” खण्ड में देखा मैं वहा से लौट आया, और बड़े ध्यान से उसे पढ़ने बैठ गया। लेकिन पहले ही पन्नों से मुझे स्पष्ट हो गया कि मैडिड, लडन अथवा पेरिस के ‘रहस्यो’ के मुकाबले में पीटसबग के ‘रहस्यो’ में कहीं अधिक बोरियत भरी है। ले-वेकर पुस्तक में मुझे एक ही चीज पसंद आई। वह चीज थी लाठी और आजादी के बीच संवाद

“मैं तुमसे बढ़कर हूँ,” आजादी बोली, “क्योंकि मेरे पास बुद्धि है।”

“ओह नहीं, मैं तुमसे बढ़कर हूँ, क्योंकि मैं सबल हूँ,” लाठी ने जवाब दिया।

कुछ बेर तक दोनों बहस करती रहीं और फिर गरमाकर लडने पर उतर आईं। लाठी ने आजादी की खूब मरम्मत की, और जहाँ तक मुझे याद है घायल हो जाने के कारण उसे अस्पताल से जाया गया जहा उसने दम तोड़ दिया।

पुस्तक में एक निहिलिस्ट* की घात हो रही थी। मुझे याद है कि

*निहिलिज्म (सबखडनवाद) — १९वीं सदी के सातवें दशक में रूस में इस विचारधारा ने जन्म लिया। इसने अनुयायी, स्वतंत्र विचारों के मध्यमवर्गी बुद्धिजीवी कुलोन-बुजुगा रीतिया-मरपरामा और भू-दासता की विचारधारा का खोददार खडन करते थे।—स०

“कल तक बे लिए, खुदा हाफिज!” हाथ फैलाते हुए लडकी ने कहा। “खुदा तुम्हें खलियत से लखें, कल तक...”

“घरे, यह तुमने कहाँ सीखा?” उसकी माँ ने झरजर से पूछा।
“क्या नानी ने सिखाया है?”

“हा ”

जब लडकी सोने के लिए चली गई तो महिला ने मुझे अपने पास बुलाया

“तुम क्या सेना पसंद करोगे?”

मैंने कहा कि मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है, अगर पढ़ने के लिए कोई किताब मिल जाए तो अच्छा हो।

उसने अपनी सुहावनी, महकनी हुई उगलिया से मेरी ठोड़ी को ऊपर उठाया और प्रसन्न भाव से मुस्कराते हुए कहा

“अच्छा, यह बात है, तुम्हें किताबें पढ़ने का शौक है, है न? कौन-कौन सी किताबें पढ़ चुके हो?”

जब वह मुसकराती तो और भी सुंदर लगती। मैं अचकचा गया और हड़बड़ाहट में जो दो चार नाम याद आए, गिना दिए।

“इन पुस्तकों में क्या चीज तुम्हें अच्छी लगी?” उसने मेरे हाथ रखकर और हल्के से उगलियों को हिलाते हुए पूछा।

उसके बदन से फूलों की तेज और मीठी महक आ रही थी जिसमें घोड़े के पत्तियों की गंध भी कुछ अजीब ढंग से मिली हुई थी। अपनी लम्बी बरीनियों की झोड में से वह मुझे बड़े ध्यान से परख रही थी। यह पहला झंझर था जब किसीने इस तरह मेरी ओर देखा था।

कमरा किसी पछी का धोसला मालूम होता था—इस हद तक वह सुंदर गद्देदार मेज-कुर्सियों से भरा था। लिटक्विया पीपों की धनी हरियाली में छिपी थीं। साम्रा की धुंधली रीशनी में अलावघर के बरफ की भाँति सफेद टाइल चमक रहे थे। पास ही में काला प्यानों रखा था। दीवारों पर गिट्ट के घुघने चौखटों में जड़ी सनवें सटक रही थीं। सनवों का कागज मटमला पड़ गया था और उनपर स्लाब तिलावट में कुछ लिखा था। प्रत्येक चौखटे से एक डोरी लटकती थी जिसके छोर में एक बड़ी सी मोहर झूल रही थी। ये सभी चीजें, मेरी ही भाँति, विनत और घटाभाप से उसकी ओर देख रही थीं।

मुझसे जितना बन सका, मैंने बताया कि मुसीबतों ने मेरे जीवन को कितना बोझिल और रसहीन बना दिया है, और यह कि पुस्तकें पढ़ने से कुछ बेर के लिए जी बरा हल्का हो जाता है।

“अच्छा-आ, यह बात है?” उठते हुए उसने कहा। “बात तो बुरी नहीं है, बल्कि ठीक ही है अच्छा, तो किताबों में तुम्हें दूगी, लेकिन इस वक़्त मेरे पास कोई नहीं है हाँ, याद आया, अगर चाहो तो अभी इसे ले जा सकते हो ”

काउच पर पीली जिल्द की एक पुरानी सी पुस्तक पड़ी थी। उसे उठाकर उसने मुझे दे दिया।

“जब इसे पढ़ चुको तो इसका दूसरा भाग ले जाना—इसके चार भाग हैं—”

मेइचेल्की लिखित “पीटसंबग के रहस्य” बरत में दबाए में वहाँ से लौट आया, और बड़े ध्यान से उसे पढ़ने बैठ गया। लेकिन पढ़ने ही पन्नों से मुझे स्पष्ट हो गया कि मेइडिड, लदन भयदा देख के ‘रहस्यों’ के मुकाबले में पीटसंबग के ‘रहस्यो’ में कहीं अधिक बारिद्वत मरी है। ले-देकर पुस्तक में मुझे एक ही चीज पसंद आई। वह चीज था माटी और आवादी के बीच सवाद

“मैं तुमसे बढ़कर हूँ,” आवादी बोली, “क्योंकि मेरे पास बुद्धि है।”

“ओह नहीं, मैं तुमसे बढ़कर हूँ, क्योंकि मैं मरब हूँ,” लाठी ने जवाब दिया।

कुछ बेर तक दोनों बहुत करना रहीं और फिर गम्याकर लदन पर उतर आईं। लाठी ने आवादी की खूब मग्यन की, और जहाँ तक मुझे याद है घायल हो जाने के कारण उसे अस्पताल में जाया गया जहाँ उसने दम तोड़ दिया।

पुस्तक में एक निहिलिस्ट* का बात हो रही था। मुझे याद है कि

* निहिलिज्म (सन्नतनवा) - १६वीं मरी के मातव दक में इस मे इस विचारधारा न उन जिना। इस अनुयायी, म्वनत्र विचार मध्यमवर्गी बुद्धिवाता वृत्तान्त-रुईभा गिनिया-गरपगया और विचारधारा का अंगार ध्वन करते हैं।-म०

पुस्तक के लेखक प्रिंस मेन्चेस्को ने इस पात्र को एक ऐसा विपत्ता हीना बनाकर पेश किया था जिसकी नजर पढ़ने से भुगिया वहाँ की वहाँ डर हो जाती हैं। मुझे ऐसा मालूम हुआ मानो निहितार्थ शब्द अपमानजनक तथा अशिष्ट है। इसके अलावा और कुछ मेरे पत्ते नहीं पडा और इस बात से मेरा जो भारी हो गया। मुझे लगा कि अच्छी पुस्तकों की समझना मेरे धते से बाहर है। पुस्तक के अच्छी होने में मुझे रती नर भी शक्य नहीं था। मैं यह साब तब नहीं सपता था कि इतना सुंदर और रोचदार महिला का बुरी पुस्तक में कभी कोई लगाव हो सकता है।

“क्या पसंद आई?” जब मैं मेन्चेस्को का पीला उपमास लौटने गया तो उसने पूछा।

मुझसे यह स्वीकार करते नहीं बना कि पुस्तक अच्छी नहीं लगी। डर था कि वहाँ घट बुरा न मान जाए।

यह बेचल हल दी और पर्दा उठाकर अपने सोनेवाले कमरे में घायब हा गई। कमरे में से वह लौटकर आई तो उसके हाथ में घमडे की तीली जिल्द बंधी एक पुस्तक थी।

“यह तुम्हें अच्छी लगेगी। लेकिन इसे गदा न कर लाना, समझे।”

इसमें पुस्तिकन की कविताएँ थीं। एक ही बठक में मैं सारी कविताएँ पढ़ गया। मैं एक ऐसी अनबुझ अनुभूति से मोतप्रोत था, जिसका अनभव अनदेखे सुंदर स्थल पर पहुँच जाने पर होता है—सदा यह इच्छा होता है कि तुरत ही सारी जगह भाग भागकर देख ली जाये। ऐसी अनुभूति तब होती है, जब बड़ी देर तक दलदली जंगल के बाईंदार चपों पर चलने के बाद, यकायक झाँखों के सामने फूलों से भरा, धूप में नहाता सुखा मदान खुपना है। एक क्षण के लिए हम उसे मप्रमगध से बलते रहते हैं, फिर आनंदमग्न भागकर उसका पूरा चक्कर लगाते हैं और परो पर उबरा घरती की नरम घास के प्रत्येक स्पश से हृदय में खुशी की लहर दौड़ जाती है।

पुस्तिकन की कविताओं ने, उनकी सादगी और संगीत ने, मुझपर कुछ ऐसा जाड़ किया कि इसके बाद बहुत देर तक गद्य मुझे अस्वाभाविक लगने लगा और उसे पढ़ना अटपटा लगता। “रुस्तान और ल्युदमीला” का

क्या प्रवेश तो मानो नानी की श्रेष्ठतम कहानियों का निचोड़ था और कुछ पक्तियों ने अपनी सच्चाई से मुझे मुग्ध कर दिया

यहां, उन अनजानी पगडंडियों पर,
अनदेखे जंतुओं के पद चिह्न

इन अदभुत पक्तियों को मैं बार-बार गुनगुनाता और मेरी आंखों के सामने हर उम्र पर झोझल हो जानेवाले उन पंक्तियों का चित्र मूर्त हो उठता जिनसे कि मैं खूब परिचित था, वे पगडंडियां मेरी आंखों के सामने उभर आतीं जिनकी रौंदी हुई घास किसी के अभी-अभी उधर से गुजरने की कहानी कहती और घास की दबी कुचली पक्तियों पर झोस के बण पारे की भारी बंदों की भांति अभी भी घमकते होते। भरी पूरी ध्वनि से युक्त पक्तियां सहज ही जवान पर चढ़ जातीं। हर बात में एक अजीब निहार दिखाई देता। मेरा रोम रोम खड़ी से भर जाता, जीवन अधिक आसान और सुहावना मालूम होता। कविताएँ क्या थीं नये जीवन का हृदय नाद थीं। कितनी अच्छी बात है कि मुझे पढ़ना आता है।

पुश्किन की पद्यमय गाथाएँ मेरे हृदय और समस्त के लिए सबसे निकट थीं। कुछेक बार पढ़ने पर मुझे जवानी याद हो गई। जब मैं सोने के लिए जाता तो चुपचाप लेटकर अपनी आंखें बंद कर लेता, उन्हें मन ही मन दोहराता और मुझे पता भी न चलता कि कब नींद आ गई। कभी-कभी मैं अफसरो के साईंसो-अरदलियों को भी उन्हें सुनाता। उनके चेहरे खिल जाते और वे चकित होकर बसमें खाते, - गालियां प्रशंसा के उदगार बनकर उनके मुह से प्रकट होतीं। सीबोरोव मेरा सिर सहलाता और धीमे स्वर में कहता

“वाह, कितनी सुंदर है, है ना?”

भालिकों से यह छिपा न रहा कि आजकल मैं किस रंग में डूबा हूँ। मुझिया मुझे डाटना सिटकना शुरू करती

“देखो तो, किताबों में मस्त हो गया है, ज्ञान की दुम, और समोवार तो चार दिन से साफ नहीं किया। दा-भार बेलने पड़े, तो पता चलेगा”

लेकिन पुश्किन की कविताओं के सामने बेलने की भला क्या बिसात? जवाब में मैं पुश्किन की पक्तियां गुनगुना उठता

बड़ी से उठी प्यार,
 वाले विस की घुड़त सुराटि...

महिला मेरी नजरों में घोर भी ऊंची उठ गयी। जो इतनी बर्झा पुस्तकें पढ़ती थी। यह धोनी को गुड़िया नहीं थी

पुस्तक को लौटाते समय मेरा जो भारी हो गया। उसने पुस्तक मेरे हाथ से ले ली और विद्यास के साथ बोली

"यह तो तुम्हें पसंद आई है न। क्या तुमने कभी पुश्किन के बारे में सुना है?"

पुश्किन के बारे में एक पत्रिका में मैं कुछ पढ़ चुका था। लेकिन मैंने इसका शिक तक नहीं किया। मैं जब उसके मुह से सुना था कि वह क्या कहती है।

पुश्किन के जीवन और मृत्यु का छोड़े में कुछ हाल बताने के बाद बसती विन की भाँति मुसकराकर उसने पूछा

"देखा तुमने, स्त्री से प्रेम करना कितना खतरनाक होता है?"

अब तक जितनी भी पुस्तकें मैं पढ़ चुका था, उनके हिसाब से तो निश्चय ही यह खतरनाक था—खतरनाक, लेकिन साथ ही अच्छा भी। मैंने कहा

"खतरनाक है, फिर भी सब प्रेम करते हैं। और स्त्रियाँ भी इससे लड़पती हैं"

बर्झानियों के पीछे से उसने मेरी ओर देखा, जैसे कि यह हर चीज को देखती थी। फिर गम्भीर स्वर में बोली

"अच्छा, यह बात है? तुम यह समझते हो? तो मैं तुम्हें यही कहूँगी कि इस सत्य को कभी आँखों की मोड़ न होने देना!"

इसके बाद उसने पूछना शुरू किया कि कौन कौन सी कविताएँ मुझे जास तौर से अच्छी लगेंगी।

मैं उसे बताने लगा। कई कविताएँ मैं जबानी सुना गया। सुनते समय उछाह के साथ मैं हाथ भी हिलाता जाता। वह चुपचाप, सनाटा खींचे सुनती रही। फिर वह उठी और कमरे में टहलने लगी। गम्भीर स्वर में बोली

“मेरे बेंगकीमती नहे बबर, तुम्हें स्कूल मे जाना चाहिए। मैं इस बारे मे सोचूंगी जिनके यहां तुम काम करते हो, क्या ये तुम्हारे रिश्तेदार हैं?”

जय मैने बताया कि हां, रिश्तेदार हैं, तो उसने कुछ इस अंदाज से ‘घोहो’ कहा मानो मेरी निंदा कर रही हो।

इसके बाद उसने मुझे “बेराजे के गीतों” का एक सप्ताह दिया। यह बहुत ही बढ़िया सुनहरी कोर और चमड़े की लाल जिल्द वाला सस्करण था। गीतों के साथ चित्र भी थे। इन गीतों में सीखी, शूलसा देनेवाली फडवाहट भी थी और सभी पाया-बचनो को तोडकर बहनेवाली ज़ुशी की लहर भी। इन दोनों का हृदय पर छा जानेवाला अदभुत मेल था।

“बूढ़े भिजारी” के तीसरे शब्दों से मेरी रगो मे रक्त की रवानी एक गई

बुष्ट कीडा—बरता परेशान है तुम्हें?
 कुचल दो परो तले घिनौने कीडे को!
 सरस क्या, रौंद डालो फौरन!
 क्यों मुझे पड़ाया नहीं,
 प्रघण्ड गकित को नहीं दिया निकास?
 जाता कीडा भी चींटी बन!
 मरता मैं भी भाइयो की बांहो मे।
 कितु बूढ़ा अकेला मैं मरता हू
 मिले तुम्हें बदला,
 पुकार यह करता हू।

एक दूसरे गीत “रोता हुआ पति” को पढ़कर मैं इतना हसा कि आखो से पानी निकलने लगा। उसकी यह फयती मुझे खास तीर ली याद है

हैं जो सीधे सादे लोग
 नहीं मन मे जिनके कुछ खोट
 सीख लेते थे ही जल्दी,
 कला हसने और हसाने की!

बेराजे के गीत मेरी भावनाओं को मुहंजार बनाते, शतानी करने, चुटकिया लेने तथा फवतिया बसने के लिए मुझे उकसाते और धृष्टता तथा बुरी लगनेवाली बातें करने के लिए मेरा जी ललकता और गीम ही मैंने यह सब शुरू कर दिया। उसकी पकिया भी मुझे खबानी याद हो गई और जब भी अरदलियों के रसोईघर में जाने का मौका मिलता, बेहद उत्साह के साथ मैं उन्हें सुनाता।

लेकिन, निम्न पक्तियों की वजह से, मुझे जल्दी ही यह सब छोड़ देना पड़ा

बरस सत्रह की छोकरों का,
कौन न पकड़े छोर!

इन पक्तियों के बाद स्त्रियों को लेकर अत्यंत घिनौनी चर्चा चल पड़ी। अपमान की भावना से मेरा दिमाग भ्रंशित हुआ, मुझे के मारे मैंने पत्नीला उठाया और उसे मलिक येरमोविन के सिंदर पर दे मारा। सीबोरोव और दूसरे अरदलियों ने लपककर उसके बेंडोल पजो से मुझे छुड़ाया। इसके बाद अफसरों के रसोईघरों में जाने का मैंने नाम नहीं लिया।

बाहर घूमने फिरने की मुझे सनाही थी, और सच तो यह है कि मटरगश्ती के लिए समय भी नहीं मिलता था। पहले से वहीं क्या काम मुझे अब करना पड़ता था। अब बरतन माजने, झाड़ू बुहारी देने और बाजार से मौदा मुलक खाने के अलावा मैं हर रोज चीड़े तलतों पर कालों से कपड़ा जमाता, फिर मालिक के लॉन्चे हुए डिवायन उसपर थिपकाता, इमारती पलमीनो की नकले उतारता और ठेकेदारों के बिलों की जाच पड़ताल करता—मेरा मालिक मशीन की भांति सुबह से लेकर रात तक काम में जुटा रहता।

मेले की सांख्यनिक इमारत उन दिनों सौदागरों के निजी हाथों में जा रही थीं। बाजारों को फिर से बनाने के काम में खूब आपाधापी चल रही थी। मेरे मालिक ने पुरानी दुकानों की भरभत करने और नयी दुकानें बनाने का ठेका लिया था। सीधी मेहराबों के पुनर्निर्माण, रीजनदानों को बनाने और इसी तरह की अन्य चीजों के नक्शे यह बनाता था। इन नक्शों तथा इनके साथ लिफाफे में पच्चीस रबल का एक नोट लेकर मैं मुझे वास्तुकार के पास पहुंचता। यह लिफाफा सभालकर रख लेता और

नक्शो पर लिख देता "नक्शे सहो हूँ। सारा काम इनके मुताबिक मेरी निजी निगरानी से दृष्टा है।" अतः मे यह अपने दस्तखत बना देता। कहने की आवश्यकता नहीं कि निर्माणाधीन इमारतें उसने देखी तक न थीं तथा जांब और निगरानी करने का तो सवाल ही नहीं उठता था, क्योंकि बीमारों ने उसे चेकर कर दिया था, और वह हमेशा घर के भीतर ही बंद रहता था।

मेले के इन्स्पेक्टर तथा अग्र कई ऊहरी लोगो को भी मैं घूस का पसा देने जाता और उनसे, अपने मालिक के शब्दों में, 'विभिन्न फ़ानूनी को ताक पर रखने का परमिट' ले आता। मेरे इन सब कामों से लुब्धा होकर मालिक ने मुझे यह इजाजत दी कि सात्र के समय जब कभी वे बाहर घूमने जाए तो अहाते में बैठकर मैं उनका इतजार कर सकता हूँ। ऐसा बिरले ही होता, लेकिन जब भी जाते तो आधी रात के बाद लौटते। इस तरह मुझे कई घंटे मिल जाते, ओसारे या उसके सामने पड़े कुदों के ढेर पर मैं अहा जमाता और रानी मार्गों के घर की खिडकियों पर नजर जमाए वहा छनछनकर आते संगीत, घुहल की आवाजों को अवाक सुनता रहता।

खिडकिया लुली होतीं। परदों और फूलों की बेलों की झिरियों में से मुझे अफसरों की सुंदर आकृतियों की झलक दिखाई देती जो कमरे में अघर से अघर मडराते रहते। अवभुत सावगी और सौंदय से सदा सज्जित वह मानों कमरे में सरती मालूम होती और गोल-मटोल पलथल मेजर उसके वामन से चिपका सुदकता-भुदकता रहता।

मन ही मन मैंने उसका नाम रानी मार्गों रख छोडा था। खिडकियों पर मेरी आलें जमी होतीं और मन ही मन मैं सोचता था

"सो यह है वह इन्द्रयनुयी जीवन जिससे फ़ासीसी उपयासों के पने रगे रहने हैं!" मेरा जी अवबदाकर भारी हो जाता, और मेरा छोडा सा हृदय ईर्ष्या से बल खाने लगता जब मैं रानी मार्गों के चारों ओर पुह्यो को इस तरह मडराते मनभनाते देखता जैसे फूलों पर भरे मडराते हैं।

कभी कभी, लम्बे कद और गम्भीर चेहरे वाले एक अफसर पर मेरी नजर पडनी। अग्र लोगो के मुकाबले में वह बहुत कम आता था। उसके माये पर धाव का निशान था, और उसकी आलें खूब गहरी घसी थीं।

वह हमेशा अपनी वायलिन साथ लेकर आता। वायलिन बजाने में उसे क्मात हासिल था। तारों को जब वह छेड़ता तो राह चलते लोग ठिठककर सुनने लगते, मोहल्ले के लोग कुदों के डेर पर आकर बठ जाते, यहां तक कि मेरे भालिक भी—अगर वे उस समय घर पर होते—खिडकियां छालकर मुग्य भाव से सुनते, वायलिन बजानेवाले की सराहना करते। मुझे याद नहीं पडता कि मैंने उनके मुह से किसी की तारीफ सुनी हो,—केवल कपीडल के पादरी को छोडकर, और मैं जानता था कि मछली की मजेदार क्वीरिणों पर उनकी राल जितनी टपकती थी, उतनी किसी भी सगीत पर नहीं।

कभी कभी, भरभरी सी आवाज में, अफसर गाता या क्विताए सुनाता। गाते समय वह जोरो से सास भरता, हयेली को माथे से सटा लेता। एक दिन, उस समय जब मैं खिडकी के नीचे बच्ची से खेल रहा था, रानी मार्गों ने उससे गाने के लिए अनुरोध किया। कुछ डेर तक तो वह ढालता रहा, फिर बहुत ही सुनिश्चित आवाज में उसके मुह से निकला

हे केवल गीत को धावश्यकता सौदय की—
सौदय को नहीं चाहिए गीत भी...

मुझे ये पकितयां बेहद पसंद आईं और, न जाने क्या, इस अफसर पर मुझे तरस आया।

और उस समय तो मैं निहाल हो जाता जब मेरी रानी पियाना पर अकेली बठी होती, कमरे में उसके सिवा जब और कोई न होता। मेरे मस्तिष्क और हृदय पर सगीत का एक नशा सा छा जाता, खिडकी के सिवा और कुछ न दिखाई देता, लम्प की सुनहरी रोशनी में उसके कमनाय शरीर को देखाए और भी उभर आतीं, उसका गर्बाला चेहरा बहुत ही कोमल और सुदर मालूम होता और उसकी श्वेत जगलिया पक्षियों की भांति पियानो के पदों पर कडकडाती रहतीं।

मैं उसे देखता रहता, सगीत की उदास स्वर सह्रिया मेरे कानों का स्पश करतीं और मैं अजीब-अजीब सपनों का ताना-बाना बुनने लगाता कहीं जमीन में गडा खजाना मेरे हाथ लग जाता है और मैं वह सब उसे ही सौंप देता हूँ—वह धनवान हो! कल्पना में नये स्कोबेलेव का रूप धारण कर मैं तुकों क खिलाफ युद्ध करता, उनमें भारी हर्जाना लेकर नगर के सब से अच्छे हिस्से—शोत्वोस में—उसके लिए एक घर बनवाता, ताकि

उसे हमारे इस घर में न रहना पड़े, हमारे इस मोहल्ले से वह दूर चली जाए जहां सब एक स्वर से उसके बारे में गवी बातें करते और उसपर कीचड़ उछालते हैं।

हमारे अहाते में काम करनेवाले सभी नौकर चाकर और उसमें आबाद सभी लोग, खास तौर से मेरे मालिक, रानी मार्गो के बारे में भी वसी ही कुत्सित बातें करते थे जसी कि वे कटर की पत्नी के बारे में करते थे, अन्तर इतना ही था कि इसका जिक्र करते समय वे कुछ अधिक चौकने लगे होते थे, धीमे स्वर में चारों ओर डेढ़ देखकर बोलते थे।

शायद वे उससे डरते थे। कारण कि वह किसी ऊंचे कुल के व्यक्ति की विधवा थी। तुफ़ायेव ने एक बार मुझे बताया था, - और वह निरक्षर भट्टाबाय नहीं, बल्कि पढ़ना जानता था और सदा इजील का पाठ करता रहता था, - कि उसकी हीबार पर लटकी सनबें हस के प्राचीन चारों ने - गादुनोब, अलेक्सेई और प्योत्र महान ने - उनके पति के दादा-परदादाओं को दी थीं। लोग शायद इसलिए भी इससे डरते थे कि कहीं वह बगनी पत्थर की मूठ वाले अपने हृष्टर से उनकी खबर न लेने लगे। कहा जाता था कि एक बार इस हृष्टर से उसने किसी बड़े अफसर की खूब मरम्मत की थी।

लेकिन फुसफुसाकर और धीमे स्वरों में कहे गए शब्द केवल इस लिए अच्छे नहीं हो जाते कि वे खोरो से नहीं कहे गए। मेरी रानी के चारों ओर ऐसी दुश्मनी के वादल मड़राते जो मेरी समझ में नहीं आनी थी और मुझे सताती थी। बीकतर दून की हाकता कि एक बार धार्थी गज के बाद लौटते समय उसने रानी मार्गो के शयनकक्ष की लिटर्नी में झाँककर देखा। वह काउच पर सिफ सोने का लबावा पहने घड़ी थी और ब्रॉड घुटनों के बल झुका हुआ उसके पाव के नाखून काट रहा था और गर्दन से उसके पाव पसार रहा था।

यह सुनकर बूढ़ी मालकिन ने जमीन पर घुंका और उसे फिर देखा। छोटी मालकिन के गाल बुरी तरह लाल हुए।

“ओह बीकतर!” वह चीख उठी। “तुम्हें क्या उसकी शयनकक्ष में झाँकना है? और इन बड़ लोगो की घाल-शाय की शयनकक्ष में - जो शयनकक्ष में पिये बिना उन्हें धन नहीं आता!”

मालिक केवल मुसकराकर रह गया, और कुछ नहीं। उन्हें

मन ही मन मैंने उसका भारी अहसान माना। लेकिन यह डर बराबर बना रहा कि अपनी ज्ञान रोलकर इस नवभारताने में किसी भी क्षण हमारी के साथ यह अपना स्वर मिला सकता है। स्त्रियां न लुप्त तिसकारियां भरों, अह धीर धोह का अम्बार लगा दिया और तो-हादकर एक एक बात उन्होंने बीकतर से पूछी महिला ठीक विस तरह बठा थी, और मेजर ठीक विस प्रचार उसके सामने मुका हुआ था, और बीकतर चले हुए निवाले उनके सामने फेंकता रहा

“मेजर का यूया एवदम चुक-वर जसा साल था और जोभ बाहर निबल आई थी ”

मुझे इसमें गमिदगी की ऐसी कोई बात नहीं बिरलाई ही कि मेजर महिला के पांव के नाखून काट रहा था। लेकिन यह बात मेरे मन में नहीं जमी कि उसकी जीभ बाहर निबली हुई थी। मुझे लगा कि यह धिनीता झूठ उसका मनगढ़त है।

“अगर यह ठीक नहीं था तो तुम लिडकी के भीतर नजर गड़ाए देखते कैसे रहे?” मैंने कहा। “तुम कोई बच्चे तो ही नहीं ”

सिडकिया की उन्होंने मुझपर बीछार की, लेकिन उनकी सिडकियों की मुझे चिता नहीं थी। मेरे मन में एक ही सगन थी—लपककर जिन से नीचे उतर जाऊ और मेजर की भावि महिला के सामने घुटनों के बल झुककर कहूँ

“आप यहां से चली जाइये, इस घर को छोड बीजिये, मेरी बात मानिये!”

अब जब मैं जान चुका था कि दुनिया में दूसरी तरह का जीवन और दूसरी तरह के नाग, दूसरी तरह के विचार और भावनाएँ भी हैं, तो यह अहाता और इस अहाते में बसनेवाले मुझे और भी ज्यादा धिनीने मालूम होते। कुस्ता का ऐसा जाल यहां फैला था कि उसमें सभी फंसे थे,—एक भी आई का ताल ऐंसा न था जो उससे बचा हो। फ्रीज का पादरी जो फटे हाल और सदा रोगी सा आदमी था, उसे भी इन लोगों ने नहीं छोडा था—चरित्रहीन पियक्कड के रूप में उसे बदनाम कर रखा था। मेरे मालिकों की पत्नी जब चलती तो वे सभी अफसरो और उनकी पत्नियों की एक सिरे से पाप के कुण्ड में डुबा देते। स्त्रियों के बारे में सनिकों की आये दिन एक सी बातों से मुझे उबकाई आने लगी थी और

सबसे ज्यादा उबकाई मालिको पर आती थी—उनके फतवा की असलियत, जिह वे दूसरो पर करते थे, में खूब अच्छी तरह पहचानता था। दूसरो की छोछालेदर कसना, उनके नुक्स निकालकर रखना, एक ऐसा मनोरजन है जिसपर कुछ खच नहीं करना पडता, और बे-पसे का यह मनोरजन ही उनका एक मात्र मनबहलाव था। ऐसा मालूम होता मानो ऐसा करके वे खुद अपने जीवन की ऊब, नेकचलनी और घिसघिस का बदला चुका रहे हो।

रानी मार्गो के बारे में जब वे एक से एक गदे किस्से बघारने लगते तो मेरा हृदय बुरी तरह उमडता घुमडता और ऐसी-ऐसी बातें मुझे झसोड डालतीं जिनसे कि उस आयु में मेरा कोई धास्ता नहीं होना चाहिए था। कुत्ता फलानेवालो के खिलाफ मेरे हृदय में खोरा से घृणा सिर उठाती, जी करता कि सबको बिढ़ाऊ, उनके लिए जीना हराम कर डू। लेकिन कभी-कभी अपने पर और अय सब लोगो पर तरस की भावना मुझे घेर लेती। तरस की यह गुमसुम भावना मुझे घृणा से ज्यादा असह्य मालूम होती।

रानी मार्गो के बारे में मैं जितना जानता था, उतना वे नहीं, और मैं मन ही मन डरता कि वहाँ उन्हें भी यह सब न मालूम हो जाए जो मैं जानता हूँ।

ह्योहारो के दिन सुबह के समय जब घर के लोग गिरजे चले जाते तो मैं अपनी रानी के पास पहुच जाता। वह मुझे अपने शयनकक्ष में ही बुला लेती, और मैं सुनहरी गद्दियो से सुसज्जित एक छोटी सी आरामकुर्सी पर बठ जाता, बच्ची उबककर मेरी गोबी में सवार हो जाती और मैं उसकी मा से उन किताबो के बारे में बातें करता जिहे मैं पढ चुका था। अपनी छोटी छोटी हथेलियो पर गालो को टिकाए वह एक चीडे पलंग पर लेटी रहती, कमरे की अय सभी चीजा की भांति उसके बदन पर भी सुनहरे रंग की रजाई पडी होती। चोटी में गुथे हुए काले बाल उसके गेहुवा कंधे पर लटके उसके सामने बिलूरे होते और कभी पलंग की पट्टी से खिसककर पत्र तक झूलने लगते।

मेरी बातें सुनते समय कोमल नदरो से वह मुझे देखती और हल्की सी मुसकराहट के साथ कहती

“अच्छा, यह बात है?”

मुझे ऐसा भालूम होता मानो सचमुच की रानी की भाँति किसी बड़े सिंहासन से यह अपनी मुस्कान का बान बर रही हो। गहरी और कोमल ध्रावाज मे जब यह बोलती तो मुझे ऐसा सगता मानो यह कह रही हो

“मैं जानती हूँ कि मैं ध्रय सोगा से ऊँची, उत्कृष्ट हूँ, और यह कि ये मेरे लिए किसी मसरफ के नहीं हैं।”

उसकी ध्रावाज से सदा यही एक ध्वनि निकलती।

कभी-कभी मैं उसे झाँकि के सामने एक नीची सी कुर्सी पर बड़े हुए बाल सवारते देखता। उसके बाल भी उतने ही घने और लंबे थे जितने कि नानी के। वे उसके घुटनों और कुर्सी की बाँहों पर छा जाते, उसकी पीठ पर से झूमते हुए फज को छूने लगते। झाँकि मे मुझे उसकी गपराई हुई छातियाँ दिखाई देतीं। मेरी मौजूदगी मे ही यह अपनी चोती बसती और मोझे पहनती, लेकिन उसका नगा बदन मेरे हृदय मे गमनाक भावनाएँ नहीं जगाता, बल्कि उसका सौंदर्य एक आद्वाद्पूण गौरव का मुझे संचार करता। उसके बदन से सदा फूलों की महक निकलती जो वासना में डूब विचारों और भावनाओं से बचव की भाँति उसकी रक्षा करती।

मैं मजबूत बदन का और जूब भला-बगा था। स्त्री-मुद्य के सबकों के भेद मुझसे छिपे नहीं थे। लेकिन इन सबको के बारे में लोगों को मैं इतने गदे और हृदमहीन ढंग से तथा इस हृद तक कुत्सित रूप मे रस लेते हुए बातें करते सुन चुका था कि इस स्त्री के साथ किसी पुरुष के आलिंगन की मैं कल्पना तक नहीं कर सकता था, मेरे मन मे यह बात खूब गहरा पठ गई थी कि उसके शरीर को अपने निलज्ज और दुस्साहसी हाथों से छूने का किसी का अधिकार नहीं है। मुझे पक्का यकीन था कि रसोईघरों और ओने-कोने वाले प्रेम से रानी मागों का कोई वास्ता नहीं हो सकता। वह जट्टर ही किसी ध्रय, क्यादा ऊँचे और भले आनन्द का, एक दूसरे ही प्रकार के प्रेम का, भेद जानती होगी।

लेकिन एक दिन काफी वापहर बीते जब मैंने उसके बठने के कमरे मे पाव रखा तो मेरी रानी के खिलखिलाकर हसने और शयनकक्ष वाले दरवाजे पर पड़े पदों के पीछे किसी पुरुष के बोलने की ध्रावाज सुनकर मैं ठिठक गया।

“अरे जरा ठहरो तो!” वह कह रहा था। “तुम भी सञ्च करती हो। कोई क्या कहेगा?”

मे समझता था कि मुझे उलटे पाव लौट जाना चाहिए, लेकिन मेरे पावों ने मानो हिलने से इनकार कर दिया।

“कौन है?” उसने पूछा। “अरे, तुम ही? भीतर चले आओ!”

कमरा फूलों की महक में डूबा था। खिड़कियों पर परदे खिंचे हुए थे। कमरे में अंधेरा सा छाया था। रानी मार्गो ठोड़ी तक अपने बदन पर रजई लॉचे पलंग पर लेटी थी। उसके पास ही, दीवार की ओर मुह लिए, वह वायलिन-वादक अफसर बठा था। वह केवल एक कमीज पहने था। कमीज का गला खुला था और दाहिने बंधे से लेकर सीने तक घाब का एक निगान था—इस हृदय तक चटक सात कि इस अंध जजियाले कमरे में भी साफ नजर आता था। उसके बाल कुछ अटपटे ढंग से बिखरे हुए थे। उसके उदास तथा घाब-सगे चेहरे को मैंने पहली बार मुसकराते हुए देखा। वह अजीब ढंग से मुसकरा रहा था और अपनी बड़ी-बड़ी स्त्रण आँखों से मेरी रानी की ओर इस तरह देख रहा था मानो उसके सौंदर्य को उसने पहली बार ही देखा हो।

“यह मेरा मित्र है,” रानी मार्गो ने कहा, और मैं समझ नहीं पाया कि किसके लिए उसने इन शब्दों का इस्तेमाल किया था मेरे लिए अथवा उस अफसर के लिए।

“अरे, तुम वहीं ठिठककर क्यों खड़े खड़े रह गए?” उसकी आवाज जैसे कहीं बहुत दूर से आती मालूम हुई। “इधर आओ ”

जब मैं निकट पहुंचा तो उसने अपनी उधरी हुई गम बाह मेरे गले में डाल दी और बोली

“बड़े होने पर तुम भी जीवन के सुख का आनंद ले सकोगे आओ!”

किताब को मैंने साफ पर रख दिया, एक दूसरी पुस्तक उठाई और वहां से धला आया।

मेरे हृदय में कोई जीव कचर गई। स्पष्ट ही, एक क्षण के लिए भी मैं यह नहीं सोच सकता था कि मेरी रानी भी अथ साधारण लोगों की भांति प्रेम करती होगी, न ही उस अफसर के बारे में ऐसी कोई बात मेरे दिमाग में आती थी। मैं उसकी मुसकान देख रहा था—वह छुशी के साथ मुसकरा रहा था, जैसे कोई बच्चा सहसा विस्मित होकर मुसकराता है, उसके उदास चेहरे का जैसे एकदम कायापलट हो गया था।

उसका हृदय, निश्चय ही, उसके प्रेम से डगमगा रहा था। और यह कई अनहोनी बात नहीं थी—ऐसा भला कौन था जो उसे प्रेम करने से अपन आप को रोक सकता? और एक ऐसे आदमी पर जो इतनी मुदर वायलत बजाता था और भावों में खूब गहरे डूबकर कविताएँ सुनाता था, उसका प्रेम योछावर करना भी कोई अनहोनी घटना नहीं था।

इन दिलासो को पाने की जरूरत इस बात का स्पष्ट सूचक थी कि जो कुछ मैंने देखा है उसके प्रति और खुद रानी मार्गों के प्रति मेरे, रवरे में जरूर कहीं न कहीं कोई खोट है। मुझे ऐसा लगा जैसे कई चीव लो गई हो। कई दिन गहरी उदासी में मुझे घेरे रखा।

एक दिन मेरे दिमाग पर जैसे शतान सवार हो गया और मैं जमकर उल्पात मचाया। पुस्तक लेने जब मैं महिला के पास पहुचा तो उतने कडी आवाज में कहा

“मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी कि तुम इतना जगन्मोपन करोगे शतानी की भी एक हृद होती है!”

मैं यह बरदाशत नहीं कर सका, मेरा हृदय भर आया और मैंने उसे बताना शुरू किया कि मेरे लिए जीना कितना कठिन है, कि उस समय जब लोग उसके बारे में वाहीतवाही बकते हैं तो मेरे हृदय पर क्या पुचरती है। वह मेरे सामने खडी थी, उसका हाथ मेरे कंधे पर रखा था। पहले तो वह सनाटा लोचि चुपचाप सुनती रही, फिर एकाएक लिलत लिलाकर हसी और मुझे हल्के हाथ से धकेलते हुए बाली

“बस-बस, मैं यह सब जानती हूँ। समझे, मुझसे कुछ भी छिपा नहीं है।”

इसके बाद मेरे दोनो हाथ उसने अपने हाथों में ले लिए और धनुत ही कामल आवाज में बोली

“इन गदी बातों पर जितना कम ध्यान तुम दोगे, मुझारे लिए उतना ही अच्छा होगा पर तुम हाथ तो अपने ठीक से नहीं धाते ”

भला यह भी कोई बहने की बात थी, मेरी तरह अगर उसे भी बरतन माजने, कमरो के फश और गंदे पोतडे धोने पडते, तो मैं समझता हूँ, उसने हाथ भी मुझसे कोई लास अच्छे न दियाई देते।

“जब कोई अच्छी तरह से रहना और जीवन बिताना जानता है तो लोग उससे हुड़ते और जलते हैं, और अगर वह नहीं जानता तो उसर

मुह पर धूफते हैं," उसने गम्भीर स्वर में कहा। फिर, मुझे उचकाकर अपनी ओर खींचते हुए उसने गहरी नजरों से मेरी आंखों में देखा और मुसकराते हुए बोली

"क्या तुम मुझे चाहते हो?"

"हां।"

"बहुत?"

"हां, बहुत।"

"लेकिन—क्या?"

"न जाने क्यों "

"शुभिया। तुम बहुत ही प्यारे सड़के हो। बड़ा अच्छा लगता है जब मुझे कोई चाहता है "

वह एक छोटी सी हसी हसी और ऐसा मालूम हुआ मानो वह कुछ कहने जा रही हो, लेकिन एक उसास भरकर चुप हो गई। मेरे हाथों को वह अभी भी अपने हाथों में धामे थी।

"तुम्हें यहाँ आने की पूरी छूट है। जब भी मौका मिले, चले आया करो "

उसके इस बुलावे का मैंने पूरा फायदा उठाया और उसकी मित्रता से मुझे भारी लाभ हुआ। दोपहर का भोजन करने के बाद मेरे मालिक जब झपकी लेते तो मैं तुरंत खिसक जाता और अगर वह घर पर होती तो उसके साथ एकाध घंटा या इससे भी अधिक समय बिताता।

"तुम्हें वही कितानें पढ़नी चाहिए, हमारे अपने वही जीवन को जानना-समझना चाहिए।" वह मुझे सीख देती और अपनी चपल गुलाबी जगलिया से महकते हुए बालों में पिनें खोसती रहती।

इसके बाद वह वही लेखकों के नाम बताती और फिर पूछती

"इह भूलोगे तो नहीं?"

बहुधा ऐसा होता कि वह सोचने लगती और एकाएक, मानो अपने आप को झिड़की देते हुए, वह उठती

"मैं भी कसी हूँ? तुम यो ही घूमते हो, और मुझे याद तक नहीं रहता कि तुम्हारी पढ़ाई के लिए कुछ करना है "

कुछ देर उसके पास बठने के बाद, हाथों में काई नयी कितान लिए, जब मैं लपककर वापस लौटता तो हृदय में एक नये निस्कार का अनुभव करता।

अवसाथेव की लिखी हुई पुस्तक "जीवनवृत्त", बढ़िया दसी उपमात "जगलो मे", चकित कर देनेवाले "गिकारी के सस्मरण" में पढ़ चुका था। प्रेबेको और सोल्सोगूब की कितनी ही पुस्तके और वेनेवितीनोव, प्रोदोयेस्की तथा त्युत्वेव की कविताए भी मैं पढ़ गया था। इन पुस्तकों ने मेरे हृदय को निलारा और उन खरोचों तथा बागधन्वों को साफ कर दिया जो कट्ट और मल्लो-भुचली यास्तविकता से रगड खाने के कारण मेरे हृदय पर पड गए थे। अच्छी किताबो का महत्व, उनके माने अब मैं समझता था और जानता था कि मेरे लिए उनका होना कितना जरूरी है। उन्हें मैं पढ़ता और एक अडिग विश्वास से मेरा हृदय भर जाता— मुझे लगता कि दुनिया मे मैं अकेला नहीं हूँ और, देर या सबेर, मैं अपना रास्ता खोज ही लूँगा।

नानी मुझसे मिलने आती। मैं उसे रानी मार्गों के बारे मे बताता। सुग्य कर देनेवाले शब्द मेरे मुह से निश्चलते। नानी सुनती और खुदकी मे भरपूर नास लेकर सुघते हुए कहती

"जी लुश हो गया सुनकर। भले लोगो की इस दुनिया मे कमी नहीं। आलें उठाकर धरा देखने भर की जरूरत है, यह नहीं हो सकता कि वे न मिलें।"

एक धार उसने कहा

"कहो तो मैं भी उससे मिल जाऊँ। तुम्हारे लिए उसका शुशिया ही अवा कर आऊँगी।"

"नहीं जाओ "

"अच्छी बात है, मैं नहीं जाऊँगी यह दुनिया भी कितनी सुबर है, ऐ मेरे भगवान! मैं तो इससे कभी विदा न लेने को राखी हूँ।"

मुझे स्कूल भेजने की अपनी इच्छा को रानी मार्गों पूरा होते नहीं देख सकी। ईस्टर के बाद सातवे रविवार को, त्योहार के दिन, एक ऐसी दुखद घटना घटी कि

त्योहार से कुछ समय प
और मेरी आलें बरोब-करीब
कि कहीं मेरी आलें न

दिया होता।
सूज गई थी
घबराए
समाया

या। वे मुझे जान-पहचान के एक जज्बा डाक्टर के पास ले गये। हेइनरिख रोदवेविच उसका नाम था। मेरी पलकों को उलटकर उसने उनमें रोहो को चीरा और आँखों पर पट्टी बांधे निपट अघकार में अघा बना कई दिन तक मैं दुःख से कराहता रहा। त्योहार से एक दिन पहले पट्टी खुली और विस्तार से उठते समय ऐसा भालूम हुआ मानो मैं क्य मे से उठ रहा हूँ जिसमें मुझे जिंदा ही बफना दिया गया था। अघा होने से बढकर भयानक और कुछ नहीं। जिसके सिर यह मुसीबत पडती है, उसके लिए बस मे से नौ हिस्से दुनिया चौपट हो जाती है।

त्योहार का उल्लास भरा दिन था। आँखों की बजह से दोपहर में ही मुझे सब कामों से छुट्टी मिल गयी और अरबलियों से मिलने के लिए मैं एक के बाद एक सभी रसोईघरों के चक्कर लगाने लगा। गम्भीर तुफानों के छोडकर अग्य सब नशे में धुल रहे। साज के समय देरमोजिन ने सीबोरोव के सिर पर लकड़ी का ऐसा कुंदा जमाया कि वह दरवाजे पर ही डेर हो गया। देरमोजिन की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई और वह नाले में वहीं टिप गया।

सारे अहाते में सीबोरोव की हत्या की धबराहट भरी जबर फल गयी। ओसारे के पास भीड जमा हो गई जहा, रसोई और दरवाजे के बीच, सीबोरोव निश्चल पडा हुआ था। लोग बबे स्वरो में कानाफूसी कर रहे थे कि पुलिस को बुलाना चाहिए, लेकिन न तो कोई पुलिस बुलाने गया और न ही किसी ने उसके बदन को हाथ लगाने का साहस किया।

तभी धोबिन नताल्या बोस्लोव्स्काया बहा आई। वह बगनी रंग का नया फ्राक पहने थी और अपने बधो पर एक सफेद रुमाल डाले थी। तमतभाकर लोगों को इधर उधर करती और भीड को धीरती वह उयोड़ी में घली आयी, लाश के पास पहुँची और झुककर उसे देखने लगी।

“काठ के उल्लुओ, यह जिंदा है!” उसने जोरो से चिल्लाकर कहा।
“पानी लाओ!”

“अरी, तू क्या बाच में टाग अडाती है?” लोग चेतावनी देने लगे।
“वहीं ऐसा न हो कि लेने के देने पड जाए!”

“बक नहीं, पानी लाओ, पानी!” उसने इस तरह चिल्लाकर कहा मानो उसे आग बुझाने के लिए पानी की जरूरत हो। इसके बाद, बहुत ही कामकाजी ढंग से, उसने अपना नया फ्राक खींचकर घुटनों पर चढ़ा

अपना जीवन की सिरती हुई पुस्तक "जीवनवृत्त", बढ़िया रसो उपन्यास "जगतो मे", चर्चित कर देनेवाले "गिरारी के सम्मरण" में पढ़ गया था। प्रेन्को और सोल्लोगूब की कितनी ही पुस्तके और बेनेविनीनोव, प्रोबोयेस्की तथा स्पुचेव की कविताएँ भी मैं पढ़ गया था। इन पुस्तकों ने मेरे हृदय को निरारा और उन खराबों तथा बाग धव्यों को साफ कर दिया जो बटु और भंली-नुचली वास्तविकता से रगड़ खाने के कारण मेरे हृदय पर पड़ गए थे। अच्छी कविताओं का महत्व, उनके माने धर्म में समझता था और जानता था कि मेरे लिए उनका होना कितना जरूरी है। उन्हें मैं पढ़ता और एक अद्विग विश्वास में मेरा हृदय भर जाता— मुझे लगता कि दुनिया में मैं अकेला नहीं हूँ और, देर या सवेर, मैं अपना रास्ता खोज ही लूँगा!

नानी मुझसे मिलने आती। मैं उसे रानी मार्गों के बारे में बताता। सुगंध कर देनेवाले गन्ध मेरे मुँह से निकलते। नानी मुनती और घटनी में भरपूर नास लेकर सुमते हुए रहती

"जी खुश हो गया मुनकर। भले लोगो की इस दुनिया में कमी नहीं। आलें उठाकर जरा देखने भर की जरूरत है, यह नहीं ही सकता कि वे न मिलें।"

एक बार उसने कहा

"कहो तो मैं भी उससे मिल जाऊँ। तुम्हारे लिए उसका श्रिया हा भदा कर आऊँगी।"

"नहीं जाओ"

"अच्छी बात है, मैं नहीं जाऊँगी यह दुनिया भी कितनी मुबद है, ऐ मेरे भगवान! मैं तो इससे कभी विदा न लेने को राखी हूँ।"

मुझे स्कूल भेजने की अपनी इच्छा को रानी मार्गों पूरा होते नहीं देख सकी। ईस्टर के बाद सातवे रविवार को, त्योहार के दिन, एक ऐसी दुर्जद घटना घटी कि उमने मेरा बण्टादार ही कर दिया होता।

त्योहार से कुछ समय पहले ही मेरी पत्तके बुरी तरह सूज गई थी और मेरी आलें करीब-करीब पूरी पट हो गई थीं। मेरे मालिक धबराएँ कि कहीं मेरी आलें न जाती रहे। खुद मेरे हृदय में भी यही डर समाया

था। वे मुझे जान-पहचान के एक जच्चा डाक्टर के पास ले गये। हेइन्रिख रोब्जेविच उसका नाम था। मेरी पलकों को उलटकर उसने उनमें रोहो को चीरा और आखों पर पट्टी बांधे निपट अघकार में अघा बना कई दिन तक मैं दुःख से कराहता रहा। त्योहार से एक दिन पहले पट्टी खुली और बिस्तर से उठते समय ऐसा मालूम हुआ मानो मैं कब्र में से उठ रहा ॥ जिसमें मुझे जिंदा ही दफना दिया गया था। अघा होने से बढ़कर भयानक और कुछ नहीं। जिसके सिर यह मुसीबत पड़ती है, उसके लिए दस में से नौ हिस्से दुनिया चौपट हो जाती है।

त्योहार का उल्लास भरा दिन था। आखों की वजह से दोपहर में ही मुझे सब कामों से छुट्टी मिल गयी और अरदलियों से मिलने के लिए मैं एक के बाद एक सभी रसोईघरों के चक्कर लगाने लगा। गम्भीर तुफायेब को छोड़कर अरय सब नशे में धुत्त थे। सास के समय येरमोजिन ने सीबोरोव के सिर पर लकड़ी का ऐसा कुत्ता जमाया कि वह दरवाजे पर ही डेर हो गया। येरमोजिन की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई और वह नाले में वहीं छिप गया।

सारे अहाते में सीबोरोव की हत्या की खबराहट भरी खबर फल गयी। ओसारे के पास भीड़ जमा हो गई जहाँ, रसोई और दरवाजे के बीच, सीबोरोव निश्चल पड़ा हुआ था। लोग दबे स्वरो में कानाफूसी कर रहे थे कि पुलिस को बुलाना चाहिए, लेकिन न तो कोई पुलिस बुलाने गया और न ही किसी ने उसके बदन को हाथ लगाने का साहस दिया।

तभी धोबिन नताल्या कोस्लोव्स्काया वहाँ आई। वह बगती रग का नया फ्राक पहने थी और अपने कंधों पर एक सफेद रुमाल डाले थी। तमतमाकर लोगों को इधर उधर करती और भीड़ को चीरती वह डपोठी में चली आयी, लाश के पास पहुँची और झुककर उसे देखने लगी।

“काठ के उल्लुभो, यह जिंदा है!” उसने जोरो से चिल्लाकर कहा।
“पानी लाओ!”

“अरी, तू क्यों बीच में टाग अडाती है?” लोग चेतावनी देने लगे।
“कहाँ ऐसा न हो कि लेने के देने पड़ जाए!”

“बक नहीं, पानी लाओ, पानी!” उसने इस तरह चिल्लाकर कहा मानो उसे अग ब्रह्माने के लिए पानी की जरूरत हो। इसके बाद, बहुत ही कामकाजी ढंग से, उसने अपना नया फ्राक खींचकर घुटनों पर चढ़ा

लिया, झटककर अपना पेटोकोट नीचे खिसका लिया और सैनिक का हन से लयपय सिर अपने घुटने पर रख लिया।

डरपोक लोग जो वहा लडे तमाशा देख रहे थे, भुनभुनाते और भला बुरा कहते धीरे धीरे छट गए। डयोढी के अघ उजिपाले मे घोबिन की छलछलाती हुई आसो पर मेरी नजर पडी जो उसके गोल-मटोल सिट्टे चेहरे पर तमतमाती चमक रही थीं। लपकर मे एक डोल पानी ले आया। वह मुझसे बोली कि इसे सीदीरोव के सिर और छाती पर उडेत डू।

“लेकिन मुझे तर न कर देना, मैं मिलने जा रही डू।” घेताते हुए उसने कहा।

सैनिक को होश आ गया, उसने अपनी आंखें खोलीं और कराह उठा।

“इसे जरा उठा तो,” नतात्या ने कहा और अपने हाथ आगे फलाकर उसकी बगल मे डाले जिससे कपडे छराब न हो, और उसे धाम लिया। हम दोनों उसे उठाकर रसोईघर मे ले गए और बिस्तर पर लिटा दिया। फिर एक गीले कपडे से उसने उसका मुह साफ किया, और बाहर जाते हुए बोली

“कपडा गीला करके इसके माथे पर रखता रह। मैं बाहर जाती डू और उस दूसरे उल्लू को अभी खोजकर लाती डू। शतान कहीं के! अभी धमा है, जब जेल मे चक्की पीसनी पडेगी, तब सारा नगा उड जाएगा।”

खून के दाग लगा अपना पेटोकोट खिसकाकर उसने नीचे उतार दिया और एक कोने मे फेंक दिया। फिर सावधानी से थपथपाकर बतफत्तग अपने नये फ्राक को ठीक किया। इसके बाद वह बाहर चली गई।

सीदीरोव ने अपना बदन लम्बा फला लिया, हिलकिया लेने और आँहें भरने लगा। उसके सिर से काले रग का खून टपक-टपककर भरे गग पाय पर गिर रहा था। मुझे बडी धिन आई, लेकिन डर के भारे मुझमे अपना पाव हटाते नहीं बना।

मुझे बडी उदासी मालम हुई। बाहर हर चीज त्योहार के रग मे रगी थी और पुगी से छलछला रही थी, घर का ओसारा और फाटक नवजात भोज वृथो से सजे थे, हर लम्बे पर मेपल और रोबन वृक्ष की टहनियों का सिगार था, मोहल्ले मे सब कुछ हरा भरा दिख रहा था और प्रत्येक घोंच नयी तथा यौवन से इठलाती मालूम होती थी। सबरे से मुझ ऐसा

मालूम हो रहा था मानो वसंत का यह उल्लास जल्दी ही विदा न होगा और जीवन अब अधिका उजला, कूड़े-करकट से साफ और खुशी से छलछलाता नौतेगा।

सनिक ने उबकाई लेकर उल्टी कर दी। गम धोदका और हरे प्याज की दमघोट गंध से रसोईघर भर गया। जब तब घुधले तथा चपटे चेहरे और चिपकी नाके लिडकी के शीशो से सटी हुईं दिखाई देती, और चेहरे के बोना और फली हुई उसकी हथेलिया बंदगे बानो की भाति मालूम होतीं।

सनिक यह याद करते हुए कि कसे क्या हुआ बडबडा रहा था
“यह क्या? क्या मैं गिर पडा था? घेरमोलिन? अच्छा बोस्त निकला ”

वह खासा, छुमारी में उसने आसू बहाए और रोने शीकने लगा
“मेरी बहिना ओ बहिना ”
पानी में भीगा, कीच में सना और गघाता, वह उठा और अपने पावो पर खडे होने का उसने प्रयत्न किया, लेकिन चक्कराकर फिर बिस्तर पर ही डह गया और नय से आखो को टेरेते हुए बाला

“बिरकुल ही भार डाला रे ”
यह सुनकर मुझे हसी आ गई।
“कौन शतान हसता है?” धुधली आखो से मेरी ओर देखते हुए उसने कहा। “तू हसता कसे है? अरे, मैं तो हमेशा के लिए मारा गया ”

और बडबडाते हुए वह मुझे अपने बोनो हाथो से धकेलने लगा
“पहले तीफेत में पगम्बर इल्यास, दूसरे आडे वक्त में घोडे पर सवार सत जाज, और तीसरे—हट जा भेडिये मेरे रास्ते से!”

“पागल मत बन,” मैंने कहा।
वह वेमतलब गुस्ता हो गया, बहाडने लगा, पर रगडने लगा।
“मैं मारा गया, और ”

उसने अपने भारी, गदे और ढीले हाथ से मेरी आखो पर जोरो से प्रहार किया। मैं चिल्लाकर अघा सा बना जैसे-तैसे बाहर अहाते में भागा जहा नताल्या घेरमोलिन की बाह पकडे उसे खींचती हुईं ला रही थी और चिल्लाकर कह रही थी

“चलता है कि नहीं, लड्डू छोड़े? यह क्या हुआ?” मुझ सभालते हुए उसने पूछा।

“लड्डू है =

“लड्डू है?” नताल्या ने अचरज से कहा। फिर पेरमोलिन झटकाकर बोली

“शुक्राना भेज भगवान को, उसने तुझे इस बार बचा लिया।”

मैंने आखों को पानी से धोया और ड्योडी से ही भीतर झाँक बेसा दोनो सनिक गले से सिपटे हुए नशीले मेल मिलीबल मे एक-दूस का मुह चूम घाट रहे थे और उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। इसके बा वे नताल्या को गले से लगाने के लिए लपके, लेकिन थप्पड़ से खबर लेते हुए वह चिल्लाई

“कुत्ते नहीं तो, खबरदार जो मेरी ओर खरा भी अपने पजे फलाए। मुझे भी क्या तुमने बबुवाइन समझा है। खर इसी मे है कि अपने मातिकों के आने से पहले एकाध झपकी लेकर भले आदमी बन जाओ। नहीं तो तुम्हारी जान पर आफत आयेगी।”

छोटे बच्चों की भाँति उसने दानों को लिटा दिया, एक को पतंग पर, दूसरे को फश पर। जब दोनो खरटि भरने लगे तो वह ड्योडी मे निकल आई।

“मेरी फाक तो चुरमुर हो गई है, और मैं थी कि लोगों से मिलने जुलने के लिए घर से निकली थी। उसने तुझे मारा? बंबकूफ कहीं का! थोबका जो न कराए थोडा है। तू कभी न पीना, मेरे बच्चे, इसकी ल कभी न डालना ”

फाटक के पास एक बेंच पर उसके पास ही बठते हुए मैंने पूछा

“तुम्हे शराबियो से डर नहीं लगता?”

“मैं किसी से नहीं डरती—कोई नशे मे हो या न हो। मैं सभी के इससे काबू मे रखती हूँ!” कसकर बथी अपनी लास मुट्टी विलाते हुए उसने कहा। “ससम मेरा, भगवान को प्यारा हो गया, वह भी कसकर पीता था। तो मैं, जब थो ज्यादा नशे मे होता, मैं उसके हाथ-पाँव रस्सी से जकड देती। और जब थो तो उठता, नगा उसका उतर जाता तो उसका पतलून खींचकर मोटी-तानवी और मजबूत सटिया से उसकी मरम्मत करती, ‘खबरदार जो फिर कभी मुह से लगाई, ब्याह किया तो

फिर पीने का कोई काम नहीं, दिल बहलाने को बीबी है, वोदका नहीं।' हा, बस खूब खबर लेती और जब तक मेरे हाथ जवाब न देते, तडातड सटिया जडती रहती। सटियों की मार से वह इतना नम हो जाता कि चाहो तो चियडे की भाति उगली पर लपेट लो।"

"तुम ताबतवर हो," मैं कहता, और भुझे हौवा का ध्यान हो आता जिसने खुदा पो भी चकमा दिया था।

नताल्या ने सास खींचते हुए कहा

"औरत को मद से भी प्यादा साकत की जहरत है,—उसके पास वो मर्दों के बराबर ताबत होनी चाहिए, लेकिन भगवान ने मर्दों को प्यादा बलवान बना लिया। लेकिन मर्दों पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता।"

वह बहुत ही इत्मीनान से, बिना किसी जलन या कुठन के, बोल रही थी। उसकी कोहनिया मुड़ो हुई थी और उसके हाथ उसकी भरी पूरी छातियों पर बंधे हुए थे। इसकी पीठ बाडे से सटी थी और उसकी आँखें कूडा-करकट छितरे रोडी से भरे बाथ पर उदास भाव से जमी थीं। उसकी सयानी बाता मे कितना समय निकल गया, कितना नहीं, भुझे कुछ ध्यान न रहा। सहसा, बाथ के बूसरे छोर पर, अपने मालिक पर मेरी नजर पड़ी। पत्नी के साथ, उसे अपनी बाह का सहारा दिए, वह इधर ही आ रहा था। धीमे डगो से, रोब के साथ, मुर्गे-मुर्गी के जोडे की भाति तिरछी गरबन किए वे चले आ रहे थे। वे हमारी ही ओर देख रहे थे और आपस मे कुछ घाते कर रहे थे।

मैं लपककर ओसारे का दरवाजा खोलने भागा। खीने पर चडते हुए मेरी मालकिन ने तीखी आवाज मे कहा

"क्यो, धोबिना से चुहल करने लगा? सील लिया नीचे वाली से यह सब?"

बात इतनी बेसिर पर की थी कि उसने मेरे हृदय को छुआ तक नहीं। भुझे अधिक दु ख इस बात से हुआ कि मालिक भी हल्की हसी हसते हुए बोला

"हुआ क्या—इसका भी वक्त आ गया है।"

अगले दिन सुबह के समय जब मैं लकडी लेने सायबान मे गया तो दरवाजे मे बिल्लियों के लिए बने छेद के पास, भुझे एक खाली बटुवा

पडा हुआ मिला। इस बटुवे को सीदोरोव के हाथों में मैं बीसियों बर देख चुका था। सो मैं उसे लेकर तुरत सीदोरोव के पास पहुंचा।

“श्रीर पसे कहा हूँ?” अपनी उर्गतियों से बटुवे के भीतर टटोलते हुए उसने पूछा। “एक रूबल और तीस कोपेक थे। निकाल इधर!”

उसने अपने सिर पर एक तौलिया लपेट रखा था। उसका चेहरा पीला और खिचा हुआ सा था। अपनी सूजी हुई आंखों को मिचमिचकर अपने मेरी ओर देखा और इस घात पर विश्वास करने से इनकार कर दिया कि मुझे जब बटुवा मिला तो वह जाली था।

तभी येरमोलिन भी आ गया और उसपर अपना रग खटाने हुए यह मिट्टी करने की बौझिश करने लगा कि मैं चोर हूँ।

“इसी ने बटुवा जाली किया है,” मेरी ओर सिर हिलाकर इशारा करते हुए उसने कहा, “जान पकड़कर इसे इसके मालिक के पास ले चल। कोई भी सिपाही किसी दूसरे सिपाही भाई की चोरी नहीं करेगा।”

उसके शब्दों ने माफ मालूम होता था कि यह सब उसका ही करतूत है, पता निकालकर उसने बटुवा हमारे सायबान में डाल दिया। मैंने भाव देखा न ताऊ, उसके मुह पर ही कहा

“नूठा कहीं का, पसे छुद तुने चुराये है।”

मुझे पक्का विश्वास हो गया कि मेरा यह अंदाज सही है, क्योंकि मेरी बात सुनते ही डर और झुंझलाहट से उसका चेहरा तिकोनिया बन गया। वह धौंला

“है कोई सबूत?”

त्रेकिन मैं सबूत कहा से देता। येरमोलिन ने खीजकर मुझ पर आ और खींचता हुआ बाहर अहाते में ले गया। सीदोरोव भी खींचता हुआ पीछे-पीछे लपका। शार सुनकर पडोसियों के सिर खिड़कियों से बाहर निकल आए। रानी मार्गों की मा भी इस साथे, निश्चल भाव से सिगरेट पीते हुए देख रही थी। यह सोचकर कि अपनी रानी की नजरों में मेरी अन्न नोई साख न रहेगी, मेरा सिर एकदम चकरा गया।

मुझे याद है कि सनिको ने मेरे हाथ जकड़ रखे थे। मेरे मालिक लोग उनके सामने लटके थे, एक-दूसरे के स्वर से स्वर मिलाकर गिफायतें सुन रहे थे। छोटी मालकिन चिहुक उठी

“यह इसी की करतूत है। कन रात, फाटव के पास, यह धाबिन

से चुहल कर रहा था। इसकी जेब न खनखनाती होती, तो वह इसे हाथ तक न धरने देती "

"जरूर यही बात है।" येरमोलिन चिल्लाया।

मेरे पावों के नीचे फल भानो हिल गया। सारे बदन में आग लग गई। झल्लाकर मैं मातकिन पर चिल्लाया और इसके बाद दुरी तरह मार खाई।

लेकिन पिटाई से मेरा हृदय इतना घायल नहीं हुआ जितना इस बात से कि रानी मार्गो मेरे बारे में अब क्या सोचेगी। उसकी नजरों में अपने को अब मैं कैसे ऊंचा उठा सकूंगा? बहुत दुरा था मेरा हाल उस समय।

सौभाग्य से देखते देखते सारे अहाते और माहल्ले व समूचे ओर छोर में सनिका ने घोरी की यह घटना तेजी से फला बी। साझ होते न होते, उस समय जबकि मैं अटारी में मुह छिपाए पड़ा था, मुझे नताल्या कोरलोव्स्काया के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी

"बड़ा आवाजादा है जो मैं अपना मुह बंद रखूँ? बस, सीधी तरह से चला आ, मैं कहती हूँ कि चला आ, ज्यादा नानुकर न कर। नहीं तो तेरे अफसर के सामने सारा भडाफोड कर दूंगी और तू जिचा जिचा फिरेगा!"

मैं फौरन भाप गया कि हो न हो, यह तडप झटप मुझसे ही सबध रखती है। वह हमारे ओसारे के पास ही खड़ी थी और चिल्ला रही थी और उसकी आवाज अधिकाधिक तेज होती और अधिकाधिक जोर पकड़ती जा रही थी।

"कल तूने मुझे कितने पसे दिलाये थे? कहा से आये वे तेरे पास-बता तो जरा?"

खुशी के मारे मेरा गला रुध सा गया। सीदीरोव का मिनमिनाना भी सुनाई पड़ रहा था

"ओह, येरमोलिन, येरमोलिन "

नताल्या कह रही थी

"ओर सिर पर पड़ी इस लडके के-चोर भी बना, मार भी खाई?"

मेरा मन हुआ कि लपककर फौरन नीचे पहुंच जाऊँ और खुशी से झूमकर घोबिन को चूम लूँ। लेकिन तभी, गायद लिडकी के से, मुझे अपनी मातकिन के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी

“चुप रह छिनाल ! लडके को चोर कितनी नहीं समझा, न ही इसके लिए वह पिटा। उसने मार खाई अपनी बदतमीजी के लिए !”

“छिनाल तुम खुद हो, मेम साहिबा और ऊपर से मोटी गाय भी।” उनकी यह तडप तडप मेरे लिए मधुर संगीत थी। दिल पर ली चोट और नताल्या के प्रति कृतज्ञता के आसू मेरे हृदय में जमठ जमठ हुए और उन्हें रोकने के प्रयत्न में दम घुटने लगा।

फिर मेरा मासिक, धीमे डगो से, अटारी में आ गया और पास ही बाहर को निकली एक कडी पर बैठ गया।

“क्यों, भाई, पेगकोव, तेरी किरमत ही खराब है,” अपने बाप को ठीक करते हुए उसने कहा। “करे कोई, और भुगतें कोई !”

कोई जवाब दिए बिना ही मैंने मुह फेर लिया।

कुछ रुककर उसने फिर कहा

“लेकिन इसमें भी कोई शक नहीं कि तू बेहब मुहफटा है !”

“ठीक होने पर मैं आपके यहाँ से चला जाऊंगा ” मैंने कहा।

कुछ देर तक उसने कुछ नहीं कहा, चुपचाप बठा सिगरेट का धुआँ उड़ाता रहा। इसके बाद, सिगरेट के छोर पर अपनी मखर गड़ाए बोला

“जसा तू ठीक समझे। तू कोई बच्चा तो है नहीं, अपना भला-बुरा खुद सोच सकता है ”

और वह चला गया। सदा की भांति मुझे उसपर तरस आया।

चार दिन बाद मैंने यह जगह छोड़ दी। मेरे मन में गहरी इच्छा थी कि रानी भागों के पास जाकर उससे विदा ले आऊँ, लेकिन उस तक पहुँचने का साहस न बटोर सका और, सब बात तो यह है कि, मन ही मन मैं यह उम्मीद बापे था कि यह खुद मुझे बुलायेगी।

बच्ची से विदा लेते समय मैंने कहा

“अपनी माँ से कहना कि मैं उनका कृतज्ञ हूँ और उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। कहोगी न ?”

“हां,” बटुल ही बोमल और प्यारी मुसकान के साथ उसने बचन दिया। फिर बोली, “विदा, बस तक के लिए, है ना !”

घोस घप बाद उससे फिर मेरी भेंट हुई। तब वह राजनीतिक पुस्तिक के एक धरसर की पत्नी थी...

एक बार फिर मैंने जहाज में बरतन धोने का काम सभाला। इस जहाज का नाम था "पेर्म", बड़ा और तेज रफ्तार, हंस की भाँति एकदम सफेद। इस बार मेरा ओहदा था—किचन ध्वाय। मेरा काम बावचियो का हाथ बटाना था। वेतन सात रूबल महीना।

जहाज का बारमन एक गोल-मटोल गावदुम और बददिमागी से बफरा हुआ, गेंद सा गजा आदमी था। हाथों को बमर के पीछे बांधे सुबह से सात तक वह डेक पर चक्कर लगाता, उस सूअर की भाँति जो गर्मी और धूप से बौललाकर किसी छायादार कोने की खोज में भटक रहा हो। उसकी पत्नी बार की शोभा बढ़ाती। उन्न घालीस के ऊपर, सुंदर लेकिन मुर्मायी हुई सी। पाउंडर इतना थोपती कि गालों पर से झड़ने लगता और सफेद चिपचिपी धूल की भाँति उसके भडकीले कपड़ों पर जमा होता रहता।

रसोईघर की बागडोर भारी वेतन पानेवाले बावर्ची इवान इवानोविच के हाथों में थी जिसे सब नाटा भालू कहते। नाटा कद, स्थूल शरीर, तोते जसी नाक और सबको ठंठे पर रखने वाली आँखें। तबीयत का शौकीन, हमेशा कलफदार कालर लगाता, रोज दाढ़ी छीलता, इस हद तक कि उसके गालों की खाल में नीलापन झलकता था। उसकी बलदार काली भूँछें ऊपर को खड़ी रहतीं, जब भी खाली हाथ होता अपनी तपी हुई लाल उगलियों से उन्हें बराबर ँँठता और एक छोटे से गोल दस्ती शीशे में देखकर गब से तन जाता।

जहाजी याकोव शूमोव, जो भट्टी में इंधन डालने का काम करता था, जहाज के लोगों में सब से ज्यादा दिलचस्प था। चौकोर काठी, घीड़े बंधे। नाक की नोक ऊपर को उठी हुई, चेहरा फावड़े की भाँति चपटा, घनी भौंहों में छिपी भालू जसी आँखें, दलदल की काई की भाँति छल्लेदार दाढ़ी गालों को घेरे हुए, सिर पर इन घुघराले बालों के गुपने से टोपी सी बन गयी थी, अपनी टेढ़ी मेढ़ी उगलियों को वह मुस्किल से उनके बीच से गुजार पाता।

यह ताश खेलने में बहुत तेज था, बाजी पर पसे लगाता था और खाने पर इस बुरी तरह टूटता कि देखकर अचरज होता। भूखे कुत्ते की

भाति वह रसोईघर के आस-पास ही लटका रहता। कभी बोटी व निर-
हाय फलाता और कभी हडिडयो के लिए। सास को वह नाटे भात व
साय चाय पीता और अपने जीवन के अजीब घरीब किस्से सुनाता।

बचपन में वह रियासत नगर के गडरिये के साथ गुजर करता था।
एक दिन कोई ईसाई साधु उधर से गुजरा और उसके कहने पुसलाने से वह
मठ में भर्ती हो गया। 'ये साधु के रूप में वह चार साल तक मठ में रहा।'

"आज दिन भी मैं साधु ही होता, - खुदा का एक काला सितारा,"
वह सरपट बोलता जाता, "पर एक तीर्थ यात्रिनी ने हमारे मठ में आकर
सब गडबड कर दिया। वह पैसा की रहने वाली थी। क्या बनाऊ, इस
नहीं सी औरत ने मेरा दिमाग ही पलट दिया। 'ओह कितना अच्छा,
ओह कितना मजबूत।' मुझे देखकर वह चहकी। फिर बोला, 'एक ई
हू, बेदाग विधवा, एकदम अकेली। चलो न मेरे साथ? घर-बाहर का
काम करना। मेरा अपना घर है, मुर्से-मुर्गिया के परो का क्या करे
हू। बोलो, क्या कहते हो?'"

"मुझे भला क्या उजर होता? मैं उसके साथ ही लिया। वह मन
अपना सेवक बनाना चाहती थी, पर मैं उसका प्रेमी भी बन गया। तीन
साल तक उसके साथ मौज की और "

नाटा भालू अपनी नाक पर निकले मस्सा को व्यग्र भाव से देखते हुए
उसकी बातें सुन रहा था। आखिर वह क्षमता उठा।

"सफेद झूठ बोलना कोई तुमसे सीखे!" बीच में ही उसने कहा।
"झूठ बोलने से अगर सोना बरसता तो कारू का खजाना बटोर लेता!"

याकोब जुगाली सी करता मुह चला रहा था। उसकी छल्लेदार सज्ज
बाड़ी जवड़े के साथ ऊपर-नीचे हरकत कर रही थी और उसका छात्र
से कान पडफडा रहे थे। बावर्ची के धुप हो जाने पर उसकी खजान फिर
समगति से दूची की भांति चलने लगी

"उधर में वह मुझसे बड़ी थी। जल्दी ही मैं उससे उपता गया।
सच जानो, मैं उससे सग आ गया और उसे छोड़ उसकी भतीनी पर
मैंने डोरे डाले। एक दिन उसे इसका पता चल गया। फिर क्या था, उसने
मेरी गरदन दबोची और सात मारकर घर में बाहर निराल दिया..."

"धानी बाबायदा हिसाब चुकता करके उसने तुम विदा कर दिया!"
बावर्ची ने भी याबाव की ही भांति सहज भाव से कहा।

जहाजी याकोब ने चीनी की एक डली अपने मुह में डाली और फिर कहना जारी रखा

“इसके बाद सूखे पत्ते की तरह हवा के साथ मैं इधर उधर उड़ता और भटकता रहा। फिर प्लादीमिर के एक बड़े फेंरीवाले के साथ मेरा गठबन्धन हुआ। उसके साथ मैंने आधी दुनिया नाप डाली—वाल्कन पहाड़ों का नाम सुना है? मैं वहाँ गया। सभी तरह के रंग बिरंगे लोगो को देखा—तुर्कों और रमानियाइया, यूनानिया और आस्ट्रियाइया, बुनिया भर के लोगो से घास्ता पड़ा। एक से खरीदा, दूसरे को बेचा ”

“चोरी भी की?” यावर्षों ने पूरी गम्भीरता से पूछा।

“बड़े फेंरीवाले ने किसी पर कभी हाथ साफ नहीं किया,—नहीं, कभी नहीं। और उसने मुझे भी कहा था, पराये देशों में किसी चीज पर हाथ न डालना। उन देशों का रिवाज था कि अगर कोई मामूली से मामूली चीज भी चुराता तो उसका सिर साफ घड़ से अलग कर दिया जाता। लेकिन यह न समझना कि मैंने चोरी करने की कोशिश नहीं की। कोशिश तो मैंने की, लेकिन कुछ बना नहीं। एक दिन मैं एक व्यापारी के अस्तबल से घोड़ा खालकर भागा। लेकिन भाग नहीं सका, उन्होंने मुझे पकड़ लिया, और यह समझ ला कि खूब मारा। मारने से जब उनका जो भर गया तो मुझे खींचते हुए थाने में ले गए। थाने वाले ने मुझे बद कर दिया। सचमुच तो हम दो थे—एक असली और खूब खरा घोड़ा चोर था, दूसरा मैं जिसे घोड़ा चुराने का केवल शौक धरिया था कि देखो, इसमें क्या मजा आता है। हा तो उसी व्यापारी ने उन दिनों एक नया हम्माम बनवाया था और मैं उसमें अलावधर बना रहा था। अब हुआ यह कि वह बीमार पड़ गया और बुरे-बुरे सपनों में वह मुझे देखता और बस उसकी सिट्टी पिट्टी गुम। घबराकर वह बड़े अफसर के पास गया और उससे भिन्नभिनाकर बोला, ‘उसे छोड़ दो। सपना में भी वह मेरा पीछा नहीं छोड़ता। अगर मैं उसे माफ नहीं करूँगा तो कौन जाने, वह मेरी जान ही ले ले। कम्बख्त जादू जानता है, मुझे सपनों में परेशान करता है।’ हा तो अफसर ने उसकी बात मान ली। मानता क्यों नहीं, वह बहुत बड़ा व्यापारी जो था। सो मैं थाने से बाहर निकल आया ”

“वे चूक गए। तुझे हंगिज नहीं छोड़ना चाहिए था। तू इस लायक है कि गले से पत्थर लटकाकर तीन दिन तक तुझे पानी में छोड़ दिया

भाति यह रसोईघर के धास-पास ही सटका रहता। कभी बोटा क निरु
हाय फंलता और कभी हडिडयो के लिए। साझ को वह नाट भाल क
साथ चाय पीता और अपने जीयन के अजीब-शरीब किस्स सुनाता।

यक्षपन मे वह रियाजान नगर के गडरिये के साथ गुजर करता था।
एक दिन कोई ईसाई साथु उधर से गुजरा और उसके कहने-भुसलान से वह
मठ मे भर्ती हो गया। नये साथु के रूप में वह चार साल तक मठ मे रहा।

“आज दिन भी मैं साथु ही होता, — सुदा का एक फाता सितारा,”
वह सरपट बालता जाता, “पर एक तीय यात्रिनी ने हमारे मठ मे धार
सय गडबड कर दिया। वह पँचा की रहने वाली थी। क्या बताऊ, इन
नहीं सी औरत ने मेरा दिमाग ही पलट दिया। ‘ओह कितना अच्छी,
ओह कितना मजबूत!’ मुझे देखकर वह चटकी। फिर बोली, ‘एक है
हू, बेदाग विधवा, एकदम अकेली। चलो न मेरे साथ? घर-बाहर का
काम करना। मेरा अपना घर है, मुर्गे-मुसिया के परों का घषा करती
हू। बोलो, क्या कहते हो?’”

“मुझे भला क्या उत्तर होता? मैं उसके साथ हो लिया। वह मठ
अपना सेवक बनाना चाहती थी, पर मैं उसका प्रेमी भी बन गया। तीन
साल तक उसके साथ भोज की और ”

नाटा भालू अपनी नाक पर निकले मससो को व्यग्र भाव से देखते हुए
उसकी बातें सुन रहा था। आखिर वह मुसला उठा।

“सफेद झूठ बोलना कोई तुमसे सीखे!” बीच मे ही उसने कहा।
“झूठ बोलने से अगर सोना बरसता तो कारू का खजाना बटोर लेता!”

याकोव जुगाली सी करता मुह चला रहा था। उसकी छल्लेदार सप
बाड़ी जयडे के साथ ऊपर नीचे हरकत कर रही थी और उसके छात्र
से कान फडफडा रहे थे। बावर्ची के चुप हो जाने पर उसकी जबान फिर
समगति से कची की भांति चलने लगी

“उभ्र मे वह मुझसे बड़ी थी। जल्दी ही मैं उससे उकता गया।
सच जानो, मैं उससे तग आ गया और उसे छोड उसकी भतीजी पर
मैंने डोरे डाले। एक दिन उसे इसका पता चल गया। फिर क्या था, उसने
मेरी गरदन दबोची और लात मारकर घर से बाहर निकाल दिया ”

“यानी बाकायदा हिसाब चुकता करके उसने तुझे बिदा कर दिया!”
बावर्ची ने भी याकोव की ही भांति सहज भाव से कहा।

जहाजी याकोव ने धोनी की एक डली अपने मुह में डाली और फिर कहना जारी रखा

“इसके बाद सूखे पत्तों की तरह हवा के साथ मैं इधर उधर उड़ता और भटकता रहा। फिर प्लादीमिर के एक बूढ़े फेरीवाले के साथ मेरा गठबन्धन हुआ। उसके साथ मैंने आधी दुनिया नाप डाली—वाल्कन पहाड़ों का नाम सुना है? मैं वहाँ गया। सभी तरह के रगबिरगें लोगो को देता—तुकों और र्मानियाइयो, मूनानियो और आस्ट्रियाइया, दुनिया भर के लोगो से वास्ता पडा। एक से खरीदा, दूसरे को बेचा ”

“चोरी भी की?” बावर्चों ने पूरा गम्भीरता से पूछा।

“बूढ़े फेरीवाले ने किसी पर कभी हाथ साफ नहीं किया,—महा, कभी नहीं। और उसने मुझे भी कहा था, पराये देश में किसी चीज पर हाथ न डालना। उन देशों का रिवाज था कि अगर कोई मामूली से मामूली चीज भी चुराता तो उसका सिर साफ़ घड से अलग कर दिया जाता। लेकिन यह न समझना कि मैंने चोरी करने की कोशिश नहीं की। कोशिश तो मैंने की, लेकिन कुछ बना नहीं। एक दिन मैं एक व्यापारी के अस्तबल से घोड़ा खोलकर भागा। लेकिन भाग नहीं सका, उन्होंने मुझे पकड़ लिया, और यह समझ लो कि खूब मारा। मारने से जब उनका जो भर गया तो मुझे खींचते हुए थाने में ले गए। थाने वालों ने मुझे बंद कर दिया। सचमुच तो हम दो थे—एक असली और खूब खरा घाडा चोर था, दूसरा मैं जिसे घोड़ा चुराने का केवल शौक चर्चाया था कि देखो, इसमें क्या मजा आता है। हा तो उसी व्यापारी ने उन दिना एक नया हम्माम बनवाया था और मैं उसमें अलावधर बना रहा था। अब हुआ यह कि वह बीमार पड गया और बुरे-बुरे सपना में वह मुझे देखता और बस उसकी सिट्टी पिट्टी गुम। घबराकर वह बड़े अफसर के पास गया और उससे भिनभिनाकर बोला, ‘उसे छोड दो। सपनों में भी वह मेरा पीछा नहीं छोडता। अगर मैं उसे माफ नहीं करूंगा तो कौन जाने, वह मेरी जान ही ले ले। कम्बलत जादू जानता है, मुझे सपनों में परेगान करता है।’ हा तो अफसर ने उसकी बात मान ली। मानता क्यों नहीं, वह बहुत बडा व्यापारी जो था। तो मैं थाने से बाहर निकल आया ”

“वे चूक गए। तुझे हगिज नहीं छोडना चाहिए था। तू इस साथफ है कि गले से पत्थर सटकाकर तीन दिन तक तुझे पानी में छोड दिया

जाये, ताकि भेजे मे जा भूसा भरा हुआ है, वह बह जाये, बावर्ची ने कहा।

याकोब तुरत गुर मे गुर मिलाते हुए बोला

“सच कही, भूसा तो मुझमे कम नहीं है। सच पूछो तो इतना मुझमे भरा है कि सारे गांव के लिए काफी है—”

बावर्ची ने अपने कालर में उगली गड़ाई, घुस्ते से उसे लोंचा में सिर हिलाते हुए झुमलाहट भरी आवाज में निकामत की

“क्या बकवास है! ऐसा इगर जमीन पर खरता, पीता घूम है पर किसलिए? खरा बतता तो, तेरे जीने का मकसद क्या है?”

घटखारे भरते हुए याकोब ने जवाब दिया

“यह मैं नहीं जानता। बस जीता हूँ, ब्योपि जीता हूँ। कोई से रहता है, कोई चलता रहता है और बाबू कुर्सी ही तोड़ता रहता। लेकिन अपना डोखल भरे बिना किसी को चन नहीं पड़ता।”

बावर्ची और भी झुमला उठा

“तू इतना सुभर है कि कुछ कहते नहीं बनता। जानता है, सू क्या खाते हैं? तू बस धही है।”

याकाब अचरज के साथ बोला

“घरे, डाटते क्यों हो? सभी देहाती एक ही पेड़ की गुठलिया हैं। सुम मत डाटो, इससे मैं बेहतर तो हूँ नहीं चला—”

इस आदमी ने मुझे फौरन ही और काफी मजबूती से अपने आरूप में बाध लिया। अकित भाव से मैं उसकी ओर देखता और मुह बाये उसा बातें सुनता। मेरा जो उससे कभी न उकताता। मुझे लगता था कि उ जीवन का कोई अपना ठोस ज्ञान है। वह हरेक से, बिना किसी बनाए के खुलकर बातें करता और उतना ही खुलकर अपनी करफराती हुई भाँ के नीचे से सब की ओर देखता। उसके लिए कोई नीचा नहीं था कप्तान, बारमन, और फस्ट क्लास के बड़े-बड़े मुसाफिर भी उसके लि बसे ही थे जैसे घाय जहाजी, बार के बरे, तीसरे दर्जे के मुसाफिर और वह खुद।

कभी कभी बनमानुष जसी कप्तान या मजीनिये के साथ घयवा ताश के खेल में बेंर



के पीछे किए
। काहि
के उ

डाटते डपटते और वह चुपचाप सुनता रहता। साफ मालूम होता कि डाट-डपट का उसपर कोई असर नहीं पड़ रहा है और अगले ही घाट पर उसे जहाज से उतार देने की उनकी धमकिया उसके कानों से टकराकर हवा में छितर रही हैं।

‘बहुत खून’ की भांति याकोव ने भी एक अपना निरालापन था। वह अग्र्य लोगो से कुछ भिन्न, उनसे कुछ अलग कोटि का, मालूम होता था। और जैसे जूद उसे भी इस बात का विश्वास था कि वह श्रीरो से अलग, उनको पहुँच, नीर समझ से बाहर है।

इस आदमी को मँने कभी उदास होते या मुह फुलाते नहीं देखा। न ही वह मुझे कभी एक लम्बे असें तक चुप्पी साथे दिखाई दिया। शब्दों की एक अतर्हीन धारा, मानो उसकी इच्छा न होने पर भी उसके मुह से निकलती रहती। जब भी उसपर डाट डपट पड़ती, या वह कोई बिलचस्प विस्सा सुनता, तो उसके होठ इस तरह हिलते मानो वह सुनी हुई बात को दोहरा रहा हो या अपनी बात कहता जा रहा हो। हर रोज अपना काम जल्म करने के बाद जब वह बाहर निकलता तो उसका सारा शरीर पसीने और तेल से लिपटा होता। नये पाव और बिना पेटी की गीली कमीज वह पहने होता जिसका गला खुला रहता और घने घुघराले बालों से घिरा उसका सीना उसके भीतर से झाकता दिखाई देता। फिर मुह से गहरी और एकरस आवाज निकलती और बर्षा की बूदों की भांति डेक पर शब्दों की धौछार होने लगती।

“कहो, अम्मा, कहा जा रही हो? क्या कहा, विस्तोपोल? मैं भी कहा रह चुका हूँ। एक अमीर तातार किसान के यहा काम करता था। हाँ, अहसान गुब्रुलिन उसका नाम था। खुराट कहीं का, तीन-तीन बीघिया रखना था। मखबूत बाठी और चुकन्दर सा लाल चेहरा। उसकी एक बीवी बस गुडिया जसी थी। छोटे कद की इस तातार स्त्री के साथ मँने भी मझे किये ”

कोई जगह ऐसी नहीं थी जहा वह न गया हो, और रास्ते में मिली कोई स्त्री ऐसी नहीं थी जिसके साथ उसने मझे न किए हो। बड़ी शान्ति और स्थिरता के साथ वह यह सब बातें बताता, मानो कड़वाहट और मान-अपमान का उसने अपने जीवन में कभी अनुभव न किया हो। पलक झपकते जहाज के दबूसे से उसकी आवाज सुनाई देती

"है कोई ताग का तिताड़ी ? पत्ता-पटप छवरा, पजा, - चने घासे जिते ताग ऐलना हो। ताग ते बड़िया चीठ इस बुनिया में कोई नहीं है। मजे से बटकर पत्ते पटपारो, और बड़े मोबागर की तरफ धाराम स न जटोर लो ! "

'भला', 'धुरा', या 'बमोना'-ऐसे गन्ध उसने मुह से गूग हो बमो निकलते थे। उसके लिए हमेंगा हर चीठ 'नुभावना' या 'धारामवेह' धयया 'भजीब' होती थी। जब वह किसी सुदर स्त्री का द्विक करता तो उसे 'गुडिया सी सुदर' कहता, घूप निजरा इपहता नि उते 'धारामवेह दिन' मालूम होता। उसका सब से प्रिय सम्बोधन था "गोली मारो !"

सय उसे काहिल समझते, लेकिन मुझे लगता कि हमथोट और सगय भरे भट्टी घर मे यह भी उतनी ही सगन से जान तोड मेहनन करता था जितनी कि धय। यह यात दूसरी थी कि, इंधन डालनेवाले धय जहादिया की भाति न ता यह कभी राता शीकता था, न ही वह हान के थोस को लेकर कभी तोया तिल्ला मघाता था।

एक दिन मुसाफिरो ने से किसी बूढ़ी स्त्री का बट्टया खोरी घता गया। शात और साफ साम थी। सभी उमग से भरे थे। कप्तान ने बुदिया को पांच हबल दिए और मुसाफिरो ने भी उसके लिए चढा जना किया। जब उसे पैसे दिए गए तो उसने सलीब का चिह्न बनाया और कमर तक झुबते हुए बोली

"मेरे घेटो, मुझे तीन हबल क्यादा दे दिये। मेरे बट्टवे मे ती इतने हबल थे भी नहीं !"

कोई प्रसन भाव से विस्तया

"ले लो, धावी धम्मा ! यह अरच्छा ही है कि पास मे कुछ पडा रहे। बक्त पर काम देगा "

किसी अय ने एक बुदिया फवती कती

"पसा आदमियों से बड़कर है। उसे कोई नहीं ठुकराता !"

लेकिन याकोब ने बुदिया के सामने एक निराला ही सुभाव रखा

"कालतू पसा मुझे दे दो। मैं इससे ताज खेलूंगा !"

सय हसने लगे। समझे कि यह मजाक कर रहा है। लेकिन वह पूरी गम्भीरता से बुदिया के पीछे पडा था

“लाओ, दादी अम्मा! एक पाव तो तुम्हारा क़ाब्र मे लटका है, तुम पतो का क्या करोगी?”

यह देख सब उसपर दमक पड़े और उसे बुढ़िया के पास से दूर एवेड दिया। अचरज मे आँखें फाडते हुए उसने मुझसे कहा

“अजीब लोग हैं ये भी! भला ये क्यों बीच मे टाग अडाते हैं? वह खुब कहती थी कि उसे फालतू पसे नहीं चाहिए। ओह, तीन हबल पाकर मेरो सवीयत हरी हो जाती ”

ऐसा भासूम होता मानो उसे धन की, सिक्को की, शकल सूरत से प्रेम हो। बातें करते समय उसे अपने पतलून पर सिक्का रगडना अच्छा लगता और फिर जब सिक्का खूब घमक जाता तो उसे अपनी टेढ़ी-मेढ़ी उगलियो मे पकड़े अपनी ऊपर को मुडी नाक के पास ले जाता और भीहे हिला हिलाकर उसे देखता। लेकिन वह लालची नहीं था।

एक धार उसने पत्ता-पटक खेलने के लिए मुझे बुलाया। लेकिन मैं खेलना नहीं जानता था।

“भरे, यह क्या—तू किताबें पढ़ लेता है,” उसने अचरज से कहा, “लेकिन पत्ता-पटक खेल नहीं जानता। अच्छी बात है, मैं तुझे सिखाऊंगा। चल, पहले ऐसे ही खेले, चीनी की डली की बाजी लगाकर ”

उसने आधा पौंड चीनी मुझसे जीती। वह जीतता जाता और चीनी की डली मुह में रखता जाता। जब उसने समझा कि मैं अब खेलना सीख गया तो बोला

“अब हम सत्रमुच का खेल खेलेंगे, पतो की बाजी लगाकर। जब मे कुछ है?”

“पाच हबल हैं।”

“मेरे पास भी ऐसे ही दो-एक हबल होंगे।”

देखते देखते मैं सभी फ़ूठ हार गया। उसे थापस लौटाने की धुन मे पाच हबल के बदले मैंने अपने लवे गर्म कोट की बाजी लगा दी, और उसे भी गवा बठा। फिर अपने नये ऊचे जूतो को दाव पर रखा और उन्हें भी खो दिया। इसके बाद याकोव ने चिडचिडाकर करीब करीब गुस्से मे कहा

“नहीं, तू खेल नहीं सकता, जल्दी गरमा जाता है—फौरन कोट भी याजी पर और जूते भी बाजी पर! इसकी मुझे कोई जरूरत नहीं। यह

ले अपने कपडे वापस और पैसे भी, चार हबल, एक हबल मेरा, कु
अबल देने का.. ठीक है?"

मेरा हृदय कृतज्ञता से भर गया।

"गोली मार!" मेरी कृतज्ञता के जवाब में उसने कहा। "सब स
है—मतलब मनबहलाव। लेकिन तू तो बाकायदा कुश्ती करने लगा। और
यह गम दिमागी तो लडाई में भी काम नहीं देगी,—खूबी इस बात में
है कि विरोधी को ठंडे दिमाग से चित्त करो। फिर, गरम होने से बा
भी क्या है? तू जवान है, और तुझे अपने को क्राम में रखना चाहिए।
एक बार झूका, पांच बार झूका, सात बार—फिर गोली मार। ए
उग पीछे हट जा, दिमाग को ठंडा कर, और फिर जूझ पड़। समझा,
खेल इस तरह खेला जाता है।"

वह मुझे बराबर अच्छा लगता और साथ ही बुरा भी। कभी-कभी
जब वह बोलता तो मुझे अपनी नानी की याद हो आती। उसमें बहुत दुष्ट
था जो मुझे अपनी ओर खींचता, लेकिन लोगों के प्रति उसकी स्थिर, गहन
उदासीनता, जो लगता था अत तक उससे छिपकी रहेगी, मुझे अपने
विमुख करती।

एक दिन सूरज छिपे दूसरे दर्जे के मुसाफिर, वेम के निवासी एक
मोटे सौदागर ने इतनी धी ली कि लडखडाकर जहाज से नीचे पानी में जा
गिरा। वह बुरी तरह हाथ पांव पटक रहा था और जहाज से दूरी सात
मुनहरे पानी की लीक में बहा जा रहा था। जहाज के इंजन दुरत ब
कर दिए गए और वह पहियेनुमा घण्टियों के नीचे से साग का बावल
छोडकर एकदम स्थिर हो गया। छिपते सूरज की लाली से साग धून की
भाति लाल हो रहा था। रक्तिम लाली के इस उमडते सागर में एक काला
नदीर जो अब काफी पीछे छूट गया था, छटपटा रहा था और पानी में
से हृदयवेधी धीले उठ रही थीं। मुसाफिर भी चिल्लाते और एक-दूसरे को
धकियाते हुए जहाज के दबूसे पर जमा हो रहे थे। डूबनेवाले घादमी का
गर्ज सिर और तांबे जैसे रंग के चेहरे वाला एक साथी जो एड भा न
में घुत था, भीड़ को घीरता आगे बढ़ने के लिए चिल्ला रहा था

"रास्ता छोड दो! मैं अभी उसे पकड लाऊंगा।"

वो जहाजी पानी में पहुंच चुके थे और तरकर डूबने हुए घादमी को
ओर बढ़ रहे थे। जान बचानेवाली एक नाव नीचे उतारी जा रही थी।

जहाजियों की चिल्लाहट और स्त्रियों की चिल्लपों की वेधकर याकोव की गान्त और गदराई हुई आवाज सुनाई दे रही थी

“यह गर्म कोट पहने है, डूबने से भला कैसे बचेगा। अगर बदन पर भारी लवादा हो तो डूबना त है। औरतो को लो,—आदमियों के नुकाबले वे क्यों इतनी जल्दी पानी की तरह में बठ जाती हैं? यह उनके गपरो की करामात है। औरत पानी में गिरी नहीं कि ढाई मन के पत्थर की भाँति सीधे तल को छूकर ही दम लेती है देखो, यह डूब भी चुका है, मैं यो ही थोड़े बहता हूँ ”

वह सचमुच डूब चुका था। करीब दो घंटे तक ये उसकी लाश की तोज करते रहे लेकिन बेकार, लाश नहीं मिली। उसका साथी जो अच होग में था, जहाज के दबूसे पर उदास बठा बुदबुदा रहा था

“देखा न, यह क्या हाँ गया? अच क्या होगा? उसके घरवालों के सामने क्या मुह लेकर मैं जाऊँगा, उनसे क्या बहूँगा? उसके घरवाले जो हैं ”

पीठ के पीछे अपने हाथ बांधे याकोव उसके सामने खड़ा हो गया और शरत बधाने लगा

“रोओ मत सौदागर! कोई नहीं जानता कि मौत से किस भेय में मुठभेड होगी। कभी कभी ऐसा होता है कि एक आदमी अच्छा भला खुसी खाता है और सीधे ब्रह्म की राह लेता है। हबारो आदमी खुमिया खाकर मोटे-साबे बन जाते हैं, लेकिन वह है कि उसे मौत दबोच लेती है। और यह खुमी भी आखिर है क्या?”

वह सौदागर के सामने खड़ा था—चौड़ा चपला, खवकी के पत्थर की भाँति ठास, भूसी की भाँति अपने शब्दों का विलेरता हुआ। पहले सौदागर धीमे धीमे रो रहा था और अपनी चौड़ी हथेली से दाढ़ी पर दुरक आए आसुआ को पोंछता जाता था। लेकिन याकोव के शब्दों के अर्थ ने जब उसके हृदय को छूना शुरू किया तो वह फुक्का मारकर चीख उठा

“चले जाओ यहाँ से, शतान के पूत! मेरा हृदय पहले ही दुःख रहा है, तुमने आकर उसे और कुरेदना शुरू कर दिया। भले लागो, इसे ले जाओ यहाँ से! नहीं तो जाने में क्या कर बहूँ।”

याकोव शांत भाव से हटते हुए बोला

“लोग सचमुच मे अजीब हैं। उहे भली बात कहो, तो भारत को घोटते हैं ”

कभी कभी याकोव मुझे भोले दिमाग का आदमी लगता था, तबिन बहुधा मैं यह सोचता था कि वह केवल बनता है। मेरा जी बुरो तए तलकता कि उसके मुह से उन जगहो का हाल सुनू, जहा वह हो आ है, उन चीन्वो के बारे मे जानू जिहे वह देख चुका है। लेकिन इन्हे कुछ नहीं बनता। वह अपना सिर पीछे की ओर तान लेता, भात बन काली आखो को आधा मूद लेता, अपने थलथल चेहरे को घपपयाता और आप बोती याद करते हुए धीरे धीरे बातो को लडिया खोलने लगता

“आदमी ही आदमी, जहा भी जाओ, चींटियो के बल को तए आदमी ही आदमी दिखाई देते हैं। यहा भी आदमी, यहा भी आदमी-डेर के डेर। उनमे भी क्यावातर किसान, पतझड के पत्ता जसे सारी दुनिया मे बिलरे हुए। बुल्गार? सच, बुल्गारिया के लोगो को मैंने देखा, और यूनानियो को भी, और सविया-हमानिया के लोगो और सभी तए के जिप्सी भी देखने को मिले। लोग कसे थे? ऊह, कसे क्या होते? गहरों मे शहरी लोग थे, और देहातो मे देहाती। ठीक हमारी ही तरह एकदम मिलते-जुलते। उनमे से कुछ तो हमारी बोली भी जानते हैं। हाँ, ठीक से नहीं बोल पाते। मिसाल के लिए जसे सातार और मोरबोविया वाले। यूनानी हमारी बोली नहीं बोल सकते, पता नहीं वे क्या ऊल-जलूल बोलते हैं। सुनने मे तो लगता है कि शब्द मुह से निकल रहे हैं, लेकिन मतलब समझना चाहो तो कुछ पल्ले नहीं पडता। उनसे हाथ के इगारा बन करती पडती है। और यह बूडा खुराट जिसके साथ मैं काम करता था, यह दिखाने के लिए कि यह यूनानियो की बोली समझता है, हर घण्टे ‘कारामारा, कालिमेरा’ बडबडाता रहता। यह सचमुच मे खुराट था, बडा ही चलता पुडा। उलटे उस्तरे से उनकी हजामत बनाता। क्या कहा दून? यह कि यह कसे थे? बार-बार यही सवाल दोहराता है। मेरे बुद्ध, यह भी फाई जाने की बात है? खरर उनका रंग बाला होता है, और एने ही रमानियो का भी—य सय एक ही मजहब मानते हैं। बुल्गार का वाले होते हैं, लेकिन उनका मजहब हमारे जसा है। और यूनानी—य तुको जसे होते हैं—”

मुझे लगता कि यह सब कुछ नहीं बता रहा है, कोई चीज है जिसे यह छिपा रहा है।

पत्र-पत्रिकाओं में छपे चित्रों से मैं जानता था कि यूनान की राजधानी एथेन्स है जो एक प्राचीन और सुन्दर नगर है। लेकिन याकोब ने अविद्वानों से सिर हिलाया और एथेन्स के अस्तित्व से इनकार करते हुए बोला

“यह तो तुम्हें झूठ बताया गया है, भाई मेरे! एथेन्स नाम की कोई चीज़ नहीं है, बेचल एथोन है, और वह भी नगर न होकर एक पहाड़ है जिसपर एक मठ बना है। यस, इसके सिवा और सब झूठ है। इसे लोग पवित्र एथोन परबत कहते हैं। मेरा बूढ़ा इस परबत की तसवीरे भी बेंचला था। डे-यूब नदी के किनारे बेलगोरोद नाम का एक नगर जहर है, हमारे मारोस्लाव्ल या नीज्नीसे मिलता-जुलता। उनके नगर किसी काम के नहीं हैं, लेकिन उनके गाव—उनकी तो बात ही दूसरी है और उनकी औरतें भी,—यस, कुछ न पूछो। ऐसी ही एक औरत के चक्कर में मैं बहा फस गया। भला क्या नाम था उसका?”

उसने अपनी हथेलियों को गालों पर कसके रगड़ा और उसकी दाढ़ी के बाल धीमे से चरचरा उठे। फिर, उसके गले की गहराई से फूटी हुई घटी की भाँति हसी सुनाई दी

“बाह भाई, आदमी भी कितनी जल्दी भूल जाता है। यह मेरे पीछे पागल थी और मैं उसके जब मैं बहा से चला तो वह फूट फूटकर रोई, और सब मान चाहे झूठ, मेरी आँखों से भी आसू बहने लगे ”

इसके बाद, पूरी बेशर्मी से, उसने मुझे सिलाना शुरू किया कि स्त्रियों के साथ कैसे क्या करना चाहिए, किस तरह उनके साथ पेश आना चाहिए।

जहाज के दबूते पर हम बठे थे। सुहायनी और चादनी खिली रात बाह पसारें हमारी ओर बढ़ रही थी। घाई और स्पहले पानी के उस पार घरागाहों की भूमि आँखों से लगभग शोक्षल हो चली थी, दाहिनी ओर पहाड़ियों पर जहा-तहा पीली रोशनिया टिमटिमा रही थीं। ऐसा मालूम होता था माना पृथ्वी ने आकाश के तारा को यहाँ लाकर बँदी बना दिया हो। हर चीज गतिमान, सजग और स्पदनशील थी, शांत किंतु जीवन की गहराई से भरपूर। और उसके भरभरते हुए शब्द भधुर और उदास निस्तब्धता से छनपर गिर रहे थे

“हाथ-पर फलावर लबी हो जाती ”

घाफ़ीय के त्रिस्तो में नगापन होता, लेकिन धिनीनापन नहीं, उन्हें न शोली का पुट होता, न धूरता था। वे अनगढ़ और कुछ हद तक जगती में डूबे होते। ऊपर आकाश में चांद तरता होता, बिना किसी आवरण के, उतना ही उपस्थापन लिए, और हृदय में उतने ही उदास भावा का संचार करनेवाला। मुझे केवल उहीं धीबो की याद आती जो अच्छी थीं, सबन अच्छी रानी भागों, और सचाई से भरी ये पकितयाँ जिन्हें कभी नहीं मूला जा सफ़ता

हे केवल गीत की आवश्यकता सौंदर्य की
सौंदर्य को नहीं चाहिये गीत भी

सोच विचार के अपने मूड को मैं हल्की नोंद की तरह झटकर निर उसपर दबाव डालता कि वह अपने जीवन और जो कुछ उसन देला-मुना है उसने घारे में बलाए। यह कहता

“तू भी अजीब जानवर है! तुझे मैं क्या-क्या बताऊँ? सभी कुछ तो मैंने देला है। मठ?—हा, मैंने मठ देला है। और भटियारखाना?—ही, भटियारखाना भी। साहब लोगो का जीवन भी मैंने देला है और देहातियों का जीवन भी। भूल भी देली और छककर राया भी ”

फिर धीरे धीरे, मानो वह किसी गहरी नदी के चर-मरर करते पुल पर से गुजर रहा हो, वह अपना अतीत याद करता

“मिसाल के लिए एक यही बात लो, याने वाली घात, घोडा चुरान के बाद जब मैं हवालात में घद था। मुझे लगा कि अब जान नहीं बचेगी, चहर काले कोसो साइबेरिया के लिए बिस्तर गोत करना पडेगा। सभी पुलिस अफसर पर मेरी नजर पडी। यह अपने नये घर के अलावधरो को कोस रहा था जो पूब धुआ देते थे। मैंने उससे कहा, ‘सरकार, अगर ठुक्म हो तो मैं उह ठीक कर सकता हूँ।’ पजे पने कर वह मुसपर क्षपटा। बोला, ‘तेरी यह हिमाकत? नगर था सबसे अच्छा अलावधर बनानेवाला तो उहे ठीक नहीं कर सका, और तू डाग मारता है कि ठीक कर देगा!’ लेकिन मैं भी डटा रहा। कहा, ‘कभी-कभी निरा बुद्ध भी फाजी को पछाड देता है।’ काले कोसो साइबेरिया मेरे सिर पर मडरा रहा था। तो मैं जरा भी नहीं दबा। आखिर उसने कहा, ‘अच्छी बात है। तू भी कोशिश कर देल। लेकिन तेरे हाथ लगाने के बाद अगर

उन्होंने क्यादा धुआ देना गुरु किया तो समझ ले, तेरा कचूमर ही निपाल
 दूगा!' झटपट दो दिन के भीतर मैंने अलावधरो को ठीक कर दिया।
 अफसर अचरज में पड़ गया, 'अरे काठ के जल्लू! छछूंदर की दुम! तू
 इतना बड़ा मारीगर, और घोंडे चुराता फिरता है? आखिर क्यों?' मैंने
 कहा, 'यही तो मेरी बेवकूफी है, सरकार!' वह बोला, 'ठीक कहता
 है। यह बेवकूफी है। कितने दुख की बात है। मुझे तुझपर तरस आता
 है।' सुना तूने? एक पुलिस अफसर, जिसके पेशे में तरस शौर रहम
 के लिए कोई जगह नहीं होती, लेकिन वह है कि मुझपर तरस खा
 रहा है। "

"हां तो फिर क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"कुछ भी नहीं। बस, उसका दिल पिघला, उसने मुझपर तरस
 लाया। और तुझे क्या चाहिए?"

"लेकिन तुम तो चट्टान जैसे मजबूत और टूटे-कूटे हो। तुम्हें बेपत्तर
 क्या कोई तरस खा सकता है?"

याकोब बहुत ही भली हसी हसा।

"तू भी अजीब जानवर है। क्या कहा तूने—चट्टान जसा? लेकिन
 चट्टान भी मान रखने की चीज है। वह भी अपना काम करती है। चट्टान
 के पत्थरो से सड़के बनती हैं। हर चीज का एक अपना मान है, उसका
 एक अपना उपयोग है। रेत को ही लो। रेत आखिर होती क्या है? लेकिन
 उसमें भी घास उगती है "

याकोब जब ऐसी बातें करता तो मुझे खास तौर से अनुभव होता
 कि उसके ज्ञान की पहुंच मेरी समझ से बाहर है।

"बाबर्ची के बारे में तुम्हारा क्या ट्याल है?" मैंने उससे पूछा।

"कौन नाटा भातू?" याकोब ने उपेक्षा से कहा। "उसके बारे में
 भला मेरा क्या ट्याल हो सकता है? छ्याल करने की उसमें कोई बात
 भी तो हो।"

उसका कहना ठीक था। इवान इवानोविच इतना सपाट और
 चिढ़ना, और कुछ इतना ठीकोठीक या कि ट्याल नाम की चीज लटकाने
 लायक खूटिया उसमें नहीं थी। उसमें केवल एक ही दिलचस्प चीज थी
 वह याकोब से घुणा करता था और जब देखो तब उसे डांटता रहता था,
 लेकिन चाप फिर भी सदा उसके साथ ही पीता था।

एक दिन उसने याकोव से कहा

“अगर तू मेरा बात और मैं तेरा मालिक होता तो हफ्ते में सात बार तेरी घमड़ी रगता, सोपरो के सखार!”

“हफ्ते में सात बार तो कुछ ज्यादा है,” याकोव ने पूरी गम्भारता से जवाब दिया।

इस निरन्तर डांट उपट के बावजूद, न जाने क्यों, बावर्ची बराबर उससे पेट का घुघ्रां भरता रहता। खाने की कोई न कोई चीज वह उसे देता और कहता

“यह ले, पेटू की कुम!”

“तुम्हारी दया से छूट ताजत बटोर लूंगा, इवान इवानोविच।” खाने की चीज को असल भाव से चबाने हुए याकोव कहता।

“लेकिन अपनी इस ताजत का करेगा क्या, काहिलों के सिरताज!”

“क्यों, लबी उच्च जीऊगा, और क्या ”

“जीकर करेगा क्या, बेटाल?”

“बेटाल भी जीना चाहता है। या फिर तुम्हें जीवन भरस माल होता है? जीवन बहुत ही मजेदार चीज है, इवान इवानोविच..”

“वाह मूर्खधिराज!”

“क्या कहा?”

“मूर्ख धिराज!”

“क्या शब्द है यह भी!” याकोव अचरज से कहता, और तब भालू मुमसे कहता

“जरा इसे देख, तो। तू और मैं इन भट्टियों में सिर दिए अपने-अपने पसीना एक करते हैं, लेकिन यह है कि सूअर की तरह जबड़ा बल रहा है।”

“हरक का अपना अपना भाग होता है,” उसने अपना जबड़ा घुंटा हुआ कहा।

मैं जानता था कि बावर्चीखाने की भट्टियों के पास लड़े होने के मुकाबले भट्टी में इंसान डालना वहीं अधिक जानलेवा और हानि-हानि देनेवाला काम है, एक या दो बार रात को मैं खुद याकोव के साथ काम करके यह देख चुका था, लेकिन इस बात की यह कर्म-पलटकर नहीं कहता था। यह मेरी समझ में न आता और मेरा था

विश्वास और भी क्यादा बूढ़ होता जाता कि उसके पास कोई विशेष ज्ञान है

उसे सभी डाटते-उपटते थे—कप्तान भी, मशौनिये भी, मल्लाहा का मुलिया भी—वे सब जिनका उससे कुछ भी घास्ता पड़ता। मुझे अचरज होता कि नात मारकर वे उसे निकाल क्यों नहीं देते? इंधन डालने वाले जहाजों उसके साथ कुछ अधिक नर्मा से पेश आते, हालांकि वे सिर-भर को उसकी बकवास और उसकी पत्तेबाजी का वे भी पूब मजाक उड़ाते थे। एक दिन मेने उनसे पूछा

“क्या माकोव अच्छा आदमी है?”

“माकोव बिल्कुल ठिकाने का आदमी है। कभी नाराज नहीं होता। कितना ही उसे उसदो-पलटो, चाहे उसकी पभीज के भीतर जलते हुए कोपले ही क्यों न छोड़ दो, उसका दिमाग कभी नहीं गडबडाता ”

इंधन डालने का थकाकर चूर कर देनेवाला जानलेवा काम करने और अपने पेट का कुआ ठसाठस भर लेने के बाव भी माकोव बहुत कम सोता। अपनी पाली का काम खत्म होते ही वह दबूसे पर आ जाता, गदा और पत्तीने में बुरी तरह तर, बहुधा वही काम के बाले घीकट कपड़े पहने और सारी रात बठा रहता, मुसाफिरों के साथ बतियाता या ताश खेलता।

मेरे लिए वह तालेबंद सयूक के समान था। मुझे लगता कि उसके भीतर अवश्य कोई ऐसी चीज बंद है जिसके बिना मेरा काम नहीं चल सकता और इस ताले को खोलनेवाली कुजी पाने के लिए मैं बेहव बेचन हो उठता।

शौहो की ओट में अवश्य आखों से वह मुझे देखता। फिर कहता, “तेरे सिर पर तो भूत सवार है, भाई मेरे! मेरी समझ में नहीं आता कि तू चाहता क्या है? दुनिया के बारे में जानना चाहता है? यह सच है कि मैंने दुनिया छानी है। लेकिन इससे क्या? तू भी अजीब पछी है। अच्छा तो सुन, एक दिन की बात में तुझे बताता हूँ।”

और जो किस्सा उसने मुझे सुनाया, यह इस प्रकार है बहुत दिन हुए, किसी सूबाई शहर में एक नौजवान जज रहता था। यह तपेदिक का मरीज था। किसी जमान लडकी से उसने शादी की थी हट्टी-कट्टी, न

फोई बाल न बच्चा। उसका दिल एक सौदागर के लिए कुडमडाने लगा जो तीन बच्चों का बाप था, और जिसकी धूम्रसुरत पत्नी थी। सौदागर ने जब यह देखा कि जमाना गौरत उसपर योछावर होने के लिए तयार है तो उसने उसके साथ एक मत्ताप करने की सोची। कहा कि बाप न रात को आकर मुझसे मिलो और अपने दो साथियों को धुरमुटों में छिपा दिया।

“ ठीक है। जमाना औरत आई, गरमागरम और उबक चुबक करती, इगारा पाते ही उसके सामने बिछ जाने को तयार। लेकिन उसने कहा, “नहीं श्रीमती जी, मैं तुम्हें गले से नहीं लगा सकता। मैं गादी-गुदा हूँ। लेकिन तुम्हारे लिए मेरे दो साथी मौजूद हैं—एक कुंवारा है और दूसरा रड्डया।” इसपर औरत ने ग्राह भरती और सौदागर के एक ऐसा बात जमाया कि वह बलाबाजी लाकर बेंच पर से उतट गया और उसने ठाकरें मार-मारकर उसका तोबडा ठीक कर दिया। मैं जज के यहां काम करता था और उस औरत को मैं ही बाप ने पहचाने आया था। बाड के पीछे शिरियो मे से मैंने यह सारा तमाशा देखा। उसके दोनो साथी उछलकर धुरमुटो में से निकल आए और औरत की छोर क्षपटे और उसके बाल पकडकर खींचते हुए से धले। धब क्या था, बाडे को फांदकर मैं उनके भिड गया। ‘यह भी कोई तरीका है,’ मैंने कहा, ‘औरत ने उसका विश्वास किया और यहां चली आई, लेकिन यह उसकी मिट्टी पलीब करने पर उत्तर आया।’ उसको उनके चयुल से छुडाकर मैं अपने साथ ले घता। पीछे से उहोने मेरी खोपडी का निशाना साधा और एक इट फेंककर मारी औरत का चुरा हाल था। अहाते मे बेंचनी से टहलती रहती। मुझसे कहती, ‘मैं चली जाऊगी यहां से, मे जमनी, अपने लोगो के पास, चली जाऊगी, याकाव! मेरा पति दो दिन का मेहमान है, उसके मरत ही मैं यहां से चल दूगी।’ मे बोला, ‘यह ठीक है। यहां रहकर तुम करोगी भी क्या?’ और हुआ भी ऐसा ही। जज मर गया और वह चली गई। वह बहुत ही भली थी और समझदार भी। और जज भी बहुत भला था, भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे ”

उसकी इस कहानी का मतलब मेरी समझ मे नहीं आया। मैंने उसे मुना और सुपचाप बेंठा रहा। उसमे मुझे कुछ बसी ही कूरता और निरयक्तता दिखाई दी जिससे कि मे परिचित था। बस इतना ही, और कुछ नहीं।

"बनों, कृतानों पनद झाड " कृतान = कुट।

मुपसाहट- से मैं कुट कृतान कृतान कृतान कृतान से मुझे समझाने हुए बोला

"वा माने-दने लोग हैं, हर कतर से निरिक्त बन कर्ते हने- मवाक को जी करना है, ए नटक उन्ने बनने लगे, नटक करना आना नहीं उन्हें। वम ला वम के कृतानों से हैं कृतान-काव वाले। ध्यानार में ता विमाग कृतान है कृतान विमागों कृतान करने-करने ली आत्मी ऊर ही जाना है सा वम कृतानों सेना कृतान हैं।"

जहाव पानी को चाना और मपना, पानी में वप डानना और सापो के बादल उडाना, आगे बट रहा था। पानों के उबपने-उचने की आशाव आ र्हां थी और काने नदी-सड धोर-धरे डूर हाने जा रहे थे। डेर पर से मुमाकृतियों के शरारतों की आशाव आ र्हां थी। काने कपडे एने एक लम्बा और दुबने-मपनी एनी बेंचों और साने हुए लोगों के बीच से सपक सुई ली गुवर र्हां थी। उमका सिर अनटका था और उसके सजेर वान घमक रहे थे। याकोब ने मुझे बना मारा और बोला

"इमे देव, मानूम हाना है, उदास है--"

मुझे लगा कि डूमरों का उदास देखने में उसे मवा आना है।

वह हमेंगा कोई न कोई जिम्सा मुनाता और मैं बडे चाव से सुनता। मुझे उसके सभी जिम्मे याद थे, लेकिन उनमें ऐसा एक भी नहीं था जो खुशी से सराबोर था। कितानों के मुकाबले वह कहीं ज्यादा असलान और तटस्थ मानूम होता था। कितानों पडते समय बहुधा साफ पता चल जाता था कि लेखक की भावनाए क्या हैं--न उसकी खुशी छिपी रहती, न उसका गुस्मा। साफ झलक जाता कि यहा वह दुख प्रकट कर रहा है, और यहा हमी उडा रहा है। लेकिन याकोब न कभी मवाक उडाता था, न किसी पर भने या बुरे का लेबल लगाता था। वह कोई ऐसी बात न प्रकट करता जिम्मे उसकी नाराजी या खुशी का पता चलता। यह अनालत में एक तटस्थ गवाह की भाति बातला, उस आदमी की भाति जिसके लिए अपराधी, सरकारी वकील और जज सभी एक समान हो उसकी यह तटस्थ असलानता मुझे अधिकारिक बुरी और बोधिल मानूम हाती, और याकोब के प्रति मुपसाहट भरी दुम्नी का वह मुझमें सवार करती।

बायलरो की भट्टी में उठनेवाली लपटों की भाँति जीवन उसको प्राण के सामने नाचता रहता और वह, भालू जैसे अपने पंजे में लकड़ों की हड्डियों को दबोचने, बायलर के पास सड़ा हुआ चर के बड़े की चुपचाप ठबठकाता रहता और इंधन को घटाता या बढ़ाता रहता।

“क्या तुम्हें किसीने चोट पहुँचाई है?”

“मुझे भला कौन चोट पहुँचा सकता है? मेरा यह शरीर नहीं दवा, एक ही घूसे में काम तमाम कर दूँ”

“मेरा यह मतलब नहीं था। मेरा मतलब भीतर की, नित्त की आत्मा की, चोट से था।”

“आत्मा को भला कोई कैसे चोट पहुँचा सकता है,” उसने कहा “वह अपमान से परे है। उसे कोई चीज नहीं छू सकता - नहीं कोई भी नहीं”

डेक के मुसाफिर, जहाजी और अन्य सभी लोग, आत्मा के बारे में भी उसी तरह बात करते नहीं आयाते थे जिस तरह कि वे अभी भी अपने धड़े, रोटी-पानी अथवा स्त्रियों के बारे में बातें करते नहीं आयाते आम लोग के शब्द भंडार में आत्मा शब्द एक चलता हुआ सिक्का था पांच कोपेक के सिक्के की भाँति उसका व्यापक प्रचार और चलन था। मुझे यह देखकर बड़ा बुरा भालूम होता कि यह शब्द लोगों की चिन्तनी खानों से इस हद तक विपककर रह गया है, और जब कोई किसान जड़े शब्दों की बौछार करते करते प्यार और डेप के साथ आत्मा की डुहाई देने या उसे कोसने लगता तो मुझे ऐसा भालूम होता मानो किसी ने मेरे सीने पर सीधा आघात किया हो।

मुझे अच्छी तरह से याद था कि मेरी नानी जब भी आत्मा का, प्रेम और आल्हाद तथा सौंदर्य के इस रहस्यमय पात्र का, चित्र करती तो थड़ा से उसका माथा झुक जाता, और मुझे पक्का विश्वास था कि जब कोई भला आवामी भरता है तो सफेद फरिश्ते उसकी आत्मा को नीचे आसमान में नानी के दयालु भगवान के पास ले जाते हैं और वह बड़े ही प्यार और दुलार से उसका स्वागत करता है

“भा मेरी प्यारी, मेरी पवित्र - बड़े बूट भोगे, बड़े दुःख मते?” और वह आत्मा को फरिश्तों जैसे छ सफेद पल अता कर देता है। पारोव दूगोव भी, नानी की भाँति, उतनी ही थड़ा से उतनी ही

कम मात्रा में और उतने ही अनमने भाव से आत्मा के बारे में बात करता था। यह आत्मा को कभी नहीं कोसता था। और जब कभी वह दूसरो को ऐसा करते सुनता या देखता तो वह चुप हो जाता, अपना सिर नीचे झुका लेता। साल भभूका और साठ की भांति मजबूत उसकी गरदन लटक जाती। जज में उससे पूछता कि आत्मा क्या है तो वह जवाब देता

“आत्मा एक हवा है, ईश्वर की सास ”

मुझे इससे सन्तोष न होता और अग्र सवालो की मैं झड़ी लगा देता।

आल झुकाकर वह कहता

“आत्मा का भेद तो पादरी भी नहीं जानते, मेरे भाई। यह एक गुप्त रहस्य है ”

मैं बराबर उसके ही बारे में सोचता रहता, और उसे समझने में अपनी सारी कोशिश लगा देता। लेकिन बेकार। इसके अलावा मुझे पाकोव के सिवा और कुछ दिखाई न देता, उसके भारी भरकम शरीर की ओट में मानो सभी कुछ छिप जाता।

बारमन की पत्नी का इपर मेरी ओर कुछ जहरत से ज्यादा झुकाव ही गया था। हर रोज सुबह वह मुझसे ही नहाने घोने के लिए पानी भरवाती, हालांकि यह काम क्रायदे से मेरा नहीं बल्कि दूसरे रजों की साफ-सुथरी, प्रसन्नमुख, दुइया सी परिचारिका लूजा का था। छोटे से सकरे पैरिन में कमर तक नगी इस स्त्री के पास जब मैं खड़ा होता तो खट्टे खमीर की भांति लिजबिज उसके पीले शरीर से मुझे बड़ी घिन मालूम होती और अनजाने ही, रानी भागों के पुष्ट और ताम्बे की भांति बमकते बदन से मैं उसकी तुलना करने लगता। और बारमन की पत्नी की खदान बराबर चलती रहती, कभी वह कोसती और शिकायत सी करती, और कभी मुझे मे बडबडाने और धिजिया सी उधेडने लगती।

उसकी बात मेरे पल्ले न पडती, हालांकि मानो कहीं दूर से मैं उसका मतलब भापता था जो दयनीय, भिखमगा और शमनाक मतलब था। लेकिन मेरा मन बरा भी नहीं डिगा। मेरे और बारमन की पत्नी के बीच, और उस हर चीज के बीच जो जहाज पर घटती या होती थी, एक दूरी थी। एक भीमाकार काई चढ़ी चट्टान मुझे अपने चारो ओर की दुनिया से अलग किए थी। और यह दुनिया स्थिर नहीं, गतिशील थी—दिन प्रति दिन समय के साथ तरती और हर घडी आगे बढ़ती हुई।

“धारमा की धीरत तो तुमपर बुरा तरह सट्टू है।” पिता उड़ानेवालो सूगा की आवाज मूज उठनी और मुम इस तरह मुगई दग मानो यह सपने में बोल रही हो। “धब क्या है, मजे से गोते लगा, प थटे गगा थटे नाग से आतो है ”

मेरी खिल्ली उड़ानेवालो में धरती यही नहीं थी। बार क लने धमंकारो इस रथी क लगाव से परिक्रित थे। बावर्को मुह बिबहार आवाज बसता

“धीर सब चीजा का खायका तो देवी जी से चुकी, तो धब देला चलने का गौत्र चर्या है। समस्तवर पाव रखना, पाकोव, नहीं ले गडगच्च हो जायगा।”

पाकोव ने भी पिता के आवाज में कामकाजी सलाह दी

“अगर तू दो या तीन साल और बड़ा होता तो निगघ्य ही तब मैं डूमरे ही आवाज में बातें करता। लेकिन इस उम्र में—अच्छा है कि अछा ही रह। लेकिन मैं तुझे रोकूंगा नहीं, जो अछा सगे तो कर--”

“मारो गोली,” मैंने कहा, “मुझे तो घिन आती है ”

“ठीक, गोली मारो।”

लेकिन, कुछ क्षण बाद ही अपने जलझे हुए आंसो को उपलियो से ठीक करने की कोशिश करते हुए अपने गोल-भटोल गप्पा को बाज की भांति बिखेरना शुरू कर देता

“लेकिन उसकी बात भी समझनी चाहिए, डलती उम्र है बचारी की कुत्ता तक यह चाहता है कि उसे कोई थपथपाए, इतान को तो इसरी और भी जरूरत है। प्यार-दुलार पर ही तो धीरत जीतो है, जैसे लमियां नमी पर जीती हैं। शायद वह इससे खुद क्षमती हो, लेकिन वह करे भी क्या? शरीर भागता है कि उसे दुलारा थपथपाया जाए, बस बात सारी यही है--”

उसकी रहस्यमयी आंखों में आखें गटाकर मैंने पूछा

“क्या तुम्हें उसपर तरस आता है?”

“मुझे? मेरी क्या वह मा लगती है? लोग तो अपनी मा पर भी तरस नहीं खाते। सचमुच, तू भी अजीब पछो है।”

वह धीमी हसी हसता, फूटो हुई घटी का आवाज जसी।

कभी कभी जब मैं उसकी ओर देखता तो ऐसा मालूम होता मानो मैं निशब्द शून्य में, किसी अतल गड्ढे और अंधेरे में डूबा चला जा रहा हूँ।

“और सब लोग शादी करते हैं, याकोब! तुम क्यों नहीं करते?”

“किस लिए? औरत के लिए मुझे कभी तड़पना नहीं पड़ता,—भला ही भगवान का, आसानी से मिल जाती है विवाह के बाद आदमी घर से बच जाता है, उसे खेतीबाड़ी करनी पड़ती है। मेरे पास जमीन है, लेकिन बहुत ही कम, वो भी मेरे चाचा ने हथिया ली है। मेरा भाई जब फौज से लौटा तो उसने चाचा से झगडा शुरू किया, मुकदमा चलाया और उसका फिर फोड़ दिया। छून-घरावा किया। इसके लिए पूरे डेढ़ साल की उसे सजा हुई, और इसके बाद—सजा-काटे आदमी के लिए एक ही रास्ता रह जाता है जो उसे फिर जेल पहुँचा देता है। अच्छी सी नौजवान घरवाली थी उसकी—छोड़, क्या कहना। शादी कर ली तो बस बठ जा अपनी मड्या की रखवाली करने, पर सिपाही तो अपनी जिंदगी का मालिक नहीं, एक जगह बठ नहीं जा सकता।”

“क्या तुम जुदा की प्रार्थना करते हो?”

“क्या सवाल किया है पछी ने। जरूर करता हूँ”

“किस तरह करते हो?”

“कई तरह से।”

“तुम्हें कौन सी प्रार्थनाएँ याद हैं?”

“मैं कोई प्रार्थना-प्रार्थना नहीं जानता। बस, सोचें कहता हूँ, महाप्रभु ईसा, जीवितो पर तरस खा, भरो को शांति दे, बीमारी चकारी से हमारी रक्षा कर और ऐसी ही कुछ और बातें कहता ॥”

“क्या बातें?”

“ओह, मतलब यह कि जो कुछ भी कहना हो, वह महाप्रभु ईसा के पास पहुँच जाता है।”

यह मेरे साथ बड़ी नमी बरतता और एक प्रकार के कौतुक से भरकर मुझे देखता, मानो मैं कोई चतुर पिल्ला हूँ जो मजेदार करनब दिक्का सकता है। साइड फो मैं उसके पास बठ जाता, उसके बदन में तेल, आग और प्यास की गंध आती रहती,—प्यास उसे बहुत पसंद था और उसे शैव की भांति बच्चा ही प्यारा जाता। बठे-बठे उसे न जाने क्या सूझती कि एकाएक कहता

“हा तो अत्योशा-वत्योशा, अब कोई कविता ही गुना दे!”

मुझे ढेर सारी कविताएँ अबानी याद थीं। उनके अनावा मेरे पास एक

भोटो काफी भी थी जिसमें मैं वे सभी कविताएँ उतार लेता था जो मैं अच्छी लगती थीं। मैं उसे पुश्किन की कविता "इस्लान और त्यदमीन" सुनाता और वह निश्चल सुनता रहता—न उसको धारें हलकत करतीं, न जवान—सास लेने की अपनी घरघराहट तक को वह रोक लेता। मैं मे धीमे स्वर में बहता

"कितनी प्यारी कहानी है! क्या खुद तुने इसे गढ़ा है? क्या इरा, पुश्किन ने लिखी थी? एक बड़े कुलीन आदमी को तो मैं भी जानता हूँ। मुझिन-पुश्किन उसका नाम था।"

"वह नहीं, यह दूसरा पुश्किन है। बहुत दिन हुए उसे मार डाला गया था।"

"किसलिए?"

थोड़े में मैंने उसे पुश्किन के जीवन और मौत की कहानी बता दी जो मुझे रानी मार्गो ने सुनाई थी। जब मैं मुना चुका तो उसने झान स्वर में कहा

"औरतो के पीछे न जाने कितने लोग अपनी जान से हाम को बढते हैं "

मैं बहुधा उसे किताबो में पढ़ी कहानिया सुनाया करता। वे कहानिया, सब को सब, मेरे दिमाग में कुछ इतनी उलट-पुलट और गड़-भड़ हो जाती कि आपस में गुंथ-गुंथकर एक लम्बी-चौडी धारा का रूप धारण कर लेतीं, एक ऐसी धारा का जिसमें गहरी ज्यल-मुयल होती और सौंदर्य भी, प्रेम और वासना की लपलपाती लपटें होतीं और गरबन-तोड सार्हातिक कृत्य भी, नेक नायक, चकित कर देनेवाली सौभाग्य की अद्भुत बर्पा, इड-मुड और भीत, बड़िया-बड़िया शब्द और कुदिलता में तिर से पांव तक डूबे लल-नायक—इसी धारा में गुंथ जाते। रोकाम्बोल को मैं सामात, हुनीवाल और कोलीनस का शोय प्रदान करता, म्यारहवें लुई को पिना प्रांडे के गुणो से लस कर देता, और कोरनेट श्रोतलेतायेव की मैं एला कापापलट करता कि उसे देखकर हैनरी चतुय का धोखा होता। मुझे नयी से नयी बात सूझती। लोगो के चरित्रा में मैं फेर फार करता और घटनाओं की नये तिर से सजा देता,—एक ऐसी दुनिया आवाद करता नितरा में एक मात्र गायक होता, अपने नाना के लुदा की भांति जो सोगा के साथ मनमाने खेल खेलता है। लेकिन इस दुनिया के धारो और धती

हुई जीवन की वास्तविकता मेरी आँखों की झोपट न होती, न ही जीवित लोगों को समझने की मेरी इच्छा को पाला भारत, बल्कि किताबी दुनिया का यह ऊहापोह पारदर्शी और अभेद्य रसाकवच बनकर जीवन में ध्यात विपत्ती गदगी और सड़ाप से हर घड़ी तक में रहनेवाले अनगिनत घातक कीड़ों से मेरी रक्षा करता।

किताबी ने मुझे बहुत सी चीजों के लिए अभेद्य बनाया यह जान लेने के बाद कि प्रेमी किस तरह प्रेम करते और तड़पते हैं, भूलकर भी किसी घकले में पाव रखना असम्भव था। छिनाल का यह सस्ता रूप देख मुझे तरस घाता और मेरा हृदय उन लोगों के प्रति घृणा से भर जाता जो इसमें रस लेते। रोकाम्बोल ने मुझे सिखाया कि परिस्थितियों की ताकत से लोहा लो, उन के सामने कभी न झुको। ड्यूमा के नायकों ने किसी ऊँचे और महत्वपूर्ण लक्ष्य के लिए जीवन अर्पित करने की मुझे सीख दी। और सबसे अधिक मुग्ध किया मुझे राजा हेनरी चतुर्थ के मौजी चरित्र ने। मुझे ऐसा लगता मानो उसी को लक्ष्य में रखकर बेराजे ने अपना यह मस्ती भरा गीत रचा हो।

मिली छूट छूब जनता को उससे,
और था पीने का वह भी शौकीन !
हा, जीती जब जनता मुख से,
तो हो क्यों न राजा भी रगीन ?

उपयासों में हेनरी चतुर्थ एक नेक और जनता के हृदय में घर कर लेनेवाले आदमी के रूप में चित्रित था। सुनहरी धूप की भाँति उजला उसने मेरे दिल में अडिग भाव से यह बात बिठाई कि फ्रांस से बढ़िया देश इस दुनिया में और कोई नहीं है जहाँ किसानों के कपड़े पहने लोग भी उतने ही नेक और अच्छे हैं जितने कि वे जो ग्राही शान शौकत में रहते हैं। आज्ञे पितोय भी उतना ही आन-बान वाला था जितना कि द आतमान। जब हेनरी मारा गया तो मेरा हृदय भारी हो गया, आँखा से आसू बहने लगे और गुस्से के भारे रवेलाक पर मैंने खूब दात पीसे। हेनरी करीब-करीब उन सभी कहानियाँ का हीरो होता जो मैं याकोब को सुनाता, और मुझे लगता कि उसके हृदय में भी हेनरी और फ्रांस ने अपना स्थान बना लिया है।

“मजे का आदमी है, तुम्हारा यह हेनरी बादशाह भी!” ली
कहा। “एकदम यार बाश, चाहो तो उसके साथ मछली मारो या
सपाटा करो।”

कहानी सुनते समय न कभी वह बाह-बाहो करता न बीच में दोन
न सबालों की झडी लगाता था। वह चुपचाप सुनता रहता,—भीहें ली
हूई, चेहरे पर वही एक भाव जो कभी नहीं बदलता था,—बाई बने
पुरानी चट्टान की भाति। लेकिन अगर किसी बजह से मैं बीच में आ
जाता तो वह तुरत कहता

“क्या छलम हो गई?”

“अभी नहीं।”

“तो रुक नहीं, कहे जा।”

एक दिन फ्रांस के लोगो के बारे में जब हम बातें कर रहे थे तो
उसने लम्बी सास भरी और बोला

“मजे की जिवगी है उनकी — बढ़िया और ठडी..”

“तो कैसे?”

“हां, बढ़िया और ठडी,” उसने कहा, “एक हम-शुम हैं जो हर
घकत बहकते रहते हैं, काम की गर्मी एक घडी ठडा नहीं होने देती।
लेकिन वो बस प्याले छनकाते और सर-सपाटा करते हैं — मज ही
जिवगी है।”

“लेकिन काम तो वे भी करते हैं।”

“करते होंगे, तेरी कहानियो से तो इसका पता नहीं चलता,”
माकोव ने जवाब दिया। बात सही थी और मैंने एकाएक अनुभव कि
कि डेर की डेर किताबें जो मैं पढ़ चुका था, उनसे यह पता नहीं चलता
था कि उनके नेक नायक कैसे काम करते हैं, किस श्रम पर वे जाने हैं।

“अच्छा तो धय जरा नींद ले ली जाए,” माकोव बहता और बहर
वे बस यहीं पसर जाता जहां यह बटा हुआ होता और अगले ही क्षण
उसके सुर्रटि सुनाई देने लगते।

पतझड़ के दिनों में जब कामा नदी के किनारों पर सात-बहर्षा रर
टापा था, पेड़ों के पत्ते पीले पड़ चुके थे और सूरज की तिरछी डिल
पीरी हो चली थी, माकोव एकाएक जहाज से घमग हो गया। इतने
एक ही दिन पहले उसने मुझसे कहा था

“परसो हम पेम पहुच जायेंगे, अत्योशा-बल्योशा ! सबसे पहले किसी हम्माम मे जाकर हम दोनो खूब नहायेंगे, फिर सीधे भटियारखाने की राह लेगे जहा बाजा भी बजता हो—बडा मजा आयेगा। भई, बाजा बजते देखना तो बडा ही अच्छा लगता है मुझे।”

लेकिन सारापूल मे मोटा गावदुम, दाढ़ी सफाचट और स्त्रियो जसे फूले हुए चेहरे वाला एक आदमी जहाज पर सवार हुआ। लम्बे कोट और सोमडी के फर वाले कनटोप मे उसे देखकर और भी ज्यादा धोखा होता कि पुरूप न होकर वह स्त्री है। आते ही रसोईघर के पास वह एक मेज पर बैठ गया, जहा गरमाई अधिक थी, चाय के लिए उसने आडर दिया और अपना कोट या कनटोप उतारे बिना ही गरम चाय की चुस्कियां लेने लगा। बेखते-देखते उसका सारा बदन पसीने मे तर हो गया।

बाहर पतझड की महीन धौंधारे पड रही थीं। जब वह अपने चौखाने हमाल से माथे का पसीना पोछता तो मानो धौंधारें भी सास लेने के लिए रुक जातीं, इसके बाद जब फिर तेजी से पसीना निकलता तो धौंधारें भी उतानी ही तेज हो जातीं।

कुछ ही देर बाद याकोव भी उसके पास नजर आया और दोनो मिलकर क्लडर मे एक नक्शे को बडे ध्यान से देखने लगे। मुसाफिर फिर नक्शे की रेखाओं पर उगली फेरकर कुछ बता रहा था। और याकोव शान्त स्वर मे कह रहा था

“ठीक है ! कोई बात नहीं। मेरे लिए सब बाएं हाथ का खेल है ”

“ठीक,” मुसाफिर ने पतली आवाज मे कहा और क्लडर को उठाकर घमडे के एक खुले पले मे खोस दिया जो उसके पाव के पास रखा था। बाद इसके वे चाय पीते और चुपचाप बातें करते रहे।

याकाव की पाली शुरु होने से पहले मेने उससे पूछा कि यह कौन है। हल्की हसी के साथ उसने जवाब दिया

“देखने मे तो जनजा मालूम होता है। दूर साइबेरिया का रहनेवाला है। भजीब पछी है—हर चीज का नक्शा बनाकर चलता है ”

इसके बाद, काली और खुर की भांति सख्त अपनी नयी एडियो से टेक को क्षमनाता, वह मेरे पास से चल दिया। फिर रुका और अपने पहलू को खुजलाता हुआ बोला

“मेने उसकी चाकरी मजूर कर ली है। पेम पहुचते ही मैं जहाज की

“मजे का आदमी है, तुम्हारा यह हेनरी बादशाह भी!” उसे कहा। “एकदम यार बाश, चाहो तो उसके साथ मछली मारो या क सपाटा करो।”

कहानी सुनते समय न कभी वह बाह-बाही करता न बीच में टोका न सवाल की झड़ी लगाता था। वह चुपचाप सुनता रहता, — भौंहे लड़े हुए, चेहरे पर वही एक भाव जो कभी नहीं बदलता था, — कोई बड़े पुरानी चट्टान की भाँति। लेकिन अगर किसी बजह से मैं बीच में आ जाता तो वह तुरत कहता

“क्या खत्म हो गई?”

“अभी नहीं।”

“तो रुक नहीं, कहे जा।”

एक दिन फ्रांस के लोगो के बारे में जब हम बातें कर रहे थे तो उसने लम्बी सास भरी और बोला

“मजे की जिदगी है उनकी — बढ़िया और ठडी ”

“तो कैसे?”

“हां, बढ़िया और ठडी,” उसने कहा, “एक हम-तुम हैं जो हर बसत बहकते रहते हैं, काम की गर्मी एक घड़ी ठडा नहीं होने देती। लेकिन वो बस प्याले छनकाते और सर-सपाटा करते हैं — मजे की जिदगी है!”

“लेकिन काम तो वे भी करते हैं।”

“करते होंगे, तेरी कहानियो से तो इसका पता नहीं चलता,” याकोव ने जवाब दिया। बात सही थी और मैंने एकाएक अनुभव कि कि डेर की डेर किताबें जो मैं पढ़ चुका था, उनसे यह पता नहीं चलता था कि उनके नेक नायक कैसे काम करते हैं, किस धम पर वे जीते हैं।

“अच्छा तो भय जरा नींव ले ली जाए,” याकोव कहता और बदर के बस वही पसर जाता जहाँ वह बठा हुआ होता और प्रगते हो लव उसके खुरटि सुनाई देने लगते।

पतसाइ के तिनो में जब बामा नवी के तिनारों पर सात-बत्तई रब छाया था, पेड़ों के पत्ते पीले पड़ चुके थे और सूरज की तिरछी किरणें पीकी हो चली थीं, याकोव एकाएक जहाज की असल हो गया। इतने एक ही दिन पहले उसने मुसते कहा था

“परसो हम यैसं पहुच जायेंगे, अल्योशा-अल्योशा ! सबसे पहले किसी हुम्माम मे जाकर हम दोनो खूब नहायेंगे, फिर सीधे भटियारखाने की राह लेगे । जहा बाजा भी बजता हो—बडा मजा आयेगा । भई, बाजा बजते देखना तो बडा ही अच्छा लगता है मुझे ।”

लेकिन सारापूत मे मोटा गावडुम, दाढ़ी सफाचट और स्त्रियो जसे फूले हुए चेहरे वाला एक आवमी जहाज पर सवार हुआ । लम्बे कोट और लोमड़ी के फर वाले कनटोप मे उसे देखकर और भी ब्यादा घोटा होता कि पुरुष न होकर वह स्त्री है । आते ही रसोईघर के पास वह एक मेज पर बठ गया, जहा गरमाई अधिक थी, चाय के लिए उसने आडर दिया और अपना कोट या कनटोप उतारे बिना ही गरम चाय की चुस्किया लेने लगा । देखते-देखते उसका सारा बदन पसीने मे तर हो गया ।

बाहर पतझड की महीन बौछारें पड रही थीं । जब वह अपने घौजाने कमाल से भापे का पसीना पोछता तो मानो बौछारें भी सास लेने के लिए रुक जातीं, इसके बाद जब फिर तेजी से पसीना निकलता तो बौछारें भी उतनी ही तेज हो जातीं ।

कुछ ही देर बाद याकोव भी उसके पास नजर आया और दोनों मिलकर क्लंडर मे एक नक्शे को बडे ध्यान से देखने लगे । मुसाफिर फिर नक्शे की रेखाओ पर उगली फेरकर कुछ बता रहा था । और याकोव शान्त स्वर मे कह रहा था

“ठीक है ! कोई बात नहीं । मेरे लिए सब बाए हाथ का खेल है.. ”

“ठीक,” मुसाफिर ने पतली आवाज मे कहा और क्लंडर को उठाकर घमडे के एक खुले घले मे सास दिया जो उसके पाव के पास रखा था । बाद इसके मे चाय पीते और चुपचाप बातें करते रहे ।

याकाव की पाली शुरू होने से पहले मेने उससे पूछा कि यह कौन है । हल्की हसी के साथ उसने जवाब दिया

“देखने मे तो जनग्ना मालूम होता है । दूर साइबेरिया का रहनेवाला है । अजीब पछी है—हर चीज का नक्शा बनाकर चलता है ”

इसपे बाद, काली और खुर की भांति सहत अपनी नगी एडियो से डेक को इनमानाता, वह मेरे पास से चल दिया । फिर रुका और अपने पहलू को सुजलाता हुआ बोला

“मेने उसकी चाकरी मजूर कर ली है । येम पहुंचते ही मैं जहाज की

नौकरी को घटा बताऊंगा और तुमसे विदा लूंगा, अत्योशा-बत्यागा। दूर है वह जगह, जहां उसके साथ मैं जाऊंगा। पहले हम रेलगाड़ी सवार होंगे, फिर पानी के जहाज पर और उसके बाद घोंडों पर। पहुंचने में पूरे पांच हफ्ते लग जायेंगे। लोगों ने भी कितनी दूर-दूर अपने घोंसले बना लिए हैं।”

“क्या तुम्हारी उससे जान-पहचान है?” याकोव के इस प्रश्न पर फसले से चकित होकर मैंने पूछा।

“जान-पहचान कसी? पहले कभी उसकी, और उस जगह की जहां वह रहता है, शकल तक नहीं देखी।”

अगले दिन, सुबह के समय, याकोव भेड़ की लाल की एक ब जाकेट जो उसके बदन पर घट नहीं पाती थी, सिर पर एक खता सीबो का हैट जिसके किनारे बगल के चुके थे और जो किता बगल नाटे भालू की सम्पत्ति था, और नये पावों में घिसी पिटी ब पहने दिखाई दिया। लोहे जसी अपनी उगलियों में मेरा हाथ बंधे हुए उसने कहा

“क्यों, तू भी मेरे साथ चल न? अगर मैं उससे कहूँ तो सब तुझे भी रख लेगा। बोल, क्या कहता है? चल, बड़ा मजा रहेगा। अगर तू वह चीज कटवाने के लिए तयार हो गया जिसके बिना भी आ बिदा रह सकता है, तब तो तेरे गहरे हैं। बड़ी धूम धाम से वे लोगों खस्ती करते हैं, और इसके लिए अच्छी रकम तक भी देते हैं।”

जनजा कटहरे के पास खड़ा था और अगल से एक सफेद पो धवाए मुर्बा सी आली से याकोव की ओर देख रहा था। उसका उतना ही भारी और फूला हुआ था जितना कि पानी में डूबे हुए आ का। मैंने धीमे से उसे कोसा, याकोव एक बार फिर मेरा हाथ बंधे हुए बोला

“गोली मार! हर आदमी अपने-अपने खुदा की पूजा करता हमें इससे क्या लेना देना है? अच्छा तो मैं अब चलता हूँ। मजे से रहन

और बड़े भालू की भांति झूमता, शकले खाता याकोव झूमोव हो गया, मेरे हृदय में जोशिल जटिल भावनाएँ छोड़ गया। मुझ उ तरस भी आ रहा था और झूमताहट भी हो रही थी। मुझे याद है उसे इतनी दूर एक अनजानी जगह जाते देख ईर्ष्या और चिंता का

भी मेरे हृदय को भय रहा था कि उसने अनजानी जगह जाना क्यों तय किया।

आखिर यह याकोव शूमोव आदमी किस कडे का था ?

१२

पतझड़ के दिन बीत चले और जब जहाजों का चलना बंद हो गया मैंने एक बकशाप में काम सीखने के लिए नौकरी शुरू की। यहाँ देव-प्रतिमाओं को रंगा चुना और उन्हें बकशाप की दुकान में बेचा जाता था। काम सीखना शुरू करने के दूसरे ही दिन मेरी मालकिन ने, जो एक छोटे कब की डौली-डाली और शराबी सी बूढ़ी स्त्री थी, ऐलान किया

“अब दिन छोटे और सात बड़ी होने लगे हैं, सो तुम सुबह से तो दुकान पर काम करना और सात को बकशाप में काम सीखोगे।”

और उसने मुझे दुकान के कारिबे के हवाले कर दिया। वह एक छोटा सा, तेज कबम युवक था, सुंदर चेहरा, जिसपर शहद में डूबी मुस्कान चिपकी थी। दुकान नीज्नी वाजार की बारादरी में दूसरी मंजिल पर थी। अंधेरे-मुह हम, वह और मैं उठते और ठंड में कलाबत्तू बने नौद में ऊपते सौदागरों की गली इल्थीन्का से होते हुए सारा शहर पार करके दुकान पहुंचते। दुकान, जो पहले किसी का स्टोर रूम थी, छोटी और अंधेरी थी। लोहे का उसमें बरघाजा लगा था और एक छोटी सी खिडकी थी जो दीन की छत वाली बालकनी की ओर खुलती थी। हमारी दुकान देव प्रतिमाओं से भरी पड़ी थी। छोटी, बड़ी और मझोली, सभी आकार प्रकार और काट छाट की प्रतिमाएँ थीं। साथ ही देव प्रतिमाओं के चौखटे भी हम बेचते थे, सादे भी और कामदार भी, जो तरह-तरह के बेल-घूटो से सजे हुए थे। चमड़े की पीली जिल्द चढ़ी और प्राचीन स्लाव लिखावट की धार्मिक पुस्तकों का स्टॉक भी दुकान में मौजूद था। हमारे बगल में ही देव प्रतिमाओं और धार्मिक पुस्तकों की एक और दुकान भी थी। इस दुकान का मालिक कालो दाढ़ी वाला एक सौदागर था। वोल्गा के उस पार केचेंनेत्स नदी के समूचे इलाके में प्रसिद्ध एक कट्टर पुरातनपथी*।

*पुरातनपथ का आरंभ रूम में सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में हुआ। रूसी आर्थोडॉक्स चर्च के तत्कालीन सर्वोच्च महा पादरी नीकान ने जार अलेक्सेई

नौकरी को घटा घटाऊगा और तुमसे विदा लूंगा, अत्याशा-वत्याशा। मैं दूर है वह जगह, जहाँ उसके साथ मैं जाऊंगा। पहले हम रेताने पर सवार होंगे, फिर पानी के जहाज पर और उसके बाद घोड़ों पर। ए पहुँचने में पूरे पाव हफ्ते लग जायेंगे। लोग ने भी कितनी दूर-दूर अपने अपने घोसले बना लिए हैं।”

“क्या तुम्हारी उससे जान-पहचान है?” याकोब के इस प्रार्थना फसले से चकित होकर मैंने पूछा।

“जान-पहचान कसी? पहले कभी उसकी, और उस जगह का मैं जहाँ यह रहता है, शकल तब नहीं देखी।”

अगले दिन, सुबह के समय, याकोब भेड़ की खाल की एक चोंच जाकेट जो उसके बदन पर घट नहीं पाती थी, सिर पर एक खस्ताहूँ सींको का हेड जिसके किनारे दगा वे धुके थे और जो किसी बगाने में नाटे भालू की सम्पत्ति था, और नगे पावों में घिसी पिनी बजने पहने दिखाई दिया। लोहे जसी अपनी उगलियों में मेरा हाथ दबोचते हुए उसने कहा

“क्यों, तू भी मेरे साथ चल न? अगर मैं उससे कह तो सब वह तुम भी रख लेगा। बोल, क्या कहता है? चल, बड़ा मजा रहेगा। और अगर तू वह चीज कटवाने के लिए तयार हो गया जिसके बिना भी प्रारनी जिन्दा रह सकता है, तब तो तेरे गहरे हैं। बड़ी धूम धाम से वे लोगों को खस्ती करते हैं, और इसके लिए अच्छी रकम तक भी बते हैं।”

जनता कटहरे के पास खड़ा था और बगल में एक सफ़ा पोतली दियाए मुर्दा सी आखी से याकोब की ओर देख रहा था। उसका बगन उतना ही भारी और फूला हुआ था जितना कि पानी में डूबे हुए आत्मी का। मैंने धीमे से उसे कोसा, याकोब एक बार फिर मेरा हाथ दबोचते हुए बोला

“गौली मार! हर आदमी अपने-अपने लूटा की पूजा करता है। हमें इससे क्या लेना-देना है? अच्छा तो मैं अब चलता हूँ। मजे से रहना।”

और बड़े भालू की भाँति झूमता, शकोले खाता याकोब शूम्बोब विद हो गया, मेरे हृदय में बोझिल जटिल भावनाएँ छोड़ गया। मुझे उत्पन्न तरस भी था रहा था और झुसताहट भी हो रही थी। मुझे याद है कि उसे इतनी दूर एक अनजानी जगह जाने देख ईर्ष्या और चिंता का भाव

भी मेरे हृदय को मय रहा था कि उसने अनजानी जगह जाना क्यों तय किया।

आखिर यह याकोव शूमोव आदमी किस कडे का था?

१२

पतझड़ के दिन बीत चले और जब जहाजों का चलना बंद हो गया मैंने एक वकशाप में काम सीखने के लिए नौकरी शुरू की। यहाँ देव-प्रतिमाओं को रंगा चुना और उन्हें वकशाप की दुकान में बेचा जाता था। काम सीखना शुरू करने के दूसरे ही दिन मेरी मालकिन ने, जो एक छोटे कद की ढीली-ढाली और शराबी सी बूढ़ी स्त्री थी, ऐलान किया

“अब दिन छोटे और सात बड़ी होने लगी हैं, तो तुम सुबह से तो दुकान पर काम करना और सात को वकशाप में काम सीखोगे।”

और उसने मुझे दुकान के कारिबे के हवाले कर दिया। वह एक छोटा सा, तेज कदम युवक था, सुंदर चेहरा, जिसपर शहद में डूबी मुस्कान चिपकी थी। दुकान नीज्नी बाजार की आरादरी में दूसरी मजिल पर थी। अघेरे-मुह हम, वह और मैं उठते और ठंड में कलाबतू बने नौद में अघते सौदागरी की गली इत्योन्का से होते हुए सारा शहर पार करके दुकान पहुंचते। दुकान, जो पहले किसी का स्टोर रूम थी, छोटी और अघेरी थी। लोहे का उसमें दरवाजा लगा था और एक छोटी सी खिडकी थी जो दीन की छत वाली बालकनी की ओर खुलती थी। हमारी दुकान देव-प्रतिमाओं से भरी पड़ी थी। छोटी, बड़ी और मशोली, सभी आकार प्रकार और काट छाट की प्रतिमाएँ थीं। साथ ही देव प्रतिमाओं के चौखटे भी हम बेचते थे, सादे भी और कामदार भी, जो तरह-तरह के बेल-बूटो से सजे हुए थे। चमड़े की पीली जिल्द चड़ी और प्राचीन स्लाव लिखावट की धार्मिक पुस्तकों का स्टॉक भी दुकान में मौजूद था। हमारे बगल में ही देव प्रतिमाओं और धार्मिक पुस्तकों की एक और दुकान भी थी। इस दुकान का मालिक काली दाढ़ी वाला एक सौदागर था। वोल्गा के उस पार केर्चोनेत्स नदी के समूचे इलाके में प्रसिद्ध एक पट्टर पुरातनपयी*।

*पुरातनपय का आरम्भ रूस में सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में हुआ। रूसी आर्थोडॉक्स चर्च के तत्कालीन सर्वोच्च महा पादरी नोकीन ने चार अलेक्सेई

परिवार का यह नातेदार था। मेरी ही उम्र का उसका एक लड़का था फाज़-चाज़ू, बच्चवाना शरीर और झूठों जसा बेरग, छोटा सा चेहरा, बड़े जसी घबल भावें।

दुकान खोलते ही मेरी दौड़ शुरू हो जाती। सबसे पहले मैं निम्न भटियारखाने का रास्ता नापना और चाय के लिए बहा से खीलता हुमा पना लाता। चाय के बाद मैं दुकान सगाता और माल की गद भाडकर उसे साफ-सुथरा करके रखता। दुकान को लूँ बचक बनाने के बाद मैं बालकनी मे जा लडा होता। मेरा काम था कि ग्राहकों को अपने हाथ से न निकलने दूँ, यह न हो कि वे हमारे दुकान मे न आकर बराबर गाने दुकान मे चले जाए।

“ग्राहक तो फाठ के उल्लू हैं,” कारिदा कहता, “दुकान से उन्हें बन गरज, वे तो वहाँ मुह मारते हैं जहा सस्ती चीज मिलती है। गया या उनके लिए सब बराबर हैं!”

उसके हाथ तेजी से चलते रहते। देव प्रतिमामो को वह उठाता आ सटा-सटाकर रखता। ध्यापार सम्बन्धी अपना ज्ञान बघारने में बरा भी नहीं घूकता और मुझे सबक पढ़ाना शुरू करता

“स्तेरा गाय का बना माल सस्ता होता है, तीन बाई चार साइज का अपना दाम है, छ बाई सात साइज का अपना दाम है— सस्त को जानता है? माद कर ले यह सस्त बोनिकाती हैं— पियकड बनने से बचाते हैं। और यह सत बरवार की प्रतिमा है— दात-दाद के डब और अकाल मत्यु से बचाने के लिए, और यह पहुँचे हुए सिद्ध धासीली हैं— गुजार और सरसाम के बीरो से बचाने के लिए। और भरियमो को जानता है? * देल—यह।

मिखाइलोविच के अनुमोदन से धार्मिक पुस्तको तथा बच की रत्नो : यूनानी आर्थोडॉक्स परंपरा के अनुसार कुछ सशोधन किये। पान्दियो के ए बहुत बड़े भाग न इन सशोधनो का विरोध किया। नालातर मे सशोधन विरोधी पुरातनपथी कहलाये। राजकीय धम का विरोध करने के बाद इह सरकार के अत्याचारा का शिकार होना पडता था।—म०

*भाता भरियम की विभिन्न शैलियो और विभिन्न मुद्रामो मे बर्न प्रतिमामा और साथ ही विभिन्न नगरो, गिरजो मे स्थित प्रतिमामो मे अलग अलग नाम होते थे। कई प्रतिमाए अपनी कमलारो शक्ति के लिए विशेष नामो से जानी जाती थी।—स०

शोकातुर मरियम, यह त्रिभुज मरियम और यह 'मेरा शोक दूर करो' मरियम है, इसके अलावा हैं बचान, पोप्योव और सेमिस्त्रेलनाया मरियम "

बड़ी-छोटी और कारीगरी के हिसाब से किस प्रतिमा के कितने दाम हैं, यह सब मैंने बड़ी जल्दी याद कर लिया, और विभिन्न मरियमों को पहचानने में भी मुझे अब कोई दिक्कत नहीं होती, लेकिन यह याद रखना मुझे एक अच्छा-खासा जजाल मालूम होता कि किस सन्त की प्रतिमा किस तरह के शोक-ताप हरती या किस तरह के वरदान देती है।

फारिदा अक्सर मेरा इम्तहान लेता। दुकान के दरवाजे पर लडा में न जाने किस प्याली दुनिया में भग्न होता कि उसकी आवाज आती

"बोल, बच्चा जनने की पीडा कम करना किसके हाथ में है?"

अगर मेरा जयाब चलत गिञ्जता तो उसकी भींहे चढ़ जातीं

"आखिर तेरी यह खोपड़ी किस काम आएगी?"

प्राहकों को पटाना और भी प्यादा मुश्किल मालूम होता। प्रतिमाओं के भींहे घेहरे मुझे घुरे मालूम होते और उन्हें बेचने में शम आती थी। नानी से कहानिया सुन-सुनकर मेरे मन में यह बात बठ गई थी कि माता मरियम कम उन्न, भली और सुबर थी। पत्रिकाओं में माता मरियम के जो चित्र मैंने देखे थे, वे भी ऐसे ही थे। लेकिन प्रतिमाओं में वह बूड़ी और कठोर स्वभाव की मालूम होती थी, लम्बी और नोक नुकीली नाक तथा बेजान हाथ।

बुध और शुक्रवार के दिन बाजार लगता और हमारी अच्छी बिक्री होती। किसानों और बूढ़ी स्त्रियों का हमारी दुकान में ताता लगा रहता और कभी-कभी तो बच्चों के साथ पूरा परिवार का परिवार आ धमकता—सब के सब पुरातनपथी, भींहे चढ़ाये और आँखों में अविश्वास भरे, घोला पार के जगलों में गुंजर करनेवाले। ऐसा भी हुआ करता था कि कोई भारी भरकम, बालकनी पर धीरे धीरे कदम रखते हुए, मानो वह डर रहा हो कि बालकनी से गिर जायेगा, आ रहा होता। मैं उसे देखता और उसके सामने शर्मिंदा और अटपटा सा महसूस करने लगता। आखिर, भारी उलझन के बाद, मैं उसके रास्ते में जम जाता और उसके भारी-भरकम, ऊँचे जूतों वाले पावों के पास नाचता हुआ मच्छर की तरह भनभनाने लगता

“क्या लोगे, बाबा जी? सभी कुछ हमारे यहाँ है—समय-समय विभाजित भजन-सहिता, टीका टिप्पणी और ग्रन्थ सहित बाइबल के गीत, योफ्रेम सौरिन और विरील की बनाई पुस्तके। एक बार चलकर जरा देख लीजिए। और सभी तरह की देव प्रतिमाएँ—सस्ती से सस्ती और महंगी से महंगी, अत्यन्त बर्जे की कारीगरी और गहरे रंग। हम आदर पर देव प्रतिमाएँ तयार भी करते हैं। जो भी सुन्त या माता मरियम आपकी पसन्द हो, हमसे बनवाइये। या आप अपने नाम के, अपने परिवार के सत की प्रतिमा बनवाना चाहें, तो वो भी बना देंगे। हमारी बकशाप समूचे रस में बेजोड है। नगर में इससे बढ़िया दुकान कूड़े नहीं मिलेगी।”

अभेद्य और समझ में न आनेवाला प्राहक देर तक चुप रहता और इस तरह मुझे घूरकर देखता मानो मैं कोई कुत्ता हूँ। एकाएक भारी हाथ से वह मुझे धकियाता और बराबर वाली दुकान में घुस जाता। कारिवा अपने छाज से बानों को मलता और पुस्से से भुनभुन उठता

“क्यो, उसे निकल जाने दिया, न? अच्छा चौपट दुकानदार है तू ”

और पास वाली दुकान से मुत्तामम तथा शहद में लिपटे शब्दों की वर्षा होने लगती

“भगवान भला करे, बाबा जी हम कोई भेडा की लाल नहीं बेचते, न ही हम घमडे के जूतो का धया करते हैं। हमारे यहा तो केवल दबी यामतें हैं, जिनका न चादी से मोल आका जा सकता है न सोने से, वे अनमोल हैं, दुनिया की हर चीज उनके सामने हेच है ”

कारिवा मुनता और ईर्ष्या तथा प्रशंसा से कलाबतू बन जाता

“देख न कमबख्त को, भोले बेहाती के कानो में क्या भीठा जहर उडेल रहा है। प्राहको को ऐसे पढाया जाता है, समझा।”

प्राहको को पढाने की कला, सोखने के लिए मैं जी जान से प्रयत्न करता। सोचता कि जब काम हाथ में लिया है तो उसे अच्छी तरह करना चाहिए। लेकिन प्राहको पर डोरे डालने और उनके भाये चीजें मढ़ने की दिशा में मेरी प्रतिभा में मानो उजागर होने से इनकार कर दिया। तोबडा चडे गुम-सुम देहातियो और चूहों की भाति खुदफुद करती, भय से प्रस्त तथा दीन चेहरे वाली बूढ़ी स्त्रियो को जब भी मैं देखता, मुझे उनपर बडा तरस आता, मेरा जी करता कि चुपके से उनके कानो में इन

प्रतिमाओं की असल कीमत बता दू ताकि गाढ़ी फर्माई के जो दस-बीस कोपेक उनकी गाठ में पड़े हैं, वे उनके पास ही बने रहे। वे सब इतने फटेहाल, इतने गरीब और भूखे मालूम होते कि मैं चकरा जाता, और मेरी समझ में न आता कि बाइबल की भजन-सहिता के लिए, जो सबसे ज्यादा बिकती थी, उनकी गाठ से साढ़े तीन एबल फसे निकल आते थे।

किताबों का ज्ञान और देव प्रतिमाओं के दोष-गुणों की उनकी परख देखकर मैं दग रह जाता। और एक बार पके बालों वाले एक बूढ़े ने, जिसे मैं अपनी दुकान में फुसला लाने का प्रयत्न कर रहा था, मुझसे कहा

“नहीं, बेटा, यह चलत है कि रुस में सबसे अच्छी प्रतिमाएँ तुम्हारे यहाँ बनती हैं। सबसे अच्छी तो मास्को में रोगोजिन की बकशाप है।”

सकपकाकर मैं एक ओर हट गया और वह पड़ोसी की दुकान को भी पार करता हुआ धीमे से आगे बढ़ चला।

“मिल गये लड्डे?” कारिबे ने जल भुनकर कहा।

“तुमने तो रोगोजिन के घारे में कभी कुछ बताया ही नहीं।”

कारिबा क्षुभलाहट उतारने लगा

“घूमते फिरते हैं ऐसे चुप्पे, साले। सभी कुछ जानते हैं, सब समझते हैं, बुद्धे खूसट ”

खूबसूरत, खाता-पीता और घमडी कारिबा देहातियों से नफरत करता था और जब मूड में होता तो मेरे सामने अपना रोना रोने लगता

“मैं अवलमद हूँ, साफ-मुयरी चीजें और बढ़िया लुशबू मैं पसंद करता हूँ—लोवान, गुलाबजल, तेल फुलेल और मेरे जैसे गुणी आदमी को इन बंदू भारत देहातिया के सामने झुकना पड़ता है, ताकि मालकिन की जेब में दो चार कोपेक मुनाफा जाए। मैं ही जानता हूँ कि मेरे दिल पर कसी क्या गुजरती है। आखिर ये देहातिये हूँ क्या? कीड़े पड़ी खाल, जूए कहीं की, और मुझे ”

विशुध्या सा वह बोलते-बोलते चुप हो जाता।

मुझे देहातिये पसंद थे। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वे अपने भीतर कोई बहुत बड़ा रहस्य छिपाए हो, ठीक वैसे ही जैसे याकोव को देखकर मुझे अनुभव होता था।

भेड की खाल की जकट के ऊपर भारी तबादा लादे कोई देहातिया लस्टम-पस्टम दुकान में चला आता। अपनी बालदार टोपी को वह सिर

से उतारता, कीने में जल रहे दिये की ली पर आखें जमाए अपनी दो उगलियो से सलोक का चिह्न बनाता। फिर दिये से आलोकित न होनेवाली प्रतिमाओं से नजर बचाते हुए वह घुपचाप अपने इदगिद देखकर कहता

“जरा बाइबल की भजन सहिता दिखाओ, टीका वाली।”

अपने लबादे की आस्तीनें ऊपर चढ़ाकर, मुखपृष्ठ के अक्षरों के साथ वह देर तक सिर खपाता, और उसके फटे हुए मटियाले होंठ बिना कोई आवाज निकाले हरकत करते रहते। अन्त में वह कहता

“इससे पुरानी नहीं है?”

“पुरानी प्रतिया एक हजार रुबल में कम में नहीं मिलतीं,—तुम तो जानते ही हो।”

“हां, मैं जानता हूँ।”

फिर धूक से अपनी उगली को नम कर वह पन्ना पलटता जिससे हाशिये पर मली-कुचली उगलियो का काला धब्बा पड़ जाता। कारिवा बेहालियो की लोपडी की ओर गुस्से से घूरते हुए कहता

“धम प्रयो की उन्न में भी क्या कोई भेद भाव होता है? पुराने हां चाहे नये, सब एक ही उन्न के होते हैं। भगवान ने अपने शब्दों को नहीं बदला है।”

“यह सब हम भी जानते हैं, सुना है। भगवान ने अपने शब्दों को नहीं बदला, लेकिन नीकीन ने तो उहे बदल दिया है न?”

और प्राहक धम को बंद करते हुए घुपचाप दुकान से बाहर हो जाता। जगतो के ये निवासी कभी-कभी कारिवा से बहस करने लगते और मैं साफ देखता कि धम पुस्तकों की जितनी ख्यादा जानकारी उहे है, उतनी उसे नहीं।

“दलदल के कीड़े, ईंट पत्थरो को पूजने वाले।” कारिवा बड़बड़ाता।

मैंने यह भी देखा कि यद्यपि नयी पुस्तक बेहालियो को पसंद नहीं आती फिर भी वह उसे अद्धा के साथ देखता है, उसे सावधानी से छूता है मानो पुस्तक उसके हाथ से पक्षी की भांति उड़ जा सकती हो। यह देखकर मुझे बड़ा आनंद आता, कारण कि पुस्तके मेरे लिए भी अबभूत चीज थीं जिनमें उनके रचयिताओं की आत्माएं बंद थीं। पुस्तक खोलकर मैं मानो उनकी आत्माएं उमुक्त करता और वे रहस्यमय ढंग से मेरे साथ बातचीत करने लगतीं।

अक्सर ऐसा होता कि ये बूढ़े पुरुष और स्त्रिया नीकन के समय से भी पहले की पुरानी छपी हुई पुस्तके या इस तरह की पुस्तको की हस्तलिखित नकले बेचने के लिए लाते। ये नकले पुरातनपथी इरगोज़ या वेर्जेन्स मठो की भिक्षुणियो के हाथो मे लिखी बहुत ही सुंदर होती थीं। वे द्मीत्री रोस्तोव्स्की द्वारा असशोधित सन्तो की जीवनिया, प्राचीन देव प्रतिमाए, इनामेल चढे, श्वेत सागर के तटवर्ती प्रदेशो के कारीगरो द्वारा बनाए गए पीतल के त्रिपाद और सलीब, मास्को के महाराजो द्वारा शराबखानो के मालिको को भेंट किए गए चादो के कलछे आदि लेकर आते। इन सब चीखो को वे चोरी के माल की भांति छिपाकर लाते और अगल बगल कनखियो से देखते रहते कि कहीं किसी की नजर तो नहीं पड रही है।

हमारा कारिवा और पडोसी दुकानदार दोनो ही इस तरह के माल के लिए जीभ लपलपाते रहते और उसे कम बामो मे हथियाने मे एक-दूसरे को भात देने की कोशिश करते। प्राचीन से प्राचीन निधियो की क्रीमत भी वे इकाइयो मे या बहुत हुभा तो वहाइयो मे देते और मेले मे धनी पुरातनपथियो के हाथ उन्हें बेचकर खुद संकडो ख्यल मटकारते।

“देखना, कोई बूढ़ा शतान या कोई बुडिया भुतनी नजर बचाकर न निकल जाए,” यह मुझसे कहता। “ये बम्बल्ट अपने थलो मे नकव हुडिया लिए घूमते हैं।”

जब भी कोई ऐसा सीदागर सामने आता, कारिवा मुझे प्राचीन पुस्तको, देव प्रतिमाओ और इस तरह की अन्य पुरानी चीखो के पारखी प्योन वासील्येविच के पास बौडाता कि उसे बुला साओ।

वह एक लम्बे रुद का बूढा आदमी था। उसकी आखो मे समझवारी की चमक थी, चेहरा और उसकी लम्बी दाढ़ी देखकर सत वासीली का धोखा होता था। उसके एक पाव का पजा गायब था और हमेशा लम्बी लकडो का सहारा लेकर वह चलता था। गर्मो हो चाहे सर्दो, पादरी के लबादे की भांति वह हमेशा एक हल्का पतला कोट और सिर पर मखमल की अजीब सी शबल की टोपी पहने रहता था। ग्राम तीर से जब वह चलता तो काफी सीधा-सतर और फुर्तोला मालूम होता, लेकिन दुकान मे पाव रखते ही अपने कचे ढीले छोड देता, हल्की सी आह भरता और पुरातनपथियो के रिवाज के अनुसार वो जगलियो से सलीब का चिह

बनाता, मुह से प्राथनाओं और भजनों के शब्द बुदबुदाता। बुढ़ापे और घामिकता की यह नुमाइश दुलभ चीजें बेचनेवालों के हृदयों में उस के प्रति विश्वास का संचार करती थी।

“कहो, किस काम के लिए बुलाया था मुझे?” बूढ़ा कहता।

“यह आदमी एक देव प्रतिमा लाया है और कहता है कि यह स्त्रोगानोव की बनायी देव प्रतिमा है।”

“क्या-आ?”

“स्त्रोगानोव की बनायी।”

“अच्छा आ सुनाई कम देता है। शुरू है भगवान का, मुझे बहरा बनाकर उस झूठ और पाखंड को सुनने से बचा लिया जो नीकोन के बाव से फला हुआ है।”

वह अपनी टोपी उतारकर रख देता, और प्रतिमा को सामने रखकर झालें सिकोडे, चित्रकारी को ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर, फिर झगल-झगल से और सीधे देखता और बुदबुदाता जाता।

“इन नास्तिक नीकोनियाइयों ने यह देखकर कि लोगो पर प्राचीन देव रूपी सौच्य का प्रभाव है, और क्षतान की सीख में आकर देव प्रतिमाओं की झूठी और विकृत नकले उतरवाना शुरू कर दीं। और यह काम अबभूत होशियारी से आजकल किया जा रहा है। पहली नज़र में यही मालूम होता है मानो यह असली स्त्रोगानोव या उस्तयुग शली की प्रतिमा है या फिर सूरदास प्रतिमाओं जसी है। लेकिन अत दष्टि से देखने पर साफ मालूम हो जाता है कि यह झूठी और विकृत नकल है!”

जब वह किसी प्रतिमा को ‘झूठी और विकृत’ कहता तो इसका अर्थ सिवा इसके और कुछ न होता कि वह एक दुलभ और कीमती चीज है। इस तरह के शब्दों की एक बाकायदा फेहरिस्त उहोने बना रखी थी जिससे कारिदे को पता चल जाता कि किस चीज का कितना दाम उसे लगाना चाहिए। मैं जानता था कि ‘शोक और निराशा’ शब्दों का अर्थ है—दस रुबल, ‘नीकोन शेर’—पच्चीस रुबल। बेचनेवाले को इस तरह धोखा देना मुझे बड़ा शमनाक मालूम होता, लेकिन बूढ़ा इतनी चात्ताकी से यह खेल खेलता कि मैं भी इसमें खिच आता था।

“नीकोनियाई, नीकोन शेर के ये चपड कनाती, गतान के सिखाये सब कुछ कर सकते ह। इसे ही देखो, कौन कह सकता है कि इस प्रतिमा

का आधार सच्चा नहीं है, अथवा यह कि इसके कपडों पर उहाँ हाथों ने रंग नहीं किया है? अगर ज़रा देव मुख-मडल तो देखो—यह दूसरी ही कूची से बनाया गया है। पीमेन उशाकोव जैसे पुराने उस्ताद—ईश्वर द्रोही चाहे वे क्यों न रहे हों—समूची छवि को छुद ही रंगते थे। देव प्रतिमा के वस्त्र भी वे अपने ही हाथों से रंगते थे, और मुख-मडल भी, यहां तक कि उसका आधार भी वे छुद ही रंगते-चुनते थे। लेकिन हमारे आज के ये टकियल चले चाटी सौ हैं बोल गए हैं। इनके बस का कुछ नहीं है! एक जमाना था जब प्रतिमाए तयार करना ईश्वर की सेवा करना था। लेकिन आज तो वह पेट भरने का, कोरी रगाई का धंधा बन गया है।”

अंत में वह प्रतिमा को काउण्टर पर सावधानी से रख देता और टोपी पहनकर कहता

“तौबा, क्या पाप है।”

इसका मतलब था आलें बद करके खरीद लो!

पारखी के मोठे शब्दों से अभिभूत होकर और उसकी जानकारी के रोब में आकर बेचनेवाला श्रद्धा से पूछता

“तो इस प्रतिमा के बारे में क्या कहते हैं, बाबा?”

“यह नीकोनियाइयो के हाथ की बनी है।”

“नहीं, यह नहीं हो सकता। हमारे दादा परदादा, बल्कि लकडवादा के जमाने की यह प्रतिमा है। वे सब इसीकी पूजा प्रार्थना किया करते थे।”

“इससे क्या हुआ? नीकोन तुम्हारे लकडवादा से भी पहले हुआ था।”

इसके बाद, बूढ़ा देव प्रतिमा को फिर अपने हाथों में उठाता और उसे बेचनेवाले के मुंह के सामने ले जाते हुए प्रभावशाली आवाज में कहता

“देखते हो, कितनी तडक भडक और रंगीनी है इसमें? क्या देव प्रतिमाए भी कभी इतनी रंगीन होती हैं? यह तो निरो सजावटी चीज है, वासना में डूबी कला, नीकोन के चले चाटियों की सालसाप्पो का मूल रूप। इस कृति में आत्मा जसी कोई चीज नहीं है! क्या तुम समझते हो कि मैं झूठ बोल रहा हूँ? मेरे बाल पक्कर सफेद हो गए हैं। दोन ईमान के पीछे न जाने कितनी यत्रणाए मैंने सही हैं। दो दिन बाद भगवान

के दरवार में मुझे पेश होना है। तुम्हीं बताओ, ऐसी हालत में अपनी आत्मा को बेचने से मेरे पल्ले क्या पड़ेगा ? ”

बुढ़ापे के बोझ से डगमगाता, कासता और कराहता, दुकान से वह बालकनी में आ जाता, और ऐसा दिखाता मानो उसकी यात्रे पर अविश्वस्त प्रकट करके उन्होंने उसके हृदय को घायल कर दिया है। कारिदा कुछ रुबल देकर प्रतिमा खरीद लेता और बेचनेवाला दुकान से विदा लेता, प्योत्र वासील्येविच की ओर मुड़ते हुए खूब झुककर अभिवादन करता और अपना रास्ता पकड़ता। इसके बाद मुझे बौझाया जाता कि भटियारखाने से चाय के लिए खोलता हुआ पानी ले आओ। सौटने पर मैं देखता कि पारखी फिर प्रसनचित्त और फुर्ती भरा नजर आ रहा है। खरीदी हुई प्रतिमा को वह चाय से देखता और कारिदे को सिखाता

“देख, इसके रंगों में कितनी सफाई और सावगी झलकती है, प्रत्येक रेखा में परमात्मा का भय और उसके प्रति सम्मान झलकता है—जीव सत्कार की भावना का लेश मात्र भी नहीं दिखाई देता ”

कारिदे की आँखें चमकने और उसका रोम रोम थिरकने लगता। जूशी से उछलता हुआ पूछता

“यह किस कारीगर के हाथों का चमत्कार है ? ”

“अभी तेरी उम्र नहीं हुई, यह जानने की ! ”

“कोई कद्रवान इसके लिए क्या देगा ? ”

“यह मुझे मालूम नहीं है। दो चार लोगों को विलाकर मालूम करूँगा ”

“आह, प्योत्र वासील्येविच ”

“और अगर खरीदार मिल गया तो पचास रुबल तेरे और इतने ऊपर के मेरे ! ”

“आह ”

“ज्यादा आह आह मत कर ”

वे चाय पीते, पूरी बेशर्मा से सोदेबाजी करते और मक्कारी भरी नजरों से एक दूसरे का जायजा लेते। साफ मालूम होता कि कारिदे का पलड़ा बेहद कमजोर है, बूढ़े के सामने उसकी एक नहीं चल सकती। जब बूढ़ा चला जाता तो कारिदा कहता

“देख, मालकिन के कानों में इस सौदे की भनक तक न पड़े, समझा !”

प्रतिमा को बेचने के बारे में जब सब कुछ तय हो जाता तो कारिदा कहता

“और मुनाफ़ों, प्योत्र वासील्येविच, शहर में और क्या कुछ हो रहा है, कोई नयी-नयाजी खर-खबर ?”

बूढ़ा पीले हाथ से अपनी दाढ़ी सहलाता, तेल चुपड़े से उसके होठ दिखाई देने लगते और वह धनी सौदागरों की जिदगी, व्यापार करने के उनके कारगर हथकण्डों, बीमारी चकारियों, ध्याह शादियों, रास रग और ऐयाशियों, पति को उल्लू बनानेवाली पत्नियों और पत्नियों को चकमा देनेवाले पतियों के किस्से बयान करता। कुशल बावचिन की भांति वह इन कहानियों में बघार लगाता और बढ़िया पकवान की भांति, अपनी फुसफुसी हसी की चाशनी चढ़ाकर, फुर्ती से उन्हें परोसता। कारिदे के गोल चेहरे पर रइक और ईर्ष्या की सली दौंड जाती और उसकी आंखों में सपने तैरने लगते। आह भरकर वह कहता

“कितना रास रग है उनके जीवन में, और एक में हू कि”

“जसा जिसका भाग्य,” बूढ़ा बमकता, “एक भाग्य वह है जिसे छुद फरिस्ते चाबी की नहीं-नहीं हथौडिया से गड़ते हैं, और दूसरा वह जिसे शतान अपनी कुल्हाड़ी के बस्ते से गड़ता है”

कडियल और चीमड यह बूढ़ा हर घोंद की खबर रखता था समूचे नगर का जीवन, सौदागरों के गुप्त से गुप्त भेद, दपतरो के बाबुझों, पावरियों और मध्य यग के लोगों की छिपी-डकी बातें, सभी कुछ उसे मालूम था। उसकी नजर गिद्ध की भांति तेज थी, भेडिमे और लोमड़ी का अंश उसमें मिला हुआ था। उसे कोचने के लिए मेरा जी सदा सतकता, लेकिन आखें सिक्कोडकर कुछ इस धुपले अंदाज से वह मेरी ओर देखता कि मैं निरस्त्र हो जाता। मुझे ऐसा मालूम होता मानो यह चारों ओर गहरो खाई से घिरा था जो निकट आने का दुस्साहस करनेवाले हर व्यक्ति को निगल जाने के लिए मुह बाए थी और मुझे लगता कि जहाबी याकोव गुमोव और वह मानो एक ही पत्ती के चट्टे-बट्टे हैं।

कारिदा बूढ़े की चतुराई का कायल था और मुग्ध भाव से उसे दाव देता था। बूढ़े के मुह पर ही नहीं, उसकी पीठ पीछे भी वह उसकी तारोक

करता। लेकिन कभी कभी ऐसे भी क्षण आते जब वह मेरी तरह बूढ़े को कोचने और उसकी हसी उड़ाने के लिए ललक डटता।

एक दिन, चित कर देनेवाली नज़र से बूढ़े की ओर देखते हुए, कहने लगा

“लोगों की आँखों में धूल झोकना और उन्हें धोखा देना कोई तुमसे सीखे!”

“केवल भगवान ही ऐसा है जो कभी लोगों को धोखा नहीं देता,” असल भाव से हसते हुए बूढ़े ने जवाब दिया। “बाकी सब उल्लुओं के बीच जीवन बिताते हैं। अगर उल्लुओं को उल्लू नहीं बनायें तो और क्या उनका अन्धार डालें?”

कारिवा गुस्से का दामन पकड़ता

“सभी देहातियो उल्लू नहीं होते। व्यापारी लोग क्या आसमान से टपकते हैं? वे भी तो इन्होंने देहातियों के बीच से आते हैं।”

“उन देहातियों की बात छोड़ो जो व्यापारी बन गए हैं। ठगने के लिए जितने बड़े दिमाग की जरूरत है, वह उल्लू देहातियों के पास कहाँ से आ गया? वे तो निरे बुद्धू-बिना दिमाग के सन्त-होते हैं।”

शब्दों की वह इतने निश्चल भाव से कुत्सिया करता कि तन्वीयत बुरी तरह झुमला उठती। मुझे ऐसा मालूम होता मानो वह मिट्टी के एक सूखे ढूँ पर खड़ा ही और उसके चारा ओर दलदल फली हो। उसे परेशान करना या चिढ़ाना असम्भव था। या तो गुस्सा उसके हृदय को छूता नहीं था, या गुस्सा छिपाने की कला में उसे कमाल हासिल था।

बहुधा वह खूब चिढ़ाना शुरू करता। अपनी धूँयनी को मेरे नज़दीक लाकर वह अपनी दाढ़ी के भीतर ही भीतर हसता और कहता

“हा तो फ्रांस के उस लेखक का जाने क्या भला सा नाम बताया था तुने-पोस्तोन?”

वह कुछ इस अदाब से नामों को तोड़ता-मरोड़ता कि मैं भना उठता, लेकिन कुछ देर तक मैं अपने को समाले रहता और कहता

“पोनसोन-द-तरेल।”

“किपर तरा?”

“आप बच्चे नहीं हैं। शब्दों को तोड़-भरोड़कर उनके साथ तिलवाड न करो।”

“ठीक कहता है। भला मुझे बच्चा कौन कहेगा? तुम्हारे हाथ में यह कौन सी पुस्तक है?”

“येक्रम सीरिन की पुस्तक है।”

“कौन ज्यादा अच्छा लिखता है—वह या यह किस्सा कहानी गढ़नेवाले?”

मे कोई जवाब न देता। वह फिर पूछता

“ये कहानी किस्सा गढ़ने वाले ज्यादातर क्या लिखते हैं?”

“उन सभी चीजों के बारे में जो दुनिया में मौजूद हैं।”

“कुत्तों और घोड़ों के बारे में? ये भी तो इस दुनिया में मौजूद हैं।”

कारिदे के पेट में बल पड़ जाते और मैं भीतर ही भीतर उफनता। मेरे लिए बहा बठे रहना बोलमिल और अप्रिय हो जाता, लेकिन जैसे ही मैं लिखना शुरू करता, कारिदा चिल्ला उठता

“किधर बला? बठ यहीं पर!”

बूढ़ा मुझे कुरेदना जारी रखता

“तुम्हें अपने लम्बे दिमाग पर गव है। जरा यह पहली तो बूझो। तेरे सामने एक हजार लोग खड़े हैं, एकदम भावरजात नये। पाच सौ पुरुष और पाच सौ स्त्रियां। और उन्हीं के बीच आदम और हीवा छिपे हैं। बोल, उन्हें कैसे पहचानेगा?”

कुछ देर मेरा सिर चकराने के बाद अंत में वह विजयी आदेश से कहता

“बेवकूफ की ड्रम, उन्हें खुद खुदा ने अपने हाथों से गढ़ा था, किसी स्त्री के पेट से वे पैदा नहीं हुए थे। इसका मतलब यह कि उनके शरीर में नाभि नहीं हो सकती।”

बूढ़ा इस तरह की अनगिनत पहेलियों की खान था और मुझे परेशान करने के लिए उन्हें पेश करता रहता था।

बुकान पर आने के बाद, शुरू-शुरू में, अपनी पढी हुई पुस्तकों के कुछ किस्से मैंने कारिदे को सुनाए थे। वे किस्से अब मेरे जी का जजाल बन गए। हुआ यह कि अपनी ओर से मनमाना नमक मिच लगाकर तथा खूब गदा बनाकर कारिदा उन किस्सों को प्योर वासीत्येविच को सुनाता। बूढ़ा खोद-खोदकर घिनौने सवाल करता और उसे उकसाता। नतीजा इसका

यह होता कि अपनी गद्दी जवान से वे मेरे प्रिय पात्रो—यूजेनी घाण्डे, ल्युद्मोला और हेनरी चतुर्य की खूब छोछालेवर करते।

मैं यह जानता था कि किसी कुत्सित इरादे से नहीं, बल्कि वो घरी दिल बहलाने या जीवन की ऊब कम करने के लिए वे ऐसा करते थे, फिर भी उनका ऐसा करना मेरे लिए असह्य हो उठता। वे सूझरो की भांति अपने ही पैदा किये हुए कौचड में लोटते और सुंदर कृतियों को कौचड में लथेडकर छुश होते, क्योंकि सुंदर चीज उन्हें अजीब, समझ में न आनेवाली और इसीलिए हास्यास्पद मालूम होती थी।

अगल-बगल के सभी दुकानदार और व्यापारी निराले ढंग का जीवन बिताते थे। उन्हें बड़ा भजा भाता जब वे किसी को बनाते। उनके मजाक बहुत ही बेहवा, बचकाना और कुत्सापूर्ण होते। अगर कोई बेहातिया पहली बार नगर में भाता और किसी जगह का रास्ता पूछता तो वे अदबदारक उसे जलदा रास्ता बताते। लेकिन, यह मजाक इतना घिसपिड गया था कि उसमें अब उन्हें कोई रस नहीं मिलता था। वो चूहो को पकडकर सीबागर उनकी दुमो को एक दूसरे से बाधकर, उन्हें सडक पर छोड देते और अलग लडे होकर मजे लेते ॥ए उन्हें बात-यजे चलाते और विरोपी विशाओ में एक-दूसरे को खींचते हुए देखते। कभी-कभी वे चूहे पर मिट्टी का तेल उडेलकर दियासलाई भी दिखा देते। या वे कुत्ते की दुम में टीन बाध देते, कुत्ता घबराकर जीभ निकाले भागता। पीछे से टीन लडलड करता और लोग हसी के मारे बोहरे हो जाते।

इस तरह, आए दिन, वे कोई न कोई तमाशा करते रहते। ऐसा मालूम होता कि सभी व्यक्ति—और खास तौर से बेहाती—मानो बाजारवालो का दिल बहलाव करने के लिए ही पैदा हुए हैं। सीबागर और उनके कमचारी इस बात की ताक में रहते कि कोई आए और उसका मजाक बनाया जाए या उसे छोडा और नोचा-खरोचा जाए, —जसे भी हो, उसे परेशान किया जाए और उसे रुलाकर लुद हसा जाए। और सबसे अजीब बात तो यह थी कि जो पुस्तके में पढ़ता था, उनमें एक-दूसरे की खिल्ली उडाने की लीगा की इस इच्छा का कोई जिक्र नहीं होता था।

बाजार के इन मनबहलावो में से एक मुझे खास तौर से घिनौना लगता था।

हमारी दुकान के नीचे ऊन और नमदे के जूतों की दुकान थी। इस दुकान का कारिदा इतना अधिक खाता या कि समूचे नीवनी बाजार में प्रसिद्ध था। दुकान का मालिक अपने कारिदे का भोजन चट करने की अद्भुत क्षमता का उतनी ही शोखी और गव के साथ ऐलान करता जितने गव के साथ लोग अपने शिकारी कुत्तों की खूहवारी या अपने घोड़ों की ताकत का बखान करते हैं। अक्सर अपने पड़ोसियों से वह शत तक बड़ता

“बोलो, है कोई बस रुबल लगाने को तयार? मेरा दावा है कि मीशा पाच सेर मास दो घंटे के भीतर चटकर जाएगा।”

सभी जानते थे कि मीशा पाच सेर मास चट कर जाएगा। यह उसके लिए मुश्किल नहीं है। बोले

“शर्त तो हम नहीं बढते। लेकिन मास हम अपनी जेब से खरीदेंगे। वह खाना शुरू करे और हम समाशा देखेंगे।”

“लेकिन पाच सेर मास ही मास होना चाहिए, कहीं हड़िया न उठा खाना—समझे!”

कुछ देर अलस बहस होती रही, अंत में अंधेरे गोबाम में से एक दुबला-पतला आवामी प्रकट हुआ। उसका चेहरा सफाचट था, जबड़े की हड़िया उभड़ी हुई थीं। वह एक लम्बा कोट पहने और कमर में लाल पटका कसे हुए था। सारे कोट में ऊन के गुच्छे बुरी तरह लिपटे हुए थे। छोटे से सिर से सम्मान के साथ ढीपी उतारकर उसने मालिक के गोल, लाल सुख तथा घास की तरह बाड़ी उगे चेहरे की ओर धुंधली सी आंखों से देखा।

मालिक ने पूछा

“पाच सेर मास को हकम कर सकता है?”

“कितनी देर में?” पतली और कामकाजी आवाज में मीशा ने सवाल किया।

“दो घंटे में।”

“मुश्किल है।”

“मुश्किल है—और तेरे लिए?”

“मीयर के बिना नहीं चलेगा। वह और होनी चाहिए।”

“अच्छी बात है, शुरू कर!” मालिक ने कहा और फिर अपने पड़ोसियों की ओर मुड़कर शोखी बघारते हुए बोला, “यह न समझना

कि इसका पेट खाली है! भरे नहीं, एक सेर घाव रोटी तो इन
घान सपेरे ही माने में घट की, इसके बाद गूब छहर बापूर का
भोजन किया।”

मांस साहर उतार सामने रख दिया गया, बर्तानों की एक भीड़ इतनी
गिर्द जमा हो गई। ये सब के सब सौदागर और ध्यापारी थे। जाइँ का
भारी सयादा बसने पड़ने हुए ये बड़े-बड़े बटगरे जते लगने थे। उनकी
साइँ तिरती हुई थीं, बॅरस, जौँबी और ऊब भरी छोटी-छोटी घाँवें,
घुपी सी, गाला की बर्तानें भी पगी हुई साँर रही थीं।

हाथ की घपनी घास्तौंगों में लँति, बसहर घॅर बनाए, वे मांस
के घारों घोर लड़े थे। हाथ में एक चारू और राई की डबल रोटी लिए
सौगा भी तयार था। तेजो से, जन्दी-जस्दी सलीब का बिहू बनाने का
बाद, वह ऊन के एक बोरे पर बठ गया। मांस के सौपड़े को उसने एक
पेटी पर रख लिया और बोरी घाँवों से उसे अडाठने लगा।

डबल रोटी में से उसने एक पतला सा टुकड़ा तरागा, फिर मांस का
मोटा सा टुकड़ा काटकर बडी लगाई से उसके ऊपर रखा और बाँवों हाथों
से परडकर घपने मुह तक ले गया। कुत्ते की भाँति उसकी सन्धी जीभ
बाहर निकली, बाँपते हुए घपने हँठों को काटकर उसने साक किया,
उसके छोटे-छोटे तेज बाँवों की एक झलक दिखाई दी। फिर, कुत्ते की
ही तरह मांस को उसने घपने जयडो में दबोख लिया।

“भरे इसने धूमनी बसाना गुरु कर दिया।”

“घडी देखकर समय मोट कर ली।”

समकी घालें उसके देहरे, चप चप की आवाज करते उसके जवडों,
कानों के पास उभर आनेवाली मुल्लियो, और समगति में उठने और
गिरनेवाली उसकी नुकीली ठोडी पर जमी थीं। रह रहकर ये घापस में
दिप्पणिमा भी करते जाते थे

“मुह तो देखो कते भालू की तरह चल रहा है।”

“कभी देखा भी है भालू को मुह चलाने हुए?”

“मैं क्या जगल में रहता हूँ? यह तो एक कहावत है भालू की
तरह मुह चलाना।”

“नहीं कहावत यह नहीं है। कहावत है सुधर की तरह मुह मारना।”

“सुधर क्या सुधर का भास खाते हैं?”

सब अनचाहे हसने लगे, और तभी कोई लाल बुझक्कड बोला

“सूझर सभी कुछ खा सकता है—चाहे उसके अपने बच्चे बच्चे या भाई-बहन ही क्यों न हो ”

देखते-देखते मीशा का चेहरा लाल हो गया, कान नीले पड गए। उसके दीर्घ कोटरो से बाहर झाकने लगे, और उसकी सास बाजा सी बजाने लगी। लेकिन उसका मुह था कि लगी-बधी रपतार से चल रहा था।

“जल्दी कर, मीशा, तेरा समय खत्म हुआ जा रहा है!” वे उसे उकसाते। बाकी भास का वह बेचनी से अदाबता, बीयर का घट चढ़ाता और जबड़े धलाना जारी रखता। दशको की उत्तेजना बढ़ती जाती, उचक-उचककर और लम्बी गरदनें करके वे मीशा के मालिक के हाथ में घडी पर नजर डालते, और एक दूसरे को चेताते हुए कहते

“इस बात का ध्यान रखना कि कहीं वह घडी की सुई को पीछे न कर दे। अच्छा यह हो कि घडी इसके हाथ से ले ली जाए।”

“मीशा पर भी नजर रखना। नहीं तो आख बचाकर वह भास अपनी आस्तीन में छिपा लेगा।”

“देख लेना, समय के भीतर वह कभी इसे खत्म नहीं कर सकता।”

“मैं अब भी पच्चीस रूबल की शत बढ़ने के लिए तयार हूँ।” मीशा का मालिक आवेश में आकर चिल्लाया। “मीशा, मुझे नीचा न दिखाइयो।”

उकसावा और बढ़ावा देने के लिए दशक चिल्लाए तो बहुत, लेकिन शत बढ़ने के लिए कोई तयार नहीं हुआ।

मीशा का जबड़ा चलता रहा, एक क्षण के लिए नहीं रुका, चला सो बराबर चलता ही रहा। उसका चेहरा भी भास जसा ही बन गया, उसकी नुकीली दरेंदार नाक दयनीय सीटी बजाने लगी। उसे देखकर डर मालूम होता, मुझे लगता कि उसके चीख उठने में अब देर नहीं है। किसी भी क्षण उसके मुह से आवाज निकल सकती है

“मुझपर रहम करो।”

या फिर, भास के गले तक अट जाने के कारण वह दशको के सामने ही डेर हो जाएगा, और उसकी जान निकल जाएगी।

आखिर उसने सारा भास खत्म कर दिया। वीदे टेरेते हुए दशको की ओर उसने देखा, और हाफता हुआ सा बोला

“पीने के लिए कुछ दो ”

उसके मालिक ने घड़ी पर नजर डाली और बड़बड़ा उठा

“चार मिनट ऊपर हो गए, कुत्ते की दुम।”

“चूक गए, अगर शर्तें बंद ली होती बड़ा मजा आता,” दशकों ने चिढ़ाना शुरू किया। “तुम सोतहो भ्राना चित्त हो जाते।”

“लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि है यह पूरा साड।”

“इसे तो किसी सरकस में भर्ती हो जाना चाहिए ”

“भगवान भी कभी-कभी कसे बेंडब इतान पदा करता है, हैं?”

“इस वक्त अगर धाय भी हो जाए तो क्या हज है?”

और वे सब बजरो की तरह तरते हुए भटियारखाने की ओर चल दिये मेरी समझ में न आता कि क्या बात है कि गभीर और भारी भरकम ये लोग एक बेहाल जीव के धारों और इस तरह जमा हो जाते हैं मानो यह कोई तमाशा हो, और फिर किसी को धिनौनेपन के साथ ठूस ठूस कर खाते हुए देखने में उन्हें क्या मजा मिलता है?”

ऊन की गाठों, भेड की खालों, सन, रस्सों, नमदे के जूतों और काठियों से भरी हुई बाजार की सकरी बालकनी उदास और अपेरी थी। समय की भार से जजर और सडक की धूल-कीचड से काले पडे ईंटा के मोटे-मोटे बदनमा खम्बे बालकनी और पक्की पगडडी के बीच सीमा रेखा का नाम देते थे। रोज, हर घडी, इन खम्बों पर मेरी नजर पडती और मुझे ऐसा मालूम होता मानो उनकी एक एक ईंट और एक एक दरार को हजारां बार मैंने गिना और देखा भला है, यहा तक कि उनका समूचा बदनमा ढाचा, भोडी बनावट और बाग धम्बों का झाल-जाल, मेरी स्मृति में ज़ब्र गहरे उतरकर पूरी तरह से नक्श हो गया है।

पक्की पगडडी पर लोग अलस भाव से आते जाते, और उतने ही अलस भाव से माल से लबी स्लेज और घोडा गाडिया सडक पर से गुजरतीं। सडक के पार लाल ईंटों की दुमजिला दुकानों से घिरा एक चौक था जहाँ जमीन पर माल भरने की पेटिया, भूसा और बण्डल बाधने के कागड, गवी बफ में रौंदे हुए सब गडू-मडू पडे थे।

निरंतर और हर घडी की इस हलचल के बावजूद ऐसा मालूम होता मानो यहा सब—मय लागो और थोडो के—निश्चल और स्थिर है, किसी अदृश्य जजीर से बंधे बोट्टू के बल की भांति सब एक ही जगह पर चक्कर

लगा रहे हैं। एकाएक महसूस होता था कि ध्वनिया की निघनता ने जीवन को इतना पस्त बना दिया है कि इसे मूगो-बहरो की पात में रखा जा सकता है। स्तेजों के दौड़ने की आवाजें आतीं, दुकानों के दरवाजे धनक्षनाते और खटपट करते, पाव रोटी और गम शरबत बेचनेवाले चिल्लाते, लेकिन आदमियों की आवाजें इतनी बेरस, जीवनशून्य और एक-जती होतीं कि कान शीघ्र ही उनकी ओर ध्यान देना बंद कर देते, उनका होना या न होना बराबर हो जाता।

गिरजों के घटे इस तरह बजते मानो भातम बना रहे हो। उनकी उदासी भरी आवाज मानो कानों में अटककर रह जाती। लगता था मानो घटों की आवाज सुबह से लेकर रात तक बाजार के वायुमण्डल में मड़राती रहती है, बिल व बिमाग में घुसकर हर विचार और हर भावना से चिपक जाती है और हर अनुभूति पर भारी ताम्बे की सी परत की तरह जम जाती है।

जानलेवा ठंडी ऊब को गहरा बनाने में हर चीज हाथ बटाती—गबी बफ का कम्बल ओढ़े परती, छतों पर जमे बर्फ के भूरे ढेर, इमारतों और दुकानों की मास जती लाल इंटें। धिमनियों से निकलनेवाला भूरा धुआ भी इसी ऊब से कसमसाता और नीचे लटक आए भूरे छूने आकाश में रेंगने लगता। घोड़ों की पसलियों और लोगों के नयुनों में भी इसी ऊब की धौंकनी चलती और लोग उसी की सास लेते। एक अजीब गंध—पसीने, घर्बी, धुएँ, तेल और चिकनाई में डूबे पकौड़ों की बेरस और बोझिल गंध से यह ऊब सराबोर होती। यह गंध एक तग, गम टोपी की तरह सिर को दबाती और छाती में छनकर एक अजीब नशा पदा करती। जी करता कि आखें बंद कर लो, अपनी पूरी ताकत से दहाड़ो और कहीं भागकर सिर को पत्थर की पहली बीवार से टकराकर चकनाचूर कर दो।

सौदागरो के चेहरों की मैं बड़े ध्यान से देखता—अति तुप्त, बढिया खून की लाली से दमकते, पाला-काटे, और इस प्रकार निश्चल मानो नींद में डूबे हुए हो। रह रहकर वे जम्हाइया लेते और सुखे तट पर पड़ी हुई मछली की भांति उनके मुह भट्टे से खुल जाते।

जाड़ों में बाजार ठंडा रहता और वह सजग हिसाब किताबी चमक भी सौदागरो की आखों से गायब हो जाती जो गमियों में उनकी आखों में दौडती रहती है और उन्हें पूरी तरह से अपने रग में रग लेती है।

“पीने के लिए कुछ दो ”

उसके मासिक ने घड़ी पर नजर डाली और बड़बड़ा उठा

“चार मिनट ऊपर हो गए, कुत्ते की दुम।”

“बूक गए, अगर शत बंद ली होती बड़ा मजा आता,” दशकों ने चिढ़ाना शुरू किया। “तुम सोलहो घाना चित्त हो जाते।”

“लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि है यह पूरा साड।”

“इसे तो किसी सरकस में भर्ती हो जाना चाहिए ”

“भगवान भी कभी-कभी बसे ब्रेडब इसान पदा करता है, है?”

“इस वक्त अगर चाय भी हो जाए तो क्या हज है?”

और वे सब बजरो की तरह तरते हुए भटियारखाने की ओर चल दिये।

मेरी समझ में न आता कि क्या बात है कि गभीर और भारी भरकम वे लोग एक बेहाल जीव के चारों ओर इस तरह जमा हो जाते हैं मानो वह कोई तमाशा हो, और फिर किसी को धिनाँपन के साथ ठूस ठूस कर खाते हुए देखने में उहे क्या मजा मिलता है?”

ऊन की गाठो, भेड की खालो, सन, रस्सो, नमबे के जूतो और काठियो से घटी हुई बाजार की सकरी बालकनी उदास और अंधेरी थी। समय की मार से जजर और सडक की धूल कोचड से काले पडे इटो के मोटे मोटे बबनुमा खम्बे बालकनी और पक्की पगडडी के बीच सीमा रेखा का काम बेते थे। रोज, हर घडी, इन खम्बो पर मेरी नजर पडती और मुझे ऐसा मालूम होता मानो उनकी एक एक ईंट और एक एक बरार को हमारो धार मेरे गिना और देखा भला है, यहा तक कि उनका समूचा बबनुमा ढाखा, भोडी बनावट और दाग धब्बों का झल-जाल, मेरी स्मृति में खूब गहरे उत्तरकर पूरी तरह से नक्श हो गया है।

पक्की पगडडी पर लोग झलस भाव से आते जाते, और उतने ही प्रसन्न भाव से माल से लडी स्लेज और घोडा गाडिया सडक पर से गुजरतीं। सडक के पार साल ईटो को डुमजिला डुकानो से धिरा एक चौक था जहा समीन पर माल भरने की पेटिया, भूसा और बण्डल बांधने के कागज, गवी बफ में रीदे हुए सब गहु-महु पडे थे।

निरंतर और हर घडी की इस हलचल के बावजूद ऐसा मालूम होता मानो यहा सब—मय लोगो और घोडो के—निश्चल और स्थिर है, किसी अद्भुत जजीर से बचे फोल्ड के बल की भांति सब एक ही जगह पर धक्कर

लगा रहे हैं। एकाएक महसूस होता था कि ध्वनिया की निघनता ने जीवन को इतना पस्त बना दिया है कि इसे गुगा-बहरो की पात में रखा जा सकता है। स्तेजो के दौड़ने की आवाजें आतीं, दुकानों के दरवाजे झनझनाते और खटपट करते, पाव रोटी और गम शरबत बेचनेवाले चिल्लाते, लेकिन आदमियों की आवाजें इतनी बेरस, जीवनशून्य और एक-जसी होतीं कि कान शीघ्र ही उनकी ओर ध्यान देना बंद कर देते, उनका होना या न होना बराबर हो जाता।

गिरजो के घटे इस तरह बजते मानो मातम मना रहे हो। उनकी उदासी भरी आवाज मानो कानों में अटककर रह जाती। लगता था मानो घटों की आवाज सुबह से लेकर रात तक बाजार के धायुमण्डल में मड़राती रहती है, दिल व दिमाग में घुसकर हर विचार और हर भावना से चिपक जाती है और हर अनुभूति पर भारी ताम्बे की ती परत की तरह जम जाती है।

जाननेवा ठंडी ऊब को गहरा बनाने में हर चीज हाथ बटाती—गवी बर्फ का कम्बल ओढ़े धरती, छतों पर जमे बर्फ के भूरे ढेर, इमारतों और दुकानों की मास जसी लाल इंटें। चिमनियों से निकलनेवाला भूरा धुआ भी इसी ऊब से कसमसाता और नीचे लटक आए भूरे सूनो आकाश में रँगने लगता। घोड़ों की पसलिया और लोगों के नयुना में भी इसी ऊब की धौंकनी चलती और लोग उसी की सास लेते। एक अजीब गध—पसीने, चर्बी, घुए, तेल और चिकनाई में डूबे पकौड़ों की बेरस और बोझिल गध से यह ऊब सराबोर होती। यह गध एक तग, गम टोपी की तरह सिर को दबाती और छाती में छनकर एक अजीब नशा पदा करती। जी करता कि आलें बंद कर लो, अपनी पूरी ताकत से दहाड़ो और कहीं भागकर सिर को पत्यर की पहली दीवार से टकराकर चकनाचूर कर दो।

सौदागरो के चेहरो को मैं बड़े ध्यान से देखता—अति तृप्त, बढ़िया जून की लाली से दमकते, पाला-काटे, और इस प्रकार निश्चल मानो नींद में डूबे हुए हो। रह रहकर वे जम्हाइया लेते और सूखे तट पर पड़ी हुई मछली की भांति उनके मुह भट्टे से खुल जाते।

जाडो में बाजार ठंडा रहता और वह सजग हिसाब किताबी धमक भी सौदागरो की आप्तो से गायब हो जाती जो गमिया में उनकी आलसो में बीडती रहती है और उन्हें पूरी तरह से अपने रग में रग लेती है।

भारी लबादा अब हाथ पाव हिलाने में बाधक होता और वे घरती के साथ जाम हो जाते। अलसाहट में वे बातें करते, लेकिन जब झुझला उठते तो एक दूसरे को खूब लम्बी झाड पिलाने से भी न चूकते। मुझे ऐसा मालूम होता कि वे जान-बूझकर इस तरह गुल गपाडा मचाते हैं—एक दूसरे का जताने के लिए कि वे जिंदा हैं, उनकी रगो का खून ठडा नहीं पड गया है।

मेरे लिए यह बिल्कुल स्पष्ट था कि अब उह खोलला बना रही है, भीतर और बाहर से उहे खत्म कर रही है। और मेरे विचार में हर चीज पर समा जानेवाली इस अब से उनका निष्पल सघप ही उनके क्रूर, बेमानी मनबहलावो का एकमात्र कारण था।

कभी-कभी प्योन वासोल्येविच से मैं इसका विक्र करता। वो ताने तिश्ने कसने और मुझे चिठाने में उसे भजा आता था, लेकिन किताबें पढने की ओर मेरा झुकाव उसे पसद था और भूले भटके, काफी गम्भीरता और सीख भरे आवाज में वह मुझसे बातें करता था। एक दिन मैंने उससे कहा

“ये सौदागर भी क्या जीवन बिताते हैं? मुझे उनका डरं जरा भी अच्छा नहीं लगता।”

दाढी की लट को उसने अपनी उगली में सपेडा और पूछने लगा

“मुझे क्या मालूम कि वे कसा जीवन बिताते हैं? क्या तू उनके घरों में जाता रहता है? यह तो बाजार है, मेरे लडके, और लोग बाजार में जीवन नहीं बिताते। बाजार में तो वे व्यापार करते हैं, या घर पहुचने की जल्दी में तेजी से उग उठाते हुए गुजर जाते हैं। बाजार में लोग कपडो से लडे फडे रहते हैं और कुछ पता नहीं चलता कि भीतर से वे कैसे हैं। केवल घर ही एक ऐसी जगह है जहा, अपनी चार दीवारों के भीतर, आदमी उमुक्त जीवन बिताता है। अब तू ही बता क्या तूने यह जीवन देखा है?”

“लेकिन उनके ख्यालो में तो इससे अतर नहीं पडता। घर हो चाहे बाहर, वे एक से रहते हैं।”

“यह कोई कैसे बता सकता है कि हमारा पडोसी किस समय क्या सोचता है?” बूडे ने कडी नजर से मुझे धूरकर देखा और वज्रनदार आवाज में बोला। “विचार जूओ की भाति है, उहे गिना नहीं जा सकता—

बड़े बूढ़ो ने यो ही यह नहीं कहा है। हो सकता है जब आदमी घर लौटकर देव प्रतिमा के सामने घुटने टेककर मिनमिनाता या आसू बहाते हुए प्रार्थना करता हो मुझे माफ करना, महाप्रभु, आज तुम्हारे पवित्र दिन मैंने पाप किया है। संभव है कि उस के लिए घर मठ के समान हो। प्रभु के सिवा अर्य किसी चीज से उसका लगाव नहीं। समझा! हर मकड़ी को भगवान ने एक कोना दिया है—खूब जाल बुनो, लेकिन अपना वजन पहचानते हुए, ऐसा न हो कि वह तुम्हारा बोझ न सभाल सके ”

जब वह गम्भीरता से बातें करता तो उसकी आवाज में एक अजीब गहराई पदा हो जाती, मानो वह किसी महत्वपूर्ण रहस्य का उद्घाटन कर रहा हो।

“अब तूने इतनी छोटी उम्र में ही बाल की खाल निकालना शुरू कर दिया है। दिमाग के सहारे नहीं, इस उम्र में तुझे आँखों के सहारे जीना चाहिए। दूसरे शब्दों में यह कि देख और दिमाग में बटोर रख और जवान पर लगाम कसे रख। दिमाग व्यापार के लिए है, विश्वास—आत्मा के लिए। किताबें पढ़ना अच्छी बात है, लेकिन हर चीज की अपनी एक सीमा होती है। कुछ लोग इतना पढ़ते हैं कि न उनका अपना कोई दिमाग रहता है, न भगवान रहता है। वे इन दोनों से हाथ धो बैठते हैं ”

मुझे वह अमर लगता था, यह कल्पना करना कठिन था कि वह कभी अधिक बूढ़ा हो सकता है या बदल सकता है। वह बड़े चाव से किस्से सुनाता—सीदागरो के, डाकुओ के, नामी जालसाओ के, जो बाद में मशहूर बन जाते थे। अपने नाना से मैं इस तरह के बहुत से किस्से सुन चुका था। केवल कहने के ढंग में फर्क था। नाना का ढंग उससे कहीं अच्छा था। परंतु कहानी की मूल भावना वही थी भगवान और मानव को रॉदि बिना धन नहीं बटोरा जा सकता। प्योत्र वासोत्पेविच के हृदय में लोगों के लिए कोई दया नहीं थी, लेकिन भगवान का बड़े चाव और लगन से सिद्ध करता था, उसकी पलके झुक जातीं और हृदय से उससे निकलने लगतीं।

“देखो न, लोग किस तरह भगवान को धोखा देते नहीं अघाते। लेकिन प्रभु ईसा यह सब देखता है और उनके लिए आसू बहाता है,

'आह मेरे बच्चो, नासमझ बच्चो, तुम्हें नहीं मालूम कि अपने लिए रिश्वत नरक की तुम तयारी कर रहे हो!'"

एक दिन साहस बटोर मैंने उससे पूछा

"आप भी तो देहातियो की धोखा देते हैं?"

उसने जरा भी बुरा न माना। बोला

"ऊह, उससे उन्हें क्यादा नुकसान नहीं पहुंचता। मुश्किल से बार या पांच ही रबल तो मैं अपने लिए उनसे झटकता हूँ। बस इतना ही, और कुछ नहीं।"

जब वह मुझे कुछ पढ़ते हुए देखता तो पुस्तक मेरे हाथ से ले लेता, उसमें लिखी बातों के बारे में पूछता-साछता और सन्देश तथा अक्षरज में भरकर कारिदे की ओर मुड़ते हुए रहता

"देखा, यह नहा बदर किताबों में लिखी बातें समझ लेता है!"

और नपे-तुले, कभी न भूलनेवाले अक्षरज में वह मुझे सीख देता

"मेरे शब्द ध्यान से सुनना—वक्त पर तुम्हारे काम आएंगे। किरील नाम के दो आदमी हुए हैं, दोनों ही पादरी, एक अलेक्सांद्रिया का रहने वाला, और दूसरा येरुशलम का। पहले ने ईश्वर द्रोही नेस्तर को धाँधे हाथों लिया जो लोगों में इस तरह की गदी बातों का प्रचार करता था कि मरियम हमारी-तुम्हारी भाति इसी दुनिया की एक स्त्री थी जिसने भगवान को नहीं बल्कि हमारे-तुम्हारे जैसे ही ईसा नाम के एक आदमी को जन्म दिया था। यह आदमी दुनिया का तारनहार बना। इसका मतलब यह कि मरियम को भगवान की माँ न कहकर ईसा की माँ कहना चाहिए। समझा, यही वह धीज है जिसे लोग धम द्रोह कहते हैं। इसी प्रकार येरुशलम के किरील ने धम द्रोही अरिया की धन्जिया उड़ाई"

ईसाई धम के इतिहास की उसे अबतक जानकारी थी। इसका मुझपर गहरा असर पड़ता। हल्के और मुलायम हाथ से वह अपनी दाढ़ी सहलाता और शैली बघारता

"इन विषयों का मैं जनरल हूँ, बड़े मोर्चे मैंने सर किये हैं। पचाशती के दिनों में मैं मास्को गया था और नीकोन के किताबचाटू चले-आटियों, पादरियों और दूसरे सपोलियो के साथ शास्त्राय किया। एक प्रोफेसर तक से मैंने वाद विवाद किया। एक पादरी को मैंने अपनी जवान के ऐसे कोड़े लगाये कि उसकी नाक से खून तक बहने लगा।"

उसके गाल लाली से दमकने लगे और आँखों में चमक दौड़ गई। विरोधी की नकसोर क्या फूटी मानो उसे बहुत बड़ी रियासत मिल गई, उसके गौरव के मुनहरे ताज में मानो किसी ने चमकता हुमा लाल जड दिया। बड़े ही उल्लास और विजय के गव के साथ उसने इसके बारे में बताया

“बहुत ही खूबसूरत और भारी भरकम पादरी था वह। मच पर वह लडा था और उसकी नाक खून के आसू रो रही थी—टपाटप टपाटप—खून नीचे टपक रहा था। और मजा यह कि उसे पता तक नहीं था कि उसकी नाक क्या गुल खिला रही है। बाप रे, वह शेर की भाँति शपदता था और उसकी आवाज ऐसे गूजती थी जैसे कोई बहुत बडा घटा बज रहा हो। लेकिन मैं भी मोर्चे पर उडा था और उसकी आत्मा को लजर की भाँति अपने शब्दों से छलनी कर रहा था। शांति से, खूब निशाना साधकर, ठीक उसकी पसलियों की सीध में मैं अपने शब्दों की मार कर रहा था ईश्वर प्रोही कुत्सित आतों की खिचड़ी पकाते-पकाते वह तडूर की भाँति गरमा गया था ओह, क्या दिन थे वे भी!”

हमारी दुकान पर अक्सर दूसरे पारखी भी आते थे पाखोमी, जिसकी भारी तोड और केवल एक आँख थी। वह बोलता क्या था, मानो खरटि लेता था। हमेशा वही एक पुराना चीकट कोट पहने रहता, नाटे कद का, चूहे की भाँति चिकना घुपडा, भीडे स्वभाव का और फुर्तीला बूडा सुकियान आता था। वह अपने साथ एक और आवमी को लाता जो देखने में कोचवान सा मालूम होता—भारी भरकम, तोबडा चडा हुमा, काली बाड़ी, निश्चल आँखें और लोया-लोया सा सूना चेहरा जो खूबसूरत होते हुए भी अच्छा नहीं मालूम होता था।

वे लगभग कभी खाली हाथ न आते। हमेशा कोई न कोई चीज बेचने के लिए लाते पुरानी पुस्तकें, देव प्रतिमाएँ, धूपदान, पूजा के बरतन। कभी-कभी, चीजें बेचनेवाले—बोल्गा प्रदेश के किसी बूढ़े या बुढ़िया को भी अपने साथ ले आते। जब सौदा पट जाता तो सब दुकान में इस तरह बठ जाते जैसे मुँडेर पर कौवे। चाय पीते और खाने की चीजों पर हाथ साफ करते। आतों का सिलसिला चलता और मोकोनपथी धर्माधिकारियों के जुल्मों का चिह्न करते। एक जगह खानातलाशी ली गयी और पुराने पमपय छीने गये, दूसरी जगह पुत्सि ने प्रायनाथर को बंद कर दिया,

उसके मालिका को पकड़कर अदालत में पेश किया गया, और धारा १०३ का उल्लंघन करने के अपराध में उनपर मुकदमा चलाया। धारा १०३ पर वे खूब बातें करते। लेकिन वे इसका उल्लेख निस्संग भाव से करते, मानो यह कोई अनिवाय और उनके यग से बाहर की चीज़ हो, ठीक वैसे ही जैसे जाड़ो में पाला।

पुलिस, खानातलाशी, जेल, अदालत, साइबेरिया जैसे शब्दों का वे धार-धार प्रयोग करते, और ये शब्द दहकते अंगारों की तरह मेरे हृदय से आकर टकराते। इन बड़े लोगों के प्रति जो अपने विश्वास की वजह से इतनी मुसीबतें झेल रहे थे, मेरे हृदय में सहानुभूति और गुन्र कामनाओं की लौ जाग उठती। नैतिक साहस की मैं कद्र करता और उन लोगों के आगे मेरा सिर झुक जाता जो अपने लक्ष्य की प्रति में डिगना नहीं जानते। यह मैंने पुस्तकों से सीखा था।

इन जीवन-गुरुओं की व्यक्तिगत चोटियाँ मेरी आँखों से झोमल हो जातीं, मुझे केवल उस ज्ञान्त दड़ता का ध्यान रहता जिसके पीछे—मेरी समझ में—अपने सत्य में इन गुरुओं का अडिग विश्वास और सत्य के लिए सभी मुसीबतें झेलने की उनकी तत्परता छिपी थी।

आगे चलकर बुद्धिजीवियों तथा आम लोगों के बीच पुराने विश्वास के ऐसे ही या इनसे मिलते-जुलते अनेक रसकों से मिलने के बाद, मेरे लिए साफ हो गया कि जिसे मैं उनकी दृढ़ता समझे था, वह वास्तव में एक तरह की निष्प्रियता थी। यह उन लोगों की निष्क्रियता थी जो एक नुकते पर पहुँचकर रुक गये थे। जिहे उस नुकते से आगे और कुछ नहीं बिलाई देता था और जिनमें असदिग्ध रूप में उससे आगे बढ़ने की कोई इच्छा भी नहीं थी। वे घिसे पिटे और जड़ शब्दों तथा जजर भाषताओं के जाल में उलझकर रह गए थे। उनकी इच्छाशक्ति इतनी निर्जीव और अक्षम हो गई थी कि भविष्य की ओर आगे बढ़ना उनके लिए सम्भव नहीं रहा था, इस हद तक कि अगर बाहर से कोई आघात उन्हें उनकी जगह पर से हटाता है तो वे यत्रवत नीचे लुढ़कना शुरू कर देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे पहाड़ी ढाल पर से पत्थर लुढ़कता है। अतीत के सस्मरणों की जीवनहीन शक्ति और यत्रणा तथा दमन सहने का विकृत प्रेम मत सत्याँ की कन्नगाहा में उन्हें उनकी चौबियों पर बनाये रखता था। यत्रणा सहने का अवसर हाथ से निकलते ही वे खोखले हो जाते और उसी तरह

घायब हो जाते जैसे कि तेज हवा बादलों के टुकड़ों को उड़ा ले जाती है।

जिस विश्वास के लिए इतनी तत्परता और आत्मगौरव के साथ वे अपने को बलिदान करते थे, उसकी वृद्धता से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन यह वृद्धता उन पुराने कपड़ों को याद दिलाती थी जिनपर धूल और गद की इतनी मोटी तह जम गई है कि समय का विनाशकारी छसर उनपर नहीं पड़ता। उनके विचार और भावनाएं अधविश्वासों और जड़ सूत्रों के चौखटे में कसे रहने की आदी हो गई थीं, भले ही इन चौखटों ने उन्हें विकृत और पगु बना दिया हो, लेकिन इससे उन्हें जरा भी परेशानी नहीं होती थी।

आवतबश विश्वास करना—यह हमारे जीवन की एक अत्यंत कुत्सित और दुःखद घटना है। इस विश्वास में दमघोट चौखटे के भीतर, मानो पत्थर की दीवार की छाया में कोई नयी चीज नहीं पनप पाती—पनपती भी है तो धीरे धीरे, विकृत और लुजपुज रूप में। इस अयकारमय विश्वास में प्रेम की किरणें बहुत कम चमकती हैं और घणा की—बदले की भावना, कुत्सा और ईर्ष्या की लपटें उठती हैं। इस विश्वास की अग्नि चलने सड़ने की, फास्फोरस की दमक है।

लेकिन इस सत्य तक पहुंचने के लिए मुझे वधों तक पापड़ बेलने और मुसीबतें झेलनी पड़ीं, अपनी आत्मा में बहुत सी तोड़फोड़ करनी पड़ी, स्मृति-पटल से बहुत कुछ मिटाना पड़ा। इसमें कोई गंव नहीं कि बोझिल, बेरस और गर जिम्मेदारी से भरे जीवन के बीच जो मेरे चारों ओर फला था, जीवन के इन गुरुओं को जब पहली बार मैंने देखा तो मुझे लगा कि वे अदभुत नतिक साहस के धनी, बल्कि कहना चाहिए कि इस धरती की जान हैं। सभी, किसी न किसी समय, अदालत में घसीटे जा चुके थे, जेल की चक्की पीस चुके थे, नगरो से बाहर लदेड़े और अय अपराधियों के साथ जलाघतनी का जानलेवा रास्ता नाप चुके थे। सभी, चौबीसों घंटे, सासत से जीवन बिताते, लुक छिपकर रह रहे थे।

लेकिन, यह सब होने पर भी, मैंने देखा कि एक ओर जहां वे नोकोनिया के अत्याचारा और इस बात का रोना रोते कि वे उनकी आत्मा के पीछे पड़े रहते हैं, वहां दूसरी ओर ये छुद बूढ़े लोग भी बड़ी तत्परता और उछाह से एक-दूसरे पर झपटते रहते थे।

पाना पाखोमी, जब कभी यह तरंग में होता, बड़े घाव से अपनी भवभूत याददास्त के करतब दिखाता। कुछ धम-धम तो उसकी उबान पर चढ़े थे और यह उन्हें उसी तरह पढ़ता था जिस तरह ग्रहवी पुजारी तालमुद पढ़ते हैं। यह धम खालता, भाँल बंद कर किसी भी शब्द पर अपनी उगली टिका देता और जो भी शब्द पकड़ में आता, उसके बाव से मुलायम और गुनगुनी आवाज में यह उबानी सुनाना गूँट कर देता। उसकी नदर हमेशा फश की ओर झुकी होती और उसकी झपेली झाल बड़ी तत्परता से झगल-झगल सपकती सपकती, मानो वह किसी छोई हुई बहुमूल्य चीज की ढोह में हो। अपना करतब दिखाने के लिए वह ब्यादातर प्रिंस मिशालकी की पुस्तक "रस का अंगूर" से काम लेता। 'भारी धीरज और साहस से श्रोतप्रोत धीर और निडर शहीदों की कुरबानियाँ' उसे सब से अच्छी तरह याद थीं। प्योत्र वासील्येविच उसकी प्रसतिया निकासने के लिए हमेशा पजे पनाए रहता।

"घलत! यह घटना सन्त डेनिस के साथ घटी थी, सन्त क्रिप्रियान के साथ नहीं।"

"डेनिस? डेनिस नहीं, सही नाम है डिमोनिसी, समझे?"

"नाम को लेकर मेरे साथ बपाइवाजी न करो!"

"तो तुम भी मुझे सबक पढ़ाने की कोशिश न करो!"

लेकिन यह तो दुरुआत ही थी। कुछ क्षण बीतते न बीतते उनके चेहरे गुस्से से तमतमा जाते, वे एक-दूसरे को नीचे गिरानेवाली नदरों से साकते और धुने हुए शब्दों के गोले दागने लगते

"गावबुम, बेशम, अपनी इस लोद को तो देख क्या मटके सी फूलती जा रही है!"

पाखोमी जमा-बाकी का हिसाब लगानेवाले मुनीम की तरह जवाब देता

"बकरे की डुम, फिसड़ी और नीच, घाघरे के पिस्तू!"

आस्तीनों के भीतर अपने हाथों को खोसे कारिदा उन्हें देखता, उसके चेहरे पर कुत्सापूर्ण मुसकराहट नाचने लगती और प्राचीन धम के इन रक्षकों को वह इस तरह उकसाता मानो वे स्कूली बच्चे हो

"ऐसे, ऐसे! और जोर से, बाह, शाबाश!"

एक दिन बड़े सचमुच में सड पड़े। प्योत्र वासील्येविच ने पाखोमी

के मुह पर ऐसा थप्पड रसीद किया कि वह मदान छोडकर भाग निकला।
 प्योत्र वासील्येविच ने यके हुए भाव से अपने माये का पसीना पोछा और
 भागते हुए पाखोमी को लक्ष्य कर चिल्लाया

“सुन ले, यह पाप तेरे सिर पर है। तूने ही मेरे इस हाथ को आज
 यह पाप करने के लिए उत्तेजित किया। यू है तुझपर!”

वह अपने साथियो पर विश्वास की कमी और ‘नकारवाद’ के चक्कर
 मे फसने का आरोप लगाकर छास तौर से खुश होता

“आखिर तुमने भी उसी ईश्वर द्रोही कौवे अलेक्साद्र की बोली बोलना
 शुरू कर दिया न।”

लेकिन जब उससे पूछा जाता कि जिस ‘नकारवाद’ से वह इतना
 विद्वता और भय खाता है, वह आखिर है क्या बला, तो उससे कोई साफ
 जवाब बैसे न बनता

“नकारवाद सबसे सीखा और घातक धम द्रोह है जो खुदा को जहन्नुम
 रसीद कर उसकी जगह बुद्धि को बठाता है। मिसाल के लिए करवाको
 को लो। वे केवल बाइबल को मानते हैं। और यह बाइबल सारातोय के
 जमनो से—लूयर से—उनके हाथ लगी। और लूयर के बारे मे कहा गया
 है, ‘लुटेरा-लूयर, रगीला लूयर, शतान लूयर!’ जमनो के कबीले का
 मतलब है खरहा दिमागो या फिर इद्रनडा। यह सारी अलाय-बलाय पश्चिम
 से, वहा के धम द्रोहियो के पास से आई है।”

अपना विद्वत पाव वह जमीन पर पटकता और ठडी बज्रनवार धायाद
 मे कहता

“असल मे ये लोग हैं जिनका इन नये धम वालों को हुलिया तग करना
 चाहिए, बीन-धीनकर जिहें पकडना और टिकटियों पर जिहें भूना चाहिए।
 असल मे दमन इनका होना चाहिए, न कि हमारा। हम, वा इमी हैं—
 पुत बर पुत से दुनिया बनी है तब से हमारा विश्वास और दीन-ईमान
 एकदम पूर्वा, सच्चे मानी मे रसी है। लेकिन य साग और इनको विद्वत
 आवादक्षाली—यह सब पश्चिम की देन है, एष्टम विज्ञान। जपना और
 फ्रासीसियों से नुवसान के सिवा और क्या पन्ने दरेंग? जग पीछे मुटकर
 देखो, १८१२ मे ”

जोग मे उसे इस बात का भी ध्यान न गला कि कच्चा उम्र के इ
 सडके से यह बातें कर रहा है। अन्त मद्रकू गाय मे मग प्ते रसे

झटका देकर कभी वह मुझे अपनी ओर खींचता, कभी दूर धकेल देता। उसकी आवाज एक अजीब, विलुप्त युवको जैसे उत्साह से भरी होती थी। यह कहता

“आदमी का विमात्र हवाई जगल में खूबवार भेड़ियों की भांति मडराना है। शतान के हाया में उसकी नखेल होती है और उसकी आत्मा, परमात्मा का उच्चतम धरदान, नष्ट हो जाती है। शतान के इन खेलों क निमात्र ने क्या गढा? नकारवाद के ये कठमुल्ता सीख देते थे शतान भी खग का येटा और प्रभु ईसा का घडा भाई है! देला, कहां तक पहुंचे? और वे लोगो को यह पाठ भी पढ़ाते थे अधिकारियों का कहना न मानो, काम धंधे न करो, अपने यौषी-यच्चो को घता बतानो। हर व्यवस्था के वे खिलाफ हैं। बरा, आदमी को छुट्टा छोड दो, ताकि वह शतान के इशारे पर नाचे। अब देखो यह अलेक्सांडर का धमका है, ओह, कौड ”

कभी-कभी बीच में ही, कोई काम करने के लिए कारिदा मुझे बला लेता। बालकनी में वह अब अकेला ही रह जाता, लेकिन उसका बोसना फिर भी बढ न होता, घूडे के मुह से निकले शब्द शून्य में बिखरते रहते

“ओ, पर-कटी आत्माओ, ओ अंधे पिल्लो, न जाने कब तुमसे छुटकारा मिलेगा!”

फिर, पीछे की ओर अपने सिर को फेंकता और हथेलियों को अपने घुटनों पर टिकाकर देर तक चुप रहता, जाडा के धूसर आकाश पर नजर गडाए वह एकटक देखता रहता।

मेरे साथ उसका बरताव धीरे धीरे अधिक नरम होता गया और वह मेरा काफी ध्यान रखने लगा। जब वह मुझे कोई पुस्तक पढते देखता तो मेरे कंधे को सपसपाते हुए कहता

“यह ठीक है, मेरे लडके, पढ और खूब पढ़। बक्त पर काम आएगा। भगवान ने तुझे अच्छा दिमाग दिया है। अफसोस की बात है कि तू बडो का कहना नहीं मानता, और हर किसी के सामने अड जाता है। जानता है, यह शतारी तुझे कहां ले जाएगी? जेल में, मेरे लडके, जेल में। किताबें पढ़, खूब पढ़, लेकिन यह न भूल कि किताब आखिर किताब ही है। ऐसा न हो कि तेरा अपना विमाग ठप हो जाए। जानता है, हिलस्ती पथ का एक मुस दनीलो था, वह इस विचार पर पहुंच गया कि किताबो की कोई जरूरत नहीं, वे नयी हो या पुरानी, किताबो को बोरे में भरकर उसने

उन्हें नदी में डुबा दिया। यह भी गलत है। फिर शतान का गुर्गा वह अलेक्साद्र है जो लोगों को उलटा पाठ पढाता है और उनके विमापों को तराब करता है ”

अलेक्साद्र का वह अक्सर जिक्र करता और बात-बात में उसका नाम लेता। एक दिन जब वह दुकान में आया तो उसका चेहरा बेहद परेशान था। तेज स्वर में फारिदे से बोला

“कुछ सुना तूने, अलेक्साद्र यहा, हमारे नगर में ही मौजूद है—कल ही आया है। सुबह से घूम रहा हूँ, कोई जगह मँने नहीं छोडी, लेकिन कुछ पता नहीं चला जाने कहा चोर की तरह छिपा है। सीधा, कुछ देर तेरी दुकान पर चलकर बठू। शायद यहीं टकरा जाए ”

“रोज ही सँकड़ो ऐरे-नरे आते रहते ह। मेरा उनसे क्या वास्ता ! ” फारिदे ने कुदकर कहा।

बूढ़े ने सिर हिलाया। बोला

“ठीक है—तेरे लिए सब लोग या खरीदार हैं या बेचनेवाले और कोई हैं ही नहीं। चल एक गिलास चाय तो पिला दे ”

खोलते पानी से भरी पीतल की एक बडी सी केतली लेकर जब मैं लौटा तो देखा कि दुकान में कुछ और मेहमान भी मौजूद हैं। इनमें बूढ़ा लुकियान भी था। छुशी के मारे उसकी बत्तीसी तिली थी। दरवाजे के पीछे अंधेरे कोने में एक अजनबी बठा था। वह नमवे के ऊचे जूते, हरे पटके से कसा गरम कोट और सिर पर टोपी पहने था जिसे नीचे खींचकर उसने अपनी आंखा की ढक लिया था। उसका चेहरा मुझे अच्छा नहीं लगा, हालांकि वह काफी शान्त और विनम्र जीव मालूम होता था। उसका मुट बुरी तरह लटका हुआ था, दुकान के उस फारिदे की भांति जिसे अभी अभी नौकरी से निकाल दिया गया हो और इस कारण जसे उसके होश हवास गुम हो गये हो।

उसकी ओर नजर तक डालने की चिन्ता न करते हुए प्योत्र वातील्ये-विच कुछ कह रहा था। उसकी आवाज में विरोधी की वित्त कर देनेवाली सलती, यजन और जोर था। अजनबी का दाहिना हाथ एँटता हुआ अपनी टोपी से खेल करने में जुटा था। वह बाह उठाता, इस तरह मानो सलीय का चिह्न बनाने जा रहा हो, और हल्का सा झटका देकर टोपी को पीछे की ओर खिसका देता। एक बार, दो बार, तीन बार, अन्त में टोपी

चाँद पर खिसक जाती और वह उसका छोर पकड़कर झटके से उसे खींचता और फिर अपनी आखों पर जमा लेता। उसकी इन ऐंठन की हरकतों का देखकर मुझे 'जेब मे मौत' वाले पागल इगोशा की याद हो आई।

"ये गद्दी मछलिया हमारी गदली नदी मे किलबिला रही हैं और दिन दिन दूनो गदगी उछाल रही हैं!" प्योत्र वासील्येविच कह रहा था।

अजनबी ने, जो किसी दुकान का कारिदा मालूम होता था, शांत और निश्चल आवाज मे पूछा

"यह सब क्या तुम मेरे बारे मे कह रहे थे?"

"तुम्हारे बारे मे ही सही "

अजनबी ने, उतने ही निश्चल आवाज और आत्मिकता से फिर पूछा

"और छुद अपने बारे मे तुम क्या कहते हो, बदे?"

"अपने बारे मे मैं भगवान के दरबार मे कहूँगा—वह मेरा निजी मामला है "

"ओह नहीं, बदे, अकेले तुम्हारा ही नहीं, वह मेरा मामला भी है," अजनबी ने जोरदार और गम्भीर आवाज मे कहा। "सचाई तो प्राण न घुटाता और अपने को जान झूझकर अथा न करना। भगवान और इंसान के सामने यह बडा पाप है!"

मुझे यह अच्छा लगा कि प्योत्र वासील्येविच को उसी 'बदा' कहकर सम्बोधित किया। उसकी शांत और गम्भीर आवाज मे भी मुझपर गहरा असर किया। वह उसी तरह बोल रहा था जैसे कि कोई अच्छा पादरी धम धम का पाठ करता है, "मबका स्वामी, इस दुनिया का तिरजनहार—" वह बोलता जाता था और कुर्सी पर आगे की ओर खिसकता जाता था, अपने हाथ को मुह के सामने लाकर हिलाते हुए बोला

"मेरी निदा मत करो, मैं तुमसे अधिक पापी नहीं ॥ "

प्योत्र वासील्येविच ने तिरस्कारपूर्वक कहा

"लगा समोवार खोलने!"

अजनबी ने उसके शब्दों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, और बोला

"केवल भगवान ही यह बता सकता है कि पवित्र आत्मा के स्रोतों को कौन अधिक गदा कर रहा है। हो सकता है कि यह पाप तुमन ही किया हो,—जिताबी—पागली लोगो मे, मैं जिताबी नहीं, पागली नहीं, मैं तो एक सीधा सादा जीव ॥ "

“जानता हूँ मैं तुम्हारी यह सादगी। बहुत सुन चुका हूँ!”

“यह तुम लोगो को भरमाते हो, सोधी बातों को तोड़ते मरोड़ते हो, बितायी, गिरगिट में क्या बहता हूँ, बताओ?”

“धम द्रोह!” प्योत्र यासीत्येविच ने कहा। भजनवी अपने हाथ की हथेली को आँगो के सामने लाकर इस तरह देख रहा था मानो उसपर लिपी तिलायट पढ़ रहा हो और व्यग्र भाव से बोलता जा रहा था

“तुमने लोगो को एक गदगी से निष्कालकर दूसरी गदगी में डाल दिया है और सोचते हो कि इससे उनका जीवन सुधर गया? लेकिन मैं कहता हूँ कि तुम धोखे में हो! मैं कहता हूँ खुदा के बबो, अपने को उमुक्त करो। खुदा के सामने न घर की कुछ हस्ती है, न धोबी धचचो और डोर डगरो की! अपने को मुक्त करो, उन सभी चीजों को छोड़ दो जो हिंसा और मार-काट की ओर ले जाती हैं—सोने चाबी और धन बौलत के सारे बंधना की तोड़ दो जो सबाप और गदगी का ही दूसरा नाम हैं। इस लबी धौडी धरती पर चाहे जितना भटको, कभी मुक्ति नहीं मिलेगी। मुक्ति तो केवल स्वग की घाटियों में मिलती है। किसी चीज पर मोह न करो। हर चीज से इनकार करो। मैं कहता हूँ, सभी नातों-बंधना से इनकार करो। इस दुनिया के जाल को नष्ट करो—जो खुदा के दुश्मनों की रचना है मेरा रास्ता सीधा है, मेरी आत्मा अडिग है, मैं इस अधी दुनिया को स्वीकार नहीं करता ”

“लेकिन रोटी, पानी और तन ढकने के लिए बपडा को स्वीकार करते हो? ये सब भी तो इसी दुनिया की चीजें हैं!” बूडे ने जहरीली आवाज में पूछा।

अलेक्साद्र पर इन शब्दों का भी कोई असर नहीं हुआ। वह और भी लगन से बोलता गया। उसकी आवाज धीमी थी, लेकिन मालूम ऐसा होता था जैसे पीतल की तुरही गूज रही हो

“बदे, तेरी असली निधि का स्रोत क्या है? तेरी निधि का स्रोत है खुदा, वही तेरी असली बौलत है। निष्कलक बनकर उसके सामने जा, अपनी आत्मा को इस दुनिया के बंधनों से मुक्त कर और खुदा देख लेगा—तू अकेला है और वह अकेला है। इसी तरह तुझे खुदा के पास जाना है, इसके सिवा उसके पास पहुँचने का और कोई रास्ता नहीं है। कहा है मुक्ति के लिए पिता और मा को छोड़, हर चीज का त्याग कर और

घांव पर रिसख जाती और यह उसका छोर पकड़कर झटके से उमे लौंवा और फिर अपनी आलों पर जमा लेता। उसकी इन छँठन की हरकतों को देखकर मुझे 'जैय म मौत' याने पागल इगोना की याद हो आई।

"ये गबी मछलियां हमारी गदलों की मे बिलबिला रही हैं और दिन दिन दूनी गदगी उछाल रही हैं!" प्योत्र वासील्येविच यह रहा था अजनबी ने, जो किसी दुकान का कारिवा मालूम होता था, गा और निश्चल आयात मे पूछा

"यह सब क्या तुम मेरे घारे मे यह रहे थे?"

"तुम्हारे घारे मे ही रही "

अजनबी ने, उतने ही निश्चल अबाव और आत्मिकता से फिर पूछा

"और खुद अपने घारे मे तुम क्या कहते हो, बदे?"

"अपने घारे मे मैं भगवान के दरवार मे बहूगा-वह मेरा नि मामला है "

"ओह नहीं, बदे, अकेले तुम्हारा ही नहीं, वह मेरा मामला है," अजनबी ने जोरदार और गम्भीर आवाज मे कहा। "सचाई से आ न चुराना और अपने को जान-बूझकर अधा न करना। भगवान और इसा के सामने यह बड़ा पाप है!"

मुझे यह अच्छा लगा कि प्योत्र वासील्येविच को उसने 'बदा' कहक सम्बोधित किया। उसकी शान्त और गम्भीर आवाज ने भी मुझपर गहरा असर किया। वह उसी तरह बोल रहा था जैसे कि कोई अच्छा पाप धम-धम का पाठ करता है, "सबका स्वामी, इस दुनिया का तिरजनहार-वह बोलता जाता था और कुर्सी पर आगे की ओर लिखता जाता था अपने हाथ को मुह के सामने साफ़ हिलाते हुए बोला

"मेरी निदा मत करो, मैं तुमसे अधिक पापी नहीं हूँ "

प्योत्र वासील्येविच ने तिरस्कारपूर्वक कहा

"लगा समोवार लौलने!"

अजनबी ने उसके शब्दों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, और बोला

"केवल भगवान ही यह बता सकता है कि पवित्र आत्मा के सोंट को कौन अधिक गदा कर रहा है। हो सकता है कि यह पाप तुमने ही किया हो, -कित्तबी-कागली लोगो ने, मैं कित्तबी नहीं, कागली नहीं मैं तो एक सीधा सादा जीव हूँ "

"जानता हूँ मैं तुम्हारी यह सादगी। बहुत सुन चुका हूँ।"

"यह तुम लोगो को भरमाते हो, सोयी बातों को लोडते मरोडते हो, बितायी, गिरगिट में क्या बहता हूँ, बताओ?"

"धम ड्रोह!" प्योत्र वासीत्येविच ने कहा। अजनबी अपने हाथ की हथेली को छाया के सामने लाकर इस तरह देख रहा था मानो उसपर लिखी तिल्लायट पड़ रहा हो और व्यग्र भाव से बोलता जा रहा था।

"तुमने लोगो को एक गदगी से निपालकर दूसरी गदगी में डाल दिया है और सोचते हो कि इससे उनका जीवन सुधर गया? लेकिन मैं कहता हूँ कि तुम धोखे में हो! मैं कहता हूँ खुदा के बंदों, अपने को उमुक्त करो। खुदा के सामने न धर की कुछ हस्ती है, न धीयी बच्चों और डोर डगरों की! अपने का मुक्त करो, उन सभी चीजों का छोड़ दो जो हिंसा और मार-काट की ओर ले जाती हैं—सोने चादी और धन बौलत के सारे बंधनों को तोड़ दो जो सड़ाप और गदगी का ही दूसरा नाम हैं। इस सभी चीजों पर चाहे जितना भदको, कभी मुक्ति नहीं मिलेगी। मुक्ति तो केवल स्वर्ग की घाटियाँ में मिलती है। किसी चीज का मोह न करो। हर चीज से इनकार करो। मैं कहता हूँ, सभी मालों-बंधनों से इनकार करो। इस दुनिया के जाल को नष्ट करो—जो खुदा के दुश्मनों की रचना है। मेरा रास्ता सीधा है, मेरी आत्मा अडिग है, मैं इस अभी दुनिया को स्वीकार नहीं करता।"

"लेकिन रोटी, पानी और तन ढकने के लिए कपडा को स्वीकार करते हो? ये सब भी तो इसी दुनिया की चीजें हैं।" बूढ़े ने जहरीली आवाज में पूछा।

अलेक्सांद्र पर इन शब्दों का भी कोई असर नहीं हुआ। वह और भी लगन से बोलता गया। उसकी आवाज धीमी थी, लेकिन मालूम ऐसा होता था जैसे पीतल की तुरही गूज रही हो।

"बंदे, तेरी असली निधि का खेत क्या है? तेरी निधि का श्रोत है खुदा, वही तेरी असली बौलत है। निष्कलक बनकर उसके सामने जा, अपनी आत्मा को इस दुनिया के बंधनों से मुक्त कर और खुदा देख लेगा—तू अकेला है और वह अकेला है। इसी तरह तुझे खुदा के पास जाना है, इसके सिवा उसके पास पहुँचने का और कोई रास्ता नहीं है। कहा है मुक्ति के लिए पिता और मा को छोड़, हर चीज का त्याग कर और

उस घ्राण को निकाल डाल जो हृदय को मोहक चीन्हा से उत्प्रेरित है।
 खुदा के लिए इस नश्यर शरीर का नाग और अनश्यर आत्मा का वरण
 कर, जिससे तेरी आत्मा की जोत कभी भद नहीं पड़ेगी—”

प्योत्र यातीत्येविच से नहीं रहा गया। उठते हुए मुझलाकर बोला,
 “छि कुत्ते की कुम! मैं तो समझा था कि पिछले सात के मुकाबले अब
 तुम कुछ ज्यादा समझदार हो गए होंगे, लेकिन लगता है कि तुम्हारा रीत
 दिन दिन बढ़ता ही जा रहा है ”

बूढ़ा उगमग करता हुआ से घाटर बालकनी में निरक्त गया। यह
 देल अलेक्सान्द्र चीन्हा। तेजी से और कुछ अचरज में भरकर पूछा

“अरे, क्या जा रहे हो? भला यह कैसे?”

शराफत के पुतले लुकियान ने घ्राण के इंगारे से लेप चढ़ाते हुए कहा

“कोई बात नहीं कोई बात नहीं ”

तब अलेक्सान्द्र ने उसे भी आड़े हाथो लिया

“और तुम भी हो कि अयहीन गद्द बिलेरते जा रहे हो—लेकिन
 इससे क्या फायदा? क्या फर्क पड़ता है? ”

लुकियान ने मुसकराकर उसकी ओर देखा और खुब भी बालकनी
 में घला गया। अजनबी ने अब कारिदे की ओर रुख किया और विश्वास
 भरी आवाज में बोला

“देखा, मेरी आत्मा की शक्ति के सामने न टिक सके। घुमा उती
 समय तक मडराता है जब तक लपटें नहीं उठतीं! ”

कारिदे ने पलकों के नीचे से नजर उठाकर देखा, और हल्ले स्वर
 में बोला

“मेरे लिए सब बराबर है।”

अलेक्सान्द्र इन शब्दों को सुनकर मानो शॉप गया। अपनी टोपी को
 आखो पर खींचते हुए बुदबुदाया

“यह क्या, बराबर कैसे है? सब बराबर नहीं ही सकता ”

कुछ क्षण तक वह सिर लटकाए चुपचाप बठा रहा। इसके बाद बूढ़ो
 ने उसे आवाज दी और तीनों राम-सलाम कहे बिना चले गए।

अधरे में जिस तरह आग धषकती है, ठीक वैसे ही यह अजनबी मेरी
 आखो के सामने प्रकट हुआ, और मुझे लगा कि इस दुनिया से उसके
 इनकार में कोई सत्य जरूर है।

रात को मौका पाकर भारी उस्ताह के साथ इवान चारिओनिच से मैंने उसका जिक्र किया। वह एक बहुत ही शांत और भला आदमी था और हमारी बकशाप का बड़ा उस्ताद था। मेरी बात सुनने के बाद बोला

“वह भगोडा होगा,—यह भी एक पथ है जिसे माननेवाले किसी चीज को स्वीकार नहीं करते।”

“वे कसे रहते हैं?”

“वे किसी एक जगह नहीं टिकते, सदा घूमते रहते हैं। इसीलिए उनका नाम भी भगोडे पड़ गया। उनका मत है कि यह धरती और इसकी हर चीज उनके लिए परायी है। पुलिस उन्हें नुकसानदेह समझती है, और उनके पीछे पड़ी रहती है।”

अपने जीवन में काफी कटुता मैंने देखी थी, फिर भी यह बात मेरे हृदय में नहीं जमी कि कोई जीवन की हर चीज को ठुकरा कसे सकता है। उस समय अपने चारों ओर के जीवन में मुझे अचड़ी और विलचस्प चीजें दिखाई देती थीं। नतीजा इसका यह कि कुछ दिन बीतते न बीतते अलेक्सांद्र का चित्र धुपला पड़कर मेरी स्मृति से गायब हो गया।

लेकिन, कभी-कभी, घुरे क्षणों में उसकी याद ताजा हो जाती और मुझे लगता जैसे खेतों के बीच से मटमले पथ को पार करता वह जंगल की ओर बढ़ा जा रहा हो। अम के बाघ धब्बों से अछूता उसका सफेद और साफ-सुथरा हाथ एँठता हुआ टोपी को धकेल रहा है और वह बुदबुदा रहा है

“मेरा पथ सीधा और सही है और हर चीज से इनकार करने तथा हर बंधन को तोड़ने का मैं आह्वान करता हूँ”

और उसके साथ साथ पिता का चित्र भी मेरी आँखों के सामने मूत हो उठता,—ठीक वसा ही जसा कि वह नानी को सपनों में दिखाई देता था अखरोट की लकड़ी हाथ में लिए, और एक चिस्तीवार कुत्ता, जीभ बाहर निकाले, उसके कदमों के साथ लपकता क्षपकता हुआ

देव प्रतिमाओं की बकशाप लकड़ी और ईंट की एक पक्की इमारत के दो कमरों में थी। एक कमरे में तीन खिड़कियाँ सहन की तरफ खुलती थीं और दो बगीचे की तरफ, दूसरे कमरे में एक खिड़की का रख बगीचे

उस आख को निकाल डाल जो हृदय को मोहक चीखों से उलझाती है।
 खुदा के लिए इस नश्वर शरीर का नाश और अनश्वर आत्मा का बरप
 कर, जिससे तेरी आत्मा की जोत कभी मद नहीं पड़ेगी ”

प्योत्र वासिल्येविच से नहीं रहा गया। उठते हुए झुझलाकर बोला,
 “छि कुत्ते को डुम! मैं तो समझता था कि पिछले साल के मुकाबले अब
 तुम कुछ ज्यादा समझदार हो गए होगे, लेकिन लगता है कि तुम्हारा राफ
 बिन बिन बढ़ता ही जा रहा है ”

बड़ा उगमग करता झुकान से बाहर बातकनी में निकल गया। यह
 बेल अलेक्सांद्र चौंका। तेजी से और कुछ अचरज में भरकर पूछा

“अरे, क्या जा रहे हो? भला यह कैसे?”

शराफत के पुतले लुकियान ने आख के इशारे से लेप चढाते हुए कहा

“कोई बात नहीं कोई बात नहीं ”

तब अलेक्सांद्र ने उसे भी आड़े हाथों लिया

“और तुम भी हो कि अर्थहीन शब्द बिखेरते जा रहे हो—लेकिन
 इससे क्या फायदा? क्या फक पडता है? ”

लुकियान ने मुसकराकर उसकी ओर देखा और खुद भी बातकनी
 में चला गया। अजनबी ने अब कारिदे की ओर हल किया और विस्वास
 भरी आवाज में बोला

“देखा, मेरी आत्मा की शक्ति के सामने न टिक सके। धुआ उठी
 समय तक भडराता है जब तक लपटें नहीं उठतीं! ”

कारिदे ने पलकी के मीचे से मखर उठाकर देखा, और हले स्वर
 में बोला

“मेरे लिए सब बराबर है।”

अलेक्सांद्र इन शब्दों को सुनकर भानो झेंप गया। अपनी टोपी का
 आखो पर खींचते हुए मुदबुदाया

“यह क्या, बराबर कैसे है? सब बराबर नहीं हो सकता ”

कुछ क्षण तक वह सिर लटकाए चुपचाप बठा रहा। इसके बाद बूझों
 ने उसे आवाज दी और तीनों राम-सलाम कहे बिना चले गए।

अधरे में जिस तरह आग घबकती है, ठीक वैसे ही यह अजनबी मेरी
 आखा के सामने प्रकट हुआ, और मुझे लगा कि इस दुनिया से उत्तर
 इनकार में कोई सत्य जरूर है।

रात को मौका पाकर भारी उत्साह के साथ इवान सारिमोनोविच से मैंने उसका जिक्र किया। वह एक बहुत ही शान्त और भला आदमी था और हमारी वकशाप का बड़ा उस्ताद था। मेरी बात सुनने के बाद बोला "वह भगोडा होगा, - यह भी एक पय है जिसे माननेवाले किसी चीज को स्वीकार नहीं करते।"

"वे कैसे रहते हैं?"

"वे किसी एक जगह नहीं टिकते, सदा घूमते रहते हैं। इसीलिए उनका नाम भी भगोडे पड गया। उनका मत है कि यह धरती और इसकी हर चीज उनके लिए परायी है। पुलिस उन्हें नुकसानदेह समझती है, और उनके पीछे पडी रहती है "

अपने जीवन मे काफी कटुता मैंने देखी थी, फिर भी यह बात मेरे हृदय मे नहीं जमी कि कोई जीवन की हर चीज को ठुकरा सके सकता है। उस समय अपने चारो ओर के जीवन मे मुझे अच्छी और दिलचस्प चीजें बिल्लाई देती थीं। नतीजा इसका यह कि कुछ दिन बीतते न बीतते अलेक्सांद्र का चित्र धुधला पडकर मेरी स्मृति से गायब हो गया।

लेकिन, कभी-कभी, घुरे क्षणो मे उसकी याद ताजा हो जाती और मुझे लगता जैसे खेतो के बीच से मटमले पय को पार करता वह जगल की ओर बढ़ा जा रहा हो। अम के दाग धब्बो से अछूता उसका सफेद और साफ-सुथरा हाथ एँठता हुआ टोपी को धकेल रहा है और वह बुदबुदा रहा है

"मेरा पय सीधा और सही है और हर चीज से इनकार करने तथा हर धयन को तोडने का मैं आह्वान करता हूँ "

और उसके साथ साथ पिता का चित्र भी मेरी आँखो के सामने मूत हो उठता, - ठीक वसा ही जसा कि यह नानी को सपनो मे बिल्लाई देता था अखरोट की लकडी हाथ मे लिए, और एक बिसीदार कुत्ता, जीभ बाहर निकाले, उसके कदमो के साथ लपकता झपकता हुआ

देव प्रतिमाओ की वकशाप लकडी और ईंट की एक पक्की इमारत के दो कमरो मे थी। एक कमरे मे तीन खिडकिया सहन की तरफ खुलती थीं और दो बगीचे की तरफ, दूसरे कमरे मे एक खिडकी का रख बगीचे

की ओर था और एक का सड़क की ओर। लिडकिया छाटी और चौकोरी, और उनका काच जमाने के रंग देखते देखते खुद भी रंग गया था। जाडो की घुधली और छितरी हुई रोशनी मुडिकल से उसे बेधकर भीतर पहुच पाती थी।

दोनो कमरो मे मेजे ही मेजे भरी थीं। हर मेज पर, कमर दोहरो किए, एक या दो कारीगर काम करते। पानी से भरी काच की गेंदें छत से लटकतीं, ताकि लपो की रोशनी उनके स्पन से और भी अधिक उजली तथा शीतल होकर देव प्रतिमाओ के चौरस चौखटो को आलोकित करे।

धकशाप के गरम वातवरण मे दम घुटता। चित्रकारी के लिए प्रतिब पालेख, खोलुई और म्तेरा गावो के करीब बीस कारीगर—सब यहीं भरे रहते। खुले गले की छोट की कमीजें और मोटे कपडे के पायजामे वे पहनते, और जूतो के नाम पर बदनुमा सीतरे होते या एकदम नग पाय ही रहते। माखोरका तम्बाकू का कडवा धुआ उनके सिरों के चारो ओर मडराता और वानिश, साल तथा सडे अडा की गंध से हवा भारी हो जाती। प्लावीमिर जन भीत के स्वर, गम तारकोल की तरह तरल और भारी तरते रहते

पाप एक मे लयपय दुनिया
रही न राज कुलाज
सडे सडकी सब येकाबू
नाचे नगा नाच

वे अय गीत भी गाते, सब इसी कडे के, जो भारी बनानेवाले। लेकिन यह उनका प्रिय गीत था। गीत के असल बोल, उनके विचारा या काम मे कोई बाधा दिए बिना, गूजते रहते। अरमाइन के महीन आलों वाले बुग, बिना किसी भूल-बूक के, सहज गति से चलते, प्रतिमा को रेखाओ को उभारते, सता के धोगा की सलवटा मे रंग भरते या उनके सुले हुए चेहरों पर वेदना की झुरिया बनते। लिडकिया के पास से नवत्राण गोगोलेव की हथौडी की लटकल देती जो छोटी से छोटेकर बेल-मूटे बनाता। पकोडे गोली और नगे मे यह घुत रूता था। हथौडी गीत । के साथ साथ देती और जंगा मा कोई । कुतर रहा हो।

देव प्रतिमाओं की साज सज्जा के इस काम में किसी का मन न लगता। जाने किस शतान दिमाग ने इस काम को अग भग कर अलग अलग टुकड़ों में बांट दिया था। नतीजा यह कि अब इस काम में न कोई आकषण रहा था, न सौंदर्य—सभी कुछ खडित होकर बिखर गया था। उससे गहरा लगाव पदा करना या उसके प्रति हृदय में कोई दिलचस्पी जगाना असम्भव था। ऐंची-तानी आखों वाला, कमीना और द्वेष भरा बढई पनफोल सरो और लिण्डन लकड़ी के रदों से साफ किये हुए, गोद से जुड़े छोटे बड़े तरह-तरह के आकार के तल्ले लाता। इसके बाद तपेदिक का मरीज दाबोदोव तल्लों पर खास सफेद रंग चढाकर उन्हें चित्रकारी के लिए तयार करता। उसका साथी सोरोकिन तल्लों पर एक खास रंग चढाता, मित्याशिन पेंसिल से देव प्रतिमा की तसवीर बनाता जो किसी मूल चित्र की नकल होती, बूदा गोगोलेव प्रतिमाओं के चौखटों पर सुनहरा रंग चढाता और फिर उनपर नक्काशी करता, छोटे कारीगर सीनरी बनाते और सन्तों के कपड़ों में रंग भरते। इसके बाद प्रतिमा को, बल्कि कहना चाहिए कि प्रतिमा के धड़ को क्योंकि उसमें अभी न सिर लगा होता और न हाथ, दीवार के सहारे खड़ा कर दिया जाता। चेहरा बनाने का काम दूसरे कारीगर करते।

गिरजे की वेदी या दरवाजे की शोभा बढानेवाली इन बड़ी बड़ी प्रतिमाओं को इस तरह बिना चेहरे मोहरे, हाथ या पाव दें—केवल चोगा, फबल या फरिस्तों की छोटी कमीजें पहने—दीवार के सहारे टिका बैठकर बहुत ही अटपटा भालूम होता। उनके शोख और भडकीले रंग मौत की भावना का संचार करते, वह चीज जो जीवन फूकती है, उनमें नहीं थी, या कहिए कि वह चीज उनमें कभी मौजूद थी, लेकिन रहस्यमय ढंग से विदा हो गई और अब बोझिल लबादे के सिया उनके पास और कुछ नहीं बचा है।

जब चेहरा-मोहरा बनानेवाले अपना काम खत्म कर लेते तो एक अन्य कारीगर नक्काशी पर मोनाकारी का काम करता। परिचय और स्तुति आदि लिखने का काम किसी दूसरे विशेषज्ञ के सुपुद था। इन सब के हाथा से गुजरने के बाद तयार प्रतिमा पर खुद इवान तारिओनिच, यकनाप का शान्त स्वभाव मुखिया, लाल की वानिश चढाता।

उसके घूसर चेहरे पर घूसर दाढ़ी थी—महीन और रेगम की तरह मुलायम। उसकी घूसर आंखा की झलक गहराई में उदासी छाई रहती। यह यद्वत ही भले ढंग से मुसकराता, लेकिन जाने क्या उसकी मुसकराहट के जवाब में मुसकराना कुछ झटपटा और गलत सा मालूम होता। उसे देखकर लम्बेवाले सन्त गिमियोन की प्रतिमा की याद हो आती—जतना ही दुबला पतला और क्षीण, और उसी की तरह उसकी भावहीन आंख अपने चारों ओर के वातावरण तथा आसपास के लोगों से बंजर दूर कहीं देखती रहतीं।

घकनाप में काम गुट किए अभी मुझे ही चार ही दिन हुए थे कि झडिया बनानेवाला कारीगर नजे की हालत में काम पर चला आया। वह दोन प्रदेश का करजाक था। नाम कापे-दयूखिन, खूबसूरत और खूब हटा कट्टा। दांतों को भींचकर और बहकी बहकी लुगाइया आंखों को सिकोड़कर, बिना किसी से कुछ कहे या सुने, एक सिरे से वह सभी पर आहना घूनों की बीछार करने लगा। उमका चपल शरीर जो डील डील में ख्याबा बडा नहीं था, घकनाप में सब पर उसी तरह झपट रहा था जैसे चूहों से आबाद तहखाने में बिलाय झपटता है। धबराकर सब ओना कोनों की ओर लपके, और वहीं दुबके हुए एक दूसरे से चिल्लाकर कहने लगे

“मार, साले की!”

आखिर देव प्रतिमा का चेहरा मोहरा बनानेवाले कारीगर यमनी सितानोव ने बेकाबू हुए इस सांड को सन करने में सफलता प्राप्त की। स्टूल उठाकर उसने करजाक के सिर पर दे मारा, और वह वहीं पत्र पर डह गया। देखते देखते सबने उसे पकडा और चित्त लिटाकर तौलियों से बाध बिमा। लेकिन अपने दांतों से वह तौलियों को नाचता और और और फरता रहा। यह देख येव्गेनी का गुस्सा सीमा पार कर गया। उछलकर वह मेज पर चढ गया और करजाक की छाती पर कूदने की धुन में दोनो कोहनियो को बाजुओं से सटाकर अपना वजन तौलने लगा। अपने भारी भरकम वजन के साथ अगर वह कापे-दयूखिन की छाती पर कूद पडता तो उसका बचमर ही निकल जाता। लेकिन तभी गरम टोपी और कोट पहने लारिओनिच उसके बराबर में आकर खडा हो गया। सितानोव को उसने उगली के इशारे से बस में किया, और शांत तथा दो दूक स्वर में अय सब से बोला

“इसे डपोटी मे ले जाकर डाल दो। नशा उतरने पर ठीक हो जाएगा ”

कारिगर कर्जाक को खींचकर बकशाप से बाहर ले गए, फिर मेज कुसियो को ठीक ठिकाने से लगाया और अपने काम मे जुट गए। साथ ही वे टीका टिप्पणी भी करते जाते—कापेदयूजिन की ताकत के बारे मे। उहोनि भविष्यवाणी की कि एक न एक दिन वह किसी से लडता हुआ मारा जाएगा।

“उसे मारना हसी खेल नहीं है,” सितानोव ने बहुत ही शांत स्वर मे गहरे जानकार की भांति अपनी राय जाहिर की।

मैने लारिप्रोनिच की ओर देखा और अचरज से भरा यह पता लगाने की कोशिश करने लगा कि उसमे ऐसी क्या बात है जो सब लोग, अपने जगलौपन के बावजूद उसका इतना कहना मानते हैं।

वह हरेक को बिना किसी भेद भाव के काम करने के गुर सिखाता। पुराने से पुराने और बख कारिगर भी उससे सलाह लेते। कापेदयूजिन को तयार करने पर वह अत्यंत सबसे ज्यादा समय और शब्द खच करता।

“चित्रकार—तुम चित्रकार हो कापेदयूजिन। और अच्छा चित्रकार वही है जिसके चित्रो मे जान हो, इटली के चित्रकारो की भांति। मुहाबने रगो का सामजस्य तेल चित्रो की जान है, लेकिन देखो न, तुमने यहां निरा सफेदा पोतकर रख दिया है। यही वजह है जो माता मरियम की आखें इतनी बेजान और ठिठुरी सी मालूम होती हैं। इसके गाल गोल हैं, उनमे लाली भी खूब है, लेकिन आखो का उनसे कोई मेल नहीं है। फिर आखें यथास्थान भी नहीं हैं—एक नाक के इतनी नखदीक है और दूसरी बनपटी की ओर भागी जा रही है। नतीजा यह कि जिस चेहरे पर दबी आभा, निश्चलता और पवित्रता झलकनी चाहिए, उससे अत्यंत मक्कारी और दुनियादारी टपकती है। असल बात यह है कि तुम मन लगाकर काम नहीं करते, कापेदयूजिन।”

कर्जाक पहले तो मुह सिकोडे सुनता, स्त्रियो जसी अपनी सुंदर आलो से बेगर्मी के साथ मुसकराता और फिर अपनी मुहाबनी आवाज मे जो नशे के कारण कुछ भारी पड गई थी, कहता

“तुम भी क्या बात करते हो, इवान लारिप्रोनिच! भला यह भी

कोई काम है? भगवान ने मुझे संगीत के लिए पदा किया था, लेकिन मुझे मठ में फसा दिया!"

"मेहनत और लगा से हर काम में दक्ष बना जा सकता है।"

"नहीं, मैं हूँ किस खेत की मूली? होता मैं रोचयान और होती मेरे पास हवा से धातें करनेवाले छोटे जुती थोइका घाह"

और अपना टेटुआ बाहर निवालकर हड्डम्पी स्वर में गाने लगता

थोइका मेरी रग बिरगी
सरपट दौड़ी जाये रे
सजनी मेरी सोलह बरस की
सौ-सौ घल लाये रे!

इवान लारिमोनिच उसको और देखकर येबस मुसकराता, अपनी धूसर नाक पर चश्मे को ठीक से बठाता और चुपचाप वहाँ से लितक जाता। फिर, एक साथ मिलकर, दोनों धावासें गीत के बोल उठाते और एक बलशाली धारा का रूप धारण कर समूची बकशाप को ऊपर हवा में उठा लेती। गीत के स्वरो के साथ बकशाप भी हिंडोले की भाँति झूलने लगती

थोइका मेरी रग बिरगी
जोवन को बहार रे

पाशका ओबिन्तसोव, जो अभी काम सील रहा था, अडा की जर्दी निकालना बंद कर देता, और दोनों हाथों में अडे के छिलके धामे, बढिया तेज धावास में कोरस की पकितया पकड़ता।

गीत की ध्वनि नशा बनकर सबपर छा जाती, अथ किसी बात की उहे शुभ न रहती। एकसाथ मिलकर सबके हृदय धडकते, एक ही रागिनी में सब बहते और कनखिया से उस कस्तूरी की आरू देखते जो गाते समय बकशाप का एकछत्र स्वामो होता। वह सभी को एक सिरे से, मत्र मुग्ध कर लेता और वं एकटक उसके जोर जोर से झूलते हाथ की हर हरकत का अनुसरण करते। उसकी बाँहे इस तरह लहराते मानो वह अभी हवा में उड़ने लगेगा। मुझे पूरा विश्वास था कि अगर वह एकाएक अपने गीत को रोककर बीच में ही चिल्ला उठता, "आओ साथियो, बकशाप को विदिया उडा दें!" तो सब के सब, मय उन कारीगरों के जो अत्यन्त

नफासतपसन्द और भले थे, एकाध मिनट के भीतर समूची वर्कशाप को मलबे का एक ढेर बनाकर रख देते।

वह बिरले ही गाता, लेकिन उसके बनले गीतों में सदा इतनी अदम्य शक्ति होती कि उनके सामने कोई टिक न पाता, सभी को वे अपने साथ बहा ले जाते। चाहे हृदय कितना ही बुझा हुआ क्यों न हो, उसके गीत को आराज सुन सभी चेतन हो जाते, एक अजीब जोश और उछाह उनमें लहराने लगता, और उनकी बिलखी हुईं ताकतें एक स्वरलय में गुंथकर किसी बलशाली साज का रूप धारण कर लेतीं।

गीतों को सुनकर मुझे गायक और लोगो को मंत्र मुग्ध करने की उसकी अदभुत शक्ति से जोरदार ईर्ष्या होती। कम्पनशील आतक का मुझमें संचार होता, इस हृद तक मैं उमडता घुमडता कि हृदय बुझने लगता, खूब खुलकर रोने और गाते हुए लोगो के सामने अपना हृदय धीरकर रख देने के लिए जी ललक उठता

“ओह, तुम सब मुझे कितने प्यारे लगते हो।”

तपेविक का मरीज दायीबोव भी, जिसका रंग पीला पड़ गया था और जिसके शरीर पर बाल ही बाल नजर आते थे अपना मुह खोलता और वह अजीब सा, अडा फोड़कर अभी अभी बाहर निकले कौबे की तरह लगने लगता।

केवल बरशाक ही अकेला ऐसा था जिसके गीत इतने आह्लावपूर्ण, इतने सूफानी होते थे। अयया कारीगर, ग्राम तौर से, उदासी में डूबे और बोझिल गीत गाते थे, जैसे—“पाप पक में लयपय दुनिया”, “आह, घेर लिया जगल ने, छोटे जगल ने”, अथवा अलेक्सांद्र प्रथम की मृत्यु का वर्णन करनेवाला गीत—“फिर आया वह, हमारा अलेक्सांद्र, और डाली नजर उसने अपने धीर सनिको पर”।

कभी-कभी वर्कशाप के सब से अच्छे चेहरासाव जिखरेव के बहने से ये गिरजे के गीत भी गाते, लेकिन उहे गाने में वे भूले भटके ही सफल हो पाते। जिखरेव हमेशा ऐसी धुनों और रागिनियों के पीछे सिर घुंमता जिहे सिवा उसके और कोई न समझ पाता। सभी के गाने में यह धाड़े आता था।

वह एक दुबला-पतला आदमी था। आयु पतालीस के करीब, बाले, घुघराले बालों के अद्वचंद्र से घिरी चाद, भारी और बाली भोंहें जो

मूछो की भाति मालूम होती थीं। ताम्बे से तपे और बढिया नाक-नजर वाले उसके गर रूसी चेहरे पर घनी और नुकीली दाढी खूब फबती थी। लेकिन यह फबन उसकी दाढी मे ही थी, तोते जसी नाक के नीचे जा आई मूछो मे नहीं जा उसकी भौंहो के सामने बिल्कुल फालतू मालूम होती थीं। उसकी नीली आखें एक-दूसरे से भिन थीं—बाईं आख दाहिना से बडी नजर आती थी।

“पाशका!” मेरी ही तरह काम सीखनेवाले साथी से ऊचे स्वर मे वह कहता। “जरा शुरू तो करो ‘हे बयामय दीनबधु!’ देखो, सब धन होकर सुनो!”

फमीज पर गमछे से हाथ पोछते हुए पाशका शुरू करता

“हे बयामय ”

“बी ई ई ई न ब भ्र भ्र-धु ” अनेक आवाजों एक साथ मिलकर ‘दीन बधु’ को ऊपर उठातीं और विधसित जिल्लरेब बिल्लाना शुरू करता

“सितानोब! अपनी आवाज नीची करो जिससे मालूम हो कि आत्मा की गहराई मे से वह निकल रही है ”

सितानोब ऐसी आवाज मे ‘हे बयामय’ की खिचडी पका रहा था मानो बरल को उलटकर वह उते ठपाठप बजा रहा हो

“हम हैं दास तिहारे ”

“छि यह भी कोई ढग है! ऐसी आवाज निकलनी चाहिए कि धरती कापने लगे, दरवाजे और खिडकिया अपने आप खुल जायें!”

जिल्लरेब का रोम रोम किसी रहस्यमय आवेश मे फडकने लगता, उसकी अजीब गरीब मूछनुमा भौंहो उठतीं और गिरतीं, उसकी आवाज लडलडाने लगती, और उसकी उगलिया किसी अदृश्य साज के तारो को मनमनाती मालूम होतीं।

“हम हैं दास तिहारे—समझे?” भेद भरे अदाज मे वह कहता। “यह आत्मा की आवाज होनी चाहिए, तन, मन को बाँधकर निकलता हुई ‘हम ह दास तिहारे!’ भगवान तुम्हारा भला करे, क्या तुम इतना भी नहीं समझते?”

“यह हम से कभी नहीं बनता, आप को तो मालूम ही है।” सितानोब बडे अदब के साथ कहता।

“तो जाने दो।”

जिखरेय खीजकर कहता और अपने काम में जुट जाता। वह हम सबसे अच्छा कारीगर था। वह हर तब के चेहरे बना सकता था—यूनानी, फ्रासीसी या इतालवी। देव प्रतिमा का आडर मचूर करते समय लारिओनिच हमेशा उससे सलाह लेता। मूल देव प्रतिमाओं का वह बहुत बड़ा पारखी था। जमत्कार दिखानेवाली बहुमूल्य देव प्रतिमाओं—जैसे फेओदोरोव, स्मोलेस्क और कजान मरियमो की सभी कीमती नकले उसके हाथों से गुजरतीं। लेकिन, मूल प्रतिमाओं का ध्यान से अध्ययन करते हुए, वह जोरो से झुमला उठता

“मूल क्या हैं, मानो सूटे हैं जिनमें हम बंधे हैं। देखो न, जरा भी इधर उधर नहीं हो सकते।”

वक्शाप में उसका दर्जा सबसे बड़ा था। फिर भी, अग्य सब की भांति, वह किसी पर रोब नहीं गाँठा और काम सोखनेवाला के साथ—पावेल और मेरे साथ—बड़ी नरमी से पेश आता। ले-देकर वही एक ऐसा था जो हमें अपना हुनर सिखाने में आनाकानी नहीं करता था।

वह एक अच्छी-खासी पहली था। कुल मिलाकर वह कोई मौजी आदमी नहीं था। कभी-कभी पूरे सात दिन तक वह मुह न खोलता और गुनो-बहरे की भांति काम में जुटा रहता। वह नजर उठाकर हमारी और देखता भी तो इस तरह मानो कहीं दूर से किसी अजीब और अनजानी चीज को पहली बार देख रहा हो। यो गाने का वह बहुत शौकीन था, लेकिन ऐसे दिनों में न वह खुद गाता, न दूसरों के गाने की आवाज उसके कानों को छूती प्रतीत होती। एक एक कर सभी उसपर अपनी नजर डालते और कनखियों का आदान प्रदान करते। लेकिन वह था कि आड़े रले तले पर झुका रहता, तले का एक सिरा उसके घुटनों पर होता और बिचला हिस्सा भेज के किनारे से टिका होता। वह अपने काम में डूबा रहता, एक क्षण के लिए भी वह अपना सिर न उठाता और जान पपाकर महीन युग से प्रतिमा का नाक-नक्शा उभारता। काम करते समय खुद उसका चेहरा भी उतना ही अजीब और अजनबी मासूम होता जितना कि प्रतिमा का।

सहसा, बहुत ही दो टूक और भाहत से स्वर में, वह बडबडा उठता

“‘प्रदेतेचा’—क्या मतलब है इसका? प्राचीन स्थाय भाषा में ‘तेर’ का अर्थ है ‘जाना’ और ‘प्रदे’ का ‘आगे’, तो प्रदेतेचा का अर्थ हुआ यह जा आगे जाए,—अर्थात् आगे जानेवाला, या पूवगामी, बस और कुछ नहीं।”

उसकी बड़बड़ाहट सुन सब धुपचाप हसते, छिपी हुई नदरों से उसे अपनी हसी का निशाना बनाते और उसके मुह से निकले अजीब “खामोशी में गूजते रहते

“और उसे भेड की खाल के लबादे में नहीं, बल्कि परो के साथ बनाना चाहिए”

तभी किसी कोने में से आवाज आती

“क्या हवा से बातें कर रहे हो?”

लेकिन यह कुछ जवाब न देता, या तो यह सुनता नहीं या मुनफर भी अनसुना कर देता। उसके भाव प्रतीक्षा भरी निस्तब्धता में उसके शब्द गूजने लगते

“उनकी जीवनिया जाननी चाहिए, लेकिन उन पवित्र पुस्तकों को क्या कोई समझता है? हम क्या जानते हैं? पर कटे पक्षी की भाँति हमारा जीवन बीतता है चेतनाविहीन, आत्माविहीन मूल कृतियों के नमूने ही हमारे पास हैं, लेकिन हृदय नहीं”

इस तरह बड़बड़ाकर जब वह अपने विचार प्रकट करता तो सितानोव को छोड़ अर्थ सब के होठी पर मुसकराहट बौड़ जाती और उनमें से कोई एक, अदबदाकर फुसफुसाता

“बेल लेना, शनिवार के दिन यह शराब के प्याले में गडगच्च नदर आएगा”

सम्बा और वडियल सितानोव जो पचाईस साल का घड़ेरा था, अपना गोल-मटोल और अभी तक बाढ़ी-भूछ, बल्कि भौंहो तक से अछूता चेहरा उठाकर उदास और सोच में डूबी नदर से कोने की ओर देखता।

मुझे याद है कि एक बार, फेंगोबोरोव सरियम को प्रतिलिपि तयार करने के बाद उसे मेज पर रखते समय, जिखरेव बुरी तरह विचलित हो उठा था और जोरा से उसने कहा था

“काम सम्पन्न हुआ, जगत जानी! भाँ, तू अतल कटोरे समान है, नदी-जगत के आसू अब इसमें बहेगे”

फिर, जो कोट हाथ लगा उसी को अपने कंधे पर डाल वह बाहर निकल गया—शराबखाने की ओर। नौजवान कारीगर हसते हुए सीटिया बजाने लगे, दूढ़े ने ईर्ष्या से लम्बी सासे भरें लेकिन सितानोव चुपचाप उठकर देव प्रतिमा के पास पहुँचा, ध्यान से उसे देखा, फिर बोला

“उत्तर नशे में गडगच्च होगा, अपने काम से बिछुड़ने पर दिल जो दुखता है। हर कोई नहीं समझ सकता इस दद को ”

जिखरेव हमेशा शनिवार के दिन अपना रगपानी शुरू करता। और उसका यह रगपानी, नशे के धावी अथ्य कारीगरो के खुल खेलने जसा नहीं, बल्कि असाधारण होता। उसके रगपानी की शुरूआत इस तरह होती सुबह वह एक पुर्जा लिखता और उसे पाबेल के हाथ कहीं रवाना कर देता, उसके बाद ठीक भोजन के समय से कुछ पहले लारिप्रोनिच से कहता

“आज मुझे हम्माम जाना है।”

“कब तक लौटोगे?”

“सो तो ”

“अच्छी बात है। लेकिन भगल तक जरूर आ जाना!”

जिखरेव अपनी गजी खोपड़ी हिलाकर हामी भरता और उसकी भाँहे पिरकने लगतीं।

हम्माम से लौटने के बाद सज सजाकर वह पूरा बाका बन जाता—कलफचढ़ी बढ़िया कमीज, गले में रुमाल और देशमी जाकेट की जेब से चाबी की लम्बी चेन लटकती हुई। फिर, चलते समय, पाबेल और मुझे बाट पिलाता

“देखो, आज रात बकशाप की खूब मेहनत से सफाई करना। लम्बी मेज को रगड रगडकर धोना!”

बैलते न देखते बकशाप में छुट्टी का समा छा जाता। कारीगर अपनी मेजों को झाड-मोछकर कायदे से लगाते फिर हम्माम जाकर गुसल करते और जल्दी से साझ का भोजन पेट में डालते। भोजन के बाद बीयर, मदिरा और खाना लेकर जिखरेव प्रकट होता। उसके पीछे-पीछे एक स्त्री आती, आकार प्रकार और डील डौल में पूरी बावनगर्जी, साढ़े ३ फुट ऊँची। जब वह आती तो उसके अनुपात में हमारी सारी कुसिया और स्टूल खिलौनों की भाँति मालूम होते, यहा तक कि लम्बा सितानोव भी

उसके सामने फिर बच्चा सा खिगाईं बंता। उसकी बाड़ी मठबूत और गुपट थी, लालियों को लालकर जिनका बेंबुरा उभार उसकी छात्र को रूता था। उसकी घाल-डाल भावा और डीला-डाली थी। प्राय हलकि घालीत की सीमा सांप चुकी थी, फिर भी घोड़े जसो बडा-बडी प्राय धाले उसके भावगुण्य घेहरे पर अभी तब चिचनई और ताडगी मौरू को, और उसका छोटा सा मुट सस्ती सी गुडिया की भांति रगा चुना था। होंग पर मुतरराहट सावर यह सब से घपना छोडा और गम हाप दिखाना, और येमतलय की घातें मुट से निचालनी

“मते मे तो हो ? आज बहुत ठड है। ओह, कुम्हारा बमरा रिता गपाता है। रग रोगर की गय मामूम होती है। और तब तो टोंग-डाक हैं न ?”

यो देखने मे यह घच्छी लगती—घोड़े पाट मे बहनेवाली नदी की भांति तयल और गान्त, लेकिन जब यह बोलती तो उबकाई घाने लगती। हमेना घेरता और घेकार की घातें उसके मुह से निकलतीं। कुछ कहने से पहल यह अपने गुलाबी गाला को फुसाती जिससे उसका साल घेहरा और नी गोस-मटोल हो जाता।

नीजयान लिललिलाले और एक-दूमरे से कानाफूसी करते

“औरत हो तो एसी,—जाने किस सांचे मे डालकर लुवा मे इमे तपाद किया है।”

“जिसी गिरजे की घच्छी-खासी मोनार भालूम होती है।”

होठो को भींचकर और हाथो का छातिया के नीचे जोडकर बर समोवार के मजदबीक मेज के पास बठ जाती, और अपनी घोड़े जसो भली घाली से एक एक करके समयपर नजर डालती।

सभी उसका मान करते, और नीजयानो के हृदय उसे देखकर सहमे सहमे से हो जाते। सलचाई नजरों से वे उसके भीमाकार शरीर को टोट लेते, लेकिन उसकी सघव्यापी नजर की लपेट मे घाले ही उनके गाल लाल हो उठते और वे अपनी गरदन झुका लेते। जिलखेब भी उसके साथ घदब से पेश घाता, आप कहकर कायदे से उसे सम्बोधित करता और मेज से उठकर जब कोई चीज उसे देता तो झुककर दोहरा हो जाता।

“ओह, इतनी तक्रलीफ क्यों करते हैं ?” यह धलस भाव से मोठे घदवाज मे कहती। “सब, आप मेरे लिए बहुत परेशान होते हैं।”

उसके हर अदान से फुरसत का भाव टपकता। उसके हाथ केवल कोहनियो तक हरकत करते। कोहनियो से ऊपर का हिस्सा वह दोनो बाजू कसकर सटाए रहती। उसके बदन से अलावधर से अभी अभी निकली ताजी पाव रोटी की तेज गंध आती।

बूढ़ा गोपोलेव उसे देखकर उलटा हो जाता और उसकी सुंदरता की तारीफ करता कभी न अघाता मानो किसी पादरी के मुह से धम-पाठ हो रहा हो जिसे वह, गरदन को अद्धाभाव से झुकाए सुनती रहती। जब कभी वह शब्दो मे उलझ जाता तो उसकी इस कमी को वह खुद पूरा कर देती

“घरे नहीं, क्यारेपन मे तो हम इतनी सुंदर नहीं थीं, यह तो हम बाद मे फले फूले। तीस बरस की होते न होते तो हम इतनी प्यारी हो गयीं कि बड़े-बड़े घरो वाले भी हमारी खोज खबर लेते थे। और एक नवाब साहब ने तो हमको दो घोडो वाली गाडी देने का वायदा किया था ”

कापेद्यूज़िन जो अब तक नशे मे धुत्त और हाल बेहाल हो चुका होता था, तीली नखर से उसे देखते हुए पूछता

“किस लिए?”

“यह भी कोई बताने की बात है?” वह कहती। “निश्चय ही हमारे प्रेम के लिए।”

कापेद्यूज़िन कुछ सकपका जाता। भुनभुनाते हुए कहता

“प्रेम प्रेम कसा प्रेम भला?”

“बहुत बनी नहीं,” सहज भाव से वह जवाब देती, “भला यह कैसे हो सकता है कि तुम्हारे जसे खूबसूरत आदमी से प्रेम की बारहखडी छिपी रहे?”

बकशाप कहकहो की आवाज मे डोलने लगती और सितानोव कापेद्यूज़िन के कान मे बुदबुदाता

“निरी मूख है या उससे भी बदतर। ऐसी औरत से प्रेम तो चही करेगा, जो ऊब से मरा जा रहा हो, सभी यह जानते हैं ”

नशे से उसका चेहरा फक पड गया था, कनपटी पर पसीने की बूँदें उभर आई थीं और उसकी चतुर चपल आँखा मे आग की लपटें मानो

खतरे का सिगनल दे रही थीं। अपनी भोड़ी नाक को घुमाते और पतली आंखों को उगलियों से षोछते हुए बद्ध गोगोलेब ने पूछा

“कितने बच्चे हुए हैं तेरे?”

“बच्चा हमारे एक हुआ था ”

एक लम्प मेज के ऊपर लटका था और दूसरा अलावघर के उधर होते में। उनकी धीमी रोशनी उहाँ तक सीमित रहती और वक्शाप के कोनों में गहरा अंधेरा छाया रहता जिनमें चेहरे-मोहरे विहीन आइतिया नवर आतीं। हाथों और चेहरों की जगह अंधकार के सूने धम्बों को देखकर भूत प्रेतों की दुनिया का गुमान होता और यह भावना और भी जोरों से सिर उभारती कि सन्तों के शरीर, इस सहजाने में अपने रगौन कपड़ों को छोड़कर, किसी रहस्यमय ढग से निकल भागे हैं। काच की गेंदें ऊपर खींचकर छत में लगे हुको से अटका दी गयी थीं और वे, धुएँ के धारों के बीच, नीली-नीली सी चमक रही थीं।

जिजरेव को जैसे जन नहीं था। सबकी खातिर-सवाखा करता वह नेत्र के चारों ओर मडरा रहा था। उसकी गजी खोपड़ी कभी एक की ओर झुकती तो कभी दूसरे की ओर। उसकी पतली उगलिया बराबर हुरकत कर रही थीं। वह अब और भी दुबला हो गया था और उसकी तोते सी नाक और भी नुकीली हो गई थी। प्रकाश के सामने से झाडा होकर जब वह गुञ्जरता तो उसके गाल पर नाक की काली लम्बी छाया फल जाती।

गूजती हुई आवाज में वह कहता

“साधियो, खूब छक्कर खाओ और पियो!”

और स्त्री मालकिन की भाति गुनगुनाती

“आपने भी हृद कर दी, पडोसी! इतना तकल्लुक भी कित्त काम का? हरेक के पास उसके अपने हाथ और उसका अपना पेट मौजूद है। जिसमें जितनी समात है, उतना ही तो वह खाएगा।”

“परवाह न करो, साधियो! खूब जो भरकर खाओ!” जिजरेव विचलित स्वर में चिल्लाता। “हम सब उसी एक खुदा के बन्दे हैं। आओ, मिलकर उसका गुण-गान करें ‘हे दयामय ’”

लेकिन “हे दयामय” का स्वर भागे न बढ़ पाता। सब खाने और पीने के नंगे में ढीले पड गये थे। कापे-दुपुखिन ने अपना एकाडियन सभाला और नौजवान धीक्तर सलाऊतीन, जो बीबे की भाति काली

श्रीर गम्भीर था, तम्बूरिन से गहरी घन्नाटेदार आवाज निकालने लगा। जो कसर रह गयी उसे तम्बूरिन के इद गिद पडे मजीरो की आह्लादपूण ध्वनि ने पूरा कर दिया।

“रसी नाच हो जाय!” जिलरेव ने आदेश दिया। फिर बोला, “पडोसिन! अब आप भी उठने की कृपा कीजिए!”

“ओह!” स्त्री ने एक लम्बी सी सास री और अलस भाव से उठते हुए कहा, “आप भी कितना तकल्लुफ करते हैं!”

उठकर वह कमरे के बीचोबीच जाकर ठोस घटधर की भाति बहा खडी हो गयी। किशमिशी रग का चौडा घाघरा, पीले रग की महीन चोली वह पहने थी और सिर पर लाल रग का रुमाल बांधे थी।

एकाडिपन की सुरीली आवाज आती—छोटी-छोटी घटियों की टुनटुन और घुघरुओ की मुनमुन, तम्बूरिन भारी तथा बेरस उसासे छोडती जो सुनने मे बडी बुरी मालूम होतीं मानो कोई पागल आदमी सुबकिया और आहें भरता हुआ वीवार से सिर टकरा रहा हो।

जिलरेव नाचना नहीं जानता था। न उसे ताल का कुछ ज्ञान था, न सुर का। बस योही अपने पाय उठाता, धमधमाते जूतो की एडियो को फस पर ठकठकाता, छोटे डग भरकर बकरी की भाति इधर से उधर कूदता। ऐसा मालूम होता मानो उसने किसी बूसरे के पाव लगा लिए हो या उसके पावो ने शरीर का साथ न देने का इरादा कर लिया हो। मकडी के जाले मे फसी मक्खी या मछियारे के जाल मे फसी मछली की भाति बहुत ही भद्दे ढग से उसका बदन बल खाता, तुडता और मुडता। लेकिन सभी, वे लोग भी जो नशे मे धुत थे, बडे ध्यान से उसकी इस उछल-कूद का अनुसरण करते। उनकी आलें एकटक उसके चेहरे और हाथो पर जमी रहतीं। जिलरेव के चेहरे का भाव इतनी तेजी से बदलता कि देखकर अचरज होता कभी कोमल और सजीला, कभी गव से भरा, कभी तेज और तीखा, कभी धिगारिया सी छोडता। सहसा ऐसा मालूम होता जैसे किसी चीज ने उसे आहत कर दिया हो—दद से वह चीप उठता और अपनी आलें बंद कर लेता। जब वह आलें खोलता तो गहरी उदासी मे डूबा दिखाई देता। वह अपनी मुट्टिया भोंच लेता और चुपके-चुपके स्त्री के पास पहुंचता। फिर, पग पर पाव पटककर घुटनों के बल बठते हुए वह बाहें फलाता और भोहे उठाकर प्रेम मे पगी मुसकराहट का

उसे अग्र्य घटाता। गरदन झुकाकर वह उसकी ओर देखती, मुसकराता उसे कृताय करती, और अपने शान्त अवाज में उसे चेताती

“नहीं, आप थक जाएंगे!”

वह मीठी मुस्कान के साथ अपनी आँखें बंद करने का प्रयत्न करती, लेकिन उसकी सिक्काशाही आँखें इतनी बड़ी थीं कि बंद होने से इनकार कर देतीं, और इसके फलस्वरूप पड़ी झुरिया उसके चेहरे को केवल बन्द मा बनातीं।

नाचने के मामले में वह भी काफी कच्ची थी। उसका भारी-भरकम शरीर केवल धीरे धीरे झूमता और बिना आवाज किए इधर से उधर धिरकना जानता था। उसके बाएँ हाथ में एक टमाटर था जिसे वह प्रनमने भाव से हिलाती। उसका दाहिना हाथ कूहे से चिपका रहता और ऐसा मालूम होता मानो वह कोई भीमाकार जंग हो।

और जिखरेव इस बुत-बरोला स्त्री के चारों ओर मडराता रहता। उसके चेहरे पर विरोधी भाव आते और एक दूसरे को काटते हुए बिलीत हो जाते। ऐसा मालूम होता मानो वह अपने भीतर एक साथ दस आदमा छिपाए हो और उनमें से प्रत्येक अपना एक अलग स्वभाव रखता हो एक सकोची और छुईमुई की भाँति लज्जाला, दूसरा एकदम जंगली और डरावना, तीसरा खुद डरा और सहसा डुमरा, ऐसा मालूम होता मानो इस घिनौनी हिडिम्बा के अंगुल से निकल भागने के लिए हाथ-पाव पटकट हुए चिचिया रहा हो। सहसा एक दूसरा ही चेहरा नजर आता—घायल कुत्ता का चेहरा जिसके दाँत निकले थे और जिसका बदन रह रहकर बल ला रहा था। यह बदरग और भद्दा नाम देकर मेरा हृदय भारी हो गया और सनिको, बावचिना, धोबिनो तथा कुत्ते कुत्तियों के निहाय घिनौनेपन की मुझे याद आयी।

सीदोरोव के धीमे से शब्द मेरे दिमाग में धूमते

“इस मामले में सभी झूठ बोलत है। ऐसा है यह मामला, सभी को गम मालूम होती है न? असलियत यह है कि कोई किसी से प्रेम नहीं करता, केवल मत्ते के लिए यह सब करते हैं।”

मेरे मन में यह बात नहीं जमती कि ‘ऐसी चीज़ा के बारे में सभी झूठा ढाग रचते हैं’। क्या रानी मार्गा भी झूठा ढोंग रचती थी? और जिखरेव? निश्चय ही उसे ढाँगिया की पात में नहीं रखा जा सकता। और

मुझे यह भी मालूम था कि सितानोव राह चलती किसी हरजाई से प्रेम करता था और इस प्रेम के बदले में वह एक शमनाक बीमारी का शिकार भी हो गया था। उसके साथिया ने सलाह दी कि वह उस हरजाई को मार-पीटकर ठिकाने लगा दे, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया, उल्टे एक कमरा किराये पर लेकर उसे दे दिया, डाक्टर से उसका इलाज कराया, और उसके बारे में बातें करते समय वह हमेशा भारी लगाव और कोमलता का परिचय देता था।

लम्बे चौड़े डोल डोल वाली स्त्री अभी भी मटक रही थी, और अपने हाथ में लिए टमास को हिला रही थी। उसके चेहरे पर वही एक मरियल मुस्कान जड़ी थी। जिखरेव भी उसके इद गिद उछल रहा था मानो उसका शरीर मरोड़ खा रहा हो। उँहे देखकर मुझे खयाल आया क्या वह हीवा भी, जिसने खुद खुदा तक को चकमा दिया था इस घोड़ी से मिलती-जुलती थी? मेरा हृदय घृणा से भर गया।

मुलविहीन देव प्रतिमाए काली दीवारों पर से साकती रही थीं, लिडकियो से बाहर अघेरी रात फिरती आ रही थी और वकशाप के ऊमस भरे कमरों के लम्प अघेरे को डूर करने के बजाय उसे और भी घना घना रहे थे। पावों की भपथपाहट और आवाजा की भुनभुनाहट के बीच हाथ-भुह धोने के ताम्बे के बरतन के नीचे रखी बाल्टी में पानी के गिरने की टपाटप आवाज भी सुनाई दे रही थी।

पुस्तका में चित्रित जीवन से यह सब कितना भिन्न था—भयानक रूप से भिन्न! शीघ्र ही सब ऊबने लगे। तभी कापेदयूखिन ने एकाडियन को सलाऊतीन के हाथों में पटक और चिल्लाकर बोला

“हो जाओ तमार साथियो, अब अगिया बताली नाच होगा।”

वह बान्का त्सिगानोक की तरह नाचता था, ऐसा मालूम होता मानो हवा में उड़ रहा हो। पावेल ओदिन्त्सोव और सोरोकिन के पाव की थापो ने भी तेजी पकड़ी। यहा तक कि तपेदिक का भारा दावोदोव भी बीच में आ कूदा। घूल और घुए, वोदका और घुए में पके सोसेजों की कमाये हुए चमड़े जसी तीखी गंध के मारे खासते और खलारते हुए, वह नाच रहा था।

नाचने, गाने और हा हा, ही ही का यह सिलसिला चलता रहा। ऐसा मालूम होता मानो वे जीवन की इस घड़ी को आह्लादपूर्ण बनाने पर

तुले ही और एक-दूसरे को उकसाते हुए जिंदादिली, चपलता और सहनशक्ति की कसौटी पर कस रहे हो।

सितानोव, नशे में घुत्त, एक-एक के पास जाकर पूछता

“जरा बताओ तो सही, इस घोड़ी के प्रेम में वह कत्ते कस गया?”

सगत कि वह अभी रो पड़ेगा।

सारिओनिच अपने कडियल बघो को बिचकाता। जवाब में बहता

“बयो, औरता सी औरत है, तुम्हें भला क्या चाहिये?”

और जिनके बारे में वे बातें कर रहे थे, इस बीच न जाने कब वे दोनों गायब हो गए। और मैं जानता था कि जिजरेव दो-तीन दिन से पहले नहीं लौटेंगा। लौटने पर हम्माम में जाकर पहले वह गुत्तल करेगा और फिर करीब दो सप्ताह तक अपने कोने में जमकर बठ जाएगा। न किसी से बोलेगा, न चलेगा, बस चुपचाप और अकेला रोब के साथ अपने काम में जुटा रहेगा।

“वे चले गये?” उदासी में डूबी अपनी भूरी नीली आंखों से समूचे कमरे को छानते हुए सितानोव ने पूछा। उसका चेहरा अभी से बूड़ा हो गया था, और वह जरा भी खूबसूरत नहीं मालूम होता था, लेकिन उसी आँखें बहुत ही स्वच्छ और भली थीं।

वह मेरे साथ मित्रता से पेश आता। इसका कारण कविताओं से भरी मेरी खापी थी। वह भगवान में विश्वास नहीं करता था, और तब तो यह है कि एक सारिओनिच को छोड़ यहा ऐसा और कोई नहीं था जिसके बारे में यह कहा जा सके कि वह भगवान में विश्वास करता है, भगवान के साथ उसकी लौ लगी है। भगवान के बारे में भी वे सब उसी तरह ताने तिनकों के सहज में बातें करते जैसे कि नौकर अपने मालिकों के बारे में बातें करते हैं। लेकिन जब वे दोपहर या सांझ का भोजन करने बटते तो सलीब का चिह्न बनाना न भूलते, और रात को सोने से पहले विला नागा भगवान का नाम लेते। रविवार के दिन, सब के सब, गिरजे जाते।

सितानोव इनमें से एक भी बात नहीं करता था और इसी लिए सब उसे नास्तिक कहते थे।

“भगवान जसी कोई चीज नहीं है,” वह अपनी बात पर बल देने हुए कहता।

“भगवान नहीं है तो यह सारी दुनिया पदा कत्ते टूई?”

“मुझे नहीं मालूम ”

एक दिन मैंने उससे पूछा

“यह तुम कैसे कहते हो कि भगवान नहीं है?”

“देख न, भगवान का मतलब है ऊंचाई,” अपनी लम्बी बाह को सिर से ऊंचा उठाते हुए उसने कहा और फिर फश की ओर इशारा करते हुए बोला

“और इसान का मतलब है निघाई। क्यों, ठीक है न? लेकिन वाइबल में लिखा है कि भगवान ने इसान को अपनी छवि के अनुरूप बनाया है अब तू ही बता, गोगोलेव में किसकी छवि दिखाई देती है?”

मुझसे कोई जवाब देत न बना। गवा और पियवकड गोगोलेव, इतना बूढ़ा हो जाने के बाद भी, हस्तलाघव की आदत नहीं छोड़ता था। नानी की बहन, डेरमोखिन और व्याल्का निवासी वह सनिक—एक एक कर सभी मेरी आँखों के सामने धूम गए। इन लोगों ने भगवान की छवि का भला कौन सा भ्रश देखा जा सकता था?

“सभी इसान सूरमर हैं!” सितानोव कहता और फिर तुरत ही मुझे सभालता

“लेकिन चिन्ता मत कर, मक्सीमिच, अच्छे लोग हैं, जरूर हैं।”

सितानोव के साथ मुझे जरा भी परेशानी न मालूम होती। जब कोई ऐसी बात आती जिसके बारे में वह कुछ नहीं जानता तो खुले हृदय से उसे स्वीकार करता।

“मैं नहीं जानता,” वह कहता, “मैंने कभी इस बारे में नहीं सोचा।”

यह भी उसकी एक असाधारण विशेषता थी। जिन लोगों से मैं अब तक मिल चुका था, वे सब हर चीज की जानकारी रखते थे, हर चीज के बारे में वे राय देते थे।

उसके पास भी एक कापी थी जिसमें हृदय को मथनेवाली अत्यन्त प्रभावशील कविताओं के साथ-साथ ऐसी तुक्बदिया भी दज थीं जिन्हें पढ़कर गाल जलने लगते और झालें शम से नीची हो जातीं। यह देखकर मुझे बड़ा अजीब मालूम होता। जब मैं उससे पुश्किन के बारे में बातें करता तो वह “गाव्रीलिषादा” की ओर इशारा करता जिसे उसने अपनी कापी में उतार रखा था

“पुश्किन ? हल्का-फुल्का कवि है। लेकिन बेंनेदीक्टोव, - प्रोह, मक्सीमिच, उसे आखो की ओट नहीं किया जा सकता, - वह बरब ध्यान खींचता है ! देख ”

वह अपनी आँखें बंद कर लेता और धीमे स्वर में गुणगुनाता

देखो तो तुम, यह रमणी कसी सुवर
क्या उरोज हैं, उठे हुए ऊपर तनकर

न जाने क्यों निम्न पक्तियों को वह बड़े ही प्रेम और गवपूण आह्ला
से जोर देते हुए बार-बार दोहराता

पर उकाब को नखरें भी तो
इन तालो के पार न जायें।
फलक न बिल की वे तो पायें

“क्यों कुछ समझ में आया ?”

मुझे यह स्वीकार करते बड़ा सकोच भालूम हाता कि मैं नहीं समझता
वह क्यों इनना खुश हो रहा है।

१४

बकशाप में मेरे विन्ने कोई बहुत उत्सन्न पदा करनेवाला काम नहीं था। तडके ही, उस समय जब कि सब सोते होते, कारीगरों की छाप के लिए मैं समोवार गम करता। जागने पर रसोई में जाकर सब धाप पीते और मैं तथा पावेल बकशाप को झाडते-बुहारते, ब्रबो की सफेदी से खदों अलग करते जो रग में मिलाने के काम आती, और इसक बाद मैं डुकान के लिए रवाना हो जाता। साह को मैं रग धोसकर रोगल तगार करता और उस्ताडो के पास बठ काम करने के दग का अध्ययन करता। गुरु-गुरु में तो इस अध्ययन में मेरा बडा जो लगता, लेकिन गीम्र ही मैंने अनुभव किया कि करीब-करीब सभी कारीगर टुकडो में काम करना पसंद नहीं करते, और यह कि एक असह्य ऊब उह भोतर ही भोतर लाए जा रही है।

मेरा काम जल्दी ही निबट जाता और साह के खाली समय में मैं कारीगरों को अपने जहाजी जीवन के जिस्ते या पुस्तकों में पढ़ी कहानियाँ

सुनाता। इस प्रकार, एकदम अनजाने में ही मैंने एक विशेष स्थान ग्रहण कर लिया,—एक तरह से मैं वर्कशाप का किस्सागो और पुस्तके पढकर सुनानेवाला बन गया।

मुझे यह मालूम करने में देर न लगी कि मैंने जितना कुछ देखा और जाना है, उतना इन लोगों ने नहीं। इनमें से अधिकांश एकदम कच्ची उम्र में ही अपने धधो के तग पिजरो में बंद हो गए थे और तब से उसी में बंद चले आ रहे थे। वर्कशाप में जितने भी लोग थे, उनमें केवल जिखरेब ही एक अकेला ऐसा था जो मास्को ही आया था और बड़े रोब के साथ, भौंहो में बल देकर, वह इसका जिम्मा करता था

“मास्को पर आसुओ का कोई असर नहीं होता। वहा एकदम चौकस रहना पडता है।”

अब किसी को शूया या ब्लोबोमिर से आगे पाव रखने का कभी मौका नहीं मिला था। मैं जब कक्षान का जिम्मा करता तो वे पूछते

“वहा काफी रूसी आवाद है? और गिरजे भी हे या नहीं?”

वे पैम को साइबेरिया समझते और उनके लिए यह विश्वास करना कठिन हो जाता कि साइबेरिया उराल के उस पार है।

“उराल की पक्ष और स्टजन मछलिया वहा से—कास्पियन सागर से—ही तो आती हैं? इसका मतलब यह कि उराल कास्पियन सागर पर ही कहीं होगा।”

कभी-कभी ऐसा मालूम होता कि वे मुझे जान-बूझकर चिढा रहे हैं। मिसाल के लिए ऐसे मौकों पर जब वे कहते कि इगलड समुद्र के उस पार है, और यह कि नेपोलियन का जन्म बलूगा के किसी कुलीन घराने में हुआ था। जब मैं उन्हें खुद अपनी आखो देखी सचची चीजो के बारे में बताता तो वे बिरसे ही यकीन करते, लेकिन रोगटे खडे कर देनेवाले किस्से और पेचीदा कहानिया वे बड़े चाव से सुनते। यहा तक कि बड़े बड़े लोग भी सत्य के बजाय काल्पनिक कहानिया ज्यादा पसंद करते। मैं साफ देखता कि कहानी जितनी ही अधिक अनहोनी तथा अघट घटनाओ से भरी होती, उतना ही अधिक ध्यान से वे उसे सुनते। मोटे तौर से यह कि वास्तविकता में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। सब भविष्य के रगोन सपने देखना और वतमान के भोडेपन तथा गरीबी पर भविष्य की सुनहरी चादर डालकर उसे आखो की ओट करना चाहते।

उनका यह रवया मुझे बड़ा अजीब मालूम होता। इसलिए और भी अधिक वि सत्य और कल्पना की एक-दूसरे से अलग करने दलन की भावना मुझमें तेजी से घर करती जा रही थी। मैं उस भेद को अब तेजी से पकड़ने लगा था जो मुझे घाए दिन के जीवन और कितायो जीवन के बीच दिखाई देता था। मेरी छांटों के सामने प्रसली, जीते-जाने का मौजूद थे, लेकिन कितायो के पन्नों में ये कहीं नहीं दिखाई देते थे, - कितायो में न कहीं स्मूरी नजर आता था, न जहाजी घाण्डे, न अलेक्साड्र, न जिलरेय, न नतालया जसी धोबिनें

हाथीदोष के टुक में गोलीस्तिन्को की कहानियों का एक फटा हुआ सा सग्रह, बुल्गारिन कृत "इवान विजीगिन" और बरन ब्रान्चियस की रचनाओं का एक सग्रह पड़ा था। ये सब पुस्तकें मेरे कारीगरों को पढ़कर सुनाई और वे मुनकर बहुत खुश हुए। सारिभोन्चि ने कहा

"कितायें पढ़ने से सु-सु मैं मैं का शोर और आपस में लड़ना सगना सब साफ हो जाता है, और यह एक अच्छी बात है।"

मैं अब कितायो की टोह में घूमता, और जा भी पुस्तकें मेरे हाथ लगतीं उन्हें पढ़कर सुनाता। सास की वे बठने कभी नहीं भूलतीं। बरगाप में आधी रात का सन्नाटा छाया रहता, छत से लटकी काच की गँवें सफ़ेद शीतल सितारों की तरह चमकतीं और उनकी किरणें मेज पर लुके हुए गजे या बिखरे हुए बालों वाले सिरो पर पड़ती रहतीं। शांत और गम्भीर भाव से वे पुस्तक सुनते, बीच-बीच में लेखक या पुस्तक के नामक का तारीफ में एकाध शब्द कहते जाते। पुस्तक सुनते समय वे एकदम बदल जाते, उनके ध्यान-मान चेहरे बहुत ही भोले और भले मालूम होते। मैं उनसे और वे मुझसे पूरा अपनत्व का अनुभव करते। मुझे ऐसा मालूम होता जैसे मैंने अपनी जगह पा ली हो।

एक दिन सितानोव बोला

"पुस्तकें बसती हवा के उस पहले शोके के समाव हैं जो बंद करने की विडकी खोलने पर शरीर के रोम रोम में समा जाता है।"

पुस्तकें पाना कठिन काम था। पुस्तकालय से पुस्तकें मिल सकती थीं, लेकिन यह चीज हमारी कल्पना से बाहर थी। ऐसी हालत में एक ही रास्ता था। वह यह कि जो भी पुस्तकें से भिखारी की भाँति पुस्तकें मागकर मैं । के मुठिया में मुझे

लेमन्तोव की कविताओं की एक पुस्तक दी। कविता भी कितनी शक्तिशाली चीज होती है और किस हद तक वह लोगों को प्रभावित कर सकती है यह मैंने इस पुस्तक को पढ़ने के बाद बहुत ही सजीव रूप में जाना।

मुझे अच्छी तरह याद है कि उस समय जब मैंने लेमन्तोव की "दानव" शीपक वाली लम्बी कविता पढ़नी शुरू की तो सितानोव ने उच्चकर पहले किताब पर नजर डाली फिर मेरे चेहरे की ओर देखा। इसके बाद उसने अपना झुंझ उठाकर नीचे रख दिया और अपनी लम्बी बाहों को घुटनों के बीच जोसकर चेहरे पर मुसकराहट लिए हिडोले की भांति आगे पीछे झूलने लगा। झकोलो के साथ-साथ उसकी कुर्सी भी चरचराती जाती। "सुनो भाइयो, चुप होकर सुनो!" लारिप्रोनिच ने कहा और अपने हाथ का काम अलग रखकर वह भी सितानोव की मेज के पास आ गया जहाँ मैं पुस्तक पढ़कर सुना रहा था।

कविता मेरे हृदय के तार झनझना रही थी, मेरी आवाज भर्रा गयी और आँखों में आँसू आ जाने की वजह से अक्षरों को साफ-साफ देखना मुश्किल हो रहा था। लेकिन कविता से भी अधिक प्रभावित कर रही थी मुझे कमरे में अस्पष्ट, सावधान हलचल। सारी वकशाप मानो भारी करबट ले रही थी, जैसे कि कोई शक्तिशाली चुम्बक लोगों को मेरी ओर खींच रहा हो। जब मैंने पहला भाग समाप्त किया, तो सभी कारीगर अपनी जगह से उठकर मेज से सटे। मुसकराते हुए और भौंहे ताने, अपनी बाहों को एक दूसरे के गले में डाले खड़े थे।

"पढ़े जा, पढ़े जा," पुस्तक के पन्ने पर मेरा सिर धकेलते हुए जिजरेव ने कहा।

जब मैंने पढ़ना समाप्त किया तो उसने पुस्तक को अपने हाथ में उठा लिया, आँखों के पास ले जाकर उसका नाम पढ़ा और फिर उसे अपनी बगल में धोसते हुए कहा

"इसे एक बार फिर पढ़ना होगा। कल सुनाना। तब तक पुस्तक को मैं अपने पास चौकस रखूँगा।"

यह कहकर वह लिसक गया, अपनी मेज का दरवाजा खोला, लेमन्तोव को उसमें बंद किया और इसके बाद वह फिर अपने काम में जुट गया। यकशाप में एक अजीब निस्तब्धता छायी हुई थी। सब चुपचाप अपनी-अपनी जगह पर जा रहे थे। सितानोव लिडकी के पास जाकर निश्चल

खड़ा हो गया। उसका सिर खिड़की के शीशे से सटा हुआ था। जिणोर ने एक बार फिर अपना ब्रुश नीचे रखा और कठोर स्वर में कहा

“एवदा के बंदो, यही है वह चीज जिसे मैं जीवन कहता हूँ। जीवन इसी को कहते हैं।”

उसने अपने कंधे विचकाये, सिर नीचे झुका लिया और फिर बोला

“दानव की तसवीर क्या मैं नहीं बना सकता? तवा सा काला रंग, घेडील बदन, आंग की लपटो जैसे पल-एक दम सिद्धूरी, और चेहरा, हाथ और पाव नीले, कुछ पोलापन लिए हुए, ठोक बसे ही जैसे चारों रात में बफ होती है।”

साझ के भोजन के समय तक, बेचनी से बल खाता, वह अपने स्तन से बंधा रहा। उगलियो से मेज बजाते हुए वह दानव के बारे में, हीवा और स्त्रियो के बारे में, और स्वयं तथा सन्ता के गुनाहो में फसने के बारे में, न जाने क्या क्या बुदबुदाता रहता।

“इसमें जरूर भी झूठ नहीं।” वह बल देकर कहता। “जब सन्त तक पाप में डूबी स्त्रियो के साथ मुह काला करने से नहीं घूकते तो दानव का तो काम ही रगोन ओरे डालकर अछूती आत्माओ को अपने जाल में फसाना है।”

जवाब में किमी ने कुछ न कहा। शायद अर्थ भी मेरी ही भांति समी तक इतने मन मुग्ध थे कि उन्हें वासना अलरता था। वे काम कर रहे थे, लेकिन बेमन से घड़ी पर एक आँख जमाए, और नौ का घड़ा बजत ही सबने तुरंत काम बंद किया।

सितानोव और जिखरेव बाहर सहन में निकल आये। मैं भी उनके पास पहुँचा। सितानोव ने सिर ऊँचा उठाकर तारों की ओर देखा और फिर गुनगुनाने लगा

बलते जाते कारवा

बिलरामे नभ दीपो के विस्तार में

“जरूर सोचो, कसी कसी पकिनया लिखते हैं।”

और तेज सर्दों में कुडमुडाते हुए जिखरेव बोला

“नहीं, मुझे तो कुछ याद नहीं पड़ता—कुछ याद नहीं। लेकिन दिखाई सब कुछ पड़ता है। कितनी अजीब बात है कि इसान गतान पर भी तरस खाने के लिए बाध्य कर देता है। क्यों, ठीक कहता हूँ न?”

"हा," सितानोव सहमति प्रकट करता।

"इसे कहते हैं इसान।" जिखरेव ने कभी न भूलनेवाले अदावत में कहा।

लौटकर डपोडी में उसने मुझे ताकीद की

"देख, दुकान पर इस किताब का किसी से जिक्र तक न करना। जरूर यह उन किताबों में से है जिसे पढ़ने की मनाही है।"

यह सुनकर मेरी खुशी का चारपार न रहा। तो ऐसी होती है घे धजित पुस्तकें जिनके बारे में पाप-स्वीकारोक्ति के समय पादरी ने मुझसे पूछा।

सात के भोजन के समय भी सब खोये-खोये से थे। वह चहल-पहल और नोक-शोक गायब हो गयी जो नित्य दिखाई देती थी। ऐसा मालूम होता जैसे किसी अनहोनी और भारी घटना ने सब के विमाणा को उलसा लिया हो। भोजन के बाद जब अर्ध सब सोने के लिए चले गये तो जिखरेव ने पुस्तक निकाली और मुझसे बोला

"यह ले, इसे फिर पढ़कर सुना। लेकिन धीरे धीरे पढ़ना, बिना किसी उतावली के "

कुछ और लोग अपने बिस्तरों से चुपचाप उठे और मेज के पास आएर उसके इव गिद बैठ गये। उनके चदन अपनगे थे।

और जब मैंने पढ़ना खत्म किया तो जिखरेव, अपनी उगलियों से मेज को धजाते हुए, एक बार फिर कह उठा

"इसे कहते हैं जीवन! ओह दानव, दानव तेरे साथ भी बहुत बुरी बोती, मेरे भाई!"

सितानोव ने मेरे कंधों पर से उचककर कुछ पकितया को पढ़ा, हसा और बोला

"इहें मैं अपनी कापी में उतार लूंगा "

पुस्तक अपने हाथ में लेकर जिखरेव उठा और अपनी मेज की ओर चल दिया। लेकिन एकाएक रुककर आहत और विचलित स्वर में बोला

"जीवन की दलदल में हम उन पिल्ला की नाति घिसटते हैं जिनकी आंखें कभी नहीं खुलतीं। कपो और जिस लिए, यह कोई नहीं जानता। न खुदा को हमारी खतरत है, न गतान को। और कहा यह जाना है कि हम खुदा के बंदे हैं। जीव खुदा का बंदा था, और खुदा उसमें बाते

परता था। यही बात मुसा के बारे में भी थी। लेकिन हम— वह
यतामो तो सही कि हम जिस संत की मूर्ती हैं?—”

विताय को उसने भेज के दरवाजे में खद खर दिया और क्या पत्नी
हुए सितामोय से बात

“भटियारजाते चलेगा?”

“नहीं, मैं अपनी के पास जा रहा हूँ,” निश्चल धावात में उन्हे
जयाय दिया।

उन्हे घले जाने के बाद मैं दरवाजे के निकट पावेल भोबिन्तमोय के
पास ही पना पर सेट गया। कुछ देर तक तो वह कांसता-कराहता और
बरपट्टे बदलता रहा फिर एकाएक दबे स्वर में उसने रोना शुरू कर दिया।

“क्यों क्या बात है?”

“अप्य नहीं सहा जाता,” वह बोला, “मुझे इन सब पर रोना आता
है। धार साल से मैं इनके साथ जी रहा हूँ। सभी को मैं अच्छी तरह
जानता हूँ—”

मुझे भी इन लोगों पर तरस आ रहा था। काफी रात बीत गयी,
लेकिन हमारी आँस नहीं लगी। देर तक फुसफुसाकर हम उनके बारे में
घातों परते रहते। उनमें से हरेक के हृदय में छिपी भलमनसाहत और
अच्छाइयो की हम याद कर रहे थे जिससे क्या के हमारे बचकाने आवेश
में और भी तेजी आ रही थी।

पावेल भोबिन्तमोय और मैं गहरे मित्र बन गए। आगे चलकर वह
बहुत ही बढ़िया कारीगर सिद्ध हुआ, लेकिन इस घरे में वह ज्यादा दिना
तक नहीं टिका। तीस वय का होते न होते वह पक्का पिपस्कड बन गया।
इससे कुछ समय बाद मास्को की खीमोव मार्केट में वह मुझे दिखाई दिया,
एक आवारा के रूप में। फिर कुछ ही दिन बीते होंगे कि सुनने में आया,
मियाबी बुलार ने उसकी जान ले ली। कितने ही अच्छे लागा से इस
जीवन में मेरा वास्ता पडा और उनके जीवन को, बिला किसी मकसद के,
भूल में मिलते हुए मैंने देखा। उनकी जब याद आती है तो रूह कांप
उठती है। यो मरने खपने को तो लोग सभी जगह मरते-खपते हैं। और
यह स्वाभाविक भी है। लेकिन जिस तेजी और जेतुके ढग से वे रूस में
मरते-रापते और बरबाद होते हैं, उतने अप्य कहीं नहीं

उन दिनों पावेल गोल-भटोल चेहरे वाला लडका था। मुससे कोई दो

साल बड़ा होगा। चुस्त, चतुर और ईमानदार। कलाकार की प्रतिभा से सम्पन्न। बिल्ली, कुत्ते और पक्षियों के चित्र बनाना तो जैसे वह मा के पेट में ही सीखकर आया था। साथी कारीगरों के व्यंग चित्र बनाने में वह कमाल करता और हमेशा पक्षियों के रूप में वह उन्हें चित्रित करता। सितानोव को वह उदासी में डूबा कठफोड़वा बनाता जो एक टांग पर खड़ा होता, जिखरेव को वह एक ऐसा भुर्गा समझता जिसकी कलगी छितरा गई थी और खोपड़ी के बाल झड़ गए थे, और मरियल दावीदोव को वह उदास पीविट पक्षी के रूप में चित्रित करता। लेकिन सबसे बढ़िया व्यंग चित्र बूढ़े गोगोलेव का होता जो खुदाई के बेल-बूटे बनाता था। उसे वह घमगादड के रूप में चित्रित करता—छूब बड़े-बड़े कान, डरावनी नाक और छोटे छोटे पाव जिनमें छ छ नुकीले नाखून निकले होते। और उसके गोल चेहरे में, जिसे वह काला पोत देता, आँखों के सफेद घेरे दूर से दिखाई देते। घेरो के भीतर पुतलिया बनी होतीं। ऐसा मालूम होता मानो लालटेन उलटकर रख दी गयी हो जिससे उसका चेहरा और भी उजबका सया शतानी से भरा दिखाई देता।

कारीगरों को जब वह अपने व्यंग चित्र दिखाता तो वे बुरा न मानते, लेकिन गोगोलेव का चित्र उन सभी को धिनाना मालूम होता। उसे देखकर वे कहते

“अच्छा घटी है कि इसे फाड़ डाल। अगर बूढ़े ने इसे देख लिया तो तेरी जान सा जाएगा।”

यह बूढ़ा जो ऊपर से नीचे तक गदगी और कमीनेपन में डूबा था और चौबीसों घंटे नदों में धुत्त रहता था, काला नाग होते हुए धर्मत्मा होने का दोग रचता, कारिदे से हर किसी की चुगली खाता। मालकिन अपनी भतीजी को कारिदे से ब्याहना चाहती थी और इसलिए वह अभी से अपने आपको धरशाप और उसमें काम करनेवाले सभी लोगों का मालिक समझने लगा। सभी उससे डरते थे और घृणा भी करते थे, और इसी वजह से उसके गुणों गोगोलेव से भी सब दूर से ही कन्नी फाटते थे।

पावेल ने तो जैसे इस बूढ़े को परेगान करने का इरादा ही कर लिया था। एक क्षण के लिए भी वह गोगोलेव का पीछा न छोड़ता, और उसे दारा भी घन से न बठने देता। इस काम में मैं भी उसका छूब हाथ बटाता। जब भी हम कोई हरकत करते जो लगभग हमेंगा बेरहमी

की हथ तब मदी होती, वषणाय के बारीगर मन ही मन एग हाने,
और चेतायनी देते

“सभलवर रहना! ‘बुज्जमा तिलचट्टा’ तुम्हें छोटेगा नहीं।”

कारिदे को वषणाय मे सब बुज्जमा तिलचट्टा कहते थे।

इन चेतायनियो की हम सुना-अनसुना कर देते। बूड़ा गोगोलेव जब सोता होता तो हम अक्सर उसका मुह रग देते। एक बार उस समय जब कि यह नशे मे धुस पडा था, हमने उसकी पकीडे सी नाक पर सुनहरी रोपन कर दिया जो पूरे तीन दिन तब नाब के रोमो मे समाया रहा। लेकिन हमारी शतानी हरकतो से जब उसके सिर पर गुस्से का भूत सवार होता तो मुझे जहाज और व्यात्ता के टुइया सनिक की याद ही आती, मेरी आत्मा मुझे बचोडती और एक घडी चन न लेने देती। बूड़ा होने के साथजुद गोगोलेव बम-खम में हमसे बढ़कर था। यह अक्सर औचक में हमे पकड लेता और इतनी भरमभत करता कि तबीयत हरी हो जाती। इतना ही नहीं, बल्कि पीटने के बाद मालकिन के पास जाकर वह हर बात की शिकायत भी करता।

मालकिन को भी नशे की लत थी, और नशे की तरग मे हमेगा खिलखिलाती और मग्न रहती थी। अपने सूजे हुए से हाथ मेज पर पटककर और चिल्लाकर वह हमे डराने का प्रयत्न करती। कहती

“शतान के बच्चो, तुम अपनी शरारत से बाज नहीं आओगे? इतना भी नहीं देखते कि वह बूड़ा आदमी है और तुम्हें उसकी इज्जत करनी चाहिए। बोलो, उसके शराब के गिलास मे मिट्टी का तेल किसने उडला?”

“हमने।”

मालकिन ने आखें मिचमिचाकर देखा।

“हाथ भगवान, बसे शतानो से पाला पडा है। देखो न, किस तपाक से कहते हैं कि हमने! क्या, ऐसा कहते तुम्हारी जोभ कटकर नहीं गिर जाती? क्या तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि बडे-बूडो की इज्जत करनी चाहिए?”

उस समय तो यह हमे घता बताती और रात को कारिदे से हमारा शिकायत करती। कारिदा कठोर स्वर मे मुझे डाटता

“यह क्या हरकत है? किताने पड़ता है, बाइबल तक पढ लेता है, फिर भी इस तरह की हरकते करने से बाज नहीं आता? सभल के, बच्चू!”

मालकिन का न कोई सगी या न साथी, अकेले सूना जीवन बिताती और उसे देखकर बड़ी दया आती। अक्सर वह नशे में धुत्त होकर खिडकी के पास बैठ जाती और उदास तथा उन्न की मार से डावाडोल स्वर में गुनगुनाती

नहीं कोई ऐसा जो पूछे
अपनी बात,
नहीं कोई ऐसा जो खोले
दिल की गाठ।

एक दिन मैंने देखा कि क्रोध से भरा मटका हाथ में लिए वह जीने पर आई और भारी कदमों से थपथप करती एक एक सीढ़ी नीचे उतरने लगी। अपने फले हुए हाथों में वह मटके को मजबूती से पकड़े थी, क्रोध छलक छलककर उसके कपड़ों पर गिर रहा था, और वह मटके को बाकायदा डाट पिला रही थी

“देखता नहीं शंतान, किस बुरी तरह छलक रहा है?”

वह मोटी नहीं थी, किन्तु मुलायम और फुसफुसी थी, उस बूढ़ी बिल्ली की भाँति जिसके लिए चूहे पकड़ना बीते दिनों की एक यादगार मान रह गया हो, जो खा-खाकर भारी हो गई हो और अब अलस भाव से एक जगह पड़कर केवल अतीत के सुहावने रास रंगों का ताना-बाना बुन सकती थी।

भौंहों में बल डालकर सितानोव पुराने दिनों की याद करता

“ऊह, उस जमाने में यहाँ का रंग देखते तो दम रह जाते। यह एक बहुत ही बड़ा कारबार था। बकशाप भी खूब बढ़ी चढ़ी थी और उसकी बेज्ज भाव का काम एक बहुत ही कुशल कारीगर के सिम्ने था। लेकिन अब वह बात कहा। अब तो सब कुछ ‘कुजमा तिलचट्टे’ के हाथों में चला गया। हम चाहे जितना सिर खपाए, चाहे जितना खून पसीना एक करें, धूम फिरकर अकेले उसी की चादी गरम होती है। सोचकर कलेजा बल खाने लगता है, जो करता है कि काम को घटा बताकर छत पर चढ़ जाओ और समूची गमिया आकाश की ओर ताकते हुए बिता दो”

सितानोव के विचारों ने पावेल ओदिन्तसोव को भी घस लिया। बड़ों की तरह सिगरेट का धुआ उड़ाते हुए वह भी खुदा, शर्राबखोरी, लिप्रयो और धम की व्ययता के बारे में लम्बी चौड़ी बातें करता, “कुछ लोग

दिन रात खून पसीना एक करके चीजें बनाते हैं और दूसरे, बिना कुछ सोचे समझे उन्हें नष्ट करने की ताकत में रहते हैं। काम करना या न करना सब बराबर हो जाता है।”

ऐसे क्षणों में उसके बच्चों जैसे चपल, सुंदर और तेज चेहरे पर झुरिया उभर आतीं और ऐसा मालूम होता मानो वह बूढ़ा हो गया हो। रात के समय फश पर बिछे अपने बिस्तर पर वह बठ जाता, घुटनों को अपनी बाहों में दबोच लेता और उसकी आँखें खिड़की के नीले चौखटों का पार कर शीतकालीन आकाश में छितरे तारों और सायबान का छत की टोह लेतीं जो अब शफ के बोझ से दबी रहती थी।

कारोगर घरट्टे भरते और नींद में बडबडाते रहते। कोई इस तरह चिल्ला उठता मानो दुस्वप्न देख रहा हो। सबसे ऊपर वाले तल्ले से दाबीदोव अपनी जिंदगी का बचा खुचा अंश खासी और बलगम के रूप में थूकता रहता। उधर सामने वाले कोने में 'खुदा के बंदे' कापेबयूजिन, सोरोकिन, और पेशिन नशे तथा नींद में निढाल बोरा की भांति एक दूसरे से सटे पड़े रहते। बेसिर, बेहाथ और बेपाव वाली देव प्रतिमाएँ दीवारों के साथ टिकी साकती रहतीं। तेल, सड़े अडो और फश की बरारों में भरे कूड़े कचरे की गंध सास तक लेना डूबर कर देती।

पावेल बुबबुदाकर कहता, “हे भगवान, इनकी हालत पर मुझे कितना तरस आता है।”

तरस की इस भावना से मेरा हृदय भी भारी और उदास रहता। हम दोनों को, जसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, ये लोग अच्छे मालूम होते, लेकिन जिस तरह का जीवन वे बिताते थे वह धुरा, उनके लिए सबथा अनुपयुक्त तथा कठोर, बेहद बेरस और बोझिल था। जब महान अन्न के लिए गिरजों के घंटे बजते, बर्फीली आधिया सनसनातीं और घर, पेड तथा धरती की हर चीज कापने, कराहने और सुबकने लगती, तब सीसे की भारी चादर की तरह वकशाप पर गहरी ऊब छा जाती, जो कारोगरों का दम घोटती और ऐसा मालूम होता मानो जीवन का कोई चिह्न उनमें शेष नहीं छोड़ेगी, सभी कुछ पाले में झुलस और मुरसा जाएगा। धबराकर वे बाहर निकलते, शराबखाने की ओर लपकते, या औरतों की बाहों में डुबक जाना चाहते जो, बोदका की बोतल की तरह, ऊब को भूलने में उनका हाथ बटातीं।

इस तरह के क्षणों में पुस्तकों का जादू कुछ काम न करता और मैं तथा पावेल जो बहलाने के अर्थ साधनों का सहारा लेते। रग रोगन और काजर से हम अपने चेहरे को पोतते, सन की दाढ़ी और मूँछें लगाते, अपनी सूत्र-चूत्र के अनुसार तरह-तरह का हास्याभिनय करते और ऊब के विरुद्ध बीरतापूर्ण सघर्ष करते हुए लोगों को हसने के लिए बाध्य करते। “एक सैनिक ने किस प्रकार प्योत्र महान की जान बचाई” वाली कहानी मुझे याद थी। इस कहानी को मैंने कथोपकथन के रूप में ढाल लिया। जिस तस्ते पर दायीदोय सोता था, उसे हम अपना मंच बनाते और बड़े उछाह के साथ कल्पित स्वीडनो के सिर बलम करते। दशक हसते हसते बोहरे हो जाते।

चीनी शतान तिसगी-यु-तोग की कहानी वारीगर बेहव पसंद करते। पाश्का अभागो शतान का अभिनय करता जिसके मन में, बावजूद इसके कि वह शतान था, भलाई करने की धुन समा गई थी। बाकी सारा अभिनय मैं खुद करता। मुझे स्त्री भी बनना पड़ता और पुरुष भी, कभी मैं किसी पेड़ का तना बनकर खड़ा होता और कभी भली रूह, यहा तक कि मुझे वह पत्यर भी बनना पड़ता जिसपर कि शतान, भलाई करने के अपने हर प्रयत्न की विफलता के बाद निराश होकर बठता था।

देखनेवाले खूब हसते और उह इतनी आसानी से खुश होते देख मुझे अचरज भी होता और दुख भी। वे चीखते और चिल्लाते

“बाह, मुह मटकाने में तुम कमाल करते हो! मजा आ गया!”

लेकिन इस सब के बावजूद रह रहकर यह बात आखो के सामने उभरे बिना न रहती कि इन लोगों का रज से जितना वास्ता था, उतना खुशी से नहीं।

हमारे यहा हसी-खुशी या रगरेलिया अधिक बिना तक कभी नहीं टिकतीं, न ही अपने आप में उनका कोई मूल्य होता। रज में डूबे रहने के आदी हसी हृदय को भरमाने के लिये एक कठिन प्रयास के रूप में, उनका जान-बूझ कर उपयोग किया जाता। उस हसी खुशी का क्या भरोसा जिसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व न हो, अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाने की जिसमें कोई कामना तक न हो, और केवल जीवन की भयानकता को आखो की ओट करने के लिए ही जिसकी याद की जाती हो!

और इसलिए रुसियो की हसी-खुशी और उनकी रगरेलिया, प्राज्ञा के प्रतिफल और एकदम अनजाने में ही, अक्सर दूर और निम्न नाटक का रूप धारण कर लेतीं। नाचते-नाचते, ठीक उस समय जब कि नृत्यकार अपने बंधनों को तोड़कर उन्मुक्त भाव से हवा में तरता और लहराता मालूम होता, एकाएक उसके भीतर का पशु जाग उठता और रस्सा तुड़ाकर हर व्यक्ति और हर चीज पर टूट पड़ता - गरजता, उबलता उफनता, सभी कुछ मटियामेट करता हुआ

अबरदस्ती के और एकदम बाहरी अवलम्बनों पर टिकी इस हसी-खुशी से मैं इतना भना जाता और इस घुरी तरह झुमला उठता कि धन में आकर सभी कुछ ताक पर रख देता, और उसी क्षण जो भी उसका सीधा मन में आता, उनका अभिनय करने में पूरी मनमानी का परिचय देता। उन्मुक्त और स्वतः स्फूर्त खुशी का उनमें संचार करने के लिए मैं पागल सा हो उठता! मेरी कोशिशें पूर्णतया बेकार भी न जातीं। कारीगर अधिकृत हो जाते, मुग्ध भाव से प्रशंसा करते, लेकिन वह निराशा और उबासी जिसे मैं समझता कि गायब हो गई है, वापिस लौट आती, और धनी तथा गहरी होती हुई पहले की भांति फिर उन्हें बबोच लेती।

घूसर लारियोनिच कोमल स्वर में कहता

“सच, तू भी एक कयामत है। खुदा तुझे लम्बी उम्र दे।”

“जी हल्का हो जाता है,” जिखरेव स्वर में स्वर मिलाता। “तू किसी सरकस या नाटक-कम्पनी में क्यों नहीं भर्ती हो जाता? तुझसे बढ़िया जोकर उन्हें ढूँढ़े न मिलेगा।”

बकशाप में काम करनेवालों में केवल कापे-द्यूज़िन और सितानोव ही ऐसे थे जो बड़े दिन या शोबटाइड के अक्सर पर नाटक देखने जाते थे। बड़े कारीगर इस पाप का प्रायश्चित्त करने पर जोर देते। कहते कि बक में गढ़ा खोदकर जब तक नदी में डुबकी नहीं लगाओगे, खुदा तुम्हें माफ नहीं करेगा। लेकिन सितानोव था कि बार-बार मुझसे कहता

“तू भी कहा आ फसा? छोड़ यह सब, और नाटक-कम्पनी में भर्ती हो जा।”

और विचलित होकर मुझे “अभिनेता याकोव्लेव के जीवन” की दृढ़ भरी कहानी सुनाने लगता तथा अंत में कहता

“देखा, दुनिया में क्या-क्या हो सकता है।”

रानी मेरी स्टुअर्ट वा, जिसे वह 'लोमड़ी' कहता था, बड़े चाव से चिक्र करता और "स्पेन का बाका वीर" का चिक्र करते समय तो उसके उछाह का बारापार न रहता। कहता

"दोन सिखार द बजान बाके खानदान का एक बाका वीर था, मवसीमिच ! सचमुच मे असाधारण !"

अपने आप मे वह खुद भी कुछ कम बाका वीर नहीं था। एक दिन, चौक मे दमकल की मीनार के सामने, तीन आग बुझानेवाले मिलकर किसी देहातिये पर दूट पड़े। चारो ओर करीब घालीस लोगो की भीड जमा हो गई। देहातिये को बचाना तो दूर, भीड ने पीठनेवालो की पीठ थपथपाना और उन्हें खूब उकसाना शुरू कर दिया। सितानोब ने आब देखा न ताब, लपककर वहा पहुंचा और अपनी लम्बी बाहो से हमलावरो को मार भगाया। इसके बाद देहातिये को उठाकर उसे भीड के ऊपर धकेल दिया और चिल्लाकर बोला

"ले जाओ इसे !"

अकेला ही वह उटा रहा, तीन-तीन से उसने लोहा लिया। आग बुझाने का स्टेशन पास ही था, केवल बीस एक कदम पर। आग बुझानेवाले अगर मदद के लिए चिल्लाते तो उ हे साथी मिलने मे जरा भी कठिनाई न होती, और वे सितानोब को ऐसी मार पिलाते कि वह भी पाद रखता। गनीमत यही थी कि उनके औसान एता हो गए और वे उलटे पाव भागते नसर आए।

"हरामी कुत्ते !" उ ह भागता हुआ देख सितानोब चिल्लाया।

रविवार के दिन युवा फारीगर पेनोपान्लोक्क कब्रिस्तान के उस पार इमारती लकड़ी की टालो की ओर जाते और सफाई दल के लोगो और आसपास के गावो के किसानो से धूसेबाजी का खेल खेलते। सफाई दल मे एक प्रसिद्ध मोरदोवियाई धूसेबाज था—देब की भाति डील डील, छोटा सा सिर, और चिपचिपी आँखें। उसे ही वे सबसे आगे लडा करते और वह, फली हुई अपनी टांगो को मजबूती से धरती पर जमाए, गदे कोट की आस्तीन से अपनी रिसती हुई आँखो को पोछना और सहज भाव से शहरी भाइयो को ललकारता

"चले आओ जिसे आना हो। जल्दी करो, ठड हो रही है !"

कापेदपूखिन आगे बढ़ता। हमारी ओर से एक वही उससे निजा और मोर्दोवियाई हर बार उसके अजर-अजर ढीसे कर देता। खून न बह रहा जाता और हाफता हुआ चिल्लाकर कहता

“देख लेना, एक दिन मैं भी ऐसे बात खट्टे करूंगा कि मोर्दोवियाई सारी उम्र याद रखेगा!”

और अन्त में मोर्दोवियाई के बात खट्टे करना ही उसके जीवन का लक्ष्य हो गया। इसके लिए, पूरी सत्ती से वह अपने को साधता और तयार करता। वह अब शराब न पीता, श्यादातर मांस ही खाता और हर साक्ष की सोने से पहले, बर्फ से अपना बदन रगड़ता, बाहों की मछलियाँ निकालने के लिए दोहरा होकर मन भर पक्का बटखरा उठाता। लेकिन मोर्दोवियाई को वह फिर भी नहीं पछाड़ सका। अन्त में अपने दस्तानों में उसने सीसे के टुकड़े भर लिए, और सितानोव से शोखी बधाई देते हुए बोला

“अब उसका अन्त ही समझो।”

सितानोव की भौंहों में बत्त पड़ गए। कड़े स्वर में बोला

“सीसे के टुकड़े निकाल डाल, नहीं तो मैं भिडन्त में पहले ही सारा भडा फोड़कर दूंगा।”

कापेदपूखिन को विश्वास नहीं हुआ कि वह ऐसा करेगा। लेकिन ठीक भिडन्त से पहले सितानोव ने एकाएक मोर्दोवियाई से चिल्लाकर कहा

“जरा ठहरो, धासीली इवानोविच। कापेदपूखिन से पहले मेरी भिडन्त होगी!”

अज्ञात का चेहरा लाल पड़ गया। चिल्लाकर बोला

“मैं तुमसे नहीं लड़ूंगा! चला जा यहाँ से!”

“लड़ेगा कते नहीं?” सितानोव ने कहा और बढ़ चला।

एक क्षण के लिए कापेदपूखिन सबपक्वामा, फिर तेजी से उसने अपने दस्ताने उतार डाले और उन्हें अपने कोट के भीतर वाली जेब में लोतता हुआ वहाँ से नीचे ग्यारह हो गया।

दोनों पन्ना में से एक भी इस तरह की घटना के लिए तयार नहीं था। उन्हें अचरज भी हुआ और डर भी। भिडन्त का सारा भडा फिरफिरा ही गया। भती सी गल्ल के एक आदमी ने गुमतावर सितानोव से कहा

“यह कायदे के खिलाफ है। खेल में तुम निजी झगडों का भुगतान नहीं कर सकते।”

सितानोव पर चारों ओर से बौछार होने लगी। काफी देर तक तो वह चुप रहा। फिर भली सी शक्ल वाले आदमी से बोला

“तुम्हारा मतलब यह कि खेल में खून खराबा हो तो उसे भी होने दिया जाए, — क्यों?”

भली सी शक्ल वाला आदमी तुरत सारा मामला समझ गया, और टोपी उतारकर मुसकराते हुए बोला

“अगर ऐसी बात है तो अपने पक्ष की ओर से हम तुम्हें धरबाद देते हैं।”

“लेकिन इस बात का डोल पीटने की जरूरत नहीं। अपनी जुबान बंद ही रखना।”

“मैं जुबान का डीला नहीं हूँ। कापेदय्ज़िन पहुँचा हुआ धूसेबाज है, पर बार-बार की हार से आदमी खुदक खाने लगता है, हम यह समझते हैं। लेकिन अब हम, भिडन्त से पहले, उसके दस्ताना को ज़रूर देख लिया करेंगे।”

“यह तुम जानो, जो ठीक समझो, करो।”

भली सी शक्ल वाला आदमी जब चला गया तो हमारे पक्ष के लोगों ने सितानोव को आड़े हाथों लेना शुरू किया

“तू भी निरा चुगद है। आखिर तुझे बीच में टाप अडाने की क्या जरूरत थी? कापेदय्ज़िन ने आज सारी कसर निकाल ली होती। लेकिन अब तूने हम सब के मुँह पर कालिल पोत की ”

देर तक और बिना दम लिए रस ले लेकर सब सितानोव को षोचते रहे।

सितानोव केवल लम्बी साँस खींचकर रह गया और बोला

“आह, कमीने ”

इसके बाद एकाएक मोर्दोवियाई को ललकारकर उसने सभी को चकित कर दिया। चुनौती सुनते, ही मोर्दोवियाई आगे आकर जम गया और धूसा हिलाते हुए हसकर बोला

“अच्छी बात है। आओ, आज तुम्हारे साथ ही बदन को थोड़ा गरमा लिया जाए! ”

ने हाथ में हाथ डालकर एक बग ना घा
 बाहर हो गई, और लड़नेवाले उमड़े बना।
 एक दूसरे के चेहरे पर नटर मार,
 और दोनों सीने पर रखे और दाहिने हाथ का घुना तने,
 के भीतर चक्कर काटने लगे। पारसी दाहों ने
 के सिनानोव की बाहें मोरदोवियाई की बाहों से रग
 सा छा गया। लड़नेवालों के पावों के तने
 और कोई आवाज नहीं आ रही था। तनी तनी
 उरताकर शिकायती स्वर में बडबडाने हुए रहा
 "सानी चक्कर लगा रहे हैं"

घुसा घुसा गया, मोरदोवियाई ने अपने बदा
 और तभी एकाएक सिनानोव ने बाए घुसे से हथ
 किया। कराहता हुआ मोरदोवियाई पीछे हटा और

बड़ो उम्र का ही समझता था, लेकिन तुम तो नि
 परमा गया। घुसे खोरों से हवा में झूलने और
 बुर-बुर करने के लिए सपलपाते। देखने-देखने दोनों
 एक हलचल सी मच गई। जोग और उछाह में भरका
 लड़नेवालों को बढ़ावा देते

क्या है, झूतसाज! क्या वे ऐसी तसवीर कि वह भी बन
 सिनानोव से वहीं तगडा था, लेकिन चपल नहीं था।
 कुर्तों और तेवी से वार नहीं बधा पाता और हर प्रहार के
 पीन प्रहार का करना पड
 कास प्रभाव न ह
 तित्सी उडता
 जमाया कि कि

“मूरतसाज मे साकत तो इतनी नहीं है, लेकिन चपल खूब है!” मोरबोवियार्ड ने हसते हुए कहा। “सच, एक दिन यह अच्छा घूसेबाज बन जाएगा। मैं खुले आम यह ऐलान करता हू।”

युवको ने जो अब तब दसाक बने हुए थे, एक दूसरे को खुलकर चपतियाने का खेल शुरू कर दिया। सितानोव को लेकर मैं हड्डी बठानेवाले के पास पहुँचा। जिस साहस का उसने परिचय दिया था, उससे मेरे हृदय मे उसकी इज्जत और भी बढ़ गयी। यह मुझे अब और भी ज्यादा अच्छा लगता, और मैं उसका और भी ज्यादा सम्मान करता।

यह सदा पाय और ईमानदारी का पक्ष लेता, और ऐसा मालूम होता मानो यह सब करना वह अपना कतव्य मानता था। लेकिन कापेद्यूखिन जब भी मौका मिलता उसका मजाक उड़ाता

“बाह सितानोव तू तो बस लोगों को दिखाने के लिए जीता है। और अपनी आत्मा को रगड़ रगड़कर सूने इतना ब्रमका लिया है कि क्या कोई समोवार को ब्रमकाएगा। इस तरह सब जगह घूमता है, मानो इस दुनिया मे तुम्ही से उजाला हो। लेकिन सब बात यह है कि तेरी आत्मा पीतल की है और तेरे साथ अब आती है ”

सितानोव जरा भी टस से मस न होता। वह सीधे अपना काम करता या कापी मे लेर्मोन्तोव की कविताएँ उतारता। अपना सारा खाली समय वह कविताएँ उतारने मे ही बिताता। एक दिन मैंने उससे पूछा

“तुम्हारे पास पैसे की कमी नहीं। अपने लिए पुस्तक क्यों नहीं खरीब लाते ?”

“नहीं, अपने हाथ की लिखावट मे नकल उतारना कहीं ज्यादा अच्छा है!” वह जवाब देता।

वह छोटे छोटे और सुंदर अक्षर बनाता। पन्ना भर जाने पर वह स्याही सूखने का इंतजार करता, और धीमे स्वर मे गुनगुनाता हुमा पढ़ता

पञ्चाताप, बिना दुख के तुम
ताकोगी भू की जडता,
जहां नहीं सुख, सुष्मा सच्ची
जहा न शाश्वत सुंदरता

पास खड़े लोगो ने कई ने हाथ मे हाथ डालकर एक बड़ा सा पट्टा बना लिया। भौड़ घेरे से बाहर हो गई, और लड़नेवाले उसके भीतर।

इसके बाद घूसेबाजी शुरू हो गई। एक दूसरे के चेहरे पर नजर गड़ा, घाए हाथ की बर्फी मुट्ठी सीने पर रखे और दाहिने हाथ का घूसा ताने, भयर की भांति वे घेरे के भीतर चक्कर काटने लगे। पारखी दगकों ने तुरत भाप लिया कि सितानोव की बाहे मोर्दोवियाई की बाहो से क्या सम्बन्धी हैं। सभी पर सन्नाटा सा छा गया। लड़नेवाला के पावा के नीचे बर्फ कचरने के सिवा और कोई आवाज नहीं आ रही थी। तभी किसी ने सन्नाटे के सनाथ से उकताकर शिकायती स्वर मे बड़बड़ाते हुए कहा

“इतनी देर से खाली चक्कर लगा रहे हैं ”

सितानोव का दाहिना घूसा घूम गया, मोर्दोवियाई ने अपने बचाव मे बाया घूसा उठाया और तभी एकाएक सितानोव ने बाए घूसे से ताप उसके पेट पर प्रहार किया। कराहता हुआ मोर्दोवियाई पीछे हटा और मुग्ध भाव से बोला

“मैं तुम्हे कच्ची उम्र का ही समझता था, लेकिन तुम तो जिने शस्तम निकले!”

इसके बाद झलाडा गरमा गया। घूसे जोरो से हवा मे झूलने और एक दूसरे की पसलियां छूर-छूर करने के लिए सपलपाते। देखते-देखते दोनों पक्षो के दशको मे एक हलचल सी मच गई। जोश और उछाह म भरकर वे चिल्लाते और लड़नेवालो को बड़ावा देते

“देखता क्या है, मूरतसाज! बना दे ऐसी तसवीर कि वह भी पात रले!”

मोर्दोवियाई सितानोव से कहीं तगडा था, लेकिन चपल नहीं था। वह उतनी ही फुर्ती और तेजी से चार नहीं बचा पाता और हर प्रहार के बदले मे दो या तीन प्रहार का उसे भुगतान करना पडता। लेकिन प्रहारों का उसपर कोई खास प्रभाव न होता। अपने प्रतिद्वन्दी पर वह उसी तए गरजता और उसकी खिल्ली उडाता रहा। अंत मे एकाएक उछलकर उसने इतने जोरो से घूसा जमाया कि सितानोव की दाहिनी बाह घूत से बाहर निकल आई।

“अरे, इहे छुडाकर एक दूसरे से अलग करो! बराबर का जोर रहा, न कोई हारा न जीता!” एक साथ कई आवाजें चिल्ला उनीं। दशक सपककर भागे बढ़े, और लड़नेवाला को छुडाकर अलग कर दिया।

“भूतसाज में ताकत तो इतनी नहीं है, लेकिन चपल खूब है!” मोरदोवियाई ने हसते हुए कहा। “सच, एक दिन यह अच्छा घूसेबाज बन जाएगा। मैं खुले आम यह ऐलान करता हूँ।”

युवको ने जो अब तक दशक बने हुए थे, एक दूसरे को खलकर चपतियाने का खेल शुरू कर दिया। सितानोव को लेकर मैं हट्टी बँठानेवाले के पास पहुँचा। जिस साहस का उसने परिचय दिया था, उससे मेरे हृदय में उसकी इज्जत और भी बढ़ गयी। वह मुझे अब और भी ज्यादा अच्छा लगता, और मैं उसका और भी ज्यादा सम्मान करता।

यह सदा याम और ईमानदारी का पक्ष लेता, और ऐसा मालूम होता मानो यह सब करना वह अपना कतव्य मानता था। लेकिन कापेबयूज़िन जब भी मौका मिलता उसका भजाक उड़ता

“बाह सितानोव तू तो बस लोगों को दिखाने के लिए जीता है। और अपनी आत्मा को रगड़ रगड़कर तूने इतना धमका लिया है कि क्या कोई समोवार को चमकाएगा। इस तरह सब जगह घूमता है, मानो इस दुनिया में तुम्ही से उजाला हो। लेकिन सच बात यह है कि तेरी आत्मा पीतल की है और तेरे साथ ऊब आती है ”

सितानोव जरा भी टस से मस न होता। वह सीधे अपना काम करता था कापी ने लेमोन्तोव की कविताएँ उतारता। अपना सारा खाली समय वह कविताएँ उतारने में ही बिताता। एक दिन मैंने उससे पूछा

“तुम्हारे पास पसे की कमी नहीं। अपने लिए पुस्तक क्यों नहीं खरीद लाते ?”

“नहीं, अपने हाथ की लिखावट में नकल उतारना वहाँ ज्यादा अच्छा है।” वह जवाब देता।

वह छोटे छोटे और सुवर अक्षर बनाता। पन्ना भर जाने पर वह स्याही झूलने का इंतजार करता, और धीमे स्वर में गुनगुनाता हुमा पढता

पश्चाताप, बिना दुख के तुम
ताकोगी भू की जड़ता,
जहाँ नहीं सुख, मुझ्मा सच्ची
जहाँ न शश्वत सुदरता

और आखो को सिकोडते हुए कहता, "यही सचाई है! वाह, का गूढ़ ज्ञान है सचाई का!"

कापे-दयूखिन को सभी हरकतों के बावजूद सितानोव उसके साथ इतना भलमानसी से पेश आता कि देखकर अचरज होता। नगे में बसुप, प्राये ही जब वह सितानोव से लड़ने के लिए शपटता तो सितानोव बहुत हाँ ठड़े हृदय से उसे रोकने की कोशिश करता

"भले आदमी, ऊपर बयो गिरे पडता है। जरा दूर रह!"

लेकिन वह बाज्र न आता, और अन्त में सितानोव इतनी बरहमी से उसकी मरम्मत करता, यहा तक कि अग्र कारीगर सज्जप देखने का प्रबन्ध मोह होने पर भी आगे बढ़कर दोनों को खींचकर एक दूसरे से दूरा कर देते।

"यह तो कहो कि हमने ऐन मौके पर उसे छोड़ा लिया," वे कहते, "नहीं तो सितानोव उसे मार ही डालता और इस बात का जरा भी परवाह न करता कि बाद में उसका क्या होता है।"

होश हवास ठीक होने पर कापे-दयूखिन भी सितानोव को एक घड़ी धन न लेने देता, उसके कविता प्रेम तथा हरजाई स्त्री से उसके लगाव की बुझद घटना को खिल्ली उड़ाना, और ईर्ष्या की भाव में उसे मुत्तसारे के लिए गद्दी से गद्दी, मगर बेकार हरकतें करने से न चूकता। उसके चिड़ाने और खिल्ली उड़ाने का सितानोव कभी जवाब न देता, न ही कभी उत्तेजित होता, बल्कि कभी-कभी तो कापे-दयूखिन के साथ-साथ खर भी अपनी खिल्ली उड़ाने में शामिल हो जाता और खूब हसता।

वे पास-पास ही सोते और गई रात तक न जाने क्या-क्या फसफसाने रहते थे।

रात के सन्नाटे में उन्हें इस तरह फुसफुसाकर बातें करते देख मन बड़ा अजीब मालूम होता। मेरी समझ में न आता कि एक दूसरे से सबका भिन्न प्रकृति के ये दो आदमी, आखिर किस चीज के बारे में इतना घुल मिलकर बातें कर रहे हैं। जब कभी भी मैं उनके निकट पहुंचने की कोशिश करता, कापे-दयूखिन तुरत टोकता

"यहा बयो आया?"

और सितानोव तो मेरी ओर नजर तक उठाकर न देखता।

लेकिन एक बार खुद उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया।

“मक्सीमिच,” कापेद्यूखिन ने कहा, “अगर तेरे पास ढेर सारे पैसे हो तो तू क्या करेगा?”

“पुस्तके खरीदूंगा।”

“और क्या करेगा?”

“और क्या करूंगा, यह तो मैं भी नहीं जानता।”

कापेद्यूखिन ने एक लम्बी सास खींची और निराशा से मुह फेर लिया।

“देखा सूनै!” अब सितानोव का शांत स्वर सुनाई दिया। “यह कोई नहीं बता सकता—चाहे किसी बूढ़े आदमी से पूछ देखो, चाहे जवान से। मैं तुमसे कहता न था कि धन का अपने आप में कोई महत्व नहीं है। अपने आप में वह बेकार है। महत्व की चीज धन नहीं, बल्कि वह है जो धन से पदा होती है, या जिसके लिए धन का उपयोग किया जाता है।”

“तुम लोग किस चीज के बारे में बातें कर रहे थे?” मैंने पूछा।

“किसी खास चीज के बारे में नहीं। नौद नहीं आ रही थी, इसलिए समय काट रहे थे।” कापेद्यूखिन ने कहा।

बाद में उनकी बातें सुनकर मैंने देखा कि रात में भी वे उहीं चीजों के बारे में बातें करते थे, जिनके बारे में लोग दिन में बातें करते हैं। खुदा, याय, खुशहाली, स्त्रियों की मूल्यता और उनकी चालाकी, धनी लोगों की लालसा और लालुपता, और यह कि जीवन ने मोटे तौर से एक ऐसे गडबडझाले का रूप धारण कर लिया है, जिससे कोई पार नहीं पा सकता।

मैं बड़े चाय से सुनता और उनकी बातचीत मेरे हृदय में गहरी हलचल का संचार करती। मुझे यह देखकर खुशी होती कि लगभग सभी लोग इस जीवन को बुरा मानते और उसे बदलने की इच्छा रखते हैं। लेकिन इसी के साथ-साथ मैंने यह भी देखा कि जीवन को बदलने की यह इच्छा निरी इच्छा ही थी, और इस इच्छा के फलस्वरूप किसी पर कोई जिम्मेवारी आयद नहीं होती थी, और न ही इस इच्छा से बर्गनाप के जीवन में तथा कारीगरों के बीच उनके आपसी सम्बन्धों में कोई अन्तर पड़ता था। यह सारी बातचीत मेरे सामने जीवन को आलोकित करते हुए उसके पीछे छिपे एक प्रकार के अभावह शून्य और खोखलेपन को प्रकट

करती जिसमे वे ही लोग, पोखर की सतह पर पड़े सूखे पतों का भाति, बिना किसी लक्ष्य उद्देश्य के, तेज हवा के झोके खाकर इधर से उधर तरते, घूमने तथा चक्कर खाते हैं, जो खुद अपने ही मुह से जीवन की इस लक्ष्य तथा उद्देश्यहीनता की त्रिकायत करते, उसे लेकर रोते और शोकते रहते हैं।

गप्प शप करते समय कारीगर हमेशा या तो शेखी बघारते दिखाई देते, या पश्चाताप करते अथवा किसी के सिर बोप मढते नजर आते। उरा उरा सी यातो को लेकर वे थुरी तरह भगडते, एक-दूसरे का बिल बुलाने से भी भास नहीं आते। उगहे चिंता थी तो यह कि मर जाने के बाद उनका क्या होगा। और यहा, दरवाजों के पास रखे गदे पानी के डाल के निकट, फश का एक तख्ता गलसडकर खत्म हो गया था और उसको जगह एक भभा खल गया था जिसमे से सीसन और सडी हुई मिट्टी की गच से भरौ ठडौ हवा आती थी और हमारे पाव एकदम सुन हो जाने का पावेल और मैने घासफूस और चिचडो से भभा बढ कर दिया। नया तख्ता लगाने की बात तो सब करते, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकलता, और भभा दिन दिन बज होता जाता। बर्फीली प्राथियां के दिनों में ठडो हवा का जैसे नलका सा खुल जाता और सब खासी जुकाम से जकड जात। रोशनदान की पखी इतने बेहवा ढग से चीं चीं करती कि लोग गदी से गदी गालियो को उसपर बाँछार करते। लेकिन जब मैने उसमे तेल लगा दिया तो जिलरेब के कान चौकसे हो गये, और मुह बिचकाकर वह बोला

“चीं चीं बढ होने से तो यहा ऊब और भी बढ गयी है।”

हम्माम से लौटकर वे अपने गंदे बिस्तरो पर पडे रहते। गवगी और सडाय की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। इसी तरह प्रय कितनी ही छोटी मोटी चीजें थीं जो जीवन की बटुता को बढ़ाती थीं और त्रिहें आसानी से ठीक किया जा सकता था। लेकिन कोई हाथ न हिलाता।

वे अक्सर कहते

“लोगो के लिए किसी के दिल मे तरस नहीं है। न भगवान उनपर तरस खाता है, न वे खुद अपने पर ”

लेकिन जब पावेल और मैने गदगी तथा जुओ से परेशान बम-तोइते बाधीदोय की सफाई धुलाई की तो वे हमारा मजाक उडान लग, तेल भातिग की आवाज लगाकर हमे चिढ़ाने लगे, जुबें मारने के लिए

अपनी गदी कमीजें उतारकर हमारे सामने डाल दीं और मोटे तौर से इस तरह हमें उल्लू बनाया मानो हमने कोई शमनाक और बहुत ही हास्यास्पद काम कर डाला हो।

बड़े दिन से लेकर चालीस दिन के व्रत तक अपने तहते पर लेटा दाबीदोव बराबर खासता और खून की फुल्लिया करता रहा। कूड़े की बाल्टी का निशाना साधकर वह थूकता, लेकिन अक्सर चूक जाता और खून के थक्के फश पर घ्रा गिरते। रात को जब वह चीखता-घिल्लाता तो हमारी आँखें खुल जातीं।

करीब-करीब हर रोज, बिला नागा, वे कहते

“इसे अस्पताल ले जाए बिना काम नहीं चलेगा।”

लेकिन वह कभी अस्पताल नहीं पहुंच सका। सबसे पहले तो यह हुआ कि उसके पासपोट की तारीख बीत चुकी थी। इसके बाद उसकी तबीयत कुछ ठीक भालूम हुई, और अस्पताल जाने की बात फिर टल गई। अतः मैं उन्होंने कहा

“अस्पताल ले जाकर ही क्या होगा? दो दिन का यह मेहमान है। चाहे यहां मरे, चाहे अस्पताल में, बात एक ही है।”

“हा भाई, टिकट कटने में अब देर नहीं है,” खुब मरीज भी उनकी बात की पुष्टि करता।

वह एक बहुत ही खामोश किस्म का हसोड व्यक्ति था, और वक्शाप की उदासी को तितर बितर करने में अपनी श्रोर से कोई कसर नहीं छोड़ता था। अपने काले और अत्यन्त क्षीण चेहरे को तटते से नीचे लटकाकर भरभरी आवाज में वह घोषणा करता

“भले लोगो, अब इस आदमी की भी आवाज सुनो जिते खुदा ने इतने ऊंचे सिंहासन पर पहुंचा दिया है ”

इसके बाद, भारी भरकम आवाज में, वह इस तरह की कोई उदासी भरी वक्शास तुकबंदी सुनाना शुरू करता

पडा में अपने तटते पर
सारा-सारा दिन,
रात रात भर,
रेंगते तिलघट्टे मुझ पर।

“यह कभी अपना जी छोटा नहीं करता,” उसके थोता माव न से कहते।

कभी-कभी पावेल और मैं उसके तल्ले पर चढ जाते, और वह बरत खुशी से कहता

“तुम्हारी क्या खातिर कहूँ, मेरे भले दोस्तो! अगर पसद हा तो बढिया, एकदम तर ब ताजो, मकडी पेश कर सकता हूँ।”

बहुत ही धीरे-धीरे, तिल तिल करके, मृत्यु उसे दबोच रही था, और इससे वह और भी उकता गया था।

“मौत भी मेरे पास फटकना नहीं चाहती।” तग घाकर वह कहता, और अपनी परेशानी को छिपाने का जरा भी प्रयत्न नहीं करता।

मौत के प्रति उसके इस निडर रवये से पावेल का हृदय बहल जाता। रात को वह चौंक उठता, और मुझे जगाते हुए फुसफुसाकर कहता

“मबसीमिच, कहीं वह मर तो नहीं गया मुझे लगता है कि एने ही किसी दिन रात में वह मर जाएगा, और नौद मे हने पता तर नहीं चलेगा। हे भगवान, भरे हुए आबमियो से मुझे कितना डर लगता है।-”

या फिर कहता

“आखिर इसने जन्म ही क्यों लिया? बीस बय का भी न हो पाया कि अब पिदा ले रहा है। ”

एक रात, जब कि चादनी खिली हुई थी, उसने मुझे जगाया। उत्तरी झालें भय से फटी हुई थीं। फुसफुसाकर बोला

“कुछ सुनाई देता है?”

ऊपर तल्ले पर दायीदोब की सात भरभरा रही थी, और जरी जलवी, साफ मुन पडनेवाले गदों मे वह बडबडा रहा था

“इधर, यहा ले आओ, यह देखो इधर ”

इसके बाद हिषकी का बीरा गुट हो गया।

“मर रहा है। सच कहता हूँ, वह मर रहा है।” पावेल ने बिचपिन स्वर मे फुसफुसाकर कहा।

आज दिन भर मुझे बफ की सवाई-दुवाई करनी पडी थी। मैं बुरी तरह थक गया था, और आँसो मे नौद उमडी आ रही थी।

“तुमने मेरी बसम, सो नहीं,” पावेल ने धनुरोध किया, “मुझपर क्या कर, और सो नहीं!”

सहसा वह उछलकर घुटनो के बल खड़ा हो गया, और वहशियाना प्रदान में चिल्ला उठा

“उठो, उठो, दावीदोव मर गया!”

उसकी आवाज सुनकर कुछ कारीगरों की नोंद उचट गयी। कुछ विस्तर छोड़कर लडे हो गये, और चिडचिडाकर पूछने लगे कि बात क्या है।

फापेद्यूज़िन तख्ता पर चढ गया, और अकित स्वर में बोला

“सधमुच, लगता तो ऐसा ही है कि मर गया,—हालाकि यदन में अभी भी कुछ गरमाई मालूम होती है ”

सबपर एक सनाटा सा छा गया। जिलरेव ने सलीब का चिह्न बनाया, और कम्बल को और भी कसकर तानते हुए बोला

“भगवान इसकी आत्मा को शांति दे!”

“अच्छा हो कि इसे यहाँ से उठा कर ज्योडी में ले जाए ” किसीने सुझाव दिया।

फापेद्यूज़िन नीचे उतर आया, और खिडकी में से झाकते हुए बोला

“नहीं, सुबह तक इसे यहीं रहने दो, जीते जी भी इसने किसी का रास्ता नहीं छँका ”

पावेल तखिये के नीचे सिर छिपाकर सुबकिया भरने लगा।

सितानोव बेसुध सोता रहा, वह भसका तक नहीं।

१५

नीचे खेतों में जमी बर्फ और ऊपर आकाश में सर्दों के बादल गल रहे थे, और भीगी हुई बर्फ तथा बारिश के छींटे धरती पर गिर रहे थे। पूरज की गति धीमी हो गई थी, और विन की यात्रा पूरी करने में अब उसे काफी समय लगता था। हवा में उतनी ठिठुरन नहीं रही थी। ऐसा मालूम होता था मानो वसंत आ तो गया है, लेकिन अभी नगर से बाहर खेतों में छिपा हुआ आख मिचौनी का खेल खेल रहा है। किलकारिया मारता और चौकड़िया भरता किसी समय भी वह नगर में दाखिल हो जाएगा। सड़को पर लाल मटियाला कीचड छाया था। फुटपाथों पर पानी की छोटी छोटी धाराएँ छलछल करती बह रही थीं। आरेस्तानस्त्वामा

घीय में बर्फ के पिघलने से साफ जगहों पर चिड़े चिड़िया खुगो से चह और फुदक रहे थे। चिड़े चिड़िया की भांति लोग भी उमग से भरे थे। चारों ओर घसत की गुहायनी भनभनाहट सुनाई देती, महान चंचल यत पर गिरजे के घटे, मुबह से साम तर्क करीब-करीब हर घड़ी बने रहते और हृदय को हल्के हल्के झकोले देते। उनकी टनटनाहट में, ब लोगो की आवाज की भांति, टीस छिपी होती। उनकी ठंडा उदास ध्वनि में उन दिनों की गूज सुनाई देती जो पीछे, बहुत पीछे, छूट गए थे और जिनके लौटने की भ्रम कोई उम्मीद नहीं थी।

मेरे जन्म दिन के भ्रमसर पर कारोगरो ने मुझे खुदा क प्यारे सल भलेबसेई की एक छोटी सी और बहुत ही सुंदर रंगी चुनो प्रतिमा भेंट की। जिल्लरेय ने, गम्भीर मूद्रा में, एक सम्बा भाषण दिया जिसके गल सग के लिए मेरी स्मृति में अर्पित हो गए।

“अभी तू क्या है,” भोंहो को चढ़ाते और अपनी उगलियो को हिलाने हुए उसने कहा, “कुल तेरह बरस की तेरी उम्र है, न तेरे मा है और न बाप। फिर भी मैं, उम्र में तुझसे चार गुना बड़ा होने पर भी, तेरी तारीफ करता हू। जानता है क्यों? इसलिए कि इतनी कच्ची उम्र हाते हुए भी तुने जीवन से मुह नहीं मोड़ा, सीधे तनकर उसका सामना किया। और ऐसा ही होना चाहिये,—हमेशा आखें खोलकर जीवन का सामना करो।”

उसने खुदा के दासो और खुदा के बंदो का जिक्र किया, लेकिन बातों और बंदो में क्या भेद है, यह मेरी समझ में कभी नहीं आया। और मेरा खयाल है कि इस भेद को वह खुद भी नहीं समझता होगा। उसका भाषण बोझिल और उबा देनेवाला था और सब उसपर हस रहे थे। प्रतिमा हाथ में लिए मैं गुमसुम खडा था, मेरे हृदय में उबल-मुबल मची थी और परेशानी में कुछ सूझ नहीं पड रहा था कि क्या करू, क्या न करू। आखिर कापे-दयूखिन से नहीं रहा गया। झुमलाकर बिल्ला उठा।

“मालूम पडता है किसी मुद्दे के सिरहाने फातिहा पडा जा रहा है। देखो ता, बेचारे के कान भी नीले पड गए।”

इसके बाद मेरी पीठ थपथपाते हुए उसने भी राग अलापना शुरू कर दिया

“तुझमें सबसे अच्छी बात यह है कि तू सभी से घुल मिलकर रहता

है! तेरी यह बात मुझे पसंद है, इसकी वजह से तुझे पीटना या डाटना मुश्किल हो जाता है—भले ही तूने सचमुच कसूर किया हो।”

सब के सब, आखो में चमक भरे, मेरी ओर देख रहे थे। उनके चेहरे खिले हुए थे और मुझे गुम सुम खड़ा देख मुस्करा रहे थे। मेरा हृदय, भीतर ही भीतर, उमड़ घुमड़ रहा था। अर्गर—यह सिलसिला कुछ देर और चलता तो मैं अपने को रोक न पाता, मेरी आखो से आसू बहने लगते—निरे आनंद के आसू। इस भावना से कि ये लोग इस हब तक मुझे अपना समझते हैं, मेरा हृदय भर आया था। ठीक उसी दिन सबेरे ही, मेरी ओर सिर हिलाते हुए कारिदे ने प्योर वासील्येविच से कहा था

“बड़ा बेहूदा छोकरा है, एकदम निकम्मा।”

सदा की तरह उस दिन भी, तडके ही मैं दुकान पर काम करने गया था। लेकिन अभी दोपहर हो भी न पायी थी कि कारिदे ने कहा

“घर जा और भंडार की छत पर से बर्फ गिराकर कोल्ड-स्टोरेज वाले तहखाने में जमा दे ”

उसे मालूम नहीं था कि आज मेरा जन्म दिन है, और मेरा खयाल था अथ सब भी यह नहीं जानते। वक्शाप ने जब बघाइयो का सिलसिला खत्म हो गया तो मैंने कपड़े धबले, भागकर अहाते में पहुँचा, और बर्फ गिराने के लिए भंडार की छत पर चढ़ गया। इस बार जाड़ो में खूब जमकर बर्फ पड़ी थी। लेकिन उतावली में मैं तहखाने का दरवाजा खोलना भूल गया और फावड़े से बर्फ गिराता रहा। नतीजा यह कि तहखाने का दरवाजा बर्फ के ढेर के नीचे छिप गया। जब मुझे अपनी गलती मालूम हुई तो मैं तुरत दरवाजे से इस ढेर को हटाने में जुट गया। लेकिन बर्फ नम थी और खूब फडी जम गई थी, और फावड़ा लोहे का न होकर लकड़ी का था, जैसे ही ज्यादा दबाव पड़ा, वह टूट गया। इसी समय फाटक पर कारिदा दिखाई दिया और मुझे यह खसी कहावत याद हो आई कि पुशो के साथ हमेशा दुख का पुछल्ला लगा रहता है।

“यह बात है।” कारिदा मेरे निकट आया और गुस्से में भनभनाते हुए बोला। “क्या इसी तरह काम किया जाता है, गतान के पिल्ले! खोपड़ी पर ऐसा हाथ जमाऊंगा कि भेजा बाहर निकल आएगा ”

उसने फावड़े का टूटा हुआ हत्या उठा लिया और कसकर हाथ धुमाया। लेकिन मैं एक ओर को हट गया और गुस्से में उफनकर बोला

“अज्ञाता साफ़ करना मेरी नौजरी में बतई शामिल नहीं है, समझ।” लकड़ी का हत्या उसने मेरे पांवों में फेंककर मारा। तपकर मैं बर्फ़ का एक ढेला उठाया और पूरे जोर से ऐन उसके मुंह पर दे मारा। सिर्झपटाकर वह भाग राडा हुआ। मैं भी अघबोव में ही काम को छोड़कर बर्फ़शाप में लौट आया। इसके कुछ मिनट बाद कारिद की मंगतर सीपियों से उतरकर भागती हुई आयी। यह एक काजूबाजू छोबरी थी और उसमें बरग़ मुह मुहासो से भरा था। आते ही बोली

“मवसीमिच, ऊपर जा।”

“मैं नहीं जाऊंगा,” मैंने कहा।

सारिमोनिच ने धीमी आवाज में, चकित भाव से पूछा

“यह क्या, - जायेगा क्यों नहीं?”

मैंने उसे सारा किस्सा बता दिया। मेरी जगह वह खुद ऊपर गया। उसकी भींहे परेशानी में कुछ तन गई थीं। जाते समय दबे स्वर में बोला

“बडा तेज हो गया तू, भया ”

बर्फ़शाप कारिदे के खिलाफ़ ताने तिश्नो से गूज उठी।

“अब तो तुझे निकालकर ही छोड़ेंगे।” कापेद्यूखिन ने कहा।

लेकिन इसका मुझे डर नहीं था। कारिदे से मेरी तनातनी काफी त्नों से चल रही थी और सभी सीमाएं पार कर चुकी थीं। उसकी घणा ने चिद्द का रूप धारण कर लिया था जो दिनोदिन बढ़ती जाती थी। मेरी घृणा भी उतनी ही हठीली और जोरदार थी जो कम हीने का नाम न लेती थी। परंतु मैं यह समझना चाहता था कि वह मेरे साथ ऐसा बंटुका व्यवहार क्यों करता है।

वह जान-बूझकर कुछ रेजगारी फ़श पर गिरा देता जिससे फ़श साफ़ करते समय उसपर मेरी नज़र पड़े। मैं उसे उठाता और हुनेशा काउण्टर पर रखे भिखारियों वाले प्याले में डाल देता। अतः मैं इस तरह रेजगारा बिखरने का रहस्य जब मेरी समझ में आया तो मैंने उससे कहा

“रेजगारी का जाल बिछाकर तुम मुझे नहीं फ़ास सकते। तुम्हारी सारी कोशिशें बेकार जाएगी।”

उसका चेहरा लाल हो गया और एकाएक चिल्लाते हुए बोला

“मुझे क्यादा सबक पढ़ाने की कोशिश न कर! मैं क्या करता हूँ और क्या नहीं, यह मैं तुमसे क्यादा अच्छी तरह जानता हूँ!”

फिर कुछ सभतबर बोला

“तू समझता है मैं रेखगारी जान-बूझकर फश पर गिराता हूँ? वो तो धनजाने ही गिर जाती है ”

उसने मुझे पर रोक लगा दी कि दुकान में पुस्तके न पढ़ू। कहने लगा

“ये पुस्तके तेरे लिए नहीं हैं। क्या पारती बनने का शौक चर्चिया है, हरामखोर कहीं का।”

मुझे रेखगारी चोर बनाने की अपनी कोशिशों में उसने डील नहीं डाली। मुझे लगा कि अगर किसी दिन बुहारते समय कोई सिक्का लुढ़ककर किसी बराठ में चला गया तो उसे चोरी का इलजाम लगाते जरा भी बेर नहीं लगेगी। एक बार फिर मैंने उसे टोका कि मेरे साथ इस तरह का खेल न खेले। लेकिन उसी दिन जब मैं टाबे से उबलते हुए पानी से भरी बेंतली लेकर लौट रहा था तो मेरे कानों में उसकी आवाज की भनक पड़ी। पड़ोसी दुकानदार के नये कारिदे से वह कह रहा था

“तू उससे साठ गाठ करके भजन सहिता चोरी करने के लिए कह। आजकल ही एकदम नयी तीन पेटी पुस्तके हमारे यहाँ आनेवाली हैं ”

मुझे यह भापने में बेर न लगी कि वे मेरे ही बारे में बातें कर रहे थे। कारण कि मेरे आते ही दोनों सकपका से गए। परन्तु केवल यही नहीं, और कुछ बातों से भी मुझे यह शुबहा था कि वे मेरे खिलाफ मिलकर साबित कर रहे हैं।

पड़ोसी दुकानदार का कारिदा चालाक आखो वाला और दुबले पतले तथा सूखे हुए कमजोर शरीर का जीव था। वह ऐसे ही, थोड़े थोड़े दिनों के लिए काम करता था। दुकान के काम में वह होशियार था, लेकिन पूरा पिपकड़ था, जब कभी पीने का भूत उसके सिर पर सवार होता तो मालिक उसे नीकरी से अलग कर देता, और इसके बाद फिर रख लेता। जो देखने में वह काफी विनम्र और अपने मालिक के हुल्के से इशारे को भी माननेवाला भालूम होता था, लेकिन अपने मुह के कोने में सदा एक व्यग्रपूण मुसकराहट छिपाए रहता और तीखे छोट्टे कसने में रस लेता। उसके मुह में गंध आती, ठीक वसी ही जसी कि गंदे दातों वाले लोगों के मुह से आती है, हालांकि उसके दात भले चमके और सफेद थे।

एक दिन उसने मुझे बड़े अचरज में डाला बहुत ही ध्यार भरी

मुसकराहट के साथ वह मेरे पास आया और इसके बाद, एकाएक, उसने मेरी टोपी उतारकर दूर फेंक दी और मेरे बालों को अपने हाथों में दबोच लिया। फिर क्या था हम दोनों गुत्यमगुत्या हो गए। बालरूनी से घबरेला हुआ वह मुझे दुकान में ले आया और धक्का देकर मुझे कुछ बड़ी देव प्रतिमाओं पर गिराने की कोशिश करने लगा जो फर्श पर रखी थीं। अगर वह सफल हो जाता तो इसमें सन्देह नहीं कि प्रतिमाओं का काच टूट जाता, उनके बेल-चूटे झड़ जाते और कीमती चित्रकारी चौपट ही जाती। लेकिन वह कुछ ताकतवर नहीं था। शीघ्र ही मैंने उसे अपने काबू में कर लिया। इसके बाद फर्श पर वह पसर गया और अपनी आहत नाक को सहलाते हुए फुक्का भार कर रोने लगा। इस दाढ़ी वाले आदमी को रोता देखकर मैं हक्का-बक्का सा रह गया।

अगले दिन, सुबह के समय जब हमारे मालिक कहीं चले गए थे और हम दोनों अकेले थे, एक आलू के नीचे के और नाक के सूजे हुए हिस्से को सहलाते हुए उसने बड़े ही मित्र भाव से कहा

“तू सौचता है मैं अपनी मर्जी से तेरे ऊपर झपटा था? नहीं, मैं इतना मूढ़ नहीं हूँ। मुझे पता था कि तू मुझसे जबर है और जल्दी ही मर दबोच लेगा। मुझमें ताकत बहा है, नशे की लत ने मुझे खोलला बना दिया है। असल में खुद मालिक के कहने पर मैंने वह हरकत की थी। मालिक ने कहा ‘जाकर उससे लिपट जा और इस तरह लड़ कि अपनी दुकान में प्यादा से प्यादा तोड़ फाड़ हो जाये और भारी नुकसान पहुँचे।’ अगर मालिक ने मुझे मजबूर न किया होता तो अपने आप मैं कभी ऐसी हरकत न करता! देख, तूने मेरे तोबड़े का क्या हाल बना दिया है।”

मुझे उसकी बात सच मालूम हुई और मेरा हृदय तरस की भावना से भर गया। यह मैं जानता था कि उसे बहुत कम पता मिलता है जिसमें उसका गुबर नहीं होता। तिस पर उसकी पत्नी इतनी जबर थी कि बराबर उसे पीटती रहती थी। फिर भी मैंने उससे पूछा

“अगर वो तुमसे किसी को जहर देने के लिए कहे, तो क्या तुम सचमुच जहर दे दोगे?”

“या कुछ भी करा सकता है,” उसने दयनीय मुस्कराहट के साथ धीमे स्वर में कहा, “वो मुझसे कुछ भी करा सकता है।”

ऐसे ही एक दिन, मौका देखकर, वहन लगा

“मेरे पास फूटी बौड़ी भी नहीं है, घर का चूल्हा ठंडा पड़ा है—खाने के लिए एक दाना तक नहीं है, और मेरी औरत घड़ी भर के लिए चन नहीं लेने देती। अगर तू अपने स्टोर में से एक देव प्रतिमा चुपचाप उठाकर दे दे तो मैं उसे बेचकर कुछ पैसे खड़े कर लूंगा। बोल मुझपर इतनी दया करेगा न? देव प्रतिमा न ला सके तो फिर भजन सहिता सही।”

मुझे जूतों की दुकान और गिरजे के चौकीदार की बात याद हो आई और ऐसा लगा कि निश्चय ही यह आदमी भेदिया है। लेकिन मुझसे इनकार करते नहीं बना। मैंने उसे एक देव प्रतिमा उठाकर दे दी। भजन सहिता कुछेक हकल की थी और मुझे लगा कि उसे उठाकर देना क्यादा बड़ा पाप होगा। क्या किया जाये? नतिकता में सदा अकगणित छिपा होता है। हमारे समूचे “दण्ड विधान” का बट धूल, पाप और धम की धावर में लिपटा होने पर भी, अपने हृदय में इसी गणना का नहा बीज छिपाए है,—व्यक्तिगत सम्पत्ति का बानव उसके पीछे अट्टहास कर रहा है।

पड़ोस की दुकान के इस दयनीय कारिदे से जब मैंने अपनी दुकान के कारिदे को यह कहते सुना कि वह मुझे भजन सहिता चुराने के लिए बहकाए तो मेरा हृदय सहम गया। यह साफ था कि हमारी दुकान के कारिदे से मेरी उस उदारता की बात भी नहीं छिपी है जिससे प्रेरित होकर मैंने दुकान से प्रतिमा की चोरी की थी। दूसरे शब्दों में यह कि पड़ोसी दुकान का कारिदा सचमुच में भेदिया था।

दूसरों की जेब काटकर उदारता दिखाने के सस्तेपन तथा उनके पड़पन के कमीनेपन ने मेरे हृदय को कचोटना शुरू किया, और विक्षोभ तथा घणा के भावों से मैं भर गया। मुझे अपने पर भी गुस्ता आया और दूसरों पर भी। कई दिन तक मैं एक अजीब झुलसाहट में फसा रहा। नयी पुस्तकों के आने तक मेरी बुरी हालत ही गई। आखिर पुस्तकें आईं। स्टोर में जाकर मैंने उन्हें खोलना शुरू किया। तभी पड़ोस की दुकान का कारिदा मेरे पास आया और भजन सहिता मागने लगा।

“क्या तुमने देव प्रतिमा चुराने की बात मालिक से कही थी?” मैंने उससे पूछा।

“हां,” गरदन सटकाते हुए उसने स्वीकार किया, “क्या करू, मेरे पेट में बात पचती नहीं।”

सुनकर मैं सन्न रह गया। पुस्तकों की पेट्टी खोलना छोट में फस पर बंठ गया और उससे चेहरे की ओर ताकने लगा। अस्तव्यस्त और अल्पवयनीय मुद्रा में वह जल्दी-जल्दी बड़बड़ा रहा था

“तेरे भालिक ने भाप लिया, या यह कहो कि मेरे भालिक ने भाप लिया, और तेरे भालिक से ”

मुझे लगा कि अब खर नहीं है। इन लोगों के जाल में मैं फस पया हूँ और अब, निश्चय ही, बाल अपराधियों की किसी जेल में मुझे बंधा दिया जाएगा! लेकिन जहा सेर, यहां सवा सेर, जब यही सब होता है तो फिर अय किसी चीज की चिंता क्यों की जाए! चुल्लू भर पानी में डूबकर मरने से तो यह कहीं अच्छा है कि गहरे पानी में डूबकर मरा जाए। तो मैंने भजन सहिता उठाई और कारिदे को दे दी। उतने उतने फोट के भीतर छिपा लिया और वहा से चल दिया। कुछ भी देर न हुई होगी कि वह फिर लौट आया और पुस्तक मेरे पावों के पास आ गिरी।

“मैं इसे नहीं ले सकता। तेरे साथ तो मैं न रहूंगा ” कहते हुए वह चला गया।

मैं उसकी बात समझ नहीं सका। यह क्या दान हुई कि मेरे साथ वह नहीं रहेगा? जो हो, यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि उसने पुस्तक लौटा दी। इसके बाद हमारी दुकान का कोताहकब कारिदा मस और भी ज्यादा दुश्मनी तथा सदेह की नजर से देखने लगा।

मालकिन के बुलाने पर भी जब मैं नहीं गया और मेरी जगह सारिआमिच ने जीने से ऊपर जाना शुरू किया तो ये सब बातें मेरे दिमाग में धूम गईं। वह जल्दी ही ऊपर से लौट आया, पहले से भी ज्यादा उदास और एकदम गुमसुम। उस समय उसने कुछ नहीं कहा। लेकिन सास के भोजन से ठीक पहले, उस समय जब कि मैं और वह धरनेले थे, वह मुझसे बोला

“मैंने बहुत कोशिश की कि दुकान के काम से छुड़ाकर तुझे केवल वकशाप में काम करने दें। लेकिन बात नहीं बनी! कुजमा तिलचट्टा कोई बात सुनने के लिए तयार नहीं था। न जाने तुझसे क्या खार लाये बठा है ”

इस घर में मेरा एक दुश्मन और था—कारिदे की मंगेतर, एक बहुत चुल्लुली लड़की। वकशाप के सभी नौजवान उससे खेलते और छेड़छाड़

करते थे। वे डपोड़ी में खड़े होकर उसका इन्तजार करते और जब वह आती तो खूब छोना झपटी करते। वह जरा भी घुरा न मानती, पिल्ले की भाँति दबे स्वर में केवल कू-का करती रहती। सुबह से लेकर सोने के समय तक उसका मुँह चलता रहता—मिठाई, शहद की रोटियाँ, केक आदि के टुकड़े उसकी जेबों में सदा भरे रहते। भूरी आँखों से युक्त उसका बेरग चेहरा देखने में बड़ा घुरा मालूम होता। अपनी आँखों को वह बराबर टेरती रहती। जब भी वह आती, पावेल और मुझसे ऐसी पहेलियाँ घूमती जिनके जवाब गढ़े होते या ऐसी ध्वनियों और शब्दों का जल्दी जल्दी एक साथ में उच्चारण करने के लिए कहनी जिनके मिलने से कोई न कोई गढ़ा अर्थ निकलता।

बूढ़े कारीगरों में से एक ने उससे कहा

“क्या, तुम्हें साज नहीं आती?”

वह किलखिलाकर हँसी और जवाब में एक गढ़े गीत की यह पकितया गुनगुनाने लगी

रगीली शरमा जायेगी,
तो हाथ मलती रह जायेगी।

इस तरह की लडकी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। वह मुझे बड़ी धिनीनी मालूम होती, और उसके भोड़े तौर-तरीकों को देखकर मैं सहम जाता। जब उसने देखा कि मैं उससे कतराता और बचता ॥ तो वह और भी जोरो से मेरे पीछे पड़ गयी।

एक दिन नीचे तहलाने में वह अचार के मतबानों को भाप दे रही थी। पावेल और मैं भी उसकी मदद के लिए वहाँ मौजूद थे। तभी उसने कहा

“लौड़ी, आभी तुम्हें चुम्मा लेना सिखाऊँ।”

“तू क्या सिखाएगी, मैं तुझसे ज्यादा अच्छी तरह जानता हूँ।” हल्की हँसी हसते हुए पावेल ने कहा और शराफत को थोड़ा ताक धर रख मैंने उसे सलाह दी कि यह कला अपने ममेतर को सिखाए। मेरी बात सुन वह झुमला उठी। मुझे मे बोली

“तू निरा सूअर है! यह तक नहीं जानता कि एक लडकी से किस तरह पंग आना चाहिए। मैं तो इतनी मेहरबानी से पेश आती हूँ और तू नाक चढ़ाता है!”

इसके बाद उगली हिलाते हुए बोली

“तुझे इसका भुगतान करना पड़ेगा। मैं आसानी से छोड़नेवाली नहीं हूँ।”

पावेल ने मेरा पक्ष लिया। बोला

“अगर तेरे मगैतर को इन हरकतों का पता चला गया तो फिर देखना किस तरह तेरे गाल लाल करता है।”

मुहासे भरे अपने मुह को उसने तिरस्कार से तिकोटा और फनकाने हुए बोली

“मुझे उसका चर्रा भी डर नहीं है। इतने भारी दहेज के साथ एक नहीं बीस मगैता मुझे मिल जाएंगे, उससे लाख दर्जे अच्छे। जब तक विवाह का जूझा गरबन पर नहीं लड़ता तभी तक तो लड़की को दो घड़ी मौज करने का मौका मिलता है।”

इसके बाद यह पावेल से खेल करने लगी और मुझसे ऐसी कुड़ी कि फिर सीधी न हुई। जब भी मौका मिलता, मेरे खिलाफ हमर की उपा लगाती।

दुकान पर काम करना मेरे लिए एक मुसीबत हो गया और जमे जैसे दिन बीतते गये मेरी मुसीबत बढ़ती गयी। मैं बुरी तरह ऊब घला। जितने भी धमप्रयय यहा थे, सभी मैंने पढ डाले और पारखियों के तर कुतक सुनते-सुनते मैं तग धा गया। उनकी बातों में कभी कोई नवीनता नहीं होती, हमेशा और हर धार उहीं घिसी पिटी बातों को दोहराते। केवल प्योन वासील्येविच ही एक ऐसा था जो सभी भी मुझे कुछ धारपन मालूम होता था। मानव जीवन के काले पक्ष का उसे गहरा अनुभव था और बहुत ही दिलचस्प तथा उत्साहपूर्ण ढंग से वह अपनी धाता को ध्यान करता था। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता मानो पगबर येलिसेई ने भी, इसी प्रकार एकदम एकाकी, हृदय में गहरी जलन और बदले की भावना लिए, इस धरती का चप्पा चप्पा छाना होगा।

लेकिन जब कभी मैं उसे लोगो के यारे में अपने अनुभव या विचार यताता तो वह बड़ी तत्परता से सुनता और इसके बाद सारी बातें कार्टे के सामने दोहरा देता जो या तो मुझे सिद्धता अथवा मेरा मदा उभता।

एक दिन घुट के सामने मैंने अपना यह भेद प्रकट कर दिया कि

उसकी कही हुई बातों को भी मैं अपनी उसी कापी में दज करता जाता हूँ जिसमें कि मैंने कविताएँ और पुस्तकों के अंश उतार रखे हैं। यह सुनकर उसकी सिट्टी गुम हो गई, तेजी से वह मेरी ओर झुका और भयभीत सा होकर मुझसे पूछने लगा

“तू ऐसा क्या करता है! यह ठीक नहीं है बच्चे! तू क्या मेरी बातों को याद रखना चाहता है! नहीं, नहीं, ऐसा नहीं चलेगा। देखो तो, क्या छोकरा है! जरा मुझे अपनी वह कापी तो दिखा!”

बहुत देर तक और जमकर वह इस बात पर जोर देता रहा कि मैं कापी उसके हवाले कर दूँ, या कम से कम उसे जला दूँ। इसके बाद, विचलित स्वर में, वह कारिदे से फुसफुसाता रहा।

पर लौटते समय कारिदे ने कड़े स्वर में मुझसे कहा

“मुझे पता चला है कि तू कोई रोजनामचा रखता है। मैं तुझसे कहे बता हूँ कि अपनी यह हरकत बंद कर। सुन लिया? केवल खुफिया पुलिस के लोग ऐसा काम करते हैं।”

“और सितानोव?” अनायास ही मेरे मुँह से निकाल गया, “उसके बारे में तुम क्या कहोगे? वह भी तो रोजनामचा रखता है।”

“क्या वह भी रखता है? बेवकूफ नहीं तो!”

कुछ देर वह चुप रहा। फिर कुत्सित नरमाई से दोहरा हो भेद भरे अंदाज में बोला

“एक बात सुन। मुझे अपनी कापी दिखा दे, और सितानोव की भी। मैं तुझे आधा खबल दूँगा। लेकिन देख, यह काम चुपचाप करना। किसी के कान में भनक तक न पड़े, सितानोव के भी नहीं।”

उसे जमे पक्का विश्वास था कि उसकी बात मैं टालूँगा नहीं। उसने अपना सुप्ताव रखा और इसके बाद, बिना किसी बुविधा या मिस्रक के, अपनी छोटी टांगों से डुलकी चाल चलता हुआ मेरे आगे निकल गया।

पर पहुंचते ही कारिदे ने जो कुछ कहा था, वह सब मैंने सितानोव को बता दिया। सुनकर उसकी भौंहों में बल पड़ गये।

“तूने उससे कहा ही क्यों? अब वह किसी न किसी तरह हमारी कापिया उड़ा लेगा,—मेरी भी और तेरी भी। लेकिन ठहर, अपनी कापी तू मुझे दे दे। मैं उसे कहीं छिपा दूँगा। वह तेरे पीछे पड़ा है। देल लेना, वह तुझे निकालकर ही दम लेगा।”

मुझे भी इसमें सदेह नहीं था, और मैंने निश्चय कर लिया कि नानो के घर लौटते ही मैं यह नौकरी छोड़ दूंगा। नानी बलाखना में यो। सरे जाड़े वहीं रही, किसीने अपनी लडकियों को लेस बुना सिखाने के लिए बुला लिया था। नाना अब फिर कुनाविनो में ही आ बसे थे। मैं कभी उनसे मिलने नहीं जाता था और भूले-भटके अगर कभी उनका नगर आता होता तो वह खुद भी मुझसे नहीं मिलते थे। एक दिन घनापास ही बाजार में उनसे मुलाकात हो गई। रूकून का भारी भरकम षोट पहने रोस के साथ सामने से वह आ रहे थे, मानो कोई पादरी चला आ रहा हो। जब मैंने नमस्ते की तो ठिठक गए, एक हाथ उठाकर अपनी आँसों पर साया किया और खाए हुए से आवाज में बोले

“ओह, तू है सुना है कि आजकल देव प्रतिमाए बनाता है। ठीक है, ठीक है अच्छा जा।”

इसके बाद, मुझे एक ओर धकियाते हुए, अपने उसी रोबीले घरवाले और ठाठ के साथ आगे बढ़ गए।

नानी से भी इन दिनों बिरले ही भेंट होती। वह दिन रात, बिना सास लिए, काम करती थी। नाना का बोझ भी अब वही सभालती थी। आयु के साथ नाना सठिया गये थे। नाना के घलावा अपने बेटों के बच्चों का लालन पालन भी नानी के ही जिम्मे था। मिलाईल मामा के लडके साशा के लिए जो एक खूबसूरत, सपनों में खोया और पुस्तकों का प्रेमी युवक था, नानी सास तीर से परेशान रहती। वह रगसाजी का काम जानता था और किसी एक जगह जमकर काम नहीं करता था। जब-तब नौकरी छोड़कर घर पर बठ जाता और नानी उसका बोटल ही नहीं भरती, बल्कि उसके लिए अगली नौकरी भी सोजती। सांगा की बहिन का बोझ भी कुछ कम नहीं था। गलत बियाह करके उसने एक मुसाबत और मोल ले ली थी। उसका पति, जो एक मिल में काम करता था, शराबी था। वह उसे बुरी तरह मारता और घर से निकाल देता था।

नानी से जब भी मैं मिलता, उनकी आत्मा के सौदय को देखकर मुग्य हो जाता। लेकिन मुझे ऐसा लगता कि नानी की अबभूत आत्मा परियों की दुनिया में निवास करती है। मतीजा यह कि वह चारों ओर की बट्ट वास्तविकता को नहीं देख पाती। उन आशावाओं और दुःखिताओं से जो मुझे घेरे रहतीं, नानी सबथा मुक्त और परे थी।

“यह सब कुछ नहीं, अत्योशा, सहने की क्षमता होनी चाहिए।”

जीवन की कुहपता और दमघोट भयानकता का, लोगों की मुसाबतो और हर उस चीज का जिसके विरुद्ध मेरा हृदय इतने जोरो से उयाल खाता था, जब मैं नानी से चिफ्र करता तो उसके मुह से सिया इसके और कुछ न निकलता कि हममे सहने की क्षमता होनी चाहिए।

लेकिन सहना मेरी प्रकृति के विरुद्ध था और अगर डोर डगरो, पाठ और पत्यरों के इस युग का कभी-कभी मैं प्रदशन करता भी था तो केवल अपने आपको जाचने-वरखने के लिए, अपनी उस शक्ति और दृढ़ता का प्रदाव लगाने के लिए जिसके सहारे इस घरती पर मेरे पाव जमे थे। ठीक वैसे ही जैसे कि अपनी बचकानी मूलता के जोग अयवा अपने से बड़ों की शक्ति से ईर्ष्या के चक्कर में पडकर युवक अपने हाड-मांस और पुढा को सकत से भी भारी घोसा उठाने की कोशिश करते और कभी कभी इसमे सफल भी हो जाते हैं, जैसे कि शोबी में वे नामी पहलवानों की भाति मन-मन भर का बचन उठाने की कोशिश करते हैं।

मैं भी ऐसा ही करता—शाब्दिक अर्थ में भी, और भावनात्मक अर्थ में भी। शारीरिष और आत्मिक, दोनों रूपों में मैं अपनी शक्ति की जाच करता और इसे मेरा सौभाग्य ही समझिए कि इस जाच के दौरान मैं घातक घोट खाने या जम भर के लिए पगु होने से बच गया। और अगर सब पूछो तो दुनिया में अय कोई चीज आदमी को इतने भयानक रूप में पगु नहीं बनाती जितना कि सहना और परिस्थितियों की बाध्यता स्वीकार कर उनके सामने सिर झुकाना आदमी को पगु बनाता है।

अन्त में पगु होकर अगर मुझे घरती माता की शरण लेनी ही पडेगी तो, जायब गव के साथ, कम से कम यह तो मेरे पास कहने के लिए होगा कि करीब चालीस वष तब मैंने परिस्थितियों के खिलाफ अडिग सघष किया, उन भले लोगों के खिलाफ सघष किया जो सहन करने की जजोरों से बरबस मुझे जकडकर मेरी आत्मा को कुठित कर देना चाहते थे।

कोई न कोई शरारत करने, लोगों का जी बहलाने और उन्हें हसाने की मेरी इच्छा रह रहकर जोर पकडती। और यह काम भी मैं पूरी सफलता के साथ करता। नीज्नी बाजार के सौदागरो का बणन करने और उनकी नवल उतारने में मैं बेजोड था। मैं दिखाता कि देहातिये और उनकी

श्रीरते किस तरह देव प्रतिमाएँ खरीदते और बेचते हैं, किस सफाई में कारिदा उन्हें ठगता और धोखा देता है, और किस तरह पारखी बहं करते हैं।

कारिगर हसते हसते दोहरे हो जाते, हाथ का काम छोड़कर मग्न नकले उतारता हुआ देखते। जब तमाशा खत्म हो जाता तो सारिप्रोक्ति बहता

“यह सब तमाशा साध के भोजन के बाद किया कर, जिसने काम में हज न हो ”

इस तरह के प्रदर्शनो के बाद मैं सदा बहुत हल्का अनुभव करता, ऐसा मालूम होता मानो मेरे सीने पर से कोई भारी बोझ उतर गया हो। घटे डेढ घटे तक मेरा दिमाग इतने अद्भुत रूप में रीता और स्वच्छ मालूम होता जैसे उसका सारा कूडा-कबाड साफ हो गया हो, लेकिन कुछ बेर बाद वह फिर मानो कील-काटो से भर जाता और उनकी दुसर चुभन का मैं अनुभव करता।

मुझे ऐसा मालूम होता जैसे मेरे चारो ओर सडा हुआ इलिया कफ रहा हो और उसकी सडाध, धीरे धीरे, मुझे भी अपने चगुल में दबोच रही हो।

“क्या समूचा जीवन इसी तरह का होता है?” मैं सोचता। “और क्या मैं भी, इहाँ लोगों की भांति, कुछ देखे और जाने बिना, प्रकृत जीवन की झलक पाए बिना, इसी तरह शेष हो जाऊंगा?”

जिजरेव जो मुझे ध्यान से देख रहा था, बोला

“क्या बात है, मक्सीमिच, इधर कुछ चिडचिडा होता जा रहा है?”

सितानोव भी अक्सर पूछता

“क्यों, क्या हुआ है तुम्हें?”

मेरी समझ में न आता कि उन्हें क्या जवाब दू।

जीवन के औषडपन ने, हटीली बेरहमी के साथ, अपने हो डाले हुए धेष्ठतम चिहो को मेरे हृदय से मिटा दिया और उनकी जगह, मानो खोजकर, कुत्सित और निकम्मे कीरम-काटे डाल दिए। गुस्से में भरकर मैं हाथ-पाव पटकता, अडिग रूप से जीवन की हिंसा का विरोध करता। अथ सय की भांति मैं भी उसी नवी में बह रहा था, लेकिन उसका पानी मुझे अधिक् चुन करता, मेरी सारी स्फुति हर सेता और

कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता मानो मैं उसकी अतल गहराई में डूबा जा रहा हूँ।

लोगों का मेरे साथ अच्छा बरताव था। वे मुझपर कभी नहीं चिल्लाने, जसा कि वे पावेल के साथ करते थे, न ही वे मुझपर रोब झाड़ते या मनमाना हक्म चलाते। अपना सम्मान दिखाने के लिए वे पूरा नाम लेकर मुझे पुकारते। यह सब मुझे अच्छा लगता, लेकिन यह देखकर मुझे दुःख होता कि किस हद तक और कितनी बड़ी मात्रा में वे बोदका पीते हैं, पीने के बाद वे कितने धिनोंने हो जाते हैं, और स्त्रियों के साथ कितने गिरे हुए तथा विकृत सम्बन्ध रखते हैं। यह जानते हुए भी कि बोदका और स्त्री के सिवा मन बहलाने का अन्य कोई साधन इस जीवन में उनके पास नहीं छोड़ा है, मेरा जो भारी हो जाता।

उदास भाव से नतालया कोजलोव्स्काया की मैं याद करता। अपने आप में वह काफी समझदार और साहसी स्त्री थी। लेकिन वह भी स्त्रियों को निरे मनबहलाव की चीज समझती थी।

फिर नानी का मुझे खयाल आता, रानी मार्गों की मैं याद करता।

रानी मार्गों की याद करते समय मेरा हृदय सहम सा जाता। अथ सबसे धारा और की हर चीज से वह इतनी भिन्न और अलग थी कि लगता जैसे मैंने उसे सपने में देखा हो।

स्त्रियाँ के बारे में मैं जहरत से ज्यादा सोचने और मसूवे तक बाधने लगा कि अथ सब की भाँति अगली छुट्टी का दिन मैं भी किसी स्त्री के साथ आनन्द से बिताऊँगा। किसी शारीरिक आकांक्षा से प्रेरित होकर मैं ऐसा नहीं सोचता था। मैं स्वस्थ और बेहद स्वच्छता पसंद था। लेकिन कभी-कभी किसी कोमल और सहानुभूतिशील स्त्री को हृदय से लगाने और उसके सामने अपनी समूची वेदना उडेलने के लिए मैं बुरी तरह बेचन हो उठता। मेरी यह कामना बहुत कुछ बसी ही थी जैसे कि एक बच्चा अपनी माँ की गोद में जाकर कुनमुनाने के लिए ललक उठता है।

पावेल पर मुझे ईर्ष्या होती। रात जब कि हम दोनों पास-पास लेटे हुए थे, वह मुझसे अपने उस प्रेम का चिक्र किया करता जो कि सडक के उस पार रहनेवाली नौकरानी से चल रहा था।

“क्या बताऊँ, भाई, महीना भर पहले तक मैं उसे बफ की गँदों से मार-मारकर दूर भगा देता था और उसकी ओर आख तक उठकर नहीं

देखता था, लेकिन अब जब वह बाहर वाले बेंच पर मुझसे सटकर बैठता है तो उसका स्पर्श ऐसा लगता है मानो दुनिया में उस जता और रीति नहीं है।”

“तू उससे क्या बातें करता है?”

“सभी तरह की बातें होती हैं। वह मुझे अपने बारे में बताती है, और मैं उसे अपने बारे में बताता हूँ। और फिर हम घुम्बन करते हैं—केवल वह बस, हाथ नहीं रखने देती वह इतनी भली है कि तू सोच तक नहीं सकता तू आदमी है या इजन, हर वक्त धुमा उठा रहता है।”

धुमा तो मैं ब्रेह्द उड़ाता था। तम्बाकू का नशा मेरे विनाश पर छा जाता, और मेरी परेशानी को कुछ कम कर देता। सौभाग्यवश बोस के जायके और गंध से मैं दूर भागता था। पावेल असबत्ता खर पीता था। नशी में धुत्त होने के बाद वह सुबकिया सी भरता और रोनी आवाज में रट लगा देता

“मैं घर जाना चाहता हूँ! मुझे घर भेज दो ”

वह अनाथ था। उसके मा-बाप एक मुद्दत हुई मर गए थे। उसके घर पर न कोई बहन थी, और न भाई। आठ वय की आयु से ही वह अजनबियों के बीच जीवन बिताने लगा था।

मेरा हृदय रह रहकर ऊब उठता और कहीं भाग जाने को जो चाहता। वसन्त के आगमन ने मेरी इस भावना को और भी सुहोरा बना दिया। आखिर मैंने एक बार फिर जहाज पर काम करने का निश्चय किया जिससे, आस्त्रखान पहुँचने के बाद यहाँ ही फारस के लिए तैयारी हो जाऊँ।

याद नहीं पड़ता कि फारस जाने की यह बात मेरे मन में कैसे समा गई। इसका कारण नापद यह था कि नीज़नी नोवगोरोद के मेले में फारस के सौदागरों को मैंने देखा था और वे मुझे बहुत अच्छे लगे थे। धूप में यठे हुए वे दुबारा गुडगुडाते रहते—पत्यर के बुतों की भाँति। उन्होंने अपनी दाढ़ियाँ रग रली थीं, और ऐसा मालूम होता मानो उनकी बड़ी-बड़ी बाली आँखें सभी कुछ जानती हैं, उनसे कुछ भी छिपा नहीं है।

भागने का मैंने सचमुच निश्चय कर लिया था और शायद मैं भाग भी जाता, अगर बीच में एक घटना न हो जाती। ईस्टर सप्ताह के

दौरान जब कुछ कारीगर अपने अपने गाव चले गये थे और बाकी पीने-पिलाने में मगन थे, अपने भूतपूर्व मालिक—नानी की बहन के लडके—से मेरी भेंट हो गई। ओका नदी के चढ़ाव की एक ओर एक खेत में वह घूमने निकला था।

धूप खिली हुई थी और वह सामने से चला आ रहा था घूसर रंग का हल्का कोट पहने, हाथ पतलून की जेबों में डाले, दातों में सिगरेट दबाए और अपनी टोपी को, बाँके अदाज से, पीछे खिसकाकर गुद्दी पर जमाए। निकट पहुंचने पर मित्रतापूर्ण मुसकराहट से उसने मेरा अभिवादन किया। उसका यह मौजी और आजादी पसंद रूप देखकर मैं मुग्ध हो गया। खेत में उसके और मेरे सिवा अरब कोई नहीं था।

“ओह पेशकोव! प्रभु ईसा तुझे खुश रखें!”

ईस्टर के उपलक्ष्य में एक दूसरे का मुह चूमने के बाद उसने मुझसे पूछा कि कसी गुजर रही है। मैंने उसे साफ साफ बता दिया कि बर्कशाप से, इस नगर से, और हर चीज से मैं बुरी तरह ऊब उठा हूँ और मैंने फारस जाने का निश्चय कर लिया है।

“अपने इस निश्चय को घंटा बता!” उसने गम्भीर स्वर में कहा। “फारस जाकर कौन स्वर्ग में पहुंच जाएगा। मैं कहता हूँ, उसे जहनुम रसीद कर। समझे भाई, तेरी उन्न में मैं खुद भी इसी तरह भागने के लिए बेचन रहता था, जिधर भी शतान खींच ले जाए।”

शतान को वह बेफिक्री के साथ उछालता था और उसका यह अदाज मुझे बड़ा अच्छा लगा—बहुत ही उन्मुक्त और बसंत की उमग में पगा हुआ। उसकी हर चीज से एक अजीब उमग और बेफिक्री फूटी पड़ती थी।

“सिगरेट पिएगा?” मोटी सिगरेटों से भरा चादी का बेंस मेरी ओर बढ़ाते हुए उसने पूछा।

उसकी इस बात ने मुझे अब पूरी तरह धश में कर लिया।

“सुन, पेशकोव, मेरे साथ फिर काम करने के बारे में तेरी क्या राय है? इस साल मेले के लिए मैंने कोई चात्नीस हज्जार के ठेके लिए हैं। मैं तुझे बाहर, मेले के मदान में हूँ, काम दूंगा। एक तरह से तू घोवरसोयर का काम करेगा। जो निर्माण-सामग्री आए उसे सभालना, इस बात को निगरानी रखना कि हर चीज ठीक समय पर सही जगह पहुंच

जाए, और यह कि मजदूर चोरी चकारी न करें। क्या, यह ठीक रखा न? येतन—पांच खयल महीना, और पांच कोपेक भोजन क लिए। बा की स्त्रियो से तेरा कोई वास्ता नहीं पड़ेगा। सुबह ही तू काम पर निकल जाएगा, और रात को लौटेगा। स्त्रिया से कोई मतलब नहीं। लेकिन इनका करना कि इस भेंट के बारे में उनसे भूलकर भी बिक न करना। वन, रविवार के दिन चुपचाप घुसा आना,—मानो तू आकाश से टपक रहा हो। क्या, ठीक है न?

गहरे मित्रों की भांति हमने एक दूसरे से विदा ली। उसने मुझ तक मिलाया और दूर पहुंच जाने के बाद भी काफी देर तक टोपी हिलाता रहा।

जब मैंने कारीगरों के सामने नौकरी छोड़ने का एलान किया तो करीब-करीब सभी ने दुःख प्रकट किया। अपने प्रति उनका यह लगाव मुझे बड़ा प्रिय भास्वम हुआ और मैं खुशी से फूल गया। पावेल खास तौर से अस्तव्यस्त हो उठा। शिकायत के स्वर में बोला

“भला सोच तो, हम लोगों का छोड़कर उन देहातियों के बीच घू रहेगा? वहां बढ़ई होंगे, रगसाच होंगे धि, इसी को कहते हैं आसमान से गिरकर ताड़ में अटक जाना ”

जिखरेव बड़बड़ाया

“जबानी में आदमी बसे ही भुसीबत खोजता है जसे मछली पानी में गहराई खोजती है ”

कारीगरों ने मुझे विदाई दी जो बहुत ही बरस और बुरी तरह उबा देनेवाली थी।

नशे में धुत जिखरेव ने कहा

“निश्चय ही जीवन में कभी तू यह करेगा और कभी वह, लेकिन अच्छा यही है कि एक चीज को पकड़ ले और शुरू से आखिर तक उसी से चिपका रह ”

“मतलब यह कि सब कुछ भूलकर उसी के साथ दफन हो जा!” शांत से लारिप्रोनिच ने भी अपना स्वर छोड़ा।

मुझे लगा कि इस तरह की बातें वे बेमन से कर रहे हैं, मानो किसी रिवाज की पूर्ति कर रहे हों। वह घागा जो हमें बांधे था, चाह जसे भी हो, गल चुका था और उसे टूटने में देर नहीं लगी।

नशे में धुत्त गोगोलेव ऊपर तल्ले पर पडा हाथ-पाव पटक रहा था।
बठे हुए गले से वह बडबडा उठा

“अगर मैं चाहू तो तुम सबको जेल में बंद करा सकता हू। मुझे एक भेद मालूम है! यहां ईश्वर में कौन विश्वास करता है? अहा हा हा ”

आकृतिविहीन अघूरी देव प्रतिमाएं अभी भी दीवार के सहारे टिकी थीं और काच की गेंदें छत से चिपकी थीं। इधर कुछ दिनों से बिना कृत्रिम रोशनी के हम काम कर रहे थे, इसलिए गेंदों की जरूरत नहीं होती थी और उनपर धूल तथा कालिल की मटमली सह चढ गई थी। हर चीज मेरे स्मृति-पट पर इतनी गहराई से नक्श थी कि आज दिन भी, केवल आज बंद करते ही, वह अंधेरा कमरा और उसकी मेजों, खिडकियों की ओटक पर रखे रंगों के डब्बों, रंग करने के ब्रुश, देव प्रतिमाएं, हाथ मुह घोने का पीतल का धरतन जो आग बुझानेवालों की टोपी की तरह दिखता था, उसके नीचे फोने में रखी गंदे पानी की बाल्टी, और तल्ले के ऊपर से नीचे लटकी गोगोलेव की टांग जो लाश की भांति नीली पड गई थी, मेरी कल्पना में मृत हो उठती हैं।

मेरा धस चलता तो विदाई के बीच में ही उठकर मैं भाग जाता। लेकिन यह सम्भव नहीं था—जदास क्षणों को लम्बा खींचने का हसियों को कुछ धाव होता है। नतीजा यह कि विदाई का जतसा थाकायदा मातम का रूप धारण कर लेता है।

जिल्लरेव ने, भींहे चढाकर, मुझसे कहा

“मैं तुझे वह पुस्तक—‘दानव’—नहीं लौटा सकता। अगर तू चाहे तो इसके लिए बीस कोपेक से सकता है।”

लेमोन्तोव की पुस्तक को अपने से अलग करना कठिन था, खास तौर से इसलिए भी कि उसे मुझे आग बुझानेवालों के बृद्ध मुखिया ने भेंट दिया था। लेकिन जब मैंने, कुछ विरोध सा दिखाते हुए पैसे लेने से इनकार कर दिया तो जिल्लरेव ने उन्हें चुपचाप अपने बटुवे में रख लिया और निश्चल प्रदात में बोला

“जसी तरो मर्जों। लेकिन यह जान रख कि मैं पुस्तक नहीं लौटाऊंगा। यह तेरे लिए नहीं है। उस तरह की पुस्तक रखकर तू किसी समय भी मुसीबत में फस सकता है ”

“लेकिन यह तो बाजार में बिकती है। मैंने खुद अपनी थालों से उसे पुस्तकों की दुकान पर देखा है।”

“इससे क्या हुआ? बाजार में तो पिस्तौलें भी बिकती हैं।” उसने वृद्धता से जवाब दिया।

और उसने पुस्तक कभी नहीं लौटाई।

मालकिन से विदा लेने जब मैं ऊपर गया तो रास्ते में उसकी भनाजी से भेद हो गई।

“सुना है कि तू हमें छोड़कर जा रहा है,” उसने कहा।

“हां, जा तो रहा हूँ।”

“जाता नहीं तो निकाल देते,” कुछ उद्धत, लेकिन सच्चे हृदय से उसने कहा।

सदा नशे में धुत्त रहनेवाली मेरी मालकिन बोली

“अच्छी बात है, जा! खुदा तेरा भला करे। तू बहुत बरा और मुहफ्ट लडका है। हालांकि मैंने तेरा बुरा पक्ष कभी नहीं देखा, लेकिन सब यही कहते हैं कि तू अच्छा नहीं है।”

एकाएक उसने रोना शुरू कर दिया और आसुओं के बीच बुदबराते हुए कहने लगी

“अगर मेरा पति—भगवान उसकी आत्मा को नान्ति दे—मान जीवित होता तो वह तेरे कान साल करता और मार-मारकर सिर का सारा कचूमर निकाल देता, लेकिन तुझे यहीं रखता और इस तरह भागने न देता! अब तो सभी कुछ बदल गया है। खरा सी बात हुई और तुम बिस्तरा गोल करके चल बिये! बइया रे! इस ढंग से तो पता नहीं तू कहा-कहां की धूल छानेगा!”

मेले के भवान में बसन्त की माड़ का पानी भरा था। पत्थर की घरी मेले की दुकानों और इमारतों के दूसरे तल्ले तक पानी चढ़ आया था। मैं अपने मालिक के साथ नाव में बठा था। नाव मेले की इमारतों के बीच से गुजर रही थी। मैं डाइ चल रहा था और मालिक, नाव के पिछले हिस्से में बठा, एक डाइ से पले का काम लेते हुए पानी काट रहा था।

हमारी नाव नाक उठाए, बंद और तरंगविहीन, ऊनींदे से मटमले पानी में हिचकोले खाती इस बाजार से उस बाजार में चक्कर लगा रही थी।

“इस साल यस्त में कितनी भारी बाढ़ आई है, शतान चट कर जाए इसे! यह हमें अपना काम भी वक्त पर पूरा करने नहीं देगी!” मालिक ने बड़बडाते हुए अपना सिगार जलाया, जिसके धुए से ऊनी कपड़े के जलने जसी गंध आती थी।

एकाएक वह भय से चीख उठा

“अरे बचना, नाव रोशनी के खम्बे से टकराना चाहती है!”

लेकिन नाव टकराई नहीं। उसे सभालने के बाद बोला

“कम्बलतो में नाव भी हमें छोटकर दी है! हरामी कहीं के! ”

फिर हाथ से इशारा करते हुए उसने वे जगहे दिखाई जहां से, बाढ़ का पानी कम होते ही, दुकानों की मरम्मत का काम शुरू किया जायेगा। सफाघट चेहरा, छटी हुई मूछें और दांतों के बीच सिगार, कोई यह नहीं कह सकता था कि वह ठेकेदार है। उसके बदन पर चमड़े की जाकेट, पावों में घुड़नों तक के जूते, कंधे पर शिकारियों वाला थला और सामने पावों के पास लेबल मार्का छर्रं वाली कीमती बुनाली बूक पड़ी थी। सिर पर चमड़े की टोपी थी, जिसे होठों को भींचते हुए आगे की ओर ढींचकर कभी वह आगे पर झुका लेता और चौकना सा होकर अपने चारों ओर देखता, कभी खिसकाकर पीछे मुड़ी की ओर कर लेता। एकाएक उसके चेहरे पर मुक्कों जसी चपलता झलक उठती और मूछा में इस तरह मुसकराता मानो कोई मखेदार कल्पना उसके दिमाग में आ गई हो। मन की मौज और तरंगों में उसे इस तरह बहता देखकर एक क्षण के लिए भी ऐसा नहीं लगता कि वह काम-काज के बोझ और बाढ़ के कम न होने की चिन्ता में डूबा हुआ है।

और जहां तक मेरा सम्बन्ध था, अचरज की निश्चल भावना का बोझ मेरे हृदय पर लदा था। मुझे बड़ा अजीब मालूम होता जब मैं जीवन की चहल पहल से शून्य इस मेला नगर पर नजर डालता। चारों ओर पानी ही पानी, बंद खिडकियों वाली इमारतों की सीधी पाते और ऐसा मालूम होता मानो समूचा नगर पानी में तरता हुआ हमारी नाव के पास से गुजर रहा हो।

प्रासमान में बादल छाए थे। सूरज बादलों की भूलभुलैया में उलझा था। कभी-कभी, उड़ती हुई सी नजर डालकर, वह नीचे की ओर देखा और फिर बादलों में खो जाता चांदी के बड़े घाल की भांति शीतल और ठंडा।

पानी भी, प्रासमान की ही भांति, मला और ठंडा था। एकदम स्थिर और गतिविहीन। ऐसा मालूम होता मानो वह वहाँ एक जगह जम गया है और सूनी इमारतों तथा दुकानों की पीली मटमली पातों के साथ-साथ नौद ने उसे भी अपने चंगुल में दबोच लिया है। जब कभी कपहला सूरज बादलों के पीछे से झाँककर देखता तो हर चीज पर एक धुंधली सी चमक छा जाती, पानी में बादलों का अक्स उभर आता और ऐसा मालूम होता मानो हमारी नाव दो प्रासमानों के बीच अपर सपनी हो। पत्थर की इमारतें भी सिर उभारतीं और बे-मालूम से अन्त में धोला तथा ओका नदी की ओर बहने लगतीं। टूटे हुए पीपे, बरतों और टोकरे-टोकरिया लकड़ी के छोटे-मोटे टुकड़े और घास फूस के तिनके पानी की सतह पर डूबते उतराते, और कभी-कभी लकड़ी के लटके और बांस मुर्दा साँपों की भांति तरते हुए निकल जाते।

कहाँ-कहाँ इसकी बुझकी खिडकिया खुली थीं। दुकानों की बालकनी की छत पर कपड़े सूख रहे थे और नमदे के जूते रखे हुए थे। एक खिडकी में से कोई स्त्री घरदान निकाले बाहर गंदे पानी की घोर ताक रही थी। बालकनी के लोहे के एक खम्बे के मिरे में नाव बंधी थी। उसके साल रंग का तिरमिरेदार अक्स पानी में ऐसा मालूम होता मानो मास का लोपडा तैर रहा हो।

जीवन के इन चिहों को देखकर मालिक सिर हिलाता और मुस धताना शुरू करता

“देखा तूने, यहाँ मेले का चौकीदार रहता है। खिडकी में से वह छत पर चढ जाता है, फिर अपनी किशती में बठकर चोरो की ताक में किशती को इधर से उधर खेंता रहता है। अगर चोर नजर नहीं आता, तो वह खुद चोरी करने लगता है ”

वह अलस और निस्संग भाव से बोल रहा था, और उसका दिमाग कहीं और उलझा था। हर चीज सनाटे में डूबी, सूनी और सपने की तरह अवास्तविक मालूम होती थी। धोला और ओका नदी के पानी ने

मिलकर एक भीमाकार क्षील का रूप धारण कर लिया था। उधर, टेढ़े-भेड़े पहाड़ पर नगर का रंग बिरंगा दृश्य नजर आता था। बाग बगीचे उसकी गोभा बढ़ाते थे। बगीचों की कोस श्रमों सुनी थी, — एक भी फूल वहाँ नजर नहीं आता था। लेकिन उनकी कोपलें फूट रही थीं और घर तथा गिरजे सब हरियाली में लिपटे मालूम होते थे। ईस्टर के घटो की समझ ध्वनि पानी पर से तरती हुई आ रही थी और, इतनी दूर होने पर भी, नगर के हृदय की धड़कन का हम अनुभव कर सकते थे, लेकिन यहाँ हर चीस उस उजाड़ कश्गिस्तान की भांति सनाटे में डूबी थी जिसे लोगो ने भुला दिया हो।

काले पेड़ों की दो पातों के बीच मुख्य रास्ते से हमारी नाव पुराने गिरजे की ओर जा रही थी। मालिक के मुह में लगे सिगार का धुआ उसकी आँखों को कड़वा रहा था और नाव पेड़ों के तना से टकराकर जब उछलती थी तो खीजकर वह चिल्ला उठता था

“क्या बाहियात नाव है!”

“आप पानी काटना बंद कर दीजिये।”

“यह कैसे हो सकता है?” वह भुनभुनाता, “जब नाव में दो आदमी होते हैं तो एक खेता और दूसरा पतवार सभालता है। अरे वह देखो, उधर चीनियों का बाजार है।”

मेले के मदान के चप्पे चप्पे से मैं परिचित था, और दुकानों की वे घटपटी पातें मेरी खूब जानी पहचानी थीं जिनकी छतों के कोना पर प्लास्टर की बनी चीनी लोगो की मतिथा पालथी मारे बठी थीं। एक समय था जब मेरे साथी खिलाडियों और मैंने उनपर पत्थरों से निशानेबाजी की थी और मेरे कुछ निशाने इतने सधे हुए और सही बडे थे कि उनमें से कई के सिर और हाथ गायब हो गए थे। लेकिन अब मुझे अपनी इस हरकत पर गब का अनुभव नहीं होता था

“देखा इन दरबो को!” इमारतो की ओर संकेत करते हुए उसने कहा। “अगर मेरे पास इनका ठेका होता ”

सीटी बजाते हुए उसने अपनी टोपी को पीछे खिसकाकर गुद्दी की ओर कर लिया।

लेकिन, न जाने क्यों, मुझे लगा कि अगर उसे इन इमारतो का ठेका मिला होता तो वह भी इन्हें बनवाने में उतनी ही बेगार काटता, और

इनके लिए जगह भी यही चुनता जो नीची होने के कारण वसन्त के निों में दो नदियों की बाढ़ में आए साल डूब जाती थी। वह भी इसी तरह का कोई चीनियों का बाजार बना डालता

अपने सिगार को उसने पानी में फेंक दिया और सीज में भरकर पानी में डूक की पिचकारी छोड़ते हुए बोला

“अब तू ही बता, पेशकोव, इसे भी क्या जीवन कहा जा सकता है— एकदम बेरस और बेरग! पढ़े लिखे लोगों का यहा अकाल है। हा घी बात करने के लिए भी कोई नहीं मिलता। कभी-कभी रोब मारने के लिए मन ललक उठता है, लेकिन तू ही बता, अगर कोई रोब मार भी तो किसके सामने? कोई है ऐसा? नहीं, कोई नहीं। यहाँ तो केवल बढ़ई हैं, रगसाख हैं, बेहातिये हैं, चोर और उचकके हैं ”

बाहिनी और पानी में डूबी पहाड़ी की ढाल पर, जिलौने की भाँति सुन्दर एक सफेद मसजिद थी। मालिक ने कनखियों से उसकी ओर देखा, और इस तरह बोलता रहा मानो किसी भूली हुई बात को याद कर रहा हो

“एक जमान की भाँति मैं भी बीयर पीने और सिगार का प्यारा उमान लगा। जमान पक्के व्यापारी होते हैं—एकदम कुछक मुग! बीयर पीना तो छर एक अच्छा शगल है, लेकिन सिगार से पटरी बठती नहीं मालूम होती। बिन भर फूपता हूँ और फिर बीबी जान खाने लगती है धान यह धमडे जसी बढवू कहा से आ रही है? उमे क्या पता कि जीवन को थोडा सरस बनाने के लिए क्या कुछ करना पडता है से, अपनी पतवार अब तू खुद सभाल ”

उसने डाड उठाकर नाब के एक बाजू रख दिया, अपनी बडूक उठाई और छत पर पालयी मारे बडे चीनियों में से एक को अपना निशाना बनाया। चीनी को कोई नुकसान नहीं पहुँचा, छरें दीवार और छत पर बिलरकर रह गये। घूल का एक बादल सा उठा, और हवा में बिलीन हो गया।

“निशाना चूक गया!” बडूक ने फिर से छरें भरते हुए उसने सापरयाही से कहा।

“लडकियों से तेरी कसी पटती है? अभी तक तेरा रोवा टूटा या नहीं? नहीं? अरे, मैं तो तेरह साल से ही प्रेम की नदी में गोने सगाने सगा था—”

उसने अपनी पहली प्रेमिका के बारे में इस तरह बताना शुरू किया मानो वह किसी सपने की याद कर रहा हो। वह एक नौकरानी थी। जिस नक्शा-नवीस के यहाँ वह खुद काम करता था, उसी के घर पर वह भी काम करती थी। वह अपने प्रथम प्रेम की कहानी सुना रहा था और उसकी आवाज के साथ-साथ इमारतों के कोनों से पानी के टकराने की धीमी छपछप भी सुनाई पड़ रही थी। गिरजे के उस पार, दूर दूर तक, पानी ही पानी, मिलमिलता रहा था जिसमें जहा-तहा, बँत वृक्ष की काली दहनियाँ सिर उठाए थीं।

वे प्रतिक्रमों की वकशाप में कारीगर अकमर सेमिनारी के छानों का एक गीत गाया करते थे

नीला सागर,
तूफानी सागर

नीले रंग में डूबा वह सागर कितना बेरस और थोसिल होता होगा "रात को मुझे नींद न आती," मेरे मालिक ने कहा, "बिस्तर में उठकर मैं उसके दरवाजे पर जा खड़ा होता और पिल्ले की भाँति कापता रहता। उसका घर क्या था, पूरा बफखाना था। उसका मालिक अक्सर रात को उसके पास जाता था। इस बात का पूरा अदेशा था कि कहीं वह मुझे रंगे हाथ न पकड़ ले। लेकिन मैं उससे डरता नहीं था "

वह कुछ सोचता हुआ सा धोल रहा था, मानो किहीं पुराने कपड़ों को निकालकर उनकी जाँच कर रहा हो कि इन्हें अब फिर पहना जा सकता है या नहीं।

"उसने मुझे दरवाजे के बाहर खड़ा देखा और उसे तरस आया। दरवाजा खोलकर बोली, 'भीतर चला आ, पगले '"

इस तरह की इतनी कहानियाँ मैंने सुनी थीं कि मेरा मन उनसे पूरी तरह ऊब चुका था। इन सब कहानियों में, समान रूप से, अगर कोई अच्छी बात थी तो यह कि लोग अपने प्रथम प्रेम का बिस्ता बयाग करते समय डोंग नहीं मारते थे, अदलीलता और गदगी से उठे बपाते थे और एक कसब के साथ बड़े चाव से उस की याद करते थे। साग था कि अपने जीवन के श्रेष्ठतम क्षणों की वे याद कर रहे होते और सिवा इसके अपने जीवन में अब किसी अच्छी चीज से बहृतो जा पाता नहीं था।।

हसते और अपने सिर को हिलाते हुए मालिक ने अचरज में भरकर कहा

“पर घरवाली के सामने इसका कभी जिक्र नहीं कर सकता। नहीं, कभी नहीं! यो मे इसे पाप या बुरा नहीं समझता। फिर भी कह नहीं सकता! यह है बात ”

मुझसे नहीं मानो अपने आपसे वह यह सब कह रहा था। अगर वह चुप रहता तो मैं बोलता होता। उस निस्तब्धता और गूँथ में बातचीत करना, गाना और एकाडियन बजाना, कुछ न कुछ करना जरूरी था। नहीं तो डर था कि वह मुर्बा नगर वहाँ हमें भी अपनी चिर निद्रा में न खींच ले, उस ठंडे और भले पानी की समाधि में कहीं हम भा डूबकर न रह जाए।

“सबसे पहली बात तो यह कि कभी कम उम्र में ब्याह न करना।” उसने मुझे सीधे डेनी शुरू की। “ब्याह, मेरे भाई, बहुत ही जिम्मेगरी का काम है! रहने को तो जहा चाहे, जसे चाहे वहा जा सकता है—जसी तेरी मर्जी! चाहे तो फारस में रह—मुसलमान बनकर, चाहे माली में रह—सतरी धनकर, खोरी कर, चाहे खुशी हो—सब ठीक हो सकता है! पर घरवाली तो, भाई, भीसम जसी है, उसे नहीं बदला जा सकता—ना! यह, भाई, जूता नहीं—उतारा और फेंक दिया ”

उसके चेहरे पर से एक छाया सी गुजर गई। भौंहों में धल डाले वह एकटक भले पानी की ओर ताकते और अपनी कुबड़ी नाक को उगली से छुजलाते हुए बुदबुदाता रहा

“हा, भाई चौकस रहा यह ठीक है कि शू अभी हवा के पपेटे खाकर भी फिर भी सीधा लडा हो जाता है पर कौन जाने किस के लिये कहा और कसा जाल बिछा है। जरा धूके नहीं कि गए ”

हमारी नाव मेन्चेस्की शील में उगी झाडियों के बीच में गुजर रही थी जिसका पानी धब धोल्गा से गले मिल रहा था।

“जरा धीरे डाँड घला!” मेरे मालिक ने फुसफुसाकर कहा और बड़क उठाकर झाडियों की ओर निगाना साधा।

मरियल तो दो चार भुर्गाबियो का निवार करने के बाद बोला

“अब सीधे बुनाबिनो घल। आज साँझ वहाँ रग रहेगा। वू घर

चला जाना। मेरे बारे में पूछें तो कहना कि मुझे ठेकेदारों से काम था तो मैं वहीं फस गया।

बस्ती की एक सड़क पर मैंने उसे छोड़ दिया। यहाँ भी बाढ़ का पानी भरा था। इसके बाद, मेले के मैदान को पार कर, मैं स्ट्रेल्का लौट आया। नाव की एक जगह बाधकर मैं दोनों नदियों के सगम का, नगर का, जहाजा और आसमान का नजारा देखने लगा। आसमान में अब सफेद बादल छिदरे थे और ऐसा भालूम होता था मानो वे किसी भीमाकार पक्षी के पंख हों। बादलों के बीच नीली झिरियों में से सुनहरा सूरज झलक रहा था जिसकी एक किरण समूची दुनिया का रंग बदलने के लिए काफी थी। चारों ओर खूब चहल-पहल थी, हर चीज में अब गति और जीवन का स्पन्दन दिखाई देता था। बेटों की अतहीन पाते, तेज गति से बहाव की ओर लपक रही थीं। बेटों पर दाढ़ी वाले देहातिये खड़े थे और लम्बे बांसों से डाढ़ और छप्पुओं का काम ले रहे थे। वे एक दूसरे पर घौर पास से मुबरनेवाले जहाजों पर आवाजें कस रहे थे। एक छोटा सा जहाज बड़ाव की ओर एक खाली बजरे की खींच रहा था। नदी का पानी उसे उछालता, पटकनी देकर गिरा देना चाहता और वह मछली की भाँति बल खाकर, फिर सीधा हो जाता। उसकी साँस फूल जाती, वह हाफता और भभकारे लेता, लेकिन पीछे न हटता, पानी को चीरता और उसके निमग्न थपेड़ा से जूमता आगे बढ़ चलता। बजरे पर कपे से क्या सटाए चार देहातिये बठें थे और अपनी टांगों को नीचे पानी में सटकाए थे। उनमें से एक साल कमीज पहने था और वे सब गा रहे थे। गान के बोल पकड़ में नहीं आते थे, लेकिन उसकी धुन जानी पहचानी थी।

मुझे लगा कि यहाँ, नदी के इस सजीव वातावरण में, एक भी चीज एसी नहीं है जो अजनबी हो, जिससे मेरा लगाव न हो और जो मुझे अनजान तथा अनजान भालूम होती हो। लेकिन बाढ़ में डूबा वह नगर जिसे मैं छोड़ आया था, मानो एक दुस्वप्न था, मेरे मालिक के दिमाग की उपज, खुद उसी की भाँति अनजान।

नदी के दुःख से खूब तृप्त और भरा-भूरा होने के बाद मैं घर लौट आया। पूरी रात का मैंने अनुभव किया और मुझे लगा कि कोई भी काम ऐसा नहीं है जिसे मैं न कर सकूँ। रास्ते में त्रेपलिन की पहाड़ी से

मैंने एक बार फिर बोलगा का नवारा देखा। ऊचाई से धरती का विस्तार और भी सीमाहीन मालूम हुआ, लगता था कि यह धरती सभी आकाश और कामनाएँ पूरी करने का वायदा कर रही है।

घर लौटने पर खूब पुस्तकें पढ़ता। रानी भाग्यो वाले फ्लट में अब एक बड़ा परिवार रहता था। पाच लड़कियाँ, एक से एक सुंदर, इस परिवार की शोभा बढ़ाती थीं। दो लड़के थे जो स्कूल में पढ़ते थे। वे सब गुरु खूब पुस्तकें देते थे। तुर्गेनेव को तो जैसे मैं एक सास में पढ़ गया। उनके लिखने का ढंग अद्भुत था एकदम सादगी लिए, हर बात साफ-साफ समझ में आनेवाली, शरद की हवा की भाँति स्वच्छ और पारदर्शी। एस ही उसके पात्र थे—निमल और पवित्र। उसकी हर चीज, जिसे वह प्रत्यक्ष विनम्र भाव से प्रतिपादित करता, सुंदर थी—सुंदर और अद्भुत। मैं पढ़ता और चकित रह जाता।

मैंने पौम्यसोव्स्की कृत "सेमिनारी" उपन्यास पढ़ा। उसके पन्नों में देव प्रतिमाओं की धकंधाप जैसा जीवन इतने सजीव और हूँ ब हूँ रूप में चित्रित था कि मैं दग रह गया। उसकी जानलेवा ऊँच और घुटन से, जो धूर हरकतो में फूटकर जो हल्का करती थी, मैं बुरी तरह परिचित था।

इसी पुस्तकें बड़ी अच्छी मालूम होतीं, बड़े चाव से मैं उन्हें पढ़ता। उनमें मुझे सदा अपनत्व और एक खास तरह की उदासी का अनुभव होता। मानो व्रत उपवासों के दिनों में बजनेवाले गिरजे के घंटों की ध्वनि उनकी बंद हो। पन्ने खोले नहीं कि उनका धुंधला संगीत प्रवाहित होने लगा।

गोगोल कृत "मुर्बा आत्माएँ" मैंने पढ़ी, लेकिन बेमन से। इसी तरह "मुर्बा घर के पत्र" पढ़ने में भी मेरा जी नहीं लगा। "मुर्बा आत्माएँ", "मुर्बा घर", "तीन मौतें", "जिंदा लाश"—ये सब पुस्तकें एक ही भली के चट्टे-बट्टे मालूम होतीं और उनके नामों को बोलकर ही मेरा मन उनकी ओर से फिर जाता। "युग-लक्षण", "ऋतम व ऋतम", "बया करे", "स्मूरिन गाव की कहानी" तथा इसी ठप्ये की अन्य पुस्तकें भी मुझे अच्छी नहीं लगतीं।

लेकिन डिक्सेन्स और वाल्टर स्काट के उपन्यास मैं बड़े चाव से पढ़ता। उनकी पुस्तकों को मैं दो दो और तीन-तीन बार पढ़ता और हर बार लपों से छलछलता उठता। वाल्टर स्काट की पुस्तकें पढ़कर छुट्टी या उत्सव के दिन किसी शानदार गिरजे में प्रायना याद हो आती। प्रायना जहर कुछ

सम्बन्ध और उम्मीदें नष्ट होनी, लेकिन रिश्ते का बनावट
 सग छुटा ना उम्मीद के उम्मीद में हुआ रहना। और डिसेन्स के प्रति मेरा
 गहरा साहस तो आज निरुत्तर बना है, जब भी उसे पढ़ना हूँ, मुझे
 ही उठता हूँ। वह एक ऐसा नेसक था जो कठिनतम कृपा में-तीनों
 से प्रेम करने की कला में-अत्यन्त दम था।

हम लोगों का एक बड़ा सा दिन साक्ष्य होने ही झोतारे पर जना ही
 जाता। राधा साँठों के सन्त में रहनेवाले भाई और पाचो बहन, ध्यावेस्ताव
 सेमाको नामक एक निबन्धों हुई नाक वाला छात्र और कई अन्य। कभी-
 कभी एक बड़े अक्षर की सड़कों भी हमारे साथ आ बठनी। इस अक्षर
 का नाम प्लॉम्बिन था। वे पुस्तकों और कविताओं के बारे में बार्ने करते,
 जो मुझे अत्यन्त प्रिय थीं और जिनमें मेरी अच्छी प्रगति थी मैं इन सबसे
 श्याम पुस्तकें पढ़ चुका था। लेकिन अक्षर वे स्कूल की बातें करते, अपने
 शिक्षकों का राधा रोने। मैं उनकी बातें सुनता और मुझे सगता कि मेरा
 जीवन उनमें श्याम उन्मुक्त है। मुझे अक्षर होता कि वे यह सब कसे
 बरनासत कर लेने हैं। लेकिन, यह सब होने पर भी, मैं उनसे ईर्ष्या
 करता यह क्या कम बड़ी बात थी कि वे अध्ययन कर रहे थे।

मेरे सगी-भाषी उम्मीद में मुझे बड़े थे लेकिन मुझे सगता कि मैं उनसे
 श्याम परिपक्व और अनुभवही हूँ। यह भावना मुझे भीतर ही नीतर
 बघोड़ती और उनके तथा मेरे बीच एक दीवार सी खड़ी कर देती। इस
 दीवार को तोड़ने के लिए मैं अंचन हो उठता और उनके साथ घुल मिलकर
 रहना चाहता। दिन भर मैं काम करता और काफी सास बीते, धूल और
 सब से लयपय सबया भिन्न दुनिया की गहरी और विविधतापूर्ण छाप
 हृदय में लिए घर लौटता। इसके प्रतिकूल मेरे सगी-साथियों के अनुभव कुल
 मिलाकर सदा एक से होते। लड़कियों के बारे में खूब बातें करते, पहले
 एक से प्रेम चलना फिर दूसरी से। वे कविताएँ लिखना चाहते, और
 इसके लिए अक्षर मेरे पास आते। मैं बड़े चाव से तुकबन्दियों पर हाथ
 आठमाता। मैं तुक जोड़ने में दक्ष था, गीत की कड़ियाँ अपने साथ गुंथ
 जातीं, लेकिन जाने क्यों मेरी कविताएँ हमेशा हास्य रस की रचनाएँ बन
 जातीं। श्यामताएँ कविताएँ प्लॉम्बिन की सड़की की साथ बर लिसी
 या लिखवाई जातीं और मैं, अक्षरवाक, किसी साथी से-भाग तोर से
 प्याव से-उसकी तुलना करता।

मैंने एक बार फिर योल्गा का नजारा देखा। ऊचाई से धरती का बिलार और भी सीमाहीन मालूम हुआ, लगता था कि यह धरती सभी प्राणों और कामनाएँ पूरी करने का वायदा कर रही है।

घर सौटने पर खूब पुस्तकें पढ़ता। रानी मार्गों वाले फ्लट में अब एक बड़ा परिवार रहता था। पाच लड़कियाँ, एक से एक सुंदर, का परिवार की शोभा बढ़ाती थीं। दो लड़के थे जो स्कूल में पढ़ते थे। ये सब अब खूब पुस्तकें देते थे। तुर्गेनेव को तो जैसे मैं एक सास में पढ़ गया। उनके लिखने का ढंग अबभूत या एकदम सादगी लिए, हर बात साफ-साफ समझ में आनेवाली, शब्द की हवा की भाँति स्वच्छ और पारदर्शी। ऐसे ही उनके पात्र थे—निर्मल और पवित्र। उसकी हर चीज, जिसे वह अत्यन्त विनम्र भाव से प्रतिपादित करता, सुंदर थी—सुंदर और अबभूत। मैं पन्ना और चकित रह जाता।

मैंने पोम्पिलोव्स्की कृत "सेमिनारी" उपन्यास पढ़ा। उसका पन्नों में देव प्रतिमाओं की यक्षशाप जसा जीवन इतने सजीव और हृदय में चित्रित था कि मैं दग रह गया। उसकी जानलेवा ऊँच और घुटन से, जो दूर हरकतो में फूटकर जो हल्का करती थी, मैं बुरी तरह परिवर्तित था।

इसी पुस्तकें बड़ी अच्छी मालूम होतीं, बड़े चाव से मैं उन्हें पढ़ता। उनमें मुझे सदा अपनत्व और एक खास तरह की उदासी का अनुभव होता। माना अत उपवासों के दिनों में बजनेवाले गिरजे के घंटों की ध्वनि उनके बंद हो। पन्ने पौले नहीं कि उनका धुंधला सपीत प्रवाहित होने लगा।

गोगोल कृत "मुर्दा आत्माएँ" मैंने पढ़ी, लेकिन धैर्य से। इसी तरह "मुर्दा घर के पत्र" पढ़ने में भी मेरा जी नहीं लगा। "मुर्दा आत्माएँ", "मुर्दा घर", "तीन मौते", "जिंदा लाश"—ये सब पुस्तकें एक ही धँसती के चट्टे-बट्टे मालूम होतीं और उनके नामों को देखकर ही मेरा मन उनकी ओर से फिर जाता। "युग लक्षण", "कदम व कदम", "श्रावण करें", "स्मरिन गाव की कहानी" तथा इसी ढंग की अन्य पुस्तकें भी मुझे अच्छी नहीं लगीं।

लेकिन डिकेस और वाल्टर स्काट के उपन्यास मैं बड़े चाव से पढ़ता। उनकी पुस्तकों को मैं दो दो और तीन-तीन बार पढ़ता और हर बार लगी से छलछला उठता। वाल्टर स्काट की पुस्तकें पढ़कर छुट्टी या उत्सव के दिन किसी गानदार गिरजे में प्राथना याद हो आती। प्राथना बहर कुछ

सम्बन्धी और उकता देनेवाली मासूम होती, लेकिन गिरजे का वातावरण सदा छुट्टी या उत्सव के उछाह में डूबा रहता। और डिकेस के प्रति मेरा पहरा लगाव तो अज्ञ दिव्य तक बना है, जब भी उसे पढ़ता हूँ, मुग्ध हो उठता हूँ। वह एक ऐसा लेखक था जो कठिनतम कला में—लोगों से प्रेम करने की कला में—अत्यन्त दक्ष था।

हम लोगों का एक बड़ा सा दल साक्ष्य होते ही ओसारे पर जमा हो जाता। रानी भागों के पत्त में रहनेवाले भाई और पाचो बहनों, व्याचेस्लाव तैमाको नामक एक पिचकी हुई नाक वाला छात्र और कई अन्य। कभी-कभी एक बड़े अफसर की लडकी भी हमारे साथ आ बैठती। इस अफसर का नाम प्तीत्सिन था। वे पुस्तकों और कविताओं के बारे में वार्ता करते, जो मुझे अत्यन्त प्रिय थीं और जिनमें मेरी अच्छी प्रगति थी। मैं इन सबसे ज्यादा पुस्तकें पढ़ चुका था। लेकिन अफसर वे स्कूल की बातें करते, अपने शिक्षकों का रोना रोते। मैं उनकी बातें सुनता और मुझे लगता कि मेरा जीवन उनसे ज्यादा उम्बत है। मुझे अचरज होता कि वे यह सब कैसे बरबास्त कर लेते हैं। लेकिन, यह सब होने पर भी, मैं उनसे ईर्ष्या करता हूँ। यह क्या बम बड़ी बात थी कि वे अध्ययन कर रहे थे।

मेरे सगी-साथी उच्च में मुझसे बड़े थे लेकिन मुझे लगता कि मैं उनसे ज्यादा परिपक्व और अनुभवी हूँ। यह भावना मुझे भीतर ही भीतर कबोती और उनके साथ मेरे बीच एक दीवार सी खड़ी कर देती। इस दीवार को तोड़ने के लिए मैं बेचन हो उठता और उनके साथ घुल मिलकर रहना चाहता। दिन भर मैं काम करता और काफी साक्ष्य बोते, धूल और गर से लयपय सवया भिन्न दुनिया की गहरी और विविधतापूर्ण छाप हृदय में लिए घर लौटता। इसके प्रतिबल मेरे सगी-साथियों के अनुभव पुल नितान्तर सदा एक से होते। लडकियों के बारे में खूब बातें करते, पहले एक से प्रेम चलता फिर दूसरी से। वे कविताएँ लिखना चाहते, और इसके लिए अफसर मेरे पास आते। मैं बड़े चाव से तुकबंदियों पर हाथ भावमाता। मैं तुक जोड़ने में दक्ष था, गीत की कडियाँ अपने आप गुप जानीं, लेकिन जाने क्यों मेरी कविताएँ हमेशा हास्य रस की रचनाएँ बन जातीं। ज्यादातर कविताएँ प्तीत्सिन की लडकी को लक्ष्य कर लिखी या लिखवाई जातीं और मैं, अदबदाकर, किसी सबकी से—ग्राम तोर से प्यार से—उसकी तुलना करता।

सेमाशुको कहता

“इन पवित्रियों को तुम कविता कहते हो? ये कीले हैं, कीले, जिन्हें चमार जूतो में ठोकते हैं।”

अप्य किसी से पीछे न रहने की होड में मैं भी प्तीत्सिन की लडकी से प्रेम करने लगा। यह तो याद नहीं पडता कि मैं अपने प्रेम को किस तरह उसके सामने व्यक्त करता था, लेकिन इस प्रेमचक्र का अंत दुखद ढंग से हुआ। एक दिन मैंने उससे कहा कि चलो, रवेस्दिन कुड चले। कुड के घद और गदे पानी पर एक तख्ता तर रहा था। तय किया कि उसी पर कुड की सर की जाएगी। वह इसके लिए तयार हो गई। तटते को खींचकर मैं किनारे पर ले आया और उसपर टाडा हो गया। तटता काफी मजबूत था और मजे में मेरा बोझ सभाल सकता था। लेकिन लडकी ने जो बेल बूटो और फीतो से सजी बिल्कुल गुडिया बनाई थी, जब तटते के बूसरे सिरे पर पाव रखा और मैंने गौरव से भरकर एक डड से तटते को किनारे से हटाया तो कम्बलत तटता घबका ला गया और वह कुड में जा गिरी। मैं भी सच्चे प्रेमी की भांति उसके साथ ही साथ कूदा और पलक झपकते उसे पानी से बाहर निकाल लाया। लेकिन भय और पानी की हरी काई ने लिपटकर उसे बिल्कुल भूचू का मुरब्बा बना दिया था, और उसके सारे सौंदर्य को बिगाड डाला था।

कीचड में लयपय उसने अपना छोटा सा धूसा ताना और बिल्लापी
“तुमने जान-बूझकर मुझे पानी में धक्का दिया।”

मैंने बहुतेरी भाफी मागी, लेकिन उसपर कोई असर नहीं हुआ और वह मेरी पक्की बुझमन बन गई।

नगर का जीवन कुछ ज्यादा दिलचस्प नहीं था। बूडी मालकिन अभी भी मुझसे कुदती और छोटी सदेह की नजर से देखती। बीकतर के चेहरे पर झाड़िया अन्न और भी धनी हो गई थीं, जो भी उसके सामने पडता उसी पर फनफना उठता, मानो सभी से छार खाए घटा हो।

मालिक के पास मक्के बनाने का इतना अधिक काम था कि वह और उसका भाई दोनों मिलकर भी उसे नहीं निबटा पाते थे। इसलिए उसने मेरे सौतेले पिता को भी हाथ बटाने के लिए बुला लिया।

एक दिन मेले के मदान से मैं जल्दी लौट आया—पाचेक बजे। भोजन के कमरे में पाव रखा ही था कि एक ऐसे आदमी पर मेरी नजर पड़ी

जिसे मैं बहुत पहले ही अपने दिमाग से खारिज कर चुका था। मेरे मालिक के साथ वह चाय की मेज के पास बठा था। मुझे देखते ही उसने अपना हाथ बढ़ाया। बोला

“कहो, कसी तबीयत है?”

उसे देखकर मैं सन्न रह गया। मुझे सपने में भी आशा नहीं थी कि उससे कभी भेंट होगी। अतीत की याद आग की लपट की भांति मेरे हृदय को झुलसाती हुई फौंसे गई।

“यह तो डर ही गया,” मालिक ने जोर से कहा।

मेरा सौतेला पिता अपने जजर चेहरे पर मुस्कराहट लिए मेरी ओर देख रहा था। उसकी आँखें अब और भी ज्यादा बड़ी मालूम होती थीं, और वह बेहद खिस्ता पिटा तथा रौंदा हुआ नजर आता था। मैंने अपना हाथ उसकी पतली, गरम उंगलियों से मिलाया।

“तो हम दोनों फिर मिल ही गए!” उसने खासते हुए कहा।

मैं वहाँ से खिसक गया, कुछ इतना निढाल सा होकर भानो मुझपर भार पड़ी हो!

हम दोनों एक-दूसरे से चौकने और खिंचे से रहते। वह मुझे मेरा पूरा नाम लेकर बुलाता और बराबर के आदमी की भांति सम्बोधित करता।

“अगर बाजार जाना हो तो मेरे लिए आधा पाव लाफेम तम्बाकू, सिगरेट बनाने के बिषटसन मार्का सौ कागजों का पकट और आधा सेर सासेज लेते आना। वृत्तङ्ग होगा”

सौदा लाने के लिए जब भी वह रेखगारी देता तो वह हमेशा गरम होती। साफ मालूम होता कि तपेविक ने उसे जकड लिया है और ज्यादा बिनो तक नहीं चलेगा। वह छुद भी यह जानता था और बकरेनुमा अपनी काली दाढ़ी को उमेठता हुआ शान्त तथा गहरी आवाज में कहता था

“असल में मेरे इस रोग का कोई इलाज नहीं है। परंतु अगर आदमी भरपूर मास खाए तो सबल जाता है। कौन जाने, मुझे भी इससे कुछ फायदा हो जाए।”

उसका पेट क्या था, पूरा अघा कुधा था। इतना अधिक वह खाता था कि देखकर अचरज होता था। वह दिन भर चरता और सिगरेट पीता

था। उसके मुह से सिगरेट उसी समय अलग होती थी जब कोई चीज उसे अपने मुह में डालती होती थी। उसके लिए बाजार से मैं रोब सासेज, मास और सार्डिन मछली लाता था। लेकिन नानी की बहन एक अनबूझ सन्तोष के साथ मानो उसके भाग्य का आखिरी फसला देते हुए कहती

“मौत को बढ़िया माल खिलाकर फुसलाया नहीं जा सकता। मौत को नहीं भरमा सकते। सच, कभी भी नहीं!”

मालिक लोग सौतेले पिता के चारों ओर इस हद तक भड़कते दि देखकर मुझलाहट होती। वे हमेशा और हर वक्त कोई न कोई नया दवा तजवीज करते रहते और पीठ के पीछे उसका खूब मचाक उड़ाते।

“बडा धाया है भद्रपुर्य!” छोटी मालकिन कहती, “कहता है कि हम भेड़ की जूठन साफ नहीं करतीं जिससे मक्खियों की फौज जमा हो जाती हैं।”

“हा सचमुच नयाब है!” बडी मालकिन स्वर मिलाती, “देखती नहीं यह अपना कोट किस तरह साफ करता है। धूल के साथ-साथ उसने सारा रोवा भी झाड़ दिया है और वह शिना हो गया है, - वो चार दिन में इतना भी नहीं रहेगा। लेकिन इससे क्या, धूल तो साफ हो जाती है।”

“थोडा धीरज धरो, कुडक-भुगियो! कुछ दिनों में वह खुद ही साफ हो जाएगा।” मालिक मानो मरहम लगाता।

नगर के टुटपुजिया निवासी जिस बुरी तरह अभिजातो की टाग खींचते और उहे नाहक कोचते थे, उसने मुझे अपने सौतेले पिता का पक्ष लेने के लिए मजबूर कर दिया। इन लोगो से तो मक्खीमार खुमिया ही अच्छी। जहरीली जहर होती हैं, लेकिन कम से कम देखने में खूबसूरत तो लगती हैं!

इन लोगो की दमघोट सगत से मेरे सौतेले पिता की करीब-करीब घसी ही हालत थी जसी कि मुगियो के दरबे में फसी मछली की। कहा मुगियो का दरबा और कहा मछली, - लेकिन यह तुलना भी उतनी ही बेजोड और बढगी थी, जितना बेजोड और बढगा जोवन हम बिता रहे थे।

मुझे लगा कि मेरे सौतेले पिता में भी वसे ही गुण मौजूद हैं जो कि मैंने कभी ‘बहुत खूब’ में देखे थे, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। ‘बहुत खूब’ और रानी भागों मेरी नजर में मानो उस समूचे सौंदर्य के मूर्ति

मान रूप थे जो मैंने पुस्तको से प्राप्त किया था। अपने हृदय के श्रेष्ठतम तथ्यो और सुंदरतम कल्पनाओ से मैंने उन्हें सजाया था। पुस्तके पढने पर एक से एक सुंदर चित्र मेरे दिमाग मे उभरते और सब जसे उनके साथ सम्बद्ध हो जाते। मेरा सौतेला पिता भी 'बहुत खूब' की तरह उतना ही अकेला और उतना ही अनचाहा था। घर मे हरेक के साथ वह समानता का व्यवहार करता, अपनी ओर से कभी किसी बात मे टाग नहीं भ्रडाता और सक्षेप मे तथा विनम्रता के साथ सभी सवालो के जवाब देता। जब वह मेरे मालिक को सीख देता तो उसकी बाते सुनने मे बडा मजा आता। मेज के पास खडा हुआ वह करीब-करीब बोहरा ही जाता, दबीज कागज को उगली के लम्बे नाखून से ठकठकाता और शान्त स्वर मे समझाना शुरू करता

"मेरे छयाल मे, इस जगह शहतीर मे एक डाट डालने की जरूरत है, जिससे कि दीवारो पर दबाव एक जायेगा। अगर ऐसा न किया तो शहतीर दीवारो को तोड देंगे।"

"हा, यह तो बिल्कुल ठीक कहा!" मालिक बडबडाता।

जब सौतेला पिता चला जाता तो मालिक की पत्नी उसे कोचती

"तुम भी कसे आदमी हो? जो भी आता है, वही कान पकडकर सबक पढाना शुरू कर देता है!"

सास के भोजन के बाद सौतेला पिता बिला नागा अपने दात माजता और सिर पीछे की ओर फेंककर इस तरह गरारे करता कि उसका ढँढुवा निकल आता। मालकिन न जाने क्यों यह देखकर जल भुनकर कलाघत्तु हो जाती। जब नहीं रहा जाता तो कहती

"मेरी समझ मे इस तरह गरदन उठाकर गरारे करना तुम्हारे लिए नुबसानवेह ही सकता है, येगोनी यासीत्येविच!"

वह केवल मुसकराता और विनम्र स्वर मे पूछता

"क्यो, आप ऐसा क्यो सोचती हैं?"

"इसलिए कि बस मुझे कुछ ऐसा ही मालूम होता है "

इसके बाद हट्टी की एक छोटी सी कनी लेकर वह अपनी उगलियो के नीले नीले नाखून साफ करता और उसकी पीठ फिरते ही मालकिन चहक उठती

“देखो न, यह अपने नाखन तक साफ करता है। एक पाव वज्र में लटका है, लेकिन फिर भी ”

“अरी कुडक-मुगियो ! ” मालिक लम्बी सास खींचते हुए कहता।
“क्या सारी बेवकूफी तुम्हारे ही हिस्से में आई है ! ”

उसकी पत्नी नाराज होती

“ऐसी बात मुह से निकालते तुम्हारी जबान गलकर नहीं गिर जाती ! ”

रात को बूढ़ी मालकिन खुदा के कान साती

“मेरी छाती पर भूग दलने के लिए अब इस भरदुए को घर में से घ्राए हैं, भगवान ! मेरे वीक्तर को कोई नहीं पूछता ”

वीक्तर ने मेरे सौतेले पिता का रग-डग अपनाना शुरू कर दिया, वैसे ही धीमे अदाज में वह चलता, उसकी भाति ही रईसाना और मुनिश्चित अदाज में हाथों को हरकत देता, उसी की भाति अपनी टाई में गाठ लगाता और वैसे ही बिना चटखारे लिए और घपावप की आवाज किए, खाना खाने की कोशिश करता। फिर, अक्लड अदाज में, पूछता

“मक्सीमोव, फ्रान्सीसी भाषा में ‘घुटने’ को क्या कहते हैं ? ”

“मेरा नाम येगोनी वासील्येविच है, ” मेरा सौतेला पिता शांत भाव से उसकी भूल सुधारता।

“कोई बात नहीं। और ‘छाती’ के लिए फ्रान्सीसी भाषा में क्या शब्द है ? ”

सास को जब खाने बठता तो अपनी मा पर उल्टे-सीधे फ्रेंच शब्दों की झड़ी लगा देता

“मा मेर, शेन्ले मुमरन्कोर* सुमर का गोन्त ! ”

बड़ी मालकिन की बाछें खिल जातीं। बहती

“वाह रे, फ्रांस की दुम ! ”

मेरा सौतेला पिता, बिना किसी परेशानी के गुमे और बहरे आरपी की भाति अपना भास खवाता रहता और किसी की ओर धात उठाकर नहीं देखता।

एक दिन बड़ा भाई छोटे भाई से बोला

* मा, मुझे याद और दीजिय।-स०

“वीक्टर, फ्रेंच भाषा बोलना तो तुम सीख गए, अब बस महबूबा भी रख लो ”

मेरे सौतेले पिता ने जब यह सुना तो उसके चेहरे पर शाल्त्त मुसकराहट खेल गई। इससे पहले और बाद में भी, मैंने उसे मुसकराते नहीं देखा।

लेकिन मेरे भालिक की पत्नी यह सुनकर आग-बबूला हो गई। चम्मच को मेज पर पटकते हुए झुझलाकर चिल्लाई

“तुम तो सारी हया शम घोटकर पी गए हो! घर की औरतो के सामने इस तरह की बातें करते तुम्हें जरा भी शम नहीं आती। ”

पिछले दरवाजे के पास अटारी के खोले के नीचे में सोता था। खोले में एक खिडकी थी जहा बठकर मैं पुस्तके पढता था। कभी-कभी मेरा सौतेला पिता घूमते हुए उधर आ निकलता।

“क्यो, पढ़ रहे हो?” एक दिन उसने पूछा और इतने जोरो से सिगरेट का कश खींचा कि उसके सीने के भीतर जलती हुई लकड़ी के चटखने जसी आवाज सुनाई दी। फिर बोला, “कौनसी पुस्तक है?”

मैंने उसे पुस्तक दिखा दी।

“ओह!” उसने पुस्तक के शीपक पर नजर डाली और बोला, “इसे तो शायद मैं भी पढ़ चुका हूँ। सिगरेट पियोगे?”

हम दोनों सिगरेट का धुआ उड़ाते और खिडकी में से गदे अहाते की ओर देखते रहे।

“कितनी बुरी बात है कि तुम्हारी पढाई लिखाई का कोई डील नहीं है,” उसने कहा, “मुझे तो तुम काफी होशियार मालूम होते हो ”

“लेकिन पढ़ता तो हूँ! देखिये न ”

“यह काफी नहीं है। तुम्हें स्कूली शिक्षा की जरूरत है, जिसका एक ढग और कायदा होता है ”

मेरे मन में हुआ कि उससे कहूँ

“आपने तो बाकायदा स्कूली शिक्षा पाई थी, भीमान जी, पर उससे हुआ क्या?”

उसने मानो मेरे मन की बात भाप ली। बोला

“अगर हृदय में किसी अच्छे लक्ष्य और उद्देश्य का बल हो तो स्कूली शिक्षा बड़ी मदद देती है। केवल पढ़े लिखे लोग ही इस जीवन का चोला बदल सकते हैं ”

वह अक्सर सलाह देता

“अच्छा ही कि तुम यह जगह छोड़ दो। यहाँ पड़े रहने में कोई तुक नहीं है ”

“लेकिन मजदूर मुझे अच्छे लगते हैं।”

“किस मानो मे ?”

“वे दिलचस्प होते हैं।”

“हो सकता है ”

एक दिन कहने लगा

“जो हो, हमारे ये भालिक बरिडे हैं, पूरे बरिडे ”

मुझे उन क्षणों और परिस्थितियों की याद हो आई जब कि मेरी मा ने ठीक इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया था। मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे मेरा पाय अगारे पर पड़ गया हो।

“क्यों, क्या तुम ऐसा नहीं सोचते ?” मुस्कराते हुए उसने पूछा।

“हां, ऐसा ही सोचता हू।”

“ठीक ही है मैं देख ही रहा हू।”

“लेकिन मुझे अपना भालिक फिर भी पसंद है ”

“यो तो मुझे भी वह अच्छे हृदय का आवामी मालूम होता है— लेकिन कुछ अजीब सा है।”

मैं उससे पुस्तकों के बारे में बातें करना चाहता था, लेकिन इस ओर उसमें कोई खास लगाव नहीं दिखाई दिया।

“पुस्तकों में इतना क्या दिमाग खपाने की जरूरत नहीं,” वह अक्सर कहता, “तिल का ताड़ बनाना पुस्तकों की विशेषता है। कोई चीनी की लम्बाई के हल खींचतान करता है, और कोई चौड़ाई के हल। लेखक भी क्यादातार हमारे इन भालिकों की भांति हैं छोटे लोग।”

जब वह इस तरह की बातें करता तो मुझे लगता कि वह बहुत ही साहसी काय कर रहा है, और मुह बाये में उसकी ओर देखता रहता।

“क्या तुमने गोचारोव के उपनास पढ़े हैं ?” एक दिन उसने पूछा।

“‘युद्धपोत पल्लादा’ पढ़ा है,” मैंने जवाब दिया।

“‘पल्लादा’ तो उबा देनेवाला उपनास है। लेकिन मोटे तौर से गोचारोव इस के अत्यन्त समझदार लेखकों में से है। तुम उसका ‘प्रोब्लोमोव’ उपनास जरूर पढ़ना। यह एक अत्यन्त साहसपूर्ण और

सचाई से भरा उपयास है। और कुल मिलाकर इसी साहित्य में इसका श्रेष्ठतम स्थान है ”

डिप्लेस के धारे में उसका रहना था

“एकदम कूड़ा मेरी यह राय सोलहो आने सही है। लेकिन आजकल ‘नया जमाना’ के परिशिष्ट में एक बहुत ही दिलचस्प चीज छप रही है। नाम है ‘सप्त एयोनी का प्रलोभन’। जरूर पढ़ना। गिरजे और बीन धम की बातों में तुम्हारी दिलचस्पी तो काफी मालूम होती है। ‘प्रलोभन’ से तुम्हें काफी लाभ पहुंचेगा।”

परिशिष्टों का एक अच्छा-खासा ढेर खुद उसने लाकर मेरे सामने रख दिया और फ्लावट की इस मजेदार वृत्ति को मैं पढ़ गया। उसे देखकर मुझे उन अनगिनत सत्ता की जीवनिया याद हो आईं जिन्हें मैं पढ़ चुका था। पारसी के मुह से भी उस तरह के अनेक किस्से और कहानियां सुन चुका था। जो भी हो, उसका मेरे हृदय पर कोई गहरा असर नहीं पड़ा। उससे श्यावा आनंद तो मुझे ‘उपनिषो कमाली नामक एक जानवर साधनपाले के सस्मरण’ पढ़ने में आया जो इहीं परिशिष्टों में छपे थे।

अपने सौतेले पिता के सामने जब मैंने यह बात स्वीकार की तो शान्त स्वर में उसने कहा

“इसका मतलब यह कि अभी तुम्हारी उम्र इस तरह की पुस्तकें पढ़ने लायक नहीं है। जो हो, उस पुस्तक को भूलना नहीं ”

कभी-कभी यह मेरे पास घटो घटा रहता, मुह से एक शब्द न कहता, केवल जब-तब खासता, और सिगरेट के धुएँ के बादल उड़ाता रहता। उसकी मुँदर आँखों में कुछ ऐसी चमक थी कि देखकर डर लगता। छुपचाप बंठा हुआ मैं उसकी ओर देखता रहता, और इस बात का मुझे ज़रा भी ध्यान नहीं रहता कि यह आदमी जो इतनी खानोशी के साथ तिल तिल करके गल रहा है और जिसके मुह से शिकायत का एक शब्द भी नहीं निकलता, किसी जमाने में मेरी माँ के तन-मन का स्वामी था, और माँ के साथ क्रूरता से पेश आता था। मैं जानता था कि आजकल किसी दरखिन से उसकी आशनाई है, और जब कभी उस दरखिन का मुझे खयाल आता तो तरस और अचरज की भावना से मेरा हृदय भर जाता था। मैं यह सोचकर स्तब्ध रह जाता कि उसकी लम्बी हड्डियों के आलिंगन में बधना और उसका मुह चूमना जिसमें से हर घड़ी सड़ाध

निकलती थी, वह कसे बरदाश्त करती होगी? 'बहुत खूब' की भांति मेरा सौतेला पिता भी एकाएक ऐसी टिप्पणियाँ करता जो अपनी मौलिकता में बेजोड़ होतीं।

“शिकारी कुत्ते मुझे बेहद पसंद हैं, वे बेवकूफ होते हैं, लेकिन फिर भी मुझे अच्छे लगते हैं। वे बहुत ही सुंदर होते हैं। सुंदर ट्रिया भी अक्सर बेवकूफ होती हैं ”

कुछ गव का अनुभव करते हुए मैं मन ही मन सोचता

“रानी मार्गो को अगर तुमने देखा होता तो कभी इस तरह की बात न करते!”

एक दिन उसने कहा

“जो लम्बे असें तक एक साथ रहते हैं, धीरे धीरे शकल में भी एक से हो जाते हैं।” उसका यह कथन मुझे इतना अच्छा लगा कि मैंने उसे अपनी कापी में दर्ज कर लिया।

मैं उसकी और ताकता और उसके मुह से निकलनेवाले शब्दों और वाक्यों की इस तरह प्रतीक्षा करता मानो शीघ्र ही सौंदर्य की कोई मूर्तिमान प्रतिमा प्रकट होनेवाली हो। इस घर में जहाँ लोग एक सिरे से बेरंग और बेरस, घिसी पिटी और जगलवाई भाषा में बातें करते उसके मुह से मौलिक शब्दों और वाक्यों की चुनकर हृदय खुशी से नाच उठता।

मेरा सौतेला पिता मा के बारे में मुझसे कभी बात नहीं करता। बात करना तो दूर, मेरे सामने उसने मा का एक बार भी नाम तक नहीं लिया। यह मुझे अच्छा लगता और एक तरह से आदर का भाव मैं उसके प्रति अनुभव करता।

एक दिन, यह तो याद नहीं पड़ता कि किस सिलसिले में, मैंने उससे भगवान के बारे में सवाल किया। उसने एक नज़र मुझे देखा और फिर बहुत ही निश्चल अदाश में बोला

“मुझे नहीं मालूम। मैं भगवान में विश्वास नहीं करता।”

मुझे सितानोव का ध्यान ही आया। अपने सौतेले पिता से मैंने उसका जिक्र किया। जब मैं अपनी बात पूरी कर चुका तो सौतेले पिता ने घसे ही निश्चल अदाश में कहा

“वह हर चीज को बुद्धि और तर्क की कसौटी पर कसना और समझना चाहता है और जो लोग ऐसा करते हैं वे हमें किसी न किसी चीज में विश्वास करते हैं लेकिन मैं किसी चीज में विश्वास नहीं करता।”

“लेकिन यह तो एक असम्भव बात है।”

“क्यों, असम्भव क्यों है? मैं तुम्हारे सामने मौजूद हूँ, तुम अपनी आँखों से देख सकते हो कि मैं किसी चीज में विश्वास नहीं करता।”

लेकिन मुझे केवल एक ही चीज दिखाई देती थी यह कि वह तिल-तिल करके मौत का निवाला बन रहा है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि मेरे हृदय में उसके प्रति तरस की भावना थी, लेकिन पहली बार मौत के मुह में जा रहे इंसान और खुद मौत के रहस्य में मेरी तीव्र और गहरी रुचि जागी।

वह मेरे पास एकदम बराबर में ही बठा था। उसका घुटना मेरे घुटने को स्पश कर रहा था। सवेदनशील और बुद्धिमान, लोगो को वह उस नाते की नजर से देखता जिससे कि वह उनके साथ बधा या नहीं बधा था, हर चीज के बारे में वह इस विश्वास से बातें करता मानो उसे राय देने और नतीजे निकालने का अधिकार हो। मुझे ऐसा अनुभव होता मानो वह उन तत्वा को अपने भीतर छिपाए हो जो मेरे लिए आवश्यक थे या जो कम से कम अनावश्यक चीजों को मुझसे दूर रखते थे। वह एक ऐसा जीव था जो शब्दों द्वारा व्यक्त न की जा सकनेवाली पेशीदगी से भरा था, सही अर्थों में विचारों का ज्वालामुखी। उन तमाम भावों और विचारों के बावजूद जो मेरे हृदय में उसके लिए मौजूद थे, वह जैसे मेरा ही अंश था, एक ऐसा जीव जो मेरे अंतर के किसी कोने में निवास करता था, मेरे चिन्तन का केंद्र, मेरी आत्मा का सहज साथी। कल वह विलीन हो जाएगा पूणतया विलीन हो जाएगा, मय उन सब धातों और भावनाओं के जो उसके हृदय और मस्तिष्क में छाई थीं और जिनकी एक झलक मुझे उसकी सुंदर आँखों में दिखाई देती थी। जब वह विलीन हो जाएगा, कुछ भी उसका शेष नहीं रहेगा, तो जीवन के उन सूत्रों में से एक सूत्र खंडित हो जाएगा जो मुझे इस दुनिया से बांधे हुए हैं, उसकी केवल एक स्मृति भर रह जाएगी, लेकिन यह स्मृति पूणतया मेरे ही अंतर में रहेगी, परिवर्तनहीन और सीमित, जब कि जीवित और परिवर्तनशील का कुछ भी शेष नहीं रहेगा।

लेकिन यह विचार मान हैं, इनसे भी परे वह अनबूझ चीज है जिसके गम में विचार जम लेते, बढ़ते और पलते हैं, एक ऐसी चीज जिसका आदेश टाला नहीं जा सकता और जो हमें जीवन के घटनाक्रम पर सोचने

के लिए बाध्य करती है, और इस सवाल का जवाब मांगती है कि क्यों, ऐसा क्यों है?

“ऐसा लगता है कि शीघ्र ही मुझे विस्तर की शरण लेनी पड़ेगी,” एक दिन जब कि बूढ़ा बाढ़ी हो रही थी मेरे सौतेले पिता ने कहा, “और मेरी इस कमजोरी को लाटसाहबी तो देखो, कोई काम करने को जी नहीं चाहता ”

अगले दिन शाम की चाय के समय उसने मेज और अपने घुटनों पर से जूठन के कण साफ करने में कमाल कर दिया, और ढेर तक इस तरह हाथों को हरकत देता रहा मानो किसी अदृश्य गदगी को भगाने और झाड़ने का प्रयत्न कर रहा हो। बूढ़ी मालकिन ने पलकों के नीचे से उसकी ओर देखा, और अपनी बहू से फुसफुसाकर बोली

“देख तो, किस तरह अपने परो और बालों को नीचे और झाड़ पाँछकर सवार रहा है ”

इसके दो दिन बाद वह काम पर नहीं आया, और एक दिन बूढ़ी मालकिन ने मुझे एक बड़ा सा सफेद लिफाफा देते हुए कहा

“यह ले, कल दोपहर के करीब एक लडकी इसे लेकर आई थी, पर मैं देना भूल गई। जवान, सुंदर सी लडकी थी, जाने कौन लगती है तेरी! ”

लिफाफे के भीतर, बड़े-बड़े अक्षरों में, अस्पताली कागज पर निम्न सदेश लिखा था

“एकाम घटे का समय मिल सके तो आना। मैं मरतीनोक्याया अस्पताल में हूँ।—ये० म०”

अगले दिन सबेरे ही मैं अस्पताल पहुँच गया और एक बाड़ में अपने सौतेले पिता के पायताने जाकर बट गया। वह विस्तर से भी सम्बा था, और उसके पाय जिनमें वह भूरे रंग के मोठे पहने था, पतंग के पायताने से बाहर निकले थे। उसकी खूबसूरत आँखें पीली दीवारों का धक्कर लगतीं और मेरे चेहरे तथा उस लडकी के छोटे-छोटे नाजुक हाथों पर धाकर टिक जातीं जो उसके सिरहाने एक स्टूल पर बठी थी। उसने उसके सिर पर अपने हाथ रख दिये और मेरा सौतेला पिता मुह आए अपने गाल से उन्हें सहलाने लगा। लडकी गुदगुदे बदन की थी, और गहरे रंग की सादी पांगाय पहने थी। उसके अछाकार चेहरे पर आंगुष्ठा की सड़ी लगी थी

और उसकी नीली आँखें सौतेले पिता के चेहरे पर, उसके गालों की बुरी तरह उभरी हड्डियों पर, पिचकी हुई नाक और बेरग, मुदनी छाए मुह पर जमी थीं।

“अगर इस आखिरी वक्त भगवान का नाम इनके कानों में पड़ जाता,” वह फुसफुसा रही थी, “लेकिन यह है कि पादरी का मुह तक नहीं देखना चाहते। इन्हें कोई कसे समझाए ”

उसने सकिए से अपने हाथ उठा लिए और उन्हें इस तरह अपनी छातियों पर रखा मानो भगवान की याद कर रही हो।

एक क्षण के लिए मेरे सौतेले पिता में कुछ चेतना का संचार हुआ। भीहें चढाकर उसने छत की ओर ताका मानो किसी चीज की याद कर रहा हो। इसके बाद उसने अपना क्षयग्रस्त हाथ मेरी ओर फला दिया।

“ओह तुम? तुम आ गए बहुत, बहुत शुक्रिया। देखो न क्या बेवकूफी की हालत है यह भी ”

यह कहते-कहते वह थक गया और उसने अपनी आँखें मूंद लीं। नीले नाखून वाली उसकी लम्बी और सब उगलियों को मैंने सहलाया और लडकी ने धीमे स्वर में फिर अनुरोध किया

“येन्नेनी वासील्येविच, मेरी खातिर मान जाओ! पादरी को ”
सौतेले पिता ने आँखें खोलीं और उसकी ओर इशारा करते हुए मुझसे बोला

“इसे जानते हो? यह बहुत प्यारी ”

उसकी जवान एक गई, मुह और भी ज्यादा घुल गया, और एकाएक भरभराई सी आवाज में कौवे की भाँति चीख उठा। वह घुरी तरह से छटपटाया, कम्बल उतरकर अलग हो गया और पलंग पर बिछे गद्दे को उसने अपने हाथों में दबोच लिया। लडकी के हृदय से भी एक चीख निकली और उसके कुचले हुए तक्रिए में सिर गडाकर सुबकिया भरने लगी।

सौतेले पिता को मरने में जरा भी देर नहीं लगी। बदन के ठंडा पड़ते ही उसके चेहरे पर एक अदभुत शान्ति छा गई और उसकी आकृति का समूचा सौंदर्य लौट आया।

लडकी को अपनी बाह का सहारा दिए मैं अस्पताल से चल दिया। वह रो रही थी और उसके पाव इस तरह लडखडा रहे थे मानो बहुत दिनों की बीमार हो। उसके हाथ में एक रुमाक था जिसे दबा सिफोडकर

उसने गेंद बना लिया था, और रह रहकर उससे पहले एक आख के आसू सोखती थी और फिर दूसरी के। रुमाल के इस गेंद का उसका हाथ बराबर कस और दबोच रहा था, और इस तरह वह उसे सभाले थी मानो वह उसको आखिरी और जान से भी बचावा प्रिय निधि हो।

एकाएक वह ठिठककर खड़ी हो गई और निढाल सी होकर मेरे बग्न से टिक गई। फिर वेदना और शिकायत में उबे स्वर में बोली

“जाडो तक भी तो नहीं रहे आह मेरे भगवान, तूने यह क्या किया ?”

इसके बाद आसुओ में भीगा अपना हाथ उसने मेरी और बढाया और बोली

“अच्छा तो मैं अब चलती हू। वे हमेशा तुम्हारी तारीफ करते थे। कल उनकी मिट्टी ”

“चलिये, आपको घर तक छोड आऊ ?”

उसने एक नजर इधर उधर देखा। फिर बोली

“क्या जरूरत है ? अभी काफी उजाला है।”

बुकड पर रुककर मैंने उसे बेखा। उसके डग बहुत ही अनमने भाव में सडक पर पड रहे थे, ऐसे इतान की तरह जिसे कहीं जाने की जल्दी न हो।

अगस्त का महीना था। पेडो से पत्ते झड रहे थे।

अपने सौतेले पिता के आखिरी क्रिया-कर्म में मैं शामिल नहीं हो सका, और न ही उस लडकी से फिर कभी मेरी भेंट हुई

हर रोज सुबह छ बजे ही मैं मेले के मदान की ओर रवाना हो जाता, जहा मैं काम करता था। वहा काफी दिलचस्प लोगो से मेरी मुताक़ात होती। सफेद बालो वाला बड़ई ओसिप जिसकी जबान छुरी की धार की भांति तेज थी। वह बहुत ही होशियार कारीगर था और देखने में बिल्कुल सन्त निकोलाई मालूम होता था। बुबडा येफीमुका जो छत छाने का काम करता था, राजगीर प्योत्र जो पक्का भगत था, हमेशा कुछ सोचता रहता था और देखने में भी किसी सन्त की भांति मालूम होता था। प्लस्तरकार

प्रिगोरी शिशलिन खूबसूरत था मुनहरी दाढ़ी, नीली आँखें, और चेहरे पर शान्त तथा भले स्वभाव की चमक।

मकानपोत के यहाँ अपनी नौकरी के दूसरे दौर में ही मैं इन लोगों से परिचित हो गया था। हर इतवार को वे आते और बहुत ही रोबिले तथा टाठदार अदाब में रसोईघर में प्रवेश करते। बहुत ही बढिया ढंग से वे बातें करते और रसीले तथा सच्छेदार गब्दा की शब्दी लगा देते। उनकी बातों में मुझे नयापन और अजीब साजगी दिखाई देती। भारी भरकम डीलडौल वाले वे देहातिये मुझे सिर से पाव तक भले मालूम होते। वे सभी अपने अपने ढंग से दिलचस्प थे और बुनाविनो के कमीने, नशोबाज तथा घोर टुटपुजिया से साल बजें अच्छे थे।

उन दिना प्लस्तरवार शिशलिन मुझे सबसे अच्छा लगता था। एक दिन तो मैंने उससे यह सब कहा कि काम सिखाने के लिए मुझे अपना गागिद बना ले। लेकिन उसने मजूर नहीं किया। गोरी चिट्ठी उगली से अपनी मुनहरी भाँह को छुजलाते हुए नर्माँ से बोला

“अभी तेरी उम्र बहुत कम है। हमारा धया आसान नहीं है, अभी एक-दो साल और ठहर जा ”

इसके बाद अपने खूबसूरत सिर को जरा पीछे की ओर फेंकते हुए बोला

“क्यों, जीवन बहुत कठोर मालूम होता है, क्या? लेकिन कोई धात नहीं। बस उटा रह, अपने पर जरा काबू रख, सब ठीक हो जाएगा।”

यह तो नहीं कह सकता कि उसकी इस भली सीख से क्या कुछ लाभ मैंने उठाया, लेकिन मुझे अब तक सीख याद है और उसके प्रति कृतज्ञता से मेरा हृदय भरा है।

यह लोग हर रविवार को सुबह अब भी मेरे मालिक के घर जमा होते, रसोईघर में मेज के चारों ओर बेंच पर बठ जाते और दिलचस्प बातें करते हुए मालिक के आने का इन्तजार करते। मालिक आता, बहुत खुश होकर उनका अभिवादन करता, उनके मसबूत हाथों को अपने हाथ में लेकर हिलाता और देव प्रतिमाओं वाले कोने में बेंच पर बठ जाता। इसके बाद सप्ताह भर का हिसाब किताब शुद्ध हो जाता, नोटों की गड़िया आतीं, देहातिये अपने बिलो और फटी पुरानी बहियों को निकालकर मेज पर फला लेते।

हसते और चुटकिया लेते हुए मालिक उन्हें और वे मालिक को धोखा देने की कोशिश करते। कभी-कभी खूब शिक्षित होती, लेकिन ध्राम तोर से हसी-खुशी और एक दूसरे के साथ छेड़छाड़ के वातावरण में ही वे सारा हिसाब निबटा लेते।

“वाह प्यारे, मालूम होता है कि किसी बहुत ही चालाक दाई ने तुम्हें घुट्टी पिलाई थी!” वे मालिक से कहते।

शेपती सी हसी हसते हुए वह जवाब देता

“तुम्हीं कौन कम हो—जरा आख बची कि माल यारो का! क्यों, ठीक कहता हूँ न, कुडक मुर्गों!”

पेकीमुशका मान लेता, “और हो भी क्या सकता है, दोस्त?”

गम्भीर प्योत्र कहता

“चोरी से कमाये-बचाये माल पर ही तो आजकल गुजारा है। ईमानदारी की सारी आमदनी तो जुवा और जार के चढावे में घसी जाती है।”

“तब तो तुम्हारी थोड़ी-बहुत हजामत बना लेना कोई पाप नहीं है!” मालिक हसते हुए कहता।

वे भी मजाक में ही जवाब देते

“इसका मतलब कि हमको उल्लू बनाना चाहते हो?”

“हमसे चार सी बीसी!”

प्रिगोरी शिशालिन अपनी शाब्दार दाढी छाती से लगाते हुए गुनगुनाकर अनुरोध करता

“क्यों भाइयो, अगर हम एक दूसरे को धोखा दिए बिना अपना कारबार करें तो कसा हो? एकदम ईमानदारी से। न कोई झगड़, न झगड़ा। सारा काम इतनी सहूलियत से हो कि पता तक न चले। धोखे, भले लोगों, तुम्हारी क्या राय है इस बारे में?”

यह कहते-कहते उसकी नीली आँखें तरल और गहरी हो उठतीं। इस समय उसके चेहरे की चमक देखते ही बनती थी। उसका मुसाब सभी को भानी उलझान में डाल देता और एक-दूसरे से धाँसे बचाते वे इधर-उपर देखने लगते।

सलौना सा ओसिप सास धँचते हुए और तरल सा खाते हुए देहा तिया की पकालत में मुदबुदाता, “देहातियो की बात छोडो, वे अगर चाहें तो भी लोगों की ज्यादा धोखा नहीं दे सकते।”

याला और गोल बंधो याला राज झुक्कर मेज पर दोहरा होते हुए कहता

“पाप तो गहरी बलदल है, उसमे पाव रखा नहीं कि भ्रादमी घसता ही जाता है।”

मालिक भी उनके ही भ्रादाज को अपनाते हुए जवाब देता

“मैं तो अपनी सारंगी के स्वर तुम्हीं लोगो की भ्रायाज के साथ फिट करता हूँ”

कुछ देर तक वे इसी तरह फलसफा झाड़ते रहते और इसके बाद फिर एक-दूसरे को घक्का देने पर उतर आते। हिसाब किताब निबट जाने पर वे उठते, चके हुए से और पसीने में सराबोर, और चाय के लिए ढाबे की ओर चल देते। साथ में मालिक को भी खींच ले जाते।

मेले में मेरा काम इस यात की निगरानी रखना था कि ये लोग कील फाटे, इट्टे और इमारती लकड़ी चुराकर न ले जाए। कारण कि मेरे मालिक के साथ काम करने के अलावा इन लोगो ने खुद भी ठेके ले रखे थे और जब भी उन्हें मौक़ा मिलता आखो में धूल झोककर माल सिंडी कर देते थे।

मेरे साथ वे बड़े प्यार से पेश आये। पर शिर्शासन ने कहा

“क्यों तुम्हें याद है, तू काम सीखने के लिए मेरा शागिद बनना चाहता था? अब देख, तू कहा पहुँच गया, मेरा साहब बनेगा, है?”

“ठीक है, ठीक है,” ओसिप ने चुटकी ली, “कर जी भर कर चौकसी।”

प्योत्र के स्वर में सीखापन था। बोला

“सवाल यह है कि इस जबान सारस को बूढ़े चूहो की निगरानी पर क्यों रखा गया?”

मेरी जिम्मेदारियों से मुझे बुरी तरह उलझन होती। इन लोगो के सामने मुझे शम मालूम होती। मैं इन को अपने से बड़ा और किसी ऐसे रहस्य और ज्ञान का धनी समझता था जो मेरे लिए दुलभ था। फिर भी मुझे उनकी इस तरह चौकसी करनी पड़ती मानो वे चोर और उचक्के हों। शुरू-शुरू में तो यह काम मुझे एक बहुत बड़ा खवाल मालूम होता। मेरी समझ में न आता कि कैसे क्या करूँ। लेकिन शीघ्र ही ओसिप ने मेरी उलझन का भ्रादाज लगा लिया और एक दिन अकेले में मुझसे बोला

“मुन, छोकरे, तू मुट-मुह मत पुत्ता, इससे कुछ होने का नहीं, समझा ?”

मेरी समझ में कुछ नहीं आया, सिखा इसके कि यद्द की दस प्रायं मेरी स्थिति के बेदगैपन को समझती हूँ। नतीजा इसका यह कि देखने न देखते हम एक दूसरे से छूय खुलकर बातें करने लगे।

यह मुझे अलग किसी कोने में सील दिया करता

“अगर तू जानना ही चाहता है तो मुन, राज ध्योत्र हम सब से बड़ा धोर है। एक तो यह लालची है, दूसरे उसके कपो पर काफी बड़े परिवार का योग है। उसपर बड़ी निगाह रखना। हर चीज पर वह हाथ साफ करता है—धोर कुछ न होगा तो मुट्टी भर बीते जेब में डाल लेगा, दस-पाच इंटें लिसका देगा, पोटली में थापकर घूना मिट्टी तिडो कर देगा। कोई चीज ऐसी नहीं जिसे वह छोड़ता हो! यसे आदमी बहुत भला है भगतो जता उसका स्वभाव है, पढ़ना लिखना जानता है, लेकिन धोरी का ऐसा चस्का पड़ा है कि पीछा नहीं छाड़ता। अब येकीमुका को ही देख—उसके लिए धोरतो में ही सब कुछ है। धोर है गऊ सा सीधा, तुझे उससे कोई खतरा नहीं। दिमाग भी उसका तेज है। कुबडे वसे सभी दिमाग के तेज धोर छूब चतुर होते हैं! धोर त्रिगोरी गिगलिन—वह कुछ सनकी दिमाग का है। दूसरो की चीजें सेना दूर, वह उन घाटो को भी अपने कब्जे में नहीं रख पाता जो उसकी अपनी हैं! उसे सब बेवकूफ बना सकते हैं, लेकिन यह किसी को बेवकूफ नहीं बना सकता। उसका हर काम बेतुका होता है ”

“क्या वह भला आदमी है ?”

ओसिप ने झालें सिकोडकर इस तरह मुझे देखा मानो बहुत दूर से देख रहा हो, और इसके बाद उसने ऐसे शब्द कहे जो कभी नहीं भूले जा सकते

“हा, यह भला आदमी है! काहिल लोगो के लिए भला बनना सबसे आसान काम है। समझे बबुआ, दिमागी पूजी का जब दिवाला निकल जाता है, तभी आदमी भला बनता है! ”

“और अपने बारे में तुम क्या कहते हो ?” मेने उससे पूछा।

हल्की सी हसी के साथ उसने जवाब दिया

“अपने बारे में तो मैं एक सड़की की भाँति कहता हूँ सफेद बाल

श्रीर एकाध दरजन नाती-पोते हो जाने के बाद जब मैं नाना बन जाऊंगा, तब तुझे बताऊंगा कि मैं कसा था। तब तक तुझे इतजार करना होगा। या फिर अपने दिमाग से काम ले और पता लगा कि मैं कसा हू। मेरी श्रीर से तुझे पूरी छूट है।”

उसने मेरे उन तमाम अदाजों को उलट-पुलट कर दिया जो मैंने उसके श्रीर दूसरा के बारे में लगा रखे थे। उसने जो कुछ बताया था, उसमें सन्देह करने की गुजाइश नहीं थी। मैं नित्य देखता कि येफीमुस्का, प्योत्र और प्रिगोरी भी इस खूबसूरत बूढ़े को अपने से ज्यादा घतुर और दुनियावी मामलो का जानकार समझते हैं। वे हर बात और हर मामले में उससे सलाह लेते। उसकी बातों को ध्यान से सुनते और हर तरह से उसका मान करते।

“जरा बताओ तो सही कि इस मामले में हम क्या करें,” वे उससे अक्सर कहते और वह अपनी सलाह देता। लेकिन ऐसे ही एक दिन अपनी सलाह देने के बाद जब ओसिप चला गया तो राजगीर ने प्रिगोरी से दबे स्वर में कहा

“नास्तिक है, नास्तिक!”

श्रीर प्रिगोरी ने हसते हुए जोड़ दिया

“मसखरा है, पूरा मसखरा!”

प्लस्तरकार ने दोस्ती का भाव जताते हुए मुझे चेताया

“भवसीमिच, वहाँ इस बूढ़े के चक्कर में न फस जाना। उससे बहुत हौशियार रहने की जरूरत है। पलक झपकते ही वह तुझे चकमा दे जायेगा! इन खूबसूरत बूढ़ों से भगवान ही बचाए!”

मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

मुझे ऐसा मालूम होता कि राज इनमें सबसे अधिक ईमानदार और नेक था। वह हमेशा थोड़े में बात करता और उसके शब्द सीधे हृदय में पठ जाते। उसके विचार बहुतकर भगवान, मौत और नरक के चारों ओर मडराते रहते।

“आह भाइयो, आदमी चाहे जितने हाथ-पाव भारे और चाहे जितने मनसूबे बाधे, आखिर डेढ़ हाथ कफन और इस धरती की मिट्टी की उसे शरण लेनी पडती है!”

यह पेट के किसी रोग का शिकार था। कभी-कभी तो ऐसा होता कि कई-कई दिन भीत जाते और वह मुह में एक दाना तक न डालता, अगर जरा सा क्षण भी उसके पेट में घला जाता तो दद के दौरों और मतलिया के मारे उसका बुरा हाल हो जाता।

कुबड़ा येफीमुश्का भी भला और ईमानदार मालम होता था, लेकिन या कुछ बेदास का बूदम, और कभी-कभी अपने आप को एकदम अल्लाह मियां पर छोड़कर इस तरह घूमता मानो उसने होग-हुवास ली दिए हों। वह हमेशा किसी न किसी स्त्री के प्रेम में पागल रहता और इन स्त्रियों में से हरेक का समान शब्दों में वणन करता

“मैं झूठ नहीं बोलता, औरत नहीं, एकदम मलाई का फूल है, बिना और मुलायम।”

जब कुनायिनो की मुहजोर स्त्रियां रुपानो के कश धोने आतीं तो येफीमुश्का छत से नीचे उतर आता और किसी कोने में लडा होकर अपनी घमकदार आंखों की वह पसकर सिकोड लेता और उसका मुह, प्रसन्नता में, इस कान से उस कान तक फल जाता। मगन भाव से वह बुबबुदाता

“आह, कितने रसीले निवाले भगवान ने मेरे माम में छितरा दिए हैं। जीवन का सुख मानो अपने आप उमड़ता हुआ मेरी ओर चला आ रहा है। जरा उसे देखो, कितना बेजोड फूल है। समझ में नहीं आता कि किन शब्दों में मैं अपने इस भाग्य की सराहना करूँ जितनी इतना यदिया उपहार मुझे भेंट किया है! इसका सौंदर्य क्या है मानो बिगारी है जो जल्दी ही मुझे भस्म कर डालेगी!”

यह सुन स्त्रियां खिलखिलाकर हसतीं और एक-दूसरे को दहोका मारते हुए कहतीं

“हाय राम, इस कुबड़े की तो देखो, क्या गलगल हुआ जा रहा है!”

उनके इन मजाकों का उसपर कोई असर न होता। उभरे हुए गालों वाला उसका चेहरा धीरे-धीरे उर्नोदा सा हो जाता, अपनी आवाज पर जैसे उसका कुछ काबू न रहता और रसीले शब्दों की मदमत्त धारा उसके मुह से प्रवाहित होने लगती। स्त्रियों पर एक नशा सा छा जाता और अन्त में बड़ी आधु की कोई स्त्री अचरज में भरकर कह उठती

“अरी देखो तो छबीला कस तडफ रहा है!”

“वाह, क्या चहक रहा है”

पर कोई अडियल अडी रहती

“या कोई भिलारी गिरजे के दरवाजे पर भीख माग रहा हो।”

लेकिन येफीमुस्का भिलारी जरा भी नहीं मालूम होता। मजबूत तने की भांति उसके पाव दृढ़ता से धरती पर जमे होते, उसकी आवाज का जादू हर घडी फैलता और बढ़ता जाता और उसके शब्दों का मोहिनी मंत्र अपना पूरा जोर दिखाता। स्त्रियों का बोलना बंद हो जाता और वे ध्यान से सुनतीं। ऐसा मालूम होता मानो शहद ने लिपटे अपने शब्दों से वह कोई मोहक जाल बुन रहा है।

और परिणाम होता कि रात के भोजन के समय या जब सब काम खत्म कर चुके होते, तब अपना भारी चौकोर सिर हिलाते हुए और अचरज में भरकर अपने साथियों से कहता

“आह कितनी प्यारी, कितनी मीठी औरत एकदम शहद! जीवन में पहली बार इतनी मिठास देखो!”

स्त्रियों को अपने वश में करने के किस्से जब वह सुनाता तो अर्थ लोको की भांति न तो वह शोखी बघारता और न उन स्त्रियों का मजाक उड़ाता। केवल उसकी आखें प्रसन्नता तथा कृतज्ञतापूर्ण अचरज के भाव से खुली की खुली रह जातीं।

सिर हिलाते हुए ओसिप कहता

“वाह, आदम की औलाद, जरा बता तो तेरी उम्र कितनी हो गयी?”

“चार ऊपर चालीस। लेकिन उम्र से क्या होता है? आज तो मेरी उम्र मानो पाच साल घट गई। आज मैंने वैंतरणी में गोता लगाया है और जीता-जागता तुम्हारे सामने मौजब हूँ। मेरा हृदय फूल की भांति खिला है। और भगवान ने औरत को भी खूब बनाया है।”

राज ने कड़े स्वर में कहा

“मेरी बात गाठ-बाध ले, —अभी भले ही तुझे हरियाली दिखाई दे, लेकिन पचास पार करते ही तेरी यह हरवते तुझे खून के आसूँ द्लाएगी!”

प्रिगोरी शिझलिन ने भी लम्बी सास खींची

“तूने तो बेशर्मी की हद कर दी, येफीमुस्का!”

मुझे लगा कि अपने मुन्हाबिले मे कुचडे को बाजी मारते देख खूबसूरत शिशालिन अब अपने जो को जलन मिटा रहा था।

ओसिय ने अपनी मुडी हुई रपहती भोटो के नीचे से झाँककर सबपर एक नजर डाली। हसते हुए बोला

“हर छोरी की अपनी कमजोरी, एक भागे चम्मच-प्याला, दूसरी बहे कपडा-सत्ता सा, कोई चाहे जेवर-गहना, बुढ़िया सबको होकर रहना।”

शिशालिन बियाहित था। लेकिन उसकी पत्नी देहात मे रहती थी। पशुं साफ करनेवाली स्त्रियो की देखकर उसका मन भी सतक उठता। उहे पाना कुछ मुक्किल न था। कारण कि उनमे से प्रत्येक कुछ फालतू धाय की खातिर खिलौना बनने के लिए तैयार थी। भूल मारी इस बस्ती मे आमदनी का यह तरीका भी उसी तरह चालू था जैसे कि धय। लेकिन वह खूबसूरत बेहातिया स्त्रिया को हाथ नहीं लगाता था, चेहरे पर एक धजीब भाव लिए वह उन्हें दूर से ही यो देखता रहता था, मानो उसे उनपर या अपने पर तरस आ रहा हो। और जब वे खुद उससे छेड़छाड़ करतीं या उसे जकसाना शुरू करतीं तो वह झप जाता और हसकर टालता हुआ चला जाता

“भरे यह क्या, देखो न ”

येफीमुश्का को उसकी इस हरकत पर एकाएक विश्वास न होता। उसे कोचता हुआ कहता

“तू आदमी है या धनचक्कर? इतना अच्छा मौका भी भता कोई अपने हाथ से जाने देता है?”

प्रिगोरी अपनी सफाई देता, “भाई मेरे, मैं शादीशुदा आदमी ।”

“तो इससे क्या हुआ? उसे सपने मे भी इसका पता नहीं चलेगा।”

“घरवाली को धोखा नहीं दिया जा सकता, भाई! अगर सब इधर उधर मुह मारता है तो घरवाली इसका हमेशा पता लगा लेती है।”

“सो कसे?”

“यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन अगर खुद उसके आचल मे कोई दाग नहीं लगा है तो वह जरूर पता लगा लेगी। इसी तरह अगर मैं पाक साफ रहता । और मेरी घरवाली बदकारी पर उतर आता है, तो मुझे इसका पता लग जाएगा ”

“सो कसे?” येफीमुश्का फिर चिल्लाकर पूछता।

प्रिगोरी शान्त स्वर में बोला

“यह मैं नहीं जानता ”

येफीमुशका अब उठता। हाथ हिलाते हुए कहता

“भला यह भी कोई बात हुई पाक साफ नहीं जानता तू आदमी है या घनघक्कर ! ”

शिशालिन की देख रेख में कुल मिलाकर सात मजदूर काम करते थे। उसके साथ उनके सघ्न मालिक-नौकर के से नहीं, बल्कि अधिक सरल थे। पीठ पीछे वे उसे बछिया का साऊ कहते। जब वह आता और देखता कि उसके आदमी काम में ढील कर रहे हैं तो वह करनी उठाता और ऐसी लगन से काम में जुट जाता कि देखते ही बनता। साथ ही मुलायम आवाज में कहता जाता

“लगा वो तेज हाथ, प्यारो, तेज-तेज हो जाओ ! ”

एक दिन अपने मालिक के उतावलेपन और कोचने से मजबूर होकर मैंने प्रिगोरी से कहा

“तुम्हारे ये मजदूर बिल्कुल निठल्ले हैं ! ”

यह सुन वह मानो कुछ अचरज में पड़ गया। आखें फाड़कर बोला

“क्या सधमुच ? ”

“हा, यह काम कल दोपहर तक खत्म हो जाना चाहिए था, लेकिन मालूम होता है कि आज भी पूरा नहीं होगा ”

“यह बात तो ठीक है। वे इसे आज भी पूरा नहीं कर सकेंगे, ”

जसने सहमति प्रकट की और फिर कुछ रककर हिचकिचाते हुए बोला

“मेरे क्या आखें नहीं हैं ? मैं भी सब देखता और जानता हूँ। लेकिन मैं उन्हें डडे से नहीं हाक पाता। मुझे शम मालूम होती है। ये सब अपने ही तो लडके हैं और अपने ही गाव के। प्रभु ने आदम से कहा था जा, अपनी एडी चोटी का पसीना बहा और अपना पेट भर। हम सब के लिए प्रभु ने यह आदेश दिया था। क्यों ठीक है न ? कोई भी इस आदेश से बरी नहीं है, न मैं, न तू। लेकिन तू और मैं उनके मुकाबिले कम मेहनत करते हैं। इसी लिए मुझे शम मालूम होती है। मैं उन्हें डडे से नहीं हाक सकता ”

वह हर घड़ी कुछ न कुछ सोचता रहता। कभी-कभी ऐसा होता कि उसे पता तक न चलता और मेले के मदान की सुनी सडको में से किसी

एक फो पार करता हुआ वह श्रोत्रियोदनी नहर के पुत पर पहुँच जाता और वहाँ रेलिंग पर झुका हुआ घटों पानी की ओर ताकता, प्राकार प्रयवा श्रोत्रा नदी के पार ऐत-रतिहानो पर नगर डालता रहता। उसक पास आकर अंगर पूछा जाता

“यहाँ क्या कर रहे हो?”

तो वह चौंक उठता और सकपकाकर मुसकरा देता, “घरे, कोई खास बात नहीं यो ही चरा मुस्ताने और इधर-उधर का नगरा देखने के लिए लडा हो गया था ”

वह अक्सर कहता

“भगवान ने भी हर चीज क्या ठीक ठिकाने से बनाई है। प्राप्तमान और यह धरती जिसपर नदिया बहती हैं और नदियो मे डोंगे, नाव और बजरे तरते हैं। उनमे बठकर चाहे जहाँ चले जाओ—रियावान, रीबिन्क, पेम या आस्त्रजान। एक बार मैं रियावान गया था। नगर बुरा नहीं है, लेकिन उदासी मे डूबा हुआ, —नीजनी नोवगोरोद से भी क्यादा उदास। हमारा नीजनी तो फिर भी मजे की जगह है। और आस्त्रजान? वह और भी मनहूस है। कल्मीक जाति के लोग वहा बहुत हैं। मुझे वे चरा भा अच्छे नहीं लगते। कल्मीक हो, चाहे मोरदोवियाई, तुक हों चाहे जमत, रीर देशो मे जन्मे सभी लोग मुझे बेंकार की बला मालूम होत हैं ”

वह बहुत धीरे धीरे बोलता। उसके शब्द मानो सावधानी से उग रजते किसी ऐसे आदमी को दड रहे हो जो उससे सहमत हो सके। राज प्योत्र ऐसा ही आदमी था जो आम तौर से उसीके स्वर मे स्वर मिलाता था।

“रीर देशो मे जन्मे नहीं, बरी देश मे जन्मे कहो,” प्योत्र गुस्से मे विश्वासपूर्वक कहता, “ईसा के बरी, बरी धम के ”

प्रिगोरी का बेहरा खिल उठता

“कुछ भी कहो, मुझे तो भाई, खालिस हसी खून पस द है, सीमा और सच्चा, मिलावट का जिसमे नाम नहीं। यहूदी भी मुझे बेंकार लगते हैं। मैंने तो बहुतेरा सिर मारा, लेकिन मेरी समझ मे नहीं आया कि भगवान ने इन अर जातियो को क्यों पदा किया? जरूर इसमे कोई गहरा राज है ”

राज भुनभुनाता

“हो सकता है कि इसमे कोई गहरा राज हो, लेकिन फिजूल चीजो की भी कमी नहीं है! ”

ओसिप से नहीं रहा गया। तीले शब्दा मे घञ्जिया बखेरता हुआ
बोला

“फालतू चीजें तो बहुत हैं। तुम्हारी ये बातें ही फालतू हैं। घाह रे,
पयियो! तुम्हारा यह पथपना थोड़े मार-मारकर निफालना चाहिए!”

ओसिप सबसे अलग रहता, और कभी यह चाहिर न होने देता कि
उसका किससे विरोध है और किससे सहमति। कभी-कभी तो ऐसा मालूम
होता कि यह उदासीनतापूर्वक हर बात और हर आदमी से सहमत है।
लेकिन अक्सर सभी लोगो से तग और उफताया हुआ नरर आता और
सभी को एक सिरे से मूख समझता।

“तुम एह तुम तुम सुन्नर की झौलाद हो!” वह प्योत्र, प्रिगोरी
और येफोमुका, सभी को एक ही पेटे मे लपेटता।

सुनकर ये एक लघु हसी हसते, न तो बहुत प्रसनता से और न
बहुत उछाह से, लेकिन हसते जरूर।

मालिक खुराक के लिए मुझे पाच कोपेक रोख देता था। इसमे पूरा
न पडता और मैं अक्सर भूला रह जाता। यह देखकर कारीगर दीपहर
और साभ का भोजन करते समय मुझे भी बुला लेते और कभी-कभी ठेकेदार
घाय पीने के लिए मुझे अपने साथ भटियारखाने मे ले जाते। मैं उनके बुलावा
को खुशी से मजूर कर लेता और उनके बीच बठकर उनकी अलस बातो
और अनोखे क्रिस्तो को मजे से सुनता। धार्मिक पुस्तका की मेरी जानकारी
सुनकर वे बहुत खुश होते।

“पुस्तको से तेरा पेट गले तक अटा है और अब फटा ही चाहता
है!” अपनी नीली आखा से मुझे बींघते हुए ओसिप कहता। उसकी आखो
का भाव एकड मे नहीं आता था। ऐसा मालूम होता मानो उसकी पुतलिया
पिघलकर आखो की सफेदी के साथ एकाकार होती जा रही हो।

“जो हो, अपने ज्ञान को बटोर और सजोकर रखना, उसे जाया न
होने देना। वक्त धर काम गाएगा। बडे होने पर तू सयातो बन सवता
है। लोगो को सात्वना देना और उनके डुसते हृदयो पर मधुर शब्दो से
मरहम लगाना। या फिर तू धनपति बन जाना”

“धनपति नहीं, धमपति!” राज ने, न जाने क्यों, चोट खाई हुई सी
आवाज मे कहा।

“क्या?” ओसिप ने पूछा।

"धनपति नहीं, उन्हें धनपति कहते हैं। जानता तो है तू घोर बहरा भी नहीं "

"अच्छी बात है, धनपति धनकर नास्तिकी और धन द्राहियों की दुम उखाड़ना। या फिर खुद धन द्रोहिया की पात में शामिल हो जाना। यह भी घुरा नहीं रहेगा। असल चीज तो दिमाग है। अगर तू उसमें काम लेगा तो धन द्रोह ने भी बहुत कुछ पढा कर लेगा और मजे से जीवन बिता सकेगा "

प्रिगोरो अचकचाकर तिसियानी सी हसी हसता और प्योत्र अपनी दाढ़ी में खुदबुवाता

"झाड़ फूक करनेवाले भी तो मजे में रहते हैं और दूसरे धन द्रोही भी "

"लेकिन भोजन पढ़े लिखे नहीं होते,--ज्ञान से उनका भला क्या वास्ता?" आसिप जवाब देता और फिर मेरी ओर झुकते हुए कहता

"सुन, मैं तुझे एक किस्ता सुनाता हू। किसी जमाने मैं हमारे गांव में एक भकेला भादमी रहता था। तुश्निकोव उसका नाम था। यों ही बेकार सा भादमी था, जिसे कोई नहीं पूछता था। जिधर हवा ले जाता, झूलें पता सा उधर ही उड़कर जा गिरता। न तो वह मजदूर था, और न भाषारा! एक दिन जब और कुछ नहीं सूझा तो तीर्थ-यात्रा के लिए निकल पड़ा। पूरे दो साल तक उसकी शक्ल नहीं दिखाई दी। इसके बाद एकाएक जब वह लौटा तो उसका हलिया ही एकदम अबला हुआ था--कंधे तक लटके भात, पावरियो जसी गोल टोपी चिड़िया से चिपकी हुई, बदन पर झूल सा लटकता हुआ दोसूती का लबावा। विगारिया छोड़नी नजर से वह लोगो को धिंधता और झीलकर बार-बार कहता--'अपने पाप कबूल करो लोगो, कबूल करो!' और कबूल करनेवाले लोगो, जास तौर से स्त्रियो की बाढ़ उमड़ पड़ती। इस बाढ़ को भला कौन रोकता? उसने दोनो हाथों से चादो बटोरो। तुश्निकोव को खाना मिला। तुश्निकोव को शराब मिली। तुश्निकोव को लुगाइया मिली, जिसपर नजर डालता, वही उसके सामने बिछ जाती "

"भोजन और शराब से कुछ नहीं आता जाता," राज ने बीच में ही झुमलाकर टोका।

"तो फिर किस चीज से आता जाता है?"

“असल चीज है शब्द - वाणी।”

“उसके शब्दों को तो मैंने उलट-पुलट कर नहीं देखा। यो शब्द तो मेरे दिमाग की पिटारी में भी भरे पड़े हैं।”

“उस दमोत्री वासील्येविच तुशिनकोव को हम अच्छी तरह जानते हैं,”
आहत स्वर में प्योत्र ने कहा और थिगोरी ने चुपचाप अपनी आँखें झुका लीं और चाय के गिलास की ओर देखता रहा। ओसिप समझौते के स्वर में बोला

“बहस में पड़ने का मेरा इरादा नहीं है। मैं तो एक मिसाल देकर मक्सीमिच को केवल रोटी रोजी कमाने के रास्ते बता रहा था।”

“जिनमें से कुछ सीधे जेल की हवा खिलाते हैं।”

“कुछ बयो, बल्कि ज्यादातर,” ओसिप ने सहमति प्रकट की। “सभी रास्ते सन्तपन की ओर नहीं ले जाते, यह भी पता होना चाहिए कि कहा मुडना है।”

प्लस्तरकार या राज जैसे भगत लोगों के प्रति उसके व्यवहार में व्यग का कुछ पुट मिला रहता। शायद वह उन्हें पसंद नहीं करता था, लेकिन वह इतना चौकस था कि अपने भावों को प्रकट नहीं होने देता था। मोटे तौर से यह कि लोगों के प्रति उसके रवये का पता लगाना कठिन था।

येफीमुश्का के साथ वह ज्यादा नर्मी और मुलाभियत से पेश आता जो अपने अर्थ साधियों की भांति मानव जीवन के अभिशापो, पाप पुण्य, भगवान और विभिन्न पथों से सम्बन्धित बहसों में हिस्सा नहीं लेता था। वह कुर्सी की पीठ में झुक कर आड़ी करके बैठ जाता ताकि उसका कूबड़ कुर्सी की पीठ से रगड़ न जाए, और एक के बाद एक चाय के गिलास खाली करता रहता। फिर, एकाएक चेतन और चौकना होकर वह अपनी आँखें उठाता और सिगरेट का धुआँ भरे कमरे में इधर उधर देखकर कुछ जोखता हुआ सा नजर आता। उसके कान खड़े हो जाते और भांति भांति की आवाजों के बीच वह कुछ सुनने का प्रयत्न करता। अन्त में वह उछलकर खड़ा होता और तेजी से गायब हो जाता। यह इस बात का सूचक था कि भटियारखाने में किसी ऐसे आदमी का आगमन हो गया है जिससे येफीमुश्का ने कच ले रखा था। ऐसे कोई दजन एक लोग थे, उनमें तो कुछ तो ऐसे थे जो मारपीट के जरिये अपना कच वसूल करने के आदी थे। इसलिए वह हमेशा भागता नजर आता था।

“हैं नहीं धनचरकर, नाराज होते हैं,” यह अचरज में भरकर कृता,
 “इतना भी नहीं समझते कि अगर मेरे पास पसा होता तो मैं अपने प्राण
 पुरी से धवा कर देता।”

“ओह, तुम्हें भी दुम!” श्रोतिप डेला सा फेंकर मारता।

कभी-कभी येकीमुदका विचारों में लोया बठा रहता। न वह कुछ देखता,
 न सुनता। उसका उभरे हुए गालों वाला चेहरा दीला पट जाता और
 उसकी भली आँखें और भी भली हो उठतीं।

“किस सोच में पड़े हो मित्र?” वे उससे पूछते।

“मैं सोच रहा हूँ कि अगर मैं धनी होता तो असली, सचमुच में
 भली किसी कनल की लडकी या ऊँचे कुल की ऐसी ही किसी औरत से
 शादी करता और सच, मैं उससे इतना प्रेम करता कि तुम सोच तक नहीं
 सकते। भगवान् जाने, उसका स्पर्श पाकर उसके प्रेम की आग में मैं
 बसे ही जलता जैसे कि मोमबत्ती जलती है यहीन न हो तो सुनी।
 एक बार बेहात में किसी कनल ने घर बनवाया और इस घर पर तपी
 छत डालने का काम उसने मुझे सौंपा। इस कनल की एक ”

“धन-धन, रहने दे!” प्योत्र ने झुमताकर बीच में ही टोका। “इस
 कनल और उसकी विधवा लडकी का सारा किस्सा हमें मालूम है। उसे
 सुनते-सुनते धान पक गए।”

लेकिन येकीमुदका पर इसका कोई असर न पड़ता। हथेलियों से अपने
 घुटनों को सहलाते और बदन को आगे-पीछे की ओर झकोले देते समय
 हवा को अपने कूबड से छितराते हुए यह कनल की लडकी का किस्सा
 सुनाता

“वह अक्सर दगोचे में निकल आती, एषदम सफेद झुर्रांक कपड़े
 पहने, गुदगुदी और मुलायम। मैं छत पर से उसे देखता और मन ही मन
 सोचता यह सूरज और यह सारी दुनिया, सब इसके सामने हेच हैं।
 अगर मैं कबूतर होता तो उड़कर उसके पास पहुँच जाता। वह फूल थी,
 मलाई के फुण्ड में उगनेवाला प्यारा और मीठा कमल। आह, भाइया,
 ऐसी स्त्री मिले तो समूचा जीवन एक लम्बी सुहाग रात बन जाए।”

“ठीक है। फिर खाने-पीने की भी कुछ जरूरत नहीं रहेगी?” प्योत्र
 रुखें स्वर में कहता। लेकिन प्योत्र का यह धार भी खाली जाता। येकी-
 मुदका अपनी ही धुन में रहता

“हे भगवान, लोग कुछ नहीं समझते। पेट भरने के लिए हमें क्या रोटियों के पहाड़ की जरूरत होगी? फिर, बड़े घर की लडकी के लिए धन की क्या कमी? ”

श्रोसिप हसकर बहता

“अरे रसिक येफीमुस्का! तेरी इन्द्रिया कब जवाब देंगी? ”

येफीमुस्का स्त्रियों के सिवा अरब किसी चीज के बारे में बात नहीं करता, और जमकर काम करना उसके बस का रोग नहीं था। कभी वह पुर्तों से और अच्छा काम करता और कभी एकदम बेगार काटता। उसके हाथ ढीले पड़ जाते और अपनी लकड़ी की पटिया को इतने उल्टे-सीधे ढग से घलाता कि छत में दरारें छट जातीं। यह हमेशा ग्लबर-तेल से गधाता, लेकिन उसकी एक अपनी प्रकृत गंध भी थी, सुहावनी और स्वस्थ गंध, बहुत कुछ बसो ही जसी कि ताजे कटे हुए पेड़ से आती है।

श्रोसिप हर चीज और विषय पर बातें करता था और उसकी बातें सुनने में थड़ा मजा आता। उसकी बातें मजेदार होतीं, लेकिन भली नहीं। उसके शब्द हमेशा कोई कुरेद पदा करते और यह समझना कठिन हो जाता कि वह अपनी बात मजाक में कह रहा है अथवा गम्भीर होकर।

प्रिगोरी भगवान के बारे में बड़े चाव से बातें करता। यह उसका प्रिय विषय था। भगवान से यह प्रेम करता था और उसमें उसका गहरा विश्वास था। एक दिन मैंने उससे पूछा

“प्रिगोरी, क्या तुम जानते हो कि इस दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो भगवान में विश्वास नहीं करते? ”

वह लघु हसी हसा

“तो कसे? ”

“वे कहते हैं कि भगवान जसी कोई चीज नहीं है। ”

“ठीक, मैं जानता हूँ। ”

उसने अपना हाथ इस तरह हिलाया माना किसी अवश्य भक्ती को उड़ा रहा हो। फिर बोला

“राजा दाऊद का वह कयन याद है? उन्होंने कहा था ‘मूल है वे जो अपने मन में कहते हैं कि खुदा नहीं है।’ देखा तूने, इस तरह के जाहिल और पय से भटके लोग यह बातें कितने साल पहले करते थे। भगवान के बिना तुम एक ढग भी आगे नहीं रख सकते। ”

श्रीर श्रीसिप ने मानो उससे सहमति प्रकट करते हुए टिप्पणी जड़ी

“जरा प्योत्र को उसके भगवान से अलग करो तो, फिर देखना क्या
हुलिया बनता है!”

शिदालिन का मुँदर चेहरा गम्भीर हो गया, अपनी दाढ़ी में उगलिया
फेरने लगा जिनके नाखूनो पर घूना सूखा हुआ था। फिर रहस्यमय प्रदाव
में बोला

“हाड-भांस के हर पुतले में भगवान मौजूद है। आत्मा और अन्तमन
भगवान की देन है।”

“श्रीर पाप?”

“पाप का सम्बन्ध सिर्फ हाड-भांस से है। वह भगवान की नहीं, शतान
की देन है। यह केवल ऊपरो, बाहर की चीज है, जैसे चेहरे पर चेन्न
के दाग। बस, इससे ज्यादा कुछ नहीं। यही सबसे ज्यादा पाप करता
है जो पाप के बारे में सब से ज्यादा सोचता है। अगर दिमाग में पाप का
छयाल न हो तो पाप करने की कभी नीयत न आए। शतान जो हाड
भांस के हमारे बदन पर हावी होता है, हमारे दिमागो में पाप के बीज
बोता है।”

राज के मन में बात कुछ जमी नहीं। बुविधा प्रकट करते हुए बोला

“बात कुछ जमी नहीं।”

“बिल्कुल इसी तरह, इसमें जरा भी सदेह की मुजाइश नहीं। भगवान
पापों से मुक्त है, उसने इंसान को अपनी छवि में ढाला और उसे अपनी
सादृश्यता प्रदान की है। हाड भांस से बनी यह छवि ही पाप करती है,
सादृश्यता पापो से मुक्त और अछूती है। सादृश्यता ही वह चीज है जिसे
हम रह या आत्मा कहते हैं।”

वह इस तरह मुसकराता मानो उसने बाजी जीत ली हो। लेकिन
प्योत्र फिर बुदबुदा उठता

“मुझे लगता है कि ठीक इसी तरह नहीं।”

श्रीर श्रीसिप जवान खोलता। कहता

“तुम्हारे हिसाब से अगर पाप नहीं तो कबूल करने की भी जरूरत
नहीं, श्रीर जब कबूल नहीं तो मुक्ति का पचडा भी नहीं। क्यों, ठीक
है न?”

“हा, ठीक है। एक पुरानी कहावत ‘शतान नहीं तो खुदा भी नहीं’”

शिशालिन पीने का आदो नहीं था। वो घूटो ने ही उसपर अपना रग घड़ा दिया। उसके चेहरे पर गुलाबी दमक छा गई, आँखो मे बचपन का भोलापन उभर आया और आवाज हितोरें लेने लगी

“ओह मेरे भाइयो, कितना अदभुत जीवन है हमारा! हमसे जो बनता है, थोडा-बहुत काम कर लेते हैं और इतना भोजन मिल जाता है कि भूखो मरने की मौखत नहीं आती। ओह शुभ है उस भगवान का जिसकी बढीसत हम इतना अदभुत जीवन बिताते हैं।”

और वह रोना शुरू कर देता। उसकी आँखो से आसू निकलते और गालो पर से होते हुए उसकी रेशमी दाढ़ी मे छटक जाते और काच के मनको की भाँति घमकते।

उसके इन काच के आसुआ और जिस ढग से वह इस जीवन की भडती करता उससे मेरा हृदय भना जाता, और मुझे बडी धिन मालूम होती। मेरी नानी भी इस जीवन के लिए खुदा के दरवार मे शुभ्राना भेजती थी, और इस जीवन की तारीफ के गीत गाती थी, लेकिन उसके गीत और प्रशंसा कहीं अधिक विश्वसनीय और सीधे सादे होते थे। उनमे इतना बुराप्रह नहीं होता था।

उनकी ये बातें मेरे हृदय मे बराबर खलबली मचाए रहतीं, कभी न खत्म होनेवाले सनाय का मैं अनुभव करता, और धुधली तथा अज्ञात आशाकाए मुझे घेर लेतीं। देहातियो के बारे मे अनेक कहानिया और किस्से मैं पढ़ चुका था और किताबो के देहातियो तथा सचमुच के देहातियो मे भारी अन्तर मुझे दिखाई देता था। किताबा के देहातिये सब के सब दुख और मुसीबतो मे फसे अभागे जीव थे जिनमे—ये भले ही चाहे बुरे—विचारो और थाणी की वह समृद्धता एक सिरे से गायब थी जो कि सचमुच के जीवित देहातियो की एक खास विशेषता थी। किताबो के देहातिये भगवान, विभिन्न पयो और गिरजे के बारे मे कम बातें करते थे और अपने से ऊचो, जमीन, जीवन के अयाय और मुसीबतो के बारे मे क्यावा। किताबो के देहातिये स्त्रियो के बारे मे भी कम बातें करते थे, और अगर उहे बात करते दिखाया भी जाता था तो इस तरह मानो उनके हृदय मे स्त्रिया के प्रति अधिक इच्छत हो, और उनके लिए कभी

भी गधे या शीघ्र शब्दों का इस्तेमाल न करते हों। सचमुच के देहातियों के लिए स्त्री मन बहलाने का एक साधन थी, लेकिन एक छतरनाक साधन जिसके साथ काफी चात्ताकी और चतुराई बरतने की जरूरत थी, अन्यथा यह उनपर हावी होकर उनका सारा जीवन उलझा सकती थी। किताबों के देहातिये या तो घुरे होते या भले, और इन दोनों ही सूत्रों में उन्हें काफी सिपाई के साथ किताबा में पेश किया जाता, लेकिन सचमुच के देहातिये न भले होते और न घुरे, बल्कि दित्तचस्प होते हैं। उनकी तमान बातें सुनने के बाद भी यह भावना बनी रहती कि कुछ है जो अनबहा रह गया है, जिसे उन्होंने अपने हृदय में छिपाकर रत छोड़ा है, और कौन जाने कि ठीक वह अज्ञ ही, जो अनबहा रह गया है, उनकी व्यक्तित्व का असली तत्व हो।

किताबों के देहातिया में मुझे प्योत्र नाम का बड़ई सबसे ज्यादा पसंद था। "बड़ई बल" नामक पुस्तक में उसका किस्ता बिया हुआ था। मैं उसे अपने साथियों को पढ़कर सुनाने के लिए बेचन हो उठा। एक दिन मेले में काम पर जाते समय उस पुस्तक को भी मैं अपने साथ लेता गया। अक्सर ऐसा होता कि दिन भर काम करते-करते मैं बुरी तरह थक जाता और घर लौटने की हिम्मत न रहती। ऐसी हालत में मैं कारीगरी के किसी एक बाड़े में बला जाता और रात उनके साथ बिताता।

मैंने जब उन्हें यह बताया कि मेरे पास बड़ई लोगों के बारे में एक किताब है तो उनकी और खास तौर से श्रोतिप की बिलचस्पी का बारपार नहीं रहा। उसने मेरे हाथ से किताब ले ली और अपने सन्तनुमा सिर को हिलाते हुए इस तरह उसके पाने पलटने लगा, मानो उसे यकीन न आ रहा हो। बोला

"लगता है कि सचमुच ही हमारे बारे में लिखी गई है। किसने लिखा है इसे? क्या कहा, किसी रईसबादे ने? ठीक, मैं भी ऐसा ही सम्प्रता था। रईसबादे और सरकारी अफसरों के क्रदम जहां न पहुँचें, थोड़ा है। भगवान से जो कसर रह जाती है, उसे यही लोग पूरा करते हैं। भगवान ने मानो इसीलिए इहे इस दुनिया में भेजा है।"

"भगवान की बातें तू सीच-सम्प्रकर नहीं करता," प्योत्र ने टोका।

"ठीक है, ठीक है। मेरे शब्दों से भगवान का उतनी ही दूर का

नाता है जितना कि मेरा बफ़ के उस कण से या वर्षा की उस बूद से जो आसमान से गिरकर मेरी गजो चाद पर आ विराजती है। घबरा नहीं, हम-तुम जैसे लोगों की भगवान तक कोई रसाई नहीं है ”

सहसा वह अघोर हो उठा और उसके मुह में से शब्दों के तीखे बाण चकमक में से चिगारियों की तरह निकल निकलकर जो कुछ भी उसके विपरीत था उसे बौंधने लगे। दिन में कई बार उसने मुझसे पूछा

“क्यों, मयसीमिच, कुछ पढकर सुनाएगा न? ठीक, बहुत ठीक। तूने बहुत ही अच्छा सोचा है।”

जब काम समाप्त हो गया तो साह का पाना उसी के बाड़े में हुआ। खाने के बाद प्योन भी आ गया। उसके साथ एक कारीगर और आया जिसका नाम अरदाल्योन था। फोमा नामक एक लडके को साथ लिए शिवालिन भी आ गया। कोठरी में जहाँ कारीगर सोते थे, एक लम्प जलाकर रख दिया गया और मैंने पठना शुरू किया। बिना हिले-डुले या मुह से एक शब्द कहे वे सुनते रहे। लेकिन शीघ्र ही अरदाल्योन खोजकर बोला

“मैं तो चलता हूँ। सुनते-सुनते ऊब गया।”

वह चला गया। प्रिगोरी सबसे पहले चित्त हो गया। वह मुह बाधे सो रहा था, और ऐसा मालूम होता था मानो उसका मुह अचरज के मारे खुला रह गया हो। उसके बाएँ अंग बढ़ई भी चित्त हो गए। लेकिन प्योन, ओसिप और फोमा मेरे और निकट खिसक आए तथा बड़े ध्यान और उत्सुकता से सुनते रहे।

जब मैं छतम कर चुका तो ओसिप ने तुरत लम्प बुझा दिया—तारे आधी रात बीत जाने की सूचना दे रहे थे।

प्योन ने अघेरे में पूछा

“इस किताब में नुक्ते की बात क्या है? यह किनके खिलाफ लिखी गई है?”

ओसिप जूते उतार रहा था। बोला, “बाते मत कर। अब सो जा।”

फोमा चुपचाप खिसककर एक ओर लेट गया।

“मेरी बात का जवाब दे न,—यह किनके खिलाफ लिखी गई है?”

प्योन ने फिर बल देकर पूछा।

माची पर अपना बिस्तरा लगाते हुए ओसिप ने कहा

"यह लिखनेवाले जानें। हमें मायापच्ची करने में क्या फायदा?"

"क्या यह सीतेली मांगो के खिलाफ लिखी गई है? तब तो इन्हें कोई रुक नहीं। इस तरह की किताब सीतेली मांगो का सुधार नहीं कर सकती," राज ने जोर देते हुए कहा। "या फिर यह प्योत्र के खिलाफ लिखी गई है जो इमका हीरो है,—प्योत्र बड़ई। लेकिन यह उसे भी अप्रपर में ही सदका रहने देनी है। आखिर उसका हथ क्या होता है? वह हत्या करता है, और उसे बाले पानों की सखा देकर साइबेरिया भ्रम दिया जाता है। बस, क्रिस्ता छल्म! यह किताब उसे भी कोई मदद नहीं देती—वे भी नहीं सकते, नहीं, बिल्कुल नहीं। इसीलिए तो मैं पूछता हूँ, यह किसके लिए लिखी गई है?"

ओसिप झुप रहा। तब राज ने अपनी बात छल्म करते हुए कहा

"इन लेखकों के पास अपना कुछ काम तो है नहीं, सो दूसरा ही धाँज में उगली डालते फिरते हैं, बठकबाज निठल्ली औरतो की तरह! अच्छा तो अब सोचो, काफी बेर हो गई "

दरवाजे के नीले चौखटे में एक क्षण के लिए वह ठिठककर खड़ा हो गया और बोला

"क्यों, ओसिप, तेरा क्या खयाल है?"

"ऐं?" ओसिप अपसोया सा कुनमुनाकर रह गया।

"अच्छा तो "

विशालिन जिस जगह बठा था, वहीं कश पर पसर गया। फोमा ने पास ही पुआल पर लेट गया। समूची बस्तो पर सन्नाटा छाया था। कहीं दूर से इजनों की सीटियों के बजने, लोहे के भारी पहियों के गडगडाने और गाड़ियों की जोड़नेवाले कांटों के खडखडाने की आवाजें आ रही थीं। सायबान सभी प्रकार के खरंटों की आवाज से गूज रहा था। मेरा हृदय बड़ा सूना सा हो रहा था। मैं आशा करता था कि पुस्तक छल्म होने के बाद कोई दिलचस्प बहस होगी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ

एकाएक ओसिप ने धीमी कितु साफ सुन पडनेवाली आवाज में कहा

"उसकी बातों को मन में बठाने की जरूरत नहीं। तुम लोग अपना काम उभ्र ही, और सारा जीवन तुम्हें पार करना है। दिमाग का कोठा खुद अपने विचारों से भरते जाओ! उधार लिए सौ विचारों से अपना एक विचार कहीं ज्यादा कीमती होता है! क्या, फोमा, सो गया, क्या?"

“नहीं,” फोमा ने तत्परता से कहा।

“तुम दोनों पढ़ना जानते हो, तो बराबर पढ़ते रहना। लेकिन हर बात पर भरोसा न करना। आज उनका बोलबाला है, ताकत उनके हाथ में है, सो जो मन में आता है, छाप डालते हैं।”

उसने माची पर से अपनी टांगें नीचे लटका लीं और दोनों हाथ किनारे पर टिकाकर हमारी ओर झुकते हुए बोला

“किताब—आखिर किताब होती क्या है? भेदिये की भांति वह सबका भेद खोलती है। सच, किताब भेदिये का काम करती है। आदमी मामूली हो चाहे बड़ा, वह सभी का भेद बताती है। वह कहती है—देखो, बडई ऐसा होता है। या फिर वह किसी रईसजादे को सामने खड़ा कर कहती है—देखो, रईसजादा ऐसा होता है। मानो ये अर्थ सबसे भिन्न, अनोखे और निराले हो! और किताबें योही, बेमतलब, नहीं लिखी जातीं। हर किताब किसी न किसी की हिमायत करती है।”

“धोत्र ने ठीक किया जो उस ठंकेदार को मार डाला।” फोमा ने भारी आवाज में कहा।

“ऐसी बात मुह से नहीं निकालते। आदमी की हत्या करना क्या कभी ठीक कहा जा सकता है? मैं जानता हूँ कि प्रिगोरी से तेरी नहीं बनती, तू उससे नफरत करता है। लेकिन यह ठीक नहीं। हममें कोई भी धनासेठ नहीं है। आज मैं मुखिया कारीगर हूँ, लेकिन कल मुझे अर्थ सभी मजदूरों की भांति काम करना पड़ सकता है।”

“मैं तुम्हारे बारे में थोड़े ही कह रहा था, चचा ओसिप।”

“इससे कोई फक नहीं पड़ता। बात तो वही है।”

“तुम तो सच्चे आदमी हो।”

“ठहर, मैं तुम्हें बताता हूँ कि यह किताब किसके लिए लिखी गई है,” ओसिप ने फोमा के क्षोभ भरे शब्दों को अनसुना करते हुए कहा। “इस में पूरी खालाकी भरी है। देख—एक हूँ जमींदार, बिना किसानों के और एक किसान बिना जमींदार के। अब देख जमींदार की भी हालत खराब है और किसान भी अच्छा नहीं। जमींदार कमजोर, सिरफिरा हो गया है, और किसान शराबिया, रोमी, डींगमार हो गया है, झोखता रहता है—समझा, यह दिखाया है। और कहने का मतलब यह है कि भई, जमींदारों की गुलामी अच्छी थी जमींदार को किसान का भरोसा

श्रीर किसान को जमीनदार का आसरा और बस दोनों खाते-पीने धन की घसी बजाते थे हाँ, मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि जमींदारों की गुलामी के जमाने में इतना गटराग नहीं था। जमींदारों की शरीर किसानों की जरूरत नहीं, उन्हें तो ऐसे किसान चाहिए जिनके पास पसा हो, अकल नहीं, यह उनसे फायदे की बात है। अपनी भागी बेसी, खुद भुगतती बात में कहता हूँ। धानीस साल तक मैं जमींदारों की गुलामी में रहा हूँ। बोझों की भार ने मेरी घमड़ी पर जो तिलावट तिखी है, वह क्या किसी किताय से कम है?"

मुझे उस बूढ़े गाड़ीवान की भाव ही आई जिसका नाम प्योत्र था और जिसने अपना गला फाट डाला था। एानदानी रईसों और हुत्तों के बारे में यह भी इसी तरह की बातें करता था। शोसिप तथा उस कुत्सित बूढ़े की बातों में यह सावृश्य मुझे बड़ा अटपटा मालूम हुआ।

शोसिप ने हाथ से मेरे घुटने को टुम्रा और कहता गया

"कितायों और दूसरी तिलावटों के आर-पार देखना और उनका भीतरी मतलब समझना जरूरी है! बिना मतलब कोई कुछ नहीं करता। चाहे कोई कितना ही छिपाए, लेकिन मतलब सब के पीछे होता है। और कितायें लिखने का मतलब होता है दिमाग को चक्कर में डालना, उसे गडबडाना। और दिमाग एक ऐसी चीज है जो लकड़ी काटने से लेकर जूते बनाने तक, हर जगह काम देता है "

यह बहुत देर तक बातें करता रहा। कभी वह बिस्तर पर लेट जाता और कभी उछलकर बैठ जाता, और रात को निस्तब्धता तथा अंधेरे में अपने साफ-सुखरे शब्दों को मुलायमियत से बिखेरता जाता।

"कहते हैं कि जमींदार और किसान में भारी अन्तर और भेद है। लेकिन यह बात सच नहीं है। हम दोनों एक हैं, सिवा इसके कि वह ऊंचाई पर है। यह सही है कि वह अपनी कितायों से सीखता है, और मैं अपनी कमर पर पड़े नीले निशानों से। उसकी कमर पर कोई निशान नहीं हाते—सारा अंतर बस यही है। जरूरत इस बात की है, छोड़ो, कि नये साचे में इस दुनिया को ढाला जाए। कितायों को योती मारो, उन्हें दूर फेंको, और अपने से पूछो आखिर मैं क्या हूँ?—एक इन्सान। और जमींदार क्या है?—वह भी एक इन्सान है। फिर दोनों में भेद क्या है? क्या भगवान ने यह कहकर उसे दुनिया में भेजा है कि मैं तुमसे

पांच कोपेक ज्यादा घसूल करेगा? लेकिन नहीं, भगवान के दरवार में सब एक हैं, सब को एक सा भुगतान करना पड़ता है ॥

घर में जब रात का अंधेरा छट चला, और तारों की रोगनी मद्धिम पड़ गई तो ओसिप ने मुझसे कहा

“देखा, मैं कसी बातें बघना सकता हूँ। न जाने क्या-क्या कह गया, कभी सोचा तक न था। लेकिन तुम छोकरे मेरी बातों पर ज्यादा ध्यान न देना। नॉंद आ नहीं रही थी, तो जो मन में आया, उल्टा-सीधा कहता गया। जब आप नहीं लगती तो अजीब अजीब बात सुझती हैं और दिमाग बातों का कारणाना बन जाता है, और मनमानी बातें गठता रहता है बहुत पहले की बात है। एक घोड़ा था। भदाना से उडकर वह पहाड़ की छायर साता, कभी इस खेत का चक्कर लगाता तो कभी उस खेत पर जा बठता। इसी तरह उडते-उडते उसके सारे पर झड गए, शरीर सूख चला, और एक दिन वह छलम हो गया। बता, भला कौवे की इस कहानी में क्या तुफ है? है न, बिल्जुल बेमानी और बेतुकी कहानी? हा तो अब सो जाओ! जल्दी उठकर काम पर भी तो जाना है ॥”

१८

धीरे धिनो में जिस तरह जहाजी याकोव मेरे हृदय पर छा गया था, उसी तरह ओसिप भी मेरी आप्तों में समाता, फलता और बढ़ता गया और अब सभी को उसने ओसल कर दिया। उसमें और जहाजी याकोव में बहुत कुछ समानता थी, इसके अलावा उसे देखकर मुझे अपने नाना, पारली प्योन वासील्येविच और बावर्छी स्मूरी की भी याद हो आती थी जो सब मेरी स्मृति में अत्यन्त गहराई से अकित थे। लेकिन ओसिप की अलग गहरी छाप रही। जिस तरह जग घटे के साबे को खाता जाता है, वैसे ही वह भी मेरे अतमन की गहराइयों में प्रवेश करता और मेरे रोम रोम में समाता जा रहा था। ओसिप के दो रूप साफ नजर आते थे। दिन का ओसिप रात के ओसिप में भिन होता था। दिन में काम करते समय उसके दिमाग में फुर्ती आ जाती, दो टूक और अधिक व्यावहारिक ढंग से वह सोचता और उसकी बात समझने में अधिक दिक्कत न होती। लेकिन रात को जब उसे नॉंद न आती या सांभ

को मुझे साथ लेकर जब यह मातपूरे बचनेवाली अपनी रिश्तेदार से मुलाकात करने नगर जाता, तो यह दूसरा ही रूप धारण कर लेता। रात को यह विशेष ढंग से सोचता और उसके विचार सातटन की रोगनी की भाँति अंधेरे में छूब उज्ज्वल तथा घारा और से छूब घमकते दिखाई देते, और यह पता लगाना कठिन हो जाता कि उनका सीधा पथ कौन है और उलटा कौन सा, या यह कि उनमें से कितने यह पता करता है और कितने नहीं।

अब तक जितने भी लोगो से मिला था, मुझे वह उन सब से ज्यादा घबुरा मालूम होता। उसे पकड़ने और समझने की व्यग्रता हृदय में लिए मैं उसके घारो और भी उसी तरह भडराता जैसे कि जहाजी यात्री के घारो और, लेकिन वह सपक मुई की भाँति बल लाकर निकल भागता और पकड़ में न आता। अपने असली और सच्चे रूप को वह कहा छिपाए है? उसका यह पहलू कौन सा है जिसे सच्चा समझकर ग्रहण किया जा सके?

मुझे उसका यह कथन रह रहकर याद आता

“या फिर अपने दिमाग से काम ले और पता लगा कि मैं कसा हूँ मेरी और से तुझे पूरी छूट है।”

यह मेरे अह पर चोट थी। मुझे ऐसा मालूम होता कि इस बूड़े आदमी के रहस्य का उदघाटन किए बिना मैं जीवन से एक ढग भी आगे नहीं बढ़ सकूंगा। उसे समझना मेरे लिए जीवन का आधारभूत प्रश्न बन गया।

पकड़ में न आनेवाले अपने स्वभाव के बावजूद, वह एक स्थिर व्यक्तित्व का आदमी था। मुझे ऐसा मालूम होता कि अगर वह सौ साल और जीवित रहे तो भी उसका रग रूप ऐसा ही बना रहेगा, अत्यन्त अस्थिर लोगो के बीच रहते हुए भी अद्विग और अपरिवर्तनीय। पारसी प्योत्र वासील्येविच ने भी मेरे हृदय में स्थिरता के कुछ ऐसे ही भावों का संचार किया था, लेकिन उसकी यह स्थिरता मुझे अच्छी नहीं मालूम होती थी। ओसिप की स्थिरता दूसरे प्रकार की थी, अधिक सुहावनापन लिए हुए।

लोग इतनी आसानी और आकस्मिकता से चोला बदलते और भडक की भाँति उछलकर इस बाज से उस बाज पहुँच जाते कि दलकर बड़ा अटपटा मालूम होता। उनका यह समझ में न आनेवाला चोला-बदलीव, जिसे मैं पहले कौतुक और अचरज से देखा करता और दग रह जाता

था, अब ऊब और झुसलाहट पदा करता था। नतीजा इसका यह कि पहले जिस उछाह से मैं सोगो में दिल्चस्पी लेता था, धीरे धीरे उसे पाला मार गया, सोगो के प्रति मेरा प्रेम एक अजीब दबसट में पड गया।

जुलाई के शुरु में एक दिन एक घोडागाडी जिसके अजर-पजर ढीले हो चुके थे, लडलड बरती आई और जहा हम काम कर रहे थे, वहा धापर रफ गई। बस पर नशों में धुत एक दाढ़ी वाला कोचवान बठा था। वह उदासी से हिचकियां भर रहा था। उसका सिर नगा था, होठो से छून यह रहा था, पोछे की सीट पर नशों में मदहोश प्रिगोरी डिजालिन पसरा हुआ था, और डबलरोटी सी मोटी, लाल कल्तो वाली एक लडकी उसकी बाह में बाह डाले उसे धामे थी। वह सींको का हैट पहने थी और हाथ में छतरी पकडे थी। हैट लाल मुल रिवन और काच की लाल-लाल चरियो से सजा था। पावो में जुरायें नहीं थीं, वह टाली रबड के जूते पहने थी। डोलते और छतरी हिलाते हुए वह हस-हसकर चिरला रही थी

“ओह, शतानो! मेला तो अभी खुला नहीं, मेला शुरू नहीं हुआ और ये मुझे खींच लाये।”

प्रिगोरी की घुरी हालत थी। वह उस सत्ते की भाति मालूम होता था जिसे जूब झगोडा और नोचा-खरोषा गया हो। रेंगकर वह गाडी से बाहर निकला और जमीन पर पसरकर बठ गया। फिर आखो में आसु भरे घोला

“यह देखो, मैं तुम्हारे सामने घुटनो के बल पडा हू। मुझे माफ करना, मैंने गुनाह किया है, सोच समझकर और पूरी तयारी के साथ। येफीमुश्का ने मुझे उकसाया, प्रिगोरी, प्रिगोरी और उसका उकसाना भी गलत नहीं था। कहने लगा लेकिन मुझे माफ करना! तुम सबकी दावत मेरे विम्मे येफीमुश्का की बात गलत नहीं थी। उसने ठीक ही कहा था, हम केवल एक बार जीते हैं.. केवल एक ही बार, अधिक नहीं, केवल एक ही बार”

लडकी हसते हसते बोहरी हो गई और पर पटकने लगी। उसके रबड के जूते पाव से निकल जाते और वह उनमें पर वापस न डाल पाती। कोचवान ने भी शोर मचाना शुरू किया

“चलो, जल्दी करो! आओ, जल्दी आओ! देखते नहीं, घोडा रास तुडाकर भागना चाहता है!”

बूढ़ा और भरियल घोड़ा, जिसका सारा बदन शाग से ढका हुआ था, रास तुड़ाकर भागना तो दूर अडियल टट्टू की भांति वहीं अड गया था और टस से मस नहीं होना चाहता था। समूचा वश्य कुछ इतना बढ़ा और औघड था कि हसी रोके न खती थी। अपने मालिक, उसकी छत छबीली प्रेमिका तथा हफ्ते-बक्के से कोचवान को देखकर प्रिगोरी के मजदूरों के पेट में अल पड गए।

लेकिन फोमा इस हसी में शामिल नहीं हुआ। वही एक ऐसा था जो हस नहीं रहा था, और दुकान के दरवाजे पर मेरे पास लडा बडबडा रहा था

“कम्बलत उल्टांग हो गया और घर पर बीबी मौजूब है, - इतनी मुबदर कि सालों में एक!”

कोचवान जल्दी मचाता रहा। अल में लडकी नीचे उतरी और प्रिगोरी को लौंकर उसने गाडी में डाल दिया जहा वह सीट से नीचे उसके पावों के पास ही डह गया। फिर अपना छाता फहराते हुए बोली

“अच्छा, हम तो चले!”

फोमा ने कारीगरों को जोर से सिडका। मालिक को खुद अपने हाथों सबके सामने इस तरह उल्लू बनते देख यह आहत हो उठा था। सकपकाकर और अपने मालिक पर बो-घार भले से छोटे कसते हुए कारीगर फिर अपने काम में जुट गए। साफ मालूम होता था कि अपने मालिक के प्रति उनके हृदय में घृणा से अधिक ईर्ष्या के भाव थे।

“मालिक क्या ऐसे होते हैं?” फोमा बडबडाया। “पत्रह-बोस दिन की ही तो बात थी। अपना काम खत्म कर हम सब गाव पहुंच जाने। लेकिन कम्बलत से इतने दिन भी नहीं रुका गया”

शुशलाहट तो मुझे भी कुछ कम नहीं आ रही थी। कहां प्रिगोरी और कहा काध की घरियो वाली वह लडकी!

मैं अक्सर सोचता और उलसन में पड जाता कि प्रिगोरी शिशतिन में ऐसी क्या बात है जो वह तो मालिक है, और फोमा तुचकोव एक साधारण मजदूर।

फोमा घुपराते बालों वाला हट्टा-कट्टा युवक था। चादी जसा उसका रंग था, हुक्वार नाक, कजी आलें और गोल जेहरा। उसकी आलें में युद्धिमत्ता की चमक थी। उसे देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि

वह देहातिया है। यदि उसके षपडे अच्छे होते तो वह किसी बडे कुल के ध्यापारी का लडका मालूम होता। गम्भीर और चुप्पा स्वभाव, केवल मतलब की बात करता। पढना लिखना जानता था, इसलिए ठेकेदार ने हिसाब किताब रखने और तछनीने बनाने का काम उसे सौंप रखा था। वह अपने साथी मजदूरो से काम लेने मे दक्ष था, हालांकि छुद काम से जो चुराता था।

“एक जीवन मे सब काम नहीं किए जा सकते,” वह शांत भाव से कहता। पुस्तको से उसे चिड थी। वह अपनी खीज प्रकट करता

“हर अलाय-अलाय छापे मे घ्रा जाती है। मैं तुझे अभी हाथ के हाथ कहानी गढ़कर सुना सकता हूँ। यह जरा भी मुश्किल काम नहीं है ”

लेकिन वह हर बात बडे ध्यान से सुनता और अगर किसी बात मे उसकी रचि जागती, तो वह टटोल-टटोलकर सारी बात पूछता और साथ ही मन ही मन कुछ सोचता रहता, हर बात को अपने विमल से परखता रहता।

एक बार मैंने फोमा से कहा कि तुम्हे तो ठेकेदार होना चाहिए था। उसने अलस भाव से जवाब दिया

“अगर शुरू से ही हजारो का ध्यापार हो तो यह सौदा कुछ बुरा नहीं लेकिन दो-धार ठीकरो के लिए छेर सारे कारीगरो को डडे से हाकने की जहमत कौन उठाए? मुझे तो इसमे कोई तुक नहीं दिखाई देती। नहीं, भाई, मैं तो बस थोडा और देखता हूँ और फिर ओरास्की मठ का रास्ता नापूंगा। इतना हट्टा-कट्टा मेरा शरीर है, देखने मे भी खूबसूरत हूँ। अगर किसी धनी सौदागर की विधवा मुझपर लडदू हो गई तो सारे पाप बट जाएंगे। ऐसा अवसर होता है। सेरगास्की के एक जवान को मठ मे भर्ती हुए मुश्किल से दो साल ही बीते होंगे कि उसकी जोड बठ गई। और सोने मे सुहागा यह कि वह शहर की लडकी थी। वह उस दल मे था जो मरियम की प्रतिमा को घर घर ले जाता है। सभी दोनो की नजरें एक दूसरे से मिली और वह उसपर लट्टू हो गई ”

उसने ऐसा ही मनसूबा वाच रदा था। इस तरह की अनेक कहानिया वह सुन चुका था जिनमे लोग नव दीक्षित साधु के रूप मे मठ मे भर्ती होने के बाद किसी धनी स्त्री के मखर हिडोले पर चढकर मखे का जीवन बिताते थे। मुझे ऐसी कहानियो से चिड थी और फोमा के दष्टिकोण से भी।

लेकिन यह बात मेरे मन में जम गई कि फोमा एक दिन निश्चय ही किसी मठ का रास्ता पकड़ेगा।

और जब मेला शुरू हुआ तो फोमा ने सभी को चकित कर दिया— भटियारखाने में वेटर का काम उसने शुरू कर दिया। उसकी इस कलाबाजी ने उसके साथियों को भी चकित किया यह पहना तो कठिन है, लेकिन वे उसका खूब मजाक बनाने लगे। रविवार या छुट्टी के दिन जब कभी बाप का प्रोग्राम बनता तो वे आपस में हसते हुए कहते

“चलो, अपने वेटर के यहाँ चाय पीने चले!”

और भटियारखाने में पाव रखते ही रोब के साथ वे आवाज लगाते

“ऐ वेटर, क्या मुनता नहीं, ओ घुघराते बास वाले, लपककर हथर आ!”

ठोड़ी को ऊपर उठाए वह निकट आता और पूछता

“कहिए, क्या लेने?”

“तू क्या पुराने साथियों को नहीं पहचानता?”

“नहीं, मुझे इतनी फुरसत नहीं है।”

उससे यह छिपा नहीं था कि उसके साथी उसे नीची नजर से देखते हैं और उनका एकमात्र लक्ष्य उसे चिढ़ाना है। इसलिए वह उन्हें पर्याप्त सी आलोचना से बेलता और उसका चेहरा एक खास मुद्रा में जाम हो जाता। वह जैसे कहता प्रतीत होता

“जल्दी करो, उडा लो मजाक जो उड़ाना है।”

“अरे, तुझे धरतीश देना तो भूल ही गए।” वे कहते और अपने बटुवे निकालकर दर तक उन्हें टटोलते, अपने कोने दाबकर बेलते और अंत में बिना कुछ विये ही चले जाते।

एक दिन मैंने फोमा से पूछा कि तुम तो मठ में भर्ती होकर साथ बनना चाहते थे, वेटर कैसे बन गए।

“प्रलत बात है। मैं कभी साधु बनना नहीं चाहता था,” उतने जवाब दिया, “और यह वेटरी भी कुछ दिनों की मेहमान है।”

इसके कोई चार साल बाद, ज़ारीत्सिन में जब मेरी उससे मुलाकात हुई तो उस समय भी वह वेटर का ही काम कर रहा था, और अंत में समाचारपत्र में मने यह खबर पढ़ी कि फोमा तुचकोव किसी घर में सेध लगाते पकड़ा गया।

राज अरदाल्योन ने मुझे खास तौर से प्रभावित किया। प्योत्र के कारीगरो मे वह सबसे पुराना और सबसे अच्छा मजदूर था। हसमुख और काली दाढी वाले चालीस वर्षीय इस देहातिये को देखकर भी मैं उसी उत्सुकन मे पड जाता कि मालिक उसे होना चाहिए था, न कि प्योत्र को। वह बिरले ही शराब पीता था, और जब पीता तो कभी मदहोश नहीं होता था। अपने घरे का वह उस्ताद था, और लगन के साथ काम करता था। उसके हाथो का स्पश पाते ही इंटो मे जैसे जान पड जाती थी और कबूतर की भांति सरों से उडकर ठोक ठिकाने पर जा घठती थीं। उसके सामने मरियल और सदा रोयो प्योन की कोई गिनती नहीं थी। प्योन बडे चाव से कहता

“मे दूसरो के लिए इंटो के घर बनाता हूँ जिससे अपने लिए एक सक्डी का घर-ताबूत-बना सकूँ ”

अरदाल्योन आह्लाबपूण उत्साह से इंटो चुनता जाता और चित्लाकर कहता

“आओ साथियो, आओ! भगवान की इस दुनिया का गुदर धागे मे हाथ बटाओ। ”

और वह उन्हें अपने साथी कारीगरो को बताना कि अगले वर्ग मे उसका इरादा तोम्स्क जाने का है। वहा उसके बहनोई ने एक गिरगा धागा का ठेका लिया है और उसे योता दिया है कि साम्य आकर सर्गा मे मुखिया का काम सभाले।

“सब कुछ तय हो चुका है। गिरजे बनाना या बग देग ध्याग काम है,” वह कहता और इसके बाद मुझे सम्पात्रित करता, “अब, तू भी मेरे साथ चल। साइबेरिया अच्छी जगह है, आम गीग मे उतार मिला जा पडना लिखना जानते हैं। मजे से कटेंगे। कर्नलके आगा की दर बहा काफी ऊंची है। ”

मे उसके साथ चलने को गर्ज हो गया। अशक्यात धुनी से उठ पडा। बोला

“यह हुई ना बात! हम कई जगह थाप ही करते हैं—
गिगोरी और प्योत्र के साथ अपने अपने मे एक तरफ के तरफ
उपेक्षा का भाव रहता, कुछ-कुछ दया ही जया कि बने नए के
की तरफ होता है। आम्नि मे दा जाता

“यातो के शेर! अपनी शक्ति को ताग के पत्तों की तरह एक-दूसरे के सामने फटकारते हैं। एक कहता है बेत, कितनी बढ़िया पत्ते हैं! दूसरा कहता है लेकिन मेरा रंग बेतावर तो बलाबाजी का जाएगा।”

“मुझे तो इसमें कोई घुराई नहीं मालूम होती,” घोसिय इतना जवाब देता, “शेरी यथारना इतना का स्वभाव है। कौन सखी एसी है जो अपना सोना उभारकर नहीं चलना चाहती?..”

लेकिन शरदाल्योन इतने पर ही बस न करता। हृदय की दुर्गति मिटाते हुए कहता

“उठते-बंठते, लाते-पीते, वे भगवान की रट लगाते हैं, लेकिन एक एक पौड़ी दांत से पकड़ने और माया जोड़ने में इससे कोई फक नहीं पड़ता।”

“प्रिगोरी के पास तो मुझे कभी फूटी पौड़ी भी नजर नहीं आती। माया यह कहाँ से जोड़ेगा?”

“मैं अपने मालिक की बात कर रहा हूँ। माया-भोह छाड़कर वह जगल की गरण क्यों नहीं लेता? सच कहता हूँ, मैं तो यहाँ की हर चीज से उकता गया हूँ। बसन्त आते ही साइबेरिया के लिए चल दूँगा!..”

अप्य कारीगर ईर्ष्या की नजर से शरदाल्योन की ओर देखते। फिर कहते “तेरे यहनोई जैसा हमारा भी यहाँ कोई टूटा होता तो साइबेरिया गया, हम जहनुम में भी पहुँच जाते!”

एकाएक शरदाल्योन गायब हो गया। रविवार के दिन वह चला गया और तीन दिन तक कुछ पता नहीं चला कि वह कहाँ लोप हो गया या उसका क्या हुआ।

कारीगरों ने भय और आश्चर्य से भरी अटकले लगानी शुरू कीं

“कहाँ किसीने मार तो नहीं डाला?”

“हो सकता है कि नदी में तरते-तरते डूब गया हो?”

अन्त में येषीमुश्का आया और कुछ सक्ककाता सा बोला

“शरदाल्योन नशे में गडगच्च पड़ा है!”

“यह झूठ है!” प्योत्र अविश्वास से चिल्लाया।

“नशे में गडगच्च, बेसुच और बेखबर, भुस में आग लगने पर जिस तेजी से जिगारिया ऊपर उठती हैं, ठीक वैसे ही फुर हो गया। आँखें बंद कर शराब के प्याले में ऐसा कूदा, मानो उसकी बीबी मर गई हो”

“उसे रडुवा हुए तो एक मुहत्त हो गई! लेकिन वह है क्या?”

प्योनर झुमलाकर उठा, अरदात्योन को उबारने के लिए चल दिया और उसके हाथो पिटकर लौटा।

इसके बाद ओसिप ने होठ भेंचि, अपनी जेबो मे हाथ डाले और बोला

“मैं जाता हू, देखता हू आखिर मामला क्या है। आदमी बड़ा अच्छा है ”

मैं भी उसके साथ हो लिया।

“देखा तुने, आदमी भी कितना अजीब जीव है,” उसने रास्ते मे कहा, “अभी कल तक इतना भला था, कि बिल्कुल देवता जसा। लेकिन एकाएक जाने क्या बुलार खडा कि हुम उठाकर कूडे के ढेर मे मुह मारने लगा। अपनी आखें खुली रख, मक्सीमिच, और जीवन से सबक ले ”

कुनाविनो की ‘इ-द्रपुरी’ मे—टकियल वेइयाओ के काठ-बाजार मे—हम पहुचे। वहा एक खूसट औरत हमारे सामने आ खडी हुई जो देखने मे चोट्टी मालूम होती थी। ओसिप ने उसके कान मे फुसफुसाकर कुछ कहा और वह हमे एक छोटी सी खाली कोठरी मे ले गई। कोठरी मे अघेरा था और खूब गदगो फली थी। लगता था जैसे यहा जानवर घघते हो। कोने मे खटिया पडी थी जिसपर भोटी औरत नौद मे ँंड रही थी। बूढी उसे झटोडते और शोहनियाते हुए बोली

“निकल यहा से,—सुनती नहीं, निकल यहा से!”

औरत धवराकर उछल खडी हुई और हथेलियो से चेहरे को मलते हुए भिमियाई

“हाय भगवान, ये कौन हैं? क्या हुआ?”

“खुफिया पुलिस का घावा!” ओसिप ने गम्भीरता से कहा।

औरत मुह बाये नौदो ग्यारह हो गई। ओसिप ने उसके पीछे घूणा से थूक की पिचकारी छोडी। फिर बाला

“ये लोग शतान का मुकाबिसा कर सकती हैं, लेकिन खुफिया पुलिस का नहीं ”

दीवार पर एक छोटा सा आईना लटका था। बुद्धिया ने उसे उतारा और दीवार पर लगे फायज को उठाते हुए बोली

“इधर देखो। क्या यही तो नहीं है?”

ओसिप ने सुराख मे से देखा।

“बातो के शेर! अपनी अक्ल को ताश के पत्तों की तरह एक-दूसरे के सामने फटकारते हैं। एक कहता है देख, कितने बढ़िया पत्ते हैं! दूसरा कहता है लेकिन मेरा रंग देखकर तो कलाबाजी खा जाएगा!”

“मुझे तो इसमें कोई बुराई नहीं मालूम होती,” भोसिप डलमुत जवाब देता, “शेखी बघारना इंसान का स्वभाव है। कौन तडकी ऐसी है जो अपना सीना उभारकर नहीं चलना चाहती?”

लेकिन अरदात्योन इतने पर ही बस न करता। हृदय की धुजली मिटाते हुए कहता

“उठते-बठते, खाते-पीते, वे भगवान की रट सगाते हैं, लेकिन एक एक कौड़ी बात से पकड़ने और माया जोड़ने में इससे कोई फक नहीं पड़ता।”

“प्रिगोरी के पास तो मुझे कभी फूटी कौड़ी भी नजर नहीं आती। माया वह कहा से जोड़ेगा?”

“मैं अपने मालिक की बात कर रहा हूँ। माया-मोह छोड़कर वह जगल की शरण क्यों नहीं लेता? सच कहता हूँ, मैं तो यहाँ की हर चीज से उकता गया हूँ घसन्त आते ही साइबेरिया के लिए चल दूँगा!”

अप्य फारीगर ईर्ष्या की नजर से अरदात्योन की ओर देखते। फिर कहते “तेरे बहनोई जसा हमारा भी वहाँ कोई खूटा होता तो साइबेरिया क्या, हम जहनुम में भी पहुँच जाते!”

एकाएक अरदात्योन गायब हो गया। रविवार के दिन वह चला गया और तीन दिन तक कुछ पता नहीं चला कि वह कहाँ लोप हो गया या उत्सर्ग क्या हुआ।

फारीगरो ने भय और आशंका से भरी अटकल सगानी शुरू की “कहीं किसीने मार तो नहीं डाला?”

“हो सकता है कि नदी में सरते-सरते डूब गया हो?”

अन्त में घेफीमुशका आया और कुछ सक्पकाता सा धोला

“अरदात्योन नशे में गडगच्च पड़ा है!”

“मह झूठ है!” प्योत्र अविश्वास से चिल्लाया।

“नशे में गडगच्च, बेमुघ और बेखबर, भुस में आग लगने पर जित तेजी से चिगारिया ऊपर उठती हैं, ठीक वैसे ही फुर हो गया। घाँतें बद कर नराय के प्याले में ऐसा बूँदा, मानो उत्सर्ग बीबी मर गई हो”

“उसे रडवा हुए तो एक मुद्दत हो गई! लेकिन वह है कहा?”

प्योत्र झुझलाकर उठा, अरदाख्योन को उबारने के लिए चल दिया और उसके हाथों पिटकर लौटा।

इसके बाद ओसिप ने होठ भींचे, अपनी जेबों में हाथ डाले और बोला

“मैं जाता हूँ, देखता हूँ आखिर मामला क्या है। आदमी बड़ा अच्छा है।”

मैं भी उसके साथ हो लिया।

“देखा तूने, आदमी भी कितना अजीब जीव है,” उसने रास्ते में कहा, “अभी कल तक इतना भला था, कि विल्कुल देवता जसा। लेकिन एकाएक जाने क्या बुझार चढ़ा कि दुम उठाकर कूड़े के ढेर में मुह मारने लगा। अपनी आँखें खुली रख, मक्सीमिच, और जीवन से सबक ले।”

कुनाविनो की ‘इद्रपुरी’ में—टर्कियल चेश्याओ के बाठ बाजार में—हम पहुँचे। वहाँ एक खूसट औरत हमारे सामने आ खड़ी हुई जो देखने में थोड़ी मालूम होती थी। ओसिप ने उसके कान में फुसफुसाकर कुछ कहा और वह हमें एक छोटी सी खाली कोठरी में ले गई। कोठरी में अथेरा था और खूब गदगी फली थी। लगता था जैसे यहाँ जानवर बघते हों। कोने में खटिया पड़ी थी जिसपर मोटी औरत नौद में ँँड रही थी। बूढ़ी उसे झटोडते और कोहनियाते हुए बोली

“निकल यहाँ से,—सुनती नहीं, निकल यहाँ से!”

औरत घबराकर उछल खड़ी हुई और हथेलियों से चेहरे को मलते हुए निमियाई

“हाथ भगवान, ये कौन हैं? क्या हुआ?”

“खुफिया पुलिस का घावा!” ओसिप ने गम्भीरता से कहा।

औरत मुह बाधे नौदो ग्यारह हो गई। ओसिप ने उसके पीछे घुणा से धूक की पिचकारी छोड़ी। फिर बोला

“ये लोग शतान का मुकाबिला कर सकती हैं, लेकिन खुफिया पुलिस का नहीं।”

दीवार पर एक छोटा सा आईना लटका था। बुडिया ने उसे उतारा और दीवार पर लगे कागज को उठाते हुए बोली

“इधर देखो। क्या यही तो नहीं है?”

ओसिप ने सूराल में से देखा।

“हां, यही है। पहले उस रडी को बफा करो..”

मैंने शापकर देखा। यह बोठरी भी उतनी ही अघेरी और गदी थी जितनी कि वह जिसमें हम लड़े थे। लिट्टकी के पल्ले बसकर बने थे और उसको चौखट पर एक लम्प जल रहा था। लम्प के पास एक ऐंचीतानी नगी तातार लटकी लड़ी थी। यह अपनी फटी हुई चोली में टांगे लगा रही थी। उसके पीछे दो तर्किया पर अरदाल्योन का घुना हुआ चेहरा नजर आ रहा था। उसकी बाली और कड़े वाला घाता रागे अंतरतीपी से चौंगिद बिखरी थी। आहट पाकर तातार लटकी चौंकी हो गई, धवन पर चोली डाली और विस्तर के पास से गुजरते हुए एकाएक उस बोठरी में आ गई जहां हम लड़े थे।

श्रोतिप ने एक नजर उसकी ओर देखा और फिर धूक की पिचकारी छोड़ी।

“धू, बेशम कुतिया!”

“और लूह उहमक!” खिलखिल करते हुए उसने जवाब दिया।

श्रोतिप भी कुछ हसा और जगली हिनकर उसे कोचा।

हमने तातार लटकी के दरबे में प्रवेश किया। बूढ़ा श्रोतिप अरदाल्योन के पावों के पास जम गया और उसे जगाने के लिए देर तक उससे जूझता रहा। अरदाल्योन रह रहकर बडबडाता

“ओह क्या मुसीबत है एक मिनट ठहरो, घस एक मिनट अभी चलता हूँ”

आखिर वह उठा, वहशियाना आखों से उसने श्रोतिप और मेरा ओर देखा और इसके बाद अपनी लाल अगारा सी आँवों को बंद करते हुए बुदबुबाया

“हा तो”

“तुम्हीं मुनाओ, तुम्हारे साथ क्या गुजरी?” श्रोतिप ने शान्त और हथके, लेकिन डाट डपट के भाव से मुक्त स्वर में पूछा।

“वीन दुनिया सब भूल गया,” अरदाल्योन ने बड़े हुए गले से खलारकर कहा।

“सो क्मे?”

“खुद देख तो रहे हो”

“तुम्हारा हुलिया तो काफी बिगडा हुआ मालूम होता है..”

“मैं जानता हूँ ”

अरदाल्योन ने मेज से वोदका की एक पहले से खुली बोतल उठाकर मुह में लगा ली। फिर ओसिप की ओर धोतल बढ़ाते हुए बोला

“तो, पिपोगे? और देखो, पेट में डालने के लिए भी उस रक्वाबी में कुछ होगा ”

बड़े ओसिप ने एक चुस्की ली, मुह बिचकाते हुए तीखी वोदका को गले के नीचे उतारा और पाव रोटी का एक टुकड़ा लेकर उसे बड़े ध्यान से खाने लगा। अरदाल्योन अलस भाव से कहे जा रहा था

“यो हुमा... एक सातार लडकी के साथ उल्लू बन गया। यह सारी येफीमुशका की कारिस्तानी है। बोला, जवान लडकी है—कासीमोव की रहनेवाली—न उसके मा है, न बाप, मेला देखने आयी है।”

दीवार के सूरज में से टूटी फूटी रूसी जवान ने मुहफट शब्द सुनाई दिए

“तातार मजेदार है, इकदम चूजी है! यह बूढ़ा तेरा बाब है जो यहा बठा है? इसे निकाल बाहर कर!”

“यही वह लडकी है,” चुधी सी आवाज से दीवार की ओर ताकते हुए अरदाल्योन ने कहा।

“मैंने देखा है,” ओसिप बोला।

फिर अरदाल्योन मेरी ओर मुड़ा

“बेला भाई, मैंने अपनी क्या दुगत कर डाली है ”

मेरा खयाल था कि ओसिप अरदाल्योन को खूब सिडकेगा या उसे लंबघर पिलाएगा और वह अपने किये पर पछताएगा। लेकिन उसने ऐसी कोई हरकत नहीं की। दोनो कंधे से कंधा सटाए लगे-बंधे आवाज में बातें करते रहे। उन्हें अंधेरे और गदगी भरे दडबे में इस तरह बठा बेल मेरा जो भारी हो गया और मैं उदासी में डूबने उतराने लगा। सातार लडकी अभी भी टूटी फूटी रूसी जवान ने दीवार के पीछे से बक् शक रही थी। लेकिन उसकी आवाज का उनपर कोई असर नहीं हो रहा था। ओसिप ने मेज पर से एक सूजी हुई मछली उठाई, अपने जूते से टकराकर उसके अजर पजर ढीले किये और फिर उसके छिलके उतारने लगा।

“गाठ में अब कुछ बचा कि नहीं?” उसने पूछा।

“प्योर से कुछ मिलने हैं ”

“समल जा सटो। धय तो तोम्स्य चला जाना घाहिए तुसे...”

“क्या तोम्स्य—धोम्स्य ..”

“इराबा बवल लिया, क्या?”

“यात यह है कि ये मेरे रिस्तेवार ”

“तो फिर क्या?”

“बहिन, यहनोई ”

“तो इससे क्या हुआ?”

“नहीं, अपने रिस्तेवारो की चाकरी बजाने मे कोई मदा, नहीं है...”

“मालिक सब एक से, चाहे रिस्तेवार हो या घर रिस्तेवार।”

“फिर भी ”

वे इस हद तक घुल मिलकर और गम्भीर भाव से बर्तिया रहे थे कि चिडचिडाने और उन्हें चिडाने मे सातार लडकी को अब कोई तुक नहीं बिल्लाई थी और वह चुप हो गई। दबे पाव वह कमरे मे भाई, खूटी पर से चुपचाप उसने अपने कपडे उतारे और फिर गायब हो गई।

“लडकी जवान मालूम होती है,” ओसिप ने कहा।

धरवात्स्योन ने उसकी ओर देखा और फिर सहज भाव ॥ बाता
“यह सब पेफीमुदका ही है, शरारत की जड। सुगाइया ही उसका ओठना और बिछौना हैं बसे यह तातार लडकी है मदेवार, खूब हसमुप और घेतुकी घातो की पिटारी।”

“लेकिन जरा होशियार रहना, कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हे अपनी इस पिटारी मे ही बंद करवे रख ले।” ओसिप ने उसे चेताया और मच्छी का आगिरी निवाला निगलकर वहा से चल बिया।

लौटते समय मीने उससे पूछा

“आखिर तुम आए किस लिए थे?”

“हाल चाल देखने। वह मेरा पुराना साथी है। एक दो नहीं, इस तरह की अनेक घटनाए मे देख चुका हू। आदमी भला चगा जीवन बिताता है और फिर, एकाएक, इस तरह हवा हो जाता मानो जेल के सीलजे तोडकर भागा हो।” उसने अपनी पहली वाली बात को दोहराया और इसके बाद बोला, “घोदका से दूर रहना चाहिये।”

कुछ क्षण बाद उसकी आवाज फिर सुनाई दी

“लेकिन इसके बिना जीवन सुना हो जाएगा।”

“घोदपान के बिना?”

“हां, एक घुस्वी लेते ही ऐसा मालूम होता है जैसे हम दूसरी दुनिया में पहुंच गए..”

श्रीर धरदात्यायन पर घोदपान और उस तातार लडकी का कुछ ऐसा रंग बढ़ा कि वह उबरकर न दिया। कई दिन बाद वह काम पर लौटा, लेकिन जल्दी ही वह फिर शायब हो गया और उसका कुछ पता नहीं चला। बसन्त में एकाएक उससे बेरी भेंट हो गई। कुछ समय आधारा लोगो के साथ वह घरों के चौगिब जमा बफ बाट रहा था। बड़े तपाक से हम मिले, एक-दूसरे को देखकर हमारे चेहरे जिल गए और चाय पीने के लिए एक भटियारखाने में हम पहुंचे।

“तुमने तो याद होगा कि मैं कितना बढ़िया कारीगर था,” चाय की चुल्हियों के साथ उसने गोलो घघारना गुरु किया। “इसने कोई इनकार नहीं कर सकता कि मुझे अपने काम में कमाल हासिल था। अगर मैं चाहता तो धारे-धारे कर देता..”

“लेकिन तुम तो कोरे ही रहे।”

“हां, मैं कोरा ही रहा।” उसने गब से कहा। “और यह इसलिए कि मैं किसी से बचकर नहीं रह सकता—नहीं, अपने धपे से भी नहीं।” वह कुछ ऐसे ठाठ से बोल रहा था कि भटियारखाने में बठे कितने ही लोग उसकी ओर देखने लगे।

“घुप्पे घोर प्योत्र की बात तो तुमने याद है न? काम के बारे में यह कहा करता था, ‘दूसरो के लिए इंटो के पक्के घर, और अपने लिए फलत लकड़ी का एक ताबूत!’ ऐसे धपे के पीछे कोई क्यों जान दे!”

“प्योत्र तो रोगी आदमी है,” मैंने कहा, “मौत की बात सोचकर हर घडी कापता रहता है।”

“रोगी तो मैं भी हूँ,” वह धिल्लाकर बोला, “कौन जाने मेरी आत्मा में घुन लगा हो।”

रविवार के दिन गहरी चहल-पहल से दूर मैं ‘लखपति बाजार’ पहुंच जाता जहां भिखमगे और आधारा लोग रहते थे। मैंने देखा कि धरदात्यायन तेज गति से नगर की इस तलछट का भ्रम बनता जा रहा है। एक साल पहले की ही तो बात है जब कि वह उछाह और उमग से भरा एक समझदार कारीगर था। लेकिन अब उसने छिछले तौर-तरीके अपना

लिए थे, झूमता और सबसे टकराता हुआ चलता था, उसकी धारों में हर किसी को ठेंगे पर भारने तथा हर किसी से गुल्यमगुल्य होने का भाव फैलता रहता था।

“देला, यहाँ लोग कैसे मेरा मान करते हैं—मैं बस एक तरह से इनका सरदार हूँ,” यह शैली बघारता।

जो भी यह बघाता उसे अपने आकारा सायियो की खिलाने पिताने में उडा देता। लडाई-झगडे में हमेशा कमजोर की तरफ लेता, धम्मर चिल्लाकर बहता

“यह घोला पडी ठीक नहीं, बोस्तो, ईमानदारी से काम लेना चाहिए।”

ईमानदारी की उसकी इस गुहार से उसके सभी सगी-सायी परिवर्तित थे, यहा तक कि उन्होंने उसका नाम ‘ईमानदार’ रख छोडा था। वह इस नाम को सुनकर बहुत खुश होता।

मैं इन लोगों को समझने की कोशिश करता जो इंट पत्यरा की इस खत्ती में—जजर और गदे ललपति बाजार में—अट्टे पडे थे। यहा जीवन की मुख्य धारा से छिटके हुए लोग बसते थे, और ऐसा मालूम होता मानो उन्होंने अपने जीवन की एक अलग धारा का निर्माण कर लिया था, एक ऐसी धारा का जो मालिका से स्वतंत्र थी और मौज-मजे में छलछलाती हुई बहती थी। इन लोगों में साहस था और स्वच्छन्दता थी। उन्हें देखकर मुझे नाना से सुनी बोल्गा के मल्लाहो की याद हो आती जिहे डाकू या साधु बनते देर नहीं लगती थी। जब उनके पास कोई काम था न हाता तो वे बजरो और जहाजो पर हाथ साफ करते और जो भी छोटी-मोटी चीज हाथ लगती उसे उडाने से न चूकते। उनकी यह हरकत मुझे जरा भी अटपटी या बुरी न मालूम होती। नित्य ही मैं देखता कि जीवन का सारा ताना-बाना ही चोरी के धागे से बुना है। लेकिन इसी के साथ साथ मैं यह भी देखता कि कभी-कभी—जैसे धाम लगने या नदी पर जमी बफ तोडने या लडाई का कोई फौरी काम था पडने पर—ये लोग भारी उत्साह से काम करते, अपनी जान तक की परवाह न कर अपनी गक्ति का एक अणु भर भी बचाकर न रखते। वैसे भी अय लोगों के मुकाबले में ये कहीं ब्यादा जिंदादिल और मौजी जीव थे।

सलपति बाजार में एक रज-बतेरा था जिसके बहाते में एक भूतीरा था। एक दिन अरदाल्योन, उसका साथी 'बच्चा' और मैं इस भूतीरे की छत पर चढ़े थे और 'बच्चा' दोन नदी के किनारे स्थित रोस्तोव नगर से मास्को तक की अपनी बदल यात्रा का मनोरंजन हात सुना रहा था। यह भूतपूय सनिक था और सपरमेनो की टुकड़ी में नियुक्त था। सत जाज के फ्रास से यह विभूषित था और तुर्की के साथ युद्ध में उसका घटना घायल हो गया था। इस घोट ने उसे जन्म भर के लिए पगु बना दिया था। नाटा और गठा हुआ उसका बदन था। उसके हाथ बहुत ही मजबूत और शक्तिशाली थे, लेकिन उसका पगु होना बड़े ब्राता था और अपने हाथों की इस शक्ति का वह कोई उपयोग नहीं कर पाता था। किसी रीत की बजह से उसके सिर और दाढ़ी के बाल झड़ गए थे, और उसका सिर सचमुच नवजात बच्चे के सिर की भांति साफ और चिकना बन गया था।

अपनी लाल आँखों को धमकाते हुए वह कह रहा था

"इस तरह मैं सेरपुज़ोव पहुँचा। यहाँ एक पादरी पर मेरी तबड़ पड़ी जो अपने घर के आगन में बँठा था। मैं उस के पास पहुँचा और बोला, 'तुर्की युद्ध के इस बीर की कुछ मदद करो, बाबा'"

अरदाल्योन ने सिर हिलाया और बीच में ही बोल उठा

"घोह, झूठे के सरदार"

"क्यों, इसमें झूठ क्या है?" 'बच्चा' ने बुरा न मानते हुए सहज भाव से पूछा। लेकिन अरदाल्योन ने उसकी बात नहीं सुनी और अलस भाव से सील सी देता हुआ बोला

"नहीं, तू ईमानदारी से नहीं रहता! तूझे तो चौकीदारी-बरबानी करनी चाहिए, सभी लगड़े यही करते हैं। और तू झक मारता, बेकार की बातें बनाता फिरता है"

"यह सब तो मैं योही मन्त्रे में आकर करता हूँ—लोगों को हस्ताने के लिए"

"तुझे अपने पर हसना चाहिए"

तभी बहाते में, जिसमें खपहला मौसम होने के बावजूद अंधेरा था और जूब कूड़ा-कचरा फला था, एक स्त्री आई और सिर से ऊपर अपना हाथ उठाकर कोई चीज हिलाते हुए चिल्ला चिल्लाकर कहने लगी

“घाघरा बेचू ह, घाघरा। अरी लेगी कोई ”

स्त्रिया अपने अपने दडबे मे से रंगकर बाहर निकल आईं और घाघरा बेचनेवाली के चारों ओर जमा हो गई। मैंने उसे तुरत पहचान लिया। यह धोबिन नताल्या थी। छत से कूदकर मैं अभी नीचे पहुंचा ही था कि पहली योती बोलनेवाली स्त्री के हाथ घाघरा बेच वह चुपचाप आगन से बाहर निकलती दिखाई दी।

फाटक के बाहर उसके निकट पहुंचकर खुशी-खुशी मैंने कहा

“अरे, जरा सुनो तो!”

“क्या क्या है?” कनखियो से देखते हुए वह बोली। फिर एकाएक ठिठककर खड़ी हो गई और नाराजगी मे भरकर चीख उठी

“हाथ भगवान, तू यहा कसे?”

उसके इस तरह चौंककर चीख उठने मे मुझे बड़ा प्रभावित किया, और साथ ही एक अजीब परेशानी का भी मैंने अनुभव किया। समझ दारी से भरे उसके चेहरे पर भय और अचरज के भाव साफ दिखाई देते थे। मुझे समझने मे देर नहीं लगी कि मुझे यहा, इस जगह देखकर, वह आशक्ति हो उठी है। मैंने तुरत सफाई देनी शुरू की कि मैं यहा नहीं रहता, योही कभी-कभी इधर चला आता ह।

“कभी-कभी चला आता ह!” उसने ध्यग से मेरी बात दोहराई और तीखे स्वर मे बोली, “आखिर किसलिए? बोल, राह-चलता की जब साफ करने के लिए या लड़कियों के जम्पर मे हाथ डालकर उनकी टोह लेने के लिए?”

उसका चेहरा मुरझा गया था, होठों की ताजगी विवा हो चुकी थी, और आंखों के नीचे काले घेरे पड़े थे।

भटियारखाने के दरवाजे पर वह रुकी और बोली

“चल, एक एक गिलास चाय पी ली जाए! कपडे तो तू साफ-सुथरे पहने है, इस जगह मे रहनेवाले लोगो जसे नहीं, फिर भी जाने क्यों तेरी बात मानने को जी नहीं चाहता ”

भटियारखाने के भीतर पांव रखते न रखते सन्बेह और अविश्वास की वह बीवार मुझे ढहती मालूम हुई जो उसके हृदय मे अनायास ही मेरे प्रति खड़ी हो गई थी। गिलास मे चाय उडेलने के बाद उसने कुछ बेरस और अनमने भाव से बताना शुरू किया कि मुश्किल से एक घटा पहले ही

यह सोचकर उठी थी, और यह कि उसके पेट में अभी तक कुछ भा नहीं पडा है।

“पिछली रात जब मैं रातों के लिए अपने बिस्तर पर गई तो पूरी मधुवा बनी हुई थी। लेकिन यह याद नहीं पड़ता कि मैंने कहा और किसके साथ थी।”

उसे देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ, और उसकी मौजूदगी में एक तरह की घबराहट भी मैं अनुभव करने लगा। उसकी लड़की का हात जानने के लिए मैं बेहद उत्सुक था। धाय और थोकरा से कुछ गरमाने के बाद उसने अपनी उसी सहज चपलता और डग से बोलना शुरू किया जो इस जगह में रहनेवाली सभी स्त्रियों की खासियत थी। लेकिन जब मैंने उसकी लड़की के बारे में पूछा तो वह तुरंत गम्भीर हो गई और बोली

“तुम्हें उससे मतलब? यह मैं बताए देती हूँ कि चाहे वृ विद्वानों भर एडियाँ रगड़, मेरी लड़की पर कभी डोरे नहीं डाल सकेगा, समझा बदिया?”

उसने एक और चुस्की ली और फिर बोली

“मेरी लड़की का अब मुझसे कोई वास्ता नहीं है, मेरी और बाल तक उठाकर नहीं देखती। और मेरी आजात भी क्या है? कपड़े धोनेवाली, एक नीच धोबिन उस जसी लड़की के लिए मैं भला कैसे मा बन सकती हूँ? वह पढ़ी लिखी और विद्वान है। यह बात है, भइया। तो उसने मुझे घता बताया और अपनी सहेली के पास चली गई। उसकी सहेली किसी बड़े घर की लड़की है, खूब पैसे वाली। मेरी लड़की उसके घर मास्टरनी बनकर रहेगी।”

कुछ दफ्तर उसने फिर धीमे स्वर में कहा

“कपड़े धोनेवाली धोबिन को कोई नहीं पूछता। हाँ, चलती फिरती वेश्या की लोगो को तलाश रहती मालूम होती है।”

उसने ऐसी वेश्या का घधा अपना लिया है, यह मैं उसे देखते ही भाप गया था। इस गली की सभी स्त्रियाँ यही घधा करती थीं। लेकिन जब उसने खुद अपने मुह से यह बात कही तो मेरे हृदय पर गहरा आघात लगा और मेरी आँखों में लज्जा तथा तरस के आसू उमड़ आए। नताल्या के मुह से, उस नताल्या के मुह से जो अभी पिछले दिनों तक एक साहसी, घतुर और अपने में आजाद स्त्री थी, यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गया।

“मेरे नहे सलानी,” उसने एक लम्बी सास भरी और एक नजर मुझे देखते हुए बोली। “यह गली तेरे लायक नहीं है। मेरी सलाह है,— मैं तुझसे बिनती करती हूँ—भूलकर भी इस गली में पाव न रखना। नहीं तो यह तुझे चटककर जाएगी।”

इसके बाद मेज पर दोहरी होकर और अपनी उगली से दूध में रेखाए खींचते हुए, धीमे और असम्बद्ध स्वर में, मानो अपने आप से ही वह कहने लगी

“लेकिन मैं कौन होती हूँ तुझे सलाह देनेवाली? जिस लडकी को मैंने अपनी छाती का दूध पिलाया, उसी ने जब मेरी एक नहीं मुनी तो तू ही क्यों मानने लगा मैं उससे कहती, ‘अपनी सगी मा को तू घता नहीं बता सकती, नहीं, तू मुझे छोड़कर नहीं जा सकती।’ लेकिन वह जवाब देती, ‘मैं गले में फटा डालकर मर जाऊंगी।’ वह नहीं मानी, और कचान घली गई। उसे नस बनने की भुन थी। वह तो छर कचान घली गई, लेकिन मैं कहा जाती? मैं किसका आसरा लूँ? राह-चलते लोगो का? उनके सिवा मेरा और कौन सहारा है?”

वह अब चुप बठी थी, विचारों में खोई सी। उसके होठ हिल रहे थे, लेकिन कोई आवाज नहीं कर रहे थे। उसे किसी बात की सुध नहीं थी, मेरी भी नहीं जो उसके सामने बठा था। उसके होठों के कोने झुक आए थे, और उसके मुह की रेखा दूज के चाव की भांति फली थी, हसिये जसी गोलाई लिए। उसके होठों में बल पड़ रहे थे, और उसके गालों की झुर्रियां थरथर रही थीं। ऐसा मालूम होता था मानो वे मूक भाषा में कुछ कह रही हों। देखकर मेरा हृदय कसमसा उठा। उसका चेहरा आहत और बच्चों जसा भोलापन लिए था। बालों की एक लट शाल के नीचे से निकलकर गाल पर उतर आई थी, और छल्ला सा बनाती उसके नहे-मुन्ने कान के पीछे लौट गई थी। तभी आस की कोर से टुकककर आसू की एक बूंद ठंडी चाय के गिलास में आ गिरी। यह देख उसने गिलास दूर खिसका दिया, अपनी आंखों को कसकर भींचा और आसू की बाकी दो बूंदें और निचोड़ते हुए गाल के छोर से चेहरे को पोछ लिया।

मेरा हृदय दुरी तरह उमड़ घुमड़ रहा था। मैं वहां और अधिक नहीं बठा रह सका। झुपचाप उठ खड़ा हुआ।

“अच्छा तो मैं अब ”

“क्या? जा, जा, जल्दुम न जा।” उत्तरी कहा, घोर तिर उगाए बिना हाथ हिंसा हिलाकर मुझे बचा करने लगी। गांधव जैसे अब यह भी गुप्त नहीं थी कि मैं बोन हू।

अरदात्योन की तोत्र में मैं फिर अहाते में लौट आया। उदाह साय तय हुआ था कि बोना शीघ्र-मछली का गिरावर करने धरेंगे। फिर मैं उन गतात्या के बारे में भी बताना चाहता था। लेकिन वह घोर ‘बच्चा’ बोनो छत पर नहीं थे। भूतभुलया वाले अहाते में मैं उन्हें सात्र ही एा था कि तभी कुछ हस्ता-गुस्ता गुनाई दिया। यहाँ के लोगों में, निच की भांति, कोई शगदा उठ रहा हुआ था।

मैं लपरकर भागता हुआ पाटल के बाहर पहुँचा, घोर मनान्या से टकराने-टकराने बचा जो अर्था की भांति सुझरती-सुझरती पटरी पर बना आ रही थी। यह सुबहियाँ से रही थी और उत्तरा चेहरा बुरी तरह नोब्रा गराया हुआ था। एक हाथ में गाल का छोर धामे यह अपना चेहरा पाछ रही थी, और दूसरे हाथ से अपने उत्तमो हुए बाता की पीछ की घोर तित्तवा रही थी। उसके पीछे-पीछे अरदात्योन और ‘बच्चा’ धने आ रहे थे।

“अभी बतार रह गई,” ‘बच्चा’ बिल्लाकर कह रहा था, “आ, इसे थोड़ा मका और बना दे।”

अरदात्योन ने घूसा लाना, और वह घूम गई। उसका चेहरा बल ला रहा था, और झाली से घुणा की घिगाहियाँ निकल रही थीं। बिल्लाकर बोली

“आओ, मारो मुझे!”

मैंने अरदात्योन का हाथ दबोच लिया। अचित्त मकर से उत्तने मुझ देला। बोला

“क्या, तरे तिर पर क्या भूत सवार हुआ?”

“इसे हाथ मत लगाना,” बड़ी मुद्रिकल से मैं इतना ही कह पाया। यह लिललित्ताकर टसा। बोला

“तू क्या इसपर लटकू हो गया है? ओह नतात्या, खुदा बचाए तेरे हरजाईपन से, तूने इस बाल-ब्रह्मचारी को भी अपने जाल में फसा लिया।”

‘बच्चा’ भी अपने बूल्हो पर हाथ मारते हुए लोट-लोट हो रहा था। बोना ने मिलकर मुझे कोचना और मूत्रपर कीचड उछालना शुरू किया।

नताल्या को मौका मिला और वह खिसक गई। कुछ देर तक तो मे उनकी बकवास सुनता रहा। लेकिन जब बरबास्त से बाहर हो गया तो 'बच्चा' की छाती मे मैने इतने जोर से सिर मारा कि वह गिर पडा। उसके गिरते ही मे नौ दो ग्यारह हो गया।

इसके बाद एक लम्बे अर्से तक मैने लक्षपति बाजार का रूख नहीं किया। लेकिन भरदाल्योन से मेरी एक बार फिर भेंट हो गई, इस बार एक बड़े पर।

"क्या हाल है?" उसने प्रसन्नता से चिल्लाकर कहा। "इतने दिनों तक कहा गायब रहा?"

मैने उसे बताया कि जिस तरह उसने नताल्या को पीटा और मेरा अपमान किया, वह मुझे बडा बुरा मालूम हुआ और मेरा मन उससे फिर गया। यह सुनकर वह सहज प्रसन्नता से हसा और बोला

"तू समझता है कि हम सचमुच मे तेरा अपमान करना चाहते थे? अरे नहीं, हम तो केवल तुझे चिढ़ा रहे थे। और जहा तक उसका सम्बन्ध है, उसे मारना क्या गुनाह है? एक टकियल औरत के लिए इतना बद क्या? अगर इंसान अपनी बीबी को पीट सकता है तो फिर उस जसी छिनाल किस खेत की भूली है! लेकिन छोडो यह सब। हम तो केवल मजाक कर रहे थे। मार-पीट से कोई नहीं सुधरता, यह मै भी ज़ुब जानता हूँ।"

"लेकिन यह तो बताओ कि तुम उसका सुधार क्या करते? तुम ज़ुब भी तो उससे अच्छे नहीं हो।"

उसने अपनी बाह मेरे गले मे डाल बी और प्यार से मुझे झगोडा।

"यही तो मुसीबत है," उसने उपहास के स्वर मे कहा, "इस दुनिया म कोई किसी से अच्छा नहीं है मेरे भी आखें हैं, भाई, सभी कुछ मै देखता हूँ। मुझे भीतर का भी सब हाल मालूम है, और बाहर का भी। मै निरा कोल्हू का बल नहीं।"

वह नदो की तरंग मे था और मेरी ओर प्यार भरे तरंग के साथ देल रहा था। उसकी आखो मे कुछ बसा ही भाव था जसा कि किसी सहृदय शिक्षक की आखो मे अपने कूढ़ दिमाग शिष्य को पढाते समय तरता रता है।

पावेल ओदितसोव से कभी-कभी मेरी मुलाकात हा जाती थी।

हमेशा मैं ज्यादा उछाह उसमे नजर आता था, वह छला बना घूमता था और बड़े-बूढ़े की तरह से मेरे साथ पैग आता और मुझे पिक्कारता

“मेरी समझ मे नहीं आता तूने यह घमा कसे पमद किया? मेरी बात गाठ बाध ले कि उन वेहातिया के साथ काम करके तेरे पत्ने कभी कुछ नहीं पडेगा ”

इसके बाद उबास भाव से उसने वक्शाप के समाचार सुनाए

“जिखरेव अभी भी उस घुडमुही के चक्कर मे फसा है। सितानोव क हृदय मे भी कोई घुन लग गया है, -वह अब जरूरत से ज्यादा नशे मे घुल रहता है। गोगोलेव को भेंडिये चटकर गए। मुलेटाइड की छुट्टियों में वह घर गया था। वहा नशे मे इतना उल्टाग हो गया कि भेंडिये उसकी थोटी-थोटी चबा गए।”

खून लिलखितापर हसते हुए पावेल गड़ने लगा

“सब भेंडिये उसकी थोटी-थोटी चबा गए। लेकिन उसने इतनी पी रली थी कि खून की जगह उसकी नसो मे गरब दौड रही थी। सो भेंडियो को भी नशा हो गया और अपनी पिछली टांगो पर लडे होकर सरकस के कुत्तो की भाति जंगल मे नाचने तथा कुहराम मचाने लगे। वे इतने धीले चिलाए कि घेदम होकर गिर पडे और अगले दिन मरे हुए पाए गए।”

यह सुनकर मुझसे भी हसे बिना न रहा गया, लेकिन मेरी यह हसी उबासी मे डूबी थी। उसकी बातो से साफ भालूम होता था और मुझ यह अनुभव करते देर नहीं लगी कि वक्शाप और उससे सम्बन्ध मेरी सभी स्मृतियो पर अतीत का आवरण पड गया है, सदा के लिए वे मुझसे बिदा हो गई हैं। और यह, निश्चय ही, उबासी का सचार करने वाली बात थी।

१६

जाडो के दिन थे। मेले का काम करीब-करीब खत्म हो चुका था। मे अब घर पर ही रहता था और काम का वही पुराना चक्कर फिर शुरू हो गया था। दिन भर मैं उसी मे फसा रहता, लेकिन साझ तक काम मैं छुट्टी मिल जाती। तब सारा घर जमा होकर बठता और मैं उन्हें

पहले की भांति हृदय पर पत्थर रख, "नीवा" और "मोस्कोव्स्की लीस्तोक" में छपे टर्कियल उपयास पढ़कर सुनाता। रात को मैं अच्छी पुस्तकें पढ़ता, और तुकबंदियां जोड़ने की कोशिश करता।

एक दिन मेरी मालकिनें गिरजे गईं हुई थीं। मालिक की तबीयत ठीक नहीं थी इसलिए वह घर पर ही था। मुझे देखकर बोला

"वीक्टर अक्सर मजाक उड़ाया करता है कि तू कविताएँ लिखता है, - क्या यह सच है, पेशकोव? कुछ सुना न? देखें तूने क्या लिखा है!"

मुझे इनकार करते नहीं बना, और मैंने उसे अपनी कुछ कविताएँ सुनाईं। ऐसा मालूम होता था कि उसे कविताएँ पसंद नहीं आईं। लेकिन उसने कहा

"ठीक है, ठीक है, लिखें जा। बौन जाने लिखते लिखते एक दिन तू भी दूसरा पुश्किन बन जाए। कभी पढ़ी हैं पुश्किन की कविताएँ?"

भुतने को रफना रहे
या रचते डायन का ब्याह?

उसके समाने में लोग डायनो और भुतनो में विश्वास करते थे। लेकिन वह छुड़ भी विश्वास करते थे, यह मैं नहीं मानता, - उसने तो ऐसे ही मजाक में ये पक्तियाँ लिखी होगी।" इसके बाद कुछ गुनगुनाती सी मुद्रा में उसने कहना शुरू किया, "सच कहता हूँ, भाई तेरी शिक्षा का कोई बाकायदा प्रबंध होना चाहिए था। लेकिन अब तो बहुत देर हो गई। शतान ही जानता है कि इस दुनिया में तेरा क्या बनेगा? अपनी इस कापी को औरतो से छिपाकर रखना। अगर उनकी नजर पड़ गई तो तुझे घिड़ाना और कोचना शुरू कर देंगी औरतो को इसमें मजा मिलता है, - सच भाई, वे रस ले-लेकर मम-त्यल को कुरेदती हैं।"

इधर कुछ दिनों से मालिक का बोलना कम हो गया था और वह सोच में डूबा रहता था। थोड़ी-थोड़ी देर बाद नजर बचाकर वह इधर उधर देखता, और दरवाजे पर घटी की आवाज सुनकर हर बार चौंक उठता। कभी-कभी चिडचिडेपन का एक भूत सा उसके दिमाग पर सवार हो जाता, जरा जरा सी बात पर वह बौलता उठता, हर किसी पर चिल्लाता, अन्त में घर से गायब हो जाता और गई रात नशे में धुस

होकर लौटता साफ मालूम होता था कि उसके हृदय पर कोई भारी बोम रखा है, किसी ऐसी चीज से वह ग्रस्त है जिसे सिवा उसके और कोई नहीं जानता, और जिसने उसकी आत्मा को इस हद तक खण्डित कर दिया है कि उसका अपने में विश्वास नहीं रहा है, जीवन में उसकी विलचस्पी खत्म हो गई है लेकिन फिर भी निरे अभ्यासवाग जिये जा रहा है।

रविवार के दिन दोपहर के खाने के बाद मैं घूमने के लिए निकल जाता। रात के नौ बजे तक मैं घूमता और इसके बाद याम्स्काया सड़क के भटियारखाने में पहुच जाता। भटियारखाने का मालिक एक मोटा घादमी था जिसके बदन से हर घड़ी पसीना घूता रहता था। गानो का उसे बेहद शौक था। नतीजा इसका यह कि घोदका, वीपर और चाय के सालख में घ्रास-घ्रास के सभी गिरजो के गायको का यहां जमघट लगा रहता। वे गाने सुनाते और बदले में वह उनसे गलो को तर कर देता। गिरजों के ये गायक बहुत ही बेमजा और नशे पर जान देनेवाले जीव थे। वे गाते क्या थे, मानो बेगार काटते थे, सो भी उस समय जब उन्हें घोदका का सालख दिया जाता था। तिस पर मजा यह कि वे हमेशा गिरजे के गीत ही गाते, यो अपवाद की बात दूसरी है। भगत किस्म के पियक्कड इसका विरोध करते। कहते कि कहा भटियारखाना और कहा गिरजे के गीत। नहीं, ये महा नहीं चलेंगे। इसलिए मालिक उन्हें अपने निजी कमरे में बुला लेता और वहां बठकर उनका गाना सुनता। दरवाजे में से गीत के स्वर मुझे सुनाई देते। लेकिन अक्सर कारीगरो और देहातिया के भी गाने होते। भटियारखाने का मालिक उनकी खोज में रहता, और सारे नगर को छान डालता। बाजार के दिन देहातो से जो किसान आते, उनमें अगर कोई गायक होते तो वह उनका पता लगाता और भटियारखाने में उन्हें बुलाता।

गायक को वह हमेशा बार के काउण्टर के पास बठाता। ठीक घोदका के गोल पीपे के सामने एक स्टूल पर गायक का आसन जमता। पीपे का तला गोल चौखटे का काम देता और ऐसा मालूम होता मानो गायक का सिर उसमें जडा हा।

क्लेरचोव नाम का नाटा जिनसाज गायको में सबसे अच्छा था। उसे एक से एक बढ़िया गाने याद थे। उसके बदन में मास नहीं था, चमडा

ही चमडी थी, सिर पर साल बालो की झाडिया उगी हुई थीं। सिक्कुडे और रोंदे हुए से चुरमुरे चेहरे पर लाश की भांति पयराई हुई धिक्नी नाक थी और छोटी छोटी नोंद से भारी आँवें मानो उसके कोटरा में स्थिर जड़ी हुई थीं।

गाते समय वह प्राय अपनी आँखो को मूद लेता, सिर बोदका के गोल पीपे के तले पर टिका लेता, सम्बन्धी सास रोंचकर अपनी धोंकनी में हवा भरता और धीमे, लेकिन जादू भरी आवाज में गाना शुरू करता

अरे, खुले मदानो पर जब घिरकर गहन कुहासा छाया,
दूर दूर की राहो को फट, उसने निगला उहे छिपाया

इस जगह वह खड़ा हो जाता, काउण्टर पर अपनी पीठ टिका लेता और छत की ओर देखता हुआ भावोन्मत्त हो गाता

कहा, कहा, रे, मैं जाऊंगा,
कहा राह चौकी पाऊंगा?

उसकी आवाज ठीकी नहीं बल्कि कभी न यकनेवाली थी। एक स्पष्ट तार प्रवाहित होता और भटियारखाने की अस्पष्ट तथा धुधली भनभनाहट को बीधता हुआ चारो ओर फल जाता, और गीत के उदास शब्दो तथा सुवकिया भरे स्वरों के जादू से कोई भी अछूता न बचता। वे लोग भी जो नशे में होते एकाएक इतने गम्भीर हो जाते कि देखकर अचरज होता। वे एकटक बिना पलक झपकाए सामने मेज की ओर देखते रहते। मैं भी उमडता घुमडता, हृदय की गहराइयो से भावो का एक सशक्त बगूला सा उठता और ऐसा मालूम होता कि बाध तोडकर मुझे भी वह अपने साथ खींच ले जाएगा। उत्कृष्ट संगीत के स्वर आत्मा की गहराइयो को छूते हैं, तब हृदय इसी तरह शक्तिशाली भावो से छलछलाने और उमडने-धुमडने लगता है।

भटियारखाने में गिरजे जसी निस्तब्धता छा जाती और गायक नेक हृदय पादरी की भांति मालूम होता। वह किसी धमग्रन्थ का अंश पढकर नहीं सुनाता, बल्कि अपने रोम रोम से ईमानदारी के साथ समूची मानव जाति के लिए प्रार्थना करता, निरोह मानव जीवन की समूची वेदना को वाणी प्रदान करता। और हर ओर से, हर कोने से बड़ी-बड़ी दाडी वाले

सोग उसे देखते रहते, जगली जन्तुओं जैसे उनके चेहरा पर बच्चा जमी झालें सोच में पड़कर टिमटिमाती रहतीं। बीच-बीच में किसी क गहरी सांस भरने की आवाज आती और गीत के प्रभावशाली स्वरों के साथ घुल मिलकर एकाकार हो जाती। उन क्षणों में मुझे ऐसा अनुभव होता मानो सभी लोग झूठे और कृत्रिम जीवन के अज्ञान में फस हैं जबकि सच्चा जीवन यहाँ, इस भटियारखाने के भीतर हिलोरें से रहा है।

कोने में बचीरी सा मुह लिए बेलगाम और अंशर्मा की हद तक मनमौजी फेरोवाली लिसूला बठी थी। मासल बघा के बीच अपना मिर दुषबाए यह रो रही थी और चुपचाप सज्जाहीन आँखों से डुरक रहे आँसुओं को पोछे जा रही थी। उससे कुछ ही दूर एक मेज पर गिरजे का गम्भीर गायक मित्रोपोल्स्की पसरा हुआ सा बठा था जो पदच्युत पावरी सा लगता था। भारी भरकम डील डील, गहरी और गूजदार आवाज, जिसकी बाह का कोई पता नहीं घसता था, सूर्जे हुए चेहरे में भट्टी सी बड़ी-बड़ी झालें। उसके सामने मेज पर बोदका का गिलास रखा था। गिलास पर यह एक नजर डालता, हाथ बढ़ाकर उसे उठाता, होंठों तक ले जाता और फिर सायधानी से बिना कोई आवाज किए जाने किस आवेश में अछूता ही उसे मेज पर रख देता।

और भटियारखाने में जितने भी लोग थे, सब के सब निश्चल बठे रहते। ऐसा मालूम होता मानो सुदूर भतीत में खोई उनकी सबसे प्रिय और सबसे घनिष्ठ स्मृतिया लौट रही हों।

गीत छत्म करने के बाद क्लेशचोव निरीह भाव से अपने स्टूल पर बह जाता और भटियारखाने का मालिक बोदका से छलछलाता गिलास उसकी ओर बढ़ाते हुए सतोष भरी मुस्कराहट के साथ कहता

“भाई बाह, कमाल कर दिया, हालांकि तुम्हारा गीत, गीत न होकर एक अच्छी-खासी गाथा था लेकिन हो तुम पूरे उस्ताद, इससे इनकार नहीं किया जा सकता।”

बिना किसी उतावली के सहज भाव से क्लेशचोव बोदका का गिलास खाली कर देता, खहारकर अपना गला साफ करता और कहता

“गाने की तो वे सभी गा सकते हैं जिनके पास गला है, लेकिन गीत की आत्मा निकालकर दिलाने की कला बस मैं ही जानता हूँ।”

“बस-बस, अब इतनी शेखी न बघारो ! ”

“अपने मुह पर मोहर वह लगाए जिसके पास शेखी बघारने के लिए कुछ न हो ! ” उसी धीमे स्वर में और ढीठपन का भाव लिए गायक कहता ।

भटियारखाने का मालिक खीज उठता । झुझलाकर कहता

“क्यो, अपने को तुम बहुत ऊंचा समझते हो, क्लेशचोव ? ”

“जितनी ऊंची मेरी आत्मा है, बस उतना ही । उससे श्यादा ऊंचा मैं नहीं जा सकता ”

तभी कोने में बठा मित्रोपोल्स्की गरज उठता

“क्या समझते हो तुम, ओ कुलबुलाते कीडो, इस कुदृप फरिश्ते के गीतो में ? ”

वह हमेशा अपने सांग ताने रहता, हर किसी से टकराता, सभी के दोष निकालता और लडता झगडता । नतीजा इसका यह कि वह हर रविवार को करीब-बरीब बिला नागा गायको या अन्य किसी से मार खाता, लोगो में से जिसका भी हाथ चलता या जो भी ऐसा करना चाहता, सहज ही उसकी मरम्मत कर देता ।

भटियारखाने का मालिक क्लेशचोव के गीता पर तो जान देता था, लेकिन खुद क्लेशचोव से नफरत करता था । वह हर किसी से उसकी शिकायत करता और प्रत्यक्षत उसे नीचा दिखाने या उसका मजाक उडाने के तौर-तरीको की ढोह में रहता । भटियारखाने में आनेवाले सभी लोग जिनमें खुद क्लेशचोव भी शामिल था, उसकी इस हरकत से परिचित थे ।

“माना कि वह अच्छा गवया है, लेकिन उसका विभाग सातबे आसमान पर रहता है । उसे थोडी मिट्टी की खुशयू सुधानी चाहिए ! ” भटियारखाने का मालिक अपनी राय जाहिर करता ।

कुछ लोग उसकी हा में हा मिलाते

“सच कहते हो । नकचदा आदमी है ! ”

भटियारखाने का मालिक और भी बल देता

“समझ में नहीं आता कि इतना घमड किस बात पर करता है । उसकी भावाच अच्छी है, लेकिन वह तो खुदा की देन है, उसकी अपनी घरेलू ईजाद नहीं । और सच पूछो तो उसकी भावाच कुछ इतनी बढ़िया भी नहीं है ! ”

"ठीक बात है। उसकी आवाज में इतना दम नहीं है जितना कि उसे इस्तेमाल करने के उसके क्षम में।" स्वर में स्वर मितानेवाते करते।

एक दिन अपना गीत छत्र करने के बाद जब गायक भट्टियारखाने से घला गया तो मालिक ने तिसूना पर जोर डालना गुरु दिया

"क्लेडचोव पर तू ही अपना हाथ आठमा कर देग, मारिया यवने कीमोयना, - बस, थोड़ी देर के लिए उसको उल्लू बना दे। क्या, बनाएगी न? तेरे लिए तो यह बाए हाथ का लेत है।"

"तो तो ठीक है। लेकिन इसके लिए किसी जवान औरत को परखो तो अच्छा हो। मैं तो अब बुढ़ा चलती।" उसने हसते हुए कहा।

"जवान औरतों की बात छोड़ो!" उसने जोर दिया। "यह काम सिवा तेरे और कोई नहीं कर सकता। राब, थका मना आएगा जब वह तेरे तलुवे घाटता दिखाई देगा। बस, एक बार छोरे डालने की बहरत है। फिर देखना तेरे प्यार में पग कर वह कितने बढ़िया गीत गाता है। एक बार जरूर कोशिश कर, येवदोकीमोयना! मैं तुम्हें सुन कर दगा।"

लेकिन उसने इनकार कर दिया। वह बठी रही—अपने बंहेसाव मोटापे में फूली, पलना की मुबाए और अपनी शाल के फुदना से छेलेती। उचाठ मन से घोली

"तुम्हें अब किसी जवान लडकी को यहाँ रखना चाहिए। अगर मैं जवान होती तो चाहे जिसकी नाक पकडकर घुमा देती।"

भट्टियारखाने के मालिक ने बारहा इस बात की कोशिश की कि क्लेडचोव नशे में उल्टा हो जाए, लेकिन वह या कि दो-तीन गीत गाने और हर गीत के बाद बोदका की परत चढ़ाने के बाद जतन से अपने गले में बुना हुआ रुमाल बाधता, उलझे हुए बालों पर अपनी टोपी जमाता और भट्टियारखाने से चल देता।

भट्टियारखाने का मालिक क्लेडचोव को पछाडने के लिए बहुधा किसी न किसी गायक का पता लगाता और मुकाबिले की महफिल जमाने का मौका खोजता। ठीक उस समय जब क्लेडचोव अपना गाना छत्र कर चुका होता और वह उसकी सराहना करके उत्तेजना से भरा क्लेडचोव से कहता

“मुनो भाई, आज रात एक और गवया यहा मौजूद है! जरा उसे भी मुनें।”

कभी-कभी नये गायक की आवाज अच्छी होती, लेकिन जिस सादगी और तमयता से क्लेशचोब गाता था, वह श्रय किसी मे नहीं दिगाई देती।

भटियारखाने के मालिक को भी हारकर यह बात स्वीकार करनी पडती। हृदय को मसोसते हुए वह नये गायक से कहता

“इस मे शक नहीं कि तुमने अच्छा गाया, तुम्हारी आवाज भी अच्छी ह, लेकिन हृदय की धडकन का जहा तक सवाल ”

भोग हसकर कहते

“लगता है कि यह खीनसाज किसी से मात नहीं खाएगा।”

क्लेशचोब की लाल भौंह बिरकती रहतीं। वह उनके नीचे से सयपर एक नजर डालता और भटियारखाने के मालिक से अविचलित, किंतु नम्र स्वर मे कहता

“चाहे तुम कितनी थोशिश करो, मेरे जोड का गायक नहीं पा सकते। कारण कि मेरी प्रतिभा भगवान की देन है ”

“लेकिन इससे क्या, हम सब भी तो भगवान की देन है।”

“कह बिद्या मैने, बोबका पिला पिलाकर तुम्हारा बिवाला निकल जाणा, पर मेरी जोड का गायक तुम कभी नहीं पा सकोगे ”

भटियारखाने के मालिक का चेहरा लाल हो गया। मन ही मन बुदबुदाया

“कौन जाने, कौन जाने ”

क्लेशचोब उसी निश्चल अवाज मे कहता जाता

“गाना मुगों का बगल नहीं है, यह तुम्हें मालूम होना चाहिए। ”

“हा, हा, खुद जानता हू। तुम मेरे पीछे क्यों पड गये ? ”

“मैं पीछे नहीं पड रहा, मैं सिफ यह साबित कर रहा हू कि निरा हसी खेल का गाना, शतान का गाना है। ”

“छोडो यह सब! इससे जहाँ अच्छा है कि कोई गीत मुनाओ। ”

“गाने के लिए मैं कभी मना नहीं करता, सपने तक मे तयार रहता हू।” क्लेशचोब सहमति प्रकट करता, और हरकी सी खवार लेकर गाता शुरू कर देता।

भटियारखाने का समूचा ओछापन, शब्दों और इरादों की समूची काई, वह सब कुछ जो छिछला और गदगी में डूबा था, धुए की भाँति धुँस से गायब हो जाता और एक सवथा भिन्न प्रकार का जीवन की ताजगी भटियारखाने में छा जाती। ऐसा मालूम होता मानो हम सब एक नये जीवन में—अधिक निमल, अधिक विचारशील और प्रेम तथा संवेदन से पूर्ण जीवन में, साँस ले रहे हों।

मैं उसपर रद्क करता। मेरा रोम रोम उसकी प्रतिभा और लोगों को अपने साथ बहा ले जानेवाली उसकी शक्ति को तलचाई हुई नदरा से देखता और कुड़मुड़ता। और अपनी इस शक्ति से कितने अवभूत ढग से वह काम लेता था! इस जीवनसाज के निकट पहुँचने और खूब घुल मिलकर देर तक उससे बातें करने के लिए मेरा जो बुरी तरह ललक उठता। लेकिन उसकी पीती सी आँखों में कुछ ऐसा अजनबीपन था कि मैं उसके निकट जाने का साहस न बटोर पाता। उसकी नजर से ऐसा मालूम होता मानो किसी को नहीं देखती। इसके सिवा उसके समूचे अदाव में कुछ ऐसा घिनौनापन था कि मैं अचकचाकर रह जाता, हालाँकि मैं उसे केवल गाने के समय ही नहीं बल्कि बाद में भी पसंद करना चाहता था। बहुत ही भोटे ढग से, बड़े आदमी की भाँति, वह अपनी टोपी को आगे की ओर खींच लेता और गले के चारों ओर बड़े ही शौघड ढग से लाल रंग का बुना मफलर लपेटते हुए कहता

“यह मफलर मेरी गुलाबी ने मेरे लिए बुना है ”

जब वह गाता नहीं होता तो सब से अपने को फुला लेता, पाला पाटी अपनी नाक को रगड़ता और बेमन से, इसके बुक्के शब्दों में सबालों के जवाब देकर कनी सी काटता। एक दिन मैं उसके पास जा बस। मैंने उससे कुछ पूछा। उसने मेरी ओर देखा तक नहीं और बोला

“कान न खानो लडके!”

मित्रोपोल्स्की मुझे दयादा अच्छा लगता। वह भटियारखाने में आता और तिर पर भारी बोझ लदे आदमी की भाँति आँखें तिरछे ढग रखता जाने में पहुँच जाता। ठाकर मारकर वह कुर्सी को एक ओर करता और धम्म से उसपर बठ जाता। अपनी कोहनियों को वह मेज पर टिका लेता, और उसका बड़ा झबरीला तिर हयेलिया पर टिक जाता। वह मुह से

एक शब्द न निकालता और बोदका के दो या तीन गिलास चढ़ाकर इतने जोरो से चटखारे लेता कि सब उसकी ओर देखने लगते। पलटकर वह भी उद्धत नजर से उन्हें घूरता—ठोड़ी हथेलियों पर टिकी हुई, तमत माए हुए गाल, और सिर की उलझी हुई लटें, घने अयाल की भांति, निहायत बेतरतीबी से चेहरे पर छाई हुईं।

एकाएक वह चीख उठता

“इस तरह क्यों मेरी ओर घूर रहे हो? क्या दिखाई दे रहा है तुम्हें?”

“हमें एक भुतना दिखाई दे रहा!” कभी कभी कोई जवाब देता।

कई बार ऐसा होता कि वह गुमगुम बोदका का गिलास खाली करता और अपने भारी पावों को घसीटते हुए गुमगुम ही चला जाता। लेकिन अनेक बार उसकी आवाज से भटियारखाना भूज उठता और वह, पैगंबर के आवाज में, लोगों पर कहुर धरपा करता

“मैं प्रभु का सेवक हूँ—सच्चा और कभी न भ्रष्ट होनेवाला सेवक, और इस नाते इसाइया की भांति मैं तुम्हें शाप देता हूँ! नाश ही इस अरिईल नगरी का जिसमें चोर-उधक्के और कुटिल लोग धिनौनी लालसा के बीचड़ में किलबिलाते हैं। नाश ही इस धरती रूपी पोत का जो गुनाह और पाप का बोझ लावे अष्टाण्ड-सागर में तर रहा है! क्या है वह गुनाह और पाप? वह गुनाह और पाप तुम हो, जो नशे में डूबे रहते हो, खाने की चीजों पर कुत्तों की भांति दूटते हो—हा सुभ, इस धरती की तलछट और मोरी के कीड़े, तुम! अतहीन सख्या है तुम्हारी, अरे अभिशप्तो, यह धरती तुम्हारे अवशेषों को ठुकराती है!”

उसकी आवाज इतने जोरो से गूजती कि खिडकियों के शीशे तक झनझनाने लगते। यह देखकर उसके श्रोता खूब खुश होते और उसकी तारीफ के छूब पुल बाधते।

“बूढ़े शतान के दम खम तो देखो!”

उससे जान पहचान करना आसान था। बस, उसके गले को तर करने की जरूरत थी। बठते ही वह एक गिलास बोदका और लाल मिच के साथ कलेजी का आडर देता। ये चीजें उसे पसंद थीं और गला फाड़ने तथा पेट की आंते उत्तट पुलट करने का मेहनताना इहीं चीजों के रूप में

यह यगूल करता था। जब मैंने उससे पूछा कि कौनसी पुस्तक मुझे पढ़नी चाहिए तो उसने चाबुक सा फटकारते हुए तुरत उत्तर दिया

“पढ़ने की क्या जरूरत है?”

यह मुनकर मैं स्तब्ध रह गया। उसने जब यह देखा तो कुछ मुलायम पडा और बुदबुदाते हुए बोला

“कभी धमप्रय पड़े हैं?”

“हां।”

“यस उन्हें ही पढ़ो। उनके बाद और कुछ पढ़ने की जरूरत नहीं। दुनिया का समूचा ज्ञान उनमें भरा है, केवल बछड़े के ताऊ उन्हें नहीं समझते—अर्थात् कोई उन्हें नहीं समझता लेकिन तुम हो कौन—गायक हो?”

“नहीं।”

“क्यों नहीं? गाना चाहिए। इससे बढ़कर सुगंध तथा दूसरा नहीं मिलेगा।”

बराबर की मेज से किसी ने कहा

“तब तुम क्या हुए,—तुम भी तो गायक हो न?”

“मैं?—मैं लोफर हू। लेकिन तुम से मतलब?”

“कुछ नहीं।”

“वही तो। हर कोई जानता है कि तुम्हारे भेजे में कुछ नहीं है,—और न कभी कुछ होगी ही। धामीन!”

वह हरेक से—और निश्चय ही मुझसे भी—इसी अवाज में बातें करता, यह बात दूसरी है कि दो-तीन बार खिलाने पिलाने के बाद मेरे प्रति उसका रवैया कुछ मुलायम पड गया था, यहा तक कि एक दिन कुछ अचरज में भरकर कहने लगा

“जब भी मैं तुम्हें देखता हू तो यह जानने की तबीयत होती है कि तुम कौन हो, क्या हो, और क्यों हो? यो चाहे तुम जहनुम में जाओ, मेरी बला से!”

क्लेशचोव के बारे में मैं उसकी सच्ची राय मालूम करना चाहता था, लेकिन सफल नहीं हो सका। उसका गाना वह मुग्ध भाव से सुनता था। उसकी यह प्रसन्नता छिपी न रहती, और कभी-कभी तो मुग्ध मुस्कराहट उसके चेहरे पर खेलने लगती। लेकिन उससे रक्त खत बढ़ाने की वह कभी

कोशिश न करता और भड़े तथा घृणा से भरे अंदाज में उसका खिन्न करता

“वह निरा गधा है। माना कि वह अपने गीतों में जान डालना जानता है और जो कुछ गाना है उसे समझता है, लेकिन इससे उसके गधा होने में कोई फर्क नहीं पड़ता।”

“क्यों?”

“इसलिए कि उसने जन्म ही इस रूप में लिया है।”

मेरा मन करता कि उससे उस समय बातें की जाएं जब कि वह नशे में न हो। लेकिन ऐसे क्षणों में वह केवल काट कूल कर रह जाता, और धुंध छाई अपनी निरीह आंखों से इधर उधर देखता रहता। किसी ने मुझे बताया था कि यह आदमी जो अब अपने जीवन के शेष दिनों को नशे में डुबाए था, कभी अज्ञान अफादमी में पड़ता था और मुमकिन था कि बिशप बन जाता। पहले तो मुझे इस बात पर विश्वास नहीं हुआ और इसे एक मनगढन्त कहानी समझकर ठुकरा दिया। लेकिन एक दिन उससे बातें करते समय मैंने कहीं बिशप क्रिसफ का खिन्न कर दिया। सुनते ही मित्रोपोल्स्की ने अपना सिर हिलाया और बोला

“क्रिसफ?—अरे, उसे तो मैं जानता हूँ। वह मेरा शिक्षक और संरक्षक था। उन दिनों मैं अज्ञान में था,—अफादमी में। मुझे अच्छी तरह याद है। क्रिसफ का अर्थ है ‘सुनहरा फूल’। पामवा बेरीदा ने झूठ नहीं लिखा था। वह क्रिसफ सचमुच में सुनहरा था।”

“और यह पामवा बेरीदा कौन था?” मैंने उससे पूछा।

लेकिन मित्रोपोल्स्की ने बात टाली। बोला

“यह सब तुम्हें जानने की जरूरत नहीं।”

घर लौटने पर मैंने अपनी कापी निकाली और उसमें लिखा, “पामवा बेरीदा,—उसे जरूर पढ़ना है।” जाने क्यों, मेरे मन में यह बात समा गई थी कि पामवा बेरीदा में मुझे उन सब सवालों के जवाब मिल जाएंगे जो मेरे हृदय को मथ रहे थे।

अफलातूनी नामों का प्रयोग करने तथा असाधारण शब्दों का जोड़ तोड़ बठाने का मित्रोपोल्स्की को चस्का था। मैं सुनता और उलझकर रह जाता।

“जीवन अनोसिया नहीं है,” वह कहता।

“यह अनोसिया क्या यला है?” मैं पूछता।

“लाभदायक,” यह जवाब देता और मुझे उलझन में पड़ा देख मन ही मन प्रसन होता।

उसके इस तरह के शब्दों को जब मैं सुनता और इसके साथ-साथ जब मैं यह सोचता कि यह अकादमी में अध्ययन कर चुका है, तो मुझपर उसका पूरा रोष छा जाता और ऐसा मालूम होता कि उसके पास ज्ञान का खजाना भरा है। मैं इस खजाने की कुंजी पाना चाहता, लेकिन वह इतने अनमने और रहस्यमय ढंग से बातें करता कि मैं खीज उठता। शायद मैं कच्चा था, और यह नहीं जानता था कि किस तरह उस तक पहुंचना चाहिए।

जो भी हो, मेरा हृदय उसकी छाप से अछूता नहीं बचा। नशे के अब्भूत जोश और पैगंबर इसाइया के अवाज में जब वह मानव-जाति को फटकारता और दबंग स्वर में अभिशाप देता तो मैं उसे देखता ही रह जाता।

“ओह, इस धरती की गवनी और सड़ाघ!” वह बहाडना शुरू करता। “जहा कुटिल मौज करते हैं और नेक धूल धाडते हैं! जल्दी ही क्ल्यामत का दिन आएगा और तब तुम पश्चाताप करोगे, परतु तब समय निकल चुका होगा!”

उसका गजन सुनते हुए मेरी आंखों के सामने ‘बहुत दूर’ और धौबिन नताल्या का चित्र मूत हो उठता, जिसका सहज ही इतना दुखद अंत हो गया था। साथ ही मुझे रानी भागों की भी याद आती जिसके चारों ओर बदगोई के बगूले उड़ते थे। इस उम्र में ही मेरे पास याद करने की बहुत कुछ था

इस आदमी के साथ मेरी संक्षिप्त जान-पहचान का अंत भी कुछ अजीब ढंग से हुआ।

वसन्त के दिन थे। सनिको की छावनी के पास खेतों की ओर मैं निकल गया था। वहाँ उससे मेरी भेंट हो गई। अपने आप में दूर भरमाया और फूला हुआ, ऊट की भांति गरदन हिलाता वह अकेला चला आ रहा था।

“क्या टहलने निकले हो?” उसने बठे हुए गले से पूछा। “बलो, एक से दो तो हुए। मैं भी घूमने निकला हू। सब कहता हू भाई, मैं रोगी हू ”

कुछ देर तक हम चुपचाप चलते रहे। सहसा एक गढ़े के तले में एक आदमी पर नजर पड़ी। वह गढ़े की दीवार से टिका दोहरा हो गया था, और उसके कोट का कालर ऊंचा उठकर उसके एक कान को ढके था। ऐसा मालूम होता था मानो उसने अपना कोट उतारने की कोशिश की हो और उतार न सका हो।

“यह तो नशे में बेसुध मालूम होता है,” गायक ने उसे देखने के लिए ठिठकते हुए कहा।

लेकिन कुछ ही दूर नयी उगी घास पर एक रिवाल्वर, उस आदमी की टोपी, और बोदका की एक खुली थोतल पड़ी थी जिसकी गरदन घास में दबी हुई थी। आदमी का चेहरा कोट के कालर में इस तरह छिपा था मानो वह शर्म से गड़ा जा रहा हो।

कुछ क्षण तब हम चुपचाप खड़े रहे। फिर, अपनी टांगों को चौड़ा करके धरती पर जमाते हुए, मित्रोपोल्स्की ने कहा

“गोली मार ली है।”

मैंने तुरंत ही भाप लिया था कि यह आदमी नशे में बेसुध न होकर मरा हुआ है। लेकिन यह इतना अप्रत्याशित था कि अपने इस विचार को मैंने टिक्ने नहीं दिया। उसकी खोपड़ी ढाँसी बड़ी और चिकनी थी, और उसका एक कान जो नीला पड़ गया था, कोट के कालर के भीतर से झाक रहा था। मुझे अच्छी तरह याद है कि उसे देखते समय मैंने न तो किसी तरह के भय का अनुभव किया, और न तरस का। मेरे लिए यह कल्पना तक करना कठिन था कि कोई ऐसा आदमी भी हो सकता है जो वसन्ती दिन के इन सुहावने क्षणों में अपनी जान लेना चाहे!

मित्रोपोल्स्की ने अपने बाल-बढ़े गालों को इस तरह तेजी से रगड़ा मानो वे ठंडा गए हो। फिर फुकार सी छोड़ते हुए बोला

“सठिया गया है। जरूर इसकी बीबी इसे छोड़कर भाग गई होगी, या फिर पराये धन पर हाथ साफ किया होगा।”

पुलिस को सूचना देने के लिए उसने मुझे तो नगर भेज दिया, और खुद गढ़े के किनारे बठ गया। उसने अपनी टांगें नीचे गढ़े में लटका लीं और अपने झिनझिने कोट को कंधों के इद गिद कसकर खींच लिया। पुलिस को आत्महत्या की सूचना देने के बाद मैं लपककर वापिस आ गया। तब तक गायक उस मरे हुए आदमी की बाकी बची हुई बोदका खत्म कर

चुका था। मुझे देखते ही उसने वोदका की खाली बोतल हवा में हिलायी।

"इस कम्बल ने ही इसकी जान ली!" उसने चिल्लाकर कहा, और बोतल को इतने जोरो से जमीन पर पटका कि वह चूर चूर हो गई।

मेरे साथ ही साथ एक पुलिसमन भी लपकता झपकता धा गया। उसने गढ़े में झाँककर देखा, अपने सिर से टोपी उतारकर मतक के प्रति सम्मान प्रकट किया और अचकचाते हुए सलीब का चिन्ह बनाया। फिर गायक को ओर मुड़कर बोला

"कौन है तू?"

"मैं कोई भी हूँ, तुमसे मतलब?"

पुलिसमन ने रुककर कुछ सोचा और फिर खरा विनम्र स्वर में बोला

"जरा सोचो तो, यहा आदमी मरा हुआ पड़ा है, और तुम नशे में घुत हो!"

"मैं बीस साल से नशे में घुत हूँ!" सीने पर हाथ मारते हुए मित्रोपोल्स्की ने गव से कहा।

ऐसा मालूम होता था कि वोदका पीने के अपराध में वे निश्चय ही उसके हाथों में हथकड़ी डाल देंगे। नगर से कुछ और लोग भी वहा लपक आए थे। एक घोडागाडी में पुलिस अफसर भी धा गया। वह गढ़े में उतरा और मृत आदमी का फोट हटाकर उसका चेहरा देखने लगा।

"इसे सबसे पहले किसने देखा था?"

"मैंने," मित्रोपोल्स्की ने जवाब दिया।

पुलिस अफसर ने उसकी ओर देखा और फिर एकाएक क्या देनेवाले आदाम में बोला

"अच्छा, यह आप हैं, जनाब!"

समाशा देखनेवाले भी घिर आए। बीस-पन्चीस से कम न होंगे। वे हाफ रहे थे और उनके हृदयों में उथल-पुथल मची थी। किनारे पर घेरा बनाए गढ़े में झाँक रहे थे। तभी किसी ने चिल्लाकर कहा

"धरे, यह तो हमारे ही मोहल्ले का कतक है। मैं इसे जानता हूँ!"

मित्रोपोल्स्की टोपी उतारकर अफसर के सामने लडा उचक रहा था, तू-तडाक में उलसा था और भर्साई हुई आवाज में चिल्ला रहा था। अफसर ने उसके सीने पर ऐसा आघात किया कि वह सहराकर जमीन पर पड

गया। पुलिसमन ने, बिना किसी उतावली के, एक रस्सा निकाला और गायक के हाथ बांध दिए जिसे उसने बिना किसी विरोध के कमर के पीछे कर लिया था। अक्सर ने अब भीड़ की ओर रुख किया और चिल्लाकर बोला

“भागो यहाँ से!”

इसी बीच पानी चूती लाल आँखों वाला एक और बूढ़ा पुलिसमन हाफता और सात सेने के लिए मुह बाएँ भागता हुआ आया। उसने रस्से के छोरों को, जिससे गायक के हाथ कमर के पीछे बंधे थे, पकड़ा और उसे चुपचाप नगर की ओर ले चला।

पूणतया प्रस्त और खिन में भी वहाँ से चल दिया। मेरा धुरा हाल था और मेरे दिमाग में, हृदय को झनझना देनेवाली कौड़े की कड़ी चीख की भाँति, ये शब्द रह रहकर गूँज रहे थे

“नाश हो इस अरिईल नगरी का!”

और उदासी से भरा वह चित्र भी मेरी कल्पना में जमकर बँठ गया जब कि पुलिसमन ने, बिना किसी उतावली के, अपनी जेब से रस्सा निकाला और कहर बरपा करनेवाले पंगबर ने बालवार अपने लाल हाथों को बिना किसी विरोध के चुपचाप इस तरह कमर के पीछे कर लिया मानो उसके लिए यह कोई नयी बात न ही, मानो इस क्रिया को हजारों बार वह दोहरा रहा हो

शीघ्र ही मुझे पता चला कि पंगबर को जलावतन कर दिया गया, और इसके बाद क्यादा दिन न बीते होंगे कि क्लेशचोब भी गायब हो गया। कोई पसेवाली स्त्री उसके हाथ लग गई, उससे उसने शादी की और देहात में जाकर रहने लगा जहाँ उसने जीनसाजी की अपनी एक दुकान खोल ली।

लेकिन उसके जाने से पहले मेरे मातृक ने जिसके सामने जीनसाज के गाने की मैं अक्सर तारीफ़ किया करता था, एक बार मुझसे कहा

“चलकर मुँगे कभी ”

और एक दिन हम दोनों भटियारखाने पहुँचे। वह मेज के दूसरी ओर, ठीक मेरे सामने, बँठा था। उसकी आँखें बरबट्टा सी खुली थीं और भौंहे अचरज में कमान बनी थीं।

भटियारखाने आते समय रास्ते भर वह मुझे चिढ़ाता और कोचता

रहा, और भटियारखाने में पाव रखने के बाद भी वह मेरा, वहा भी दूसरे लोगों का और दमघोट गध का मच्चाक उडाता रहा। जीनसाज गाना शुरू करते ही उसके चेहरे पर खिसियानी सी मुसकराहट खेल और वह अपने गिलास में बीयर उडेलने लगा। अभी गिलास धाघा होगा कि वह बीच में ही रक गया और बोला

“ऊह कम्बस्त जादूगर मालूम होता है!”

होले से, और कापते हाथ से उसने बोतल मेज पर वापस रख और गाना सुनने में रम गया।

जब क्लेशचोव गाना खत्म कर चुका तो मालिक बोला

“सच कहता था, भई। क्या गाता है, पट्टा, गरमी ही घड है ”

जीनसाज ने एक बार फिर अपना सिर पीछे की ओर फेंका, घा उठाकर छत पर टिका बाँ और गाना शुट कर दिया

घनी गाव से पगडडी पर
घली जा रही युवती सुबर

“सच, यह गाने में जान डालना जानता है,” मालिक लघु हसते और अपना सिर हिलाते हुए बुदबुवाया।

और क्लेशचोव बासुरी बना हुआ, गा रहा था

में यतीम, फट बोली वह तो
कौन भला चाहेगा मुझ को
कोई हेत, न मेस दिखाये
महीं नाच में मुझे बुलाये,
नहीं युवक का हृदय सुभाऊ
निधन, वस्त्र कहा से लाऊ?
दासी कोई विधुर बनाये
ऐसा भाग्य न मुझे सुहाय।

“गाता क्या है, जादू बिसेरता है,” घनी साल बनी घालो की मिचमिचाले हुए मालिक फुसफुसाया, “सच कहता हूँ, कम्बस्त जादूगर है, जादूगर!”

मेरी आँखें उसपर टिकी थीं और मेरा हृदय खुशी से छलछला रहा था। गीत के उदास बोल गूँज और विजयी आवाज़ में सभी पर छा रहे थे। उनके सामने भटियारखाने की अथ सभी आवाज़ें मुरझा गई थीं और उनका आवेग हर घड़ी अधिक सशक्त, अधिक सुन्दर, अधिक जानदार बनता जा रहा था।

इस पूरी धस्ती में मेरा
कोई न सगी-साथी,
सभी मनायें हसी खुशी,
मैं अपने पर पछताती,
भला किसी को कैसे मेरा
रूप खींच कर लायेगा,
फटे-पुराने चिथड़े मेरे,
कौन मुझे अपनायेगा!
कोई अघबूढ़ा रुडुआ ही
मुझे व्याह ले जायेगा,
लेकिन यह बिन इस जीवन
में कभी न आने पायेगा!

मेरा मालिक, बिना किसी निम्नक या लाज के, रो रहा था। उसका सिर झुका था, ठुकदार नाक जोरो से सुडक रही थी और आसू टपाटप आँसु से दुरककर घुटनो पर गिर रहे थे।

तीसरे गीत के खत्म होते न होते मालिक का हृदय बुरी तरह उमड़ने घुमड़ने लगा। बोला

"नहीं भाई, मैं अब यहाँ नहीं बठ सकता। मेरा तो दम घुटता है यहाँ की यह कम्बलत गध, - चल, घर चले!"

लेकिन बाहर सडक पर आते ही बोला

"शतान उठा ले जाए इन सब को! घल पेशकोव, किसी होटल में चलकर कुछ पेट में डाल ले। घर जाने को जी नहीं चाहता!"

किराये के लिए कोई हील हुज्जत किए बिना ही वह एक घोडागाडी में बठ गया और जब तक होटल न आ गया उसी तरह गुमगुम बठा रहा। होटल में कोने की एक मेज उसने चुनी और कुर्सी पर बठते ही धीमे स्वर में उसने तुरत बोलना शुरू कर दिया। रह रहकर वह अपने चारों

और देखता जाता था और ऐसा मालूम होता था मानो कोई गहरा घाव फिर से हरा हो गया हो।

“उस बूटे बकरे ने मुझे बुरी तरह पक्कर कर दिया सारी हवा ही निकाल डाली और मुझे मनहसियत के अंधे गढे में डाल दिया.. सुन, तू दुनिया भर की चीजें पढ़ता और जमीन आसमान के कुत्ते मिलाता है। तू ही बता कि यह कैसे हुआ? कितना लम्बा जीवन बिताया है मैंने, — पूरे घातीस साल मैंने पार किए हैं। बीबी है, बच्चे हैं, फिर भी इस दुनिया में ऐसा एक भी जीव नहीं है जिससे मैं खुलकर बातें कर सकूँ! कहा, कौन है जिसके सामने हृदय उडेलना जाए, मन की एक एक बात कही जाए? बीबी के कुछ पत्ते नहीं पड़ता, उसकी कुछ समझ में नहीं आता। और उसे समझने की गरज भी क्या है? उसके अपने बच्चे हैं घर है, दुनिया भर का खटाराग है। मेरी आत्मा से उसकी पट्टी नहीं बढती। बीबी तभी तक मित्र होती है जब तक पहला बच्चा जन्म नहीं लेता समझा भाई, जीवन का कुछ ऐसा ही मामला है। तिस पर मेरी पत्नी, — अब तुमसे क्या कहूँ, तू खुद अपनी आत्मा से देखता है न भोड़ने के बाम आएँ, न बिछाने के भास का अच्छा-खासा पूँ है, कम्बलत! ओह भाई रे, यह मेरा ही गुर्वा है जो उसका बोस सभाले हूँ ”

उसने गिलास उठाया और ठडी तथा कडुवी बीयर चुपचाप गले के नीचे उतार गया। फिर कुछ बेर बहू अपने लम्बे बालों को इधर उधर करता रहा और अंत में बोला

“समझा भाई, मैं तो लोगों को — कुल मिलाकर — हरामी कुत्ता समझता हूँ! मैं जानता हूँ कि तू उन देहातियों से खूब बातें करता है — कभी इस चीज के बारे में और कभी उस चीज के बारे में मैं मानता हूँ — जीवन में बहुत सी चीजें हैं जो सही नहीं हैं जो कुत्सित हैं — यह भई बिल्कुल सही बात है लोग सब के सब चोर हैं। और तू क्या समझता है कि तेरी बातों का उनपर कोई असर होता होगा? बिल्कुल नहीं। प्योत्र और ओसिप को लो, — एकदम कमोने और गए-बोते! वे तेरी एक एक बात मुझे बताते हैं, — वे सब बात भी जो तू मेरे बारे में कहता है अब तू ही बता, ऐसे लोगों के बारे में तू क्या कहेगा?”

उसकी यह बात सुनकर मैं इतना सकपका गया कि मुझसे कोई जवाब देते न बना।

“देखा तूने!” मालिक ने हल्की हसी के साथ कहा। “तेरा फारस जाने का वह इरादा कुछ बुरा नहीं था। कम से कम इतना तो होता ही कि लोग क्या कहते हैं, इसका तुझे पता न चलता। उनकी जवान दूसरी है जो तेरी समझ में न आती। अपनी जवान में तो सिवाय गद्गरी और हुस्ता के और कुछ सुनाई नहीं देता।”

“क्या प्रोसिप मेरी सभी बातें आपको बता देता है?” मैंने पूछा।

“बिल्कुल। क्या तुझे अचरज होता है? वह सबने बड़े छटककर बातें बनाता है। समझा भाई, वह तो पूरी पहेली है तेरा बातों का, पेशकोब, कोई असर नहीं होता। तू सत्य की बुलाई देता है। लेकिन सत्य सुनता कौन है? उनके सामने सत्य का राग अलापना ऐसा ही है जैसे गरद में बर्फ, — जो कीचड़ में गिरती और पिघलती रहती है। सिया इसके कि वह कीचड़ बढ़ाये उससे कोई लाभ नहीं होता। तू भाई चुप ही रहा कर ”

धीयर का एक गिलास खत्म होता कि वह दूसरा उडेलता, फिर तीसरा, और फिर चौथा। गिलासों के साथ-साथ उसके शब्दों की रफ्तार और तीखापन बढ़ता जाता, लेकिन नशे का कोई चिह्न न दिखाई देता।

“शब्द तराशने का काम नहीं कर सकते, चुप्पों साथे रहना बेहतर है। सब भाई, यह जीवन भी कितना सूना और उदास है उसका वह गाना कितनी सचाई से भरा था ‘इस पूरी बस्ती में मेरा कोई न सगी-साथी ’”

चौकन्ना सा होकर उसने अपने इधर-उधर देखा और फिर आवाज को धीमी करते हुए बोला

“सब भाई, अधिक दिन नहीं हुए जब मुझे एक मनचीती घिड़िया दिखाई दी थी एक विधवा थी, मतलब यह कि उसके पति की जालसाजी के अपराध में साइबेरिया जलाघतन करने की सजा दी गई थी। वह अभी यहा की जेल में बंद है। हा, तो उसकी पत्नी से मेरी जान पहचान हो गई उसे के नाम उसके पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। तो उसने निश्चय किया बस, अपने आप समय जागो जोड़े मिलवानेवाली एक बुढ़िया मुझे उसके पास ले गई। मैंने उसे एक नजर

देखा, - बहुत ही प्यारी चीज थी, जवान और खूब सुंदर, - उसके रोम रोम से सच्चा सौंदर्य फूटा पड़ता था ! सो मैंने उसके घट्टा के चक्कर लगाने शुरू किए, - एक बार, दो बार, तीन बार, - और इसके बाद एक दिन मैंने उससे बात की। तुम अजब पहिली हो, - मैं बोला, - तुम्हारा पति जेल में पड़ा है और तुम सीधा और काटों भरा रास्ता न अपनाकर गुलछरें उड़ा रही हो। और अगर तुम्हें यही करना है तो फिर उसके साथ साइबेरिया जाने की तुम्हारी धुन के क्या मानी ह? - देता तू ने, अपने पति के साथ वह खुद साइबेरिया जाने का भी जोड़-तोड़ बठा रही थी आखिर उसने मुह खोला। जसा भी वह है, उसने कहा, मेरे लिए बहुत है, क्योंकि मैं उससे प्यार करती हूँ ! प्यार जाने मेरे लिए ही यह मुसीबत भोल ली हो, और उसके लिए ही मैं तुम्हारे साथ इस तरह घटक-मटक रही हूँ। वह कुछ रुकी और फिर बोली उसे पसो की शरारत है। वह भला आदमी है, ऊँचे कुल में उसने जन्म लिया है और बसा ही जीवन बिताने का वह आदी है। अगर मैं अकेली होती, वह बोली, तो कभी अपने दामन में बाग न लगाती। तुम भी भले आदमी हो और मुझे अच्छे भी लगते हो, वह बोली, लेकिन इस बात का भागें अभी लिफ्त न करना ओह, शतान उठा ले जाए उसे ! मेरे पास जो कुछ था, उसके हवाले कर दिया। अस्सी से भी कुछ ऊपर रुबल रहें होंगे। मैंने सब उसके सामने रख दिए। मुझे माफ करना, मेरे मुह से निकला, अब तक जो हुआ सो हुआ, भागें मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकूँगा - अगर मैं आया भी तो मेरी आत्मा मुझे घन नहीं लेने देगी। यह कहकर मैं चला आया, और बस "

उसके बाद वह कुछ देर एक गया और इतनी ही देर में मशा उसपर हावी हो गया। ऐसा मालूम होता था मानो वह एक्वारगी ही बह जाएगा। उसने बुदबुदाना शुरू किया

"मैं कोई छ बार उसके पास गया तू नहीं समझ सकता, इसका क्या मतलब है ! इसके बाद नायद मैंने उसके घर के छ चक्कर और लगाए होंगे लेकिन भीतर पाव रखने, का साहस नहीं कर सका। अब वह यहा नहीं है "

उसने मेरा पर अपने हाथ रख लिये और उगलिया को हिलाते हुए फुसफुसाकर बोला

“सच, भगवान से मेरी अब यही बिनती है कि फिर कभी उसका सामना न करना पड़े। भगवान न करे कभी फिर उससे सामना हो जाये, हे भगवान फिर तो बेटा शक्र हो जायेगा अच्छा, चल, अब घर चलें।”

हम बाहर निकल आए। उसके पाव डगमगा रहे थे और वह बुदबुदा रहा था

“देखा भाई तू ने”

उसने जो कुछ बताया, उससे मुझे अचरज नहीं हुआ। इधर कुछ दिनों से मैं खुद यह अनुभव कर रहा था कि उसके साथ शकर कोई प्रसाधारण घटना घटी है।

लेकिन जीवन के बारे में उसके विचारों, और खास तौर पर शोसिप के बारे में उसने जो बताया था, उससे मेरा जी भारी हो गया और गहरी उदासी ने मुझे घेर लिया।

२०

मुर्वा नगर में, खाली इमारतों और दुकानों की पातों के बीच, तीन गमिया झीत गईं और मैं मजदूरों की निगरानी, उनकी ओवरसीयरी का काम करता रहा। प्रत्येक शरद में वे बदनूमा पक्की दुकानों को ढहा देते और प्रत्येक वसन्त में ऐसी ही बदनूमा दुकानों को खड़ा करते।

मालिक मुझे पाव खूबल महीना देता और उनके बदले में मेरी जान तक निचोड़ने की ताक में रहता। जब किसी दुकान में नया फश बिछाना होता तो मुझे फश की करीब दो फुट गहरी मोटी तह खोदनी और मलबे की दुवाई-सफाई करनी पड़ती। आधारा लोग इस काम के लिए एक खूबल वसूल करते, लेकिन मुझे वह फूटी कौड़ी न देता। इसके सिवा फश की खुदाई-दुवाई में फसा रहने के कारण मैं मजदूरों की निगरानी न कर पाता और वे इस मौक़े को गनीमत समझ दरवाशों के तालों और मूठों के पंच खोल उन्हें तिड़ी कर देते, और भी जो छोटी-मोटी चोब उनमें हाथ में लगती उड़ा ले जाते।

मजदूर-कारीगर हों चाहे ठेकेदार, जब भी और जिस तरह भी मौका मिलता, मुझे घोसा देने से वाच न घाते और इरीब-करीब छुले धाम

चोरी करते, मानो चोरी करना उनपर लादा गया फज हो और पकड़ जाने पर वे कभी गुस्ता न होते, बल्कि अचरज में भरकर कहते

“अरे बाप रे, पाच रुबल के पीछे तू इतना हलकान होता है मानो तुझे बीस रुबल मिलते हो। देखकर हसी आती है।”

मैं मालिक से कहता कि खुदाई-दुवाई के काम में मुझे फसाने से बचत तो केवल एकाध रुबल की ही होती है, लेकिन इससे कहीं ज्यादा का माल चोरी चला जाता है। लेकिन वह आल मारकर बोलता

“ठीक है, ठीक है, बने जा।”

यह लाडना कुछ कठिन नहीं था कि वह मुझे भी चोरा का ही मौतैरा भाई समझता है। इससे उसके प्रति मेरी घृणा और भी बढ़ गई लेकिन मैंने अपमानित अनुभव नहीं किया सारा भावा ही ऐसा था। हर कोई चोरी करता, और खुद मेरा मालिक भी दूसरो की सम्पत्ति हड़पने में जरा धाना-कानी नहीं करता।

मेला उठ जाने पर वह अरम्मत के लिए सौ दुकानों का चक्कर लगाता। दुकानदार अक्सर अपनी चीजें भूल जाते और समोवार, तन्नरिया, कालीन, कचिया और सामान की पेटो या सामान का एकाध टुकड़ा तक छोड़ जाते। वह इन चीजों को देखता और लघु हसी हसते हुए कहता

“इन चीजों की सूची तयार करके इन्हें गोदाम में पहुँचा देना।”

गोदाम में से कितनी ही चीजें उठवाकर वह अपने घर ले जाता और मुझसे कई धार नई सूची बनवाता।

चीजें जमा करने और उन्हें अपनी मिल्कियत बनाने का मेरे मन में न कोई चाव था, न मोह। पुस्तकें तक मुझे बोझ मालूम होती थीं। मेरे पास केवल दो ही थीं—एक बेराजे की कविताओं का छोटा सा सग्रह, और दूसरा हाइने की कविताओं का सग्रह। पुश्किन की कविताओं का सग्रह भी मैं खरीदना चाहता था, लेकिन नगर में पुरानी किताबों की एक मात्र दुकान का चिडचिडा मालिक उसके बहुत ज्यादा दाम मागता था। मेज़ कुसिया, कालीनो, आईनो और ऐसी ही दूसरी चीजों से, जिनसे मालिक का घर अटा पडा था, मुझे घणा थी। उनके भारी भरकम आकार प्रकार तथा रंगों और वानिश की गंध से मेरा जी भना जाता। मालिक के कमरे मुझे आम तौर पर अच्छे नहीं लगते, उन्हें देखकर मैंने दुनिया भर के कूड़ा-कबाड तथा लोहा-लकड़ से भरे बक्सों की याद हो

आती। लेकिन मेरा मालिक था कि उसका मन न भरता और दूसरो की चीखें ला-लाकर अपने चारो ओर अच्छा खासा कबाड जमा करता रहता। यह मुझे और भी ज्यादा घिनौना मालम होता। यो तो रानी मार्गो के कमरो मे भी फर्नाचर की भरमार थी, लेकिन वह कम से कम देवने मे सुन्दर तो था।

खुद जीवन भी मुझे ऐसा ही मालूम होता,—असम्बद्ध, बेडौल, बेतुकी और बेमानी चीजो से बुरी तरह भटा हुआ। दूर जाने की अहसरत नहीं। यहीं देखिये। दुकानो की भरपूर हो रही है, उनकी तोड़ फोड़ ठीक की जा रही है। वसन्त मे बाढ आएगी और सारी मेहनत पर पानी फेर देगी। फस उधक आएगे, बाहर के दरवाजे खराब हो जाएंगे। बाढ उतरने के बाद शहतीर गल-सड जाएंगे। वष प्रति वष बीसियो साल से, यही सिलसिला चला आ रहा है। मेले का मदान बाढ के पानी से भर जाता है, इमारतो और दुकानो को चौपट कर देता है, पटरिया और रास्ते सब एकाकार हो जाते हैं। इन वार्षिक बाढो से लाखो का नुकसान होता है और सभी जानते हैं कि ये बाढें अपने आप कभी बंद नहीं होगी।

आए साल नदी का पानी जाडो मे जमकर बर्फ हो जाता, वसन्त मे यह बर्फ तडकती और बजरो तथा बीसियो डोगियो को चकनाचूर कर अपने साथ बहा ले जाती। लोग यह सब देखते, आगे भरते और कराहते, नयी डोगिया बनाते जिहे अगले साल फिर इसी प्रकार नष्ट होना पडता। यह एक ऐसा कुत्सित चक्र था जो खत्म होने मे न आता था, जिसे खत्म करने की बात तक कोई नहीं सोचता था।

जब ओसिप से मैंने इसका चिन्त किया तो उसने अचरज से मेरी ओर देखा, फिर खिल्ली सी उडाते हुए बोला

“बाह रे चूजे, क्या चोच मारी है! तुमने इस सब से क्या लेना-देना है? तुमने इससे क्या मतलब?”

इसके बाद उसका स्वर कुछ गम्भीर हो गया, लेकिन उसकी आवाज मे खिल्ली की चमक फिर भी बनी रही। उसकी आखें नीली थीं, और इस उम्र मे भी उनमे कुछ इतना निखार था कि देखकर अचरज होता था।

“लेकिन है तू होशियार!” उसने कहा, “हो सकता है कि यह तेरी एक बेकार की आदत सिद्ध हो, लेकिन यह भी हो सकता है कि आगे चलकर वह तेरे काम आए। तू एक बात और देख..”

घोर उसने, रले और तटस्थ आदाज मे, छोटे-छोटे शब्दा, टक्काली मुहाविरों और कहावतों, चर्चित कर बेनेवाली उपमाओं और घुटकिया को झड़ी लगा दी

“लोग रोते झोंकते और तोबा तिल्ला मचाते हैं कि हमारे पास उमीन नहीं है, योल्गा है कि हर साल बसत मे फनफनाती और तटा को काटकर मनो मिट्टी बीच धारा मे बहा ले जाती है। यह मिट्टी नीचे तलहटी मे जन जाती है। तब दूसरी जगह के लोग बिल्लाते हैं कि योल्गा छिछली हो गई। फिर बसन्त मे बफ पिघलने से आनेवाली बाढ़ और ग्रीष्म की बार्णिं जमीन मे साइया बनाती और नालियां काटती हैं, और योल्गा उसे फिर हडपकर जाती है।”

वह एकदम निस्सग होकर धातें कर रहा था। उसके स्वर मे न विक्षोभ का भाव था, न किसी प्रकार की शिकायत का। मानो उसका रोम रोम जीवन के खिल्लाफ शिकवा गिकायतों के बारे मे अपनी इस जानकारी पर गर्व और सन्तोष से छसछला रहा हो। उससे शब्दों मे सबाई थी, मेरे विचारों से घे मेल खाते थे, फिर भी उन्हें सुनना मुझे अप्रिय लगता था।

“या फिर एक दूसरी चीज को लो—आग लगने को ”

मैं जानता था कि एक भी गर्मी ऐसी नहीं बीतती जब योल्गा पार के जगलो मे आग न लगती हो। आए साल बिला नामा हर जुलाई मे आसमान भटभले पीले छुए से ढक जाता और नीचे शुका हुभा किरणविहीन सूरज डुलती हुई आप्त की भाति धरती की ओर देखता रहता।

“जगल उनगी बात छोड।” ओसिप कहता। “जगलो पर या तो आर का अधिकार होता है या कुलीनो का, देहातिये जगलो के मालिक नहीं होते। जब नगर जलकर राख हो जाते हैं तो यह भी कोई बड़ी मुसीबत नहीं है—नगरो मे अमीर रहते हैं, और अमीरो पर तरस खाने मे कोई तुक नहीं दिखाई देती। असल मुसीबत तो तब होती है जब बस्वो और गावों मे आग लगती है। हर साल, और कुछ नहीं तो सौ एक गाव जल जाते हैं, यही असली मुसीबत है।”

वह दबी सी हसी हसता और कहता

“माल है, पर सभाल नहीं है। एक तू और मैं यह देख पाते हैं कि

इन्सान को मेहनत या साधन न उसे मिलता है, न धरती को, पानी और प्राण उसे घटकर जाते हैं।”

“लेकिन इसमें हसने को क्या बात है?”

“क्यों नहीं?” वह कहता। “धामुओं से प्राण नहीं जुड़ाई जा सकती, केवल धाड़ बढ़ेगी।”

मेरे मन में यह बात जमकर बँठ गयी कि अब तक जितने भी लोगो से मैं मिला हूँ, उनमें यह सलीला बूढ़ा सबसे ज्यादा समझदार और बुद्धि का धनी है। लेकिन, बहुत योगिना करने पर भी, मैं यह नहीं पकड़ सका कि क्या उसे पसंद है, और क्या नहीं।

मैं इसी उधेड़-धुन में फँसा रहता और उसके गद्, जलती प्राण में झुली खपन्चिया की भाँति, धा धाकर गिरते रहते

“देख न, लोग किस तरह शक्ति बरपाव करते हैं,—अपनी भी, और दूसरा की भी। खुद अपने मालिक को ही ले जो धुन की भाँति तुम्हारी शक्ति बरपाव करने में जुटा है। या फिर धोवका को ले। एक झेली धोवका इतनी शक्ति बरपाव करती है कि बड़े से बड़े दिमागदार भी उसका हिसाब नहीं लगा सकते। अगर कोई झापड़ा जल जाए तो उसकी जगह दूसरा बना सकते हैं। लेकिन जब इन्सान धूल में मिलता है तो यह नुस्खान पुरा नहीं हो सकता! मिसाल के लिए अपने भरदाव्योन या प्रिगोरी को ही ले। कोई फल्पना तक नहीं कर सकता था कि यह देहातिया इस तरह धुआ बनकर उड़ जाएगा! माना कि वह प्रिगोरी कोई क्यावा भवलमद देहातिया नहीं था, लेकिन उसके पास हबय था। वह एक ही लपक में उड़ गया, मानो हाड-भास का पुतला न होकर घास-फूस का ढेर हो,—चिगारी पड़ी नहीं कि यह जा, वह जा। औरते उसे इस तरह घटकर गईं जैसे बीड़े लास को घट कर जाते हैं।”

“लेकिन यह तो बतानो,” बिना किसी कठोर भावना के, केवल कौतुकवश मैंने उससे पूछा, “कि मेरी सारी बातें तुम मालिक के सामने जाकर क्यों उगल देते हो?”

और उसने बहुत ही सादगी से, बल्कि कहना चाहिए कि हादिकता से, जवाब दिया

“वह तेरा मालिक है। उसे सब मालूम होना चाहिए कि तेरे दिमाग में क्या-क्या फत्तूर भरे हैं। अगर वह तुझे ठीक नहीं कर सकता तो और

कौन करेगा? किसी बुरी नीयत से नहीं, तेरे भले के लिए ही मैं सा-
 बातें उसे बताता था। जैसे तू समझदार है, लेकिन तेरी खोपड़ी में शता
 बैठा है। वह तेरे दिमाग में दुनिया भर को उल्टी-सीधी बातें फूकता रहता
 है। अगर तूने चोरी की होती तो मैं एक शब्द भी उसके बारे में न कहता।
 अगर तू लडकियों के पीछे भागता, तब भी मैं न बोलता। और अगर
 तू कहीं से नशे में घुत होकर आए तब भी निश्चय जानो मैं किसी से
 कुछ नहीं कहूंगा। लेकिन तेरे इन दिमागी फितूरों को मैं नहीं बर्खास्त
 उनके बारे में मैं जरूर कहूंगा। यह बात आज मैं तुझे भी खोलकर क
 वेता हूँ ”

“मैं तुमसे कभी बातें नहीं कहूंगा।”

कुछ क्षण वह चुप रखा और अपनी हथेली में बिपके कोलतार का
 धुरचकर छुड़ाता रहा। इसके बाद घाब भरी नजर से मेरी ओर देखते हुए
 बोला

“यह निरी बकवास है। तू मुझसे बातें करेगा, और खरू करेगा।
 नहीं तो और कौन है जिससे तू यहां बातें कर सकता है? कोई नहीं।”

खूब साफ-सुधरा होने पर भी इस समय ओसिप जहाजी माकोव की
 भांति मालूम होता, - हर चीज और हर व्यक्ति से उतना ही अलग और
 बेपरवाह।

कभी उसे देखकर मुझे पारखी प्योत्र वासील्येविच की याद ही आती,
 और कभी कोचवान प्योत्र की, और कभी-कभी मुझे उसमें अपने नाना
 की हुनियार दिखाई देती, - किसी न किसी रूप में उसमें उन सभी बड़
 लोगों का कोई न कोई अंश मालूम होता जिनसे कि अब तक मेरा वास्ता
 पड़ चुका था। वे बूढ़ लोग, सब के सब बहुत ही दिलचस्प थे, परन्तु मैं
 यह भी देख रहा था कि उनके साथ जीना नामुमकिन है - जिदगी धिनोनी
 और कठिन होती। वे मानो आत्मा और हृदय में धुन की भांति प्रवेश करते
 जा रहे हों। क्या ओसिप भला आदमी था? - नहीं। क्या वह बुरा आदमी
 था? - नहीं। लेकिन वह चतुर था, यह साफ मालूम होता था। उसकी
 गहरी सूझ-बूझ चकित कर देनेवाली थी, लेकिन उसके सोचने का ढंग मुझे
 सुन और निर्जीव बनाता था, और अतंत मुझे यह अनुभव होने लगा
 कि मेरा जो अपना सोचने का ढंग है, उसकी जड़ पर वह पुठाराघात
 करता है।

निराशा के अंधे कुएँ में डाल देनेवाले विचार, सपोलियो की भाँति,
मेरे हृदय में रेंगने लगते

“सभी लोग एक दूसरे के दुश्मन हैं, एक दूसरे को देखकर उनका
ममकराना झूठ है, भीठे शब्दों की बौछार करना झूठ है। यह सब ऊपरी
गिवावा है, लेकिन सच पूछो तो उनमें एक भी ऐसा नहीं है जो प्रेम के
रंग से जीवन के साथ बंधा हो, जो सचमुच में जीवन से प्रेम करता
है। नानी को छोड़ अथवा कोई सच्चे मानो में जीवन तथा लोगों से प्रेम
नहीं करता। नानी, और रानी मायाँ—विधाता की वह अद्भुत रचना!”

कभी-कभी ये और इसी तरह के अंधे विचार काले बादलों का रूप
धारण कर हृदय और मस्तिष्क पर छा जाते, जीवन को आह्लादविहीन और
रमणों बना देते। परंतु और कैसे जिया जाये, कहा जाया जाये? यहाँ
तक कि, ओसिप को छोड़, ऐसा अंधे कोई नहीं था जिससे मैं बातें कर
सकता। और घूम फिरकर मैं उसी से बातें करता।

मैं उसके सामने अपना हृदय उडेल देता। मेरी व्यग्र बातों को वह मन
सपाकर सुनता, बीच-बीच में सवाल पूछता और खोद-खोदकर सभी कुछ
मालूम कर लेता। अन्त में शान्त भाव से कहता

“कठफोडवा भी अपनी लगन का पक्का होता है,—एकदम चिढ़ी
और ठीठ। लेकिन उसे देखकर किसी को डर नहीं लगता। अगर मेरी
सच्ची सलाह माने तो किसी मठ में भर्ती हो जा। वहीं रहकर अपने बाल
पढ़ाना और भीठे शब्दों से भक्तों के हृदयों पर मरहम लगाना। इससे तेरे
दिमाग को शांति मिलेगी, पादरियो तथा ईसाई साधुओं की जब गम
होगी! सच, अपने समूचे हृदय से मैं तुझे यह सलाह देता हूँ। दुनियाबारी
के काम तो तेरे बस के नहीं लगते ”

मठ में प्रवेश करने का मेरा कोई इरादा नहीं था, लेकिन मुझे ऐसा
मालूम होता मानो मैं समझ में न आनेवाली बातों की किसी अंधी
भूलभुलैया में फँस गया हूँ। मेरा हृदय इससे छुटकारा पाने के लिए
छटपटाता। जीवन मानो शरद ऋतु में खुमियों से विहीन जंगल के समान
था, एक ऐसा शून्य जिसका हर मोड़ और कोना मेरा खूब जाना पहचाना
था और जिसमें कोई काम नबर नहीं आता था।

मैं न तो बोदका पीता था, न लडकियों पर डोरे डालता था। आत्मा
और हृदय को मगन रखने के इन दो साधनों का स्थान पुस्तकों ने

ले लिया था। लेकिन जितना ही अधिक मैं पढ़ता, उतना ही अधिक ऐसा सूना और बेमतलब का जीवन जीना कठिन होता जाता, जसा मुझे लगता था कि अधिकतर लोग जो रहे हैं।

अभी सोलहवें वर्ष में ही मैंने पाव रखा था, लेकिन कभी-कभी मालूम ऐसा होता मानो मैं काफी बूढ़ा हो गया हूँ। जीवन में इतना कुछ मैंने देखा और भुगता था और इतना कुछ मैंने पढ़ा और बेचनी के साथ सोचा विचारा था कि मुझे अपना अंतर भारी हो गया मालूम होता था। मेरे दिमाग का कोठा उस अर्धे गोदाम की भांति था जिसमें दुनिया भर की चीजें भरी थीं जिन्हें छानने और करीने से रखने की न तो मुझमें क्षमता थी और न योग्यता ही।

छापो का बोझ और बहुलता स्थिरता प्रदान करने के बजाय मुझे और भी विचलित कर देती और मैं उसी प्रकार डोलने तथा छपाके खाने लगता जैसे कि घबकोले लगने पर पात्र में पानी हिलता और छपछपाता है।

रौने झाँकने और शिकवा शिकायत से, दुःख दब और बीमारी-बहारी से मुझे नफरत थी और ध्वरता के—खून-खराबी, मार-पीट, यहाँ तक कि जबानी गाली गलौज के भी—दृश्य सहज ही मुझे भना देते, हृदय में ठंडे गुस्से की एक भाग भडक उठती, जगली जन्तु की भांति मरने-मारने के लिए मैं तयार हो जाता और बाद में अदबवाकर अपने किए पर दुरी तरह पछताता।

अनेक बार ऐसा होता कि जुल्म करनेवाले की चमड़ी उधेड़ने की अव्यय इच्छा भूत की भांति मेरे सिर पर सवार हो जाती, झालें बंद कर मैं बीच मझपार में बूढ़ पड़ता और अच्छी खासी लडाईं में फस जाता। गहरी और पगु निराशा तथा खीज और झुंझलाहट से उपजे अपने उन विस्फोटों की आज विन भी जब मैं याद करता हूँ तो मेरा हृदय शम और शोष की भावना में डूबने-उतराने लगता है।

ऐसा मालूम होता था मानो मेरे भीतर दो जीव निवास करते हों एक यह जो बहरत से रमादा गवगो और पिनीनेपन में से गुजरने के बाद अथ कुछ दम्भू हो गया था। जीवन की भयानक पित्तपित्त में उठे सदेहशील और अविश्वासी बना दिया था और सभी सोगा को—एव अपने प्रापको भी—असहाय तरत की नजर से बह देखता था। नगरों और लोगों से दूर वह एक गान्त और अवकाश प्राप्त जीवन बिताना चाहता।

कभी वह फारस जाने के सपने देखता, कभी मठ में शरण लेने की बात सोचता, कभी वह जंगलों के चौकीदार या रेलवे के सतरी की क्षोपड़ी में जाकर रहने अथवा नगर से बाहर किसी उपवस्ती में जाकर रात का पहरेदार बनना चाहता। लोगों से कम से कम मिलना और उनसे अधिक दूर रहना जैसे उसके जीवन का लक्ष्य था।

दूसरा जीव जो भुझ में निवास करता था, वह इससे भिन्न था। समझ और सचाई से भरी पुस्तकों की पवित्र भावना उसके रोम-रोम में बसी थी। वह जानता और हर क्षण अनुभव करता था कि जीवन की यह भयानक घिसघिस पूरी निमग्नता से या तो उसका सिर घड़ से अलग कर देगी या अपने भयानक पापों से उसे कुचलकर रख देगी। इससे बचने के लिए वह अपनी समूची शक्ति बटोरता, दांतों को भींचकर और मुट्टियों को कसकर घूसों या बातों की लड़ाई में कूदने के लिए सदा तयार रहता। अपने प्रेम और तरस की भावना को वह अमल में व्यक्त करता और फ्रांसीसी उपन्यासों के बीर नायकों की भांति, जरा सा भी उकसावा मिलने पर, अपनी तलवार म्यान से बाहर निकालता और टूट पड़ने की मुद्रा में तनकर खड़ा हो जाता।

उन दिनों एक आदमी से मेरी कट्टर दुश्मनी थी। वह मालाया पोक्री स्काया सड़क के एक बेसवाघर का जमादार था। एक दिन अनायास ही पहली बार मेरी उससे मुठभेड़ हो गई। सुबह का वक्त था। मैं मेले की ओर अपने काम पर जा रहा था और वह नशे में बेहाल एक लड़की को गाड़ी में से खींचकर बाहर निकाल रहा था। वह उसकी टांगें पकड़े था और बहुत ही गंदे ढग से झटके दे रहा था। झटके से लड़की की टांगों के मोड़ों खिसक आए थे, घाघरा उलट गया था और वह कमर तक नगी बिलाई दे रही थी। हर झटके के साथ वह मुह से बेहूवा आवाज करता था, हसता था और उसके बदन पर थूकता जाता था। बेसुध और लस्तपस्त लड़की, जिसका मुह खुला हुआ था, हर झटके के साथ नीचे खिसकती आती थी। उसकी ढीली और बेजान बांहें, जो अपने कोटरों से बाहर निकल आईं मालूम होती थीं, सिर के ऊपर सीधी फली थीं और बदन के साथ-साथ नीचे खिसकती जाती थीं। उसकी पीठ, सिर, उसका नीला चेहरा पहले गाड़ी की सीट, इसके बाद पायदान से टकराए, आखिर में उसका सिर पत्थरों से जा टकराया और वह सड़क पर घा गिरी।

कोचवान ने अपना हृष्टर फटकारा और उसका घोड़ा गाड़ी को लेकर हवा हो गया। जमादार ने लडकी की टांगों को उठाया और उलटे कदम चलते हुए लाश की तरह उसे पटरी की ओर खींचता ले चला। गुस्से में पागल हो मैं उमपर झपटा। शनीमत यही थी कि सात फुटी साधनी, जिसे मैं अपने हाथ में लिये था, या तो सयोगवश छूटकर गिर पड़ी थी या सुथ न रहने के कारण छुद मैंने ही उसे फेंक दिया था। नहीं तो वह शायद जीवित न बचता और बाद में मैं भी फसा-फसा फिरता। खाली हाथों ही मैं तेजी से लपका और टक्कर मारकर मैंने उसे गिरा दिया। इसके बाद उछलकर मैं ओसारे पर चढ़ गया और घबराहट में खूब जोरों से मैंने घटी बजाई। घटी की आवाज सुन जगली शकल सूरत वाले कुछ लोग भागे हुए बाहर आए। मैं उन्हें कुछ समझा नहीं सका, जने तसे मैंने अपनी साधनी उठाई और नौदो म्यारह हो गया।

नदी की डलान पर जब मैं पहुंचा तो वह कोचवान मुझे खिलापी दिया जिसकी गाड़ी में लडकी पड़ी हुई थी। कोचवान की अपनी ऊंची सीट से उसने मेरी ओर देखा और सराहना के भाव में गरदन हिलाते हुए बोला

“खूब मरम्मत की!”

झुमलाहट में भरकर मैंने उससे पूछा

“लेकिन तुम अपनी कहो। लडकी तुम्हारी गाड़ी में सवार थी। लडकी के साथ इतनी बेशर्मा का सलूक करने पर तुमने जमादार को रोका क्यों नहीं?”

“लडकी के साथ चाहे जसा सलूक हो, मेरी बला से।” उसने अविचलित उपेक्षा से कहा, “अच्छे-खासे शरीफजादे लडकी को मेरी गाड़ी में डाल गए और किराया दे गए। शौन किसको पीटता है, इससे मेरा क्या मतलब।”

“अगर वह उसे मार डालता तो?”

“नहीं, उस जसी लडकियों की जान इतनी कच्ची नहीं होती।” उसने थोड़ा कहा मानो कई बार नशे में धुत लडकियों को मारने की कोशिश कर चुका हो।

इसके बाद करीब-करीब रोज ही सुबह के बख्त जमादार से मेरी मुठभेड़ होती। जब मैं बाजार में से गुजरता तो वह सड़क पर झाड़ू देता या ओसारे की सीढ़ियों पर इस तरह बठा हुआ दिखाई देता मानो मेरा

ही इन्तजार कर रहा हो। मुझे निकट आता देख वह अपनी आस्तीनों चढा लेता और घूसा दिखाते हुए कहता

“अगर तेरा तोबडा सीधा न कर दिया तो मेरा नाम नहीं।”

उसकी उम्र चालीस से कुछ ऊपर थी। नाटा बंद, टागें बमान की भाति बाहर की ओर निकली हुई। और गभवती स्त्रियो की भाति मटका सा पेट। हल्की हसी हसते हुए वह अपनी चमकती आखा से मेरी ओर देखता, और मुझे यह देखकर अचरज होता, बल्कि डर सा लगने लगता कि उसकी आखो मे मस्ती और हादिकता भरी है। लडने मे वह तेज नहीं था, और उसकी बाहें मेरे मुखाबले मे काफी छोटी थीं। दो या तीन घौल के बाद ही उसके छक्के छूट जाते, फाटक से वह सट जाता और अचरज मे मुह बाए हाफता हुआ कहता

“जरा ठहर, अभी तुझे ठिकाने लगाता हू।”

उसके साथ लडने मे कोई मजा नहीं था। जल्दी ही मैं उफता गया, और एक दिन मैंने उससे कहा

“सुन, भोडू महाराज, भगवान के वास्ते मेरा पीछा छोड।”

“तू क्या लडता है?” उसने शिवायत भरे स्वर मे पूछा।

मैंने लडकी के साथ उसकी बदसलूकी का जिक्र किया। सुनकर बोला

“तो इससे क्या? तुझे क्या उसपर तरस आता है?”

“बेशक।”

एक क्षण के लिए वह खमोश रहा, अपने होठो को उसने साफ किया और बोला

“क्या तुझे बिल्ली पर भा तरस आता है?”

“हा ”

“तब तू निरा बुड है, और साथ ही झूठा भी। कोई बात नहीं, म तुझे खसाऊंगा ”

लम्बे चक्कर से बचने के लिए मैं इस बाजार मे से होकर अपने काम पर जाता था। जमादार से भुठभेड न हो, इस लिए मैं अब जल्दी उठता और अपने काम पर चल देता। लेकिन, मेरी इन कोशिशो के बावजूद, कुछ दिन बाद ही वह मुझे फिर दिखाई दे गया। वह सीडियो पर बठा था और अपनी गोद मे एक बिल्ली लिए उसे थपथपा रहा था। जब मैं उससे तीन डग दूर रह गया तो वह उछलकर खडा हो गया, पिछली

टागो से पकड़कर बिल्ली को उसने उठाया, और पत्थर के पीढ़े पर इतने जोरो से उसका सिर दे मारा कि उसके गर्भ खून के छोटो से में लयपय हो गया। इसके बाद चियडा हुई बिल्ली को उसने मेरे पावा पर पटक दिया और फिर फाटक पर खडा होकर कहने लगा

“अब बोल, क्या कहता है?”

में क्या कहता! कुत्तो की भाति हम दोनों एक दूसरे से गुत्यमगुत्या हो गए और अहाते मे लुढ़कने-पुढ़कने लगे। बाद मे, दु ख और वेदना से सन्न हो, सडक के किनारे उगे झाड झलाड मे बठकर में अपने हाँठ काटने लगा ताकि मेरी रुलाई न फूट पडे, में चिल्ला न उठू। इस घटना की याद करते हुए मेरा हृदय आज भी ददनाक घुणा से काप उठता है और अचरज होता है कि मैं पागल क्यों नहीं हो गया, या मैंने किसी की हत्या क्यों नहीं कर डाली।

क्या यह जरूरी है कि इस हद तक घिनौनी बातों का वणन किया जाए? हा, यह जरूरी है! यह इसलिये जरूरी है भीमान, कि आप धोखे मे न रहे, कहीं यह न समझने लगे कि इस तरह की बातें केवल बीते जमाने मे हुआ करती थीं! आज दिन भी आप मनगदन्त और काल्पनिक भयानकताओं मे रस लेते हैं, सुबर डग से लिखी भयानक कहानिया और क्रिस्ते पढ़ने मे आपको आनंद आता है। रोगटे खडे कर देनेवाली कल्पनाओं से अपने हृदय को सनसनाने तथा गुदगुदाने से आप जरा भी परदेड नहीं करते। लेकिन मैं सच्ची भयानकताओं से परिचित हूँ,—आए दिन के जीवन की भयानकताओं से, और यह मेरा अवचनीय अधिकार है कि इनका वणन करके आपके हृदयों को मैं कुरेदू, उनमे चुभन पदा करू ताकि आपको ठीक-ठीक पता चल जाए कि किस दुनिया मे और किस तरह का आप जीवन बिताते हैं।

कमीना और गदगो से भरा घिनौना जीवन है यह जो हम सब बिताते हैं। यही सारी बात है!

मैं मानव-जाति से प्रेम करता हूँ और चाहता हूँ कि उसे किसी भी तरह से दु ख न पहुँचाऊँ, परतु इसके लिए न तो हमे भावुकता का दामन पकडना चाहिए और न ही चमकीले शब्द जाल और खूबसूरत झूठ की टट्टी खडी करके जीवन के भयानक सत्य को हमे छिपाना चाहिए! जरूरी

है कि हम जीवन की ओर मुह करें और हमारे हृदय तथा मस्तिष्क में जो कुछ भी शुभ और मानवीय है, उसे जीवन में उडेल दें।

..स्त्रियो के साथ जिस तरह का व्यवहार लोग करते थे, उसे देखकर मैं खास तौर से विक्षुब्ध हो उठता और मेरा हृदय तिलमिलाने लगता। पुस्तको ने मुझे सिखाया था कि जीवन की सबसे सुंदर या अथयपूर्ण देन अगर कोई है तो स्त्री। मा भरियम और बुद्धि की देवी वसिलीसा की जो कहानियाँ मैंने नानी से सुनी थीं, वे भी इसकी पुष्टि करती थीं। अभागी घोबिन नताल्या का जीवन उसकी एक सजीव मिसाल था। इसके अलावा उन सफ़ेद और हज्जारी मुसकराहटों तथा कनरियों में भी एक इसी सत्य की झाकी मिलती थी जिनसे कि स्त्रिया, जीवन को जन्म देने वाली माताएँ आह्लाद और प्रेम से बुरी तरह शून्य इस धरती पर आए दिन स्वयं और सौंदर्य की अवतारणा करती हैं।

तुर्गेनेव की पुस्तको के पने स्त्रियो के गौरव की सालिमा से रगे थे, और स्त्रियो के बारे में जो कुछ भी अच्छा मैं जानता था, उससे मैं अपने मन में बसी रानी मार्गों की प्रतिमा को सजाता, तुर्गेनेव और हाइने ने इसके लिए मुझे अनेको बहुमूल्य रत्न दिये।

मेले से घर लौटते समय मैं पहाड़ी पर जेमलिन की बीवार के पास अक्सर खड़ा हो जाता और साझ के सूरज को आकाश से नीचे उतरकर बोलगा की गोद में लीन होते देखता। ऐसा मालूम होता मानो आकाश में तरल अग्नि की नदिया फट निकली हो। इस धरती की प्यारी नदी बोलगा का पानी गहरी गुलाबी आभा से दमकता जिसपर छाया की परते चढती जातीं। ऐसे क्षणों में कभी-कभी मुझे लगता मानो यह धरती एक भीमाकार बजरा है जो जलावतनी की सजा पाए बंदियों को लिए किसी अज्ञात दिशा में जा रहा है, वह कोई भीमाकार सूअर जसी लगती है जिसे अवश्य जहाज अलस भाव से कहीं खींचे लिए जा रहा है।

लेकिन अधिक अक्सर मेरी कल्पना में धरती की व्यापकता का चित्र मूत हो उठता, उन दूसरे नगरो और शहरो का मुझे ख्याल आता जिनके बारे में मैं पुस्तको में पढ़ चुका था, और उन अजनबी देशों के बारे में मैं सोचता जिनके निवासी भिन्न प्रकार का जीवन बिताते थे। विदेशी लेखको की पुस्तको में जीवन का जो चित्र मैं देखता था वह कहीं ज्यादा साफ-सुथरा और रमणीय तथा उस जीवन से कहीं कम बोझिल और कम

दमघोट था जिसे मैं अपने चारों ओर अलस और एक रस गति से उबलता देखता था। इससे मेरी आशंकाओं को अपने पजे फलाने का मौका न मिलता और रह रहकर यह अदम्य आकाशा मेरे हृदय में सिर उभारती कि जीवन का इससे अच्छा ढग और ढब हो सकता है।

और मैं नित्य यह सोचता कि एक दिन किसी ऐसे बुद्धिमान और सीधे-सादे व्यक्ति का मेरे जीवन में प्रवेश होगा जो मुझे इस दलदल से उबारकर प्रशस्त और उज्ज्वल राजपथ की राह दिखाएगा।

एक दिन क्रेमलिन की दीवार के पास मैं एक बेंच पर बठा था। तभी मामा याकोव भी वहाँ आ निकला। मैं कुछ अपने ही ध्यान में मगन था। न मैंने उसे आते देखा, और न मैं उसे सुरत पहचान ही सका। हालाँकि एक ही नगर में हम कई साल से रह रहे थे, लेकिन हम बिरले ही मिलते थे, सो भी थोड़ी बेर के लिए, योही भूले भड़के, निरे सयोगवश।

“अरे, तेरे लो खूब बाल पर निरल आए हैं।” उसने हसी में मुझे कोहनियाते हुए कहा और दोनों इस तरह धुल मिलकर बातें करने लगे मानो हम मामा भानजा न होकर पुराने जान-पहचानी हों।

नानी से मुझे पता चला था कि मामा याकोव ने अपनी सारी पूजा फूक-फाककर बर्बाद कर दी है। कुछ दिनों तक उसने जलावतनो कवियों के पडाव में बार्डर के नायब की जगह पर काम किया, लेकिन यह मौकरी चली नहीं और एक दुखद घटना के साथ उसका अन्त हो गया। हुआ यह कि वाडर बीमार पड गया और उसकी गरहाबिरी में मामा याकोव को खुलकर खेलने का मौका मिला। अपने घर पर वह बच्चियों की जमा करते, पीते पिलाते और खूब हूडदग मचाते। जब इसका पता चला तो उन्हें बरखास्त कर दिया गया, इसके साथ ही उनके खिलाफ यह अभियोग भी लगाया गया कि वह बच्चियों को रात के समय छुट्टा छोड देते थे। बच्चियों में से भागा तो कोई नहीं, लेकिन उनमें से एक किसी पादरा का गला दबोचते समय पकडा गया था। एक लम्बे असें तक मामले की जाच पडताल चलती रही, लेकिन अदालत तक पहुँचने की नीबत नहीं आई। बच्चियों और पहरेदारों ने नेक हृदय मामा याकोव को इस अपमान में फसने से बचा लिया। अब वह बेकार था और अपने बेटे के टुकड़ों पर जीवन बिताता था। उसका बेटा उन दिनों स्काविशिनकोव के प्रसिद्ध

गिरजा-सहगान-दल में गायक का काम करता था। अपने बेटे के बारे में उसकी राय विचित्र थी। कहने लगा

“इधर वह बहुत बड़ा और गम्भीर आदमी बन गया है! गिरजे में गाता है—एकल गायक है। अगर समोवार गम करने या उसके कपड़ों को झाड़ने में मुझे कुछ देर हो जाती है तो भौंह चढ़ा लेता है! बहुत ही साफ-सुथरा लडका है! आदतें भी अच्छी हैं ”

छुद मामा याकोव जो अब बूढ़ा हो गया था, गदा था और आँखों को झलकता था। उसके छल छबीले धुंधराते बाल अब पतले पड़ गए थे, कान छाज से निकल आए थे, आँखों को सफेदी और उसके दाढ़ी विहीन गालों की रेशमी खाल में लाल शिराओं का जाल सा बिछा था। वह हसकर, मजाक का पुट मिलाते हुए बातें करता था, लेकिन ऐसा मालूम होता था मानो उसके मुँह में कोई चीख अटकती हो जो उसकी आवाज को साफ साफ नहीं निकलने देती हालाँकि उसके सभी बात अच्छी हालत में थे।

मुझे इस बात की ख़ुशी थी कि उससे,—एक ऐसे आदमी से जो प्रसन्न रहना जानता था, जिसने बहुत कुछ देखा था और जिसे बहुत सी बातें मालूम थीं,—मिलने और बात करने का मौका मिला। उसके दबंग और हास्यपूर्ण गीत मैं भला नहीं था और मेरे नाना ने उसके बारे में जो कुछ कहा था, वह भी मुझे याद था। नाना ने कहा था

“गाने राजा बाऊद के और काम अबूस के।”

नगर के बड़े और अधिक शरीफ लोग—अफसर और पदाधिकारी, और रंगी चुनी स्त्रियाँ—छायादार पट्टी पर हमारे सामने से गुजर रहे थे। मामा याकोव एक भद्दा सा कोट पहने था, उसकी टोपी भी मुड़ी-तुड़ी थी और लाल खाकी रंग के ऊँचे बूट अपनी अलग धजा दिखा रहे थे। बेंच पर वह कुछ इस तरह सिकुड़ा सिमटा सा बठा था मानो उसे अपने इस रूप पर शर्म आ रही हो। अंत में हम यहाँ से चले गये और पोचाएन्स्की गली वाले एक भटियारखाने में खिडकी के पास मेज के पास बठ गए। खिडकी बाजार की ओर खुलती थी।

“याद है तुम्हें वह गीत जिसे तुम गाया करते थे

भिखारी ने लटकाये सुखाने को चीयडे,
दूसरे भिखारी ने चीयडे लिए उडा-

गीत के इन शब्दों के व्यंग और चुभन का, मैंने पहली बार अनुभव किया और मुझे लगा कि प्रसन्नता के आवरण में लिपटा मामा पाकोव का अन्तर असल में काफी तीखा और काटो से भरा है।

लेकिन गिलास में बोदका उडेलते हुए उसने विचारमग्न सा होकर कहा

“हा भाई, मेरे दिन पूरे हुए और मौज भी मैंने की, लेकिन काफ़ी नहीं! वह गीत मेरा नहीं था। सेमिनारी के एक शिक्षक ने उसे बनाया था, — मला, क्या नाम था उसका? ओह, याद से उतर गया। हम दोनों, वह और मैं, गहरे मित्र थे। वह शादीशुदा नहीं था। बोदका ने उसकी जान ले ली—पीकर एक दिन बाहर निकला और वहीं बर्फ में जाम हो गया। एक घड़ी बयो, न जाने कितने लोगो ने मैंने बोदका के पीछे जान गवाते देखा है। उनकी गिनती तक करना मुश्किल है! तू पीता है? ठीक, इसे मुह न लगाना ही अच्छा। फिर तेरी उम्र भी क्या है? अपने नाना से तो अक्सर मिलता रहता है न? बूढ़े को देखकर जो भारी हो जाता है। ऐसा मालूम होता है जैसे उसका दिमाग कमजोर हो गया हो।”

बोदका के एक या दो दौर के बाद वह कुछ चेतन हो गया, अपने कंधों को उसने सीधा किया, जबानी की एक हिलोर सी उसके चेहरे पर दौड़ गई और उसने अधिक जिदालिली से बोलना शुरू किया।

मैंने उससे पूछा कि जेल कदियों वाले मामले का ऊट फिर किस करवट बैठा।

“सो तुमने भी उस मामले की खबर है?” उसने पूछा और फिर अपनी आवाज को धीमा करते तथा चौकनी नजर से इधर उधर देखते हुए बोला

“वे सही थे तो इससे क्या? मैं कोई उनका मुन्तिक तो था नहीं। मुझे तो वे बने ही इंसान दिखाई देते थे जैसे कि और सब। सो मैंने उनसे कहा आओ भाइयो, हम सब साथ मिल-जुलकर रहें, दो घड़ी जो बहलाए, जसा कि किसी ने गीत में कहा है

रगोनियों का विस्मृत से क्या वास्ता!
तोड़ने दो उसे कमर हमारी,
है हसी-खुशी से हमारा वास्ता,
न माने गया ही यात हमारी!..

हसते हुए उसने खिडकी से बाहर झाँककर देखा। नाले में अघेरा सा छा रहा था, उसकी तलहटी में दुकानों की पातें दिखाई दे रही थीं।

“जेल में सिवा उदासी के और क्या था? दो घड़ी मन बहलाने की बात मुन वे निश्चय ही खुश हुए,” अपनी मूछों को सहलाते हुए उसने कहा। “सो रात को हाजिरी होते ही वे मेरे यहाँ चले आते। खूब खाते और पीते। कभी मैं उन्हें खिलाता पिलाता, और कभी वे, और हम स्वच्छंद और उन्मुक्त हो जाते! गीत और नाच का मैं प्रेमी हूँ, और उनमें से कई बहुत बढ़िया गाते और नाचते थे! सच, बहुत ही बढ़िया। इतने कि कोई एकाएक यकीन नहीं करेगा। उनमें कुछ तो ऐसे थे जिनके पावों में बेडिया पड़ी थीं। अब तू ही सोच, बेडिया पहनकर क्या कोई नाच सकता है? सो मैं कहता बेडिया उतार लो। यह बात सच है। इसके लिए उन्हें लोहार की जरूरत नहीं थी। वे खुद ही यह काम कर लेते। ऐसे-वैसे नहीं, वे होशियार लोग थे। सच, बहुत ही होशियार। लेकिन यह सब बकवास है कि मैं उन्हें मुक्त करके नगर में छोड़िया करने भेजता था, इसे कोई साबित भी नहीं कर सका ”

वह चुप हो गया और खिडकी में से पुराना माल बेचनेवाले कबाडियों को देखने लगा जो अपनी दुकानें बंद कर रहे थे। साकल तथा कुदो की खडखड, जग लगे कब्जों की चींचीं और कुछ तख्तों के गिरने की आवाज सुनाई दे रही थी। कुछ देर तक वह यही सब देखता और मुनता रहा। फिर लुशी से आल मारकर कहने लगा

“अगर सच पूछे तो उनमें एक ऐसा था जो रात को नगर जाया करता था। लेकिन उसके पाव में बेडिया नहीं थीं,—वह नीज्नी नोवगोरोद का एक मामूली सा चोर था। पास ही, पेचोर्क गली में उसकी प्रेमिका रहती थी। और वह पादरी तो योही भूल मैं लपेट में आ गया। गलती से उसने पादरी को सौदागर समझ लिया। जाड़े की रात थी। बर्फाली प्राधी चल रही थी। सभी बड़े, भारी कोट पहने थे। ऐसे में क्या पता चलता कि पादरी कौन है और सौदागर कौन?”

यह सुनकर मुझे हसी आ गई। वह भी हसा। कहने लगा

“सच, शतान जाने कि कौन क्या है? ”

इसके बाद, एकाएक, मामा याकोव के विमाघ ने कुछ इतनी आसानी से पलटा खाया कि मैं स्तब्ध रह गया। वह अनायास ही क्षुप्तता उठा।

मेज पर रखी रकबा को उसने सामने से हटा दिया, अरुचि से होंठों और भौंहों में बल डाला और सिगरेट जलाकर गुस्से में बुदबुदाया

“कम्बल्ट एक दूसरे को लूटते हैं, फिर एक दूसरे को पकड़ते और जेल, कालेपानी, साइबेरिया में एक दूसरे को जहनुम रसीद करते हैं। लेकिन मुझे योच में घसीटने में क्या तुक है? गोली मारो उन्हें मेरी अपनी आत्मा है।”

उसकी बातें सुन मेरी कल्पना में बेडौल जहाजी का चित्र मूत हो उठा। उसे भी, बात-बात में, ‘गोली मारो’ कहने का शौक था और उसका नाम भी याकोव ही था।

“क्यों, तू क्या सोचने लगा?” मामा याकोव ने कोमल स्वर में पूछा।

“क्या तुम्हें उन बंदियों पर तरस आता था?”

“तरस न आता तो और क्या होता? बहुत बढ़िया भावमौ थे वे—सच, बहुत ही बढ़िया! कभी कभी उन्हें देखकर मैं मन में सोचता मैं तुम लोगो के पाव की धूल भी नहीं हूँ, तिस पर तुम्हारा रजबारा हूँ! तब, वे शतान बहुत ही चुस्त और चतुर थे।”

थोड़का और पुरानी यादों ने उसमें जैसे जान डाल दी और उसकी जिंदादिली फिर से चेतन हो उठी। उसने अपनी कोहनी को सिंको की सिल पर टिका दिया और उगलियों में सिगरेट चामे अपने पीले हाथ को हिलाते हुए उमग भरे स्वर में कहने लगा

“एक काना था, ठपे और घड़िया बनाने का काम करता था। वह नकली सिंके ढालने के अपराध में पकड़कर आया था। एक बार उसने जेल से भागने की भी कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सका। भावमौ क्या था, पूरा फितना था। बात-बात में मशाल की भांति भड़क उठता! बोलता क्या था मानो गाना गाता था! एक दिन बोला अब तुम्हें बताओ कि ऐसा क्यों है? एक साल को तो सिंके ढालने की छूट है, लेकिन मुझे नहीं,—आखिर क्यों? बताओ, तुम्हें बताओ कि ऐसा क्यों है? लेकिन कोई भी यह नहीं बता सका,—यहां तक कि मैं भी नहीं बता सका। तिस पर मजा यह कि मैं उसका निगहबान था! इसी तरह मास्को का एक मगदूर घोर था—ऐसा साफ-सुथरा, गान्त और याका छत्ता। बहुत लोग काम करते-करते मर जाते हैं, लेकिन बेकार। मुझे इस तरह एडिया

रगडना पसद नहीं। एक बार मैंने भी कोशिश की। काम करते करते मैंने अपनी उगलिया घिस डालीं, लेकिन मिला क्या? समझ लो कि न के बराबर। गिनती के दो चार घूट पी लो, एक दो हाथ ताश में गया दो और दो घड़ी किसी लडकी से खेलकर लो,—बस इतने में ही सब छत्म, और फिर वही भिखारी के भिखारी। नहीं बाबा, मुझे यह चक्कर पसद नहीं ।”

मामा याकोव मेज़ के ऊपर झुक गया। उसका चेहरा तमतमा रहा था, उसके बालों की जड़ें तक लाल हो गई थीं, और उसकी बिह्वलता का यह हाल था कि उसके कान भी धिरक रहे थे। वह कह रहा था

“सच कहता हूँ भाई, वे मूल नहीं थे! दीन दुनिया को वे जानते थे। और बहुत पते की बातें करते थे। ओह, गोली मारो, यह जीवन भी कम्बलत एक जजाल है। मिसाल के लिए मुझे ही ले। बोल, क्या कहता है मेरे जीवन के बारे में? उसपर नजर डालते भी शम मालूम होती है! रज और दुख की कमाई की, खुशी भी पाई—लेकिन चोरी से, लुक छिपकर। बाप चिल्लाता—यह न कर, और बीवी चिल्लाती—वह न करो, और मैं खुद या कि एक एक कौड़ी के लिए जान खपाता। और इसी घिसघिस में सारा जीवन हाथ से निकल गया। और यह तू देख ही रहा है कि अब मैं क्या हूँ—एक बूढ़ा और जजर अबगी, अपने ही बेटे का चाकर। जो सच है, उसे छिपाने से क्या फायदा? मैं अपने बेटे का चाकर हूँ। भाई, नाक रगडता हूँ और दुम दबाकर उसकी चाकरी करता हूँ। और असली नवाब की भांति वह मुझपर जीवता चिल्लाता है। कहने को वह मुझे अब भी ‘पिता’ कहता है, लेकिन आवाज़ कुछ ऐसी आती है मानो कह रहा हो—‘टुकडखोर’! क्या इसीलिए मैंने जन्म लिया था? क्या इसीलिए मैं इतने दिनों तक मरता खपता रहा? जीवन का क्या यही फल मुझे मिलना था कि जाओ, अपने बेटे के टुकड़े तोड़ो, और उसके सामने दुम हिलाओ! लेकिन अगर ऐसा न होता, तब भी क्या मेरे जीवन में चार चाद लग जाते? तू ही बता, इतने बड़े जीवन में मैंने इस जीवन का क्या किया,—कितना और क्या सुख मैंने पाया?”

मेरा ध्यान बट गया था और उसकी सभी बातें मेरे कानों में नहीं पड़ रही थीं। अचकचाकर और जवाब पाने की कोई आशा किये बिना मैंने कह दिया

“जीने का डग और डग में भी नहीं जानता ”

यह हल्की हसी हसकर बोला

“एक तू ही क्या, कोई भी नहीं जानता। मैंने तो आज दिन तक एक भी ऐसा आदमी नहीं देखा जो यह जानता हो। बस, लोग ऐसे ही जीते रहते हैं, जिसको जैसे आदत हो ”

शुक्लाहट और गुस्से का एक बार फिर शोका आया और चोट खाई सी आवाज में यह बोला

“बदियो में एक आदमी था, — प्रोयॉल का रहनेवाला। वह बलात्कार के अपराध में जेल आया था। किसी कुलीन घर में उसने जन्म लिया था और बेहद अच्छा नाचता था। वान्का के बारे में उसे एक गीत था था जिसे सुनकर सब हसते और खूब ख़ुश होते थे

मुह लटकाये वान्का घूमे,
मरघट के चहुँ और,
वान्का, वान्का, यहाँ धरा क्या?
और से अच्छा ठौर?

लेकिन सब पूछो तो इस गीत में हसने लायक कोई बात नहीं थी। गीत क्या था, जीवित सत्य था। चाहे जितना बल खाओ, निकल भागने की चाहे जितनी कोशिश करो, लेकिन कब्रिस्तान से छुटकारा नहीं मिलता। और अगर बात ऐसी है तो मेरे लिए कोई फक नहीं — मैं इस दुनिया में बंदी बनकर जीऊँ या बदियो का निगहबान बनकर ”

बोलते-बोलते वह थक गया। गिलास उठाकर उसने अपना गला तर किया। फिर पक्षी की भाँति खाली गिलास में एक झाल से देखा और चुपचाप सिगरेट से धुआँ छोड़ने लगा।

राज प्योन जो मामा याकोव से जरा भी नहीं मिलता था, बड़े चाप से कहा करता था “चाहे आदमी कितने ही हाथ-पाव मारे और चाहे कितने ही यह मनसूबे बांधे, लेकिन अन्त में पल्ले क्या पड़ता है, — वही बंदू गज कफन और मुट्ठी भर मिट्टी!” इस तरह का भाव व्यक्त करनेवाली कहावतों और मुहावरों का एक अच्छा-खासा अम्बार मेरे पास लग चुका था!

मामा याकोव से और कुछ पूछने के लिए मेरा मन नहीं चाहा। उसे देखकर मुझे उसपर तरस आया, मेरा जी भारी हो गया और उसके साथ बठे रहना मुझे मुश्किल मालूम होने लगा। निराशा के तानेबाने में आह्लाद का रंग भरनेवाले उसके रसीले गीतों और गिटार की ध्वनि बरबस मेरे दिमाग में गूजने लगी। त्सिगानोक का खुशी से छलछत्ताता चेहरा भी अपनी आँखों की झोट करना आसान नहीं था। मामा याकोव के रूँदे मसले चेहरे की ओर देखते समय बरबस मुझे उसकी भी याद ही आई और यह सोचकर मैं अचरज करने लगा कि कौन जाने, मामा याकोव को त्सिगानोक की याद है या नहीं जिसे उसने फ़ास के नीचे कुचलकर मार डाला था।

लेकिन मैंने उससे पूछा नहीं।

मैंने लिडकी में से सड़क की ओर देखा। अगस्त का महीना था और धुप घनी होती जा रही थी। धुप की गहराइयों में से सेबों और खरबूजों की महक आ रही थी। नगर की ओर जानेवाली सड़क के किनारे लालटेनें टिमटिमा रही थीं। चारों ओर की हर चीज किसी न किसी रूप में खूब परिचित थी यह रीबिन्स्क जानेवाले जहाज की सीटी की आवाज थी, और वह पैम जानेवाले "

"अच्छा तो मैं अब चलता हूँ," मामा याकोव ने उठते हुए कहा। भटियारखाने के बाहर आकर उसने मुझसे हाथ मिलाया और हसते हुए कहने लगा

"तू ने अपनी धूयनी क्यों लटका रखी है? मैं कहता हूँ, उदासी का यह छींका अपनी धूयनी पर से उतार डाल! तेरी उम्र ही क्या है, हस-खेल और भगन रह। वह गीत याद रखना 'रगीनियो का किस्मत से क्या वास्ता!' अच्छा तो अब बिदा। मैं उधर, उस्पेस्की गिरजे के पास वाले रास्ते से जाऊँगा!"

मौजो मामा याकोव खला गया और अपनी बातों से मुझे और भी ख्यादा अस्तव्यस्त कर गया।

मैं ऊपर नगर से होता हुआ खेतों की ओर चल दिया। आकाश में पूरा चाद तर रहा था और बादल, खूब नीचे, झुके हुए, हवा के साथ बह रहे थे। उनकी परछाईं में रह रहकर मेरी परछाईं खो जाती थी। खेता ही खेतों में नगर का चक्कर लगाता हुआ मैं ओत्कोस के निकट

घोल्गा के किनारे पहुँच गया और घुल भरी घास नदी, चरागाहों और निश्चल धरती की ओर देर परछाड़िया थीमी गति से घाल्गा को पार करती, घ घे और उजली दिखाई देती—ऐसा मालूम होता ४ मे स्नान करके ये निलर उठी हो। चारो ओर की उनींदी और ऊपती सी मालूम होती, हर चीज इस मानो उसमे चलने की सकत न हो, फिर भी उसे घ उस गहरो उमग और गति से सवया शून्य जिसमे जीवन की अदम्य आकाशा हितोरे लेती है।

और मेरे मन मे यह भावना जोरो से उमडने घुम-धरती को और खुद अपने आप को भी ऐसी ठोकर द घीज—जिसमे मे भी शामिल था—अगले की भाति जुग और सभी लोग, आपस मे एक दूसरे के प्रति और जीवन अद्भुत नृत्य की रचना करें और वह जीवन जिसका उदय ह। खरा, अधिक साहसपूर्ण और अधिक सुंदर हो उठे

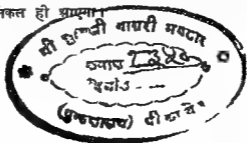
मन मे रह रहकर यह विचार उठता

“जहर मुझे अब कुछ न कुछ करना चाहिये, नहीं तो बेकार हो जायेगी ”

शरद के उदास दिनो मे, जब सूरज केवल दिखाई ही न बल्कि उसके अस्तित्व का भी भास नहीं होता—ऐसे शरद के दि बार मे जगल मे भटका ह। रास्ता भल जाता, सभी पगडडिया ल उहे दूडते दूडते थक जाता और अन्तत दात भींचकर सीधे जगल लगता। सडी गली झाडियो, टहनियो पर बरम रखता, बलदलों व धरता घलता जाता और अत मे रास्ते पर पहुँच ही जाता।

अब भी मेने ऐसा ही करने का निश्चय किया।

उसी साल शरद के दिनो मे मे कजान के लिए रवाना हो गय हृदय मे यह गुप्त आशा लिए कि वहा पहुँचकर अध्ययन करने का न कोई साधन निकल ही आया।



बोल्गा के किनारे पहुंच गया और धूल भरी घास पर सेटकर देर तक नदी, चरागाहों और निश्चल धरती की ओर देखता रहा। बादलों को परछाईया घीमी गति से बोल्गा को पार करतीं, चरागाहों में पहुंचने पर वे और उजली दिखाई देतीं—ऐसा मालूम होता मानो बोल्गा के पानी में स्नान करके वे निल्वर उठी हो। चारों ओर की हर चीज दबी हुई, उनींदी और ऊथली सी मालूम होती, हर चीज इस तरह हरकत करती मानो उसमें चलने की शक्ति न हो, फिर भी उसे चलना पड़ रहा हो,— उस गहरी उमग और गति से सबया शून्य जिसमें जीवन और जीवित रहने की अदम्य आकांक्षा हिलोरे लेती है।

और मेरे मन में यह भावना जोरो से उमड़ने घुमड़ने लगी कि इस धरती को और छुड़ अपने आप को भी ऐसी ठोकर दू कि जिससे हर चीज—जिसमें मैं भी शामिल था—बगूले की भांति छुशी से झूम उठे और सभी लोग, आपस में एक दूसरे के प्रति ओर जीवन के प्रेम में पण अद्भुत नृत्य की रचना करें और वह जीवन जिसका उदय होना है, अधिक खरा, अधिक साहसपूर्ण और अधिक सुंदर हो उठे

मन में रह रहकर यह विचार उठता

“जल्द मुझे अब कुछ न कुछ करना चाहिये, नहीं तो सारी जिंदगी बेकार हो जायेगी ”

शरद के उदास दिनों में, जब सूरज केवल दिखाई ही नहीं देता, बल्कि उसके अस्तित्व का भी भास नहीं होता—ऐसे शरद के दिनों में कई बार मैं जंगल में भटका हूँ। रास्ता भल जाता, सभी पगडंडिया खो जातीं, उन्हें दूढ़ते-दूढ़ते थक जाता और अन्ततः बात भौंक्कर सोये जंगल में जाने लगता। सड़ी गली झाड़ियों, टहनियों पर बरम रखता, दलदलों को पार करता चलता जाता और अंत में रास्ते पर पहुंच ही जाता।

अब भी मैंने ऐसा ही करने का निश्चय किया।

उसी सात शरद के दिनों में मैं बच्चान के लिए खाना हा गया,— हृदय में यह गुप्त आशा लिए कि वहां पहुंचकर अध्ययन करने का कोई

